हमारे माननीय सहायक

रा० ब० शिवरतनजी मोहता, करांची

बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला, कलकत्ता

रा० ब० जगदीश नारायण सिंह साहब पडरौनाराज

श्रीयुत बालगोविन्ददासजी लोहीवाल, करांची

राय बहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ करांची

लाला जसवन्तरायजी चूड़ामणि, करांची

महाराज पं० सुन्दरलालजी राजवैद्य इच्छापूरन, करांची

मेसर्स किशनदास फतेचन्द एण्ड सन्स; करांची

सेठ रेवाशङ्कर मोतीराम, करांची

सेठ हासोमल चेलाराम, करांची

सेठ राजमलजी लल्वानी जामनेर (पूर्व खानदेश)

मेसर्स शुभकरण श्रीराम, बैङ्कर्स सिकंदराबाद (दक्षिण)

मेसर्स रामदयाल घासीराम राय साहब, हैदराबाद (दक्षिण)

मेसर्स हरगोपालदास रामलाल बैङ्कर्स हैदराबाद (दक्षिण)

मेसर्स श्रीराम शालिगराम, धामणगांव

मेसर्स बसन्तलाल मन्नालाल जनरल गंज, कानपुर

बा० रामेश्वरदासजी बागला एम० एल० ए० कानपुर

बा० रामरतनजी गुप्त कानपुर

मेसर्स भीखमचन्द रेखचन्द मोहता, हिंगनघाट

राय साहब नारायणदासजी राठी, अमरावती

मेसर्स मोतीलाल बंसीलाल बैंकर्स; अकोला

सेठ सुखनारायणजी गोयनका (परसराम हरनन्दराय) देहली

मेसर्स एम० एम० भवानीप्रसाद चेतूलाल जबलपुर

मेसर्स गुलाबचंद हरखचंद दुलीचंद, सागर

भूमिका

—:०:—

आज पुनः इस विराट आयोजन के तृतीय ग्रन्थ को लेकर पाठकों के सम्मुख उपस्थित होते हुए हमलोगों का हृदय कितना आनन्द और उत्साह पूर्ण हो रहा है इसका वर्णन शब्दों के द्वारा करना असम्भव है। कौन जानता था कि केवल १०) रुपये की क्षुद्र पूँजी से तीन नवयुवकों के द्वारा आरम्भ किया हुआ यह विराट आयोजन इतनी सुन्दरता, सफलता और सर्वाङ्गीनता के साथ इतनी मंज़िल पर पहुँच जायगा और भारतीय साहित्य में अपने ढङ्ग का प्रथम आयोजन सिद्ध होगा। मगर जहाँ पर प्रबल इच्छाशक्ति, अटूट मनोबल, और सच्चा उत्साह होता है, वहाँ पर कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में प्रकृति भी बड़ी सहायक होती है। यही कारण है कि जिस उत्साह के साथ हमने इस कार्य्य को प्रारम्भ किया, उसी उत्साह से जनता ने हमारे इस कार्य्य का स्वागत किया। व्यापारियों ने हमारे साथ पूर्ण सहानुभूति और सहयोग प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप बिना पूँजी से प्रारम्भ किये हुए इस कार्य्य के निमित्त आज तक करीब पचास हजार रुपया हमलोग केवल इसके सफर खर्च और छपाई खर्च में व्यय करने में समर्थ हुए। इसको हम प्रकृति की कम अनुकम्पा नहीं समझते।

मगर इस विराट आयोजन की सफलता का यश हमलोगों को नहीं है। इस सफलता का वास्तविक यश हमारे परम कृपालु उस व्यापारी समाज को है। जिसके सहयोग और अनुग्रह से यह विराट कार्य्य सम्पन्न हुआ। और जिसके इस उदार व्यवहार को हम किसी प्रकार विस्मरण नहीं कर सकते।

इस तीसरे भाग को सम्पन्न करने में कई महानुभावों से बहुत अधिक सहायता प्राप्त हुई है। जिनके प्रति कृतज्ञता प्रकट न करना धृष्टता होगी। इन महानुभावों में करांची के धन कुबेर श्रीयुत राजबहादुर शिवरतनजी मोहता, बाबू चाँदरतनजी मूंदड़ा, बाबू ब्रजगोविन्ददासजी डोडीवाल, पं० हीरालालजी शर्मा, पं० मोतीलालजी व्यास, हैदराबाद दक्षिण के श्रीयुत रामकृष्णजी धूत आदि सज्जनों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन महानुभावों ने हमलोगों के कार्य्य में हर प्रकार से सहायता और सहानुभूति बतलाई, जिसका बदला किसी प्रकार मौखिक धन्यवाद में नहीं चुकाया जा सकता। इसके अतिरिक्त बनारस के लक्ष्मीनारायण प्रेस के मैनेजर श्रीयुत गणपति कृष्ण गुर्जर को धन्यवाद देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं जिन्होंने बहुत ही तत्परतापूर्वक इस पुस्तक को पहले के दो भागों की अपेक्षा अधिक सुन्दर और आकर्षक बना दिया है।

विशेष निवेदन

इस स्थान पर हम पाठकों से एक विशेष निवेदन कर देना अत्यन्त आवश्यक समझते हैं। बात यह है कि इस ग्रन्थ का बहुत सा भाग आज से करीब ८ मास पूर्व का संग्रह किया हुआ है। और इन दिनों में भारतवर्ष की व्यापारिक परिस्थिति में बड़े भयंकर और अनिष्टकारी परिवर्तन हुए हैं। अतएव इन आकस्मिक परिवर्तनों के लिये यह ग्रन्थ किसी भी प्रकार जिम्मेदार नहीं है।

इस बार देशव्यापी आन्दोलन के प्रभाव के कारण हमको मैटर संगृहीत करने में आवश्यकता से अधिक समय और शक्तियाँ खर्च करनी पड़ीं। परिणाम यह हुआ कि इतना समय व्यतीत हो जाने पर भी हमलोग पञ्जाब प्रान्त को इसमें शामिल न कर सके, जिसका हमें हार्दिक खेद है। पञ्जाब के बदले में हमने इसमें सी॰ पी॰ बरार, राजदेश और निजाम स्टेट प्रान्तों को मिला दिया है। पंजाब का मैटर भी संगृहीत हो रहा है। उम्मीद है चौथे भाग में जोड़ दिया जायेगा।

अन्त में हम अपने कृपालु पाठकों को कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद देते हुए इस बार विदा लेकर, शीघ्र ही चौथे भाग के साथ अगले वर्ष पुनः उपस्थित होने की आशा करते हैं।

शांति मन्दिर:
भानपुरा
दीपावली १९३०

भवदीय—
संचालक—कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

विषय-सूची

—:o:—

करांची

संयुक्त-प्रांत

मध्य-प्रदेश

बरार और खानदेश

करांची–सिटी

——

KARACHI–CITY.

करांची

करांची-जिला

प्रांत की सीमा और परिस्थिति—

इस जिले का क्षेत्रफल ११९७० वर्गमील है। इसके उत्तर में लरकाना, पूर्व में सिंधु नदी और हैदराबाद जिला, दक्षिण में समुद्र और कोरो नदी तथा पश्चिम में समुद्र तथा लालबेला रियासत (बिलोचीस्थान) हैं। इस जिले में पहाड़ विशेष हैं। इसकी प्रधान नदी सिंधु और हाब हैं। पानी की यहाँ बड़ी कमी रहती है। खेती प्रायः बरसाती पानी ही से होती है। यहाँ का जंगल बड़ा मनोहर है। इसके कोटरी ताल्लुका के लखी नामक स्थान पर गरम जल के तथा गंधक के झरने निकलते हैं। यहाँ बहुत से यात्री यात्रा के निमित्त आया करते हैं। इसी प्रकार इस जंगल में और भी कई स्थानों पर कई सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। इस जंगल में आम, बेर, सेब, अंजीर, आदि भी पैदा होते हैं पर ज्यादा नहीं। ये सब यहीं खप जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ लकड़ी भी होती है जिसमें खासकर बबूल विशेष होती है। छवारा और Kandel भी यहाँ साधारण पैदा होते हैं। पहाड़ी स्थानों में यहाँ के जानवर, तेंदुआ, हिरन, खरगोश, सियार, लोमड़ी, भेड़िया आदि हैं। मगर भी यहाँ के तालाबों एवं सिंधु और हाब नदी तथा बड़ी २ नहरों में पाये जाते हैं। यहाँ की आबहवा समुद्र का खुला हुआ किनारा होने से अच्छी है। यहाँ बरसात की औसत बहुत कम है। मानझंड में वर्षा करीब ५ इंच होती है तथा करांची ताल्लुका में ९ इंच तक हो जाती है। यही यहाँ की वर्षा का एवरेज है।

करांची जिले का इतिहास—

इस प्रांत का इतिहास उस समय से शुरू होता है जब कि ग्रेट एलेक्झेंडर हिन्दुस्थान को विजय करने के लिये भारतवर्ष में आया था। उसने परसियन गल्फ के रास्ते यहीं से अपना सम्बन्ध स्थापित किया था। सन् १०१९ और १०२६ के बीच महमूद गजनवी यहाँ आया; उस समय इस प्रदेश पर सुमा राजवंश का राज्य था। इस राजवंश का प्रथम

पुरुष धामनीविडस का टिटुलर वसाल था। इसी ने इस राज्यवंश को जन्म दिया था। सन् १३३३ में यह सुमाराजवंश कच्छ से लरकाना जिले के सेहवान नामक स्थान में आया। पश्चात् ठट्ठा में इसने निवास करना प्रारंभ किया। मकली पहाड़ के पास सामुई नामक स्थान इन लोगों की राजधानी थी। ये लोग वास्तव में हिन्दू या बौद्ध थे, मगर इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर विश्वास करके चौदहवीं शताब्दी के अंत में मुसलमान हो गये। जब फिरोज़ तुगलक देहली में शासन करता था उस समय इनका निवासस्थान ठट्ठा सारे सिंध में व्यापार का प्रधान स्थान हो गया था। इसकी मनुष्य संख्या भी बहुत बढ़ गई थी।

सन् १५२१ में अरगुन राज्यवंश के स्थापक शाह बेग ने इस सुमा राजवंश के अंतिम राजा को हरा कर इस प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। इसका राज्य करीब ३४ साल तक रहा। क्योंकि इसका लड़का शाह हसन बेऔलाद सन् १५५४ में मर गया था।

सन् १५९२ में भारत सम्राट् अकबर ने इस प्रांत पर चढ़ाई कर इसे अपने कब्जे में कर लिया और यह प्रांत मुल्तान सूबा में मिला दिया गया। इसी समय ठट्ठा पर जान बेग का शासन था। यह सम्राट् से पराजित हो चुका था। अतएव इसने प्रार्थना कर अकबर के पास नौकरी कर ली और जागीर के तौर यह उसका भोग करने लगा। पश्चात् यह यहाँ का पुश्तैनी शासक हो गया।

सन् १७९२ में कलात के खान ने व्यापार के निमित्त बंदर की तलाश की। उसे करांची बंदर भाया और उसने इसे व्यापार का प्रधान केन्द्र बनाना चाहा। कुछ ही समय पश्चात् तालपुर के मीर—जिनके यहाँ कलात का खान काम करता था—अलग २ हो गये। सन् १८३८ में अफगान युद्ध के समय इस पोर्ट का विशेष महत्व रहा। इसे ब्रिटिश दूत ने अपना अड्डा बनाया और सन् १८३८ में यह पूर्ण रूप से ब्रिटिश सरकार के हाथ आ गया। जब से यह ब्रिटिश सरकार के हाथ में आया इसकी दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति होने लगी। भिन्न २ समय पर इसमें हैदराबाद एवं लरकाना का पोर्शन मिला लिया गया। यही आजकल करांची जिले के नाम से पुकारा जाता है।

आजकल भी इस जिले में पुरातत्व सम्बंधी कई सामान हैं। जैसे शिलालेख, पुरानी मसजिदें, मकबरे, कबरें आदि। यहाँ की मुल्तानी ढाँचे की जुम्मामसजिद बड़ी अच्छी और प्राचीन कारीगिरी का अच्छा नमूना है। डाबगर मसजिद की बीच महराब बहुत ही अच्छी है। ठट्ठा का पुराना किला भी दर्शनीय है जो सन् १६९९ में बनना शुरू हुआ था पर कभी खतम नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त सिंधु के मैदान में लाहोरी, काफर, भुंभोरा, समुई, फतेबाग, काट, बाम्मन, थूल, हरें, वाडिव, हुर, मामनीरे आदि स्थान ऐसे हैं जहाँ पुरातत्व सम्बंधी सामग्री अब भी मिलती है।

तालुके एवं पैदावार—

इस जिले में सब मिलाकर ११ ताल्लुके या महाल हैं। जिनके नाम कोटरी, कोहिस्थान, करांची, ठट्टा, मीरपुर सकरो, घोड़ाबारी, केटी, मीरपुर बतोरो, सुजावल, जाती और शाह बंदर हैं। इन सब ताल्लुकों में मिलाकर ५ टाउन तथा ६२८ देहाती गाँव हैं। इस प्रांत का एरिया ११९७० वर्गमील है। इस प्रांत में खेती बरसाती पानी, झरने एवं कुओं से होती है। यहाँ की पैदावार जुवार, बाजरी, जौ, गन्ना है जो करांची शहर से करीब १२ मील की दूरी पर मलीर ग्राम में होती है। इसके अतिरिक्त शाहबंदर और ठट्टा के डेल्टे में चांवल होता है। यहाँ गेहूँ, गन्ना, कपास और तमाखू भी होती है। कोहिस्थान के बेरिन हिल्स नामक स्थान पर भी कुछ खेती होती है। मगर कब, जब कि पानी बहुत ज्यादा गिरता है। सौदर्न ग्राम में रहनेवाले मनुष्य पशुओं को भी पालते हैं। वहाँ कम पानी पड़ने ही से बहुत से झरने बहने लग जाते हैं। जो कि काफी तादाद में वहाँ हैं।

यहाँ के पशुओं में भैंस, गाय, ऊँट, गधे वगैरह हैं। गायें करांची सिटी से करीब ४० मील की दूरी पर बहुत होती हैं। ये करांची की गायों के नाम से मशहूर हैं। बम्बई प्रांत में यहाँ से बहुत गायें इम्पोर्ट की जाती हैं। यहाँ की गायें भारतवर्ष में अपना बहुत ऊँचा स्थान रखती हैं। भैंसे भी यहाँ काफी तादाद में हैं। इनसे विशेषकर घी तैय्यार होता है। नार्दर्न इंडिया का घी बहुत अच्छा होता है। वह इन्हीं भैंसों से तैय्यार किया जाता है। यहाँ ऊँट और गधे लादने के काम में आते हैं।

करांची-सिटी का इतिहास—

दुनियाँ परिवर्तनशील है। कौन जानता है कि जहाँ आजकल भव्य और सुन्दर इमारतों को लिये हुए विशाल नगर खड़े हैं, वहाँ समय आने पर कुछ न मिले और जहाँ आज कुछ भी नहीं मिलता,—जहाँ भयंकर जंगल हैं, कल वहाँ विशाल नगरों की रचना हो जाय। हमारा करांची भी इसी प्रकार के उदाहरणों में से एक है। सन् १७२५ की बात है, जहाँ आजकल यह भारत प्रसिद्ध नगर खड़ा है वहाँ कुछ न था। एक मामूली गाँव का छोटा सा देहात था। इसके पास ही हाब नामक नदी बहती थी। यहाँ साधारण व्यापार होता था। उस समय यह स्थान हैदराबाद के मीर आलहरिया एवं [illegible] के बंदर में था। मीर ने अपने व्यापार की तरक्की के लिये एक अनुकूल पोर्ट की खोज करना चाही। उसी समय इसके पास कलाची कुन नामक स्थान था। [illegible] से यहीं नाम आजकल करांची के नाम से प्रख्यात है। मीर के कहने से उसके बंदर में रहनेवाले [illegible] के लिए [illegible]

के खान ने सन् १७९२ में इसकी खोज की और इसे व्यापारिक स्थान समझ कर यहाँ व्यापार करना प्रारंभ किया। यह उस समय कलात के खान की सीमा पर स्थित था।

इसी समय सन् १७९२ से १७९५ तक इसे तीन बलोची शत्रुओं ने हस्तगत करना चाहा, मगर हैदराबाद के तालपुर के चीफ ने अपनी सेना द्वारा पराजित कर तीनों ही बार इन बलोचियों को पराजित किया। इसी समय मनोरा नामक स्थान पर जो आजकल करांची का खास भाग है, इसने एक किला भी बनवाया। तालपुर के चीफ ने इस स्थान के व्यापार की ओर बड़ा ध्यान दिया। उसने कई व्यापारिक सुविधाएँ कीं। यही कारण है कि उस समय इसका व्यापार और मनुष्य संख्या जोरों से बढ़ने लगी। उस समय इसकी मनुष्य संख्या १४००० हो गई। इसमें आधे हिन्दू थे। उस समय यहाँ छप्पर के मकान विशेष थे। उनकी दिवालें बालू की बनी हुई होती थीं। दो मंजिला मकान तो बहुत ही कम नजर आता था। इन्हीं लोगों के पास से यह स्थान सन् १८३८ में भारत सरकार के पास आया और तब से इन्हीं के हाथ में है। इनके पास आने से इसकी महत्ता बहुत बढ़ गई और आजकल तो यह बंदर भारत में तीसरे नम्बर का माना जाता है।

सिटी का व्यापार—

यों तो यहाँ का व्यापार तालपुर के मीर के जमाने ही में बढ़ने लगगया था पर ब्रिटिश सरकार के समय में इस पोर्ट के व्यापार को बहुत उत्तेजन मिला। मीर के समय में यहाँ का रेवेन्यू ९९०००) रुपया था। यही सन् १८३७ में बढ़कर १७४०००) हो गया। कुछ समय के पश्चात् बढ़ते २ यहाँ का सारा व्यापार करीब ४० लाख का हो गया। उस समय यहाँ आने वाला माल इंगलिश सिल्क, ब्रोड क्लाथ, बंगाल और चीन का सिल्क, गुलाम, खजूर, मीनाकारी, ताम्बा और कपास था। तथा जानेवाले माल में विशेष कर अफीम, घी, नारंगी, गेहूँ, माडर (madder) उन, नमकीन मछली आदि थे। गुलाम लोग विशेष कर मस्कत से आते थे। निग्रो और अबासीनियंस भी आते थे, मगर कम। अफीम करीब ५०० ऊँटों पर लद कर मारवाड़ की तरफ से आती थी और यहाँ से पोर्तगीज के दमन नामक स्थान पर भेजी जाती थी।

सन् १८४३, ४४ में करांची, केटी और सिरगंधा नामक पोर्टों का व्यापार सिर्फ १२ लाख रह गया था। इसका कारण अफीम के व्यापार का गिर जाना था। बाद में इस व्यापार की कीमत १६ लाख की थी। दूसरे साल यही व्यापार २३ लाख, तीसरे साल ३५ लाख और चौथे साल तो ४४ लाख तक पहुँच गया।

सन् १८५२ में यहाँ का व्यापार बढ़कर ८१ लाख का हो गया। सन् १८५७ में यहाँ का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट से भी बढ़ गया। करांची के व्यापार को विशेष उत्तेजन अमेरिका के सिविल वार से मिला। इस वार के समय यहाँ से बहुत कपास बाहर गया। इस समय यहाँ का व्यापार ६ करोड़ का हो गया। इसमें २ करोड़ का माल इम्पोर्ट होता था तथा ४ करोड़ का एक्सपोर्ट होता था। अमेरिका में जब शांति हो गई तब यहाँ का व्यापार वापस कम हुआ पर शीघ्र ही सन् १८८२,८३ में वापस बढ़कर ७ करोड़ का हो गया। और १८९२-९३ में यही ११ करोड़ का हो गया।

सन् १९०३-४ में गवर्नमेंट स्टोअर को छोड़कर यहाँ का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का व्यापार २४·१ करोड़ का हो गया। इसमें ९·६ करोड़ का इम्पोर्ट और १५·२ करोड़ का एक्सपोर्ट होता था। एक्सपोर्ट होने वाले माल में विशेष कर गल्ला और तिलहन जाता था। यह पंजाब एवम सिंघ प्रान्तों द्वारा रेल मार्ग से यहाँ लाया जाता था। बाहर से आने वाले माल में कपड़ा, सूत, ऊनी माल, हार्डवेअर और कटलरी, शराब, स्पिरिट,, धातुएँ (खासकर लोहा, ताम्बा, स्टील) शक्कर, मशीनरी, मिल के उपयोगी सामान, तेल आदि २ थे।

करांची पोर्ट पर अमेरिका से भी बहुत माल आता था। उसमें विशेष कर कपड़ा, रेल्वे सामग्री, शराब, कोयला, मशीनरी, धातुएँ, दवाइयाँ, प्रोविजन्स आदि थे। इस प्रकार भारत के भी कई स्थानों से माल यहाँ आता था। बम्बई से कपड़ा, सिल्क, धातुएँ, शक्कर, चाय, जूट, रंगाई का सामान, सुपारी, ऊनी माल, सिल्की माल, शराब, फल और सबजी आती थी। इसी प्रकार परसियन गल्फ से सूखा मेवा, ऊन, गल्ला और घोड़े तथा मकरान कोस्ट से ऊन, प्रोविजन्स, गल्ला, दाल, और कलकत्ता से, जूट, गल्ला, दाल तथा रशिया से मिनरल वाटर आता था।

करांची से भी विदेशों में तथा भारत के भिन्न २ स्थानों में माल का एक्सपोर्ट होता था उनमें अमेरिका को रुई, ऊन, गेहूँ, बीज, चमड़ा और हड्डियें, फ्रांस को गेहूँ, रुई, हड्डी, चमड़ा, चना, आदि, जर्मनी को गेहूँ, रुई, चमड़ा, हड्डिया और शीड्स, जापान को रुई, रूस को अरंडी और रुई जाते थे। तथा बम्बई, कच्छ और गुजरात में यहाँ से रुई, गल्ला, अरंडी, शीड्स, चमड़ा, मछली, मोरेशस द्वीप में गल्ला और दाल, परशिया में चाँवल, मद्रास में चाँवल और चमड़ा तथा चीन में रा काटन यहाँ से जाता था।

यहाँ गेहूँ विशेषकर पंजाब और यू० पी० से, कपास पंजाब से, ऊन, सूखा मेवा और घोड़े कंदहार एवं कलात से, तथा अलाऊ लकड़ी, घास, घी, चमड़ा और पामलियन वगैरह, ऊँटों, बैलों, एवम गधों पर लदकर लास बेला और कोहिस्थान से आते थे।

आने पर बनाए गये हैं। इसके अतिरिक्त २ रास्ते और जो कि २८ फीट गहरे हैं, बनाए जा रहे हैं।

करांची पोर्ट पर जहाजों की बस्ती—

सन् १८४७, ४८ में इस बन्दर पर कुल २९१ देशी जहाज थे। जिनका कुल वजन २०५७९ टन था। सन् १९०३,४ में दूसरे विदेशी बंदरों से यहाँ ३८४ जहाज जिनमें १७४ तो स्टीम से चलते थे जिनका वजन ३०११०९ टन था। इसी साल ५१५ जहाज़ यहाँ से बाहर के बंदरों पर भेजे गये।

भारत और बर्मा के पोर्टों से यहाँ १२११ आये। जो कि ५६७४३६ टन माल ले जा सके थे। इसी प्रकार भारत तथा बर्मा के पोर्टों पर यहाँ से ११७७ गये जो कि ३९२४९२ टन वजन के थे। इन सबका इन्तिज़ाम यहाँ के पोर्ट ट्रस्ट के द्वारा होता है। इसकी आय सन् १९०३,४ में करीब १९ लाख तथा खर्च करीब १२ लाख का था। इसके पहले पाँच साल बाद तक की औसत आमदनी २१ लाख तथा खर्च १५½ लाख का था। यहाँ की जहाजी कम्पनियों में खास कर एलरमेन, विलसन, ह्निड, हंसा, आस्ट्रियन लॉयड, ब्रिटिश इंडिया, और बाम्बे स्टीम नेविगेशन कम्पनियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटी—

इस शहर में म्युनिसिपेलिटी की स्थापना सन् १८५२ में हुई। इसकी आय बढ़ते २ सन् १९०१ में १२ लाख की हुई। इसके पश्चात् १९०३, ४ में १५ लाख की आमदनी तथा १४ लाख का खर्च हुआ। इसकी आमदनी के खास जरियों में से कस्टम से १० लाख (इसमें ६ लाख की वापस की हुई रकम शामिल नहीं है) घर और जमीन का टेक्स ५६०००) और किराया २७०००) है। इसी प्रकार खर्च की रकमों में खास २ जैसे इन्तिज़ाम में ७ लाख, पानी सप्लाई करने में ६२०००) कन्सरवेन्सी में १५०००) शिफाखाने में ४९०००), हास्पिटल और दवाखानों में १५०००) पब्लिक वर्क्स में १६२०००) है।

कैन्टूनमेंट का इन्तिज़ाम भी कमेटी के ही हाथों में है। यहाँ की आमदनी तथा खर्च सन् १९०३, ४ में करीब १८५००) का था।

करांची में सबसे त्रुटिपूर्ण बात है पानी की कमी। यहाँ के बहुत से कुएँ तो पानी पीने के काम में ही नहीं आते। हाँ, सिपाहों में कुछ कुएँ काम देते हैं। बंदर पर रहने वाले और सिपाहियों के लोग लाँचों द्वारा पानी प्राप्त करते हैं जो कि छावनी से लाया जाता है। बरफ बनाने के लिये कोटरी नामक स्थान से रेल के द्वारा पानी आता है। इसी प्रकार की कमी को पूर्ण करने के लिये सन् १८८२ में मलिर नामक नदी से एक बड़ी नहर करीब १८ मील लम्बी काट कर यहाँ लाई गई है। इसमें करीब ५ लाख रुपैया खर्च हुआ। इस नहर के आजाने से करांची

उस समय आपके इस कार्य की मजाक करते थे, मगर आप उनकी कुछ भी परवाह न कर दृढ़ चित्त से अपना काम करते जाते थे। संवत् १९४५ में आपने इस खरीदी हुई जमीन में अपना ऑफिस, दुकान, गोदाम और रहने का मकान बनवाया।

गोवर्द्धनदास मार्केट की स्थापना—

करॉंची में गोवर्द्धनदास मार्केट की स्थापना इस फर्म के इतिहास में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना है। इस मार्केट के बनने के पूर्व कपड़े का बाजार अत्यन्त तङ्ग और गन्दी गलियों में लगा करता था। इन गलियों में हमेशा अत्यन्त दुर्गन्ध आया करती थी, जिससे व्यापारियों को बहुत अधिक कष्ट होता था। सेठ साहब का ध्यान इस कष्ट की ओर आकर्षित हुआ और आपने एक सुव्यवस्थित मार्केट बनाने की कल्पना कपड़े के व्यापारियों के सम्मुख रक्खी। और उसके अनुसार आपने संवत् १९५० में मार्केट की नींव डाल दी।

यहाँ एक बात लिख देना आवश्यक है कि इतना बड़ा मार्केट तयार करने के लिए भी सेठजी ने किसी इंजिनियर से नक्शा नहीं बनवाया प्रत्युत खुद अपने ही बुद्धिबल से आपने एक साधारण मिस्त्री से नक्शा बनवा कर कार्य प्रारम्भ कर दिया। दो वर्ष के पश्चात् जब मार्केट बन कर तयार हुआ तो उसे देख कर अच्छे २ इञ्जीनियरों ने आश्चर्य प्रकट किया। मार्केट जितना मजबूत बना उतना ही सुन्दर और सुविधाजनक भी है। इसी मार्केट की प्रतिद्वन्द्विता में यहाँ पर दो मार्केट और बने, और कुछ समय तक इनकी वजह से सेठ साहब को हानि भी उठाना पड़ी पर आगे जाकर समझौता हो गया और मार्केट का कार्य भली प्रकार चलने लगा।

प्लेग का प्रकोप—

इसी समय करॉंची में एक घटना और हो गई जिसका उल्लेख करना यहाँ पर आवश्यक है और जिससे सेठजी के असीम धैर्य और उत्कट साहस का पता चलता है। संवत् १९५३ में करॉंची में भीषण प्लेग चल निकला। जिससे लोग करॉंची छोड़ २ कर बेतहाशा भागने लगे। चारों ओर लाशों और बीमारों का भयङ्कर दृश्य नजर आने लगा। ऐसे समय में आपको बुलाने के लिए बीकानेर से तार पर तार आने लगे। मगर इस विकट परिस्थिति में भी आपका चित्त विचलित न हुआ। इस भीषण समय में आपकी परोपकार-परायणता का पूरा परिचय मिला। आप डाक्टरों के साथ में करॉंची के मुहल्ले २ में जाकर बीमारों को देखते, उनको आश्वासन देते और उनकी उचित सहायता करते थे। मार्केट के सब दुकानदार अपना २ माल असबाब छोड़ कर भग गये थे, उनके माल असबाब की आपने रक्षा की।

इसी असीम सहिष्णुता, धैर्य और व्यापारिक दूरदर्शिता का परिणाम यह हुआ कि आपको अपने उद्योग में असीम सफलता मिली, और आप अत्यन्त साधारण स्थिति से उठकर केवल

स्वावलम्ब से भारत के नामी २ व्यापारियों में गिने जाने लगे। आज भी करांची का यह सुप्रसिद्ध मार्केट आपकी कीर्ति और धैर्य्य का देदीप्यमान स्मारक है।

करांची की दुकान पर आपके साथ आपके बहनोई सेठ गोवर्द्धनदास जी मूंदड़ा काम करते थे। आपकी विद्यमानता में सेठ साहब बड़े निश्चिन्त रहते थे। सम्वत् १९६२ में आपका स्वर्गवास हो गया, जिससे सेठ साहब को अत्यन्त दुःख हुआ। सेठ गोवर्द्धनदासजी मूँदड़ा के दो पुत्र हुए सेठ रामरतनजी और सेठ चांदरतनजी। इनमें से सेठ रामरतनजी मूंदड़ा का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया। इस समय सेठ चांदरतनजी इस फर्म में कार्य्य कर रहे हैं आपका परिचय आगे दिया जायगा।

श्रीयुत रामरतनजी मूँदड़ा बड़े ही होनहार और परिश्रमी थे। आपके कार्य्य से सेठ साहब बड़े निश्चिन्त रहते थे। आपकी अकाल मृत्यु से मोहता परिवार को अत्यन्त खेद हुआ। तथा काम अधिक नहीं बढ़ाया गया। आपका भी पब्लिक लाईफ बहुत उत्कृष्ट था। आप भी करांची और बीकानेर में बहुत लोकप्रिय थे। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम दुर्गादासजी है।

आपके पश्चात् आपके भाई चांदरतनजी ने कार्य सम्हाला। इस समय आप उपरोक्त फर्म के सब काम भली प्रकार सम्हालते हैं। कपड़े के व्यापारियों में आप बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाते हैं। गवर्नमेंट ने आपको करांची में आनरेरी मजिस्ट्रेट के पद से सम्मानित कर रक्खा है।

सार्वजनिक कार्य्य—

अर्थ संचय के साथ ही साथ सेठ गोवर्द्धनदासजी ने धार्मिक और सार्वजनिक कार्य्यों में भी खुले हाथों से दान दिया। वैसे तो आपके सार्वजनिक कार्यों की लिस्ट देना एक प्रकार से असम्भव ही है क्योंकि आपके कई दान तो ऐसे होते थे जिनकी कानों कान खबर भी नहीं होती थी फिर भी उनके कुछ प्रसिद्ध कार्य्यों का विवरण इस प्रकार है।

१—सम्वत् १९४८ में जब बीकानेर रेलवे लाइन बनी तब वहाँ के स्टेशन पर एक धर्मशाला की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः आपने तथा सेठ लक्ष्मीचंदजी और सेठ जगन्नाथ जी ने राज्य से जमीन लेकर वर्तमान विशाल धर्मशाला बनवाई। यह धर्मशाला आज भी अपनी उसी उन्नत हालत में मोहता परिवार की स्मृतियों को जीवित रख रही है। इस धर्मशाला में एक आयुर्वेदिक औषधालय तथा संस्कृत पाठशाला भी है। इसके बनवाने में करीब १॥ लाख रुपया लगा है। तथा इसके खर्च को चलाने के लिये दो लाख का फण्ड अलग किया हुआ है।

२—संवत् १९६५ में आपके छोटे पुत्र श्रीयुत मूलचन्दजी का केवल १६ वर्ष की आयु में

देहावसान हो गया। यह एक ऐसी घटना थी जो सेठ साहब के चित्त पर काफी बुरा असर डाल सकती थी मगर इस कठिन समय में भी आपने असीम साहस और धैर्य्य से काम लिया और और सारासार विवेक को न खोकर मूलचन्दजी के स्मारक में एक "मोहता मूलचन्द विद्यालय" खुलवाया। इसके भवन-निर्माण में करीब ५० हजार रुपया लगा और इसके निर्वाह के लिए करॉंची के एक मकान का ट्रस्ट बनवा दिया जिसका मूल्य अभी तीन लाख रुपया अनुमान किया जाता है।

३—सिन्ध में आँखों की बीमारी का प्रकोप अधिक रहता है और इसके निवारण के लिए उस समय कोई विशेष साधन न था। अतएव आपने ७०००० की लागत से करॉंची में मोहता मोतीलाल गोवर्द्धनदास नामक आँख का अस्पताल खुलवाया।

४—बीकानेर शहर के दक्षिणी कोण पर आपने करीब ४०००० की लागत से विस्तृत भूमि पर एक धर्मशाला तथा प्याऊ बनवाई।

इसके अतिरिक्त कई बार अकाल के टाइम पर तथा और २ समयों पर लाखों रुपयों का दान किया। कहने का मतलब यह कि करॉंची में शायद ही कोई ऐसा पब्लिक कार्य्य या पब्लिक संस्था होगी जिसमें आपने कुछ न कुछ दान न दिया हो। देहावसान के समय में आपने एक लाख बीस हजार रुपया अपनी भाईबेटियों को तथा करीब साठ हजार रुपया भिन्न २ रूपों में दान किया।

आपकी इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर गवर्नमेण्ट ने आपको "राय बहादुर" और ओ० बी० ई० की प्रतिष्ठित पदवियों से सम्मानित किया।

देहावसान—

सम्वत् १९७५ के भाद्रपद मास से आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होने लगा जिससे आप करॉंची छोड़ कर बीकानेर आ गये। आपकी इच्छा इलाज करवाने की न थी मगर सब लोगों के आग्रह से आपने इलाज करवाना स्वीकार किया, मगर इस रोग से आपको पूर्ण आरोग्य लाभ न हो सका और संवत् १९७६ की वैशाख सुदी सप्तमी को आपने उठते ही हरिद्वार चलने की आज्ञा दी। तदनुसार सब लोग स्पेशल ट्रेन से हरिद्वार को रवाना हो गये। वहाँ पहुँच कर आपने अपनी इच्छानुसार गंगास्नान किया। जप-जाप करवाये और अपने सब मनोरथ पूर्ण कर वैशाख सुदी ११ को देहत्याग किया।

आपके स्वर्गवास होने के समाचार सुन कर करॉंची और बीकानेर में शोक छा गया। आपके वियोगजनित दुःख में करॉंची का मार्केट बन्द रक्खा गया। कई प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं ने आपके लिए समवेदनासूचक एडिटोरियल नोट लिखे। तथा उनके कुटुम्बियों को देश विदेश से सैकड़ों सहानुभूतिसूचक तार व पत्र आये।
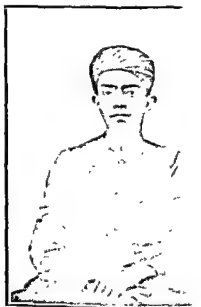
मतलब यह कि सेठ गोवर्द्धनदासजी का जीवन प्रारम्भ से अन्त तक उत्कृष्ट मानव-जीवन का एक सर्वोत्कृष्ट नमूना है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

सेठ गोवर्द्धनदासजी के तीन पुत्र हुए। (१) श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता (२) रा० ब० शिवरतनजी मोहता (३) श्रीयुत मूलचन्दजी मोहता। इनमें से श्रीयुत मूलचन्दजी मोहता के असामयिक स्वर्गवास का विवेचन पहले किया जा चुका है। शेष दोनों भ्राताओं ने अपने सत्कार्यों से किस प्रकार अपने पूज्य पिताजी की स्मृति को उज्ज्वल किया यह आगे मालूम होगा।

श्रीमान् रामगोपालजी मोहता

आप श्रीमान् सेठ गोवर्द्धनदासजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका जीवन बड़ा ही परोपकारपूर्ण रहा है। इस समय तो आप व्यापारिक कार्यों से रिटायर होकर सात्विक और ऋषितुल्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मगर इसके पूर्व आपका व्यापारिक जीवन भी अत्यन्त गौरव-पूर्ण रहा है यद्यपि आपके समय में बीकानेर में अंग्रेजी की शिक्षा का प्रचार न था। फिर भी आपका अंग्रेजी ज्ञान बहुत ऊँचे दर्जे का है। आपने अपने पिताजी के स्थापित किये हुए व्यापार को बहुत तरक्की दी। छोटी उम्र से ही आपने व्यापारिक कार्य्य में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था और अपने पिताजी के जीवनकाल ही में आपने व्यापार को बखूबी सम्हाल लिया था व्यापारिक बुद्धि आपकी बड़ी प्रखर थी। करीब २० वर्ष पूर्व आपने व्यापार साहित्य पर एक अच्छी और उपयोगी पुस्तक निकाली थी। आपने करोंची में मेसर्स हरमन मोहता कम्पनी में अपना साझा डाला और आज तो इस कम्पनी के अधिकांश शेयर आप ही की फर्म के पास है। यह कम्पनी केवल करोंची ही में नहीं, प्रत्युत सारे उत्तर पश्चिमी भारत में अपने ढङ्ग की सब से बड़ी है। इसका परिचय आगे दिया जायगा।

सेठ रामगोपालजी का जीवन न केवल व्यापारिक ही रहा प्रत्युत सार्वजनिक और समाज सुधार के कार्य्यों में भी आपने भारतवर्ष में एक उदार आदर्श उपस्थित कर दिया है। सामाजिक क्रान्ति के आप एकान्त पक्षपाती और सुधार के उपासक हैं। आध्यात्मिक जीवन भी आपका बड़ा उत्कृष्ट है। आप वेदान्तदर्शन के अच्छे विद्वान् हैं। हाल ही में "सात्विक जीवन" नामक एक उत्कृष्ट पुस्तक प्रकाशित कर आपने मुफ्त में बाँटी है।

रायबहादुर सेठ शिवरतनजी

आप राय बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९४५ की श्रावण सुदी ८ में हुआ। आपका भी व्यापारिक और सामाजिक जीवन बड़ा उत्कृष्ट है। करोंची में आप जितने लोकप्रिय हैं उतना व्यापारिक समाज में शायद ही कोई दूसरा व्यक्ति

होगा। अमीर और गरीब सब आपको हृदय से चाहते हैं खास कर यहाँ के हिन्दू-हितों के लिए तो आप जीवन-स्वरूप हैं आपने अपने घर में परदा-सिस्टम के समान भयङ्कर कुप्रथा को तोड़ कर मारवाड़ी समाज में एक अच्छा आदर्श उपस्थित किया है। आप करॉंची के पीस गुड्स एसोसियेशन के प्रेसिडेण्ट, मारवाड़ी विद्यालय के प्रेसिडेण्ट, हिन्दी साहित्य भवन के प्रेसिडेण्ट तथा हिन्दू जिमखाना के प्रेसिडेण्ट हैं। मतलब यह कि करॉंची के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य्य में आपका कुछ न कुछ हाथ अवश्य रहता है। सन् १९२८ में गवर्नमेण्ट ने आपको राय बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया। बीकानेर दरबार में भी आपका बहुत अच्छा सम्मान है। वहाँ की लेजिस्लेटिव एसेम्बली के आप नॉमिनेटड मेम्बर हैं। हाल ही में जोधपुर स्टेट से आपको अस्सी लाख रुपये का बिल्डिंग कण्ट्राक्ट मिला है। अभी तक शायद ही किसी भारतीय को इतना बड़ा कण्ट्राक्ट मिला होगा।

कुँवर गिरधरलालजी

आप राय बहादुर सेठ शिवरतनजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। बड़े उत्साही और होनहार है। आप राजस्थान नवयुवक-मण्डल करॉंची के प्रेसिडेण्ट हैं। आप भी व्यापार में भाग लेते हैं।

सार्वजनिक कार्य्य

ऊपर जिन सार्वजनिक कार्य्यों का वर्णन किया गया है वे सब रा० ब० गोवर्द्धनदासजी के हाथों से किये हुए हैं। आपके पश्चात् सेठ रामगोपालजी ने तथा सेठ शिवरतनजी ने और भी लाखों रुपयों का दान कर अपनी असीम उदारता और दानवीरता का परिचय दिया है। आपके किये हुए दानों में से कुछ २ मुख्य २ कार्य्यों का परिचय इस प्रकार है।

१—हिन्दू अनाथालय करॉंची—यह आश्रम करीब चार वर्ष पूर्व स्थापित किया गया। इसका ट्रस्ट २॥ लाख रुपये का है। इस ट्रस्ट से करॉंची हिन्दू अनाथालय, बीकानेर का हिन्दू अनाथालय और वनिताश्रम ये तीन संस्थाएँ चलायी जाती हैं।

२—हिन्दू अनाथाश्रम बीकानेर—यह आश्रम भी अनाथ विद्यार्थियों को आश्रय और शिक्षा देने के लिए बनाया गया है। यह भी उपरोक्त ट्रस्ट फण्ड से चलता है। इसके अतिरिक्त हाल ही में आपने जोधपुर में एक अनाथालय खोलने के लिए एक लाख रुपया और प्रदान किया है।

३—हिन्दू वनिताश्रम बीकानेर—यह आश्रम निराश्रित और समाज-द्वारा प्रताड़ित स्त्रियों को आश्रय देने के लिए स्थापित किया गया है। इसकी एक शाखा करॉंची में भी है।

४—हिन्दू जिमखाना—यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी ने हिन्दू और मुसलमानों को जिमखाना बनाने के लिए बहुत समय पूर्व जमीन दी थी। बहुत दिनों तक द्रव्य के अभाव से जिमखाना

माहता पैलेस (हवाबन्दर) करांची

नहीं बन सका तब आपने ३५०००) देकर यह जिमखाना बनवाया। इस जिमखाने में सब प्रकार के स्पोर्ट् की शिक्षा दी जाती है।

५—रामरतन गोवर्द्धनदास मूंदड़ा लायब्रेरी एण्ड हॉल—इस नाम से करीब १५००० की लागत से म्यूनिसिपैलिटि की जमीन पर एक लायब्रेरी और हॉल बनाया गया है।

६—मोहता मूलचन्द बोर्डिंग हाउस—ऊपर जिस मोहता मूलचन्द विद्यालय का विवेचन किया गया है। उसके साथ ही विद्यार्थियों के रहने के लिये यह हाउस बनाया गया है इसमें अभी करीब ७५ विद्यार्थी रहते हैं। जिनमें कई फीस देकर और कई बिना फीस रहते हैं।

इसके अतिरिक्त बाबू गिरधरलालजी के शुभ विवाह के उपलक्ष में आपकी ओर से १५१०००) का दान किया गया। जिसमें से ५१०००) लण्डन में शिवमन्दिर बनाने के लिए २५०००) हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए तथा शेष रकम और २ संस्थाओं को दी गई।

इसके अतिरिक्त और २ कार्यों की लिस्ट देना तो एक प्रकार से असम्भव ही है। मतलब यह कि प्रत्येक शुभ और अच्छे कार्य में आपकी ओर से हमेशा कुछ न कुछ जरूर दिया जाता है।

व्यापारिक परिचय

१—मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास करांची (T. A. Marketwala)	यह फर्म बैंकर्स और लैण्ड लॉर्डस् है। करांची का सुप्रसिद्ध गोवर्द्धनदास मार्केट तथा मोहता बिल्डिंग तथा और बहुत से बड़े २ मकानात इसके अण्डर में हैं। जिनसे किराये की प्रचुर आमदनी होती है।
२—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल करांची (T. A. Badaseth)	इस फर्म पर सब प्रकार के कपड़े का थोक व्यापार होता है।
३—मेसर्स रामगोपाल शिवरतन करांची	इस फर्म पर प्रिण्टेड और रंगीन कपड़े का थोक व्यापार होता है।
४—मेसर्स शिवरतन चांदरतन	इस पर छींट और फैन्सी कपड़े का थोक व्यापार होता है।
५—मेसर्स एलिगर मोहता एण्ड कं० लि० (T. A. Mohta)	यह फर्म जॉन ग्लैन एण्ड कम्पनी ग्लासगो की सोल एजण्ट तथा अन्य कई कम्पनियों के कपड़े विभाग की एजण्ट हैं। इस पर इन्श्युरेन्स का काम भी होता है।

६—मेसर्स हरूमल मोहता एण्ड कं० लि० (T. A. Expension) — इस फर्म के भी अधिकांश शेअर आप ही के पास हैं। यह फर्म इञ्जीनियर और शिप बिल्डर्स है। यह कई बड़ी २ कम्पनियों की सोल एजण्ट्स तथा एजण्ट है। इसकी ब्रांचेस लाहौर और मेरठ में हैं।

७—दिल्ली—मेसर्स शिवरतनदास रामगोपाल चांदनी चौक T.A.Mohatta — इस फर्म का यहाँ आफिस तथा दुकान दोनों ही हैं। यहाँ पर पीसगुड्स का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स शिवरतनदास रामगोपाल (जनरलगंज T. A. Tredgoods) — यहाँ भी पीसगुड्स का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल ६९ स्ट्राण्ड रोड — यह फर्म स्टिनर्स कम्पनी की बेनियन और सोल डिलर्स है। इसके अण्डर में तीन दुकानें हैं। सब पर रंगीन कपड़े का काम होता है। कलकत्ते का सुप्रसिद्ध गणेशभवन भी आपका ही है। भरिया में सीतानाला, कोहिनूर और इष्टनन्दी नामक आपकी तीन कॉलेरिज हैं जिसका कोयला इतना उत्तम है कि जोधपुर और बीकानेर रेलवे इस कोयले के मिलते हुए दूसरा लेना पसन्द नहीं करती।

बीकानेर—मेसर्स मदनसुख मोतीलाल—इस फर्म पर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

इसके अतिरिक्त करांची में मेसर्स रामगोपाल शिवरतन के नाम से यह स्टिनर्स कम्पनी की सिन्ध, पंजाब, दिल्ली और यू० पी० के लिए सोलडिलर्स है।

इस फर्म का करांची में क्लिफ्टन पर एक सुन्दर मोहता पैलेस करीब ५ लाख की लागत का बना हुआ है। करांची के दर्शनीय स्थानों में यह भी एक है। इसका फोटो इस ग्रन्थ में दिया जा रहा है।

मेसर्स किशनदास फतेचन्द एण्ड सन्स

यह फर्म करांची में बहुत पुरानी है। करांची शहर जिस समय एक छोटे से गाँव के रूप में था, तभी से इस फर्म के मालिक यहाँ पर बसे हुए हैं। सबसे पहले सेठ फतेचन्द ने इस फर्म को यहाँ पर स्थापित किया। आपका बिजिनेस डायरेक्ट चीन के साथ था। तथा बम्बई,

हिन्दू जिमखाना बिल्डिंग (मोतीलाल गोवर्द्धनदास) करांची
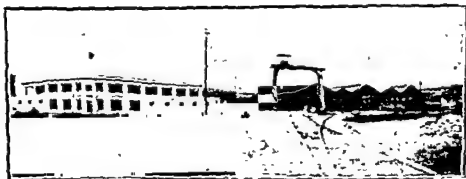
ऑफिस एण्ड वर्क ऑफ हरमन एण्ड मोहता लिमिटेड करांची

पंजाब और सिन्ध में आपकी करीब ४० ब्रान्चेस थीं। आपका स्वर्गवास करीब ४३ वर्ष पूर्व होगया। आपके पाँच पुत्र थे। उनके नाम क्रमशः श्रीयुत् होतचन्दजी, श्रीयुत् विशनदासजी, श्रीयुत् ठाकुरदासजी, श्रीयुत् रतनचन्दजी और श्रीयुत् रेवाचन्दजी हैं। इन पाँचों भाइयों के फर्म संवत् १९५५ में अलग २ हो गये। इनमें से यह फर्म सेठ विशनदासजी का है। सेठ विशनदासजी का स्वर्गवास सन् १९२७ ई० में ५७ वर्ष की आयु में हो गया। आपके इस समय एक पुत्र है। जिनका नाम श्रीयुत जमनादासजी है। आप सिन्धी-लुहाना (सराई) जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म की ओर से दान और सार्वजनिक कार्य्य भी बहुत हुए हैं। आपकी ओर से करांची में फतेचन्द देवनदास खिलनानी हॉल बना हुआ है जो ए० ई० डी० नामक इन्जीनियरिंग कॉलेज को दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त दयाराम जेठानन्द खिलनानी हॉल और लायब्रेरी रेवर रोड पर आपकी ओर से बनाई गई है। इसमें भी लाइब्रेरी और लेक्चर हॉल है। इसके अतिरिक्त गोकुल में आपकी ओर से एक धर्मशाला तथा पब्लिक पार्क और कुआँ बना हुआ है। इसके सिवा जनाना अस्पताल बनाने के लिए सेठ फतेचन्दजी के नाम से पचपन हज़ार का एक ट्रस्ट फण्ड भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स विशनदास फतेचंद एन्ड सन्स बम्बई बाजार (T. A. Mourdhwaja)	इस पर खासकर कपड़े का बहुत बड़ा इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग बिजिनेस भी बहुत अधिक होता है। यह फर्म करांची में बहुत बड़ी लैंण्ड लॉर्ड्स है। कमीशन एजन्सी का भी यहाँ पर काम होता है।

वैद्यराज महाराज पंडित सुंदरलालजी इच्छापूरन, वैद्यवाचस्पति

प्राचीन समय में नौशेरवाँ बादशाह के समय श्रीमान् महाराज पण्डित गंगारामजी कौल राजवैद्य हुए थे। जिन्होंने महत्वपूर्ण आयुर्वेदीय चिकित्सा का अपूर्व ग्रन्थ वैद्यकसार संग्रह नामक रचा है। इसके पश्चात् जम्मू व काश्मीर नरेश श्रीमान् महाराजा गुलाबसिंहजी के समय में प्रधान राजवैद्य श्रीमान् महाराज पण्डित सीतारामजी कौल हुए थे। तब से लेकर आज तक आपके पूर्वज सभी प्रशंसनीय लब्धप्रतिष्ठ राजवैद्य हुए हैं। इस समय में भी आपके ज्येष्ठ भ्राताजी श्रीमान् महाराज पण्डित मधुसूदनजी नामा स्टेट के प्रधान राजवैद्य हैं। और श्रीमान् महाराज पण्डित दूनीचंद गाँव प्रागपुर जिला कांगड़ा में प्रसिद्ध वैद्यराज हैं।

आपके वृद्ध लोग पूर्वकाल में तो काश्मीर निवासी थे, परन्तु कुछ समय से जिला कांगड़ा में नागपुर ग्राम के वासी हुए। आपका जन्म संवत १९१५ विक्रमी में नागपुर ग्राम में हुआ है। आप इस समय करांची नगर में सुप्रसिद्ध रईस, लेन्डलोर्ड और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने आयुर्वेद का बहुत ही प्रचार किया है। लगभग ५० पचास वर्ष तक चिकित्सा का कार्य बड़े कमाल के साथ करांची नगर में किया है जब कि करांची की जनता देशी वैद्यक चिकित्सा तथा देशी वैद्य के नाम से घबराती थी और नाम सुनना भी पसंद नहीं करती थी ऐसे समय में आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रचार करना यह आपका ही पुरुषार्थ है। आपके पुरुषार्थ से आयुर्वेदीय चिकित्सा की महत्ता जनता के हृदय पर अंकित हुई और जनता ने विश्वास किया कि हमारी प्राचीन चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेदीय ही है। आपके पास राजा महाराजाओं के दिये हुये बहुत से प्रशंसापत्र हैं और गवर्नमेंट के तरफ से भी उच्चकोटी के ऑफिसरों के दिये हुए बहुत से प्रशंसापत्र हैं।

आपने प्लेग के समय में हैजे की चिकित्सा चेलेन्ज दे दे कर अन्य चिकित्सकों की समानता में आयुर्वेदीय पद्धति के अनुकूल की थी और आयुर्वेदीय चिकित्सा का डंका बजा दिया था। जिससे आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रभाव जनता पर ऐसा पड़ा कि विदेशी चिकित्सा-पद्धतिवालों ने भी मुक्त कंठ से प्रशंसा आयुर्वेदीय चिकित्सा की की। और शनैः शनैः आयुर्वेदीय चिकित्सा की उन्नति सिंध प्रांत में अच्छी प्रकार से हुई और आज दि ऑल इण्डिया आयुर्वेदिक कान्फ्रेंस होने का सौभाग्य करांची नगर को प्राप्त हुआ है।

जनता के उपकारार्थ तथा आयुर्वेद से अत्यन्त प्रेम होने के कारण धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालय वृहत् रूप में खोलने का निश्चय किया है जो कि ईश्वर की असीम कृपा से यावत् चन्द्रदिवाकर रु० ५०० पाँच सौ माहवार के खर्च से चलाया जायगा। इस औषधालय का उद्घाटन ऑल इण्डिया आयुर्वेदिक के कान्फ्रेंस अवसर पर ५-१-३० को बड़े समारोह से सब वैद्यों और शहर के प्रतिष्ठित लोगों को इकट्ठा कर के किया गया। इस औषधालय में बिना किसी जातीय भेदभाव के करीब १५० रोगी रोज औषधि पाते हैं। यह संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आप दानवीर तथा अत्यन्त उदार पुरुष हैं। आपने अपने जीवन में हजारों रुपये का दान बहुत सी संस्थाओं को प्रदान किया है। आपकी प्रशंसा में जितना भी परिचय दिया जाय वह थोड़ा ही है।

आपकी बहुत सी जायदादें मकानें करांची में हैं। सिनेमा के लिए एक थियेटर हॉल भी आपने बनवाया है जिससे किराये की काफी आमदनी होती है

कॉटन एण्ड ग्रेन मरचेंट्स

मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड को०

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ अर्जुन खीमजी और देवजी खीमजी और उनके दो लड़के सेठ भवानजी अर्जुन और सेठ भागजी देवजी हैं। आप जैन धर्मावलम्बी दसा ओसवाल हैं। आपका रहना तेरा (कच्छ) में है। इस फर्म का हेड ऑफिस बम्बई में है। बम्बई में यह फर्म करीब ३५ वर्ष से स्थापित है। करांची में इस फर्म को स्थापित हुए करीब तीन वर्ष हुए। इस दुकान का मैनेजमेण्ट श्रीयुत शाहमूलजी भाई भोगीलाल करते हैं। आप करांची फर्म के एक्सपोर्ट डिपार्टमेण्ट के वर्किंग पार्टनर भी हैं।

इस फर्म के मालिक दान, धर्म और सार्वजनिक कामों में हमेशा दान देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड को० आउट्रम रोड़फोर्ट (T. A. kal ooladhu, chidan and)	इस फर्म पर रुई का जत्था तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है। यह फर्म विलायत तथा जापान को रुई का एक्सपोर्ट भी करती है।
करांची—मेसर्स अर्जुन खीमजी कैम्पबैल स्ट्रीट (T. A. chidanand)	इस फर्म पर रुई का एक्सपोर्ट और बाइंग होता है।

इसके अतिरिक्त कारंजा, धारवा, मोतीबाग, हुबली, अमलनेर, खामगाँव, मलकापुर इत्यादि स्थानों पर भी आपकी ब्रान्चेस हैं। जहाँ पर रुई की खरीदी का काम होता है। सब स्थानों पर आपकी दुकानें बहुत पुरानी हैं। इसके अतिरिक्त काटोल (C. P.) में आपकी जीनिंग फेक्टरी भी है।

मेसर्स अब्जूमल जगतराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान टंडोजाम (हैदराबाद) में है। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत अब्जूमलजी हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना यहाँ पर सेठ जगतरायजी ने की। आपका स्वर्गवास हो चुका है। इस फर्म के मालिक सेठ अब्जूमलजी टंडोजाम में रहते हैं। करांची फर्म का मैनेजमेण्ट नेहचलदासजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस-टंडोजाम (हैदराबाद) मेसर्स अज्जूमल जगतराय	यहां पर आपकी कॉटनजीन और प्रेस है। तथा रूई का व्यापार होता है।
करांची-मेसर्स अज्जूमल जगतराय प्रोरी गार्डन (T. A. Achhera)	यहाँ पर कॉटन बिजिनेस और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
हैदराबाद सिन्ध— मेसर्स अज्जूमल जगतराय फुलेली (T. A. Rajawir)	यहाँ पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा रूई का व्यापार होता है।

दी कराँची कॉटन कम्पनी

इस फर्म की स्थापना सन् १९२९ में हुई। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ छोटालाल खेतशी ने की। आपका मूल निवास-स्थान सायला (काठियावाड़) में है। आप जैन धर्मावलम्बी श्रीमाली वैश्यजाति के सज्जन हैं। इसके पहले आप करीब २५ वर्षों से रूई का व्यापार कर रहे हैं। पहले आप मेसर्स किलाचन्द देवचन्द की बम्बई की फर्म में पार्टनर थे। उसके बाद कराँची में मेसर्स लालजी नारायणजी की फर्म में पार्टनर हुए। सन् १९२८ तक आप इस फर्म में पार्टनर रहे। पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया।

श्रीयुत छोटालाल भाई का जीवन सार्वजनिक रूप में भी बहुत अच्छा रहा है। पहले आप कराँची इण्डियन मर्चेण्ट एसोसियेशन के ज्वाइण्ट सेक्रेटरी थे। अभी भी आप इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन, बायर्स एण्ड शिपर्स एसोसियेशन तथा कराँची पांजरापोल के मेम्बर हैं। धार्मिक और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर आपका बहुत लक्ष्य है। हर एक अच्छे कार्य्य में आप उदारता से दान देते रहते हैं।

सन् १९२६ में जो बड़ौदा में भीषण फ्लड हुआ था उसमें आपने कराँची से बड़ा भारी चन्दा करवा कर भिजवाया था।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दि कराँची कॉटन कम्पनी सराय रोड (T. A. stock)	इस फर्म पर ग्रेन और कॉटन का व्यापार तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट भी करती है।

मेसर्स सुखचन्द दामोदरदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १८८-१८९ पर दिया गया है। इसका करांची का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स सुखचन्द दामोदरदास बम्बई बाजार (T. A. Vagh)-यहाँ एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट तथा कमीशन का काम होता है।

मेसर्स गिरधारीदास जेठानन्द

इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १८७-१८८ में दिया गया है। करांची का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स गिरधारीदासजी जेठानन्द बम्बई बाजार (T. A. Atmarupi)-यहाँ से अनाज, प्लाण्ट और कांकी का एक्सपोर्ट होता है।

मेसर्स गोकुलमल डोसामल

इस फर्म के मालिक करांची निवासी लुहाना रघुवंशी जाति के हैं इस फर्म को सेठ गोकुलमलजी ने स्थापित किया। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३६ पर चित्र सहित दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मतचन्द दीपचन्द हैं।

करांची—मेसर्स गोकुलमल डोसामल कम्पनी (T. A. ghee)—यहाँ पर एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का व्यवसाय और कमीशन एजन्सी का काम होता है

मेसर्स चाण्डूमल बलीराम मुखी

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १९८ पर दिया गया है। करांची का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स चाण्डूमल बलीराम (T. A. Bu...)-यहाँ हाजिर कपड़ा, गल्ला चाँदी, सोना तथा कमीशन का काम होता है।

मेसर्स चैथेरी एण्ड ठाकरसी लिमिटेड

यह एक प्रायवेट लिमिटेड कम्पनी है। इसके मैनेजिंग डायरेक्टर सेठ ठाकरसी हीरजी और मि० लैंडरियल चैथेरी हैं। इस फर्म का इण्डियन हेड ऑफिस बम्बई तथा फारेन हेड

ऑफिस पेरिस में है। यह फर्म बम्बई में करीब ५, ६ साल से स्थापित है। करांची में इसका ब्राञ्च सन् १९२६ में खुला है। करांची में इस फर्म का मैनेजमेण्ट मि० बी० आर० चल्लम करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स चैचेटो एण्ड टाकरसी लिमिटेड पेटिटबिल्डिंग एलफिन्स्टन सर्कल (T. A. Chacaty)	यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट करती है।
पेरिस—मेसर्स चैचेटीफ्रेरफर्म	यहाँ पर यह फर्म कॉटन का इण्डिया से इम्पोर्ट करती है।
करांची—मेसर्स चैचेटो एण्ड ठाकरसी लि० (T. A Chachaty)	यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट करती है।
न्यूयार्क—मेसर्स रमोचैचेटो	यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन, ऊन और इण्डियन मटेरियल्स का काम करती है।

मेसर्स रायबहादुर चम्पालाल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक ब्यावर के मूलनिवासी हैं। आप अग्रवाल जाति के जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीमान् रायबहादुर चम्पालालजी तथा उनके पुत्र रायसाहब मोतीलालजी तथा अन्य हैं। आपका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग में दिया गया है।

करांची फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुत इन्द्रलालजी काला जयपुर निवासी करते हैं। आप बड़े सज्जन और योग्य व्यक्ति हैं। करांची के व्यापारिक समाज में आपका अच्छा प्रभाव है।

करांची में इस फर्म पर रुई, गल्ला का व्यापार तथा सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म विलायत को रुई का एक्सपोर्ट भी करती है। (T.A. Raniwala) इसका हेड ऑफिस ब्यावर में है।

मेसर्स लाला जसवन्तराय एण्ड सन्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला जसवन्तरायजी भूटानी एम. ए. हैं। आप अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान लुधियाना (पंजाब) है। करांची में यह फर्म १९११ से स्थापित है। पहले इस पर मेसर्स जसवन्तराय एण्ड कम्पनी लिमिटेड नाम पड़ता था। १९१८ से यह फर्म मेसर्स जसवन्तराय एण्ड सन्स के नाम से काम कर रही है। पहले १९१२ से १९२८ तक बम्बई में भी इस फर्म का ऑफिस था।

इस फर्म के प्रोप्राइटर लाला जसवन्तरायजी भूटानी एम. ए. करांची इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेण्ट हैं। करांची के रुई के व्यापारियों में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। सार्वजनिक कार्य्यों में आपकी रुचि और दानवीरता बहुत प्रसिद्ध है। आपकी ओर से करांची में पं० लखपतराय डी० ए० वी० हाईस्कूल नामक एक बहुत अच्छा हाई स्कूल चल रहा है। इसमें आपने ५००००) नगद और २४०००) की जमीन बिल्डिंग के लिए प्रदान की है इसके चेयरमन भी आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आपने अपनी स्वर्गीय धर्म-पत्नी के स्मारक में सुशीलाभवन नामक ४२ हजार की लागत का एक भवन बनाया है। इसमें आर्य समाज मन्दिर और प्रायमरी स्कूल हैं। इसके अतिरिक्त आप करांची म्युनिसिपल स्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। करांची की रुई की मण्डी में सुधार करने का प्रथम श्रेय आपको ही है। इसके अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द ट्रस्ट फण्ड के आप ट्रस्टी भी हैं। आप स्वदेशभक्त लाला लाजपत राय के घनिष्ट प्रेमियों में से एक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

करांची—मेसर्स जसवन्तराय एण्ड सन्स खोरी-गार्डन (T. A. Famous) Phone 171 — इस फर्म पर रुई का बहुत बड़ा व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। करांची के रुई के व्यापारियों में यह फर्म बहुत बड़ी है।

मेसर्स जैरामदास नाऊमल

इस फर्म के मालिक मूल निवासी करांची डिस्ट्रीक्ट ही के हैं। आप सिन्धी-लुहाना (भाईबन्ध) जाति के हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए करीब २० साल हुए। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत् जैरामदासजी हैं। आप श्रीयुत् नाऊमलजी के पुत्र हैं। इस फर्म की स्थापना श्रीयुत जैरामदासजी ने ही की।

इस फर्म के मालिकों की सार्वजनिक कार्यों की तरफ भी अच्छा लक्ष्य है। राजनीति तथा सामाजिक सभी कार्य्यों में आपकी ओर से सहायता दी जाती है।

इसके अतिरिक्त डोकरी (लरिकाना) नामक स्थान में आपका राईस मिल है।

इसका मैनेजमेण्ट सेठ सामलदास रजूमल सेठ सियालदास वरनमल और ईसरदास वरनमल करते हैं। आप तीनों ही सज्जन राजनैतिक और समाज सुधार के कार्य्यों में बहुत भाग लेते हैं। सेठ ईसरदासजी सामाजिक सुधार के बहुत बड़े कार्य्यकर्ता हैं।

यह फर्म इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन और करांची जॉइन कॉटन कमेटी के बोर्ड के मेम्बर है।

श्रीयुत ईसरदास भाई करांची म्युनिसीपैलिटी के मेम्बर और सिन्ध प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटी के मेम्बर तथा करांची में १९३१ में होनेवाली कांग्रेस के ट्रेझरर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस करांची—मेसर्स जैराम दास नाऊमल नई चाल (T. A. just)	इस फर्म पर रुई, गल्ला, विहलन का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म शिवाजी माम दाल एण्ड फ्लावरमिल की प्रोमाइटर है।

मेसर्स जेठादेवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्म का हेड ऑफिस बम्बई में है। इसके मालिक श्रीयुत जेठाभाई देवजी, गोकलदास देवजी, लखमीदास देवजी, नारायणदास जेठाभाई, भगवानदास जेठाभाई हैं। आपका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के पहले भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है।

करांची में यह फर्म सन् १९११ से स्थापित है। इसका मैनेजमेण्ट श्रीयुत लधाभाई सद्दवजी, तथा जीवनदास लधाभाई करते हैं। आप इस फर्म में मैनेजिंग पार्टनर हैं। आपका मूल निवास-स्थान वेड़ (जामनगर) में है। यह फर्म करांची इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसियेशन की मेम्बर है। सेठ लधाभाई पहले इंडियन मर्चेण्ट्स एसोसियेशन के वाईस प्रेसिडेण्ट थे।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस बम्बई-मेसर्स जेठादेवजी माण्डवी बम्बई	इस फर्म का परिचय पहले भाग में दिया गया है।
करांची—मेसर्स जेठाभाई देवजी कैम्पबैलस्ट्रीट (T. A. Fortify gedeo)	इस फर्म पर रुई, गल्ला, तिल्हन का कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट भी करती है।

करांची में इस फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुत भगवानदासजी केड़िया और श्रीयुत कन्हैयालालजी गुड़ालेवाला करते हैं। इनमें से श्रीयुत् भगवानदासजी का मूल निवास-स्थान रेवाड़ी और श्रीयुत् कन्हैयालालजी का मूल निवास-स्थान मुकुन्दगढ़ है। आप दोनों बड़े योग्य और सज्जन पुरुष हैं।

इस समय यह फर्म बर्मा ऑइल कम्पनी की बेनियन और शॉवॉलेस् कम्पनी के पीस गुड्स डिपार्टमेण्ट की ग्यारण्टीड बेनियन्स है। इसका एक ऑफिस बर्मा ऑइल कम्पनी के ऑफिस में तथा एक ऑफिस मेसर्स शॉवॉलेस कम्पनी के ऑफिस में है तथा इसकी दुकान बैलेस स्ट्रीट पर अपने निज के मकान में है। इसका तार का पता (Seth Poddar) है। इसके अतिरिक्त इस फर्म पर बैंकिंग ग्रेन, सीड्स, कॉटन का व्यापार तथा सब प्रकार की कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म इंडियन मर्चेण्ट्स एसोसियेशन और यार्न्स और पीसगुड्स एसोसियेशन की मेम्बर है। करांची के अत्यन्त प्रतिष्ठित और नामी व्यापारियों में इस फर्म का बहुत ऊँचा स्थान है।

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ २११ पर दिया गया है। करांची का परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स तुलसीदास मेघराज जोड़ी बाजार—T. A. Sabberwal—यहाँ पर शक्कर, ग़ल्ले, बैंकिङ्ग और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स तुरुस्तान कम्पनी लिमिटेड

इस कम्पनी के मालिक मेसर्स ज्वेलियन ब्रदरनर्स ही है। करांची में यह करीब १११ वर्ष से स्थापित है। इस फर्म का मैनेजमेण्ट एच० मायरलाल करते हैं। करांची में यह कम्पनी कॉटन का एक्सपोर्ट करती है। इस फर्म का हेड ऑफिस भी मेसर्स तुरुस्तान कम्पनी के नाम से है। यहाँ पर यह कम्पनी कॉटन, ग्रेन और पीस गुड्स का एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट और शिपिंग का काम करती है। करांची में इसका तार का पता [illegible] है। बम्बई में इसका तार का पता (T. A. cottrade) है। इस कम्पनी की ब्रान्चेज, कनाडा (जापान) तथा कोबी (जापान) में भी हैं।

मेसर्स देऊमल ईसरदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान शिकारपुर का है। आप चुगशारक जाति के सिन्धी सज्जन हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए ६ वर्ष हुए। इस फर्म का हेड आफिस शिकारपुर में है। यहाँ पर यह फर्म करीब ८० या १०० वर्ष से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना ईसरदासजी के पुत्र सेठ गैरीमलजी और देऊमलजी के पुत्र सेठ जेठानन्दजी तथा ईसरदासजी के पौत्र सेठ निश्चलदास ने की। इस समय इस फर्म के मैनेजिंग प्रोप्राइटर श्रीयुत सेठ निश्चलदास दीपचन्द हैं।

इस फर्म के मालिकों की दान, धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर बहुत रुचि रही है। बहुत से बड़े २ धार्मिक कार्य इस फर्म के मालिकों ने किये हैं। यहाँ तक कि शिकारपुर में श्रीयुत सेठ गैरीमलजी धर्मावतार कहे जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—शिकारपुर मेसर्स देऊमल ईसरदास T. A. Jerimal	इस फर्म पर खास व्यापार ऊन और सूखे मेवे का है। अफगानिस्तान से यह ऊन और सूखे मेवे का इम्पोर्ट करती है। इसके अतिरिक्त बैङ्किंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
२—शिकारपुर मेसर्स गैरीमल धर्मदास	यह फर्म गल्ले का बहुत बड़ा व्यापार तथा सब तरह की कमीशन एजन्सी का काम करती है। इसी फर्म के अण्डर में लारकाना (सिंध) में भी एक शाखा है। वहाँ यह फर्म चावल का व्यापार करती है।
३. सक्खर— मेसर्स गैरीमल लक्ष्मूमल (T. A. Tndigo)	यह फर्म मेसर्स फारवस एण्ड को० की ऊल डिपार्टमेण्ट की ग्यारण्टेड ब्रोकर है। तथा सैण्डर्ट आइल कम्पनी की भी सिन्ध के लिए ग्यारण्टेड ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त ऊन का व्यापार बहुत बड़े स्केल पर यह फर्म करती है। इस फर्म पर पहले नील का बहुत बड़ा व्यापार होता था।
४. करांची— मेसर्स देऊमल ईसरदास केमारी (T. A. Colgrain)	यहाँ पर यह रुई, गल्ला शीड्स का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी काम करती है। इस दुकान की मैनेजरी भाई टीलूमल पोकरदास और श्रीयुत शिवदयाल खेमचन्द करते हैं। आप बड़े शिक्षित और योग्य सज्जन हैं।

५. मुलतान— मेसर्स गैरीमल जेठानन्द (T. A. Tishunr)	यह फर्म फारवस कैम्पेल कम्पनी के उल डिपार्टमेण्ट की मुलतान जिला और फ्राण्टियर के लिए ग्यारण्टेड ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त ग्रेन, कॉटन, शीड्स का व्यापार और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
६. लायलपुर— मेसर्स गैरीमल जेठामल	यहाँ पर ग्रेन, कॉटन, शीड्स और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स घाड़ीराम जिन्दाराम

इस फर्म की स्थापना करांची में सन् १९१८ में हुई। शुरू २ में इस फर्म पर मेसर्स बिरामदास घाड़ीराम नाम पड़ता था। सन् १९२२ से इस फर्म का नाम मेसर्स घाड़ीराम जिन्दाराम पड़ने लगा। यहाँ पर यह फर्म श्रीयुत सेठ निहालचंदजी ने स्थापित की। आप श्रीराम सेठ घाड़ीरामजी के पुत्र हैं। आप लोग खत्री समाज के सद्गृहस्थ सज्जन हैं। आप लोगों का मूल निवास-स्थान मग्घाना (झंग) में है। श्रीयुत घाड़ीरामजी का स्वर्गवास सन् १९१४ में हो चुका है। श्रीयुत घाड़ीरामजी के चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत सुखावीरामजी, श्रीयुत निहालचन्दजी, श्रीयुत चमनलालजी और श्रीयुत काश्मीरीलालजी हैं। इस फर्म में सेठ जिन्दारामजी का साझा है। आप भी मग्घाना के रहनेवाले खत्री सज्जन हैं। इनके दो पुत्र रामदियामलजी और श्रीयुत जगतरामजी हैं। श्रीयुत जगतरामजी करांची फर्म पर रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—हेड ऑफिस—मग्घाना (पंजाब) मेसर्स घाड़ीराम सुखावीराम	यहाँ पर बैंकिंग बिजिनेस और जमींदारी का काम होता है।
२—जंगमण्डी—मेसर्स घाड़ीराम रामदियामल	इस फर्म पर सब तरह की कमीशन एजन्सी का होता है।
३—गोजरामण्डी—(लायलपुर)—मेसर्स जिन्दाराम सुखावीराम	यहाँ पर भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।
४—टोबा टेकसिंग—(लायलपुर)—मेसर्स घाड़ीराम जिन्दाराम (T. A. Chaman)	यहाँ पर भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।

५—करांची—मेसर्स घाड़ीराम जिन्दाराम बन्दररोड़ (T. A. Deshbandhu	इस फर्म पर रूई, गल्ला, तिलहन, शक्कर का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म शक्कर का इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला दीवानचन्दजी है। करांची में इस फर्म की स्थापना लाला दीवानचन्दजी ने की। इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई पोर्शन में दिया गया है।

करांची फर्म के मैनेजिंग प्रोप्राइटर श्रीयुत लाला रूपलालजी हैं। आपका मूल निवास-स्थान सरगोधा में है। आप इण्डियन मर्चेंट्स एसोसिएशन की तरफ से म्यूनिसिपैलिटी में रिप्रेजेण्टेटिव्ह रह चुके हैं। और इसी संस्था के आप बहुत समय तक ऑनरेरी सेक्रेटरी भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त आप कितने ही समय तक करांची आर्य्य समाज के प्रेसिडेण्ट रहे। इस फर्म की तरफ से करांची में धनपतमल पुत्री पाठशाला नामक एक कन्या पाठशाला चल रही है। इसके चेयरमेन लाला रूपलालजी हैं।

मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द T. A. Dhanpat	करांची में इस फर्म पर रूई, गल्ला, तिलहन, कपड़ा और शक्कर का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।
लायलपुर मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द T. A. Dhanpat	इस फर्म का यहाँ पर हेड ऑफिस है तथा बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
लायलपुर—धनपतमल दीवानचन्द	यह फर्म फ्लोअर मिल्स एण्ड आईस फैक्टरी ऑनर्स और आइल एक्स पोर्टर्स है।
निदाचन्द् (मुलतान)—धनपतमल दीवानचन्द	यहाँ इस फर्म की कॉटन जीनिंग फैक्टरी एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी चल रही है।
माण्ट गौमरी—मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द T. A. Dhanpat	यहाँ पर भी आपकी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग है।

गीदड़बहा (फिरोजपुर) मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द	यहाँ पर भी आपकी जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी और ऑइल एक्सपेलर्स चल रहे हैं।

मेसर्स बच्छराज एण्ड कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड फर्म है। यह फर्म १० लाख की पेडअप केपिटल से स्थापित की गई है। इसके डायरेक्टर्स श्रीयुत सेठ जमनालालजी बजाज, श्रीयुत रामेश्वरदासजी बिड़ला, श्रीयुत पालीरामजी झुनझुनवाला, श्रीयुत केशवदेवजी नेवटिया, सेठ पुरुषोत्तमदास जीवनदास, श्रीयुत मथुरादास खीमजी, श्रीयुत नारायणलालजी पित्ती तथा श्रीयुत कन्हैयालालजी आकोला वाले हैं। इसके प्रेसिडेण्ट श्रीयुत जमनालालजी बजाज तथा मेनेजिंग डायरेक्टर श्रीयुत केशवदेवजी नेवटिया हैं।

इस नाम से यह फर्म सन् १९२७ में स्थापित हुई। इसका हेड ऑफिस बम्बई में है। करांची की ब्रांच का मनेजमेण्ट श्रीयुत सेठ लालजी मेहरोत्रा करते हैं। आपका मूल निवास स्थान जौनपुर (यु० पी०) का है। आप बी० ए० एल-एल बी० हैं। पहले आप प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र "इण्डिपेंडेन्ट" के एडिटोरियल स्टॉफ में रहे थे। आप चार महीने तक हस्त लिखित "इंडिपेण्डेंट" निकालते रहे। पहले आप देश पूज्य पं० मोतीलालजी नेहरू के प्रायवेट सेक्रेटरी रहे हैं। सन् १९२२ में जो सिविल डिस ओबिडियन्स कमेटी बैठी थी उसके आप सेक्रेटरी थे। सन् १९२३ से आपने व्यापारिक लाइन में प्रवेश किया। सन् १९२८ में आप बच्छराज कम्पनी के मनेजर नियुक्त हुए। मतलब यह कि आपका जीवन बड़ा देश भक्ति पूर्ण और उज्वल रहा है। यह फर्म इंडियन मर्चेन्टस् एसोसियेशन तथा बायर्स एण्ड शिपर्स एसोसियेशन की मेम्बर है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स बच्छराज एण्ड कम्पनी २९५ कालबादेवी रोड (T. A. Shree)	यहाँ पर रूई का बड़े स्केलपर व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। रूई के केन्द्रों से यह फर्म खरीदी करती है।
करांची—मेसर्स बच्छराज एण्ड० कं० सराय रोड (T. A. Bachharaj)	यहाँ पर कॉटन और ग्रेन का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म काटन और ग्रेन का एक्सपोर्ट भी करती है।

वर्धा—मेसर्स बच्छराज कम्पनी } यहाँ पर भी रूई का व्यापार होता है।

मेसर्स वसन्तलाल गोरखराम

इस फर्म का हेड ऑफिस मारवाड़ी बाजार बम्बई में है। जहाँ तार का पता "सेक्सरिया" है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ ९८ पर दिया गया है। करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स वसन्तलाल गोरखराम सराय रोड-यहाँ पर बैंकिङ्ग तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स वसन्तलाल रामकुमार

यह फर्म बम्बई के मेसर्स सनेहीराम जुहारमल और मेसर्स वसन्तलाल गोरखराम के साझे की है। इन दोनों ही के मालिकों का मूल निवासस्थान चिड़ावा (जयपुर) में है। इन दोनों फर्मों का परिचय इस ग्रन्थ के बम्बई विभाग के रूई के व्यापारियों में दिया गया है।

करांची में इस फर्म को स्थापित हुए करीब ४ वर्ष हुए। इस फर्म का मॅनेजमेंट श्रीयुत छोटालालजी झुंझुनुवाला करते हैं।

करांची में यह फर्म रूई, गल्ला, तिलहन का व्यापार और सब तरह की कमीशन एजेन्सी का काम करती है। (T. A. sekhasaria)

मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक श्रीयुत रायबहादुर ब्रजलालजी मूल निवासी जुगरांव (लुधियाना के) हैं। तथा श्रीयुत जगन्नाथजी सकर (जालन्धर जिले) के रहने वाले हैं आप दोनों सज्जन क्षत्री जाति के हैं। यह फर्म करांची में सन् १९२३ से स्थापित है। आप लोगों ने सब से पहले सन् १९२० में कानपुर में शक्कर का काम प्रारम्भ किया था। उसके पश्चात् आपने करांची में अपना काम प्रारम्भ किया। आप दोनों ही सज्जन बड़े योग्य और सज्जन हैं। सन् १९२० में श्रीयुत ब्रजलालजी को गवर्नमेण्ट ने रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया।

श्रीयुत रायबहादुर ब्रजलालजी लुधियाना जिले के बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली पुरुष

है। व्यापारिक प्रभाव के अतिरिक्त गवर्नमेण्ट तथा पब्लिक में भी आपका बहुत प्रभाव है। आपकी उम्र इस समय ४० साल की है।

श्रीयुत जगन्नाथजी श्रीमान् रायबहादुर रलारामजी सी० आई० ई० एस० ओ० के सुपुत्र हैं। श्रीमान् रलारामजी भारतवर्ष में फर्स्ट भारतीय चीफ इंजिनीयर हैं। आप बड़े सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। सामाजिक क्षेत्र में आपने बहुत अच्छे २ काम किये हैं। कलकत्ते में श्रीयुत दाजूरामजी चौधरी के साथ आपका बहुत पुराना दोस्ताना है। आपके साथ में आपने बहुत से अच्छे २ सार्वजनिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी काम किये हैं। आपकी उम्र इस समय ६५ वर्ष की है। तथा श्रीयुत जगन्नाथजी इस समय ३२ साल के हैं।

इस फर्म के मालिकों का सुधार और शिक्षा-सम्बन्धी कार्य्यों में बहुत दिलचस्पी है। कानपुर तथा करांची डि० ए० वी० हाईस्कूल, गर्लस्कूल तथा और भी सार्वजनिक कार्य्यों में आप बहुत दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस-गुजरांवाला (पंजाब) मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ (T. A. Brijajan) — यहाँ पर बैंकिंग और कमिशन एजेन्सी का काम होता है।

लुधियाना—मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ (T. A. Brijajan) — यह फर्म इम्पीरियल बैंक की ग्यारण्टेड ब्रोकर है। तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

करांची—मेसर्स रा० ब० ब्रजलाल जगन्नाथ कैम्पबेलस्ट्रीट (T. A. Brijajan) — यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजेन्सी का काम तथा जावासे शुगर का इम्पोर्ट होता है। यह फर्म जावा की (Kian Gwan) केन ग्वान कम्पनी की ग्यारण्टेड ब्रोकर है।

आपके मूल निवास-स्थान सक्खर में राय बहादुर रलारामजी की ओर से एक अस्पताल चल रहा है। इसके अलावा मोगा के आई हास्पिटल में आपने अच्छी सहायता पहुँचाई है।

बालगोविन्ददास एण्ड कम्पनी

इसकी स्थापना सन् १९२४ में हुई। इसके संचालक बालगोविन्ददासजी लोहीवाल तथा सेठ सीतारामजी, मोहनदासजी और मोतीरामजी हैं। बालगोविन्ददासजी का आदि-निवास-

स्थान इटावा है। अन्य तीनों सज्जन सिन्धी लोहाने भाईबन्द हैं। यह फर्म रूई तथा गल्ले की दलाली करती है। और यानी मरर की House Brokers है।

पता—(१) बुडस्ट्रीट राती बिल्डिंग फोन नं० ३४५ (२) खोरी गार्डन।

मेसर्स भागचन्द रिज्जूमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत रिज्जूमलजी और तीरथदासजी हैं। आपका मूल निवास-स्थान दादेचा (सिन्ध) में है। इस फर्म को यहाँ पर स्थापित हुए १८ वर्ष हुए। इसकी स्थापना स्वयं रिज्जूमलजी ने ही की।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स भागचन्द रिज्जूमल बन्दर रोड (T. A, Bhag)	इस फर्म पर रूई, गल्ला और तिलहन का व्यापार होता है। खास तौर से इस फर्म पर तिलहन भाने का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पंजाब और यू० पी० में आढ़तियों के द्वारा आपका बहुतसा काम होता है।

मेसर्स मेहरबक्ष मौलाबक्ष

इस फर्म के मालिक मूल निवासी चिनोट (झंग) के रहनेवाले हैं। करांची में यह फर्म करीब पचास बरस से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना करांची में सेठ शम्सुद्दीन ने की। सेठ शम्सुद्दीनजी को गुजरे बीस साल हो गये। शम्सुद्दीनजी के तीन बेटे थे, मियाँ अमीरद्दीन, मियाँ मेहरबक्ष और मियाँ मुरादबक्ष हैं। इस समय इस फर्म के मालिक मियाँ मेहरबक्षजी के लड़के मियाँ मौलाबक्ष (स्वर्गीय) मियाँ दोस्तमुहम्मद और मियाँ नजीरहुसैन हैं, तथा मियाँ मुरादबक्षजी के लड़के मियाँ अल्लाबक्षजी, मियाँ अमीरउमर, मियाँ मुहम्मद सादिक, इशान-मुहम्मद, बहादुरअली हैं। मियाँ मौलाबक्षजी के दो लड़के हैं जिनके नाम मुहम्मदयूसुफ और मुहम्मद हसन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स मेहरबक्ष मौलाबक्ष बन्दर रोड (T. A. Rahman)	यह फर्म शुगर का बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके अलावा कोलट्रेड में भी यह फर्म सिन्ध में बहुत बड़ी है। इसके अलावा कॉटन, ग्रेन, सीड्स की कमीशन एजेन्सी का काम भी होता है।

दिल्ली—मेसर्स अल्लाबक्श मुहम्मद शाईद, महम्मद शरीफ कूचा काबिल अत्तार (T. A. Kherkhawa) सेंड्रलाह—	यहाँ पर यह फर्म सोन का ट्रेड करती है। इसमें महम्मद शाईद और महम्मद शरीफ का पार्ट है।

इसके अलावा भटिण्डा, कलकत्ता और कानपुर, जोधपुर, बीकानेर, में भी इस फर्म को ब्रांचेस हैं।

मेसर्स रामसनाथ रामचन्द्र

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान भिवानी में है। आप अग्रवाल जाति के वासल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ रामप्रतापजी हैं। यह फर्म भिवानी में सम्वत् १७७५ से स्थापित है। संवत १८०० से यह फर्म यहाँ कमीशन का काम कर रही है। पहले इस पर भिवानी में घी और लाल मिर्च का बहुत व्यापार होता था। करांची में यह फर्म करीब १९ वर्षों से स्थापित है। इसे श्रीयुत सेठ नरसिंहदासजी ने स्थापित किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९७५ में हुआ। इस समय श्रीयुत नरसिंहदासजी के छोटे भाई पन्नालालजी के पुत्र श्रीयुत बन्सीलालजी, श्रीयुत रामप्रतापजी, श्रीयुत जोधरामजी और श्रीयुत रामचन्द्रजी ही इस फर्म के मालिक हैं। श्रीयुत रामप्रतापजी के इस समय एक पुत्र हैं। आपका नाम नाथूरामजी है। आप श्रीयुत बन्सीलालजी के दत्तक हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं।

इस फर्म के मालिकों का दान धर्म की ओर भी बहुत रुचि रही है। प्रायः सभी अच्छे कामों में आप दान देते रहते हैं। मथुरा में आपकी ओर से एक धर्मशाला (जो भिवानीवालों की धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है) बनी हुई है। इसमें एक अन्नक्षेत्र भी चलता है। इसके अतिरिक्त भिवानी में भी आपकी ओर से धर्मशाला, मन्दिर, कुआ, व छत्री बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—भिवानी—मेसर्स अमीरचन्द जोधराज मेसर्स अमीचन्द नरसिंहदास मेसर्स अमीचन्द फूलचन्द	यहाँ पर आपका मूल निवास स्थान है तथा सराफी का काम होता है।
२—बम्बई—मेसर्स नरसिंहदास जोधराज कालबादेवीरोड (T. A. Bansal)	इस फर्म पर हुण्डी, चिट्ठी, रुई, अलसी, सोना, चाँदी, तथा सोरा की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

२-कराँची-मेसर्स रामनाथ रामचंद्र नारनोंद (T.A. Bansal)	यहाँ पर गल्ले और रुई का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह फर्म कराँची के गल्ले के बड़े २ व्यापारियों में है। यह फर्म पीस गुड्स का विलायत से इम्पोर्ट करती है तथा बीमे का काम भी होता है।

मेसर्स लालजी लखमीदास

इस फर्म की स्थापना कराँची में सम्वत् १९४५ में हुई। इसकी स्थापना सेठ लालजी लखमीदासभाई ने की। सेठ लालजी भाई का स्वर्गवास हुए करीब ८ वर्ष हो गये। कराँची में सेठ लालजी भाई बड़े प्रसिद्ध और प्रभावशाली पुरुष थे। आपका बनाया हुआ एक मार्केट कराँची में है। सेठ लालजी भाई के दो पुत्र हैं जिनके नामः—श्रीयुत सेठ हरिदास भाई और सेठ रतनसी भाई हैं। आप भाटिया जाति के सज्जन हैं। यह फर्म दोनों भाइयों की सम्मिलित सम्पत्ति है।

सेठ हरिदास भाई भी कराँची में बड़े प्रसिद्ध पुरुष हैं। आप बायर्स एण्ड शिपर्स चेम्बर के ऑनरेरी सेक्रेटरी तथा पोर्ट ट्रस्ट के मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कराँची— मेसर्स लालजी लखमीदास (T.A "Lotus" लोटस)	यह फर्म सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम करती है। यह फर्म टिम्बर और खजूर का इम्पोर्ट भी करती है। कराँची में यह फर्म बहुत बड़ी लैण्ड लॉर्ड्स भी है।

दि सिन्ध सागर कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड कम्पनी है। इसके चेयरमेन सरदार बहादुर मेहताबसिंह बार० एट० ला० लाहौर हैं। तथा इसके डायरेक्टर्स सरदार साहिब मक्खनसिंह गवर्नमेंट कण्ट्राक्टर लाहौर, सरदार उमरावसिंह शेरगिल रईस लाहौर, सरदार मनोहरसिंह अमृतसर, सरदार बहादुर हुकमसिंह कपूरथला, लाला दीवानचन्द देहली, सरदार बहादुर धर्मसिंह कण्ट्राक्टर देहली, राय बहादुर सरदार शिवराजसिंह देहली, राय बहादुर लाला शिवनारायण पब्लिक प्रासिक्यूटर

फिरोजपुर, सरदार साहब उज्जलसिंह एम० ए० एम० एल० सी०, मियाँचन्नू मुलतान, शेख रहमत इलाही शेखड़ा और मि० युधिष्ठिरलाल तनेजा बैरिस्टर फिरोजपुर हैं।

इस फर्म का हेड आफिस लाहौर में है तथा इसके कराँची फर्म के एजेण्ट सरदार परदमनसिंह और सरदार हरबन्ससिंह सिखानी हैं। कराँची फर्म का टेलिग्राफिक एड्रेस (Sindhasagar) है। यहाँ रुई, गल्ला, तिलहन की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स हीरजी नैनसी एण्ड को०

इस फर्म के वर्तमान मोप्राइटर श्रीयुत पदमसी हीरजी और श्रीयुत ठाकरसी हीरजी हैं। यह फर्म बम्बई में करीब ३० साल से स्थापित है। कराँची में यह फर्म सन् १९२६ से स्थापित है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स हीरजी नैनसी पेटिट बिल्डिंग-एलफिन्स्टन सर्कल (T. A. Hirnensey)	यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है।
करांची—मेसर्स हीरजी नैनसी (Hirnensay)	यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है।

ससून ई० डी० एण्ड को०

इस कम्पनी का हेड ऑफिस इंगोल रोड बेलार्ड स्ट्रीट बम्बई में है। इसकी शाखाएं लन्दन, मैञ्चेस्टर, कलकत्ता, हांग कांग, करांची और बगदाद में हैं। करांची में यह फर्म कॉटन एक्सपोर्टर का काम करती है।

ससून डेविड एण्ड को०

इस कम्पनी का हेड ऑफिस लन्दन में है। बम्बई में इसका ऑफिस ५९ फार्बस स्ट्रीट में है। इसकी शाखाएँ मैञ्चेस्टर, बम्बई, कलकत्ता, करांची, हांगकांग, शंघाई, बसरा, बगदाद और हेंको में हैं।

करांची में यह फर्म रुई का एक्सपोर्ट करती है।

मेसर्स हीरानन्द ताराचन्द मुखी

इस फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १५१ पर दिया गया है। इस फर्म की हैदराबाद, बम्बई, करांची, मुलतान, सरगोधा, पुलरवार, सिलांवाली मण्डी, इत्यादि कई स्थानों पर इस देश में तथा इजिप्ट, सीदिया, ग्रीस, जापान इत्यादि विदेशों में भी दुकानें हैं।

करांची—मेसर्स हीरानन्द ताराचन्द, बन्दर रोड (T. A. Mukhi) यहाँ बैङ्किग, सोना, चाँदी और कमीशन का काम होता है।

मेसर्स एलिंगर मोहता एण्ड कम्पनी लि०

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। यह फर्म जॉन ग्लैन एण्ड कम्पनी ग्लासगो की सोल एजेण्ट तथा अन्य कई कम्पनियों के पीस गुड्स डिपार्टमेण्ट की एजण्ट है। इस पर इन्स्यूरेन्स का काम भी होता है। इसका तार का पता (Mohta) है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कलाचन्द मोतीराम

इस फर्म के मालिक हैदराबाद (सिन्ध) के निवासी हैं। आप सिन्धी—आमल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सन् १९०४ में हुई। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत मोतीरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करॉची—मेसर्स कलाचन्द मोतीराम गोवर्द्धनदास, मार्केट T. A Diamond — इस फर्म पर पीस गुड्स और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

बम्बई—उधाराम धीरूमल कोलीवाड़ा — यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के परिचय में देखिए। इ नाम से इस फर्म पर यहाँ सब प्रकार के कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स गणपतराय ईसरदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान फतेपुर (सीकर) में है। आप अग्रव
जाति के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९४८ में हुई। इस फर्म
विशेष तरक्की श्रीयुत स्व० ब्रजलालजी दारुका के पुत्र श्रीयुत विसेसरलालजी दारुका
हाथों से हुई। इस समय श्रीयुत विसेरलालजी के पुत्र श्रीयुत झावरमलजी दारुका उनके
स्थान पर हैं। इस समय इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत उंकारमलजी सरावगी (श्रीयुत
ईसरदासजी के पुत्र) हैं तथा श्रीयुत शिवभगवानजी (श्रीयुत गणपतरायजी के पौत्र) हैं।
इस फर्म के मैनेजर तथा मैनेजिंग पार्टनर श्रीयुत झावरमलजी दारुका हैं। आप मारवाड़ी
विद्यालय करांची तथा मारवाड़ी धर्मशाला करांची के ट्रस्टी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस—अमृतसर मेसर्स रामलाल गनपतराय झाडूवाला कटरा (T. A. Sarawagi)	यहाँ पर विलायती तथा देशी कपड़े का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यहाँ पर यह दुकान करीब ८० वर्षों से स्थापित है, यहाँ के आप बहुत पुराने रईस हैं।
करांची—मेसर्स गनपतराय ईसरदास न्यू क्लॉथ मार्केट T. A. Parasnath	यहाँ पर भी कपड़े का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।
बम्बई—मेसर्स रामलाल गणपतराय कालकादेवी रोड (T. A. Kailaspati)	यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स गोभाई करआ लिमिटेड

इस फर्म का परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १४९-५० पर दिया गया है। इसकी करांची ब्रांच पर जापानी और चायनीज सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास सेऊमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेऊमलजी हैं। आप श्रीयुत मूलचन्दजी के पुत्र । आपका स्वर्गवास कभी हुआ है। यह फर्म यहाँ पर करीब २२ बरस से स्थापित है।

सेठ चेलारामजी और उनके पुत्र थूलचन्दजी ने की। सेठ चेलारामजी का स्वर्गवास हुए १५ साल हुए। इस समय इसके मालिक श्रीयुत चेला रामजी के पुत्र श्रीयुत थूलचन्दजी, सूरतरामजी और कन्हैयालालजी हैं। आप सब बड़े सज्जन और योग्य हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

हेड ऑफिस बम्बई—मेसर्स चेलाराम थूलचन्द मारमाई मोहल्ला नं० ३ (T. A. twill) — इस फर्म पर बम्बई की मिलों के रंगीन माल (ड्राईंग क्लाथ) का थोक व्यापार होता है। आपका स्पेशल मार्का नाग शेर छाप, छोकरा बन्दूक छाप और कन्हैयालाल टिकिट, जोगनसवार टिकिट ये पाँचों आपके स्पेशल मार्का हैं। इस फर्म का दूकान मूलजी जेठा मार्केट में है।

शिकारपुर—मेसर्स चेलाराम थूलचन्द—यहाँ पर भी यही व्यापार होता है।
सक्खर—मेसर्स चेलाराम थूलचन्द—यहाँ पर भी यही व्यापार होता है।

मेसर्स ठाकुरदास देऊमल

इस फर्म के मालिक सेठ पेरूमल, देऊमल, रामचन्द्र, ठाकुरदास और अगरिमाई हैं। आप लोग शिकारपुर निवासी रोहेरा जाति के हैं। इस फर्म का हेड आफिस शिकारपुर में है तथा इसकी ब्रांचेज बम्बई और करांची में हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—
करांची—मेसर्स ठाकुरदास देऊमल बम्बई बाजार—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स तेजभानदास ठारूमल

इस फर्म का विशेष परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३७ पर दिया गया है। करांची में इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
करांची—मेसर्स तेजभानदास ठारूमल बम्बई बाजार (T.A. Honumon) यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम मोहनदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३७ पर दिया गया है। इसकी करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है।
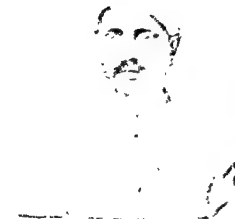
करांची—मेसर्स दौलतराम मोहनदास बम्बई बाजार (T. A. Lalpagri) यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स नागरमल पोद्दार

इस फर्म का विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ६८१ पर दिया गया है। इसका हेड ऑफिस नागपुर में है। करांची में इस फर्म पर टाटा मिल्स तथा दूसरे स्वदेशी कपड़े का व्यापार होता है। इसका पता गोवर्धनदास मार्केट करांची है।

मेसर्स पोकरदास द्वारकादास

इस फर्म के मालिक शिकारपुर निवासी सेठ द्वारकादासजी के पुत्र सेठ मेघराजजी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३८ पर दिया गया है। इसकी करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है।

करांची—पोकरदास द्वारकादास गोवर्द्धनदास मारकीट (T. A. Swadeshi) यहाँ स्वदेशी, विलायती और जापानी कपड़े का व्यापार होता है।

करांची—द्वारकादास फतेचन्द मूलजी जेठा मारकीट—यहाँ गांवठी कपड़े का व्यापार होता है

करांची—पी० द्वारकादास मूलजी जेठा मारकीट—इस ऑफिस से विलायत से इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान बिसाऊ (जयपुर) का है। करांची में इस फर्म की स्थापना सन् १९१४ में हुई। इसके स्थापक श्रीयुत फतेचन्दजी सुरारका हैं। आप अग्रवाल जाति के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। आप ही के हाथों से इस फर्म को विशेष तरक्की हुई।

इस फर्म में इस समय चार पार्टनर हैं। जिनके नाम श्रीयुत शिवदानमलजी, श्रीयुत मदनगोपालजी, श्रीयुत फतेचन्दजी तथा श्रीयुत रामेश्वरदासजी बी० काम० (बम्बई) हैं। श्रीयुत शिवदानमलजी श्रीयुत नौरंगरायजी के पुत्र हैं। तथा श्रीयुत रामेश्वरदासजी श्रीयुत फतेचन्दजी के पुत्र हैं

श्रीयुत फतेचन्दजी मारवाड़ी विद्यालय के ट्रस्टी तथा सिन्ध प्रान्तीय अग्रवाल सभा के उप-सभापति हैं। श्रीयुत मदनगोपालजी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी युवक सम्मेलन के मन्त्री, सिन्ध प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा के उपमन्त्री, मारवाड़ी कन्या विद्यालय के मन्त्री और

नवयुवक सेवक दल के प्रधान मन्त्री हैं। श्रीयुत रामेश्वरदासजी मारवाड़ी विद्यालय के आनरेरी सुपरवाइजर, नवयुवक सेवक दल के सभापति और हिन्दी साहित्य भवन के आनरेरी पुस्तकाध्यक्ष हैं। तथा यह फर्म मारवाड़ी विद्यालय भी कोषाध्यक्ष है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१—बम्बई—मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल गोवर्द्धनदास मार्केट (T. A. murarka)	यहाँ पर विलायती कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है तथा थोक और खुदरा बिजीनेस होता है। यहाँ आपका आफिस भी है।
२—[illegible]—मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल [illegible] (T. A. murarka)	यहाँ पर भी विलायती कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ के मैनेजर श्रीयुत सूरजमलजी हैं।
३—[illegible]—[illegible] मदनगोपाल	इस फर्म को रंग की एजन्सी है। इसमें आप पार्टनर हैं।

मेसर्स बेरामल केवलराम

इस फर्म का परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में मेसर्स बेरामल परशुराम के नाम से बम्बई विभाग के पृष्ठ ११९ पर दिया गया है

करांची—मेसर्स बेरामल केवलराम यहाँ गायटी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स रामगोपाल शिवरतन

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी भाग के प्रारम्भ में मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। इस नाम से इस फर्म पर प्रिन्टेड और रङ्गीन कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स [illegible]चन्द मोहनलाल

इस फर्म के मालिक बीकानेर के मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जाति के मोहता सज्जन हैं। इस फर्म को [illegible] में इस नाम से हुए करीब १० वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म [illegible] फर्म में सम्मिलित था। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीयुत सेठ [illegible] मोहता हैं। आपके इस समय चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत माणिक-

लालजी, श्रीयुत बद्रीदासजी, श्रीशंकरलालजी तथा श्रीलालजी हैं। श्रीयुत माणिकलालजी तथा बद्रीदासजी व्यापार में भाग लेते हैं, तथा शंकरलालजी और श्रीलालजी पढ़ते हैं।

श्रीयुत मोहनलालजी के पिता श्रीयुत लक्ष्मीचन्द थे। जिनका नाम बीकानेर में बहुत प्रसिद्ध है। आपकी ओर से बीकानेर में कई सार्वजनिक कार्य्य हुए। जिनमें मोहता मूलचंद बोर्डिंग हाउस इत्यादि संस्थाएँ प्रसिद्ध हैं। आपके सार्वजनिक कार्यों का वर्णन प्रथम भाग के बीकानेर के पोर्शन में मेसर्स मोतीलाल लक्ष्मीचन्द के परिचय में दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल लक्ष्मीदास-स्ट्रीट—	यह फर्म राली ब्रदर्स के पीस गुड्स डिपार्टमेएट की हेड ब्रोकर है। यहाँ पर इस फर्म के कई मकानात भी हैं।
दिल्ली—मेसर्स लक्ष्मीचंद मोहनलाल न्यू क्लॉथ मार्केट	यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।
अमृतसर—मेसर्स लक्ष्मीचंद मोहनलाल आलूवाला कटरा	यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।
करांची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द बद्रीदास गोवर्द्धनदास मार्केट	यहाँ पर कपड़े का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स वसियामल आसूमल

इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १४९ पर दिया गया है। करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स वसियामल आसूमल—यहाँ पर चायनीज और जापानी सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स शिवरतन चाँदरतन

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी भाग के प्रारम्भ में मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। इस नाम से इस फर्म पर छींट और फैन्सी कपड़े का थोक व्यापार होता है।

१९२१ में हुआ। आप श्रीयुत् चेनारामजी के पुत्र हैं। श्रीयुत हासोमलजी करोंची में बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। यहाँ के व्यापारिक समाज में तथा गवर्नमेंट में आपका अच्छा प्रभाव है। गवर्नमेंट ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दे रक्खा है। इसके अतिरिक्त सेठ हासोमलजी की दान, धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी प्रवृत्ति है। करोंची के स्मशान को बनाने में आपने बहुत मदद दी। तथा बच्चों को गाड़ने की व्यवस्था के लिए आपने कम्पाउण्ड बना दिया है। और भी आपका ख्याल बहुत अच्छे २ काम करने का है। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम देमनदासजी हैं। तथा आपके दत्तकपुत्र श्रीयुत सेऊमलजी हैं अभी आपको बहुत सा रुपया दे दिया गया है। शुरू से ही श्रीयुत सेऊमलजी इस फर्म में ज्वाइण्ट थे। आपका इन पर बहुत प्रेम है। दुकान में बहुत लाभ हुआ इस लिए श्रीयुत् सेऊमलजी को बहुत धन दिया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करोंची—मेसर्स हासोमल चेलाराम
कपड़ा मार्केट
} यह फर्म सब प्रकार के पीसगुड्स का थोक व्यापार करती है।

मेसर्स हीरालाल शिवलाल एण्ड को०

इस फर्म के मालिक श्रीयुत हीरालालजी शर्मा हैं। आप श्रीयुत शिवलालजी शर्मा के पुत्र हैं। आपका मूल निवास-स्थान पहले राजोर (जयपुर) में और फिर भरतपुर में रहा। श्रीयुत हीरालालजी का जन्म संवत् १९४५ में हुआ। सबसे पहले आप सन् १९०६ में करोंची आए। शुरू २ में आप भिन्न २ यूरोपियन फर्मों में सर्विस करते रहे। इसी बीच सन् १९१३ से आपने कपड़े के व्यापार में हाथ डाला। इस समय आप सर्विस भी करते रहे। और आपका व्यापार भी चलता रहा। सन् १९२६ से आपने सर्विस बिलकुल छोड़ दी और अपनी सारी शक्तियाँ व्यापार की ओर लगा दीं।

ऊपर लिखे विवरण से पता चलेगा कि श्रीयुत हीरालालजी कितने सफल अध्यवसायी और र्वीर हैं। आपका परिचय बड़े २ अंग्रेज अफसरों तथा व्यापारियों से रहा है। तथा करोंची सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपका बहुत नाम है।

इस समय आप कपड़े का इम्पोर्ट तथा इन्श्यूरेन्स का काम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स पोहमल ब्रदर्स

यह फर्म कराँची में सन् १९२१ से स्थापित है। इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में रेशम के व्यापारियों में दिया गया है। इसकी कराँची फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुत् कहानचन्द परमानन्द आडवाणी करते हैं। आपका मूल निवासस्थान सिंध हैदराबाद में है।

यहाँ पर यह फर्म लोहे का विलायत से इम्पोर्ट करती है, और लोहे का बड़ा स्टॉक भी रखती है। और यहाँ से ग्रेन, शीड्स इत्यादि वस्तुओं का एक्सपोर्ट करती है।

(T. A. Dipmala)

मेसर्स बिहारीमल जगामल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान अमृतसर (पंजाब) है। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत जमनादासजी हैं। आप अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को कराँची में स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ संतरामजी ने की। आप श्रीयुत सेठ जगामलजी के पुत्र थे। आपका स्वर्गवास सन् १९०९ में हो गया। आपके पश्चात् श्रीयुत जमनादासजी के पिता श्रीयुत काशीरामजी ने इस फर्म को सम्हाला। आपका स्वर्गवास सन् १९१७ में हो गया। तब से इस फर्म का संचालन श्रीयुत् जमनादासजी कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हेड ऑफिस—कराँची मेसर्स बिहारीलाल जगामल मछे मोहम्मद स्ट्रीट (T. A. Curedes)	इस फर्म पर बैंकिंग और लोहे के सब प्रकार के सामानों का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म विलायत से डायरेक्ट लोहे का इम्पोर्ट करती है। आपकी एक ब्रांच पेरिस में भी खोली गई है।

मेसर्स मानीराम हरदेवदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली का है। आप खण्डेलवाल सज्जन हैं। इस समय इस फर्म के प्रोप्राइटर लाला हंसराजजी, लाला गोविन्ददासजी, लाला दीनानाथजी और श्रीमती मानकदेवी (धर्मपत्नी लाला रघुमलजी) हैं, आपके परिवार का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ५०२ पर दिया गया है।

कराँची में यह फर्म सम्वत् १९८१ से इस नाम से व्यापार कर रही है। इस फर्म के कराँची ब्रांच का मैनेजमेन्ट लाला दुर्गादासजी करते हैं। आप भी खण्डेलवाल जाति के वैश्य हैं।

आपका मूल निवास स्थान महिपालपुर (दिल्ली) है। आप चौबीस साल से इस फर्म पर कार्य कर रहे हैं। आप बड़े सज्जन, योग्य, और व्यापार कुशल सज्जन हैं। आप आयर्न मर्चेण्ट एसोसिएशन की मैनेजिंग कमेटी के मेंबर हैं। पहले आप करांची की पाँजरापोल सोसाइटी की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर रह चुके हैं।

यह फर्म न केवल करांची में प्रत्युत सारे भरतवर्ष के लोहे के व्यापारियों में बहुत बड़ी है। इसका हेड ऑफिस दिल्ली में है तथा कलकत्ता, बम्बई और कानपुर में भी शाखाएँ हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स मायीराम हरदेवदास मिकलोड रोड — इस फर्म पर आयर्न एण्ड स्टील का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म डायरेक्ट विलायत से लोहे का इम्पोर्ट करती है। इसके सिवा इस फर्म पर बैंकिंग बिजिनेस भी होता है। यह फर्म गवर्नमेण्ट कण्ट्राक्टर भी है कमीशन एजन्सी का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स मुरलीमल सन्तराम एण्ड कम्पनी

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाल श्रीकृपारामजी और लाल सन्तरामजी हैं। आप लोग खमवाल जाती के वैश्य सज्जन हैं। आप लोग अमृतसर के रहनेवाले हैं। इस फर्म को करीब २५ वर्ष पूर्व स्वर्गीय लाल मुरलीमलजी ने स्थापित किया। लाल मुरलीमलजी का स्वर्गवास हुए करीब ९-१० वर्ष हुए हैं। आप जब तक जीवित थे व्यापार का संचालन अपने पुत्रों के सहयोग से खुद ही किया करते थे। आपके स्वर्गवास होने के बाद आपके पुत्र लाल श्रीकृपारामजी तथा लाल सन्तरामजी करने लगे। आप दोनों भाई बड़े विचारवान और व्यापार कुशल हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स मुरलीमल सन्तराम लक्ष्मीदास स्ट्रीट Phone No, 664 (T, A. Murli) — यहाँ पर आप लोग लोहे का डायरेक्ट इम्पोर्ट करके व्यापारियों को बेचते हैं। यह फर्म सेण्टटीथ का इम्पोर्ट भी करती है।

—मेसर्स मुरलीमल सन्तराम — इस फर्म की एक ब्रांच बेलजियम में भी है।

मोटरकार डीलर्स

मेसर्स नारायणदास एण्ड कम्पनी

कराँची शहर के अन्तर्गत जब मोटर गाड़ियों के व्यापार का उल्लेख किया जाता है तब सब से पहले मेसर्स नारायणदास एण्ड कम्पनी का उल्लेख करना पड़ता है। यह फर्म केवल कराँची ही में नहीं प्रत्युत सिन्ध, पंजाब, बलूचिस्तान और सीमा प्रान्त में इस व्यापार के अन्तर्गत सब से बड़ी गिनी जाती है। इस फर्म का अपना निज का बड़ा भव्य और सुन्दर मकान कराँची में बना हुआ है, जो लगभग ५००० वर्गगज भूमि को घेरे हुए है। यह मकान इस फर्म की जरूरतों के अनुसार बड़े उपयोगी ढङ्ग से बनाया गया है। यह फर्म शेवरलेट, ब्यूक, मारकेट, हिलमनी, हमोबिल, साइटोन, सिगट, सिल्की (इंग्लीश) और सनबीम, इत्यादि गाड़ियों की, सिन्ध, पंजाब, बिलूचिस्तान और सीमाप्रान्त के लिए एजण्ट है। इसके सिवा यह फर्म एरोप्लेन डीलर्स भी है। इसी फर्म ने इण्डिया में पहली बार एरोप्लेन मँगा कर बेचा। इसके साथ ही इस फर्म में स्पेअर पार्ट्स तथा मोटर सम्बन्धी आवश्यक वस्तुओं का स्टॉक भी बहुत बड़ी तादाद में रहता है। इतने पर भी विशेषता यह है कि ये सब सामान इतने व्यवस्थित ढङ्ग से सजाये जाते हैं कि कौन वस्तु स्टॉक में है या नहीं यह मालूम करने में समय की बरबादी का बहुत अंश बच जाता है।

इस कार्यालय की दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें मोटर इञ्जिनियरिंग का काम बहुत ही अच्छे ढंग से किया जाता है। इस फर्म की कराँची आफिस में लगभग १०० होशियार कारीगर काम करते हैं जो कि इस कार्य के विशेषज्ञ हैं और उनकी योग्यता का ही परिणाम है कि काम इतना बढ़िया होता है। इस फर्म में भिन्न २ वस्तुओं की प्रदर्शनी के लिए अलग २ विभाग हैं और यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि मोटर गाड़ी के सम्बन्ध का ऐसा कोई भी कार्य नहीं रह जाता जो इस फर्म के द्वारा शीघ्र और बखूबी किया न जा सकता हो। प्रत्येक कार्य के लिए इस फर्म में अब तक की प्राप्त हर तरह की मशीनें हैं। डुको प्रणाली से मोटर पर रंग करने की भी इसमें बड़ी सुन्दर व्यवस्था है।

इस फर्म में सब प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के योग्य सब प्रकार की गाड़ियाँ रहती हैं। अर्थात् छोटी और हलकी गाड़ियों से लेकर बड़ी २ भार ढोनेवाली, और मुसाफिर गाड़ियाँ मिलती हैं। इसके अतिरिक्त इस फर्म के कार्यों में इलेक्ट्रोप्लेटिंग, और अपहोलस्टरी आदि कार्य भी सम्मिलित किये जा सकते हैं। इस फर्म में कठिन से कठिन मोटर रिपेरिंग भी बहुत व्यवस्थापूर्वक की जाती है, जो यहाँ के मोटर चलानेवालों के लिए बड़ी सुविधाजनक है।

श्रीयुत नारायणदासजी मोटर और साइकल के व्यापार की स्थापना करने में इधर सब से पहले गिने जाते हैं। आपने सन् १९०५ में सब से पहले क्वेटा में यह व्यापार प्रारम्भ किया। इसके पहले बिलुचिस्तानवालों ने मोटर का दर्शन भी नहीं किया था। इनकी कुशलता और सज्जनता के परिणाम-स्वरूप यह व्यापार प्रति वर्ष तरक्की करता गया और आज तो सारे भारत के मोटर-व्यापारियों में इनका नाम उल्लेखनीय हो गया है। इनके यहाँ लगभग २३० कारीगर काम करते हैं। जिनमें लगभग १०० इनकी लाहौर की ब्रांच में नियुक्त हैं। जहाँ पर भी इनका व्यापार कराँची की अपेक्षा अधिक परिमाण में चलता है। इसके अतिरिक्त इनकी एक शाखा क्वेटा में भी है। श्रीयुत एम० पी० नारायणदास डब्ल्यू. पी. मेघराज फर्म के मालिक और भागीदार हैं। इनके तार का पता (ऑटो मोबाइल) है। और इनके यहाँ ए० बी० सी० पाँचवाँ संस्करण, तथा बेनटलीज का प्रायव्हेट कोड इस्तेमाल किये जाते हैं।

सिनेमा ऑनर

दी कराँची पिक्चर हाउस

<u>श्रीयुत सेठ रेवाशङ्कर मोतीराम पचोली</u>

श्रीयुत रेवाशङ्करजी का मूल निवासस्थान हलवद (काठियावाड) का है। आप औदीच्य ब्राह्मण हैं। आप उन सज्जनों में से एक हैं जिन्होंने केवल अपने पैरों के बल पर बहुत साधारण स्थिति से उन्नति करते २ अच्छी उन्नति कर ली। बहुत समय नहीं हुआ है आप चार्टर्ड बैंक में सर्विस करते थे मगर आपको नौकरी से स्वाभाविक प्रेम न था, और आप स्वतन्त्र व्यवसाय करना चाहते थे। सन् १९१८ में आपका ध्यान सिनेमा बिजिनेस की ओर गया और आपने इम्पीरियल थियटर में सिनेमा का उद्योग प्रारम्भ किया। इस उद्योग में आपको इतनी सफलता मिली कि धीरे २ आपके ५ सिनेमागृह हो गये। इस समय तो यह हालत है कि, कराँची के सिनेमा बिजिनेस पर एक तरह से आपका ही अधिकार है। आपके एक छोटे भाई श्रीयुत दलसुखलालजी हैं। आप सिनेमा फिल्म के विशेषज्ञ हैं।

आपकी सिनेमा कम्पनियों का परिचय इस प्रकार है:—

१—कराँची पिक्चर हाउस	इस सिनेमा कम्पनी की स्थापना सन् १९२७ में इस नाम से हुई। पहले सन् १९१८ से १९२७ तक इसकी जगह आप इम्पीरियल सिनेमा के नाम से काम करते थे। यह सिनेमा ऊंचे दर्जे के हिन्दी फिल्म दिखलाता है।

इस फर्म की बहुत उन्नति हुई और वर्तमान में भी यह फर्म कई एक वस्तुओं की कई एक कम्पनियों की सोल एजेंट है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक के० बी० के० एच० कतराक और सोराब के० एच० कतराक हैं। श्री० के० बी० कतराक महाशय फर्स्ट क्लास ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आप सरकार द्वारा म्युनिसिपेलिटी एवं पोर्ट ट्रस्ट के मेम्बर चुने गये थे। आप यंगमेन्स ज़ोरोएस्ट्रीयन एसोसियेशन के फाउन्डर, पेट्रन और प्रेसिडेन्ट हैं और पारसी पंचायत फंड के आप ट्रस्टी हैं।

इस परिवार की ओर से बहुत से सार्वजनिक कार्यों में सम्पत्ति व्यय की गई है। आपकी ओर से ७५ हजार रुपया यंगमेन्स ज़ूरो स्ट्रीयन असोसियेशन में, ५० हजार बाई बीर बाईजी कतराक मेटरनिटीहोमिंग में, ६० हजार कतराक धार्मिक फण्ड में ३ हजार कतराक स्वीमिंग बाथ के बनवाने में, और २० हजार गरीब लोगों के लिये "खरशेद बाई कतराक पारसी होम" बनवाने में दिया। इसी प्रकार कई जगह आपने हजारों रुपया खर्च किया।

वर्तमान में इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स कतराक एण्ड को० कतराक टेरेस, सर्फानियानी—यह फर्म विदेशों से वाइन, स्पिरिट, जनरल मरचेंट्स का सामान वगैरह का बड़े परिमाण में इम्पोर्ट करती है। इसके अलावा इस फर्म पर कई कम्पनियों की एजेन्सी हैं। इसकी एक शाखा कतराक बिल्डिंग, विक्टोरिया रोड में भी है। जहाँ फुटकर सामान बिक्री होता है। यह फर्म यहाँ की बड़ी फर्मों में से है। इसकी स्थायी सम्पत्ति भी यहाँ अच्छी मात्रा में है।

मेसर्स गिरधारीलाल एण्ड सन्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत गिरधारीलालजी हैं। आप क्षत्री जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान जिला मान्टगोमरी में है। इस फर्म को स्थापित किये हुए आपको करीब ५ वर्ष हुए।

श्रीयुत गिरधारीलालजी के पिता श्रीयुत [illegible]रामजी की दानधर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओर से मान्टगोमरी जिले में एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी जिले में आपने [illegible] के लिए भूमि भी दान में दी है। इस जिले में आपकी जमींदारी और मकानों भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गिरधारीलाल एण्ड सन्स बंदिर रोड (T. A. Raghubansi) — यह फर्म मुलतान [illegible] के कर्णपुर कम्पनी [illegible], राजस्थान [illegible] कम्पनी [illegible], की एजेन्सी और [illegible] है। यह कम्पनी सिंधु, पंजाब और राजपूताने को [illegible] सप्लाय करती है।

हैदराबाद (सिंध)-गिरधारीलाल एण्ड सन्स — यहाँ पर आपका स्टोअर है।

इसके अलावा लाहौर, जालन्धर और ओकारा में भी आपकी ब्रॉन्चेस हैं।

घी के व्यापारी

मेसर्स जानीमल प्रधानमल

यह फर्म करॉंची में करीब १०० वर्षों से स्थापित है। उस समय करॉंची शहर इस रूप में नहीं था। प्रत्युत बहुत छोटे रूप में था। करॉंची की बहुत पुरानी फर्मों में से यह फर्म भी एक है। इस फर्म की स्थापना सेठ जानीमलजी ने की। आपका स्वर्गवास हुए करीब ३५ वर्ष हुए। सेठ जानीमलजी के दो पुत्र थे, जिनके नाम श्री सेठ अमरनामल और सेठ चाएडूमलजी हैं। इनमें से सेठ अमरनामल का स्वर्गवास हुए करीब ३ वर्ष और सेठ चाएडूमलजी का स्वर्गवास हुए करीब ३२ वर्ष हो गये। इस समय सेठ अमरनामलजी के तीन पुत्र, और सेठ चाएडूमलजी के दो पुत्र ही इस फर्म के मालिक हैं। सेठ अमरनामलजी के तीन पुत्रों में सेठ उक्कामलजी व्यापार करते हैं तथा शेष दो स्कूल में पढ़ते हैं। सेठ चाएडूमलजी के दोनों पुत्र सेठ हीरामलजी और सेठ सॉवलदासजी व्यापार में भाग लेते हैं।

इस फर्म की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि है। सेठ अमरनामलजी ने अपनी मृत्यु के समय २०००० रुपये पंचायत को और ५००० दूसरे कार्यों में दान किया था। और करीब २०० गज जमीन में स्वामी नारायणकी छत्री बनाई है। सेठ अमरनामलजी करॉंची कलेक्टर दरबार के मेम्बर थे और मलरि लोकल बोर्ड के मेम्बर थे। आप कई संस्थाओं के ट्रस्टी भी थे। आपके स्वर्गवास के समय कई पत्रों ने आर्टिकल भी लिखे थे। अभी भी सेठ उक्कामलजी मलरि लोकल बोर्ड के मेम्बर तथा कई संस्थाओं के ट्रस्टी भी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

करॉंची—
मेसर्स जानीमल परधानीमल
जोड़िया बाजार
— इस फर्म पर असली घी का करॉंची भर में सब से बड़ा व्यापार होता है। करॉंची में इसके बराबर घी का व्यापार कोई दूसरी फर्म नहीं करती। इसके अतिरिक्त यह फर्म इम्पीरियल बैंक की सर्राफ भी है; तथा बैंकिंग बिजिनेस भी करती है।

करांची— मेसर्स जानीमल परधानीमल जोड़िया बाजार	यह फर्म तमाखू का व्यापार करती है (Phone 885)
करांची— के० एस० परधानी एण्ड कम्पनी	यह फर्म पीस गुड्स, सण्ड्रीज, ग्लासवेअर इलेक्ट्रिक गुड्स और हार्डवेअर गुड्स का विलायत से इम्पोर्ट करती है। इसके टेलिग्राफिक एड्रस Zamindar, Jagirdar, Pradhan हैं।
करांची— मेसर्स सुन्दरदास वासुदेव	इस नाम से यह फर्म गल्ले का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम करती है।
मेसर्स अमरनामल जानीमल	इस नाम से इस फर्म की मलरि और करांची में बहुत बड़ी जमीन्दारी है। इतनी जमींदारी मलरि में शायद दूसरी किसी भी हिन्दू फर्म की नहीं है।

विदेशी कम्पनियाँ

पघर्ट लैम्बम एण्ड को०—इस कम्पनी का हेड ऑफिस लन्दन में है। जहाँ का पता एंग्लो इयाम कार्पोरेशन लि० ५ से० हेलेन पैलेस विशोप गेट लन्दन है। इसकी बम्बई, करांची, बैङ्काक और सिंगापुर में शाखाएँ हैं। बम्बई में इसका आफिस हेमीरिल्ड लेन (पोस्टबाक्स नं० ७०) में है। करांची में यह फर्म कॉटन एक्स पोर्टर है।

ब्रहम (डब्ल्यू० ए०) एण्ड को०—इसका आफिस कारनाक बन्दर बम्बई में है। इसके एजण्ट ग्लासगों, लीवरपूल, मैन्चेस्टर, लन्दन, ओयार्टो, मास्को, कलकत्ता, रंगून, करांची में हैं। करांची में यह कॉटन एक्सपोर्टर का काम करती है।

वालकट ब्रदर्स—यह स्विस कम्पनी है। भारत वर्ष में व्यापक व्यापार करने वाली बड़ी २ तीन चार फर्मों में यह भी एक है। सन् १८५१ में इसका आफिस बम्बई में स्थापित हुआ था। इसके पश्चात कोलम्बो, कोचीन, टेलीचरी, तूतीकोरन, मद्रास तथा करांची इत्यादि स्थानों में भी इसके आफिस स्थापित हुए। भारतवर्ष में इसकी लगभग ४० आढ़त की दुकानें हैं। इस फर्म का प्रधान व्यवसाय रुई का है। भारतवर्ष से रुई खरीद कर यह कम्पनी

विलायत भेजती है। इसके अतिरिक्त अनाज, तिलहन, कच्चा चमड़ा इत्यादि वस्तुओं का एक्सपोर्ट करती है और शक्कर, धातु इत्यादि वस्तुओं को बाहर से मंगाकर यहाँ सप्लाय करती है। इस कम्पनी की धूलिया, अमरावती, खामगाँव, नागपूर, मुलतान, रामपूर, गुण्टकल, विरुपट्टी इत्यादि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं इसके लन्दन वाले ऑफिस का पता ९६-९८ लीडेनहाल स्ट्रीट में है। करांची में भी यह फर्म इन्हीं चीजों का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करती है।

बाम्बे को० लिमिटेड—इस कम्पनी का आफिस ९ वालेस स्ट्रीट बम्बई में है। तथा इसकी शाखाएँ मद्रास, कलकत्ता और करांची में है। इसके लन्दन वाले एजण्ट का पता वालेस ब्रदर्स एण्ड को० लि० ४ फ्रासवाई स्क्वायर लन्दन है। करांची में यह फर्म एक्सपोर्ट का काम करती है।

रालिब्रादर्स—यह भारत वर्ष में व्यापार करने वाली सब से बड़ी विदेशी कम्पनी है शायद ही कोई व्यापार भारत में ऐसा होगा, जिसे यह कम्पनी न करती हो। यदि कलकत्ते में यह कम्पनी जूट की सब से बड़ी व्यापारी है तो बम्बई और करांची में रूई और गल्ले के व्यापार कर यह अपना प्राधान्य रखती है। इसी प्रकार इम्पोर्टिंग विजीनेस में भी यह पीस-गुड्स का इंम्पोट सबसे अधिक करती है। मतलब यह कि भारतवर्ष का बहुतसा व्यापार इस कम्पनी के द्वारा होता है। इसके लन्दन आफिस का पता २५ फिन्सबरी सर्कस ई० सी० २ है। तथा बम्बई का आफिस २४ रेमलीन स्ट्रीट फोर्ट में है। इसके एजण्ट मद्रास में रहते हैं।

करांची से यह फर्म रूई, गल्ला, तिलहन और हड्डी खरीद कर विलायत को भेजती है। तथा विलायत से कपड़े का इम्पोर्ट कर उसे यहाँ सप्लाय करती है। इसके कॉटन डिपार्टमेण्ट के हाउस ब्रोकर श्रीयुत बालगोविन्ददासजी लोढीवाल हैं। तथा इसके पीसगुड्स डिपार्टमेण्ट की हेड ब्रोकर मेसर्स लछमीचन्द मोहनलाल फर्म है।

फारबस फारबस केम्पिल एण्ड को०—यह भी भारतवर्ष की प्रसिद्ध २ विदेशी कम्पनियों में से एक है। इसकी भारतवर्ष में कई शाखाएं हैं। करांची में इस फर्म पर एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

देहली

DELHI.

देहली

ऐतिहासिक परिचय—

दिल्ली का ऐश्वर्य्य, दिल्ली का इतिहास, दिल्ली का सौन्दर्य्य सभी आकर्षक हैं। भारत-वर्ष के अत्यन्त प्राचीन नगरों में से यह एक सब से प्रधान नगर है। इसके कई बार नाम-परिवर्तन हुए, कई बार स्थान-परिवर्तन हुए, मगर फिर भी इसका महत्व ज्यों का त्यों अक्षुण्ण है। यह कहा जा सकता है कि दिल्ली एक महान् स्मशान है। जहाँ अनेकानेक राजवंशों की समाधियाँ बनी हुई हैं। जिस स्थान पर इस समय दिल्ली शहर बसा हुआ है उसके आस-पास ४५ वर्ग मील भूमि में नाना राजवंशों के राजमहल दुर्ग, विलासमन्दिर और मसजिदों का ध्वंसावशेष उनकी गत वैभव की स्मृति दिला रहे हैं।

इस अत्यन्त प्रसिद्ध महत्वपूर्ण नगर का प्राचीन नाम इन्द्रप्रस्थ है। यह यमुना तट पर बसा हुआ है। महाभारत से ज्ञात होता है कि पाण्डवों ने हस्तिनापुर से आकर इस नगरी को बसाया था। युधिष्ठिर के बाद ३० पीढ़ियों तक उन्हींके वंशजों की यह राजधानी रही। इसके बाद अन्य कितने ही राजवंशों के आधीन यह प्रदेश रहा और यह नगर उनकी राज-धानी रहा। ४थी शताब्दी के लगभग राजा धव ने इस नगरी में इतिहासप्रसिद्ध लोहे का स्तम्भ जो लोहे की लाट कहाता है स्थापित किया। इसकी ऊँचाई लगभग ५० फुट के है। इसके बाद कुछ काल तक दिल्ली उजड़ी पड़ी रही पर सन् ७३६ ई० में राजा अनंगपाल ने पुनः दिल्ली को बसाया। सन् ११९३ ई० में महम्मद गोरी ने राजा पृथ्वीराज को थानेश्वर के युद्ध में परास्त कर यह प्रदेश अपने हाथ में लिया। पर वह तो स्वदेश लौट गया और अपने सेनापति कुतुबुद्दीन को छोड़ गया जिसने दिल्ली को मुसलमानों की राजधानी बनाया और इस प्रकार यह नगर हिन्दू राज की राजधानी के स्थान पर मुसलमानों की राजधानी बनी।

गोरी घराने के बाद जब इस भू-प्रदेश पर तुगलक बादशाहों का शासन स्थापित हुआ तो गयासुद्दीन तुगलक ने इस दिल्ली से चार मील दूर एक दूसरी दिल्ली बसाई जो तुगलका-बाद के नाम से प्रख्यात हुई। आज तुगलकाबाद और इन्द्रप्रस्थ के खण्डहर मात्र दिखाई देते हैं। तुगलक वंश का नाश तातारी बादशाह तैमूर लंग ने किया और उसके आक्रमण के

(२) पठान राज्यकाल के मध्य भाग के (सन् १३२० से १४१४ ई०)

तुगलकाबाद और तुगलक शाह की समाधि अट्टालिका, कल्लन मसजिद, फ़ीरोजशाह की कोटलावाली मसजिद, कदमशरीफ़, निज़ामुद्दीन की मसजिद।

(३) पठान राज्यकाल के अन्तिम भाग के (सन् १४१४ से १५५६ ई०)

सैयद और लोदी बादशाहों की समाधि-अट्टालिकायें। पुराना किला और मसजिदें आदि।

(४) मुगल राज्यकाल के (सन् १५५६ से १६६० ई०)

हुमायूं की समाधि-अट्टालिका, दिल्ली का दुर्ग और राजप्रासाद, जामा मसजिद, सुनहरी मसजिद, सफ़दरजङ्ग की समाधि अट्टालिका आदि।

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत राजप्रासाद ही सब से बढ़कर प्रसिद्ध है। उस समय के ऐतिहासिकों के निर्णयानुसार इन सब भवनादि के निर्माण का व्यय निम्नरूप हुआ था:—

दुर्ग और दुर्गाभ्यन्तर के भावनादि	६०	लाख रुपया।
दुर्गाभ्यन्तर का राजप्रासाद	२८	,, ,,
दीवाने खास	१४	,, ,,
दीवाने आम	२	,, ,,
बेगमों आदि के वास भवन	७	,, ,,
दुर्ग की दीवाली और गढ़	२१	,, ,,

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि उन दिनों शिल्पियों और श्रमिकों का मिहनताना तथा मसालों का मूल्य इन दिनों की अपेक्षा बहुत ही कम देना होता था।

दिल्ली शहर की मुख्य सड़क पर अवस्थित चाँदनी चौक से होते हुए लाहौर दरवाजे में आकर दुर्ग में प्रवेश करना होता है। इस तोरणवाले फाटक के ऊपर तिमंजिला गृह है। फाटक का पथ ४१ फीट ऊँचाई का और २४ फीट चौड़ाई का है। इस फाटक से नहवतखाने तक का पथ छत से ढका हुआ है।

तदनन्तर दीवानेआम है। इस विराट कमरे में कतार की कतार खम्भे हैं। इस कमरे के अन्दर ऊँचे चबूतरे के ऊपर संस्थापित सिंहासन से बादशाह प्रजा के आवेदन-पत्रों को लेते थे। वह सिंहासन जहाँ स्थापित था, वहाँ की दीवार के पत्थर पर खुदी हुई चित्रकारी फल, फूल, चिड़ियों आदि की है। कहा जाता है कि ये चित्रकारियाँ किसी फ्रान्सीस शिल्पकुशल की हैं। दरबार के समय इस गृह की जो शोभा खिलती थी, उसकी आज दिन केवल कल्पना ही की जा सकती है। यह कमरा १०० फीट लम्बाई का और ६० फीट चौड़ाई का है। दरबार के समय अमीर-उमराव इस कमरे में प्रविष्ट होते थे। उस समय कमरे की जैसी सजावट होती थी, वह तात्कालिक पर्यटकों की पुस्तकों के वर्णनों से विदित होता है।

फल-स्वरूप दिल्ली में पाँच दिन तक लूट मार की महा विपद् आयी और नगर पुनः उजड़ गया। तैमूर के बाद यहाँ लोदी वंश का शासन रहा और लोदी राज को हटा कर बाबर ने मुगल शासन की नींव डाली। बाबर के बेटे हुमायूँ ने पुनः दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। पर नगर का जीर्णोद्धार शाहजहाँ ने कराया और नगर का नाम शाहजहाँनाबाद रक्खा यही वर्तमान दिल्ली है।

वर्तमान दिल्ली को १९७ वर्ष पूर्व शाहजहाँ बादशाह ने बसाया था। इस नगर के तीन ओर पत्थर की ऊँची दीवार है जो प्रायः ५॥ मील लम्बी ४ गज चौड़ी ९ गज ऊँची है। इसमें १६ दरवाजे ४ खिड़कियाँ और ३४ बुर्ज हैं। शाहजहाँ के बनवाये शाही महल, किला और जामे मस्जिद आदि देखने लायक हैं। शाहजहाँ के विशाल महल में एक स्थान पर लिखा है।

अगर फिर दौस बर रूये जमीनस्त हमीनस्तो, हमीनस्तो, हमीनस्त	}	अगर कहीं स्वर्ग पृथ्वी पर है तो यही है यही है यही है।

पर स्वर्ग समान गाज समाज में लिप्त हो मुगल वंशजों ने अपना विनाश स्वयं किया। फलतः पठानों और अफगानों के आक्रमण हुए। लूट-मार नर हत्या का दौड़-दौड़ा रहा और मराठों ने आखिरी मुगल बादशाह को कैद कर लिया और सन् १८०३ ई० तक उसे जेल में डाल रक्खा। सन् १८५७ ई० में सिपाही विप्लव के बाद अंग्रेजों ने अन्तिम मुगल बादशाह को रंगून कैद कर भेज दिया और इस प्रकार दिल्ली अंग्रेजों के हाथ आयी।

सन् १८७७ में लार्ड लिटन ने प्रथम शाही दरबार कर महारानी विक्टोरिया के राज-राजेश्वरी होने की घोषणा की। सन् १९०३ ई० में लार्ड कर्जन ने दूसरा दरबार किया। और महाराज सप्तम एडवर्ड के भारत सम्राट् होने की घोषणा की। तथा सन् १९११ ई० की १२वीं दिसम्बर को तीसरा दिल्ली दरबार हुआ जिसमें स्वयं सम्राट् पंचम जार्ज सपत्नीक पधारे और तब से दिल्ली पुनः भारत की राजधानी घोषित की गयी।

दर्शनीय स्थान

दिल्ली के दर्शनीय स्थान कई भागों में बाँटे जा सकते हैं—

(१) प्रारम्भिक पठान राज्यकाल के (सन् ११९३ से १३२० ई०)

कुतुबुद्दीन की मसजिद और कुतबमीनार। अलतमश की समाधि अलाई दरवाजा। जमा-अतखाना मसजिद।

ये सब प्रायः हिन्दू मन्दिरों के सामानों को लेकर हिन्दू गृहनिर्माण-विधा की परिपाटी की बनाई गई थीं। क्रमशः इस हिन्दू विधा के साथ मिलावट के फल से उपजी हुई दूसरी परिपाटी उत्पन्न हुई।

(२) पठान राज्यकाल के मध्य भाग के (सन् १३२० से १४१४ ई०)

तुगलकाबाद और तुगलक शाह की समाधि अट्टालिका, कल्लन मसजिद, फीरोजशाह की कोटलावाली मसजिद, कदमशरीफ, निजामुद्दीन की मसजिद।

(३) पठान राज्यकाल के अन्तिम भाग के (सन् १४१४ से १५५६ ई०)

सैयद और लोदी बादशाहों की समाधि-अट्टालिकाएँ। पुराना किला और मसजिदें आदि।

(४) मुगल राज्यकाल के (सन् १५५६ से १६६० ई०)

हुमायुं की समाधि-अट्टालिका, दिल्ली का दुर्ग और राजप्रासाद, जामा मसजिद, सुनहरी मसजिद, सफ्दरजङ्ग की समाधि अट्टालिका आदि।

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत राजप्रासाद ही सब से बढ़कर प्रसिद्ध है। उस समय के ऐतिहासिकों के निर्णयानुसार उन सब भवनादि के निर्माण का व्यय निम्नरूप हुआ था:—

दुर्ग और दुर्गाभ्यन्तर के भावनादि	६०	लाख रुपया।
दुर्गाभ्यन्तर का राजप्रासाद	२८	,, ,,
दीवाने खास	१४	,, ,,
दीवाने आम	२	,, ,,
बेगमों आदि के वास भवन	७	,, ,,
दुर्ग की दीवाली और गढ़	२१	,, ,,

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि उन दिनों शिल्पियों और श्रमिकों का मिहनताना तथा मसालों का मूल्य इन दिनों की अपेक्षा बहुत ही कम देना होता था।

दिल्ली शहर की मुख्य सड़क पर अवस्थित चाँदनी चौक से होते हुए लाहौर दरवाजे में जाकर दुर्ग में प्रवेश करना होता है। इस तोरणवाले फाटक के ऊपर तिमञ्जिला गृह है। फाटक का पथ ४१ फीट ऊँचाई का और २४ फीट चौड़ाई का है। इस फाटक से नक्कारखाने तक का पथ छत से ढका हुआ है।

तदनन्तर दीवानेआम है। इस विशाल कमरे में कतार की कतार खम्भे हैं। इस कमरे के अन्दर ऊँचे चबूतरे के ऊपर संस्थापित सिंहासन से बादशाह प्रजा के आवेदन-पत्रों को लेते थे। वह सिंहासन जहाँ स्थापित था, वहाँ की दीवार के पत्थर पर खुदी हुई चित्रकारी फल, फूल, चिड़ियाँ आदि की है। कहा जाता है कि ये चित्रकारियाँ किसी फ्रान्सीस शिल्पकुशल की हैं। दरबार के समय उस गृह की जो शोभा खिलती थी, उसकी आज दिन केवल कल्पना ही की जा सकती है। यह कमरा १०० फीट लम्बाई का और ६० फीट चौड़ाई का है। दरबार के समय अमीर-उमराव इस कमरे में प्रविष्ट होते थे। उस समय कमरे की जैसी सजावट होती थी, वह तात्कालिक पर्य्यटकों की पुस्तकों के वर्णनों से विदित होता है।

दीवाने-खास की बात सर्वत्र प्रसिद्ध है। [illegible] सङ्गमरमर का कमरा है, जिसकी दीवारों के ऊपरी भाग पर सुनहरा काम है। यह कमरा ९० फ़ीट [illegible] और [illegible] फ़ीट चौड़ा है।

कमरे का चंदवा सुनहरी कामदार चाँदी का था। [illegible] लाख रुपया खर्च से बनाया गया था। सन १७६० ई० में मराठों ने इसको [illegible] गया था [illegible] समय भी उनको २८ लाख रुपया प्राप्त हुआ था।

दिवाने-खास में ही जगत्प्रसिद्ध तख्त-ताऊस [illegible] यह सिंहासन ७ वर्षों के परिश्रम से शिल्पियों ने प्रस्तुत किया था। यह [illegible] इसके बनाने में कितना खर्चा हुआ था। किन्तु टावर्नियर का कथन है [illegible] इसके निर्माण का व्यय साढ़े नौ करोड़ रुपया हुआ था।

दीवाने-खास में कितनी लीलाएँ हो गई! शाहजहाँ की [illegible] कमरा था। सन् १७१६ ई० में बादशाह फर्रुखशियर [illegible] हैमिल्टन ने इसी कमरे से अङ्गरेजों के लिये गङ्गातट पर के ३८ शहरों में [illegible] अधिकार प्राप्त किया था। उसी के फल से इस देश में अङ्गरेजी राज्य [illegible] सन १७३९ ई० में अपने से पराजित महम्मद शाह को अपना [illegible] पर लाचार किया था। इसी कमरे में गुलामकादिर ने [illegible] निकाल ली थीं। इसी कमरे में बादशाह ने सेन्धिया के [illegible] लेक को दिया था। सन् १८५७ ई० में बागी सिपाहियों ने इसी कमरे [illegible] को हिन्दुस्थान का बादशाह बनाने की घोषणा की थी और इसके [illegible] दूसरे बहादुरशाह की अदालत का विचार किया गया था।

दुर्गके अभ्यन्तरस्थित रङ्गमहल, हम्माम आदि विशेष [illegible] ही नक्काशियों को देखने से अनुमान किया जा सकता है कि [illegible] शिल्प-कार्य्य कैसी ऊँची श्रेणी के हैं। दिल्ली के हम्माम को शाहजहाँ और औरङ्गजेब के बाद और कोई बादशाह अपने काम में नहीं लाये थे। उस हम्माम में [illegible] मन लकड़ी जलायी जाती थी।

राजप्रासाद में जल लाने के लिये ६० मील दूर की नदी से राजप्रासाद तक नहर बनायी गयी थी। नदी से उस नहर की राह जल आकर झरने की तरह [illegible] गिरता और समूचे दुर्गभर में परिचालित किया जाता था।

मुगलों के ऐश्वर्य्य की बात क्यों सारी दुनिया में कहावत की तरह फैल गयी थी, यह दुर्गाभ्यन्तरस्थित प्रासाद के अवशेष को देखने से किसी के समझने में बाकी नहीं रह जाता।

प्रासाद के अन्दर ही मसजिद है।

इसी प्रासाद से मुगल बादशाह उसके नीचे एकत्रित प्रजाजन को दर्शन देते थे। सम्राट् पञ्चम जार्ज के राज्याभिषेक दरबार में राजदर्शन की यह प्रथा फिर से चलायी गयी।

मुगल बादशाह राजधानी को चारों ओर ऊँची दीवारों से घेरते थे और दीवारों में अनेकानेक तोरणवाले फाटक बनाते थे। दिल्ली से निकलने के अनेक फाटक हैं, जिनमें कश्मीर दरवाजा, काबुल दरवाजा आदि कई बड़े प्रसिद्ध हैं।

चाँदनी चौक की पुरानी शोभा अब नहीं रही है। पहिले सड़क के मध्य भाग में वृक्षों की कतार थी। जिस समय लार्ड हार्डिञ्ज की ओर तानकर किसी ने बम फेंका था। उस समय यह विचार कर, कि किसी वृक्ष की ओट से उसने यह अनर्थ किया होगा, वे तमाम वृक्ष काट डाले गये। चाँदनी चौक की एक ओर दुर्ग है और दूसरी ओर जुम्मा मसजिद। यह मसजिद भी शाहजहाँ ने बनायी। यह ऊँचे चबूतरे पर बड़े भारी आकार की है। उसके तीन गुम्बद संग-मरमर के हैं। उन पर बीच बीच में समानान्तर रेखाएँ काले पत्थर की बनाकर विचित्रता का सञ्चार किया गया है। लार्ड कर्जन का कहना है कि सारे पूर्वी देश में इसके जोड़ की बढ़ियाँ मसजिद और कोई नहीं है।

दिल्ली मुसलमानों की राजधानी थी, जिससे वहाँ मसजिदों की अधिकता अवश्य ही होनी चाहिये। दिल्ली दरवाजे के पास की सुनहरी मसजिद, फखन मसजिद आदि द्रष्टव्य हैं।

दिल्ली में एक जैन मन्दिर है, जिसके शिल्पकार्य विशेष उल्लेख योग्य हैं।

पुराने बागों में कुदसिया बाग अब तक अनेक दर्शकों को आकर्षित करता है, रोशनआरा बाग भी बढ़िया है।

दिल्ली के किनारे पहाड़ों का सिलसिला है, जिसके एक स्थान में हिन्दूराव का भग्न-पुराना प्रासाद है। इस पहाड़ी सिलसिले पर एक ओर सिपाहियों के गदर का एक स्मृतिस्तम्भ है तथा एक अशोकस्तम्भ भी है। इसके दूसरी ओर फिरोजशाह के कोटले में और भी एक स्तम्भ अशोक का है। यह दूसरा अशोक स्तम्भ अम्बाला जिले के टपरा नामक स्थान से उठा लाकर स्थापित किया गया है। फीरोजशाह के कोटले में फिरोजाबाद का किला था। दिल्ली की दो समाधियाँ प्रसिद्ध हैं एक हुमायूँ की स्मृति-अट्टालिका और दूसरी सफदरजङ्ग की। हुमायूँ की समाधि बहुत बड़ी अट्टालिका है। सिपाहियों के गदर के बाद अन्तिम बादशाह के शाहजादे इसी अट्टालिकामें आ छिपे थे और यहीं मारे गये। सफदरजङ्ग की समाधि इसीकी नकल से बनायी गयी है। किन्तु वह किसी तरह से भी हुमायूँ की समाधि के जोड़ की नहीं कही जा सकती।

दिल्ली के दर्शनीय स्थानों और अट्टालिकाओं की कमी नहीं। उनको थोड़े दिनों में देख लेना असम्भव है। किन्तु कुतबमीनार की तरह इतिहास प्रसिद्ध पदार्थ को न देखने से दिल्ली-दर्शन अपूर्ण रह जाता है। यह मीनार या स्तम्भ २३८ फीट ऊँचा है। यह कई तहों में ऊपर को उठा

इसी प्रकार गोटा किनारी, कामदानी और कश्मीरी शाल तथा सिल्क के भी अच्छे २ व्यापारियों की दुकानें यहाँ पर हैं। गोटा किनारी तो यहाँ का बहुत प्रसिद्ध है। जनरल मर्चेण्टाइज, ज्वैलरी, मशीनरी, मोटर्स, साइकिल्स, और केमिकल वस्तुओं के भी यहाँ बहुत बड़ी २ व्यापारी फर्म्स हैं जो लाखों रुपये का व्यापार करती हैं।

यहाँ पर कपड़े की चार मिलें हैं जिनके नाम बिड़ला कॉटन मिल्स (इसके मैनेजिंग एजण्ट बिड़ला ब्रदर्स हैं) जयपुरिया कॉटन मिल (लक्ष्मीचन्द रामकुमार) गोएनका कॉटन मिल (परसराम हरनन्दराय) और दिल्ली जनरल कॉटन वीविंग मिल्स (ला० मदन मोहनलाल) हैं।

व्यापारिक केन्द्र—

चान्दनी चौक—यह दिल्ली की मेन सड़क पर बसा हुआ दिल्ली का सबसे बड़ा व्यापारिक बाजार है। इसकी सुन्दरता, विशालता और इसकी चहल पहल देखने योग्य है। इस बाजार में जनरल मर्चेण्ट्स, ज्वैलर्स, बैङ्कर्स, सिल्क मर्चेण्ट्स, कपड़े के व्यापारी, परफ्यूमर्स आदि सभी प्रकार के व्यापारियों की दुकानें हैं। इसके दोनों किनारों पर कई बड़े २ कटरे बने हुए हैं जो व्यापार के केन्द्र कहे जा सकते हैं। उनके कुछ नाम इस प्रकार हैं—

कटरा शाहन्शाही, कटरा धूलियावाला, कटरा मेवी, कटरा मारवाड़ी।	इन सब में कटपीस का व्यापार होता है।
कटरा नवाब साहब, कटरा मुंशी गौरीशङ्कर, कटरा चौधान, कटरा अशर्फी, दिल्ली क्लॉथ मार्केट।	इन सब में देशी विदेशी कपड़ों का थोक व्यापार होता है।

कटरा तमाखू—इस कटरे में किराना और रंग के बड़े २ व्यापारियों की दुकानें हैं।

चावड़ी बाजार—इस बाजार में नीचे २ लोहे के बड़े २ व्यापारी, कागज के व्यापारी तथा बर्त्तनों के व्यापारी व्यापार करते हैं तथा ऊपर शाम के समय महल मुखियों के रूप की हाट लगती है।

सदर बाजार—यहाँ मनिहारी सामान का बड़ा व्यापार होता है।

काश्मीरी गेट—मोटरों और साइकलों के व्यापारी, जौहरी और अंग्रेजी ढङ्ग की बड़ी २ दुकानें हैं।

सब्जी मण्डी—इस स्थान पर तीन क्लॉथ मिल्स तथा बरफ का कारखाना है।

किनारी बाजार—इस बाजार में गोटा किनारी का थोक व्यापार होता है।

माली बाड़ा—इसमें पगड़ी के व्यापारी तथा आचार मुरब्बे के व्यापारी रहते हैं।

स्व० सेठ श्रीरामजी सोमानी (दौलतराम श्रीराम) देहली

नया बाजार—यहाँ खास व्यापार गल्ले का होता है तथा कई प्रधान २ अखबारों के ऑफिस हैं।

दरीबा—चाँदी-सोने के बर्तन और कारीगरी तथा मुलम्मे का सामान बिकता है।

चेम्बर्स एण्ड एसोसिएशन्स

व्यापारिक संस्थाओं में पंजाब चेम्बर ऑफ कॉमर्स काश्मीरी गेट देहली, पीस गुड्स एसोसिएशन, देहली हाथ एण्ड कमीशन एजण्ट एसोसिएशन कूचा हीरालाल, तथा देहली हिन्दुस्थानी मर्कैंटाइल एसोसिएशन हार्डन रोड के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें से हिन्दुस्थानी मर्केंस्टाइल एसोसिएशन की करीब पांच सौ कपड़े की व्यापारी फर्मे मेम्बर हैं। इसके प्रेसिडेण्ट श्रीयुत रामलालजी खेमका हैं। इस एसोसिएशन का व्यापारिक समाज पर अच्छा प्रभाव है। यह व्यापारियों के आपसी झगड़ों को मिटाता है। तथा व्यापार जगत् में उत्पन्न हुए कई महत्व पूर्ण प्रश्नों का बड़ा बुद्धिमानी पूर्ण निर्णय करता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

बैङ्कर्स एण्ड लैण्डहोल्डर्स

मेसर्स दौलतराम श्रीराम धूलियावाले

इस फर्म के मालिक माहेश्वरी जाति के सोमाणी सज्जन हैं। इस खानदान का इतिहास संवत् १५९५ से सेठ मोड़ीरामजी से प्रारम्भ होता है। मगर इसका खास इतिहास वहीं से विशेष महत्त्व ग्रहण करता है जब कि संवत् १७५२ में सेठ रूपचन्दजी सोमानी ने खोल से धूलिया आकर वहाँ अपना व्यापार शुरु किया। आपने अपना व्यापार अपने बेटे और पोते बखतराम नानूराम के नाम से शुरु किया और उसमें अच्छी उन्नति की। इसके पश्चात् संवत् १८०८ वि० में आपकी फर्म मेसर्स बखतराम नानूराम के नाम से दिल्ली में स्थापित हुई। बाद में इसका नाम बदल कर सेठ नानूरामजी के बेटे दौलतरामजी और उनके बेटे श्रीराम जी के नाम से मेसर्स दौलतराम श्रीराम कर दिया, जो अब तक जारी है।

सेठ दौलतरामजी का स्वर्गवास संवत् १९५१ विक्रमी में हो गया। आपके पुत्र सेठ श्रीरामजी तथा सेठ शारीरामजी का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में संवत् १९४७ और संवत् १९३९ में हो चुका था। सेठ दौलतरामजी इस खानदान में बड़े प्रतापी और ख्यातिमान सज्जन हो गये हैं। आपके हाथों से जहाँ फर्म के व्यापार की बेहद तरक्की हुई, वहाँ सार्वजनिक और धार्मिक कार्य भी बहुत हुए। आपने संवत् १९५० में धूलिया में जीनिंग फैक्टरी खोली तथा मेसर्स श्रीराम शारीराम के नाम से चाँदनी चौक देहली में, मेसर्स बखतराम नानूराम के

नाम से जलगाँव में तथा एक फर्म इसी नाम से पलामखेड़ा जिला औरंगाबाद में, मेसर्स नानकचन्द शादीराम के नाम से कानपूर में, तथा इसी प्रकार लुधियाना, नौगढ़, अमलनेर, हापुड़, इत्यादि स्थानों पर अलग २ नाम से आपने अपनी फर्में स्थापित की थीं। संवत् १९५० में आपने कानपूर में ही कानपूर आयर्न एण्ड ब्रास वर्क्स, तथा फ्लोअर मिल डिप्टी के पड़ाव में खोला। इनसब फर्मों पर उस समय बैंकिंग, कमीशन एजेन्सी, गल्ला, कपड़ा व किराने का व्यापार होता था। मतलब यह कि सेठ दौलतरामजी के समय में इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपने कई बड़ी बड़ी इमारतें भी बनाई। जिनमें दिल्ली का कटरा धूलिया वाला (चाँदनी चौक) मकान दीवान खाना धूलिया वाला (सीताराम बाजार) तथा मकान नौगढ़ा कानपुर उल्लेखनीय हैं।

आपने दिल्ली के समीप कालका के मन्दिर पर एक धर्मशाला, तथा एक कुँआ, एक प्याऊ और एक दालान छोटी बीकानेर (गुड़गाँव) में बनवाया और इन संस्थाओं की मरम्मत और खर्च का स्थायी प्रबन्ध कर दिया तथा आपने न्यूहास्पिटल देहली में ५०००) प्रदान किये। मरते समय भी आपने कई हजार रुपये का दान किया।

आपकी फर्म के जनरल मैनेजर स्व० रायबहादुर जवाहरमलजी सोमाणी थे। सेठ दौलतरामजी का आप पर बड़ा प्रेम था। सन् १८९२ में रा० ब० जवाहरमलजी वार्ड नं० ८–९ की तरफ से मेम्बर चुने गये। इनके काम से पब्लिक बहुत खुश रही। फलत: आप तब से आजन्म पर्यंत इस पद से न हटे। सन् १९१० में आपको रायबहादुरी का खिताब मिला।

इस समय इस फर्म के मालिक सेठ शादीरामजी के दत्तक पुत्र रायसाहब मीनामलजी सोमाणी हैं। आपको सेठ दौलतरामजी ने अपने छोटे पुत्र शादीरामजी के नामपर संवत् १९४९ में दत्तक लिया। सन् १८९९ में आप बालिग हुए और अधिकार मिलने पर आपने सब कोठियों का काम सम्हाला। सन् १९०५ में आप कुर्सीनशीन और १९१६ में प्राविन्शियल दरबारी हुए। सन् १९१३ से १९२१ तक आप म्यूनिसियल मेम्बर रहे। तथा सन् १९१६ में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट चुने गये। सन् १९२० में आपको रायसाहब का खिताब मिला। इसके अतिरिक्त आप कई सभा सोसायटियों, एसोसिएशनों के प्रेसिडेण्ट तथा सेक्रेटरी हैं, तथा रह चुके हैं। मतलब यह कि आपका सार्वजनिक जीवन बहुत उज्वल है। आपने अपने खास निवास स्थान बीदा में एक धर्मशाला १००००) की लागत से बनवाई है। तथा और भी कई सार्वजनिक कार्य्यों में करीब पचास साठ हजार रुपया दान किया है। आपको भारत धर्म महामण्डल से धर्मालङ्कार की पदवी मिली है।

आपके इस समय चार पुत्र हैं जिनके नाम श्री हरिकृष्णजी, श्री रामकृष्णजी, श्री बालकृष्णजी तथा श्री राधाकृष्णजी हैं।

कुँ० हरिकिशनजी सोमाणी (दौलतराम श्रीराम) देहली

कुँ० रामकृष्णजी सोमाणी (दौलतराम श्रीराम) देहली

कुँ० बालकृष्णजी सोमाणी (दौलतराम श्रीराम) देहली

स्व० राय साहब सेठ लक्ष्मीनारायणजी (ब्रजमोहनदास-लक्ष्मीनारायण) देहली

सेठ रामकुमारजी जयपुरिया (लक्ष्मीचन्द रामकुमार) देहली (परिचय पृष्ठ १८ में देखिए)

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—देहली—मेसर्स दौलतराम भोराम धूलियावाला सीताराम बाजार (T. A. Dhuliawala) यहाँ पर बैंकिंग और लैण्डलार्ड प्रापर्टी का काम होता है।

हापुड़—मेसर्स रायबहादुर मोतीमल बालकृष्ण (T.A. Mahashawari) इस फर्म पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

हापुड़—मेसर्स हरिकृष्ण रामकृष्ण—यहाँ पर गल्ले का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स नानकचन्द शादीराम नौगढ़ा नयागंज (T. A. Dhuliwala) यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

कानपुर—दी कानपुर आयर्न मासवर्क्स एण्ड फ्लोअर मिल्स डिप्टी का पड़ाव—ये दोनों कारखाने आप ही के हैं।

धूलिया—मेसर्स वस्तराम नानूराम—यहाँ आप की जीनिंग फैक्टरी है।

मेसर्स ब्रजमोहनदास लक्ष्मीनारायण

देहली के अन्तर्गत धार्मिक और सार्वजनिक कार्यों में उदारतापूर्वक सहयोग देनेवाले महानुभावों का जब उल्लेख किया जाता है तब खत्री समाज के सुप्रसिद्ध रईस लाला लक्ष्मीनारायणजी का नाम भुलाया नहीं जा सकता। जिनके (कीर्ति और स्मृतियाँ) द्वारा किये गये अनेक परोपकारी कार्य्य आज भी इनके नाम को उज्ज्वल और गौरवान्वित कर रहे हैं।

इस सुप्रसिद्ध और आदरणीय खानदान के पूर्व पुरुष लाला लक्ष्मीनारायणजी के पितामह लाला महेशदासजी देहली के एक नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आप यहाँ के रईस, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल कमिश्नर थे। आपके सम्मान के लिए भारत सरकार और पब्लिक दोनों ही के द्वारा स्थानीय टाउनहाल में आपका एक एनलार्ज फोटो लगाया गया है।

आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन लाला लक्ष्मीनारायणजी ने किया। आपका जन्म संवत् १९१८ में हुआ। आपने अपने पूर्वजों की भाँति अपने खानदान की प्रतिष्ठा और सम्मान को अक्षुण्ण ही नहीं बनाये रक्खा प्रत्युत उसे और भी बढ़ाया। आपके जीवन में क्या भारत सरकार और क्या जनता दोनों ही आपको बड़ी इज्जत और सम्मान के साथ देखते थे। आप करीब १२ वर्ष तक स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के कमिश्नर तथा कई बार वाईस प्रेसिडेन्ट रह चुके हैं।

आपका ध्यान दानधर्म एवं सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी अधिक रूप से रहा है। आपने देहली में मुसाफिरों के आराम और उनकी सुविधा के लिए स्टेशन के पास ही करीब (५००००)

रुपयों की लागत से एक सुन्दर तथा विशाल धर्मशाला का निर्माण करवाया। इस धर्मशाला में आपने रोगियों के लिए एक औषधालय भी स्थापित किया जहाँ जनता को मुफ्त में औषधि प्रदान की जाती है जिसके ऊपर करीबन ५००) माहवार खर्च होता है—इतना ही नहीं इसके साथ ही आप अपनी निजी सम्पत्ति में से कुछ जायदाद पुण्यार्थ छोड़ गये हैं। जिसकी सालाना आय करीब २४००१) रुपया होती है। यह रकम पुण्यार्थ ही खर्च में लगती है।

आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर गवर्नमेंट ने आपको रायसाहब की सम्मानसूचक उपाधि से सम्मानित किया। साथ ही समय २ पर सरकार द्वारा आपको खिलअतें, मेडिल्स और सार्टिफिकेट्स आदि भी प्राप्त होते रहे हैं। आप स्थानीय आनरेरी मेजिस्ट्रेट भी थे। स्थानीय ऑफिसर और पब्लिक ने आपका अनूठा सम्मान प्रदर्शित करने के लिए स्थानीय टाऊनहाल में आपकी आईलपेंट की तस्वीर प्रतिष्ठित की है। कहने का मतलब यह है कि आप यहाँ के एक नामांकित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ में हो गया। आपके स्वर्गवास के समय आपके मित्रों, रिश्तेदारों एवं जनता में शोक का समुद्र उमड़ उठा था और उसके लिये सारे शहर में १ दिन हड़ताल रही थी।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक स्व० लाला लक्ष्मीनारायणजी के सुपुत्र लाला गिरधरी-लालजी हैं। आप भी अपने योग्य पिता की योग्य संतान हैं। आपने अपनी माताजी के नाम से अपने पिताजी के स्मारक स्वरूप बनी हुई धर्मशाला के पास ही एक और धर्मशाला बनवाई। इसमें करीब ६०) हजार रुपया खर्च हुआ। इस धर्मशाला के बनवाने से मुसाफिरों के लिये बहुत सुविधा हो गई। क्योंकि पहलेवाली धर्मशाला विवाहादि अवसरों पर माँगी हुई दे दी जाती थी। इससे मुसाफिरों को इधर उधर मारा २ फिरना पड़ता था। मगर दूसरी धर्मशाला के हो जाने से यह सब तकलीफें रफा हो गई। आपके द्वारा अनेक सार्वजनिक कामों में सहयोग दिया जाता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स ब्रजमोहनराम लक्ष्मीनारायण कटरानील-(बागदीवार) T. A. "Girdhari Co."	यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। यह फर्म यहाँ की रईस फर्मों में से एक है, इस फर्म पर ए. बी. सी. सिक्स एडिशन और बेण्टले का कोड व्यवहार किया जाता है।

राय बहादुर लाला हरध्यानसिंह (मनवालामल ठाकुरदास) दिल्ली

स्व० लाला रामकृष्णजी (मनवालामल ठाकुरदास) दिल्ली

मेसर्स मतवालामल ठाकुरदास

देहली में व्यापार करनेवाली पुरानी और प्रसिद्ध फर्मों में से उपरोक्त फर्म भी एक है। आप लोग खत्री जाति के सज्जन हैं। इसके संचालकों का निवास-स्थान यही है। इसका स्थापन करीब २०० वर्ष पूर्व ला० मतवालामलजी के द्वारा हुआ। आप पहले बहुत ही साधारण स्थिति के पुरुष थे। यहाँ तक कि शुरू २ में आप कौड़ियों और पैसों का काम करते थे। उसी से धीरे २ बढ़ कर आपने बैंकिंग व्यापार शुरू किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला ठाकुरदासजी ने काम सम्हाला आपके हाथों से इस फर्म की बड़ी उन्नति हुई। आप बड़े व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन थे। आप सन् १८५७ में मिलिटरि की सहायता करने के उपलक्ष में भारत सरकार द्वारा दरबारी बनाएगये थे। आपका सर्राफे में इतना बड़ा सम्मान था कि आप जिस व्यापारिक झगड़े का फैसला कर देते थे वह सर्वमान्य समझा जाता था। आप का स्वर्गवास सन् १८७१ में हुआ।

आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र ला० हरध्यान सिंहजी ने सम्हाला। आप अपने समय में देहली के नामांकित रईसों में चमकते हुए सितारे थे। भारत सरकार ने आपको रायबहादुर के सम्मानित पद से सुशोभित किया था। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः ला० राधाकिशनजी तथा ला० माधोप्रसादजी हैं। राय बहादुर ला० हरध्यान सिंहजी स्वर्गवास सन् १९११ में हो गया। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन ला० राधा-किशनजी ने सम्हाला। आपने अपने बुद्धिमानी, नम्रता एवं सेवा भाव से जनता के मन में एक खासा स्थान प्राप्त कर लिया था। आप स्थानीय म्यूनिसिपल कमिश्नर भी रहे। मगर दुर्भाग्य से सम्वत् १९१४ में आपने अपनी इहलौकिक लीला समाप्त की।

आपके पश्चात् इस फर्म के प्रधान लाला माधोप्रसादजी हैं। आप ही की देख-रेख में इसका संचालन होता है। जब से देहली में प्रांतिक वार फंड कमेटी की स्थापना हुई और आप इसके ऑनरेरी सेक्रेटरी बनाए गये तभी से आपका पब्लिक जीवन प्रारम्भ होता है। इस समय करीब ७ माह तक कठिन परिश्रम कर आपने दाताओं की सूची तैयार की। आपने स्वयं १०००) वार फंड में दिया। इसी साल आप देहली प्रान्त की ,फर्स्ट इंडियन वारलोन कमेटी के ऑनरेरी सेक्रेटरी बनाए गये। जिसमें आपके अथक परिश्रम और दिलचस्पी की वजह से लाखों रुपया एकत्रित हुआ। सन् १९१८ में आप स्थानीय म्युनिसिपेलिटी के कमिश्नर बनाए गये। इसके एक माह के पश्चात् ही पंजाब सरकार के द्वारा आप रिफॉर्टर्स आफ दी रिफर्मेटरी स्कूल देहली की कमेटी के मेम्बर बनाए गये।

सन् १९१८ में ही फिर दुबारा, दूसरे वार लोन फंड के आप ऑनरेरी सेक्रेटरी बनाए

श्री० सेठ सत्यनारायणजी गोएनका (परसराम हरनन्दराय) देहली

श्री० सेठ गंगाधरजी गोएनका (परसराम हरनन्दराय) देहली

सेठ दुर्गाप्रसादजी गोएनका (परसराम हरनंदराय) देहली

बा० राजेन्द्र कुमार S/o गंगाधरजी गोएनका

आप स्वयं भी अच्छे चित्रकार हैं। इसके अतिरिक्त आपके पास प्राचीन और नवीन ग्रन्थों का भी एक अच्छा संग्रह है। जिससे आपका पुस्तक-प्रेम प्रतीत होता है। सेठ गंगाधरजी के इस समय दो पुत्र हैं जिनमें एक का नाम बाबू राजेन्द्र कुमारजी हैं और दूसरे का अभी नाम करण नहीं हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

फर्म	परिचय
देहली—मेसर्स परसराम हरनन्दराय दमारू कटरा (T. A. Satya, Snnbeen, Prasad Phone 1566, Code Bentely Private	इस फर्म पर खास व्यापार बोरों का होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग, पीसगुड्स इम्पोर्टिंग, कमीशन एजन्सी का बहुत बड़ा काम होता है। यह फर्म दी गोयनका कॉटन मिल दिल्ली की मैनेजिंग एजण्ट है।
कलकत्ता—मेसर्स हरनन्दराय बद्रीदास ९५ हरीसन स्ट्रीट	इस फर्म पर गनी और हैसियन का व्यापार होता है। इस फर्म का मैनेजमेण्ट रायबहादुर सेठ मुरारामजी कानोडिया के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी कानोडिया करते हैं।
कलकत्ता—मेसर्स हरनन्दराय बद्रीदास ६९ कॉटनस्ट्रीट	यहाँ पर भी हैसियन और गनी का व्यापार होता है। इसमें रायबहादुर सेठमलजी डालमिया पार्टनर हैं।
कानपुर—मेसर्स हरनन्दराय अर्जुनदास नयागंज	यहाँ पर भी गनी का व्यापार होता है।
लुधियाना—मेसर्स हरनन्दराय दीनानाथ कैसरगंज	यहाँ पर भी गनी का व्यापार होता है।

बिड़ला ब्रदर्स

इस प्रतिष्ठित फर्म का विस्तृत परिचय अनेक चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ८१ से ८६ तक, तथा दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ २१५ पर तथा और भी स्थान २ पर दिया गया है। देहली में यह फर्म बिड़ला कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड की मैनेजिंग एजण्ट है। इसके मालिक बाबू जुगलकिशोरजी बिड़ला, बा० रामेश्वरदासजी बिड़ला, बा० घनश्यामदासजी बिड़ला तथा बा० ब्रजमोहनजी बिड़ला हैं। आप

लोगों ने अपने उदार कार्यों और सेवाओं से प्रत्येक देशवासी के हृदय में स्थान कर रक्खा है। आप लोग मारवाड़ी समाज के चमकते हुए रत्न हैं।

मेसर्स लाला मदनमोहनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मदनमोहनलालजी हैं। खेद है कि हमारे प्रतिनिधियों के कई बार घूमने पर भी आपका परिचय हमें प्राप्त नहीं हो सका। आप देहली के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। आप देहली क्लॉथ एण्ड जनरल मिल्स कम्पनी लिमिटेड के सेक्रेटरी और सम्भवतः मेनेजिंग एजण्ट भी हैं। आपका परिचय प्राप्त न हो सकने का हमें हार्दिक खेद है।

मेसर्स लक्ष्मीचन्द राजकुमार

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान नवलगढ़ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल समाज के जैपुरिया सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ लक्ष्मीचन्दजी सन् १८७८ में बम्बई गये। वहाँ जाकर आपने कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। बम्बई में सन् १८९२ में प्लेग चल जाने के कारण आप वहाँ से नाखिश होकर जयपुर चले आये। आपके पश्चात् आपके पुत्र रामकुमारजी पुनः बम्बई गये मगर फिर प्लेग की वजह से वापस सन् १८९९ में दिल्ली चले आये। यहाँ आकर आपने कटपीस का व्यापार शुरू किया। इस व्यापार को आप करीब १५ वर्ष तक करते रहे। इस व्यापार में आपको अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इसके पश्चात् सन् १९२२ में आपने रायबहादुर सरदार शोभासिंह के साझे में दी खालसा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स दिल्ली को लिया। यह मिल आज भी सुचारू रूप से काम कर रही है। इस मिल में ९००० स्पेंडिल्स तथा २५० लूम्स हैं। इसका सारा फाईनेंशियल सेठ रामकुमारजी करते हैं। इसमें करीब १५०००००) मशीनों पर तथा ८०००००) माल पर लगता है। इस फर्म की विशेष उन्नति आप ही के द्वारा हुई। आप मिलनसार व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन हैं। आपके दो भाई और हैं जिनके नाम मुरलीधरजी तथा महादेवप्रसादजी हैं। आप भी व्यापार में योग देते हैं। सेठ रामकुमारजी की भी यहाँ के व्यापारियों में बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

आपने कई धार्मिक कार्यों में भी सहायता प्रदान की है। आपकी ओर से दिल्ली क्लॉथ मार्केट के सामने वाला एक मकान जिसकी कीमत ६०) हजार रुपया है अपनी माताजी के स्मरणार्थ के रूप धर्मार्थ निकाल दिया, जिसकी आमदनी धर्मार्थ लगाई जाती है। आपने लेडी हार्डिंग हॉस्पिटल के लिए ५०००) लेडी हार्डिंग को दिये। आपने करीब २०००) की लागत की ५ मारवाड़ की प्याऊ बनवाई तथा १०००) नगद दिया जिससे पशुओं
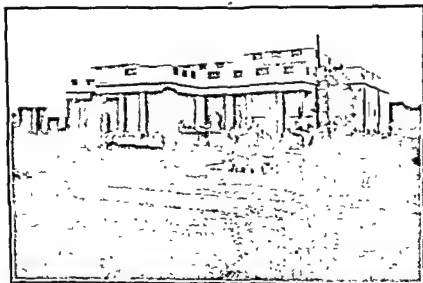
बिल्डिंग (मेसर्स सूरजलाल एण्ड सन्स ज्वैलर्स) देहली
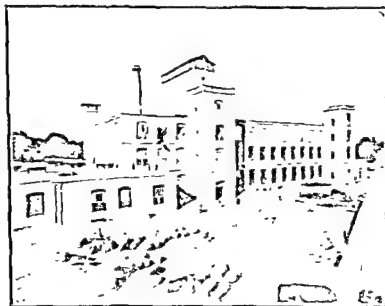
खालसा मिल (लक्ष्मीचन्द रामकुमार) देहली

के पीने के पानी का इन्तजाम होता है। इसके अतिरिक्त आपने एस० पी० सी० ए० व्हेटे-
नेरी हास्पिटल की बिल्डिंग बनाकर सरकार को दी। इसके लिए वाइसराय महोदय ने आपको
प्रशंसा सूचकपत्र दिया है। कहने का मतलब यह है कि आपने इसी प्रकार कई संस्थाओं को
दान दिया है तथा अब भी देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स लक्ष्मीचन्द रामकुमार
नया कटरा चाँदनी चौक
T. A. Jaipuria
T. Ph 5113
} यहाँ हेड ऑफिस है तथा मिल के बने माल के बिक्री का काम होता है।

देहली—मेसर्स—लक्ष्मीचंद जैपुरिया
चाँदनी चौक
} यहाँ इम्पोर्ट का काम होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स ईश्वरदास निर्भयराम

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान सूलागढ़ (भिवानी) है। आप लोग अग्र-वाल वैश्य-समाज के मुखिया सज्जन हैं। इस फर्म के मालिकों के पूर्व पुरुष लाला शंकरदास जी ने सम्वत् १८९५ के लगभग अपने आदि निवास-स्थान भिवानी में मेसर्स शंकरदास राम-प्रसाद के नाम से एक फर्म स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया था। आपने लगभग ६० वर्ष हुए दिल्ली में मेसर्स गंगाराम शिवनारायण के नाम से दूसरी फर्म स्थापित की थी। इन दोनों फर्मों में अच्छी उन्नति हुई पर मालिकों के परिवार अलग हो जाने के कारण लाला धनराजजी और लाला ईश्वरदासजी ने सम्वत् १९४६ में अपनी स्वतन्त्र फर्म उपरोक्त नाम से खोल कर कपड़े का पुराना व्यापार करने लगे। फर्म ने कपड़े के व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। इसकी प्रधान उन्नति लाला दामूरामजी के हाथों से हुई।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ दामूरामजी तथा आपके पुत्र बाबू अर्जुनदासजी और आपके बड़े भाई स्व० सेठ निर्भयरामजी के पुत्र लाला काशीरामजी और बाबू अर्जुनदासजी के पुत्र बाबू नन्दलालजी हैं।

इस फर्म के मालिकों की धार्मिक भावना सराहनीय है। इसकी ओर से भिवानी में एक अच्छी धर्मशाला बनी हुई है जिसकी सुव्यवस्था का पूरा प्रबन्ध है। इसी धर्मशाला में स्व० सेठ

[illegible] की स्मृति में [illegible] को
वैश्यजाति और ब्राह्मणों को [illegible]
को भोजन भी मिलता है। [illegible] कि
पाठशाला भी [illegible] गई है और [illegible]
है जिसमें [illegible]
धर्मार्थ बांटे जाते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

दिल्ली—मेसर्स ईश्वरदास [illegible] रामबाजार-[illegible] I A. Lahwar (ईश्वर)	[illegible]
कलकत्ता—मेसर्स रामप्रसाद ईश्वरदास ३ जगमोहन मल्लिक स्ट्रीट T A Repute	यहाँ [illegible] होता है।
कलकत्ता—मेसर्स छाजूराम अर्जुनदास सदासुख कटला हरीसनरोड	यहाँ [illegible]
मेसर्स शंकरदास रामप्रसाद हाल्दू बाजार भिवानी	यहाँ [illegible] काम होता है

मेसर्स ईश्वरीदास बनारसीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान हिसार है आप अग्रवाल वैश्य जाति के मितलन गौत्रीय सज्जन हैं। कहा जाता है कि यह कुटुम्ब मुगल सम्राट शाहजहाँ के समय में देहली में आकर निवास करने लगा। धीरे २ इस कुटुम्ब ने यहाँ गोटा किनारी तथा जवाहरात का व्यापार आरम्भ किया। इस कुटुम्ब के पूर्वज लाला हजारीलालजी को अन्तिम मुगलसम्राट् बहादुरशाह ने अपना शाही जौहरी बनाया था। उस समय आपके यहाँ जवाहरात तथा पुराने सिक्कों का कारबार जोरों से होता था। आपकी मातवरी से खुश होकर समय २ पर मुगल-बादशाहों की ओर से आपको कई सनदें भी प्राप्त हुई थीं पर दुर्भाग्यवश सन् ५७ के गदर के समय बड़ी गड़बड़ी में आपको धर्मपुरा, पहाड़गंज तथा गुड़गाँवा में अपना निवास तब्दील

सेठ जमुनादासजी (ईश्वरदास किशनचन्द)
देहली

स्व० लाला बनारसीदासजी (ईश्वरदास
बनारसीदास) देहली

करना पड़ा उस समय आपका माल सनदें आदि जो तहखाने में बन्द थी वे लुट गई और जल कर खाक हो गई। उस समय इस फर्म पर ईश्वरीदास केशरीदास के नाम से काम होता था।

संवत् १८७९ में सेठ ईश्वरीदासजी और केशरीदासजी अलग २ हो गये। सेठ ईश्वरीदास जी के कोई पुत्र नहीं था अतः आपने अपने दौहित्र सेठ बनारसीदासजी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। सेठ ईश्वरीदासजी बड़े प्रतिष्ठाप्राप्त सज्जन हो गये हैं। आपके हाथों से कई लोकोपकारी कार्य्य हुए हैं। आपने माधोदासजी की बगीची में एक श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर तथा कालकाजी पर तालाब और धर्मशाला बनवाई, लालडिग्गी पर एक कुआँ तैयार करवाया। इसी प्रकार के लोकोपकारी कार्य्यों में आपने बहुत द्रव्य लगाया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हुए संवत १९२२ में आपका शरीरान्त हुआ। सेठ बनारसीदासजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्रीरामकृष्णजी, श्री श्रीकृष्णजी, श्रीव्रजकृष्णजी तथा श्रीश्याम कृष्णजी हैं। सेठ बनारसीदासजी ने ऋषिकेश में एक धर्मशाला बनवाई, बद्रिकाश्रम के मार्ग में उत्तर काशी नामक स्थान में भी एक धर्मशाला का निर्माण कराया तथा देहली का ईश्वरभवन नामक कटला जिसमें किराने की मंडी है, निर्माण कराया। आप सन् १९११ में स्वर्गवासी हुए।

यह कुटुम्ब बहुत शिक्षित एवं ऊँचे दर्जे की प्रतिष्ठा पाये हुए हैं। केवल व्यापारिक जगत् में ही नहीं प्रत्युत शिक्षित समाज में भी इस परिवार ने बहुत उन्नति कर दिखाई है। लाला श्रीकृष्णदासजी बी०काम० इन्चार्ज एसोसिएटेड प्रेस हैं। लाला व्रजकृष्णजी बी० ए० ऊँचे दर्जे के स्वदेशभक्त सज्जन हैं। आप विशेषतया महात्माजी के साथ रहते हैं। लाला श्यामकृष्णजी एम० ए० पीसगुड्स का इम्पोर्ट बिजनेस करते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला रामकृष्णदासजी आदि चारों भ्राता हैं। लाला रामकृष्णदासजी मर्केंटाइल बैंक की देहली ब्रांच के खजांची तथा म्युनिसिपल कमिश्नर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहली—ईश्वरीदास बनारसीदास चाँदनी चौक तारका पता Mohar	यहाँ बैंकिंग व चाँदी सोने का बहुत बड़ा कारबार होता है।
देहली—ईश्वरीदास बनारसीदास कटला खुशालराय कृष्णनिवास	यहाँ जमींदारी तथा स्थाई सम्पत्ति का काम होता है।
देहली—सूर्य्य कृष्ण एण्ड कं० खिलीमारान	यहाँ कपड़े का तथा सूत का इम्पोर्ट तथा देशी कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स कालूराम मंगतराम

इस फर्म का विस्तृत परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३३ पर मेसर्स राजाराम कालूराम के नाम से दिया गया है। देहली फर्म का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स कालूराम मङ्गतराम अशर्फी कटला—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स केशवराम जीवनराम

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ २६३ पर मेसर्स जीवनराम जानकीदास के नाम से दिया गया है। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स केशवराम जीवनराम कटरा नवाब साहब चाँदनीचौक (T. A. Virat) यहाँ जर्मनी, जापान तथा इङ्गलैण्ड से कपड़े का इम्पोर्ट होता है तथा उसकी थोक बिक्री होती है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल

यह फर्म बीकानेर निवासी मोहता परिवार के सुप्रसिद्ध रायबहादुर गोवर्द्धनदास ओ० बी० ई० के वंशजों की है। इसके वर्तमान मालिक रा० ब० गोवर्द्धनदासजी के पुत्र श्रीयुत रामगोपालजी मोहता और श्रीयुत रा० ब० शिवरतनदासजी मोहता हैं। इस फर्म का हेड आफिस करांची में है। अतः इसका सुविस्तृत परिचय वहीं के पोर्शन में चित्रों समेत दिया गया है।

इस फर्म को दिल्ली में स्थापित हुए २४ वर्ष हुए। इस फर्म की देहली दुकान के प्रधान मुनीम श्रीयुत शिवदासजी मूंदड़ा हैं। आप माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान भिनासर (बिकानेर) में है। आपको इस फर्म पर कार्य करते हुए करीब २० वर्ष हुए।

दिल्ली में आपकी एक दूकान मेसर्स गिरधरलाल मनरतन के नाम से, मालीवाड़ा में है, इस पर सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल चाँदनी चौक (T. A. mohte) P. Box No 28 T. Ph. 5608 — इस फर्म पर सब प्रकार के रँगीन कपड़े का थोक व्यापार होता है। यह फर्म विलायत की सुप्रसिद्ध स्टिनर कम्पनी और जॉनगॉलेन की ग्यारण्टेड बेनियन है।

मेसर्स गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला रायसाहब गुरुप्रसादजी कपूर हैं। आप ही के द्वारा सन् १९०० में इस फर्म की स्थापना हुई। इस पर शुरू ही से कपड़े का इम्पोर्ट बिजिनेस किया गया। लाला गुरुप्रसादजी के पिता लाला छुटकामलजी का स्वर्गवास सन् १९११ में हुआ। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ उस समय रायसाहब की उमर २८ वर्ष की थी। आपके द्वारा फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आप मिलनसार एवं सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। आप दिल्ली पीसगुड्स एसोसियेशन के उपसभापति, देहली क्लाथ मार्केट के ऑनरेरी मंत्री, सत्री उपकारक सभा के मंत्री, इन्द्र प्रस्थ सेवा मंडल के सभापति, म्युनिसिपल कमिश्नर (१९१८–१९२८ तक) और आनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। सन् १९२४ में आपको भारत गवर्नमेण्ट ने रायसाहब की पदवी से विभूषित किया है। इसी प्रकार आपका और २ संस्थाओं में भी भाग है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स कटलानील देहली T. A. "Fovouride"	यहाँ हेड ऑफिस है, तथा कपड़े के इम्पोर्ट का व्यापार होता है।
मेसर्स—गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स मेस्टन रोड कानपुर T. A. "Sincerly"	यहाँ भी कपड़े का इम्पोर्ट व्यापार होता है।

मेसर्स गोपीनाथ छंगामल

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है। अतः इसका विशेष परिचय कानपुर में दिया गया है। यहां यह फर्म विलायती कपड़े का व्यापार करती है। इसका आफिस क्लाथ मार्केट में है जहां इम्पोर्ट का काम होता है।

मेसर्स छोगमल रामी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली में ही है। करीब ११० वर्षों से यह परिवार यहाँ पर बसा हुआ है। सब से पहले सम्वत् १८७१ में सेठ छोगमलजी ने इस फर्म के व्यापार को प्रारम्भ किया और तब से बराबर यह फर्म यहां पर व्यापार कर रही है। सम्वत् १९५१ में सेठ छोगमलजी का स्वर्गवास हुआ। आपके चार पुत्र हुए, जिनके नाम

क्रम से श्रीयुत गोवर्द्धनदासजी, श्रीयुत् शिवलालजी, श्रीयुत कन्हैयालालजी, श्रीयुत छुट्टनलालजी हैं। इस समय आप चारों भाई सम्मिलित रूप में इस फर्म के मालिक हैं।

देहली में आपका एक कटरा बना हुआ है। जिसका नाम राठी कटरा है। इसमें कपड़े के दुकानदार व्यापार करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—सेठ छोगमल राठी राठी कटरा नई सड़क (T. A. Rathi)	इस फर्म पर अहमदाबाद और बम्बई की देशी मिलों के कपड़े का व्यापार होता है।
अहमदाबाद—सेठ छोगमलजी जूना माधुपुरा	यह फर्म दिल्ली की फर्म को अहमदाबाद की मिलों का कपड़ा सप्लाय करती है।
कलकत्ता—सेठ छोगमलजी राठी २०१ हरिसन रोड	इस फर्म पर अहमदाबाद के मिलों की कपड़ों का व्यापार होता है।

मेसर्स ताराचन्द मंगतराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान भिवानी में है। आप अग्रवाल जाति के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। आपकी फर्म को देहली में स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। आपका पुराना फर्म सहारनपुर में करीब ५२ वर्षों से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना देहली में सेठ बालमुकुन्दजी ने की। इसकी विशेष तरक्की भी आप ही के हाथों से हुई। आप बड़े परिश्रमी और योग्य सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६५ में हुआ। सेठ बालमुकुन्दजी के तीन भाई और थे जिनके नाम श्रीयुत दुलिचन्दजी, रामचन्द्रजी और उदमीरामजी थे। इनमें से सेठ उदमीरामजी अभी विद्यमान हैं। इस समय यह फर्म इन्हीं चारों भाइयों के वंशजों की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सहारनपुर—हेड ऑफिस—मेसर्स शादीराम उदमीराम	इस फर्म पर गल्ला, गुड़, शक्कर इत्यादि की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
कलकत्ता—मेसर्स शादीराम उदमीराम ५९ तुलापट्टी (T. A. Harsika)	यहाँ पर भी यह फर्म कमीशन एजन्सी का काम करती है।

३ थाना भवनमण्डी—(मुजफ्फरनगर) मेसर्स शादीराम बदमीराम	यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
४ दिल्ली—मेसर्स शादीराम बाल-मुकुन्द नया बाजार	इस फर्म पर गल्ले की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
५ रोहतक—मेसर्स दुलीचन्द बदमी-राम	यह फर्म बर्माशैल स्टोरिज के रोहतक की सोल एजंट है तथा सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
६ दिल्ली—मेसर्स ताराचन्द मंगतराम क्लॉथ मार्केट	इस फर्म पर सब प्रकार के कपड़े का व्यापार होता है।
७ सफीदम मण्डी (झींद) मेसर्स दुलीचन्द बदमीराम	यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
८ बरनाला मण्डी (पटियाला) मेसर्स—शादीराम बालमुकुन्द	कमीशन एजन्सी का काम होता है।
९ भिवानी—मेसर्स शादीराम बाल मुकुन्द	यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स धीरजलाल रामप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है जहाँ यह फर्म मेसर्स बिहारीलाल रामचरन के नाम से व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ इसका आफिस चाँदनी चौक में है। यह आफिस इम्पोर्ट आफिस की ब्रांच है और विलायती कपड़े के इम्पोर्ट का काम करती है।

मेसर्स निहालचंद बल्देव सहाय

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः पूरा परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म क्लाथ मार्केट में है जहाँ कानपुर के म्योर मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है। इसी प्रकार यहाँ के न्यू कटरे में मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र के नाम से इसकी एक दूसरी फर्म है जहाँ कानपुर इलगिन मिल के कपड़े तथा सूत की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स नौरंगराय श्यामसुन्दर

इस फर्म को दिल्ली में स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए पर बीच २ में इसके नाम बदलते रहे हैं। इस फर्म की स्थापना यहाँ पर सेठ रामविलासजी ने की। आपके छोटे भाई श्रीयुत राजारामजी हैं। सम्वत् १९६४ तक आप दोनों भाइयों का काम सम्मिलित रूप में चलता रहा। बाद में दोनों फर्में अलग हो गईं। उपरोक्त फर्म सेठ राजारामजी की है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं; जिनके नाम क्रम से श्रीयुत दुलिचन्दजी, माधौप्रसादजी और श्रीयुत नौरंगरायजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—दयाराम दुलिचन्द खारी बावड़ी	इस फर्म पर कपड़ा, किराना अनाज वगैरह सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
२ मेसर्स—नौरंगराय श्यामसुन्दर दिल्ली क्लॉथ मार्केट	यहाँ पर सब प्रकार के देशी कपड़े का व्यापार होता है।
३ थाना भवनमण्डी (मुजफ्फरनगर) मेसर्स दयाराम दुलीचन्द	इस फर्म पर सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स नारायणदास भगवानदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान दिल्ली ही है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। लग भग ८० वर्ष पूर्व सेठ भगवानदासजी ने मेसर्स नारायणदास भगवानदास के नाम से अपनी फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार आरम्भ किया था। आपको इस व्यापार में अच्छी सफलता मिली। अतः आपने ५० वर्ष पूर्व अपनी दूसरी फर्म की स्थापना की और विलायती कपड़े का व्यापार करने लगे। इस प्रकार इस फर्म की स्थापना हुई, इस फर्म ने कपड़े के व्यापार में अच्छी उन्नति प्राप्त की जिसके प्रमाण स्वरूप आज फर्म की कितनी ही अन्य शाखायें हैं जो सभी प्रकार का देशी तथा विलायती कपड़े का थोक व्यवसाय करती हैं। इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ परमेश्वरीदासजी के हाथों से हुई। इस फर्म का प्रधान संचालन स्वयं सेठजी करते हैं पर आपके परामर्श और देख-रेख में आपके पुत्र बाबू पदुमचंदजी व्यापार का पूरा काम संचालित करते हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ परमेश्वरीदासजी तथा आपके पुत्र बाबू पदुमचंदजी हैं। सेठ परमेश्वरीदासजी ने नाथद्वारे में एक विशाल धर्मशाला बनवाई है जिसमें सरलता

लाला परमेश्वरीदास जी (भगवानदास परमेश्वरीदास) देहली

लाला जयनारायणजी कपूर (गोरधनदास शिवनारायण) देहली

... प्रेमसुखदासजी (भगवानदास परमेश्वरीदास) देहली

रायबहादुर लाला ...

से १ हजार आदमी ठहर सकते हैं। इसी प्रकार आपने दिल्ली में १ लाख रुपया खर्च कर दाऊजी का मंदिर बनवाया है। आपके पिताजी ने भी दिल्ली के मुहल्ले चूड़ीवाला में एक सुन्दर मंदिर बनवाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

दिल्ली-मेसर्स नारायनदास भगवानदास माली वाड़ा नयी सड़क	यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा कपड़ा खरीद कर थोक देसावर को भेजा जाता है। यहाँ मैन्चेस्टर की इर्वंट ब्राडवर्थ की दिल्ली के लिये सोल एजन्सी है।
दिल्ली-मेसर्स भगवानदास परमेश्वरीदास क्लाथ मार्केट T. A. Padum	यहाँ देशी तथा विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है तथा सोलापुरी माल का व्यापार भी है। साथ ही बम्बई की इंडियन मैन्यूफेक्चरिंग कम्पनी, तथा न्यू कैसरे हिंद मिल की भी एजन्सी है।
दिल्ली-मेसर्स पदुमचंद एण्ड कम्पनी क्लाथ मार्केट	यहाँ कपड़े के इम्पोर्ट का काम होता है।
दिल्ली-मेसर्स पदुमचंद राधामोहन फाटक हबशखाँ	यहाँ किराने का थोक व्यापार होता है। हल्दी का लम्बा व्यापार होता है।
अमृतसर-मेसर्स पदुमचंद राधामोहन पुराना मार्केट,	यहाँ कपड़े के कमीशन का व्यापार होता है।
बम्बई-मेसर्स परमेश्वरीदास किशनचन्द धर्मराजलेन मूलजी जेठा मार्केट मेंबर २ T. A. Slowsteady.	यहाँ देशी मिलों का माल खरीद कर बेचा जाता है।

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

इस फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय मेसर्स थेनीराम जेसराज के नाम से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में कॉटन विभाग में दिया गया है। देहली में यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स पोहमल ब्रदर्स

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १४६ पर अनेक चित्रों सहित दिया जा चुका है। इसका हेड ऑफिस सिन्ध हैदराबाद में है। यह फर्म उन फर्मों में से है जिसने अपना व्यापार न केवल इसी देश में, प्रत्युत् विदेशों के भी खास २ स्थानों में चमका रक्खा है। इसकी सात बड़ी २ दुकानें भारतवर्ष में आठ पूर्वीय देशों में तथा तेरह दुकानें पश्चिमीय देशों में हैं। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स पोहमल ब्रदर्स चाँदनी चौक (T. A. Pohmal) यहाँ पर जापानी और चायनीज सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमसुखदास नरसिंहदास

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य-समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ प्रेमसुखदासजी ने की। उस समय इस पर आढ़त का व्यापार शुरू किया। आपको आपके पुत्र सेठ नरसिंहदासजी भी व्यापार में योग देते थे। सम्वत् १९५० में एकाएक नरसिंहदासजी की मृत्यु हो गई। आप के ५ वर्ष के पश्चात ही सेठ प्रेमसुखदासजी का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ प्रेमसुखदासजी के पश्चात् इस फर्म के कार्य का संचालन आपके भतीजे लाला केदारनाथजी ने सम्हाला। आप व्यापारकुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके द्वारा फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपके दो भाई और हैं। बड़े भाई का नाम सेठ नैनसुखदासजी तथा छोटे भाई का नाम मेलारामजी है। लाला नैनसुखदासजी भिवानी में रहते हैं और लाला मेलारामजी अमृतसर में रहते हैं। आपने अमृतसर दुकान की बहुत उन्नति की है। आप यहाँ के प्रभावशाली व्यक्ति माने जाते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के झरिया के सभापति चुने गये थे। आप नये विचारों के स्वदेशभक्त सज्जन हैं। आपने राजनैतिक और समाज-सम्बन्धी गद्यपद्य की कई पुस्तकें लिखी हैं। असहयोग के जमाने में देश की पुनीत सेवा करते हुए आपने जेलयात्रा भी की थी। लाला केदारनाथजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रम से बा० हनुमान प्रसादजी एवं बाबू घनश्यामदासजी है। इनमें से बाबू हनुमानप्रसादजी राली ब्रदर्स की दिल्ली ब्रेंच के कपड़ा एवं सूत के बेनियन हैं। बा० घनश्यामदासजी इस समय बी. ए. में पढ़ रहे हैं। सेठ केदारनाथजी क्लाथ कमीशन एजण्ट एसोसिएशन तथा क्लाथ मार्केट के सभापति हैं। बा० हनुमानप्रसादजी स्थानीय मारवाड़ी युवक मण्डल के सभापति हैं तथा कई स्कूलों के मन्त्री हैं। मतलब कहने का यह कि यह परिवार शिक्षित एवं सार्वजनिक कार्यों में बहुत अग्रगण्य है।

सेठ केदारनाथजी सिंहल (क्षेमसुखदास नरसिंहदास) देहली

सेठ लक्ष्मीनारायणजी लाड़ोदिया (एल० एन० लाड़ोदिया) देहली

...जी सिंहल (क्षेमसुखदास नरसिंहदास) देहली

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

भिवानी—मेसर्स प्रेमसुखदास चैतराम हालू बाजार	यहाँ हेड आफिस है तथा कपड़े का काम होता है।
दिल्ली—मेसर्स प्रेमसुखदास नरसिंहदास नई सड़क T. A. sukh	यहाँ बैंकिंग, कपड़ा, सूत, बारदाना एवं आढ़त का व्यापार होता है। यह फर्म रालित्रदर्स के कपड़ा एवं सूत विभाग की बेनियन है।
अमृतसर—मेसर्स नरसिंहदास हनुमानप्रसाद बिकानेरिया बाजार आलू कटला T. A. Narsigh	यहाँ बैंकिंग, कपड़ा, सूत, बारदाना एवं कमीशन एजंट का काम होता है।
बम्बई—नरसिंहदास मेलाराम कालबादेवी रोड नं० २	यहाँ बैंकिंग, किराना सूत तथा कपड़े का व्यापार होता है।
जालंधर—प्रेमसुखदास फनीराम बाजार नोहरिया	बैंकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है।

लुधियाना—प्रेमसुखदास रामचन्द्र—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स बद्रीदास बगड़िया

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म न्यू क्लाथ मार्केट में है जहाँ विलायती कपड़े की एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल बेनीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान नवलगढ़ (जयपुर) का है। आप अग्रवाल समाज के जयपुरिया सज्जन हैं। सेठ बिहारीलालजी संवत १९५२ में देहली आये। यहाँ आपने कटपीस का व्यापार शुरू किया। जिसमें अच्छी तरक्की हुई। इस समय आपके पाँच पुत्र हैं, जिनके नाम बा० बेनीप्रसादजी, मदनलालजी, बासुदेवजी, सागरमलजी तथा परसराम जी हैं। इनमें से प्रथम तीन सेठ बिहारीलालजी से अलग होकर अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। तथा शेष दो अपने पिता के साथ व्यापार कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स विहारीलाल बेनीप्रसाद कटरा शाहंशाह T. A. Saraf	यहाँ पर कटपीस का इम्पोर्ट तथा व्यापार होता है।

मेसर्स विहारीलाल पोद्दार

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान बिसाऊ (जयपुर) है। इस फर्म की स्थापना सेठ बिहारीलालजी तथा जमनादासजी पोद्दार ने लगभग ३१ वर्ष पूर्व दिल्ली में की थी। आरम्भ में इस फर्म पर अमदाबाद के मिलों के कपड़े का व्यापार आरम्भ किया गया। जिसमें फर्म को अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इसके बाद अमदाबादी माल के स्थान पर फर्म ने बम्बई के मिलों का माल बेचना आरम्भ किया और पूर्व के अनुरूप ही इस व्यापार में भी अच्छी सफलता प्राप्त की। जिस समय नागपुर का मॉडल मिल स्थापित हुआ उस समय फर्म ने अपना अन्य सब काम बंद कर मॉडल मिल के कपड़े की सोल एजेन्सी दिल्ली और कानपुर के लिये ली जो वर्तमान समय में भी इसी फर्म के पास है। इसी प्रकार बदनेरा के बिरार मैन्युफेक्चरिंग कम्पनी लि० की भी सोल एजेन्सी इस फर्म ने आरम्भ से ही दिल्ली और कानपुर के लिये ली जो आज भी इस फर्म के पास है।

इस फर्म की प्रधान उन्नति इसके संस्थापक सेठ बिहारीलालजी पोद्दार और छोटे भाई सेठ जमनादासजी पोद्दार के हाथों से हुई है। आप लोगों ने अपने व्यापारकौशल से फर्म को उन्नत अवस्था पर पहुँचाया है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बिहारीलालजी तथा आपके भाई सेठ जमनादासजी और सेठ बिहारीलालजी के पुत्र बाबू रामेश्वरदासजी तथा सेठ जमनादासजी के पुत्र बाबू कपूरचंद जी और बाबू नाथूरामजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स बिहारीलाल पोद्दार नया कटरा, चांदनी चौक दिल्ली T. A. Poddar	यहाँ माडेल मिल तथा बरार मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि० की सोल एजन्सी है और इन्हीं मिलों के माल का व्यापार होता है।
मेसर्स बिहारीलाल पोद्दार जेनरलगंज कानपुर	यहाँ माडेल मिल तथा बरार मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि० की सोल एजन्सी है। और इन्हीं मिलों के माल का व्यापार होता है।

सेठ रामलालजी खेमका

इस फर्म के मालिक बिसाऊ (शेखावटी) के रहनेवाले हैं। सर्व प्रथम यहां सेठ जोधरामजी आये और कपड़े का कारबार शुरु किया। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपकी देख-रेख में आपके पुत्र सेठ सनेहीरामजी भी कारबार में योग देने लग गये थे। आप दोनों सज्जनों के हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप व्यापार-कुशल सज्जन थे। आपने बम्बई, कलकत्ता आदि स्थानों पर भी अपनी शाखाएँ स्थापित की। सेठ जोधरामजी का सम्वत् १९५० में और सेठ सनेहीरामजी का सम्वत् १९७४ में देहावसान हो गया। सेठ सनेहीराम-जी ने यहाँ हिन्दुस्थानी मर्कण्टाइल असोसिएशन स्थापित की तथा इसके करीब २० वर्ष तक सभापति रहे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सनेहीरामजी के पुत्र बाबू रामलालजी खेमका हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने दस वर्ष पूर्व बम्बई, कलकत्ता की फर्म को सम्मान के साथ उठा ली है। आजकल आप अपने ही नाम से बैंकिंग बिजिनेस करते हैं। आप हिन्दुस्थानी मर्कण्टाइल एसोसिएशन के सभापति तथा पंजाब नेशनल बैंक के डायरेक्टर हैं। दिल्ली म्युनिसिपेलिटी के आप मेंबर भी रह चुके हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जोधराम सनेहीराम कटरा अशर्फी चाँदनी चौक दिल्ली	यहां बैंकिंग और हुंडी चिट्ठी का व्यापार होता है।

मेसर्स रामलाल श्यामलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास देहली है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९६९ में हुआ। इस फर्म का स्थापन लाला रामप्रसादजी ने किया। आप बड़े सुयोग्य, देशभक्त और सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। आप मर्केण्टाइल एसोसिएशन के सन् १९२१ से ऑनरेरी सेक्रेटरी, मारवाड़ी लायब्रेरी के सेक्रेटरी तथा म्युनि-सिपिल कमिश्नर भी सन् १९२१ से हैं। देहली के व्यापारिक तथा सार्वजनिक समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके पार्टनर लाला श्यामलालजी का स्वर्गवास हो चुका है। अब उनका सम्बन्ध भी नहीं है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रामप्रसाद श्यामलाल चांदनी चौक।	इस फर्म पर कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स रिझूमल ब्रदर्स

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १५१ पर दिया गया है। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है—

देहली—मेसर्स रिझूमल ब्रदर्स चाँदनी चौक (T. A. whitesilk) यहाँ पर रेशमी सिल्क गुड्स तथा हैण्डकर चीफ का व्यापार होता है।

मेसर्स रामेश्वरदास मंगलचंद

इस डीलिंग फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय अनेक चित्रों सहित मेसर्स फूलचन्द बेगराज के नाम से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १२८ पर दिया गया है।

देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स रामेश्वरदास मङ्गलचन्द न्यू क्लॉथ मार्केट—यहाँ पर बैंकिंग बिजीनेस और कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स एल० एन० गाड़ोदिया एण्ड को०

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गाड़ोदिया सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया ने सन् १९१७ ई० में दिल्ली में की थी। इस फर्म पर कपड़े का इम्पोर्ट तथा देशी और विलायती कपड़े की बिक्री का थोक व्यापार आरम्भ से ही होता है। इस फर्म के पास कानपुर, अहमदाबाद तथा बम्बई की कितनी ही देशी मिलों की एजेन्सियाँ भी हैं जिनके माल की बिक्री के लिए इसकी कितनी शाखायें भी दिल्ली और अन्य शहरों में हैं।

सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के म्यूनिसिपल कमिश्नर, हिन्दुस्तान टाइम्स लि० के डायरेक्टर तथा दिल्ली के हिन्दुस्तानी मर्केन्टाइल एसोसियेशन की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाड़ोदिया और लाला बनारसीदासजी हैं।

उपर्युक्त सेठ लक्ष्मीनारायणजी ने एक लाख रुपया दान देकर गाड़ोदिया ट्रस्ट बनाया है। इस रकम में से कॉमर्शियल गाड़ोदिया स्टोअर्स कूचा नटवां, दिल्ली, तथा लोहकन टैक्सला रोड अमृतसर में स्वतंत्र रूप से चलते हैं। इन दोनों स्टोअर्स की तमाम आय शिक्षा, तथा अन्य धार्मिक कामों में खर्च की जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया कं० गाड़ोदिया बिल्डिंग नियरछाऊटावर दिल्ली T. A. Gadodia — यहाँ हेड ऑफिस है यहाँ कपड़े की आढ़त का काम होता है तथा खरीद और फरोख्त का काम होता है।

मेसर्स—लक्ष्मीनारायण बनारसीदास कूचानटवा दिल्ली — यहाँ आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—एल०एन० गाड़ोदिया गिरधारी लाल जेनरल गंज कानपुर (T. A. Girdhari) — यहाँ न्यू विक्टोरिया मिल्स की सोल एजन्सी है।

मेसर्स—एल०एन० गाड़ोदिया कम्पनी गोल्डन टेम्पल रोड अमृतसर — यहाँ कपड़े की आढ़त तथा खरीद फरोख्त का काम होता है।

इसी प्रकार दिल्ली के न्यू क्लाथ मार्केट, कटरा मुंशी गौरीशंकर, कटरा धोबा और कटरा नवाब साहब में मेसर्स एल० एन० गाड़ोदिया एण्ड को० के नाम से अन्य चार दुकानें हैं जहाँ कपड़े की बिक्री का काम होता है। इसी प्रकार अमृतसर में कटरा आहलूवाला में आपकी तीन दुकानें और हैं। यहाँ पर भी कपड़े का काम होता है।

मेसर्स शादीराम मंगलसेन

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान [illegible] है। लगभग ५० वर्ष पूर्व लाला
...लालजी ने मेसर्स भगवान मंगलसेन के नाम से अपनी फर्म दिल्ली में स्थापित की
...र कपड़े की आढ़त का व्यापार आरम्भ किया। आपने कपड़े की बिक्री के लिए यह
...ही फर्म मेसर्स भगवान दुलीचन्द के नाम से खोली। आपके स्वर्गवास होने पर आपके
...लाला दुलीचन्द और लाला मंगलसेनजी ने व्यापार का संचालन किया। आप लोगों ने
...व्यापार को बहुत अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आप लोगों ने दिल्ली और भारत
...पने ही अन्य व्यापारिक स्थानों में कई ब्रांचें खोलने से [illegible] फर्म की एक है।
...१९०२ में लाला दुलीचन्दजी का स्वर्गवास हुआ। अतः फर्म के व्यवसाय के संचालन
...र १९११ से लाला मंगलसेन के हाथ में आया। आरम्भ से ही लाला
...जी ही फर्म का संचालन करते थे और आपके ही मेसर्स शादीराम मंगलसेन के नाम

से इस फर्म की स्थापना संवत् १९७६ में अलग होकर की थी। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८१ में हुआ और फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला जोगध्यानजी के हाथ में आया।

इस फर्म के मालिक लाला जोगध्यानजी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शादीराम मंगलसेन ईगर्टन रोड दिल्ली — यहाँ देशी तथा विलायती कपड़े की आढ़त का काम होता है।

जौहरी

मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान पटियाला-स्टेट है। आप क्षत्री जाति के सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व यह फर्म लाला कानजीमल के द्वारा बम्बई में मेसर्स हजारीमल कम्पनी के नाम से शुरू हुई। जिस समय कम्पनी खोली गई उस समय के पहले आप चार रुपया मासिक पर सर्विस करते थे। कम्पनी भी सिर्फ ४००) की पूंजी से खोली। धीरे २ उन्नति होती गई। आपने कम्पनी का नाम बदल कर मेसर्स कानजीमल भगवानदास के नाम से काम शुरू किया। इसके पश्चात् आप उपरोक्त नाम से व्यापार करने लगे। आप के द्वारा ही इस फर्म की उन्नति हुई। आप व्यापार-कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९२७ में हो गया। आप ने किंग जॉर्ज एवम् बादशाह हबीबुल्लाखाँ आदि से भी जवाहरात का व्यापार किया था। तथा कई साहबों से प्रशंसापत्र प्राप्त किये। आप के छ पुत्र हुए जिनमें से बनारसी दासजी तथा छोटे लालजी इस फर्म से अलग हो गये। शेष ४ जिनके नाम क्रमशः रामरतनजी, परसोतमदासजी, लक्ष्मणदासजी और बालकृष्णदासजी हैं जो इस फर्म के मालिक हैं। रामरतनजी सब से बड़े हैं। फर्म का संचालन आप ही करते हैं। शेष तीनों भाई विद्याध्ययन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—कानजीमल एण्ड सन्स— चाँदनी चौक दिल्ली T. A. Royal — यहाँ हेड-ऑफिस है तथा जवाहरात, सोना चाँदी के बने बर्तन तथा जेवर और शाल, पशिमने, गलीचे आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स अलीपुर रोड, दिल्ली T. A. Royal	यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।
मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स इस्ट स्ट्रीट पूना	यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।

मेसर्स खूबचन्द इन्द्रचन्द

इस फर्म के मालिक ओसवाल वैश्य-समाज के चोरडिया सज्जन हैं। करीब १२ पीढ़ियों से यह परिवार यहीं निवास करता चला आ रहा है। पहले इस परिवार के लोग गोटा किनारी का व्यवसाय करते थे। संवत् १९५५ में लाला खूबचन्दजी तथा आप के पुत्र लाला इन्द्रचन्द्रजी ने जवाहरात के कारबार को तरक्की दी। लाला खूबचन्दजी के पिता सेठ रूपचन्दजी का संवत् १९६३ में देहावसान हो गया। एक साल के बाद ही अर्थात् सम्वत् १९६४ में लाला खूबचन्दजी भी स्वर्गवासी हो गये। तब से इस फर्म के कार्य्यभार का संचालन एक मात्र सेठ इन्द्रचन्द्रजी करते हैं। यों तो फर्म पहले ही उन्नतावस्था में थी मगर आप ने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप व्यापार कुशल, मेधावी एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आप के एक पुत्र हैं जिनका नाम चम्पालालजी हैं। आप अपने पिताजी की देखरेख में फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—खूबचन्द इन्द्रचन्द मालीवाड़ा, देहली T. A. Faithful	यहाँ सब प्रकार के जवाहरात का होलसेल व्यापार होता है। यह फर्म विलायत में भी अपना माल भेजती है।

मेसर्स रामचन्द्र हजारीमल

यह फर्म संवत् १९०५ से स्थापित है। प्रारंभ में इसे सेठ बालमुकुन्दजी एवम् सेठ केसरीचंदजी ने स्थापित किया। सेठ बालमुकुन्दजी माहेश्वरी जाति के सज्जन और सेठ केसरीचंदजी श्री श्रीमाल जाति के थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। आप लोगों के पश्चात् सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ रामचन्द्रजी और सेठ केसरीचंदजी के पुत्र सेठ हजारीमलजी ने कारबार को सम्हाला। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। सेठ रामचन्द्रजी का स्वर्गवास संवत् १९५३ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हजारीमलजी एवम् सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र दुर्गामलजी हैं। आप ही फर्म के काम का संचालन करते हैं।

सेठ रामचन्द्रजी ने करीब एक लाख की लागत से मालीवाड़े में एक राम लक्ष्मण का मन्दिर बनवाया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स रामचन्द्र हजारीमल चाँदनी चौक T. A. Poonam	इस फर्म पर बैंकिंग तथा जवाहरात के जड़ाऊ जेवर और फुटकर नगों का व्यापार होता है।

मेसर्स शादीराम गोकुलचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिक ओसवाल समाज के जैन धर्मावलम्बी नाहर सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० निधीमलजी के पिता पहले पहल यहाँ आये। तथा मुहम्मदशाह रंगीले के समय में जवाहरात का काम शुरू किया, आपके पश्चात आपके पुत्र ला० निधीमलजी ने फर्म के कार्य का संचालन किया। आपके समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० जीतमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप व्यापार कुशल और मेधावी व्यक्ति थे। अपने अपनी फर्म की बहुत तरक्की की। साथ ही फर्म के सम्मान को भी बहुत बढ़ाया। उस समय इस फर्म पर मेसर्स निद्धोमल जीतमल के नाम से जवाहरात का व्यापार होता था। आपका भी स्वर्गवास हो गया। दुःख की बात है कि आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० बुद्धसिंहजी ने कई कारणों की वजह से फर्म की बरबादी कर दी। आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० शादीरामजी होनहार व्यक्ति हुए। आप व्यापार चतुर, बुद्धिमान एवं मेधावी सज्जन थे। आपने फिर गोटे का कारबार प्रारम्भ किया तथा अपने पिताजी के द्वारा खोई हुई इज्जत को फिर प्राप्त किया। आप मारवाड़ में शादीरामजी किनारी वालों के नाम से मशहूर थे। आपका स्वर्गवास १९१८ में हो गया। आपके दो पुत्र हुए। लाला भैरोंदासजी तथा ला० गोकुलचंदजी।

ला० शादीरामजी के पश्चात् फर्म का संचालन ला० भैरोंदासजी करने लगे। आप गोटे ही का व्यापार करते रहे। इसी समय मङ्गलसेनजी की जिम्मेदारी में मेसर्स मङ्गलसेन भैरोंदास के नाम से एक और फर्म स्थापित किया। तथा लाला शादीरामजी की ही मौजूदगी में आप ही ने गोकुलचन्द कुर्मीलाल के नाम से एक और फर्म स्थापित की। इस प्रकार फर्म की क्रमशः उन्नति होती गई। ला० भैरोंदासजी का स्वर्गवास संवत् १९७४ में हो गया।

लाला इन्द्रचन्दजी चोरड़िया (नूबचन्द इन्द्रचन्द) देहली

लाला हजारीमलजी जौहरी (रामचन्द हजारीमल) देहली

लाला गोकुलचन्दजी जौहरी (सादीराम गोकुलचन्द) देहली

लाला सूरजमलजी बाकलीवाल (सूरजमल एण्ड सन्स) देहली
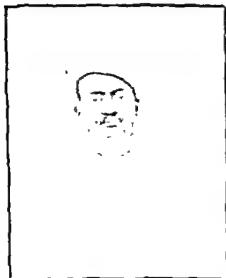
वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० गोकुलचन्द्रजी तथा आपके भतीजे ला०
लालजी हैं। आपके दूसरे भतीजे ला० मोहन लालजी का स्वर्गवास हो गया है। ला०
लालजी के कपूरचंदजी नामक एक पुत्र हैं। ला० सोहनलालजी के महलचंदजी, हेम
तथा मेहताबचंदजी नामक तीन पुत्र हैं।

संवत् १९५५ से ही इस फर्म के प्रधान संचालक ला० गोकुलचंदजी हैं। आपने
साल से अपने पुराने जवाहरात के व्यवसाय को फिर स्थापित किया। संवत् १९८० में आ
गोटे के व्यवसाय को बंद कर दिया। वर्तमान में आपकी फर्म सिर्फ जवाहरात ही का व्य
साय करती है। इस व्यापार में यह फर्म अच्छी समझी जाती है।

ला० सोहनलालजी भी बुद्धिमान और योग्य सज्जन हैं। आप ला० साहब की देख-रे
में व्यापार का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

देहली—मेसर्स शादीराम गोकुलचंद चाँदनी चौक।	यहाँ बैंकिंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है। रियासतों को भी यह फर्म माल सप्लाई करती है। इसके अतिरिक्त कमीशन एजन्सी का काम भी होता है।

मेसर्स सूरजमल एण्ड सन्स

इस फर्म के मालिक ग्वालियर के मूल निवासी हैं। आप खण्डेलवाल जैन जाति के सद्-
गृहस्थ सज्जन हैं। इस फर्म को यहाँ पर लाला सूरजमलजी ने सन् १८८० में स्थापित की।
आप केवल १६ वर्ष की उम्र में ग्वालियर से देहली आये इतनी थोड़ी उम्र में ही आपने
अपनी व्यापारिक प्रतिभा से अच्छी तरक्की कर ली। इस समय आप ही इस फर्म के मैनेजर
हैं। यह फर्म जवाहिरात तथा आर्ट और क्यूरियो चीजों का अच्छा व्यापार करती है।

लाला सूरजमलजी के इस समय पाँच पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः मानिकचन्दजी,
गुलाबचन्दजी, निर्मलचन्दजी, कपूरचन्दजी और अनूपचन्दजी है। आप सब व्यापार में
भाग लेते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स सूरजमल एण्ड सन्स देहली (T. A. Ecchlinel) ५४	इस फर्म पर सब प्रकार की जौहरी और क्यूरियो चीजों का व्यापार होता है।

लोहे के व्यापारी

मेसर्स नन्नेमल जानकीदास तथा रायसाहब लाला नानकचन्दजी

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान दिल्ली है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ नन्नेमलजी ने कर लोहे का व्यापार जारी किया। सेठ नन्नेमलजी के स्वर्गवास के पश्चात् सेठ जानकीदासजी ने फर्म का संचालन किया। आपने फर्म के लोहे के व्यापार के अतिरिक्त ग्राण्ड आयर्न वर्क्स के अपने कारखाने को उन्नति की ओर अग्रसर किया। आपके पश्चात आपके लघुभ्राता सेठ रामचन्द्रजी ने इसको और भी तरक्की पर पहुँचाया। इसकी खास उन्नति लाला रामचन्द्रजी और बनारसी-दासजी के हाथों से हुई। लाला रामचन्द्रजी ने अपने जीवन में राजसेवा और जातीय सेवा में बहुत सहयोग दिया था। आपका स्वर्गवास सन् १९१० में हो गया। मरते समय आपने एक लाख रुपये की रकम धर्मार्थ निकाली।

लाला रामचन्द्रजी के दो पुत्र हैं रायसाहब लाला नानकचन्दजी और लाला दीनानाथजी (जो जन्म से गूंगे तथा बहरे हैं)।

रायसाहब लाला नानकचन्दजी सन् १९२४ में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और १९२५ में म्यूनिसिपल कमिश्नर हुए, तथा १९२६ में रायसाहब की सम्मान सूचक उपाधि से विभूषित किये गये। आपने २५००० इन्फण्ट वेलफेअर सेण्टर में दिया। इस संस्था का शिलारोपण आपके पिता जी के नाम से सन् १९२३ में काउण्टेस ऑफ रीडिंग साहब ने किया। इस सेण्टर के कायम हो जाने से लेडी रीडिंगहेल्थ स्कूल पब्लिक फायदे के लिए जारी हो गया। इसके सिवाय आपने और भी बहुत सी रकमें पब्लिक कामों में दान की हैं। जिनकी सूचि बहुत बड़ी है।

लाला बनारसीदासजी बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके हाथों से फर्म को बहुत तरक्की हुई। आप दिल्ली आयर्नमर्चेण्ट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेण्ट हैं।

सन् १९२६ तक लाला रामचन्द्रजी और लाला बनारसीदासजी के वंशजों की फर्म सम्मिलित ही थी। मगर दिसम्बर सन् १९२६ में ये दोनों परिवार अलग हो गये हैं।

इस फर्म का सम्मिलित व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—देहली—मेसर्स नन्नेमल जानकीदास चावड़ी बाजार — इस फर्म पर सब प्रकार के लोहे, पीतल, ताम्बे का भारी कारबार होता है। यह फर्म विलायत से लोहे का इम्पोर्ट करती है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का भी यह फर्म काम करती है।

स्वर्गीय लाला रामचन्द्रजी (नवेमल जानकीदास) देहली

लाला बनारसीदासजी खण्डेलवाल (नवेमल जानकीदास) देहली

रायसाहब लाला मानकचन्दजी (नवेमल जानकीदास) देहली

लाला दीनानाथजी (नवेमल जानकीदास) देहली

घासीराम) देहली
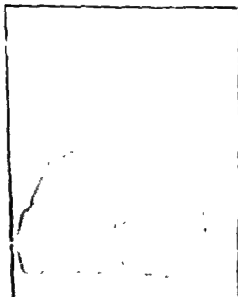
२—ग्रॉण्ड आयर्न वर्क्स चावड़ी बाजार	इस कारखाने में शूगर मशीनों की ढलाई का काम होता है।
३—करांची—मेसर्स नथमल बनारसीदास लारेंस (T. A. Mettles)	इस फर्म पर लोहे का इम्पोर्ट व्यापार, बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

इसके सिवा यू० पी० तथा पंजाब में आपके बहुत से गोडाउन्स हैं। जिनके द्वारा शूगर मशीन सप्लाय की जाती है।

मेसर्स प्यारेलाल माधोराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली है। यह फर्म बहुत पुरानी है। बहुत समय से ही इस पर लोहे का व्यवसाय होता चला आ रहा है। उपरोक्त नाम से करीब ५५ वर्षों से यह फर्म काम कर रही है। इसकी स्थापना ला० प्यारेलालजी के हाथों से हुई। आप व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन थे। आपके ही द्वारा इस फर्म की तरक्की भी हुई। आप धार्मिक स्वभाव के सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७९ में हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० प्यारेलालजी के सुपुत्र ला० माधोरामजी हैं। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपका ध्यान भी धार्मिक कार्यों की ओर विशेष रहा है। आपने अपने पिताजी की आज्ञानुसार उनके स्मारक स्वरूप सीताराम बाजार में एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। इसमें करीब २०० व्यक्तियों के रहने की सुविधा है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स प्यारेलाल माधोराम चावड़ी बाजार T. A. Hardwere	यहाँ बैंकिंग तथा लोहा और हार्डवेयर का व्यापार होता है। इसके साथ ही यह फर्म इम्पोर्ट का व्यापार भी करती है।

मेसर्स भानामल गुलजारीमल

इस फर्म के मालिक खास निवासी [illegible] ([illegible]) के हैं। करीब १०० वर्ष हुए इस फर्म की स्थापना हुई। शुरू २ में इस फर्म पर लोहे की तिजारत ही होती थी। सन् १८७४ में इस फर्म ने एक लोहे की ढलाई का कारखाना देहली में खोला। जिसमें अधिकतर कोल्हू तैयार होते थे। लेकिन अब धीरे २ सब प्रकार की ढलाई का काम होने लग गया है। फर्म के वर्तमान

खोलीं। शक्कर के व्यवसाय के लिए आप डेविड सासून कम्पनी के बेनियन नियुक्त हुए। उस समय आपने जापान में भी अपना एक ऑफिस खोला था एवं निज की जहाज सर्विस भी शुरू की थी। फर्म की स्थायी सम्पत्ति को भी आपने खूब बढ़ाया था। आपने करीब ३० लाख की जायदाद कलकत्ते में, ६ लाख की मसूरी में तथा इसी प्रकार देहली और करांची में भी जायदाद बनवाई।

लाला रघूमलजी दानी भी बहुत बड़े थे। सार्वजनिक कार्य्यों की ओर आपका बड़ा लक्ष्य था। आपने करीब १। लाख रुपया प्रदान कर इन्द्रप्रस्थ का गुरुकुल स्थापित किया। देहली के कन्या-गुरुकुल को एक लाख रुपया प्रदान किया। सन् १९१९ के देहली के शहीदों का स्मारक बनाने के लिए करीब एक लाख रुपया दिया। जिससे खरीदी हुई बिल्डिंग में इस समय नेशनल हाई स्कूल और यतीमखाना चल रहा है। इसी प्रकार आपने अपने जीवन भर में करीब ४०-५० लाख रुपयों का दान किया। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ में हुआ। मरते समय आपने २० लाख रुपयों की जायदाद दान की। जिसके ट्रस्टी बाबू घनश्यामदास बिड़ला आदि कई बड़े २ महानुभाव हैं। लालाजी के कोई सन्तान न थी। अतएव आपने अपनी सम्पत्ति के बराबर चार विभाग किये (१) धर्मपत्नी लाला रघूमलजी (२) पुत्री लाला रघूमलजी (तथा दामाद लाला हंसराजजी गुप्त) (३) भानजे लाला गोरधनदासजी, और (४) भानजे लाला दीनानाथजी।

वर्तमान में इस फर्म की कलकत्ता, बम्बई, कानपूर एवं करांची ब्रान्च का संचालन लाला हंसराजजी गुप्त एम० ए० करते हैं तथा देहली का कारोबार लाला गोरधनदासजी एवं दीनानाथजी सम्हालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दिल्ली—मेसर्स माधोराम बुद्धसिंह चावड़ी बाजार—यहाँ पर लोहे का व्यापार, बैंकिंग और जायदाद का काम होता है। यहाँ आपकी फर्म शूगरकेन मिल्स मैन्यू, फैक्चरर भी है।

कलकत्ता—मेसर्स माधोराम हरदेवदास, बरमा हट्टा स्ट्रीट-लोहे का व्यापार और जायदाद का काम होता है।

करांची—मेसर्स माधोराम हरदेवदास मेकलोड रोड, लोहे का व्यापार, बैंकिंग और जायदाद का काम होता है।

बम्बई—मेसर्स माधोराम रघूमल मुम्बादेवी नं० २—लोहे का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जीवनलाल रघूमल—लोहे का व्यापार होता है।

मेसर्स रामरिचपालमल घासीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली में ही है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को देहली में लोहे का व्यापर करते हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म चाँदी सोने का व्यापार करती थी। इस फर्म की स्थापना लाला गंगासहायजी ने की थी। लाला गंगासहायजी का स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला रामरिचपालमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। लेकिन आपका स्वर्गवास भी लाला गंगासहायजी के कुछ ही समय पश्चात् हो गया। इस समय इस फर्म के मालिक लाला रामरिचपालमलजी के पुत्र लाला घासीरामजी हैं। आप बड़े योग्य, सज्जन और सुधरे हुए विचारों के देशभक्त पुरुष हैं।

श्रीयुत लाला घासीरामजी का दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ वैदिक पुस्तकालय में बहुत बड़ा हाथ है। आप समाजिस्ट विचारों के सज्जन हैं। इसके अलावा आप इन्द्रप्रस्थ सेवक-मण्डली तथा आर्य्यसमाज के सदस्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामरिचपाल घासीराम हौज काजी T. A. Garders	इस फर्म पर सब प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।

मेसर्स लक्ष्मणदास रामचंद

इस फर्म के मालिक दिल्ली के ही आदि निवासी हैं। इनके पूर्वज लोहे का व्यापार करते थे। इस फर्म की स्थापना लाला लक्ष्मणदासजी ने सन् १८८७ ई० के लगभग की। आपके पुत्र लाला रामचन्द्रजी तरुण वय के थे, अतः आप भी व्यापार संचालन में भाग देने लगे और दोनों के सम्मिलित उद्योग से फर्म को अच्छी सफलता प्राप्त हुई। लाला लक्ष्मणदासजी के स्वर्गवास के बाद फर्म का सम्पूर्ण संचालन-भार लाला रामचन्द्रजी ने सम्हाला। आपने अपने पुत्र लाला बंगालीमलजी को अपनी देखरेख में व्यापार का काम-काज सिखाया अतः आपके बाद से आपके पुत्र लाला बंगालीमलजी ही व्यापार का संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म की स्थापना के साथ ही सन् १९०७ में लाला लक्ष्मणदासजी ने मुरादाबाद में एक लोहे का कारखाना खोला था जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था पर है। इस कारखाने में लोहे की ढलाई के साथ २ सभी प्रकार का लोहे का माल तैयार किया जाता है। इसका माल अच्छा और सुन्दर होता है जिसके लिए इस ओर यह कारी मशहूर हो चुका है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स लछमणदास रामचन्द्र चावड़ी बाजार दिल्ली T. A. Loha	यहाँ पर लोहे का व्यापार तथा बंकिंग का काम होता है।
मेसर्स—लछमणदास रामचन्द्र आयर्न फैक्टरी मुरादाबाद	यहाँ पर लोहे का एक कारखाना है और इस कारखाने के माल के अतिरिक्त अन्य प्रकार का माल भी बिक्री होता है।

चांदी सोने के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनदास शिवनारायण

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान पंजाब है पर अनुमानतया २ सौ वर्ष से आप लोगों का परिवार दिल्ली में ही बस गया है। आप लोग खत्री समाज के कपूर सज्जन हैं। लगभग १२५ वर्ष पूर्व इस परिवार के लाला गोवर्द्धनदासजी ने अपना व्यापार दिल्ली में आरम्भ किया था। आपने सबसे प्रथम विभिन्न प्रकार के सिक्कों के विनियम का व्यापार आरम्भ किया पर कुछ समय बाद आपने सोने चांदी का काम भी खोल दिया। आपके बाद आपके पुत्र लाला शिवनारायणजी ने व्यापार भार सम्हाला आपके समय से फर्म के व्यवसाय ने उन्नति करनी आरम्भ की। लाला शिवनारायणजी के पुत्र लाला भोलानाथजी ने अपने समय में फर्म के कार्यों को बहुत अधिक बढ़ा दिया। पर व्यापार संचालन कार्य को आप ३।४ वर्ष तक ही चला सके थे कि आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजी ने फर्म का संचालन भार सम्भाला। आपने फर्म के व्यापार को बहुत उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आप व्यापार सम्बन्धी सचाई के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे। व्यापारी समाज में आपका अच्छा मान था। आपका स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ। आपके तीन पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः लाला अयोध्याप्रसादजी, लाला श्यामसुन्दरजी तथा लाला राधामोहनजी हैं। इनमें लाला श्यामसुन्दरजी ही व्यापार का संचालन करते हैं। आपके दोनों भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला श्यामसुंदरजी तथा आपके पुत्र बाबू पद्मनाथ उर्फ गुल... लाल तथा आपके भाई स्व० लाला अयोध्याप्रसादजी के पुत्र बा० विश्वम्भरनाथजी और ... दयालसिंहजी तथा आपके छोटे भाई स्व० लाला राधामोहनजी के पुत्र हरिप्रसादजी, बा०ज... भगवानदासजी तथा बा० रामनाथजी हैं।

इस फर्म के व्यापार का संचालन लाला श्यामसुन्दरजी करते हैं और आपके पुत्र बा० पद्मनाथजी तथा आपके भतीजे लाला विश्वम्भरनाथजी और लाला हरदयालसिंहजी व्यापार संचालन में योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गोवर्द्धनदास शिवनारायण कटरा नील दिल्ली — यह फर्म चाँदी वालों की कोठी के नाम से प्रख्यात है। यहाँ सोने चाँदी की थोक बिक्री और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।

मेसर्स भोलानाथ जयनारायण गणेश बाजार क्लॉथ मार्केट दिल्ली — इस फर्म पर विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है।

मेसर्स रतनचन्द ज्वालानाथ

इस फर्म की स्थापना तथा उन्नति लाला ज्वालानाथजी के हाथों से हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हो गया। आपके पुत्र लाला ज्योतिप्रसादजी का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में हो गया था। इस समय लाला ज्योतिप्रसादजी के पुत्र लाला रामप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

रतन चन्द ज्वालानाथ दरीबा T. A. Ratan — यहाँ पर चाँदी, सोना जेवर और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स रामसिंह बुलाखीदास

यह फर्म संवत् १९३८ में सेठ रामसिंहजी द्वारा स्थापित हुई। आपका मूल निवास-स्थान रेवाड़ी (गुड़गाँव) का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। शुरू से ही इस फर्म पर चाँदी सोना, हुँडी, चिट्ठी आदि का काम होता चला आ रहा है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला रामसिंहजी तथा आपके पुत्र बा० बुलाखीदासजी हैं। लाला रामसिंहजी सज्जन व्यक्ति हैं। बा० बुलाखीदासजी अपने पिताजी के साथ व्यापार में सहयोग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

देहली—मेसर्स रामसिंह धुलारीदास चाँदनी चौक T. N. 5371 Delhi	यहाँ बैंकिंग चाँदी, सोना तथा गिरवी का काम होता है। थोड़ा काम जवाहरात का भी होता है।

मेसर्स हुकुमचन्द जगाधरमल जैन

इस फर्म के मालिक गोहाना (जि० रोहतक) के रहने वाले हैं। आप लोग जैन अग्रवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला हुकुमचन्दजी जैन ने दिल्ली में सम्वत् १९४९ में की थी। इस फर्म पर आरम्भ से ही सोने चाँदी का व्यवसाय होता चला आ रहा है। इस फर्म की एक दूसरी कोठी और भी है जिसपर कपड़े का व्यापार होता है। कपड़े का व्यापार यह फर्म कमीशन एजण्ट के रूप में ही करती है। इसके मालिकों के आदि निवास स्थान पर अच्छी जमींदारी है जहाँ बैंकिंग का काम भी होता है। लाला हुकुमचन्दजी जैन के ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः लाला महतूप सिंहजी, लाला जगाधरमलजी, लाला अमृतलालजी और लाला कलकत्तरामजी हैं।

लाला अमृतलालजी अपने आदि निवास-स्थान गोहाना में ही रहते हैं जहाँ आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं साथ ही लैंडलार्डस् एण्ड बैंकिंग का काम देखते हैं। शेष तीनों भाई दिल्ली रहते हैं और व्यापार संचालन का कार्य्य करते हैं। लाला हुकुमचन्दजी जैन व्यापार संचालन का कार्य अपने पुत्रों को सौंप शान्ति लाभ करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स हुकुमचन्द जगाधरमल चाँदनी चौक दिल्ली	यहाँ सोना चाँदी तथा जेवरात और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।
मेसर्स महतूपसिंह कलकत्तराम दरीबा कलां दिल्ली	यहाँ सभी प्रकार के कपड़े की आढ़त का व्यापार होता है।
मेसर्स हुकुमचन्द अमृतलाल गोहाना (रोहतक)	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।
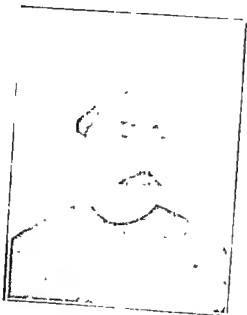
वैद्य और हकीम

दवाखाना हिन्दुस्तानी

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध हकीम और राष्ट्रीय नेता मसीहुलमुल्क हकीम हाफिज महम्मद अजमल खाँ साहब, जिनको भारत का प्रायः सारा शिक्षित समुदाय जानता है, ने सन् १९०१ में यूनानी हिकमत की उन्नति और सर्वसाधारण की उन्नति के लिए इस प्रसिद्ध दवाखाने की नींव डाली।

चूँकि इस दवाखाने की नींव डालने में हकीम साहब का मकसद बहुत ऊँचा और अनुकरणीय था, इसलिए इसकी तरक्की भी दिन दूनी बढ़ती गई। और आज तो यह हालत है कि हिन्दुस्तान के बड़े २ वैद्य, हकीम और डाक्टर तथा सर्वसाधारण जनता आँखें मूँदकर इस दवाखाने की बनाई हुई दवाओं को इस्तेमाल करते हैं और फायदा उठाते हैं।

यह दवाखाना देहली में एक बहुत बड़ी इमारत में स्थापित है। इसमें करीब १५० व्यक्ति बाकायदा काम करते हैं। जिनकी तनख्वाह साल भर में करीब पचास हजार रुपया बाँटी जाती है। इस समय इस दवाखाने की हैसियत करीब ५० लाख की कूती जाती है। इसके अन्तर्गत होने वाले ट्रान्जेक्शन का अनुमान केवल इसी बात से किया जा सकता है कि बीमारों और खरीददारों के जो खत आते हैं, उनकी औसत तादाद साल भर में करीब एक लाख के होती है। और करीब पचास हजार पार्सल साल भर में रवाना होते हैं। इसके सिवा मुकामी खरीददारों की संख्या करीब डेढ़ लाख से कम नहीं होती।

हम ऊपर कह आये हैं कि यह दवाखाना हकीम अजमल खाँ साहब ने किसी खास स्वार्थ भावना से प्रेरित होकर नहीं खोला था। प्रत्युत उनका उद्देश्य इस दवाखाने के द्वारा मृतप्राय यूनानी-वैद्यक को जीवित करना था। फलस्वरूप जब इस दवाखाने से अच्छी आमदनी होने लगी तब आपने बहुत प्रयत्न करके देहली में यूनानी और तिब्बी कॉलेज की स्थापना की और इस दवाखाने की कुल आमदनी इस कॉलेज के खर्च के लिए दान दे दी। फलतः इस समय इसकी कुल आमदनी उक्त कॉलेज को दे दी जाती है।

यह कॉलेज सारे भारतवर्ष में अपनी शान का एक ही है। इसमें यूनानी चिकित्सा पद्धति तथा वैद्यक की ऊँची से ऊँची तालीम दी जाती है।

खेद है कि हकीम अजमल खाँ साहब समय से पहले ही जन्नत नशीन होगये। इस समय आपके पुत्र हकीम मौलवी महम्मद जमील खाँ साहब हैं। आप भी बड़े योग्य और दानिशमन्द हैं। आपने बहुत योग्यता के साथ सब कामों को सम्हाल लिया है।

इस दवाखाने में सब प्रकार की उम्दा दवाइयाँ, जैसे अर्क, शरबत, खमीरें, माजून, गोलियाँ, मुरब्बे, मरमें तथा इनके मेल से तैय्यार की हुई औषधियाँ बहुत बढ़िया रूप में मिलती हैं।

हमदर्द दवाखाना

लगभग २५ साल पहले हाफ़िज़ अब्दुल हमीद साहब ने इस दवाखाने को शुद्ध और उत्तम यूनानी दवा तैयार कर उनका देश में प्रचार करने के उद्देश्य से स्थापित किया। तब से यह दवाखाना बराबर देश की सेवा करते हुए उन्नति कर रहा है और देश तथा विदेश में इसकी प्रसिद्धि हो रही है। इसके स्थापित होने के थोड़े ही दिनों बाद इसकी ईमानदारी तथा सचाई से प्रसन्न होकर दिल्ली के रईस तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट स्व० हकीम रज़ीउद्दीन अहमद खाँ साहब बहादुर ने इस दवाखाने को अपने संरक्षण में ले लिया और अच्छे २ नुस्खों द्वारा इसका भंडार भरते रहे। अब उनके बाद उनके सुयोग्य पुत्र हकीम नासिरुद्दीन अहमद खाँ साहब बहादुर रईस तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट की देख रेख में यह दवाखाना दिन २ उन्नति कर रहा है और उनके अनुभूत नुस्खों द्वारा इसका भंडार भर रहा है।

इस दवाखाने में सब प्रकार की यूनानी दवाएँ बहुत बढ़िया और अच्छी मिलती हैं।

बैंक

इलाहाबाद बैङ्क लिमिटेड चान्दनी चौक
इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लि० कोर्टरोड देहली ब्राञ्च
कोओपरेटिव्ह बैङ्क लिमिटेड गारस्टन बेस्टन रोड
ग्रिनले एण्ड कम्पनी लिमिटेड चाँदनी चौक
मेण्डर्सी एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक
चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया, चायना, आस्ट्रेलिया चाँदनी चौक
थामस कुक एण्ड सन्स काश्मीरी गेट
नेशनल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड चाँदनी चौक
पीपल्स बैंक ऑफ नादर्न इण्डिया चाँदनी चौक
पंजाब नेशनल बैंक लि० चाँदनी चौक
मर्केंटाइल बैंक ऑफ इण्डिया लि० चाँदनी चौक
लायड बैंक लिमिटेड कोर्टरोड
वेन्यूस इन्स्यूरेन्स बैंक लि० चाँदनी चौक
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लि० चाँदनी चौक

बैंकर्स

मेसर्स ईश्वरीदास बनारसीदास
,, कुँवरसिंह ज्ञानचन्द खारी बावड़ी
,, कस्तूरमल हीराचन्द सीताराम बाजार
,, घुन्नामल एण्ड सन्स चाँदनी चौक
,, दीवानचन्द एण्ड कम्पनी
,, दौलतराम श्रीराम सीताराम बाजार
,, नन्नेमल जानकीदास चावड़ी बाजार
,, बालाप्रसाद कलोपीप्रसाद धर्मपुरा

मेसर्स ब्रजमोहनदास लक्ष्मीनारायण कटरानील
,, मथ्थालामल ठाकुरदास
,, लाला मदनमोहनलाल कृपामाईदास
,, लाला सुल्तानसिंह रायबहादुर कश्मीरी गेट

इन्स्यूरेन्स कम्पनीज

एटलस इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० चान्दनी चौक
एम्पायर ऑफ इण्डिया लाइफ इन्स्यूरेंस कम्पनी चाँदनी चौक
ओरियण्टल गवर्नमेण्ट सिक्यूरिटीज लाइफ इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० चाँदनी चौक
गोवर्द्धन ब्रदर्स लि० इन्स्यूरेंस डिपार्टमेण्ट कलीपुरारोड
ग्रेट ईस्टर्न लाइफ इन्स्यूरेन्स कम्पनी लिमिटेड चाँदनी चौक
ट्रिब्यून इन्स्यूरेंस कम्पनी चाँदनी चौक
लीवरपूल इन्स्यूरेंस कम्पनी चाँदनी चौक
वेनस इन्स्यूरेंस कम्पनी चाँदनी चौक
सिविल इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
हिन्दुस्थानी कोआपरेटिव इन्स्यूरेन्स सोसाइटी लि० चाँदनी चौक
हिन्दुस्थानी बीमा कम्पनी जुम्मामस्जिद

ज्वैलर्स

मेसर्स इण्डियन आर्ट पैलेस कश्मीरीगेट
,, कल्याणमल एण्ड सन्स चाँदनी चौक
,, कुक एण्ड केल्वे कश्मीरीगेट
,, सूरजचन्द इन्द्रचन्द दरीबा

मेसर्स इण्डियन ज्वैलरी ट्रेडिंग कम्पनी चाँदनी चौक
,, नवलकिशोर खैरातीलाल मालीवाड़ा
,, फकीरचन्द रघुनाथदास जुम्मामस्जिद (आइवरी मर्चेण्ट)
,, बाबूमल एण्ड कम्पनी कश्मीरीगेट
,, बनारसीदास छोटेमल जुम्मामस्जिद
,, मन्नालाल श्यामसुन्दर दरीबा
,, शादीराम गोकुलचन्द चाँदनी चौक
,, सूरज लाल एण्ड सन्स
,, रामचन्द हजारीमल चाँदनी चौक

आइवरी मर्चेन्ट

आर्ट पैलेस कश्मीरीगेट
फकीरचन्द रघुनाथदास जुम्मामस्जिद

सिल्क मर्चेन्ट्स

मेसर्स चोखमल ब्रदर्स चाँदनी चौक
,, रिखूमल ब्रदर्स ,,
,, दर्शनदास भगत ,,
,, लीलाराम एण्ड सन्स कश्मीरीगेट
,, बधिमानल बाबूमल

पैट्रोल एजण्ट्स, मोटर एण्ड मोटर गुड्स डीलर्स

अडमिरा मोटरकाइल कम्पनी कश्मीरी गेट
अमेरिकन मोटोसाइकल कम्पनी क्वीन्स रोड
ऐलनबेरी एण्ड कम्पनी न्यू देहली टाउन
एक्सेलसियर मोटर वर्क्स कश्मीरी गेट
ईस्टर्न मोटर कम्पनी कश्मीरी गेट

अयोध्याप्रसाद आईस फैक्टरी
प्रभा आईस फैक्टरी
इम्पीरियल ऑइल मिल्स

मशीनरी मर्चेण्ट्स

इण्डो यूरोपियन मशीनरी मार्ट चाँदनी चौक
पंजाब ऑइल एण्ड मिशनरी स्टोमर्स थर्न बेरटन रोड
मिलजिन एण्ड प्रेस स्टोअर सप्लायर, चावड़ी बाजार
मिलिंग ट्रेडिंग कम्पनी अजमेरी गेट
रतनजी भगवानजी मिल जिन स्टोअर सप्लायर चावड़ी बाजार

साइकल डीलर्स

इम्पीरियल साइकल एण्ड मोटर कम्पनी काश्मीरी गेट
इ० एस० प्यारेलाल काश्मीरी गेट
एन० एम० किशन एण्ड कम्पनी जुम्मा मस्जिद

कोल मर्चेण्ट्स

अण्डलेई मदर्स लायड बैंक बिल्डिंग
गैलण्डर्स आरबुथनाट एण्ड को० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
पी० मुकरजी एण्ड कम्पनी मोरी गेट
मिटानिया कोल कम्पनी पंचकुइया रोड
बर्ड एण्ड कम्पनी इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
रामकिशन प्रेमचन्द जैन अजमेरी गेट

दाँत और चश्मेवाले

ए० पी० माथुर काश्मीरी गेट
कर्लेन एण्ड विलियम स्मिथ न्यू देहली
सी० आर० जैन एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक
डाक्टर केदारनाथ अमृतनिवास न्यू देहली
जैन एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक
एफ० एल० हौटनफोक्स न्यू देहली
डाक्टर रघुनाथ राजपुर रोड
लायरेन्स एण्ड मेयो ऑप्टीसियंस काश्मीरी गेट

पत्थर के व्यापारी

देहली स्टोन ड्रेसिंग कम्पनी न्यू देहली
दीवानचन्द एण्ड कम्पनी न्यू देहली
महावीरप्रसाद एण्ड सन्स चावड़ी बाजार
राधाकिशन एण्ड सन्स अजमेरी गेट
ए४० एन० सुदर्शन एण्ड कम्पनी अजमेरी गेट

काश्मीरी शाल के व्यापारी

मेसर्स अमीनचन्द जीवनराम जौहरी बाजार
,, काशीराम केशोराम चाँदनी चौक
,, जमनादास खन्ना ,, ,,
,, नगीनचन्द शोरीलाल ,, ,,
,, श्यामदास मनीराम ,, ,,

जरी गोटा किनारी के व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल किशनचन्द किनारी बाजार
,, काशीनाथ बालाप्रसाद ,,
,, गुलाबसिंह मुरलीदास ,,
,, निहालचन्द ज्योतिप्रसाद ,,
,, विशम्भरनाथ श्यामलाल ,,
,, शम्भूनाथ नन्दूमल

फोटोग्राफर्स

ए० आर० दत्त न्यू कर्जन हाउस
टी० पी० पाल काश्मीरी गेट
फोटो सर्विस कम्पनी काश्मीरी गेट
रॉयल फोटोग्राफिक कम्पनी काश्मीरी गेट

संयुक्त-प्रान्त

UNITED PROVINCES.

आगरा

<u>ऐतिहासिक परिचय—</u>

आगरा प्राचीन शहर है। किन्तु मुसलमानों के आने और आक्रमण करने के पूर्व का आगरा सम्बन्धी इतिहास ऐसा अन्धकाराच्छन्न है कि जानने का कोई उपाय नहीं। मुसलमानों में से लोदी वंशवाले ही प्रथम आगरे में आ बसे थे। सिकन्दर लोदी सन् १५१५ ई० में आगरे में मृत्यु कवलित हुए। सिकन्दरा के समीप बारादरी प्रासाद उन्होंने बनाया था। बाबर ने यहाँ यमुना के पूर्व तट में बाग और प्रासाद का निर्माण कराया था सही, पर उनका चिन्ह तक अब नहीं रहा है। अकबर सन् १५६८ ई० में फतहपुर सिकरी में जाने के पूर्व तक आगरे में थे। सन् १६०५ ई० में उनकी आगरे में मृत्यु हुई। शाहजहाँ ने ५ वर्ष आगरे में रहकर अकबर के दुर्ग और राजप्रासाद की मरम्मत, हेरफेर और वृद्धि की तथा भारत की सर्वोत्तम अट्टालिका ताजमहल का निर्माण कराया। उस समय आगरे का प्रताप उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया था। इसके पश्चात् उन्होंने दिल्ली की रचना की। किन्तु राजधानी को पूरी तौर पर दिल्ली में उठा ले जाने के पहिले ही वे अपने पुत्र औरङ्गजेब के द्वारा आगरे में ही कैद कर लिए गये। आगरे में ही उनका देहान्त हो गया। इसी समय से आगरे की अवनति आरम्भ हुई। जाट, मराठे, मुसलमान, जिनसे बना उन्होंने ही आगरे को हस्तगत किया। अन्त में सन् १८०३ ई० में आगरा अङ्गरेजों के अधिकार में आया।

<u>दर्शनीय स्थान—</u>

आगरा सौन्दर्यपुरी है। आगरे को अपना सुन्दर शाहजहाँ ने ही बनाया। शाहजहाँ के हिंद की अट्टालिकाओं में निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं.—

(१) ताजमहल।

(२) जामा मस्जिद।

(३) दुर्गाभ्यन्तर की मोती मस्जिद, दीवाने-खास, दीवाने-आम, खासमहल।

अकबर ने सन् १५६६ ई० के लगभग शहर के दुर्ग का पुनर्गठन आरम्भ किया। दुर्ग बड़े भारी आकार का है। दुर्ग के अन्दर ही मस्जिद और प्रासाद हैं। दिल्ली दरवाजे से आगे बढ़

आगरे का दीवानेखास दिल्ली के दीवानेखास ही की तरह सुन्दर है। इसमें नाना वर्णों के पत्थरों को जड़कर जो फलों की रचना की गयी है, वह असामान्य शिल्पकुशलता की द्योतक है। दीवानेखास के सामने चबूतरे पर दो सिंहासन बिछे हुए हैं। वे दोनों जहांगीर के कहलाते हैं। इनके बाद ही हम्माम है।

दीवानेखास के पिछवाड़े जो फाटक है, उससे नदी की ओर के दोमञ्जिले गृह में जाना होता है, जिसका नाम मसान बुर्ज है। यह गृह नूरजहाँ बेगम का था। आगे मुमताजमहल इसी गृह में रहती थी और इसी गृह में कैद रह कर ताजमहल को देखते देखते सम्राट शाहजहाँ का देहान्त हो गया था। जो पहिले हिन्दुस्थान में सम्राट थे, उनके पास उस कैद से मुक्ति के राज्य में जाते समय शाहजादी जहाँनारा को छोड़ कर और कोई नहीं था। उस समय दिवसान्त का सूर्य्य ताजमहल के सफेद कलेवर को किरणावली से मानों नहला रहा था। बादशाह प्रियतमा की उस समाधि को एकटक निरीक्षण करते थे। धीरे धीरे दिन का आलोक अन्धकार के गाल में घुस कर अदृश्य हो गया। बादशाह ने अपने अपराधों के लिये विधाता से क्षमा माँग कर तथा कई वाक्यों से पुत्री को ढाढ़स देकर अन्तिम सांस को छोड़ा। उनके भी जीवन का आलोक बुझ गया।

खास महल जनाने के एक भाग में है। उसके सामने अंगूरी बाग पूर्वकाल के मुगलाई नमूने का है।

जहाँगिरी महल की विशेषता उधर आँखों को फेरने ही देखने में आती है।

जुमा मसजिद दिल्ली के नमूने की होने पर भी उसके सौन्दर्य के सामने नहीं ठहर सकती।

ग्रीष्म के दिवसों में ठण्डक का सुख लूटने के लिये प्रासाद में कई तहखाने हैं।

स्निग्धनीली जलधारा की यमुना के तट पर सङ्गमरमर की श्वेत अट्टालिका ताजमहल का जोड़ा इस जगत में नहीं। शाहजहाँ ने नूरजहाँ के भाई आसफ़ खां की बेटी नूरमहल से विवाह किया था। उस समय नूरमहल १९ वर्ष की थी और शाहजहाँ २१ वर्ष के। स्वामी के साथ युद्ध में जा बुरहानपुर में नूरमहल की मृत्यु हुई। यह नूरमहल ही मुमताज महल नाम से प्रसिद्ध हुईं। शोकार्त्त शाहजहाँ की आज्ञा से प्रियतमा की लाश आगरे में लायी गयी। मुमताज महल की स्मृति को स्थिर रखने के लिए शाहजहाँ ने चार करोड़ रुपया खर्च कर ताजमहल बनाया। बीस हजार मनुष्यों ने १७ वर्षों के परिश्रम से इसका निर्माण किया। ताजमहल वास्तव में ही प्रेम की मधुरिमा का मूर्त्त स्वप्न है।

शाहजहाँ ने जब इस अट्टालिका के निर्माण की कल्पना की, तो उनका सङ्कल्प इसको सर्वांङ्गसुन्दर बनाने का हुआ। दिल्ली, बगदाद, मुल्तान समरकन्द, सिराज—सभी स्थानों से शिल्पकुशल मनुष्य बुलाये गये। जयपुर, पञ्जाब तिब्बत, सिंहल, अरब, चीन, बर्मा, इरान—

नाना देशों से सामग्रियों का संग्रह किया गया। उन सामग्रियों में सुवर्ण, रजत, मनिमाणिक्यों की कमी नहीं थी। ऊपर मूल्यवान मोतियों के ढक्कन से आच्छादित रखी जाती थी। वे सभी मूल्यवान वस्तुएँ लूट ली गयी हैं। केवल बाकी बचा है, ताजमहल—शाहजहाँ के प्रेम का साक्षी—भारत की शिल्पकला का नमूना। ताजमहल की कविता अनुभव का विषय है—वर्णन से वह नहीं समझायी जा सकती। ताजमहल केवल अट्टालिका ही नहीं—वह स्वप्न भी नहीं, वह हृदय की सुन्दर भावनाओं का दिव्य विकास।

ताजमहल को एक ही बार देखने से उसका स्वरूप ध्यान में नहीं आता बार-बार देखने से ही वह इच्छा पूरी हो सकती है। विशेषतः उज्ज्वल चाँदनी में उसको बिना देखे उसके माधुर्य की वास्तविक छवि मानों हृदय में नहीं अंकित होती। ताजमहल को देखने के लिये यूरोप और अमेरिका से भी अनेक पर्यटक भारत में आते हैं।

ताज के प्रवेशपथ का तोरण भी ताज के ही उपयुक्त है।

यमुना के दूसरे पार इतमाद-उद्दौला की समाधि है। इतमाद-उद्दौला नूरजहाँ बेगम के पिता थे। बेटी ने बाप की समाधि की यह अट्टालिका बनायी। इसको देखने से यह ध्यान में आ जाता है, कि अकबर के दिनों अट्टालिका बनाने के शिल्प की जैसी परिपाटी थी, वह शाहजहाँ के दिनों बदली गयी थी। जहाँगीरी महल और ताज के बनाये जाने के मध्यवर्ती काल में इतमाद-उद्दौला की समाधि अट्टालिका बनायी गयी थी।

इस समाधि के समीप चीनी का रौजा और रामबाग है। चीनी का रौजा या चीनासमाधि शायद अफजल खाँ की समाधि होगी। रामबाग के साथ बाबर की स्मृति-जटित है। बाबर की मृत्यु के बाद उनका शव समाधि के लिये काबुल भेजा गया था। काबुल भेजा जाने के पहिले वह रामबाग में रक्खा गया था। इस बाग की रचना नूरजहाँ ने की थी। इस बाग के समीप और एक बाग था, जो बाबर की बेटी शाहजादी जोहरा का था।

सिकन्दरा आगरे से ५ मील दूर है। वहाँ जाने की राह में अनेक पुराने भवन और भवनों के भग्नावशेष हैं। सिकन्दरा में अकबर की समाधि है। अकबर ने आप ही इस समाधि अट्टालिका की कल्पना कर मृत्यु से पूर्व उसका निर्माण आरम्भ कर दिया था। इस अधूरे निर्माण की पूर्णता उनके बाद जहाँगीर को करनी पड़ी थी। जहाँगीर ने इस अट्टालिका की कल्पना के सम्बन्ध में भी कुछ फेर फार किया था। मुगलों की साधारण समाधि अट्टालिकाओं से इसका बहुत फेर फार जान पड़ता है। इसकी कल्पना का हिन्दू शिल्प से मेल है। बौद्ध-विहार में जैसे मञ्जिलें कल्पित करके खड़े होते हैं, वैसी ही यह अट्टालिका है। फतहपुर सिकरी में अकबर ने जो पंच मंजिल का महल निर्माण कराया, वह इसी नमूने का है।

व्यापारिक-परिचय

आगरा यू० पी० के अन्तर्गत व्यापार का एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ की व्यापारिक गति-विधि और चहल-पहल देखने योग्य है। वैसे तो यहाँ पर मनुष्य की जीवनोपयोगी सभी आवश्यक वस्तुओं का व्यापार होता है। पर प्रधान रूप से रुई, गल्ला, तिलहन, जूते, दरियाँ इत्यादि वस्तुओं के व्यापार का यह केन्द्र है। जूते बनाने की यहाँ पर बहुतसी इण्डस्ट्रीज हैं जिनके बने हुए जूते देश के भिन्न २ भागों में जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की दरियाँ भी सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर संगमरमर की पच्चीकारी का भी अच्छा काम होता है। यहाँ से पास ही दयालबाग नामक एक गुरुकुल के ढङ्ग का विद्यालय है। इस विद्यालय की इण्डस्ट्री डिपार्टमेण्ट में ट्रंक, ताले, कैंची, चाकू, जूते इत्यादि बहुत अच्छे बनते हैं।

यहाँ के व्यापारिक बाजारों में बेलनगंज, किनारी बाजार, रावतपाड़ा, जौहरी बाजार इत्यादि उल्लेखनीय हैं। बेलनगञ्ज में गल्ला, रुई और तिलहन तथा कमीशन एजन्सी का व्यापार होता है। प्रायः अधिकांश बड़े २ व्यापारियों की दुकानें इसी बाजार में है। किनारी बाजार में जूते, दरियाँ, सोना, चाँदी तथा जनरल मर्चेण्डाइज की चीजें बिकती हैं। जौहरी बाजार में कुछ जौहरियों की दुकानें हैं। लोहामण्डी में लोहे का बहुत अच्छा व्यापार होता है।

फैक्टरीज़ और इण्डस्ट्रीज़

कॉटनमिल्स—

आगरा स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लि०—
(इसमें रोजाना ५५० व्यक्ति काम करते हैं।)

आगरा यूनाइटेड मि० लि० नं० २,३,४—
(इसमें १४५२ आदमी रोज काम करते हैं।)

आगरा यूनाइटेड मि० लि० नं० ५
(इसमें ५२ आदमी रोज काम करते हैं।)

आयर्न फाउण्डरीज—

रामचन्द्र लछमनदास आयर्न फाउण्डरी

गुलाबचन्द छोटे लाल आयर्न एण्ड ब्रास फाउण्डरी

छोलाघर कल्यानदास आयर्न फाउण्डरी

मल्लुमल रामप्रसाद आयर्न फाउण्डरी

अयोध्याप्रसाद रामप्रसाद आयर्न एण्ड जनरल मैटल फाउण्डरी

अमराज आयर्न वर्क्स

वैश्य फ्लोअर मिल एण्ड आयर्न फाउण्डरी

ऑइल मिल्स

घनश्यामदास बैजनाथ ऑइल मि०

यू० पी० ऑइल्स को० लि० बेलनगंज

टैनेरी—

आगरा टैनेरी बाजगंज

जीन एण्ड प्रेस

न्यू सुरुसिस्ल को० लि० जिन एण्ड प्रेस फैक्टरी

कुलाश प्रेस कम्पनी लि० बेलनगञ्ज

बेस्ट्रस पेटेण्ट प्रेस को० लि० भैरव स्ट्रीट

गणेशचन्द लक्ष्मीचन्द के नामसे स्थापित हुई। इसकी स्थापना सेठ तेजकरणजी की माता श्रीमती जवाहर कुँवर (धर्मपत्नी सेठ ताराचन्दजी सेठिया) और चाँदमलजी की माता श्रीमती राजकुँवर (धर्मपत्नी से० हेटसिंह जी नाहटा) दोनों से सम्मिलित रूप से संवत् १९३० में की। इसके पश्चात् इसका नाम बदल कर मेसर्स तेजकरण चाँदमल रक्खा। इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ तेजकरणजी और सेठ चान्दमलजी दोनों के हाथों से हुई। आप बड़े उदार, व्यापारचतुर एवं मेधावी सज्जन थे। श्रीयुत तेजकरणजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में एव श्रीयुत चाँदमलजी का स्वर्गवास संवत् १९७० में हो गया।

आप लोगों के पश्चात् श्रीमती मदनकुँवर (धर्मपत्नी से० तेजकरणजी) और श्रीमती बसंतकुँवर (धर्मपत्नी से० चाँदमलजी) इन दोनों ने अपने २ बच्चों की नाबालगी में फर्म के कार्य को बहुत ही सुचारुरूप से संचालित किया। इस समय में इस फर्म की बहुत उन्नति हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ तेजकरणजी सेठिया के पुत्र श्रीयुत लुनकरनजी एवं सेठ चाँदमलजी नाहटा के पुत्र श्रीयुत वीरचन्दजी हैं। आप दोनों शिक्षित मिलनसार एवं व्यापार कुशल व्यक्ति हैं।

इस फर्म के संचालकों का ध्यान दानधर्म की ओर भी बहुत रहा है। आपकी ओर से बीकानेर में एक धर्मशाला तथा जयपुर और आगरे में एक २ जैन मन्दिर बना हुआ है। साथ ही आगरा और बीकानेर में एक २ धार्मिक पाठशाला चल रही है। रायपुर (सी० पी०) में भी आपकी ओर से एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक संस्थाओं में आपके द्वारा उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बीकानेर—मेसर्स तेजकरण चाँदमल	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, रूई जीरा, ऊन तथा सब प्रकार की कमीशन एजेंसी का काम होता है।
आगरा—मेसर्स तेजकरण चाँदमल बेलनगञ्ज	यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रूई, जीरा, ऊन तथा सब प्रकार की कमीशन एजेंसी का काम होता है।
साम्भरलेक—मेसर्स तेजकरण चाँदमल	यहाँ बैंकिंग तथा नमक का व्यापार और कमीशन एजेंसी का काम होता है।
रायपुर—मेसर्स चाँदमल वीरचन्द (सी० पी०)	यहाँ यह दुकान बड़ी दुकान के नाम से मशहूर है। यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजेंसी का काम होता है।

स्व० सेठ तेजकरणजी सेठिया (तेजकरण चान्दमल) आगरा

स्व० सेठ चान्दमलजी नाहटा (तेजकरण चान्दमल) आगरा

बाबू लूणकरणजी सेठिया (तेजकरण चान्दमल) आगरा

बाबू वीरचन्दजी नाहटा (तेजकरण चान्दमल) आगरा

मुँगेली (बिलासपुर)—मेसर्स चाँदमल वीरचन्द — यहाँ बैंकिंग चाँदी सोना एवं आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त तहसील बलौदा बाजार सी० पी० में आपकी जमींदारी में १० गाँव हैं। जिनका ताल्लुक रायपुर फर्म से है। रायपुर और मुँगेली की फर्म केवल वीरचन्दजी नाहटा की है।

मेसर्स तेजपाल जमुनादास

इस फर्म का हेड आफिस मिर्जापुर है। इसकी और भी शाखाएँ हैं जिसका विवरण इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ३६८ में किया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी हैं। यहाँ यह फर्म गल्ला, जीरा एवं कमीशन का काम करती है। इसका यहाँ का पता बेलनगंज है।

मेसर्स तुलसीराम सीताराम

इस फर्म के संचालक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सन् १८५८ ई० में लाला तुलसीदासजी के हाथों से हुआ। आप अपने पुराने किराने के ही व्यवसाय को बढ़ाने में लगे एवं उसमें अच्छी सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला सीतारामजी तथा लाला माधोरामजी ने किया। आपके समय में भी इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास भी संवत् १९४१ में हो गया। इस समय इस फर्म के एकमात्र उत्तराधिकारी लाला माधोरामजी के पुत्र लाला कोकामलजी केवल १॥ साल के थे। आपकी बाल्यावस्था में फर्म के कारबार को मुनीम शिवनारायणजी ने अच्छी योग्यता और इमानदारी से संचालित किया। करीब १५ वर्ष की उम्र के बाद लाला कोकामलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। संवत् १९८१ में आपने कोकामल गोपालदास के नाम से एक फर्म स्थापित की, जिस पर किराना और रंग का काम होता है।

लाला कोकामलजी ने फर्म के व्यापार को बहुत तरक्की दी। आपने अपने नाम से एक बहुत सुन्दर मार्केट बनाया जो सन् १९१५ से बनना शुरू हुआ था वह सन् १९२७ में खतम हुआ। आपकी ओर से सौरोंजी में एक धर्मशाला बनी हुई है। इसके साथ ही एक बगीचा भी है। आप स्थानीय सनातनधर्म सभा के प्रेसिडेन्ट, रामलीला के मंत्री और करीब १५ वर्षों से म्युनिसिपल कमीश्नर हैं। रावतपाड़ा कन्या पाठशाला के—जिसमें ३०० बालिकाएँ विद्याध्ययन

करते हैं—आप जब से पाठशाला स्थापित हुई है तभी से सभापति हैं। इसके खोलने में भी आपका बहुत हाथ था। आपके ५ पुत्र हैं। बड़े गोपालदासजी हैं शेष चार पढ़ते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स तुलसीदास सीताराम कालामल मार्केट रावतपाड़ा आगरा T. A. Mahalaxmi	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा किराने का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
मेसर्स कालामल गोपालदास रावतपाड़ा, आगरा T. A. Mahalaxmi	यहाँ रंग पेंट तथा केमिकल गुड्स का व्यापार होता है।
मेसर्स कालामल गोपालदास समारू कटरा देहली T. A. Mahalaxmi	यहाँ भी रंग और केमिकल गुड्स का व्यापार होता है।
मेसर्स कालामल गोपालदास जनरल गंज कानपुर T. A. Mahalaxmi	यहाँ रंग पेंट और केमिकल गुड्स का व्यापार होता है।

मेसर्स नन्दराम छोटेलाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास स्थान आगरा है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व नन्दरामजी ने व लाला छोटेलालजी ने आगरे में की थी। इस फर्म की विशेष उन्नति लाला हीरालालजी के समय में ही प्रारम्भ हुई थी पर विशेष उन्नति लाला चुन्नीलालजी के समय में हुई। आपने इस फर्म को यहाँ की समुन्नत फर्मों की श्रेणी पर पहुँचाया। आपके बाद फर्म के वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ सुरजमलजी ने फर्म को सबसे अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया।

रायबहादुर सेठ सुरजमलजी यहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक हैं। आपका यहाँ के सरकारी वर्ग में अच्छा सम्मान है। आप ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट और गवर्नमेंट ट्रेझरर हैं। आप आगरा

एलेक्ट्रिक कम्पनी आदि कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों के डायरेक्टर हैं। यहाँ के व्यापारी समाज में आपका बहुत बड़ा आदर और मान है। आप सुशिक्षा प्रसार के पक्षपाती हैं। आपने अपने नाम से एक हायस्कूल स्थापित किया है। आपको इमारतों का बड़ा शौक है। आगरे की दो प्रसिद्ध इमारतें भी आपके ही अधिकार में हैं। एक में स्वयं आप सपरिवार निवास करते हैं और दूसरी जो शीशेवाली कोठी के नाम से प्रसिद्ध है एक दर्शनीय इमारत है। इसका दुतह्ने पर का बगीचा तथा इमारत पर आपका कराया सोने का काम प्रेक्षणीय है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ सूरजभानजी तथा आपके छोटे भ्राता सेठ ताराचंदजी और आपके मंझले भाई स्व० सेठ चंद्रभानजी के पुत्र सेठ मदनगोपालजी और जगन्नाथ प्रसादजी हैं। यह फर्म एक सम्मिलित परिवार की सम्पत्ति है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—नंदराम छोटेलाल बेलनगंज आगरा	यहाँ हेड आफिस है। तथा रुई, गल्ला तेलहन, का व्यापार और कमीशन का काम होता है। लैण्डलाड्स एण्ड बैंकर्स का काम भी यहाँ होता है। इस नाम से आपकी तीन दुकाने हैं।
सेठ घुमीलाल बेलनगंज	यहाँ बैंकिंग तथा आढ़त का व्यापार होता है।
मेसर्स—ताराचंद मदनगोपाल बेलनगंज आगरा	यहाँ आढ़त और हुण्डी, चिट्ठी का काम प्रधान रूप से होता है।

मेसर्स बंशीधर शिवप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस जयपुर है अतः इसका सचित्र परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ ६१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बेलनगंज में है जहाँ यह बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी तथा कमीशन का काम करती है। यहाँ का तार का पता Star है।

मेसर्स माणिकचंद रामलाल

इस फर्म का हे० आ० यहीं है। पर इसका विशेष परिचय झाँसी में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़ा, बैंकिंग तथा मकानात के किराये का काम करती है। इसका आफिस कन्टूनमेण्ट में है तथा तार का पता Manik है।

मेसर्स मथुरादास पद्मचन्द

इस फर्म के मालिक सेठ पद्मचन्दजी हैं। आप खण्डेलवाल जैन जाति के सज्जन हैं। आपने २८ वर्ष पूर्व इस फर्म को स्थापित किया और उन्नति की।

आपका व्यापारिक-परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स मथुरादास पद्मचन्द बैलनगंज—इस फर्म पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

रायबहादुर मेसर्स मूलचन्द नेमिचन्द सोनी

यह फर्म अजमेर के सुप्रसिद्ध धनिक मेसर्स जवाहरमल गम्भीरमल सोनी की एक ब्राञ्च है। आपका विस्तृत परिचय अनेक चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के अन्तर्गत दिया गया है।

इसकी उपरोक्त आगरा ब्राञ्च के अन्तर्गत सेठ मगनलालजी पाटनी वर्किंग पार्टनर हैं। आप ही इसका मैनेजमेण्ट करते हैं। आप बड़े व्यापारकुशल और बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

आपके परिवार की ओर से आपके मूल निवास-स्थान मारोठ में पाटनी दि० जैनधर्मशाला, पाटनी बोर्डिङ्ग हाउस, पाटनी जैन-पाठशाला, पाटनी जैन लायब्रेरी तथा पाटनी जैन औषधालय बने हुए हैं। इनसे आपके जातीय प्रेम का सहज ही पता लगता है।

आपके इस समय दो पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत नेमिचन्दजी तथा श्री सौभागमलजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स मूलचन्द नेमिचन्द बैलनगंज T. A. Soni	इस फर्म पर बैंकिंग, गल्ला, कपास और कमीशन एजन्सी का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स रेखचन्द लूंकड़

इस फर्म के संचालकों का मूल निवास-स्थान फलोदी (जोधपुर) का है। आप ओसवाल समाज के सज्जन हैं। संवत् १९०५ में सेठ रेखचन्दजी के पिता सुल्तानचन्दजी यहाँ आये। तथा मेसर्स लक्ष्मीचन्द गणेशदास के यहाँ मुनीमात का काम किया। संवत् १९२४ के करीब रेखचन्दजी अपने पिता के साथ यहाँ आये। यहाँ आने के कुछ समय बाद आपने अपने ही नाम से इस फर्म की स्थापना की। इसकी विशेष उन्नति आप ही के हाथों से हुई। इस फर्म

श्रीयुत मगनमलजी पाटनी आगरा ।

श्रीयुत हीरालालजी पाटनी आगरा ।

स्व० सेठ कुन्दनदासजी
(नारा० हर०) मथुरा ।

...चन्द्रजी पाटनी S/o मगनमलजी पाटनी आगरा ।

स्व० सेठ ...

पर क्रमशः आढ़त, सूत और बैङ्किंग का काम होने लगा। जो वर्तमान में भी चल रहा है। आपका स्वर्गवास १९८६ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ रेखचंदजी के पुत्र सेठ नेमीचन्दजी तथा सेठ फूलचन्दजी हैं। आप दोनों ही फर्म के कार्य का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रेखचन्द टूंकड़ बेलनगंज आगरा	बैंकिंग, काटन तथा सूत का व्यापार होता है। यह फर्म कृष्णा मिल्स लि० ब्यावर, महाराजा कृष्णगढ़ मिल्स कृष्णगढ़, आस्टोडिया मिल्स अहमदाबाद, नजरअली मिल उज्जैन, एवं मगीरथी मिल जलगाँव के सूत की एजंट है। सूत के व्यापारियों में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स वृद्धिचन्द इन्द्रचन्द

इस फर्म के मालिक ओसवाल समाज के चोरड़िया सज्जन हैं। यह परिवार बहुत समय से आगरे में वास कर रहा है। बादशाही जमाने में इस फर्म के पूर्वज शाही ज्वैलर्स थे। उस समय इनको मुकीम की पदवी भी प्राप्त थी।

इस फर्म की उपरोक्त वर्तमान नाम से स्थापना सम्वत् १९७४ में सेठ इन्द्रचन्दजी ने की। आप बड़े व्यापारकुशल और बुद्धिमान सज्जन हैं। और यही कारण है कि इतने थोड़े ही समय में आपने इस फर्म की अत्यधिक उन्नति की, और प्रतिष्ठित फर्मों की नामावली में इसे स्थानापन्न कर दिया।

संवत् १९८० में आपने हमियानी की दी प्रेम स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड की सोल एजन्सी ली। अतः जो कुछ माल यह तैयार करता है वह सब आप ही की फर्म के द्वारा बिकता है।

इस समय इस फर्म के मालिक स्वयं सेठ इन्द्रचन्दजी तथा आपके पुत्र बाबू सुगनचन्दजी हैं। यह फर्म प्रधान रूप से सूत और रुई का व्यापार करती है। साथ ही बैंकिंग का व्यापार भी होता है—

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स वृद्धिचन्द इन्द्रचन्द बैलनगंज T. A. Indra	यहाँ आपका हेड ऑफिस है। यहां बैंकिंग रुई, सूत और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

लाला भोगीलालजी जैन (बेनीराम उत्तमचन्द) आगरा

लाला जैनेन्द्रदासजी जैन (बेनीराम उत्तमचन्द) आगरा

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स बेनीराम उत्तमचंद राजा की मण्डी T. A. Digmaber	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा देशी विदेशी कपड़े का थोक व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
आगरा—उत्तमचन्द मोतीलाल राजा की मण्डी	बैङ्कर्स, गवर्नमेण्ट कण्ट्राक्टर्स एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट डीलर्स तथा साड़ी कालीन, दरी, एण्ड प्रिण्टेड हॉथ मर्चेण्ट्स
आगरा—मेसर्स राममरोसे रामनारायण राजामण्डी	इस फर्म पर पगड़ी, दरी आदि का थोक व्यापार तथा गवर्नमेण्ट कन्ट्राक्ट का काम होता है।
आगरा—यू० पी० डाईंग एण्ड प्रिंटिंग हॉथ फैक्टरी आगरा	इसमें सभी प्रकार की रँगाई और छपाई का उत्तम काम होता है।
आगरा—आर० जे० इलेक्ट्रिक इञ्जी-नियरिंग कम्पनी T. A. Bijli	यहाँ गवर्नमेण्ट कण्ट्राक्ट का काम होता है।
आगरा—जैनेन्द्र इम्ब्राइडरी वर्क्स राजामण्डी	यहाँ पर सब प्रकार की चिकन और बूँटी काढ़ने और रुमाल आदि तैयार करने का काम होता है।

मेसर्स बंसीधर गंगाप्रसाद

इस फर्म का स्थापन संवत् १९१४ में लाला गङ्गाप्रसादजी के हाथों से हुआ। इसके पहले लाला बंसीधरजी अपने ही नाम से सूत एवं खादी का व्यापार करते थे। संवत् १९१४ से ही ला० गंगाप्रसादजी ने कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप ही के हाथों से इस फर्म को विशेष तरक्की मिली। आपने केवल १३ वर्ष की आयु से व्यापार शुरू किया था। आपका स्वर्गवास संवत् १९५८ के करीब हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र नमीमलजी उर्फ नारायणदासजी ने इस फर्म का संचालन किया। आपके सामने ही आपके पुत्र लाला ब्रजमोहनलालजी फर्म का संचालन करने लग गये थे। सेठ नारायणदासजी का स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ। लाला ब्रजमोहनजी ने संवत् १९०४ से अपनी फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार बंद कर मिलों की एजेन्सी का काम शुरू किया जो आज तक उन्नतावस्था में संचालित हो रहा है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० ब्रजमोहनलालजी एवं आपके छोटे भाई लाला किशनचन्दजी हैं। आप दोनों सज्जन मिलनसार एवं मेधावी व्यक्ति हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स बंसीधर गङ्गाप्रसाद बेलनगञ्ज, आगरा T. A. Sutia	यहाँ कपड़े एवं सूत का व्यापार होता है। यह फर्म महाराजा मिल बड़ौदा, महारानी मिल बड़ौदा, शिवाजी मिल बड़ौदा, न्यू बड़ौदा मिल बड़ौदा, न्यू टेक्स्टाईल मिल अहमदाबाद, भरतखण्ड टेक्स्टाईल मिल अहमदाबाद, जुबिली मिल अहमदाबाद आदि मिलों के कपड़े की एजंट है।
मेसर्स बंसीधर गङ्गाप्रसाद न्यू क्लाथ मार्केट देहली T. A. Honesty	यह फर्म करीब ४ वर्ष से स्थापित है। यहाँ भी उपरोक्त मिलों के कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स बद्रीदास बाँकेलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान आगरा ही है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७५ वर्ष पूर्व लाला बद्रीदासजी के द्वारा हुई। उस समय से इस फर्म पर आपने देशी कपड़ा, पगड़ी, जोड़ा, दरी, गाढ़ा इत्यादि का काम शुरू किया। ला० बद्रीदासजी के हाथों से इस व्यापार में अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५० में हुआ। आपके समय से ही आपके पुत्र ला० बाँकेलालजी फर्म का कार्य संचालन करने लग गये थे। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास १९५५ में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला सौनीमलजी ने सँभाला। आपने और भी कई प्रकार के कपड़े का व्यापार अपनी फर्म पर करना प्रारम्भ किया। इस व्यापार को आपने अच्छी उन्नति दी। आप व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८६ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० सौनीमलजी के पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः लाला हरीकिशनलालजी, लाला रामकृष्णजी, लाला भगवानदासजी एवं ला० चिमनलालजी हैं। आप चारों सज्जन इस समय फर्म का संचालन करते हैं। इस फर्म की यहाँ अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्म के संचालकों का दानधर्म की ओर भी अच्छा लक्ष्य रहा है। आपकी ओर से मथुरा में करीब १ मील की दूरी पर एक गोविन्दजी का मन्दिर बना हुआ है। उसके साथ ही एक बगीचा लगा हुआ है। वहाँ हर साल श्रावन सुदी ८ को भंडारा होता है जिसमें करीब

८००, १००० साधु-ब्राह्मण भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त राजामंडी के दरियानाथ में भी आपकी ओर से एक देवी जी का मन्दिर बनाया हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—पटीराम मोंकेलाल राजामंडी, आगरा T. A. Peetam — यहाँ सब प्रकार का देशी और विलायती कपड़े का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है। यहाँ से चाँदी की पैजन भी बनाकर बाहर भेजी जाती है।

मेसर्स—रौनीमल रामकृष्ण राजामंडी—आगरा — यहाँ देशी पगड़ी, जोड़ा, गाढ़ा दरी, खादी आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स मक्खनलाल रामस्वरूप

इस फर्म के संचालक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला मक्खनलालजी के द्वारा करीब ५५ वर्ष पूर्व हुई। लाला मक्खनलालजी लाला नाथूरामजी के यहाँ दत्तक आए थे। नाथूरामजी साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। लाला मक्खनलालजी ने फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप बड़े मिहनती थे। साथ ही व्यापार कुशल भी आप काफी थे। यही कारण है कि आपने अपने हाथों से बहुत सम्पत्ति प्राप्त की। सम्वत् १९७६ में ७८ वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः नारायणदासजी, रामस्वरूपजी और राधेलालजी हैं। इनमें से प्रथम नारायणदासजी का अल्पायु ही में स्वर्गवास हो चुका है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम अमरनाथजी है। आप अभी पढ़ते हैं। शेष दोनों भ्राता फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मक्खनलाल रामस्वरूप रावतपाड़ा आगरा — यहाँ हेड आफिस है। इस फर्म पर बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स—मक्खनलाल नारायणदास लोहरी बाजार आगरा T. A. Narayan — यहाँ सूत तथा कपड़े की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—मक्खनलाल राधेलाल बेलनगञ्ज आगरा T. A. Radhay — यहाँ रुई तथा गल्ले की आढ़त का काम होता है।

करीब ६ वर्ष से इस फर्म ने अपनी और एक फर्म खोल कर उसे हेड-आफिस बनाया । यहाँ थोक व्यापार होता है । यहाँ के माल में किसी प्रकार का घटा नहीं होता । यह फर्म बुलियन मार्केट में प्रधान मानी जाती है । चांदी-सोना के व्यापारियों में होने वाले आपसी झगड़े इसी फर्म पर तय किये जाते हैं तथा इसी फर्म पर झगड़े की तोल मानी जाती है । अर्थात् किसी का कोई माल कम तोल दे तो यहाँ के तोल को ही सब व्यापारी मंजूर करते हैं ।

इस फर्म के वर्तमान संचालक ला० कन्हैयालालजी हैं । आपके तीन सुपुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः रामबाबूजी, गिरधारीलालजी और राधावल्लभजी हैं ।

आपकी ओर से रावतपाड़ा में राधिका वंशीवटविहारी महाराज का मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

आगरा—मेसर्स कन्हैयालाल बद्रीप्रसाद हे० आ० जौहरी बाजार T. A. Kanhiya — यहाँ फर्म का हेड-ऑफिस है। तथा चांदी-सोने के थोक माल की बिक्री का काम होता है । इसके प्रबंधक बा० कृष्णस्वरूपजी हैं ।

आगरा—मेसर्स कन्हैयालाल गोवर्धनदास किनारी बाजार — यहाँ चाँदी-सोने का सर्राफ व्यापार व बने हुए जड़ाऊ जेवर तथा डायमंड का व्यापार होता है । मोती वगैरह का व्यापार भी होता है । इसके प्रबंधक ला० दीनानाथजी हैं ।

आगरा—जौहरी मार्बल वर्क्स जौहरी बाजार T. A. Kanhiya T. P. H. 166. — यह फर्म करीब १० वर्ष से मार्बल का काम मेसर्स के० एन० बैरच के नाम से करता था । सन् १९२५ से इस नाम से व्यापार करता है । इस फर्म पर संगमरमर की चौकी, पटिया, खम्भे, मूर्तियों, इमारती सामान तथा फैन्सी सामान, जैसे गिलास, रकाबी, प्याले, फूलदान, पीकदान, फोटोफ्रेम, टेबल लेम्प, ताज व इत्र मारोड़ा मॉडल आदि का व्यापार होता है । यह फर्म डायरेक्ट खानों से माल मँगवाती है तथा अपने कारखानों से इसे बनवा कर पालिश करवा कर तैय्यार करवाती है। आपके यहाँ के कारखाने में इलेक्ट्रिक-लाइट भी लगी हुई है । यह आगरा स्टेशन मार्ग है तथा यह फर्म बाहर गाँव जाकर मंदिर इमारत वगैरह का काम तथा ठेका भी लेती है । इसके प्रबंधक ला० दामोदरदासजी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स बंसीधर सुमेरचंद एण्ड को बेलन गंज T. A. Tubes. T. Ph. 69	यहाँ लोहे के सब प्रकार के सामान मिल, जीन स्टोअर आदि का व्यापार तथा गव्हर्नमेंट कंट्राक्ट का काम होता है। इसके अतिरिक्त वारनिश और पेंट का काम भी होता है।
आगरा—दी मारोलिया इलेक्ट्रिकल कंपनी बेलन गंज T. A. Light.	यहाँ कंट्राक्टर्स और इलेक्ट्रिक इम्पोर्ट्स का काम होता है।

मेसर्स भीकामल छोटेलाल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के लोहिया जैन सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सन् १८७५ में लाला छोटेलालजी ने किया। इसके पहले आप दूसरे के साझे में व्यापार करते थे। आपके समय में फर्म की साधारण उन्नति हुई। आपके समय से ही आपके पुत्र लाला लेखराजजी फर्म के कार्य का संचालन करने लग गये थे। लाला लेखराजजी बड़े चतुर, व्यापारकुशल, सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आपने केवल १४ वर्ष की आयु से व्यापार प्रारंभ किया और अपनी व्यापार-कुशल नीति से लाखों रुपयों की सम्पत्ति एवं यश उपार्जन किया। आपने रेल्वे से बड़े २ कंट्राक्ट किये। समय २ पर गवर्नमेंट से भी बहुत से कंट्राक्ट लेकर समय पर काम किया। कई भारतीय राज्यों में भी आपने अपने माल को सप्लाय किया। इसी व्यापार में आपने बहुत रुपया कमाया। आपका ध्यान व्यापार की ही ओर रहा हो सो बात नहीं थी। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भी आप बहुत योग देते थे। कई सार्वजनिक संस्थाओं को समय २ पर अच्छी आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। आपके द्वारा कई गुप्त दान भी हुए। कहने का मतलब यह कि आप बड़े प्रतिभाशाली एवं धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हुआ। आपकी मृत्यु के समय आपको किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला लेखराजजी के पुत्र लाला रतनलालजी हैं। आपने २१ वर्ष की वय से व्यापार-क्षेत्र में प्रवेश किया। आपने अपने हाथों से अपनी फर्म की और भी ब्रांचेज खोलीं। साथ ही लोहे के फेन्सी इमारती सामान बनाने का एक कारखाना भी खोला। आपने वारनिश और पेंट की भी एक दुकान स्थापित की। आपका खयाल हमेशा

स्व० लाला नारायणदासजी (बन्सीधर गंगाप्रसाद) आगरा

स्व० लाला लेखराजजी जैन (भीखामल छोटेलाल) आगरा

...शिवप्रसादजी सादानी आगरा

सेठ ...

उन्नति की ओर रहता है। आप मिलनसार चतुर और व्यापारकुशल सज्जन हैं। सामाजिक क्षेत्र में भी आप दिलचस्पी लिया करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—भीकामल छोटेलाल (सावीपाड़ा) लोहामंडी आगरा T. A. Ratan — यहाँ हेड आफिस है। तथा पेंट, टाईल्स, लोहा एवं बैंकिंग का काम होता है। यहाँ कारखाने के बने माल का व्यापार भी होता है।

मेसर्स—भीकामल छोटेलाल मेनबाजार, लोहामंडी आगरा — यहाँ टाटा कंपनी के आयरन वर्क्स की तथा विलायती बने हुए लोहे के माल की बिक्री का काम होता है।

दी आयरन फैक्टरी लोहामण्डी आगरा — यहाँ आपका फैंसी इमारती लोहे के सामान का कारखाना है।

मेसर्स आर० जी० बांसल एण्ड को०

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। इसका स्थापन सन् १८९४ में लाला रामगोपालजी के हाथों से हुआ। इसके पहले आपके पिताजी सोना चाँदी एवं कपड़े का व्यापार करते थे। शुरू २ में इस कम्पनी ने मारबल, फोटो, एवं प्रिंटिंग का काम जारी किया और क्रमशः संचालकों की बुद्धिमानी एवं व्यापारकुशल नीति से इसकी अच्छी उन्नति हुई। लाला रामगोपालजी के चार भाई और हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत श्यामसुंदरलालजी बी० ए०, श्री शालिगरामजी, श्री सीतारामजी तथा बालकृष्णजी हैं। दोनों ही सज्जन फर्म का कार्य सचालन करते हैं। ला० रामगोपालजी तथा शालिगरामजी मकराना में फैक्टरी का, सीतारामजी होटल का, बालकृष्णजी प्रिंटिंग का एवं श्यामसुन्दरलालजी जनरल मैनेजर का काम करते हैं।

इस फर्म की संगमरमर की फैक्टरी तथा खान मकराना (जोधपुर स्टेट) में है। यहाँ संगमरमर के खरल, चौकी, खम्भे, गोला, गमला, मेजें आदि वस्तुओं के सुन्दरतापूर्वक बनाने की अलग २ कई मशीनें हैं। साथ ही पालिश करने की भी दो मशीनें हैं। इस फैक्टरी में एक ऐसी भी मशीन है जो १० टन वजन का संगमरमर का पत्थर आसानी से काट देती है। जोधपुर स्टेट रेलवे ने इस कम्पनी की फैक्टरी की साईडिंग भी दी है। यह फर्म इस काम में मकराने में बहुत अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स—आर० जी० बांसल एण्ड को० कसेरा बाजार आगरा T. A. Tajmodal	यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ फैक्टरी से बनी हुई संगमरमर की फैन्सी वस्तुओं की बिक्री का काम होता है। साथ ही फोटोग्राफी एवं प्रिंटिंग प्रेस का काम भी होता है।
मेसर्स—आर० जी० बांसल एण्ड को० मकराना (जोधपुर) J. B. Ry. T. A. "Bansal"	यहाँ फेक्टरी है। माल तैयार करवाकर बाहर सप्लाय किया जाता है तथा आर्डर आने पर जैसा चाहे बनवा दिया जाता है।

आपकी ओर से यहाँ श्री राधिका वंशीवटविहारीजी का रावतपाड़ा में मंदिर बना हुआ है।

गोटा किनारी के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द धन्नालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागौर है। आप लोग ओसवाल समाज के सुराना सज्जन हैं। इस परिवार को यहाँ आये करीब ३०० वर्ष हुए। पर उपरोक्त फर्म संवत् १९१४ में सेठ गुलाबचन्दजी ने एक सज्जन के साझे में खोली। उस समय इस फर्म पर मेसर्स गुलाबचन्द मोतीलाल के नाम से कारबार होता था। शुरू से ही इस फर्म पर लेस तथा गोटा किनारी का काम होता चला आ रहा है। संवत् १९४६ में साझा अलग २ हो जाने से सेठ गुलाबचन्दजी ने अपनी फर्म का नाम मेसर्स गुलाबचन्द धन्नालाल रक्खा। जो इस समय वर्तमान है। सेठ गुलाबचन्दजी के २ पुत्र हुए। बाबू धन्नालालजी एवं श्रीयुत बाबूलालजी इनमें से बाबू धन्नालालजी का सं० १९८५ में ही स्वर्गवास हो गया। सेठ गुलाबचंदजी व्यापार का सारा कारबार अपने छोटे पुत्र बाबूलालजी पर छोड़कर शांतिलाभ करते हैं।

वर्तमान में इस फर्म का संचालन श्रीयुत बाबूलालजी करते हैं। आप ऊँचे विचारों के व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन हैं। आपके २ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः निर्मलचन्दजी, और सौरतनमलजी हैं।

इस फर्म के काम को देखकर लार्ड चेम्सफोर्ड, लार्ड रीडिंग, लार्ड इरविन, बंगाल गवर्नर लार्ड लिटन आदि कई हाइ युरोपियन आफिसर्स और कई दूसरे व्यक्तियों ने प्रशंसापत्र दिये हैं।

सेठ गुलाबचन्द पन्नालाल आगरा

...लजी (बुद्धिसिंह मोहनलाल) आगरा

ऑफिस गुलाबचन्द पन्नालाल आगरा

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—गुलाबचन्द पन्नालाल किनारी बाजार आगरा T. A. Lace	यहाँ गोटा, किनारी, लेस एवं कलाबत्तू का व्यापार होता है। इस फर्म का निज का कारखाना है। इसके द्वारा गवर्नमेंट आफिसों एवं वाइसराय आदि के यहाँ की वर्दियों में लगाने के लिये लेस के सप्लाय का काम होता है।

मेसर्स बुद्धिसिंह मोहनलाल

संवत् १९२८ में लाला मोहनलालजी के द्वारा इस फर्म का स्थापन हुआ। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। शुरू से ही यह फर्म गोटा-किनारी का काम करती आ रही है। इस फर्म की विशेष उन्नति आप ही के हाथों से हुई। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५३ में हुआ। आप बड़े मेघावी एवं व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपने आगरे में कैलाश महादेव पर एक मकान धर्मार्थ बनवाया। सौरोंजी में पब्लिक उपयोग के लिये एक बगीचे का निर्माण कराया। महादेव मनकामेश्वर में भी आपने संगमरमर की फर्श जड़वाई तथा सीढ़ियाँ बनवाई। तथा रावतपाड़ा में आपने एक मन्दिर राधामोहनलालजी का बनवाया। इसके खर्च के लिये आपने एक मकान खरीद कर दे दिया। इसी प्रकार कई सार्वजनिक धार्मिक कार्यों में सहयोग दिया करते हैं। आपने अपने दौहित्र को करीब ८० हजार का माल एवं मकान दिया। आपके पश्चात् फर्म के व्यापार को आपके पुत्र हरदयालदासजी ने सम्हाला। आपका भी संवत् १९६७ में स्वर्गवास होगया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक आपके पुत्र राजनारायणजी हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र राधागोविन्दजी आपकी देखरेख में व्यापार का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—बुद्धिसिंह मोहनलाल रावतपाड़ा आगरा	यहाँ गोटा-किनारी, जरी का बना माल एवंम आढ़त का काम होता है। बैंकिंग और जमींदारी का काम भी यहीं होता है।

गल्ला के व्यापारी

मेसर्स हीरालाल रामदयाल
,, तेजकरण चाँदमल
मेसर्स तेजपाल जमुनादास
,, नन्दराम छोटेलाल
पुरुषोत्तमदास मक्खनलाल

मेसर्स मथुरादास पद्मचन्द
„ मूलचन्द नेमीचन्द
„ सीताराम श्रीकृष्णदास
„ सोनपाल मुन्नालाल
„ हजारीलाल गनेशीलाल
„ हरीबक्स सूरजमल

शक्कर के व्यापारी

मेसर्स गंगाप्रसाद रतनलाल
„ गयाप्रसाद बिहारीलाल
„ तुलसीराम शाह
„ मनोरथभगत ध्यानराम
„ स्वार्थराम रामस्वरूप

लोहे के व्यापारी

मेसर्स पूरनचन्द एण्ड को०
„ वंशीधर सुमेरचन्द
„ भीखामल छोटेलाल
„ शीतल प्रसाद एण्ड को०

सूत के व्यापारी

मेसर्स वृद्धिचन्द्र इन्द्रचन्द्र
„ वंशीधर गंगाप्रसाद
„ मक्खनलाल नारायणदास

मेसर्स मक्खन लाल रामस्वरूप
„ शिवप्रसाद सारानी
„ मुरलमल चन्दूलाल

किराने के व्यापारी

मेसर्स गोपीनाथ विश्वम्भरनाथ
„ तुलसीराम सीताराम
„ मुन्नालाल बाबूलाल
„ शीतल प्रसाद मुन्नीमल

जीरा के व्यापारी

मेसर्स डूँगरमीदास केदारनाथ
„ तनसुखराय अनन्दराम

गोटे के व्यापारी

मेसर्स बुद्धसिंह मोहनलाल
„ गुलाबचन्द छोटेलाल

सोने चाँदी के व्यापारी

मेसर्स छोटेलाल अमीरचन्द
„ बाँकेलाल बिहारीलाल
„ बैजनाथ सराफ
„ रामचन्द्र शंकरलाल
„ राधेलाल बालमुकुन्द

मथुरा

मथुरा इतिहासप्रसिद्ध और पुराणों में प्रख्यात प्राचीन नगर है। यह नगर ब्रजमण्डल के अन्तर्गत है। राधाकृष्ण की जिस प्रेमलीला ने भारत भर के साहित्य और काव्य को सम्पन्न और संजीवित कर रक्खा है, जिसकी प्रतिध्वनि भारत के घर घर में गूँज रही है उस प्रेमलीला का स्थान मथुरा ही है। यह स्थान यमुना के तीर पर बसा हुआ है। प्राचीन आर्य्य युग की तरह बौद्ध युग में भी यह स्थान बड़ा महत्त्व-पूर्ण रहा और इसके पश्चात् मुसलमान आक्रमणकारियों के भी यहाँ पर बहुत से आक्रमण हुए। जिनकी वजह से, आर्य्ययुग की कई स्मृतियाँ नष्ट हो गईं। जिनके ध्वंसावशेष अब खोद कर निकाले जा रहे हैं। इस समय इस तीर्थ स्थान में यमुनाबाग की छतरी, होली दरवाजा तोरण, राधाकृष्ण का मन्दिर, विजयगोविन्द का मन्दिर, मदनमोहन का मन्दिर, दीर्घविष्णु का मन्दिर, बिहारीजी का मन्दिर, मोहनजी का मन्दिर, विश्रामघाट इत्यादि स्थान दर्शनीय हैं।

मथुरा से करीब छः माइल की दूरी पर कृष्ण का प्यारा स्थान वृन्दावन बसा हुआ है। मथुरा यदि ऐश्वर्य की लीलाभूमि है तो वृन्दावन माधुर्य्य का विश्राम-स्थल है। यह वही वृन्दावन है जिसकी भूमि के रजःकण तक विशालनयनी गोपवधूटियों के प्रेमोद्गारों से प्रेम-प्लावित हो चुके हैं। जिस समय गोपबालकों के सिंगे की ध्वनि से वृन्दावन मुखरित होता था, वह समय भारत के लिए कितना सुन्दर और मन मोहक था, वे दिन अब नहीं रहे, पर उनकी स्मृति काल के कुटिल चक्र की अवहेलना करती हुई आज भी भारतवासियों के मस्तिष्क में ज्यों की त्यों अङ्कित है।

व्यापारिक परिचय

मथुरा एक तीर्थ स्थान है। व्यापारिक क्षेत्रों में इसकी गणना नहीं हो सकती। फिर भी यहाँ सुखसंचारक कम्पनी, सुन्दर शृंगार कम्पनी, नागर ब्रदर्स इत्यादि कई कम्पनियाँ ऐसी हैं जिनकी औषधियों का प्रचार सारे भारतवर्ष में है। इनकी वजह से व्यापारिक जगत् में मथुरा का अच्छा नाम है। इसके अतिरिक्त यहाँ निवार व सूत की रस्सियाँ भी अच्छी बनती हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स काशीराम जौहारमल

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० प्रभुलालजी एवं प्यारेलालजी हैं। आप खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इसपर पहले मेसर्स गोपीनाथ काशीराम के नाम से व्यापार होता था। इस फर्म के पूर्व संचालक ला० काशीरामजी और जौहारमलजी के द्वारा इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। जौहारमलजी ने अपने व्यवसाय को खूब बढ़ाया। आपने निज की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस समय फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—मेसर्स काशीराम जौहारमल केलनन गंज T. A. Gvind	यहाँ हेड आफिस है। तथा रुई, गल्ला आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
मथुरा—मे० जवाहरमल गयाप्रसाद हालनगंज	" " "
मथुरा—मे० लक्ष्मीचंद प्रभुलाल शाहगंज दरवाजा	यहाँ जीन और प्रेस है तथा रुई का काम होता है।
कोसीकलां (मथुरा) मे० प्रभुलाल प्यारेलाल	यहाँ आपकी कॉटन जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

दी गोपाल प्रोंय प्रिंटिंग कम्पनी

इस कम्पनी की स्थापना आज से करीब ५ वर्ष पूर्व हुई। इसकी वर्तमान मालिक यहाँ की प्रसिद्ध फर्में हैं जिनका नाम मेसर्स नारायणदास हरदेवदास, मेसर्स गनेशीलाल मीनामल एवं भरतपुर के हरसेवक वासुदेव हैं। ये तीनों फर्में बहुत समय पूर्व से ही कपड़े का व्यापार करती आ रही हैं। इस कम्पनी में छपाई का काम होता है। यहाँ की छपाई भारतप्रसिद्ध है। इस फर्म की आर लोगों के द्वारा अच्छी तरक्की हुई है। साथ ही आप लोगों ने कई नये तर्ज के डिज़ाइन भी निकाले हैं। अपने माल की विशेष बिक्री के लिये इसकी एक शाखा बम्बई में भी स्थापित की गई है।

वर्तमान में इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मथुरा—दी गोपाल हॉथ प्रिंटिंग कम्पनी	यहाँ बढ़िया डिजाइन के छपे हुए सभी प्रकार के देशी, रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। रंग की पकाई के लिये कम्पनी गेरंटी करती है।
बम्बई—दी गोपाल हॉथ प्रिंटिंग कम्पनी चिमनलाल की चाल, भोलेश्वर	यहाँ मथुरा का छपा हुआ कपड़ा जैसे साड़ी, धोती वगैरह की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स गनेशीलाल मीनामल

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० लल्लोमलजी एवं ला० केशवदेवजी हैं। आप यहाँ के प्रतिष्ठित रईस, जमींदार और बैंकर हैं। ला० लल्लोमलजी स्थानीय म्युनिसिपेलिटी के चेयरमेन हैं। आपका हाथरस के लल्लामल हरदेवदास नामक मील में साम्ता है। आपने मथुरा में जी० आई० पी० लाईन के पास एक धर्मशाला बनवाई है। वर्तमान में इस फर्म पर बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। यहाँ की गोपाल हाथ प्रिंटिंग कम्पनी में इस फर्म का साम्ता है।

मेसर्स नारायणदास हरदेवदास

इस फर्म का स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व सखी समाज के सेठ नारायणदासजी एवं आपके पुत्र सेठ हरदेवदासजी के द्वारा हुआ। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। शुरू २ में आपने कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया था। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। सेठ हरदेवदासजी के सामने ही उनके पुत्र केदारनाथजी का भी स्वर्गवास हो गया था। पश्चात् आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन सेठ केदारनाथजी के पुत्र कुन्दनदासजी ने संचालित किया। आपके समय में इस फर्म ने बहुत प्रगति की। आप यहाँ के नामांकित व्यक्ति हो गये हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र सेठ गोवर्धनदासजी, सेठ जमनादासजी एवं सेठ हरनन्ददासजी हैं। आप लोग योग्यता से फर्म का संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मथुरा—मेसर्स नारायणदास हरदेवदास चौक	यहाँ बैंकिंग, गल्ला, रुई आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मथुरा—मेसर्स नारायणदास हरदेवदास } यह फर्म इम्पिरियल बैंक मथुरा ब्रांच की ट्रेभरर है।
फेलननगंज

इसके अतिरिक्त दी गोपाल छाप प्रिंटिंग कम्पनी में इस फर्म का साझा है।

मेसर्स एल० पी० नागर एण्ड को०

यह कम्पनी सन् १९१० से स्थापित है। इसके स्थापक श्रीलक्ष्मीप्रसादजी नागर हैं। आप उन लोगों में से हैं जो अपने ही पैरों पर खड़े होकर सफलता प्राप्त करते हैं। आपने शुरू २ में १००) से अपना व्यवसाय आरंभ किया था। आपकी व्यापार-चातुरी से ही आपने इतनी उन्नति की है। आपकी विशेष उन्नति "संकट मोचन" नामक दवा से हुई। इस समय आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम कृष्णकांत, शिशिरकांत एवं रविकांत है। आपके बड़े पुत्र पुरुषोत्तमलाल का स्वर्गवास हो गया। आप बड़े होनहार थे। कंपनी की तरक्की का श्रेय आप ही को है। वर्तमान में कम्पनी का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मथुरा—एल० पी० नागर एण्ड को० } यहाँ दवाईयों की बिक्री का काम होता है। आपके
घीया मंडी T. A. Nagar } कई हजार एजंट हैं। इसी नामसे यहाँ आपका प्रिंटिंग प्रेस भी है।

मेसर्स बैंकामल निरंजनदास

इस फर्म के मालिक लाला निरंजनदासजी ए० एम० एस० टी, पी० एस सी० हैं। यह फर्म यहाँ पर काटन का व्यवसाय करती है। यहाँ आपकी जीन प्रेस फैक्टरी भी है। इसका अधिक परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ७२ पर मेसर्स राय नागरमल गोपीमल के नाम से देखिये। यहाँ तार का पता Pawan है।

मेसर्स रूपचंद गोवर्धनदास

इस फर्म के मालिक माहेश्वरी वैश्य-समाज के जेसलमेर निवासी सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ रूपचंदजी के द्वारा हुई। इसकी उन्नति का साधारण श्रेय आपको तथा आपके पुत्र गोवर्धनदासजी को है। मगर इसका विशेष श्रेय गोवर्धनदासजी के पुत्र और इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मिलापचंदजी को है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक, रईस एवं जमींदार हैं। आप २४ वर्षों से आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आप डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के चेयरमेन भी हैं। आपके २ पुत्र हैं बा० रूपकिशोरजी एवं छगनलालजी। बा० रूपकिशोरजी भी

यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारियों में से हैं। आप भी आनरेरी मेजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपेलिटी के तथा कोआपरेटिव बैंक के वाइस चेअरमेन हैं। आप प्री मेसन के भी मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मथुरा—मेसर्स रूपचन्द गोवर्धनदास	यहाँ बैंकिग और जमींदारी का काम होता है।
मथुरा—भीखचन्द रूपकिशोर	यहाँ स्टेंडर्ड आइल कम्पनी एवं वर्मारोल की मथुरा जिले के लिये तेल की एजंसी है।

मेसर्स सुखसंचारक एण्ड को०

इस फर्म की स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व मथुरा निवासी पं० क्षेत्रपालजी शर्मा ने की। वर्तमान में आप ही इसके प्रधान संचालक एवं मालिक हैं। आपने अपनी औद्योगिक प्रतिभा एवं व्यापार चातुरी से इस फर्म की बहुत उन्नति की। शुरू २ में आपने साबुन बनाने का काम प्रारंभ किया। इसमें आपको साधारण सफलता मिली। इसके पश्चात् आपने औषधि-निर्माण-कार्य शुरू किया। इस व्यवसाय में आपको अच्छी सफलता मिली। अपनी प्रसिद्ध औषधि सुधासिंधु से आपने लाखों रुपये कमाये। इसके पश्चात् आपने विलायत से फेंसी गुड्स एवं घड़ियों का डायरेक्ट इम्पोर्ट प्रारंभ किया। इसीके साथ आपने भारतीयों की अभिरुचि के अनुसार ग्रामोफोन रेकार्ड भी भर कर मँगवाये एवं प्रचार किया। इस व्यवसाय में आपको सब से अधिक सफलता मिली और धीरे २ कम्पनी की स्थिति मजबूत और सुदृढ़ होती चली गयी। आपका काम इस समय इतना बढ़ गया कि छपाई वगैरह के लिये प्रेस की आवश्यकता महसूस हुई और इसके प्रमाण-स्वरूप आपने एक विशाल प्रेस की भी स्थापना की। इस प्रकार उन्नति करते हुए आप आजकल यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारियों में से हैं।

सार्वजनिक कार्यों की ओर भी आपकी बड़ी रुचि रही है। आपने यहाँ गरीबों के लिये बहुत से सुभीते किये हैं। गरीबों के प्रति आपका अच्छा व्यवहार रहता है। इतनी सम्पत्ति प्राप्त करने पर भी आपमें किसी प्रकार का अहंकार नहीं है। आप सादे, सरल एवं मिलनसार स्वभावी हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम विश्वपालजी, शक्तिपालजी एवं जिनेन्द्रपालजी हैं। पं० विश्वपालजी भी फर्म के संचालन में योग देते हैं।

पं० क्षेत्रपालजी ने यहाँ अपने आफिस आदि के लिये तीन चार भव्य इमारतें बनवाई हैं। एक में आपका आफिस है, दूसरी में सुखसंचारक पोस्ट-आफिस एवं प्रेस डिपार्टमेंट है। तीसरी बिल्डिंग में भी आपका आफिस जा रहा है। वर्तमान आफिस के नीचे आपका शोरूम भी बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—सुखसंचारक कम्पनी	यहाँ घड़ियाँ, दवाइयाँ, पुस्तकें, स्त्रियों एव बच्चों के तैय्यार कपड़े, म्युजिकल इन्स्ट्रूमेंट्स, इम्ब्राइडरी गुड्स, रबर स्टाम्प, प्रिंटिंग, टाईप फाउंडरी आदि का व्यापार एवं काम होता है। यहाँ इलेक्ट्रिक ट्रीटमेंट भी किया जाता है। आपके भारत के सिवा विदेशों में भी हजारों एजंट हैं।

सुन्दर शृंगार कार्यालय

इस कार्यालय के वर्तमान मालिक ला० जगन्नाथदासजी वैश्य एवं आपके पुत्र बा० सूरजभानजी, बा० चन्द्रभानजी एवं फूलचन्दजी हैं। फर्म संचालन आप स्वयं तथा बा० सूरजभानजी करते हैं। इस कार्यालय की स्थापना सन् १८८२ में ला० जगन्नाथदासजी के द्वारा हुई। शुरु २ में आपने ठाकुरजी के शृंगार का सामान बनाना प्रारंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता हुई अतएव इसीको आपने और बढ़ाया। इसके पश्चात् रामलीला, रासलीला आदि के उपयोगी सब प्रकार की ड्रेस एवं सामान का काम आपने अपने हाथ में लिया। कहना न होगा कि इसमें भी आपने अच्छी सफलता प्राप्त की और कार्यालय की स्थिति को मजबूत एवं दृढ़ कर आपने अपने व्यवसाय को और फैलाया। आपने अपने यहाँ दवाइयों के बनाने का काम तथा पेटेन्ट दवाइयाँ बाहर से मंगवाने का काम भी जारी किया आपने अपनी प्रसिद्ध औषधि पीयूषसिन्धु से बहुत रुपया कमाया। इस समय आपका काम इतना बढ़ा है कि विज्ञापन वगैरह छापने के लिये एक प्रेस की आवश्यकता हुई और आपने एक स्टीम प्रेस स्थापित भी कर दिया। कुछ समय के पश्चात् इसमें प्रकाशन का भी काम होने लग गया।

इस समय कार्यालय का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—सुन्दर शृंगार कार्यालय पिया ंटी T. A. "Sundergar"	यहाँ सभी प्रकार के नाटक, रामलीला, रासलीला, एवं ठाकुरजी के शृंगार के सामान का व्यापार होता है। गोटे एवं सलमे सितारों के हार भी यहाँ बनाए जाते हैं। इसके अलावा प्रिंटिंग का काम तथा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री का व्यापार होता है। दवाइयाँ भी हमेशा मिलती हैं। इसका यहाँ शोरूम भी है।

फिरोजाबाद

फिरोजाबाद पुरानी बस्ती है। यह ई० आई० आर० की मेनलाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से आधा मील की दूरी पर स्थित है। यह यू० पी० प्रांत के आगरा जिले का अच्छा व्यापारिक स्थान माना जाता है। यहाँ प्रधान व्यापार काटन और कांच का है। काटन को जीन करने एवं प्रेस करने के यहाँ कई कारखाने हैं। काँच के भी करीब २५ कारखाने हैं। सन् १९०८ के पहले यहाँ देशी ढंग से चूड़ियाँ बनाई जाती थीं। इसी साल से यहाँ ग्लास वर्क्स खुलना शुरू हुए और आज तो इनकी संख्या २५ तक पहुँच गई। इसके अतिरिक्त यहाँ २०० भट्टियाँ भी चलती हैं। इन कारखानों में विशेष कर रंगीन चूड़ियाँ तैय्यार होती हैं। इसके अलावा कांच के और भी कई प्रकार के फैन्सी सामान भी बनते हैं।

यहाँ के कल-कारखाने इस प्रकार हैं—

१ अमृतलाल गुलजारीलाल जिनिंग फैक्टरी—इसमें १३२ आदमी काम करते हैं तथा ४८ जीन हैं।
२ अमृतलाल गुलजारीलाल प्रेस फैक्टरी—इसमें ४३ आदमी काम करते हैं।
३ चतुर्वेदी मिल्स कं० लिमिटेड—इसमें ७० आदमी काम करते हैं तथा २० जीन चलते हैं।
४ वैश्य फ्लोअर एण्ड जिनिंग मिल्स कं०—इसमें २० जीन एवं ३५ आदमी काम करते हैं।
५ रामचन्द्र नटरूमल कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—इसमें ४८ जीन चलते हैं। तथा १३२ आदमी काम करते हैं।

काँच के कारखाने

१ इंडियन ग्लास वर्क्स
२ कोरोनेशन ग्लास वर्क्स
३ कादिर बख्श ग्लास वर्क्स
४ गोपीनाथ जौहरीमल ग्लास वर्क्स
५ ग्रैण्ड ग्लास वर्क्स
६ मनीलाल ग्लास वर्क्स
७ हनुमान ग्लास वर्क्स

तेल के मिल

१ अमृतलाल गुलजारीलाल आईल मिल
२ श्यामलाल दाऊलाल आईल मिल

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ श्रीधरजी एवं सेठ पूरनचन्द्जी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्वपुरुष खानों से सुरजा गये और वहाँ से करीब ६० वर्ष पूर्व यहाँ आये। इस फर्म के स्थापक सेठ माणकचन्द्जी के पुत्र अमृतलालजी

मेसर्स रामचन्द्र मटरूमल

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ यह फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है। इसका यहाँ कॉटन मिल भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ तोलारामजी, गौरीशंकरजी एवं कन्हैयालालजी गोयनका हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० २४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रुई का व्यापार करती है। यहाँ इसकी एक जीनिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स हजारीलाल रोशनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० हजारीलालजी चतुर्वेदी एवं आपका कुटुम्ब है। इस फर्म की स्थापना आप ही के द्वारा हुई। आप शिक्षित, मिलनसार एवं व्यवसायकुशल सज्जन हैं। आपके यहाँ पहले जमींदारी का काम होता था, आपने ही व्यवसाय में कदम रखा। व्यापारिक सज्जन होने से आपने अपने व्यापार की क्रमशः अच्छी उन्नति की। शुरू में आपने चतुर्वेदी काटन कं० लि० खोली। इसके पश्चात् सन् १९२६ से हनुमान ग्लास वर्क्स के नाम से एक काँच का कारखाना खोला। इसमें करीब ८० मन काँच रोजाना गलता है। पं० हजारीमलजी के परिवार में कई सज्जन हैं। प्रायः सभी ऊँचे शिक्षित और ऊँचे पदों पर काम कर रहे हैं। अप्रासंगिक होने से उनका परिचय यहाँ नहीं दिया गया है। इस फर्म का संचालन मुरलीधरजी एवं सुदर्शनलालजी करते हैं। इस फर्म पर काँच का काम तथा जमींदारी और बैंकिंग व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
" द्वारकादास प्यारेलाल
" पटुमल प्यारेलाल
" रामचन्द्र मटरूमल

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
" गुलजारीलाल बेनीप्रसाद
" गोपीराम रामचन्द्र
" छेदीलाल मुन्नीलाल
" कन्नूलाल बाबूलाल

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स दौलतराम मोतीलाल
" मोहरे रामलाल
" मूलचन्द परसोत्तमदास

चाँदी-सोना के व्यापारी

मेसर्स कुंजीलाल रामप्रसाद

करती है। यहाँ इसकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ फूलचंदजी टिकमानी हैं। यहाँ का तार का पता Tikamani है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में पेज नं० ४४ में बम्बई में दिया गया है।

मेसर्स चुन्नीलाल शिवबख्श

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ द्वारकादासजी एवं सेठ नारायणदासजी हैं। आप लोगों के पूर्वजों ने सम्वत् १९३५ में इस फर्म की स्थापना की। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—चुन्नीलाल शिवबख्श शिकोहाबाद T. A. "Ramanand"	यहाँ फर्म का हेड आफिस है। इस फर्म पर कपड़ा, गल्ला, घी और आढ़त का काम होता है।
शिकोहाबाद—दी रामानंद द्वारकादास कॉटन जीनिंग फैक्टरी एण्ड आईल मिल	यहाँ रुई, तेल आदि का व्यापार होता है तथा इस कारखाने के आप मालिक हैं।
मैनपुरी—शिवशंकर महावीर प्रसाद	यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स सेत्रपाल वृजलाल

इस फर्म के मालिक पल्लीवाल गौड़ ब्राह्मण समाज के गुड़ा (बीकानेर) निवासी सज्जन हैं। यह फर्म १९५४ में स्थापित हुई। शुरू २ में इसपर घी का व्यापार प्रारम्भ किया गया। घी के व्यापार में इस फर्म को बहुत सफलता हुई। इसके पश्चात् सन् १९१९ में इस फर्म ने एक शीशे का कारखाना खोला जिसमें शुरू २ में रंगीन कॉच का काम होता था। सन् १९२४ से इसमें कॉच के बर्तन वगैरह भी बनना शुरू हो गये हैं। आजकल करीब २ लाख रुपया सालाना का माल यह कारखाना तैयार करता है। इसके वर्तमान मालिक पं० वृजलाल जी हैं। आप करीब २५ साल से आर्य-समाज के सभापति हैं तथा घी मरचेन्ट्स एसोसिएशन के भी आप सभापति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिकोहाबाद—मेसर्स सेत्रपाल वृजलाल	यहाँ घी और आढ़त का काम होता है।

शिकोहाबाद—दी पल्लीवाल ग्लास वर्क्स — यहाँ सभी प्रकार के काँच के सामान बनाने का कारखाना है।

घी के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल वंशीधर
,, घमंडीलाल पुरुषोत्तमदास
,, पतोराम धनसुखदास
,, बेणीराम वंशीधर
,, क्षेत्रपाल भृजपाल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स गोपालदास मनोहरदास
,, चुन्नीलाल शिवबख्श
,, लालचन्द जौहरीमल
,, रामनारायण रामरिख
,, शंकरलाल दामोदरदास

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र
मेसर्स धनसुखदास प्रेमसुखदास
,, मुरलीधर महादेव
,, रामानन्द द्वारकादास
,, सीताराम राधेलाल

रूई के व्यापारी—

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र
,, रामानन्द द्वारकाप्रसाद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स बनवारीलाल गिरधारीलाल
,, भवानीप्रसाद दाऊदयाल

चीनी के व्यापारी—

मेसर्स धनसुखदास प्रेमसुखदास
,, रामानन्द द्वारकादास

इटावा

इटावा यू० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह शहर पुराना बसा हुआ है। इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। यहाँ एक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में एक पुराना किला जमना किनारे स्थित है। कहा जाता है कि यह तत्कालीन कन्नौज के महाराजा जयचन्द का बनवाया हुआ है। इसके अतिरिक्त एक ऊँचे स्थान पर मुनि वशिष्ठ जी का मन्दिर बना हुआ है। यह भी अपनी प्राचीनता का प्रमाण दे रहा है। यह स्थान देखने योग्य है।

इटावा ई० आई० आर० की मेन लाइन पर अपने ही नाम के स्टेशन से आधा मील पर बसा हुआ है। पहले यहाँ का व्यापार बड़ी उन्नतावस्था में था। यहाँ से करीब ५० हजार रूई की गाँठें बाहर एक्सपोर्ट होती थीं। अब १२,१३ हजार गाँठें बाहर जाती हैं। घी की बड़ मंडी है। करीब ५० हजार मन घी यहाँ से बाहर जाता है। गल्ला भी यहाँ से अच्छे

परिमाण में बाहर जाता है। तिलहन दाना भी यहाँ पैदा होता है। यहाँ का तौल घी और रुई को छोड़ कर शेष का ८० रुपये भर के सेर से एवं घी और रुई का तौल १०० रुपये भर के सेर से होता है।

यहाँ निम्नलिखित जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं—

नन्दकिशोर जगन्नाथ जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी			
जुग्गीलाल कमलापत	"	"	"
बेस्टपेटेन्ट कम्पनी लि०	"	"	"
न्यू मुफस्सल एण्ड को०	"	"	"
परसोत्तम जीनिंग कम्पनी			
शार्दुल जीनिंग फैक्टरी			
मन्नूलाल कन्हैयालाल जीनिंग फैक्टरी			
होरीलाल जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी			

मेसर्स जुग्गीलाल कमलापत

इसका हेड-आफिस कानपुर है अतः विशेष परिचय यहाँ दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कमलापतजी हैं। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। यहाँ इसकी एक जीन प्रेस फैक्टरी है।

मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक जिला हमीरपुर निवासी पुनर क्षत्री समाज के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व जवाहरलालजी एवं आपके पिता ला० रिसालसिंहजी ने स्थापित कर गल्ला, घी, नमक इत्यादि का काम आरंभ किया था। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् फर्म के काम का संचालन आपके पुत्र ला० जगन्नाथजी ने किया। आप व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपके समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपने जमींदारी भी खरीद की। आपने अपने व्यापार को और बढ़ाया। आपने यहाँ एक सोना-चाँदी की फर्म स्थापित की। साथ ही यहाँ में कॉटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी खोलीं। आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक ला० बाबूरामजी तथा आपके पुत्र मदनमोहन लालजी हैं। आप दोनों ही सज्जन मिलनसार एवं व्यापारी महानुभाव हैं।

इस फर्म का परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ हूमस गंज T. A. "Jagadish"	यहाँ बैंकिंग, सोना, चाँदी, रुई, गल्ला, तिलहन-घाना आदि का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स देवीदास माधोराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माधोरामजी हैं। आप फफूंद निवासी अग्रवाल वैश्य-समाज के सज्जन हैं। आप १९२० से उपरोक्त नाम से व्यापार कर रहे हैं। इसके पहले इस फर्म पर बलदेवदास देवीदास के नाम से कारबार होता था, जब आपके भाई लोग शामिल थे।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स देवीदास माधोराम	यहाँ जमींदारी, बैंकिंग और धोती जोड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स दिलसुखराय राधाकृष्ण

करीब १२५ वर्ष पूर्व खत्री समाज के ला० दिलसुखरायजी टंडन ने अपने तथा अपने पौत्र के नाम से फर्म स्थापित की। आपके पुत्र का नाम पासीरामजी था। ला० पासीरामजी के २ पुत्र थे ला० कृष्णबलदेवजी एवं ला० राधाकृष्णजी। आप लोगों के पश्चात् ला० कृष्ण-बलदेवजी के पुत्र ला० शिवनारायणजी ने फर्म का संचालन किया। आपने फर्म के काम को बहुत बढ़ाया। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपने संवत् १९४८ में अपने तीनों पुत्रों के नाम से अलग २ फर्में खोलीं। आपके पुत्रों का नाम ला० ब्रजकिशोरजी, ला० रूपकिशोरजी एवं ला० नन्दकिशोरजी है। संवत् १९५८ में ला० ब्रजकिशोरजी के पुत्र ला० नवलकिशोरजी ने नन्दकिशोर जगन्नाथ के नाम से जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी की स्थापना की। आप यहाँ म्युनिसिपैलिटी एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। संवत् १९६४ में सेठ शिवनारायणजी का भी स्वर्गवास हो गया। आपके पहले ही आपके दो पुत्रों का स्वर्ग-वास हो चुका था। आप लोगों के पश्चात् फर्म का संचालन ला० ब्रजकिशोरजी ने किया। आपने पचास हजार रुपये अपने तथा अपने भतीजे रामनाथजी के नाम से एकम्‌ दे हास्पिटल को दान दिये। आपका भी स्वर्गवास सं० १९६८ में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचा-लन कुंजकिशोरजी ने किया। आपने अपने तथा रामनाथजी के नाम से २५०००) हजार हिन्दू यूनिवर्सिटी काशी को दिये। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई बंसीधरजी फर्म का

संचालन करने लगे। आपने अपने लड़के विशंभरनाथ द्वारकादास के नाम से एक फर्म और खोली। ला० बंशीधरजी के छोटे भाई देवकीनन्दनजी का स्वर्गवास हो गया। सं० १९७४ से ही आप सब लोग अलग २ स्वतंत्र व्यापार करने लग गये थे।

इस समय फर्म के मालिक बंशीधरजी, रूपकिशोरजी के पुत्र रामनाथजी एवं नन्दकिशोरजी के पुत्र जुगलकिशोरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इटावा—मेसर्स दिलसुखराय राधाकृष्ण	हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स बृजकिशोर कुंजकिशोर	यहाँ भी बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स रूपकिशोर	यहाँ भी बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
इटावा— मेसर्स नन्दकिशोर	यहाँ बैंकिंग, जमींदारी, गल्ला, घी इत्यादि का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
इटावा—मेसर्स विशम्भरनाथ द्वारकादास	सोना-चाँदी, जवाहरात का व्यापार एवं घी की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स बाँकेबिहारीलाल रूपनारायण

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पूर्व पुरुष पहले पहल फोड़ा, जहानाबाद आये। वहाँ से वे व्यापार के लिये ग्वालियर गये और वहीं रहने लगे। वहाँ वे खजांची हो गये। पश्चात् वहाँ से वे लोग भिंड आ गये। भिंड से यह परिवार यहाँ इटावा चला आया। इस खानदान में ला० गोपीनाथजी हुए। उन्होंने गोपीनाथ कुंजबिहारी लाल के अलीगढ़ जिले के सिकंदराराऊ नामक स्थान पर शोरे की कोठी खोली। इसी शोरे के व्यापार के कारण आप लोग शोरावाल कहलाये। आपने तथा आपके भाई शीतलप्रसादजी ने नील की कोठियाँ खोलीं इसमें आपने बहुत सम्पत्ति पैदा की। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। शीतलप्रसादजी के स्वर्गवास के समय ४८ हजार रुपया दान किया गया। सन् १९०० में आप दोनों भाई अलग २ हो गये थे। शीतलप्रसादजी के पुत्र ला० बाँकेबिहारीलालजी

हुए। आपने फर्म की अच्छी तरक्की की तथा इसी समय से उपरोक्त नाम से व्यापार होने लगा।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक प्रयागनारायणजी, मदनारायणजी और श्यामबिहारीलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स बाँकेबिहारीलाल रूपनारायण — यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं गल्ला, रुई और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मन्नूलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक जबलपुरवाले राजा गोकुलदासजी के पौत्र सेठ जमुनादासजी हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ पर हुण्डी, चिट्ठी और आढ़त का काम तथा रुई का व्यापार करती है। इसकी एक जीनिंग फैक्टरी भी यहाँ पर है। इसका विशेष विवरण हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ४१ में दिया गया है।

मेसर्स श्यामबिहारीलाल रमेशचंद्र

इस फर्म के मालिक कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का मूल निवास-स्थान जिला इटावा का है। मगर आपके पूर्व पुरुष व्यापार के निमित्त भटनेर (पंजाब) नामक स्थान में चले गये थे। वहाँ से आपका खानदान यहाँ आया। भटनेर से यहाँ आने के कारण आप लोग भटेले कहलाये। इस खानदान में बालचंदजी नामक व्यक्ति हुए। आपने इस खानदान की बहुत उन्नति की तथा बैंकिंग और जमींदारी का भी बहुत बड़ा काम फैलाया। आपके तीन पुत्र हुए, पं० कृष्णचन्द्रजी, हरवंशलालजी एवं जानकीप्रसादजी। जानकीप्रसादजी का स्वर्गवास अल्पायु ही में हो गया। आप तीनों ही भाइयों संवत् १९१४ में अलग २ हो गये। वर्तमान फर्म हरवंशलालजी के वंशजों की है। पं० हरवंशलालजी धार्मिक विचारों के पुरुष थे। आप अकसर कार्तिकस्नान करते थे। आपका यहीं संवत् १९५८ में स्वर्गवास हो गया। आपके भाइयों का भी स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक हरवंशलालजी के पुत्र रायबहादुर श्यामबिहारीलालजी भटेले हैं। आपके रमेशचन्द्रजी नामक एक पुत्र हैं। पं० श्यामबिहारीलालजी आनरेरी मजिस्ट्रेट, रायबहादुर और प्रसिद्ध रईस एवं जमींदार हैं। आपने सन १९०२ में वर्तमान नाम से फर्म स्थापित की। इस पर घी, रुई, गल्ला आदि का व्यापार शुरू किया गया। आपका सार्वजनिक कामों की ओर भी अच्छा ध्यान है। आपने ३० हजार रुपया काशी हिन्दू विश्व-

विद्यालय को एवं करीब करीब ७५ हजार रुपया स्थानीय सनातन धर्म हाईस्कूल को प्रदान किया है तथा आपकी ओर से कई कुएँ एवं मन्दिर बने हुए हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—रायबहादुर श्यामबिहारी लालजी भटेले	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। आप ३३०००) सालाना मालगुजारी गवर्नमेंट को देते हैं।
इटावा—मेसर्स श्यामबिहारीलाल रमेशचन्द्र गंज	यहाँ गल्ला, रूई, घी और आढ़त का व्यापार होता है।

रायबहादुर सेठ श्यामसुन्दरलाल

इस फर्म की स्थापना स्व० रा० ब० श्यामसुन्दरलालजी सी० आई० ई० के० आई० एच० ने ४० वर्ष पूर्व की। उपरोक्त रा० ब० श्यामसुन्दरलालजी का जीवन प्रायः पोलिटिकल कार्य्य में व्यतीत हुआ। आप क्रमशः किशनगढ़, ग्वालियर, अलवर रियासतों में प्रधान मंत्री के पदों पर रहे और बड़ा सम्मान पाया। अपने काल में इन रियासतों में Industry बढ़ाने की चेष्टा की और अधिकांश Industrial कार्य्य जो इन रियासतों में चल रहे हैं आपके ही स्थापित किये हुए हैं। आप माहेश्वरी समाज में Social & Educational कार्य करनेवाले पहले व्यक्ति थे। आप अखिल भारतवर्षीय वैश्य महासभा के प्रेसीडेण्ट चुने जा चुके थे। आप रॉयल Royal Famine & Royal Ofiscal कमीशन के सदस्य चुने गये थे। आप इलाहाबाद यूनिवरसिटी के १५ साल तक फेलो रहे।

आपके ४ पुत्र हुवे; श्रीबालमुकुन्ददासजी, बालकृष्णदासजी, बालगोविन्ददासजी और बालगोपालदासजी। जिनमें से श्रीबालमुकुन्ददास, बालकृष्णदास का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म के मालिक इस समय बालगोविन्ददासजी और बालगोपालदासजी हैं।

इस फर्म पर रूई, गल्ला, कमीशन और बैंकिंग का कार्य्य होता है। इनकी सारदूल कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी इटावा में है तथा दाल और फ्लोअर मिल है। तथा इसके अतिरिक्त इटावा जिले में आपकी जमींदारी भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—रा० ब० श्यामसुन्दरलाल सारदूल फैक्टरी T. A. Sardool.	इसका मेनेजमेण्ट पंडित श्रीकृष्णदास जैपुरनिवासी बहुत काल से कर रहे हैं।

व्यापार की दृष्टि से इस स्थान पर किसी प्रकार का व्यापार नहीं है। यहाँ गल्ला वगैरह पैदा होता है और वह बाहर भी एक्सपोर्ट होता है मगर बहुत कम। यहाँ रोजाना व्यवहार में आनेवाली वस्तुओं की प्रधान बिक्री है और ये ही बाहर से यहाँ आती हैं। आसपास के प्रांत में यहाँ की तमाखू, संदुक, खड़ाऊँ आदि प्रसिद्ध हैं।

यहाँ जैनियों का मन्दिर दर्शनीय वस्तु है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय निम्न प्रकार है—

मेसर्स गोपीराम रामचंद्र

इसका हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ गल्ला तथा रूई की खरीद शिकोहाबाद वाली फर्म के लिये की जाती है। इसका विस्तृत हाल प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ ४४ पर दिया गया है।

मेसर्स लालमन सुन्दरलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सुन्दरलालजी के पुत्र ला० धरमदासजी, ला० नारायणदासजी एवं ला० मूलचंदजी हैं। आप लोग खंडेलवाल दिगम्बर जैन सज्जन हैं। इस फर्म को स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व शाह लालमनजी ने की थी। आपने ही अपनी व्यापार-चातुरी से इस फर्म की तरक्की की। आपके २ पुत्र हुए, शाह सुन्दरलालजी एवं ला० मिजाजीलालजी। मिजाजीलालजी अलग होकर देहरादून चले गये। वहीं उनके वंशज व्यापार करते हैं। लालमनजी के पश्चात् इस फर्म का संचालन सुन्दरलालजी ने ही सम्हाला। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में फर्म के प्रधान संचालक सेठ धरमदासजी हैं। आप सरल एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मैनपुरी—मेसर्स लालमन सुन्दरलाल	यहाँ कपड़े का थोक एवं फुटकर व्यापार होता है।
मैनपुरी—मेसर्स लालमन मूलचंद	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का व्यापार होता है।

पत्नी ने आपकी फर्म का काम सँभाला और उनके स्वर्गवास के बाद सन् १८९९ ई० से बाबू द्वारकाप्रसादजी ने उपरोक्त नाम से फर्म का संचालन करने लगे। आपने भी अच्छी उन्नति की। आपके स्वर्गवासी होने पर सन् १९१९ में आपके दत्तक पुत्र बाबू केशरीचंदजी फर्म के मालिक हुए और तब से आप ही फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप होनहार नवयुवक हैं।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फर्रुखाबाद—जवाहरलाल द्वारका-प्रसाद [illegible] } यहाँ बैंकर्स तथा हौण्डवाई का काम होता है।

मेसर्स तुलसीराम धर्मनारायण

इस फर्म के मालिक बिसाऊ (राजपूताना) निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य-समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ तिनोदीरामजी थे। आपने बिसाऊ से आकर स्थापित किया था। आपके बाद फर्म ने किराने और लोहे के व्यापार में अच्छी उन्नति की। वर्तमान में केवल जमींदारी और महाजनी लेनदेन का ही काम यहाँ होता है। फर्म के वर्तमान मालिक सेठ धर्मनारायणजी तथा आपके पुत्र बा० श्यामनारायणजी तथा देवकीनंदजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

फर्रुखाबाद—मेसर्स तुलसीराम धर्मनारायण } यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स श्यामलाल सिद्धगोपाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान यहीं का है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस परिवार के यहाँ लगभग २५० वर्ष से ऊँचे दर्जे का व्यापार और महाजनी का काम होता आ रहा है। अतः इस प्रान्त के प्रतिष्ठित एवं श्रीसम्पन्न परिवारों में इस परिवार की गणना की जाती है। इसका बहुत बड़ा व्यापार प्रथम भारत में था पर सिपाही-विद्रोह के बाद सन् १८५७ ई० में वह काम बन्द कर दिया गया और तब से यह परिवार यहीं पर केवल बैंकिंग और जमींदारी का काम करता है। इस परिवार के पूर्व पुरुष लाला सिद्धगोपाल-जी ने सन् १८५७ ई० में सरकार की अच्छी आर्थिक सहायता की थी। आपके पुत्र लाला [illegible] जी भी आपके समान ही प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली महानुभाव थे। आप यहाँ के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। आप यहाँ के सार्वजनिक कार्यों में अच्छा भाग लेते थे। आपके पुत्र लाला [illegible] भी अच्छे पुरुष हैं। [illegible]

प्रान बैंकर हैं। आपका बहुत बड़ा मान है। आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप सभी अच्छे कामों में अनुराग रखते हैं। आप ही फर्म के प्रधान कर्ता धर्ता हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—श्यामलाल सिद्धगोपाल फर्रुखाबाद } यहाँ बैंकर्स एवं लैण्ड लार्डस का काम होता है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स द्वारकादास लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक बिसाऊ निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना इसके आदि संस्थापक लाला विनोदीरामजी के स्वर्गवास के बाद उनके पुत्र लाला नन्दरामजी ने की थी। इस फर्म पर लोहे और किराने का व्यापार आरम्भ किया गया था पर धीरे धीरे फर्म ने कपड़ा, आलू और तम्बाकू का काम भी किया जो आज ऊँचे दर्जे पर कर रही है। इसके वर्तमान मालिक स्व० लाला लक्ष्मीनारायणजी के पुत्र लाला राम-नारायणजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फर्रुखाबाद—मेसर्स नंदराम हुकुमचंद	यहाँ हे० आ० है तथा बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।
फर्रुखाबाद—मेसर्स द्वारकादास लक्ष्मी-नारायण	यहाँ आलू और तम्बाकू की आढ़त का काम होता है।
फर्रुखाबाद—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामनारायण	यहाँ कपड़े की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल वासुदेव

इस फर्म के मालिक चूरू के आदि निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के रोमका सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ पन्नालालजी लगभग १०० वर्ष पूर्व यहाँ आये और व्यापार आरम्भ किया। तब से यह फर्म बराबर उन्नति करती गयी।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवदयालमलजी के पुत्र बाबू सूर्यप्रकाशजी तथा सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू गजानन्दजी हैं।

लाला कुंजीलालजी साव फर्रुखाबाद

लाला दुमारालजी साव फर्रुखाबाद

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फर्रुखाबाद—मेसर्स कुन्नीलाल साध एण्ड सन्स, सधवाड़ा T. A. Bhan	यहाँ पर्दा, पलंगपोश, टेबिलक्लाथ, लिहाफ आदि सभी प्रकार के छपे हुए मशहूर कपड़ों का व्यापार होता है तथा आर्डर से छपाया जाता है और योरप तथा अमेरिका को भेजा जाता है ।

मेसर्स बाजीलाल जशवन्तराय एण्ड कम्पनी

इस फर्म के मालिक फर्रुखाबाद के ही आदि निवासी हैं। आप लोग साध समाज के सज्जन हैं । इसके संस्थापक सन् १८७४ ई० से रंगाई और छपाई का काम कर रहे हैं । इन लोगों की इस ओर अच्छी लगन है । फर्म के वर्तमान मालिक लोगों ने कितनी ही नुमाइशों में अपना माल भेजकर पदक प्राप्त किये हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फर्रुखाबाद—मेसर्स बाजीलाल जशवन्तराय सधवाड़ा T. A. Curtain	यहाँ फर्रुखाबाद के छपे हुए कपड़े का व्यापार होता है ।

मेसर्स भूपनारायण महेशनारायण

इस फर्म की स्थापना सं० १९७८ में हुई थी । इस फर्म पर कपड़े की छपाई का काम होता है और पश्चिमीय देशों को भेजा जाता है । इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला महेशनारायणजी तथा ला० हरनारायणजी हैं। आप लोग फर्रुखाबाद के आदिनिवासी साध समाज के सज्जन हैं । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फर्रुखाबाद—मेसर्स भूपनारायण महेशनारायण सधवाड़ा	यहाँ पर कपड़े छापे जाते हैं जो विदेश को भेजे जाते हैं ।

मेसर्स शिवनारायण जगतनारायण

इस फर्म की स्थापना सन् १९२३ में हुई; पर इस फर्म ने अल्प काल में ही अच्छी उन्नति की और विदेश की कितनी ही नुमाइशों में ख्याति प्राप्त की । इस फर्म के वर्तमान मालिक शिवनारायणजी, रामेश्वरनारायणजी, प्यारेमोहनजी तथा कैलाशनाथजी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरुखाबाद—मेसर्स शिवनारायण जगतनारायण सधवाड़ा T. A. Chhabhaia	यहाँ छपे कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स डंगामल बालकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है जहाँ विशेष परिचय दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का काम करती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला गोपालदासजी तथा लाला बुद्धलालजी हैं।

क्लाथ मर्चेंट्स

मेसर्स वंसीधर गोपालदास

इस फर्म के मालिकों का यहाँ खास निवासस्थान है। आप लोग रस्तोगी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का विस्तृत और सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रंथ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १२८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स श्यामसुन्दर रामचरण

इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व कन्नौज निवासी लाला मुकुन्दराम ने की थी। उस समय इस फर्म पर मुकुन्दराम श्यामसुन्दर नाम पड़ता था। आपके स्वर्गवासी होने पर आपके ६ पुत्र कुछ दिन तक व्यापार करते रहे पर पीछे अलग २ हो गये। अतः आपके पुत्र लाला श्यामसुन्दरलाल तथा लाला रामचरणलाल ने सम्मिलित हो उपरोक्त नाम से व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है। इस फर्म की विशेष उन्नति इन्हीं दोनों भाइयों के द्वारा हुई। प्रथम कपड़े का काम होता था फिर कलकत्ता और बम्बई से सीधा माल मँगाने लगे और अन्त में कानपुर की मिलों की एजेंसी ली।

इसके वर्तमान मालिक लाला श्यामसुन्दरलालजी तथा आपके भाई लाला रामचरणजी के पुत्र लाला विश्वम्भरनाथ और विशेश्वरप्रसादजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फरुखाबाद—मेसर्स श्यामसुन्दर रामचरण, कटरा अहमदगंज	यहाँ कानपुर की स्वदेशी कॉटन मिल, विक्टोरिया मिल तथा इलगिन मिल की एजेन्सी है।

फर्रुखाबाद—मेसर्स मुकुन्दराम श्याम-सुन्दर, चौक विरपोलिया	यहाँ हेड-आफिस है और बर्तन का काम होता है।

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स कृष्णविहारी बाँकेविहारी

इस फर्म की स्थापना लगभग ९ वर्ष पूर्व उन्नाव निवासी रायसाहब लाला अटलविहारी-लालजी मेहरोत्रा ने यहाँ की थी। तब से यह फर्म यहाँ पर सोना-चाँदी तथा तैयार जेवर का व्यापार कर रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब लाला अटलविहारीलालजी तथा आपके पुत्र बाबू कृष्णविहारी, बाँकेविहारी, श्यामविहारी, छैलविहारी, लालविहारी तथा रूपविहारीजी हैं। आप लोग खत्री समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवास-स्थान उन्नाव है जहाँ राय-साहब ला० अटलविहारीलालजी ने लगभग २० वर्ष पूर्व अपने नाम से फर्म स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया था। रायसाहब लाला अटलविहारी लालजी उन्नाव म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन रह चुके हैं। आप वर्तमान में वहाँ के डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के सदस्य हैं। आप शिक्षा-सम्बन्धी कामों में अच्छी सहायता प्रदान करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फर्रुखाबाद—मेसर्स कृष्णविहारी बाँकेविहारी—यहाँ बैंकिंग तथा सोने चाँदी का व्यापार होता है।
उन्नाव—राय सा० लाला अटलविहारी लाल—यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स सालिगराम लालमन

इस फर्म के मालिक खत्री समाज के टंडन सज्जन हैं। इसकी स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व लाला सालिगराम ने की थी और सोने चाँदी का व्यापार आरम्भ किया था, जो फर्म आज भी कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला भोलानाथजी टंडन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फर्रुखाबाद—मेसर्स सालिगराम लालमन कटरा अहमद गंज	यहाँ हेड आफिस है; सोने, चाँदी तथा बैंकिंग का काम होता है।
फर्रुखाबाद—मेसर्स रूपनलाल लक्ष्मीनारायन कटरा अहमदगंज	कपड़े का थोक व्यापार होता है।

कन्नौज

कन्नौज का इतिहास बहुत पुराना है। यह स्थान ११वीं शताब्दी में तत्कालीन महाराजा जयचंदजी की राजधानी रहा है। जयचंद प्रसिद्ध राठोर वंशीय थे। इनके पूर्वज दक्षिण प्रांत से यहाँ आकर बसे थे। कई इतिहासकारों का मत है कि ये राठोड़ पहले सिथियन्स नाम से पुकारे जाते थे। इस स्थान पर सन् १०७७ में महमूद गजनवी ने चढ़ाई कर इसे लूटा था। इसके पश्चात् भी सन् ११९४ ई० तक इस स्थान पर हिन्दुओं का ही शासन रहा। पर देश के दुर्भाग्य से एवं आपसी फूट के कारण इस पर महमद गोरी ने चढ़ाई कर इसे हस्तगत किया। तब से इस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। यहीं हुमायूं और शेरशाह की लड़ाई हुई थी। इसके पश्चात् यह स्थान महाप्रतापी ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर आया। प्राचीन समय के कई भग्नावशेष आज भी यहाँ विद्यमान हैं।

आजकल यह स्थान गंगा नदी के किनारे बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० की कानपुर-अचनेरा ब्रांच पर अपने ही नाम के स्टेशन से ५ मील की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ का व्यापार प्रधानतया इत्र, तेल वगैरह का है। यहाँ कई बड़े २ इत्र के व्यापारी निवास करते हैं। यहाँ का इत्र भारत भर में प्रसिद्ध है। यहाँ इत्र की कई फैक्टरियाँ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ निम्नलिखित कल-कारखाने भी हैं:—

(१) कन्नौज डाईंग एण्ड विविंग मिल्स—इसमें कपड़े की बुनाई एवं रंगाई का काम होता है। इसमें ५० लूम्स हैं और ७२ आदमी काम करते हैं।

(२) मथुराप्रसाद सूरजप्रसाद सैंडल वुड आईल डिस्टीलेशन एण्ड यार्न वर्क्स—इसमें चन्दन का तेल खिंचा जाता है एवं सूत की रंगाई का काम होता है। इसमें ५९ आदमी काम करते हैं।

(३) कोओजस जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—यह सरायमीरा में है। यहाँ काटन जीन और प्रेस किया जाता है। इसमें ५९ चरखे हैं तथा १९४ आदमी काम करते हैं।

लाला शिवगुलामदासजी (वेनीराम मूलचन्द) कन्नौज

शाह सुन्दरलालजी (लालमन सुन्दरलाल) मैनपुरी

मेसर्स बेनीराम मूलचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान यहीं का है। आप लोग तेली समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना ला० बेनीरामजी के द्वारा हुई। इसके पहले आपके पिताजी खेतलजी खेतीबाड़ी का काम करते थे। आप लोगों की बहुत साधारण स्थिति थी। यहाँ तक कि रुपया उधार लाकर अपना काम चलाते थे। खेतलजी के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् आपने केवल १५ वर्ष की उम्र में खेती को छोड़ कर कोल्हू का काम शुरू किया। यह १०, ११ वर्षों तक करते रहे इसमें आपको सफलता भी हुई। इसके पश्चात् आपने गल्ले और तिलहन का काम शुरू किया। इसके १ वर्ष पश्चात् ही याने संवत् १९५६ में आपने इत्र का काम शुरू किया। इसमें आपने आशातीत सफलता प्राप्त की। वर्तमान में यह फर्म यहाँ अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। ला० बेनीरामजी का स्वर्गवास सं० १९७५ में हो गया। आप व्यापारचतुर महानुभाव थे। आप उन लोगों में से थे जिन्होंने स्वयं परिस्थिति को बना कर बड़े आदमी होते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० ला० बेनीरामजी के पुत्र ला० शिवगुलामदासजी हैं। आपने भी अपने व्यवसाय को बहुत उन्नतावस्था पर पहुँचाया। आप सादे, मिलनसार एवं धार्मिक व्यक्ति हैं। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यों में उदारतापूर्वक दान देते रहते हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत वासुदेवजी और श्रीयुत चन्द्रदेवजी हैं। आप लोग भी अपने पिताजी की देखरेख में फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कन्नौज—मेसर्स बेनीराम मूलचन्द T. A. "Thekedar" — यहाँ इत्र, तेल, गुलकंद, संदल, अर्क आदि सभी प्रकार का सुगंधित सामान बड़ी मात्रा में मिलता है तथा तैय्यार होता है।

मेसर्स मनऊलाल रामनारायण

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी खत्री समाज के सज्जन हैं। यह फर्म सं० १९१६ में ला० मनऊलालजी के द्वारा स्थापित हुई। उस समय इस फर्म पर मेसर्स मनऊलाल पुत्तूलाल के नाम से कारबार होता था। मगर सं० १९५२ में भाई २ के अलहदा हो जाने से आप उपरोक्त नाम से व्यापार करने लगे। आप व्यापारचतुर पुरुष थे। आपने अपने यहाँ चाँदी, सोना एवं जमींदारी का काम भी बढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९७३ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० मनऊलालजी के पुत्र ला० रामनारायणजी हैं।

आप भी व्यापारचतुर सज्जन हैं। आपने भी फर्म की बहुत उन्नति की। आपने कन्नौज में कपड़े के काम को बढ़ाया। साथ ही हरायन (अलीगढ़) नामक स्थान में फूलों की खेती करवाई तथा वहाँ इत्र निकालने का कारखाना खोला। यहाँ से फूल एवं इत्र सप्लाय किया जाता है। आपने यहाँ एक खत्री समाज कायम किया है जिसमें कन्याओं की शिक्षा एवं आर्ट का प्रबंध है। आप मिलनसार सज्जन हैं। आपके चार पुत्र हैं जो इस समय विद्याध्ययन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कन्नौज—मेसर्स मनऊलाल रामनारायण	यहाँ फर्म का हे० आ० है तथा इत्र का काम होता है। इसके अंडर में कपड़ा, चाँदी, सोना, बैंकिंग और जमींदारी का भी काम होता है।
हरायन (अलीगढ़) मेसर्स मनऊलाल रामनारायण रे० स्टे० रतीकानगला B. B. C. I.	यहाँ जमींदारी है तथा फूलों का बगीचा है। यहाँ इत्र का कारखाना भी है।
कोलापली० पो० ब्रह्मपुर (गंजाम) मेसर्स मनऊलाल रामनारायण	यहाँ केवड़े का कारखाना है।

मेसर्स देवीप्रसाद सुन्दरलाल

इस फर्म के मालिक फरुखाबाद निवासी खत्री समाज के टंडन सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० देवीप्रसादजी सन् १८५७ में यहाँ आये तथा पुलिस में काम करते रहे। सन् १८७० में आपके पुत्र ला० सुन्दरलालजी एवं श्यामलालजी ने फर्म स्थापित कर इसका कारबार खोला। कुछ समय पश्चात् इस फर्म की एक शाखा बनारस में खोली गई। जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से अपना व्यवसाय कर रही है। इस फर्म को अपने माल की अच्छाई के लिये कई नुमाइशों से प्रसंशापत्र प्राप्त हुए हैं। सन् १८८४ में यू० पी० के गवर्नर सर विलियम मेरिस के द्वारा इस फर्म को अपाइन्टमेंट लेटर मिला है। ला० सुन्दरलालजी एवं ला० श्यामलालजी के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् इस फर्म का काम ला० सुन्दरलालजी के पुत्र ला० चुन्नीलालजी एवं श्यामलालजी के पुत्र ला० मुन्नीलालजी ने सम्हाला। आप दोनों सज्जनों के हाथों से इस फर्म की और भी तरक्की हुई। ला० मुन्नीलालजी का स्वर्गवास सं० १९१९ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० चुन्नीलालजी एवं आपके भतीजे तथा मुन्नीलालजी

के पुत्र बैजनाथजी हैं। ला० सुखीलालजी स्थानीय आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आपने यहाँ 'श्याम-सुन्दर' भवन के नाम से एक सुन्दर बिल्डिङ्ग बनाई है। जो यहाँ सबसे अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कन्नौज—मेसर्स देवीप्रसाद सुन्दरलाल T. A. Sugandh.	यहाँ हेड आफिस है तथा सब प्रकार के इत्र का व्यापार होता है।
बनारस—मेसर्स सुन्दरलाल श्यामलाल, कचौड़ीसराय	यहाँ सब प्रकार की सुराय् एवं तमाखू का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त कन्नौज, कासगंज, मथुरा आदि स्टेशनों पर आपकी दुकाने हैं जहाँ इत्र, तेल आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स मन्नुलाल अयोध्या प्रसाद

इस फर्म के मालिक कन्नौज निवासी वायस्य वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सन् १८१८ में ला० मन्नुलालजी के द्वारा हुई। आपही यहाँ कलकत्ते से संदल लाये। और उसका तेल बनाना प्रारंभ किया। आपके ४ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः ला० अयोध्याप्रसादजी, गोपालप्रसादजी, मथुराप्रसादजी एवं प्रयागदासजी था। आप लोगों के समय में इस फर्म की एक ब्रांच कलकत्ता खोली गई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० अयोध्याप्रसादजी के पुत्र ला० द्वारकाप्रसादजी, मथुराप्रसादजी के पुत्र बद्रीप्रसादजी, छन्नूलालजी और बनवारीलालजी, गोपालप्रसादजी के पुत्र ललिताप्रसादजी एवं प्रयागदासजी के पुत्र मनीलालजी एवं बेणीमाधवजी हैं। आप सब लोग शिक्षित, मिलनसार एवं व्यापारी सज्जन हैं। ला० ललिताप्रसादजी स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कन्नौज—मेसर्स मन्नुलाल अयोध्याप्रसाद T. A. "Flowers"	यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा इत्र बनाने एवं बेचने का काम होता है।
कलकत्ता—मेसर्स मन्नुलाल अयोध्याप्रसाद ८० लोअर चितपुर रोड	यहाँ सब प्रकार के तेल, इत्र, सेंट वगैरह की बिक्री का काम होता है

इस फर्म के इत्र के कारखाने जिला अलीगढ़, जिला गंजाम एवं भरतपुर स्टेट में हैं।

अलग २ हो गये। तब से लाला बालमुकुन्दजी ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म खोली। आप बड़े योग्य व्यक्ति हैं। आपके पुत्र का नाम बाबू दौलतरामजी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

हाथरस सिटी—मेसर्स बालमुकुन्द दौलतराम—यहाँ, रूई, गल्ला, सरसों तथा बर्किंग व्यापार होता है।

आपकी हाथरस और अलीगढ़ में जीन प्रेस फैक्टरियाँ हैं। गोवर्द्धन के श्री लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में आपने भी बहुत सहयोग प्रदान किया है। हाथरस में आपका एक बगीचा है।

मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान चूरू का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बागला सज्जन हैं। प्रारम्भ में सेठ हरनन्दरायजी ने हाथरस में फर्म की स्थापना कर नील का व्यापार प्रारम्भ किया। आपके पश्चात् सेठ फूलचन्दजी बागला ने इस फर्म का संचालन कर इसकी उन्नति की। सेठ फूलचन्दजी के चार पुत्र हुए जिनमें उपरोक्त फर्म आपके सब से छोटे पुत्र मोहनलालजी की है। सेठ फूलचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९५६ में हो गया। तथा आपके एक वर्ष पूर्व ही आपके पुत्र मोहनलालजी का भी देहान्त हो गया था। फलतः फर्म का संचालन मोहनलालजी के दत्तक पुत्र सेठ चिरंजीलालजी बागला के हाथ में आया। आपने इस फर्म की अच्छी तरक्की की। आप सन् १९१६ और १९१९ में स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के चेअरमैन निर्वाचित किये गये। इसके सिवाय आप सेकण्ड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। सन् १९२० में सरकार ने आपको रायबहादुर का सम्मानसूचक खिताब प्रदान किया।

रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी का सार्वजनिक कार्यों के प्रति भी बहुत प्रेम है। आपने करीब ५३ हजार की लागत से हाथरस में चिरंजीलाल बागला डिस्पेन्सरी खुलवाई। इसी प्रकार आपने फूलचन्द्र बागला ऐंग्लो संस्कृत हाईस्कूल की स्थापना करवाई। इसके अतिरिक्त आपने बद्रीनारायण के मार्ग में रुद्रप्रयाग नामक स्थान पर एक विशाल धर्मशाला भी बनवाई है। और भी कई सार्वजनिक कार्यों में आप बड़ी उदारता के साथ दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हाथरस—मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल
T. A. "narayan"

जमींदारी, बैंकिंग, गल्ला, रूई, और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यहाँ पर आपकी एक जीन प्रेस फैक्टरी भी है। तथा यू० पी० इंजीनियरिंग वर्क्स के नाम से लोहे पीतल की ढलाई का एक कारखाना भी है।

स्व० सेठ फूलचन्दजी बागला (मोहनलाल चिरंजीलाल) हाथरस

स्व० सेठ मोहनलालजी बागला (मोहनलाल चिरंजीलाल) हाथरस

रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी बागला (मोहनलाल चिरंजीलाल) हाथरस

कलकत्ता—मे० हरनन्दराय फूलचन्द ७१ पटुवल्ला स्ट्रीट of A. Humectum	बैंकिंग, कमीशन एजन्सी और कॉटन का बिज़ीनेस होता है। यह फर्म बागले कम्पनी लि० की बेनियन है। इस फर्म में सेठ प्यारेलालजी बागला का साझा है।
बम्बई—मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल कालबादेवी रोड T. A. Penkin	बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है। इस फर्म में सेठ प्यारेलाल जी बागला का साझा है।
कानपुर—मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल नयागञ्ज T. A. Piecegoods	बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है। इस फर्म में सेठ प्यारेलालजी बागला का साझा है।
हरदुआगंज (अलीगढ़) मोहनलाल चिरंजीलाल	जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई और गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स मटरूमल शिवसुखराम

यह फर्म सेठ फूलचन्दजी बागला के द्वितीय पुत्र सेठ मटरूमलजी की है। सेठ फूलचन्दजी के स्वर्गवास के पश्चात् सेठ मटरूमलजी के पुत्र सेठ शिवसुखरामजी ने पुरानी फर्म से अलग होकर उपरोक्त नाम से नवीन फर्म की स्थापना की। आपने अपने व्यापार कौशल से इस फर्म की खूब उन्नति की। आप यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी के कमिश्नर और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। मरते समय आपने ६१००० रुपयों की रकम दान में निकाली। जिससे हरिद्वार में एक मन्दिर तथा हाथरस में एक दुर्गाजी का मन्दिर बनाया गया।

आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र सेठ प्यारेलालजी बागला ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आप भी यहाँ पर बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आप बम्बई के मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रेसिडेन्ट तथा ईस्ट इण्डियन कॉटन एसोसिएशन के डायरेक्टर रह चुके हैं। आपने कर्णवास (जि० बुलन्दशहर) में एक धर्मशाला बनवाई है। तथा फूलचन्द ऐंग्लो संस्कृत हाईस्कूल में भी अच्छी सहायता प्रदान की है। आपके पुत्र का नाम बाबू सुबोधचन्द्रजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हाथरस—मेसर्स मटरूमल शिवसुखराम T. A. Nawin	बैंकिंग, कॉटन, प्रेस और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

हाथरस—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र — गल्ले का व्यापार होता है तथा दाल की फैक्टरी है।

धनसीपुरा, कानपुर—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र — कपड़े तथा गल्ले का व्यापार होता है।

कासगंज—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचंद्र — रुई, गल्ला और कमीशन का व्यापार होता है। यहाँ आपकी दाल की फैक्टरी भी है।

इसके अतिरिक्त मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल के नाम से कानपूर और बम्बई में तथा हरनन्दराय फूलचन्द के नाम से कलकत्ते में जो फर्में हैं जिनका परिचय मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल के साथ दिया गया है। उनमें आपका साझा है।

मेसर्स लल्लामल हरदेवदास

इस फर्म की स्थापना संवत् १९२१ में लाला लल्लामलजी ने अलीगढ़ में करके उस पर रुई, गल्ला और कमीशन का व्यापार प्रारम्भ किया। संवत् १९४६ में आपने इसकी शाख हाथरस में भी खोली। संवत् १९५० में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पाँच पुत्र हुए। जिनके नाम लाला मक्खनलालजी, सरोतीलालजी, लक्ष्मीनारायणजी, रामदयालजी और बाँकेलालजी हैं। इनमें से लाला मक्खनलालजी और सरोतीलालजी का स्वर्गवास हो चुका है।

इस फर्म की लाला मक्खनलालजी के हाथों से खूब उन्नति हुई। आपने कई स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ खोलीं। तथा सम्वत् १९५९ में हाथरस में मेसर्स रामचन्द्र हरदेवदास के नाम से एक कॉटन स्पिनिंग मिल खोला। सन् १९२० से इसका नाम लल्लामल हरदेवदास कॉटन स्पिनिंग मिल्स बदला गया, जो अब भी इसी नाम से चल रहा है। आपके पश्चात् लाला लक्ष्मीनारायणजी, लाला रामदयालजी तथा लाला बाँकेलालजी ने भी इस फर्म की खूब तरक्की की। लाला बाँकेलालजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म की ओर से कर्णवास में एक धर्मशाला तथा हाथरस और अलीगढ़ में बगीचे बनाए हुए हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हाथरस—मेसर्स लल्लामल हरदेवदास—यहाँ पर बैंकिंग, रुई और गल्ले का व्यापार तथा कमीशन एजंसी का काम होता है। इस फर्म की यहाँ, रामदयाल बांकेलाल और बाँकेलाल रामप्रसाद के नाम से दो जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ और लल्लामल हरदेवदास कॉटन स्पिनिंग मिल के नाम से एक सूत कातने की मिल है।

लाला हरचरनदासजी (हरचरनदास पुरुषोत्तम-दास) हाथरस

सेठ किशोरीलालजी पाण्डक (किशोरीलाल बाबूलाल) कासगंज

लाला पुरुषोत्तमदास जी (हरचरनदास

सेठ बाबूलालजी पाण्डक (किशोरीलाल

हाथरस—मेसर्स रामदयाल रूपकिशोर—यहाँ शक्कर, गुड़ और कमीशन का काम होता है।

हाथरस—मेसर्स गुरुदयाल प्रसाद चुन्नीलाल—यहाँ पर घी, जनरल मर्चेण्टाइज और कमीशन का काम होता है।

अलीगढ़—लल्लामल हरदेवदास देहला दरवाजा—यहाँ रूई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

अलीगढ़—मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल—यहाँ घी का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म की स्थापना करीब ६५ वर्ष पूर्व लाला रामचन्द्रजी ने की। आप बड़े दूरदर्शी और व्यापारकुशल पुरुष थे। आपने उस काल में बढ़ते हुए मिल व्यवसाय की ओर ध्यान दिया और सन् १८९९ में पश्चिमी संयुक्त प्रांत में पहले पहल मिल की स्थापना की। आपने हाथरस में रामचन्द्र हरदेवदास बड़ा मिल तथा रामचन्द्र हरदेवदास न्यूमिल नामक दो मिलों की स्थापना की। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला हरचरनदासजी तथा लाला पुरुषोत्तमदासजी ने फार्म का काम सम्हाला। आप दोनों भाइयों ने अपने व्यापार की तथा मिलों की बहुत उन्नति की। तथा आगरा और मथुरा जिलों में कई जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियों की स्थापना की। आप लोग बड़े व्यापारचतुर और अनुभवी हैं। लाला हरचरनदासजी सेकण्ड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन हैं।

लाला हरचरनदासजी के इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम पन्नालालजी तथा हीरालालजी हैं। लाला पुरुषोत्तमलालजी के भी दो पुत्र हैं। जिनके नाम चुन्नीलालजी तथा गुलाबचन्दजी हैं।

आपकी ओर से गोवर्द्धन में लक्ष्मीनारायणजी का एक विशाल मन्दिर बनाया हुआ है, तथा उसकी व्यवस्था के लिए वहाँ की जीनिंग फैक्टरी दे दी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हाथरस—मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास (T. A. Ram) यहाँ पर रूई, सूत, गल्ला और बैंकिंग का काम होता है।

हाथरस—दी न्यू रामचन्द्र कॉटन मिल—इस मिल में सूत की कताई का काम होता है अब इसमें कपड़ा बुनने के लूम्स भी लगाये जा रहे हैं।

अलीगढ़—मेसर्स चुन्नीलाल पन्नालाल—यहाँ कमीशन का काम होता है।

व्यापारियों के पते—

रुई के व्यापारी—

मेसर्स छोटेलाल विश्वेश्वरदास
,, नन्दराम रामदयाल
,, बालमुकुन्द दौलतराम
,, भोलानाथ गोपीनाथ
,, मटरूमल लक्ष्मीनारायण
,, मोहनलाल चिरंजीलाल
,, रामजीमल बाबूलाल
,, ललामल हरदेवदास
,, हरचरनदास पुरुषोतमदास
,, होतीलाल रामप्रसाद

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास नेताराम
,, गङ्गोलमल गजानन
,, घासीराम मनोहरलाल
,, चन्दीलाल रामप्रसाद
,, ठाकुरदास नन्हूमल
,, दयाभाई जौहरभाई
,, घनखण्डीमल चतुर्भुज
,, बच्चीमल मूलचन्द
,, रतनजी जेठाभाई
,, शिवदयालमल हुकुमचन्द
,, श्यामलाल गङ्गाधर
,, सीताराम शालिगराम
,, हीरालाल नारायणदास
,, होवालाल रामप्रसाद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स आशाराम रामप्रसाद
,, कान्हूराम मोतीलाल
मेसर्स कन्हैयालाल गङ्गाभूषण
,, हालचन्द छीतरमल
,, नारायणदास गंगाशरण
,, रामस्वरूप श्यामसुन्दर
,, रामप्रसाद पन्नालाल
,, शिवदयाल पन्नालाल
,, सदासुख शिवदयाल
,, हरसुखराय कन्हैयालाल

घी के व्यापारी—

मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल
,, जीतमल रामगोपाल
,, मुन्नीलाल मूलचन्द
,, बसन्तलाल कचोरमल
,, घनखण्डीमल चतुर्भुज

किराने के व्यापारी—

मेसर्स गिरधारीलाल केशवदेव
,, छितरमल बाबूलाल
,, मुन्नीलाल मूलचन्द
,, नन्दराम रामदयाल
,, मोहनलाल गनेशीलाल
,, रणछोड़दास राधेलाल
,, रामचन्द्र पन्नालाल

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स प्यारेलाल गंगाप्रसाद
,, बन्शीधर किशनदास
,, मङ्गलसेन चम्पाराम

चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स जुगुलकिशोर गिरधारीलाल
,, मथुराम बाँकेलाल

अलीगढ़

<u>ऐतिहासिक परिचय</u>

अलीगढ़ ई० आई० आर० की मेन लाइन पर हवड़ा और दिल्ली के बीच बसा हुआ है। प्राचीन काल में गङ्गा और यमुना के दोआब में यह एक खासी किले के रूप में था। यह किला पहले एक हिन्दू राजा के अधिकार में था। औरङ्गजेब की मृत्यु के पश्चात् मराठे, जाट, अफ़गान, रुहेले इत्यादि कई जातियों ने इस पर आक्रमण किये। सन् १७५९ में अफ़गानों ने यहाँ से जाटों को खदेड़ दिया। इनके कई वर्ष बाद नाजफ़ खाँ ने रामगढ़ दुर्ग की मरम्मत करवा कर इसको अलीगढ़ नाम दिया। सन् १७८४ ई० में महाराजा सेंधिया ने अलीगढ़ को जीतकर इसमें से कई करोड़ रुपये के सोना-चांदी तथा रत्न प्राप्त किये। इसके पश्चात् इस किले के लिए सेन्धिया और मुसलमानों में लड़ाई चलने लगी। और अन्त में लार्ड लेक ने इसे सेन्धिया से जीत लिया। तब से अब तक यह स्थान ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ही है।

<u>दर्शनीय स्थान</u>

अलीगढ़ के दर्शनीय स्थानों में सर सैय्यद अहमद खाँ का स्थापित किया हुआ ऐंग्लो ओरियिण्टल कॉलेज प्रधान चीज़ है। इसे सन् १८७५ में ऊँचे घराने के मुसलमानों को अंग्रेजी सिखलाने के लिए सैय्यद साहब ने अंग्रेजी ढङ्ग पर स्थापित किया था। आज तो इस कॉलेज ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है, और सारे भारतवर्ष में केवल मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा शिक्षा का केन्द्र है। इसके सिवा यहाँ पर कैल की ऊँची भर एक मस्जिद बनी हुई है, जहाँ पर यह मसजिद है वहाँ हिन्दू और बौद्ध युग के बहुत से ध्वंसावशेष दिखाई देते हैं। शहर के बीच में स्वच्छ जल वाला एक सुन्दर सरोवर है। सरोवर के ऊपर शाखाएँ फैलाए हुए कई वृक्ष अपने बीच कई मन्दिरों को लिए हुए स्थापित हैं।

<u>औद्योगिक परिचय</u>

इस शहर के औद्योगिक परिचय में यहाँ के बने हुए तालों का परिचय ही सबसे महत्व पूर्ण है। यहाँ के ताले बड़े, मजबूत, टिकाऊ, सुन्दर और उपयोगिता के मान से सस्ते भी होते हैं। भारत के प्रत्येक हिस्से में यहाँ के ताले जाते हैं, और अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गोपालराय गोविन्दराय

इस फर्म की स्थापना संवत् १९५१ में लाला गोपालरायजी एवं लाला गोविन्दरायजी के द्वारा हुई। आपने इस पर शुरू २ में रुई और गल्ले का व्यापार आरंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। धीरे २ आपने कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी खोल दी। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० गोपालरायजी के पुत्र ला० जगन्नाथजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं बा० चिरञ्जीलालजी, बा० पन्नालालजी एवं बा० दौलतरामजी। बा० चिरंजीलाल जी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल फर्म का प्रधान संचालन आप ही करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स गोपालराय गोविंदराय देहलीगेट T. A. Gopal	यहाँ हेड आफिस है। तथा इस फर्म पर रुई, गल्ला और आढ़त का काम होता है। यहाँ इसकी जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है।
अलीगढ़—मेसर्स चिरंजीलाल कैलाशचन्द दिल्ली गेट	यहाँ रुई, गल्ला और आढ़त का काम होता है।
जहाँगिराबाद—मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल	यहाँ कॉटन जीन-प्रेस फैक्टरी है। तथा कॉटन का व्यापार होता है। इसमें बा० निरंजनलालजी का सामा है।

इसके अलावा चन्दौसी में भी आपकी एक फर्म है जिसपर दाल और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल पन्नालाल

इस फर्म का हेड आफिस मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास के नाम से हाथरस में है। वहाँ इसका एक कपड़े का मिल भी है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित वहीं दिया गया है यहाँ यह फर्म कमीशन का काम करती है। इसका यहाँ का पता हलवागंज है।

मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल

यह फर्म ५ वर्ष पूर्व बा० निरञ्जनलालजी अग्रवाला द्वारा स्थापित हुई। वर्तमान में आप ही इस फर्म के मालिक हैं। आप यहाँ के वकील हाईकोर्ट भी हैं। आपके पिताजी भी यहाँ के प्रसिद्ध वकील थे। इस फर्म की आपके द्वारा अच्छी उन्नति हुई। सुशिक्षित होने के कारण आपने शीघ्र ही व्यवसाय को बहुत बढ़ा लिया। आपने यहाँ जीन-प्रेस फैक्टरी भी स्थापित की। सार्वजनिक कार्यों में आपका अच्छा हाथ रहता है। आपके हीराचन्द्रजी एवं राजेन्द्र कुमारजी नामक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल देहली गेट	यहाँ बैंकिंग और कॉटन का व्यापार होता है। आपकी यहाँ एक जिनिंग फैक्टरी भी है।
अहीरिराबाद—मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल	यहाँ रुई का व्यापार होता है। यहाँ कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी है इसमें सेठ जगन्नाथजी का साझा है।

इसके अतिरिक्त चन्दौसी और उझियानी में भी आपकी फर्में हैं। जहाँ दाल का काम होता है। आढ़त का काम भी इन फर्मों पर होता है।

बालमुकुन्द कॉटन-जीन एण्ड प्रेस

इस फैक्टरी के मालिक का हेड आफिस हाथरस में है। यहाँ इस प्रेस में कपास खरीदी का काम भी होता है। इसका पता दिल्ली दरवाजा है। विशेष परिचय हाथरस में दिया गया है।

मेसर्स मानसिंह जवाहरलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ फूलचंदजी के पुत्र बा० लालचन्दजी, बाबू गुलाबचन्दजी एवं बा० कृष्णकुमारजी हैं। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मानसिंहजी द्वारा हुई। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ जवाहरलालजी तथा इनके पश्चात् चिरञ्जीलालजी ने किया। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात इस फर्म का संचालन भार सेठ फूलचंदजी पर आया। आप व्यापारचतुर पुरुष थे। आपने फर्म की बहुत तरक्की की। आप मथुरा एवं अलीगढ़ के ट्रेझरर

तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। यहाँ के प्रतिष्ठित रईसों में आपका नाम था। आपकी ओर से यहाँ एक जैन मन्दिर बना हुआ है। इसकी लागत २ लाख बतायी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स मानसिंह जवाहरलाल सराय सिकी } यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। वर्तमान में यह फर्म इम्पिरियल बैंक की अलीगढ़ ब्रांच की एवं गवर्नमेंट ट्रेझरर अलीगढ़ है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक बीकानेर के निवासी हैं। यह फर्म यहाँ कॉटन और ग्रेन का व्यापार करती है। इसकी यहाँ एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी भी है। यहाँ का पता मदारगेट है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दिया गया है।

मेसर्स कन्नामल हरदेवदास

इस फर्म का हेड आफिस हाथरस है। वहाँ इसका एक कपड़े का मील चलता है। इसका विस्तृत परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म देहली दरवाजे पर रुई, गल्ला और आढ़त का व्यापार करती है। एक शाखा इसकी और है इसमें मेसर्स गुरदयालप्रसाद चुन्नीलाल के नाम से घी और आढ़त का व्यापार होता है। इसका पता हाथगंज है।

मेसर्स लक्ष्मणदास गंगाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायबहादुर गंगासागरजी जटिया हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। अतएव इसका विस्तृत परिचय वहीं प्रकाशित किया गया है। यहाँ यह फर्म कॉटन का काम करती है। इसकी यहाँ एक कॉटन जीनप्रेस फैक्टरी है। इसका पता दिल्ली दरवाजा है।

मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल

इस फर्म का हेड आफिस आगरा यू० पी० में है। इसके वर्तमान प्रधान संचालक लाला श्यामलालजी हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित वहीं प्रकाशित किया गया है।

यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। इसका यहाँ एक कॉटन जीन-प्रेस है। इसका पता देहली गेट है।

बैंकर्स—

दी इम्पिरियल बैंक अलीगढ़ ब्रांच
मेसर्स लायकचंद गुलाबचंद सरायखिन्नी
" भिभीलाल चन्दालाल "

सोना-चाँदी के व्यापारी—

सेठ कन्यालाल दूबे बड़ा बाजार
मेसर्स गनेशीलाल छप्पनलाल "
सेठ जड़ावलालजी "
" दीपचंदजी "
मेसर्स भोपालदास कन्हैयालाल "
" भीलाल ज्वालाप्रसाद "

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुलगनी मदमद चौक
" दबीलराम सोनपाल बड़ा बाजार
" टीकाराम देवकीनन्दन महावीरगंज
" धरमदास मटरूमल कनवरीगंज
" नाथूराम रयालीराम बड़ाबाजार
" बालमुकुन्द धुमीलाल महावीरगंज
" बासुदेव बुद्धसेन बड़ाबाजार
" मोतीलाल गंगाप्रसाद महावीरगंज
" मोतीलाल निरंजनलाल महावीरगंज
" मुकुन्दलाल नारायणदास बड़ाबाजार
" रामस्वरूप प्यारेलाल महावीरगंज
" शालिगराम गदाधर चौक
" होतीलाल बाबूलाल महावीरगंज

सदर के व्यापारी—

मेसर्स चेनपाल बालकृष्ण मदारगेट
" जमनादास आसानन्द मदारगेट
" लीलाधर द्वारकाप्रसाद सब्जीमंडी
" शांतिलाल नागरमल मदारगेट

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स जानकीप्रसाद गंगाप्रसाद महावीरगंज
" प्यारेलाल हरवल्लभदास "
" मगनीराम बुधसेन "
" रघुनन्दनप्रसाद मूलचंद "
" रामचरनलाल कसेरा "

इमारती लकड़ी के व्यापारी—

मेसर्स गोविन्दराम रामप्रसाद पड़ाव दूबे
" जानकीप्रसाद गंगाप्रसाद "

घड़ी के व्यापारी—

मेसर्स रायबहादुर उमराव सिंह एण्ड संस रेलवेरोड

बुकसेलर्स—

पी० सी० द्वादश श्रेणी एण्ड को०

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स किशनलाल मेमनाथ कल्याणगंज
" तिचूमल अयोध्याप्रसाद मुसुफगंज
" गोपालदास बल्लभदास कल्याणगंज
" दिलेराम जगन्नाथ "
" बिहारीलाल शंकरलाल "

के नाम से फर्म का तथा मिल का परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में दिया गया है।)

इसी बीच इस परिवार के लोग अलग २ हो गये और सेठ अमोलकचन्दजी ने अपना स्वतंत्र व्यापार प्रारम्भ कर दिया। आपको सरकार ने रायबहादुर का खिताब दिया था। आपके कोई पुत्र न होने से आपने सेठ हरसुखरायजी के पुत्र सेठ मेवारामजी को दत्तक लिया। आपको भी सरकार ने रायबहादुरी का खिताब प्रदान किया। आपके भी कोई पुत्र न होने से आपने रायबहादुर चम्पालालजी के पुत्र लाला शान्तिलालजी को दत्तक लिया।

इस समय इस फर्म के मालिक लाला शान्तिलालजी हैं। सन् १९२३ में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन चुने गये। आप सुशिक्षित और उदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

खुर्जा—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	यहाँ हेड ऑफिस है। इस फर्म पर बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है। यहाँ आपकी जीन प्रेस फैक्टरी है।
देहली—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम महेश्वरीदास का कटरा T. A. Raniwala	बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
आगरा—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम बेलन गंज T. A. "Raniwala"	बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है।
अलवर—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है, तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।
बम्बई—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम लक्ष्मीबिल्डिंग कालबादेवी T. A. "Amolak"	यहाँ बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
[illegible]—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।

चन्दौसी—मेसर्स अमोलकचन्द मेवाराम T. A. Raniwala	यहाँ जीन प्रेस, फैक्टरी है। तथा रुई, गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स गोरखराम साधूराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म अच्छा व्यापार करती है और भी कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं जिनका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० २४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रुई का व्यापार करती है। यहाँ इसकी जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ बोलारामजी, गौरीशंकरजी तथा कन्हैयालालजी गोयनका हैं।

मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

खुर्जा में इस फर्म को स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। यहाँ पर इस फर्म की स्थापना सेठ जोगीरामजी ने की। आप अग्रवाल जैन जाति के सज्जन थे। जोगीरामजी का देहान्त हुए करीब ५०-५५ वर्ष हो गये। जिस समय सेठ जोगीरामजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र सेठ जानकीप्रसादजी की अवस्था केवल १४-१५ वर्ष की थी। मगर रा० ब० सेठ जानकीप्रसादजी इतने तीव्र बुद्धि, मेधावी और व्यापारकुशल सज्जन थे कि इस थोड़ीसी अवस्था में आपने व्यापार को सम्हाल लिया। एक समय आपके जीवन में ऐसा भी आया कि आपके पास कुछ भी द्रव्य नहीं रहा। मगर उस कठिन समय में भी आप धैर्य्य से बिलकुल विचलित नहीं हुए। प्रत्युत आपने और भी उत्साह के साथ व्यापार चलाया और पुनः सम्पत्ति उपार्जित कर ली। गवर्नमेंट ने आपको यू० पी० कौन्सिल का मेम्बर बनाया। तथा रायबहादुरी का सम्मानित खिताब प्रदान किया। दानवीर भी आप बहुत बड़े थे। आपने अपनी तरफ से जानकीप्रसाद एंगलो संस्कृत स्कूल के नाम से एक हाई स्कूल बनाया। जिसमें करीब दो लाख रुपया व्यय हुआ है और ४५० छात्र उसमें पढ़ते हैं जो अब भी बड़ी शान से चल रहा है। और भी भिन्न २ सार्वजनिक कार्य्यों में आपने हजारों रुपया दान किया। इस प्रकार अत्यन्त उन्नत जीवन व्यतीत करते हुए आपने देह त्याग किया।

संवत् १९६१ में रा० ब० सेठ जानकीप्रसादजी अपने जीवन काल ही में रायसाहब सेठ श्यामलालजी को रिंग नामक गांव से दत्तक लाये थे। इस समय आप ही इसके मालिक हैं। आपका भी यहाँ पब्लिक और गवर्नमेन्ट में बहुत बड़ा सम्मान है। आप यहाँ की म्यूनि-

म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा गवर्नमेण्ट के डिस्ट्रिक्ट ट्रेझरर हैं। आपको पहली जनवरी सन् १९२७ में रायसाहिब का सम्माननीय खिताब प्राप्त हुआ। यहाँ के सार्वजनिक कामों में भी आप बड़ी उदारता से दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हेड ऑफिस खुर्जा—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद (T. A. Krishna)—इस फर्म पर गल्ला और रुई का बहुत बड़ा बिज़िनेस होता है।

चन्दौसी—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद—यहाँ पर भी गल्ला और रुई का व्यापार होता है।

हापुड़—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद (T. A. Shiam)—यहाँ पर भी गल्ला और रुई का व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद कालबादेवी (T. S. "Carat")—यहाँ पर रुई गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है

कलकत्ता—कमीशन एजन्सी का काम होता है।

उपरोक्त स्थानों में से बम्बई को छोड़कर सब स्थानों पर आपकी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ चल रही हैं।

मेसर्स युगलकिशोर मुकुटलाल

इस फर्म की स्थापना लाला मुकुटलालजी ने सं० १९१८ में खुर्जा में की। आप अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। आपही ने अपने व्यापार कौशल से इस फर्म को क्रमशः बढ़ाया। आपने हापुड़ तथा सिकन्द्राबाद में अपनी फर्में स्थापित कीं। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मुकुटलालजी तथा आपके पुत्र बा० मुरारीलालजी, बा० भगवती प्रसादजी, बा० रघुवरदयालजी तथा बा० विश्वेश्वरदयालजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

खुर्जा—मेसर्स युगलकिशोर मुकुटलाल
हापुड़—मेसर्स युगलकिशोर मुकुटलाल
सिकन्द्राबाद (बुलन्दशहर)—युगलकिशोर मुकुटलाल
} इन तीनों फर्मों पर गल्ला, रुई और कमीशन एजेंसी का काम होता है।

मेसर्स [illegible]

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ [illegible] तथा आपके भाई सेठ [illegible] हैं। आप [illegible] जाति के सज्जन हैं। आप [illegible] सेठ [illegible] के पुत्र

हैं। आपकी फर्म खुर्जे में बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित है। आपकी ओर से एक धर्मशाला ऋषीकेश में तथा एक धर्मशाला खुर्जा जंकशन पर बनवाई गई है। अपने पिताजी के नाम से आपने खुर्जा में एक अस्पताल भी चला रक्खा है।

आपकी फर्म पर खुर्जे में, बैंकिंग, गल्ला और कमीशन एजेंसी का काम होता है।

मेसर्स रामदयाल म्हालीराम

इस फर्म के मालिक राय बहादुर गङ्गासागरजी जटिया हैं। आप भी सेठ लक्ष्मणदासजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। मगर १९७० से आप अपना कारबार अलग कर रहे हैं। आप यहाँ के बड़े प्रतिष्ठित रईस और व्यापारी हैं। गवर्नमेंट ने आपको रायबहादुरी के सम्मानसूचक पद से सम्मानित किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

खुर्जा—मेसर्स रामदयाल म्हालीराम—यहाँ बैंकिंग तथा जूट मिल्स के शेअरों का काम होता है।

अलीगढ़—मेसर्स लक्ष्मनदास गङ्गासागर—यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजंसी का काम होता है।

मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ सुखानन्दजी ने स्थापित किया था। मगर इसकी विशेष उन्नति आपके पुत्र सेठ श्यामलालजी के हाथों से हुई। आपने कोसी, मथुरा, हिवाई और खुर्जा में अपनी जीन प्रेस फैक्टरियाँ खोलीं और बम्बई में भी अपनी फर्म की स्थापित की।

सेठ श्यामलालजी चार भाई हैं। जिनके नाम क्रमशः रामलालजी, बंशीधरजी और अयोध्याप्रसादजी हैं। इनमें से लाला बंशीधरजी और अयोध्याप्रसादजी का स्वर्गवास हो चुका है। लाला रामलालजी के पुत्र लाला चिमनलालजी झाँसी में असिस्टेन्ट कलक्टर हैं, आप रायबहादुर भी हैं। लाला अयोध्याप्रसादजी के पुत्र लाला बाबूलालजी बी० एस० सी० एल० एल० बी० यू० पी० कौंसिल के मेंबर रह चुके हैं। आप इस समय फर्म का संचालन करते हैं। आपके भाई लाला मंगलसेनजी बी० ए० भी फर्म के संचालन में योग देते हैं और लाला बंशीधरजी के पुत्र ला० चुन्नीलालजी वाइस चेयरमैन खुर्जा म्युनिसिपैलिटी बम्बई फर्म का संचालन करते हैं।

हापुड़

यह स्टेशन ई० आई० आर० की दिल्ली मुरादाबाद ब्राञ्च लाइन का एक जंक्शन है। यहाँ से एक लाइन मेरठ से आकर सुर्जा को जाती है। यह स्थान गल्ले की एक बहुत बड़ी मण्डी है। खास कर गेहूँ के लिये तो भारतवर्ष की बहुत बड़ी मण्डियों में इसका स्थान है। गल्ले के बहुत बड़े २ व्यापारियों और कमीशन एजेण्टों की यहाँ पर दुकानें अथवा आफिस हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स गनेशीलाल मंगतराय

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ नादिरमलजी, देहराजजी, सम्मनलालजी और धरमदास-जी हैं। आपका मूल निवास स्थान बेरी का है। यह फर्म २८ वर्ष पूर्व सेठ मंगतरायजी के द्वारा स्थापित हुई। इसकी विशेष उन्नति सम्मनलालजी द्वारा हुई। इस फर्म का व्यापारिक परिचय नीचे लिखे मुताबिक है—

हापुड़—मेसर्स गनेशीलाल मंगतराय पक्का बाग T. Ph. No 40	यहाँ व्यापार और आढ़त का काम होता है।
बेरी (रोहतक)—मेसर्स पूरनमल गनेशीलाल	यहाँ बैंकिंग और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस सुरजा है। इसके वर्तमान मालिक रायसाहब श्यामलालजी हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित सुरजा में प्रकाशित किया गया है। यह फर्म यहाँ गल्ला एवं रुई का व्यापार और आढ़त का काम करती है। इसकी यहाँ एक जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।
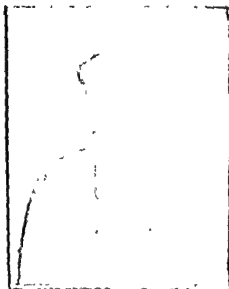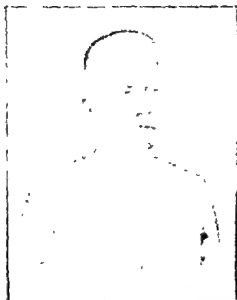
मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ
" दुर्गादास नारायणदास
" दामोदरस्वरूप बालस्वरूप
" बाबूराम चेतनप्रकाश
" भवानीसहाय सोहनलाल
" मोतीलाल कन्हैयालाल
" मीनामल बालकृष्णदास

मेसर्स रामगोपाल हीरालाल
" रामगोपाल रामेश्वरदास
" शंकरदास गंगाराम
" शोभाराम गोपालराय
" शंकरदास जमनादास
" हजारीलाल बाबूराम

मेरठ

यह शहर नार्थ वेस्टर्न रेलवे की मेन लाइन पर दिल्ली और सहारनपुर के बीच में बसा हुआ है। यहाँ से ई० आई० आर० की एक ब्रांच खुर्जा तक जाती है।

इस स्थान पर सब से प्रधान व्यापार गुड़ का है। भारतवर्ष की प्रधान २ गुड़ की मण्डियों में इसका स्थान बहुत ऊँचा है। यहाँ पर प्रतिवर्ष औसतन तीन लाख थैली तक (२॥ मन) गुड़ आ जाता है। गुड़ का खास मौसिम कार्तिक से फाल्गुन तक रहता है। यह गुड़ यहाँ से पंजाब, सिंध, गुजरात और मालवे को जाता है। इस जिले में गाजियाबाद, हापुड़, बड़ौत इत्यादि मण्डियाँ और हैं। यह गुड़ भेली, बरफी और लडुआ ऐसे तीन प्रकार का होता है। यहाँ पर गुड़ का खास व्यापार केसरगंज में होता है।

गुड़ के पश्चात् दूसरे नम्बर में यहाँ पर गल्ले का व्यापार होता है जिसमें गेहूँ, जौ और मटर प्रधान है।

यहाँ की इण्डस्ट्रीज में साबुन की इण्डस्ट्री प्रधान है। साबुन यहाँ कई किस्म का बनता है। अच्छा और सस्ता होता है तथा बहुत दूर २ तक जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

लाला रामचन्द्र स्वरूप रईस

आपके परिवार का इतिहास बहुत पुराना है। करीब ३०० वर्ष से तो वह शृंखलाबद्ध रूप में मिलता है। सन् १६५८ ई० में बादशाह औरंगजेब ने इस परिवार के पूर्व पुरुष चौधरी घोसराजजी को कानूनगो का खिताब देकर मेरठ में भेजा था। इसके पूर्व आपके पूर्वजों को बादशाह शाहजहाँ ने जिब्दतुल अमामिल की पदवी प्रदान की थी। चौधरी घोसराजजी के पश्चात् क्रमशः लाला डूँगरमलजी, किशनसिंहजी, गंगादासजी,

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स सेठ अम्बाप्रसाद महल्ला कानूनगो	बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास

सन् १८८० ई० में लाला कन्हैयालालजी और लाला भगवानदासजी ने इस फर्म को स्थापित कर लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। आप लोग जंगलों का कन्ट्राक्ट लेते थे। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। फलतः आपने फर्म पर लोहे का व्यापार भी प्रारम्भ किया जो अब तक फर्म पर होता आ रहा है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला शंकरलालजी और अम्बाप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेरठ—मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास सिटगंज T. A. Kanayalal	यहाँ लकड़ी और लोहे का व्यापार होता है।
मेरठ—मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास घनाअमरडी	यहाँ कमीशन एजन्सी का काम होता है।

इस फर्म के पास मेरठ जिले के लिए टाटा कम्पनी के लोहे की एजन्सी है तथा इसी कम्पनी के परियन बीम्स की एजन्सी भी मुजफ्फरनगर तथा बुलन्दशहर के लिए इसके पास है। जो खास कन्सेशन पर यहाँ बिकते हैं।

मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस रोहतक में है। यहाँ पर करीब ५० वर्ष पूर्व मेसर्स मुसद्दीलाल जुगलकिशोर के नाम से यह फर्म खोली गई थी। जिसके व्यापार में अच्छी सफलता मिली। गत चार वर्षों से इसके मालिक अलग २ हो गये। अतः लाला जुगलकिशोरजी ने मेसर्स जुगलकिशोर काशीराम के नाम से रोहतक में फर्म खोली। तथा इसी फर्म की एक ब्रांच मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम के नाम से यहाँ पर खोलकर गल्ले और कमीशन का काम आरम्भ किया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला जुगलकिशोरजी तथा आपके पुत्र लाला काशीरामजी, लाला छाजूरामजी, तथा लाला महानन्दजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेरठ—मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम कैसरगञ्ज — यहाँ पर गल्ले और गुड़ की आढ़त का काम होता है। इस फर्म में पं० मंशाराम कमकर वालों का साझा है।

रोहतक मण्डी—मेसर्स जुगलकिशोर काशीराम—यहाँ पर बैंकिंग और आढ़त का काम होता है।

सोनीपत—किरोड़ीमल जुगलकिशोर—गल्ले और गुड़ की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स वासूमल बसन्तराम

इस फर्म की स्थापना सन् १८७७ में लाला वासूमलजी तथा आपके भाई लाला बसन्तरामजी ने करके इस पर लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। इस फर्म की विशेष उन्नति वासूमलजी के पुत्र लाला बाबूमलजी के हाथों से हुई। आपने लकड़ी के अतिरिक्त लोहे का व्यापार भी आरम्भ किया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बाबूलालजी तथा लाला भिक्खूलालजी (बसन्तरामजी के पौत्र) हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेरठ—मेसर्स वासूमल बसन्तराम सिमथगंज T. A. "Timber" — यहाँ लकड़ी तथा लोहे का थोक व्यापार होता है। यह फर्म टाटा कम्पनी का तैयार किया हुआ लोहा भी बेचती है।

मेसर्स मामराज फतेचन्द

इस फर्म के मालिक आदि निवासी मावण्डा (जयपुर) के हैं। इस फर्म को स्थापित हुए करीब १५० वर्ष हुए। इसकी विशेष उन्नति सेठ हुलासरायजी और कन्हैयालालजी ने की। आपके पश्चात् आपके भाई मीरामलजी ने फर्म का कार्य संचालित किया और आपके अनन्तर सेठ राधेलालजी ने।

वर्तमान में इसके संचालक सेठ राधेलालजी के पुत्र बाबू नत्थूमलजी, रामसरनजी और शिवशङ्करजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स मामराज फतेचन्द दालमण्डी	यहाँ रुई की आढ़त का काम होता है।
मेरठ—मेसर्स मामराज फतेचन्द कैसरगंज	यहाँ गुड़ एवं गल्ले की आढ़त का काम होता है।
मेरठ—मेसर्स शिवबहादुर मदनलाल कैसरगंज	यहाँ चांवल, गल्ला और शक्कर का व्यापार होता है।

मेसर्स शोभाराम गोपालराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी है। संवत् १९२५ में सेठ शोभालालजी पाटनी तथा गोपालरामजी और छोटूलालजी बड़जात्या ने मिल कर इस फर्म की स्थापना की और आढ़त का कारबार शुरू किया। इस फर्म की विशेष तरक्की सेठ छोटूलालजी के पुत्र सेठ छाजूरामजी ने तथा सेठ शोभालालजी के पुत्र सेठ बाल्रामजी ने की। सेठ बाल्रामजी का संवत् १९८७ में और सेठ छाजूरामजी का संवत् १९८६ में स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शिवनारायणजी, सेठ मुन्नालालजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी और सेठ डूंगरमलजी हैं। आप खण्डेलवाल जैन जाति के हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स शोभाराम गोपालराम तार T. A. "Jain"	यहाँ बैंकिंग और गुड़ तथा गल्ले की आढ़त का काम होता है।

इसके सिवाय इस फर्म की मेसर्स शोभाराम गोपालराम के नाम से कैसरगंज, मेरठ हापुड़, और श्यामली में, तथा मेसर्स शोभाराम श्रीराम के नाम से चन्दौसी, और आंवला (बरेली) में और छाजूराम श्रीराम के नाम से भिवानी में दुकानें हैं। इन सब दुकानों पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स हरगोपाल गरीबराम

इस फर्म का व्यापार मेसर्स हरगोपाल गरीबराम के नाम से सेठ गरीबरामजी ने प्रारम्भ किया। प्रारम्भ से ही इस फर्म पर गल्ले की आढ़त काम प्रारम्भ किया गया। जो यह फर्म

राय बहादुर लाला जगदीशप्रसादजी मुजफ्फर नगर

राय बहादुर लाला देवीप्रसादजी मुजफ्फर नगर

राय साहब लाला आनन्दस्वरूपजी मुजफ्फर नगर

आ० रा० ब० लाला निहालचन्दजी का परिवार

आप अपने समय के बहुत ही प्रतिष्ठित जमींदार एवं रईस माने जाते थे। आपकी गतिविधि राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में थे। आपने संयुक्त प्रांत के जमींदारों के हिताहित के लिये जहाँ सराहनीय प्रयत्न किया वहाँ यहाँ के किसानों के स्वार्थ संरक्षण के लिये भी यथेष्ट श्रम किया। आपने इन दोनों ही वर्गों के हित के लिये सरकार से भी अच्छा मार्के का मोर्चा लिया। आप कौंसिल में जोरदार सदस्य माने जाते थे। आपका जीवन एक क्रियात्मक जीवन रहा। आपका स्वर्गवास सन् १९०९ में हो गया। आपके तीन पुत्र थे जिनमें बड़े का नाम आनरेबल लाला सुखबीर सिंहजी, उनसे छोटे लाला लक्ष्मणस्वरूपजी तथा सबसे छोटे राय साहिब लाला आनन्दस्वरूपजी ही इस समय वर्तमान हैं। शेष दोनों बड़े पुत्र स्वर्गवासी हो चुके हैं।

स्व० आनरेबल लाला सुखदेवसिंहजी का परिवार

आपका जन्म सन् १८६८ की ५वीं जनवरी को हुआ था। आपने आगरे के सेन्ट स्टेफेन्स स्कूल तथा आगरा कालेज में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की और कलकत्ता विश्वविद्यालय की सन् १८८६ में आपने प्रविष्टा के साथ परीक्षा पास की। आपने अपने व्यवहारिक जीवन के आरम्भ में अपने पिता जी से ही राजनैतिक साहित्य की शिक्षा प्राप्त की और अल्पकाल में ही आपने इस क्षेत्र में अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया। अपने पिताजी के स्वर्गवास के बाद ही आप सन् १९०९ में प्रथम बार यू० पी० कौंसिल के सदस्य चुने गये। इसी प्रकार सन् १९१२ और १९१६ में भी आप उक्त कौंसिल के बिना विरोध सदस्य चुने गये। सन् १९२० ई० में शासन-सुधार के अनुसार नवीन कौंसिल के चुनाव में भी आप खड़े हुए और बिना विरोध चुने गये पर आपने शीघ्र ही कौन्सिल आफ स्टेट के लिये जाने का निश्चय कर प्रान्तीय नवीन कौंसिल से त्यागपत्र दे दिया। आप सन् १९२० से सन् १९२७ तक कौंसिल आफ स्टेट के सदस्य रहे। इसी प्रकार स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के सन् १९०९ से १९१८ तक चेयरमैन रहे। इतना ही नहीं यहाँ की म्युनिसिपैलिटी के प्रथम नान-आफीशियल चेयरमैन आप ही थे। आप यू० पी० जमींदार एसोसियेशन के आनरेरी सेक्रेटरी सन् १९०९ से १९२७ ई० तक रहे। मेरठ कालेज के भी सेक्रेटरी आप सन् १९१२ से २१ तक रहे। ऋषिकुल आयुर्वेदिक औषधालय के जन्मदाता और ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम के प्रेसीडेन्ट भी आप थे। इसी प्रकार आल इण्डिया हिन्दू महासभा के संस्थापक एवं आजीवन जनरल सेक्रेटरी रह कर आपने हिन्दू समाज की सेवा की। आपका जीवन बड़ा ही क्रियाशील रहा। आप आजीवन लोकोपकारी कार्यों में

लगे रहे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ में हुआ। वर्तमान में आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैं। श्री हरिराजस्वरूप एम० ए० एल, एल० बी०, श्री गोपाल राजस्वरूप एम० ए० बी० एस० सी० तथा श्री महास्वरूप बी० ए० हैं।

लाला हरिराजस्वरूप M. A. L. L. B.

आप स्व० लाला सुखवीर सिंहजी के प्रथम पुत्र हैं। आप उच्च शिक्षाप्राप्त महानुभाव हैं। आप यू० पी० जमींदार एसोसियेशन के वर्तमान आनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप यहाँ की कोआपरेटिव सोसायटीज़ के डायरेक्टर तथा स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। आप अपने पिता के समान ही सार्वजनिक कार्यों से अनुराग रखते हैं।

लाला गोपालराजस्वरूप M. A. B. sc.

आप स्व० आनरेबल लाला साहिब के द्वितीय पुत्र हैं। आप भी सुशिक्षा प्राप्त नवयुवक हैं। आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप भी सार्वजनिक कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं।

लाला महास्वरूप B. A.

आप स्व० आ० लाला सुखवीरसिंहजी के छोटे पुत्र हैं। आप होनहार नवयुवक हैं आप अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

स्व० लाला लक्ष्मणस्वरूपजी का परिवार

आप स्व० आ० रायबहादुर लाला निहालचंदजी के द्वितीय पुत्र थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आप आजीवन सरकारी नौकरी करते रहे। आप सुयोग्य शासक एवं मेधावी महानुभाव थे, आप डिपुटी कलेक्टर के पद पर थे और आपने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का काम भी अर्से तक किया था। आपका स्वर्गवास सन् १९२५ मे हुआ। आपके दो पुत्र वर्तमान हैं जिनके नाम क्रमानुसार लाला जनार्दनस्वरूप B. A. तथा लाला रघुराजस्वरूप B. A. L. L. B. हैं।

लाला जनार्दनस्वरूप B. A.

आप सुशिक्षाप्राप्त सज्जन हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के कमिश्नर तथा ऑनरेरी मुन्सिफ हैं। आप स्थानीय सनातन-धर्म हाई स्कूल की कमेटी के सदस्य भी हैं आप लगभग २० हजार रुपये के वार्षिक मालगुजारी तथा १५ हजार सालाना के वार्षिक आमदनी पर इन-कम टैक्स देते हैं। आपके परिवार की ओर से हरिद्वार और ऋषीकेश में धर्मशालायें बनी हुई हैं।
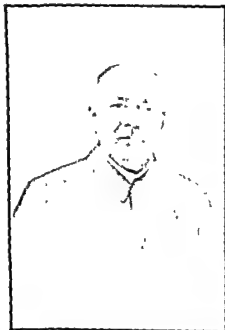
स्व० रायबहादुर सुखबीरसिंहजी साहिब मुजफ्फरनगर

श्रीयुत हरिराज स्वरूपजी मुजफ्फरनगर

बा० गोपाल राजस्वरूपजी मुजफ्फरनगर

बा० महाराज स्वरूपजी मुजफ्फरनगर

लाला रघुराजस्वरूप B. A. L. L. B.

आप लाला जनार्दनस्वरूपजी के छोटे भ्राता हैं। आप सुशिक्षासम्पन्न होनहार नवयुवक हैं। आप वकील हाईकोर्ट के अतिरिक्त ऑनरेरी स्पेशल मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप भी २० हजार के लगभग वार्षिक मालगुजारी देते हैं और १५ हजार वार्षिक आय पर आय कर चुकाते हैं।

रायसाहिब लाला आनन्दस्वरूपजी

आप स्व० आनरेबल रायबहादुर लाला निहालचंदजी के सब से छोटे पुत्र हैं। आपके दोनों बड़े भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं। जिनका परिचय ऊपर दिया गया है। लाला आनन्दस्वरूपजी यू० पी० एग्रिकल्चर बोर्ड के मेम्बर, एग्रिकल्चर कॉलेज कानपूर की प्रबन्धकारिणी के मेम्बर, इण्टर मीडियेट और हाइस्कूल एक्झामिनेशन बोर्ड के मेम्बर, यू० पी० जमींदार एसोसिएशन मुजफ्फरनगर के वाईस प्रेसिडेण्ट, सनातन-धर्म हाई स्कूल मुजफ्फरनगर के सेक्रेटरी, मेरठ कॉलेज मैनेजमेण्ट बोर्ड के तथा इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स हाईस्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। इसी प्रकार और भी अनेक सार्वजनिक कार्य्यों में आप भाग लेते रहते हैं। यहाँ की पब्लिक पर आपका अच्छा प्रभाव है।

लाला इन्द्रासस्वरूपजी

आप लाला आनन्द स्वरूपजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप बड़े उत्साही होनहार नवयुवक हैं। आपका स्वभाव बहुत ही मिलनसार है। आप अपने यहाँ की विस्तृत जमींदारी तथा बैंकिंग आदि का सभी काम बड़ी बुद्धिमानी एवं योग्यता से संचलित करते हैं। आप सुशिक्षा प्राप्त सज्जन हैं।

मेसर्स किशोरीलाल भागीरथमल

इस फर्म के मालिकों का निवासस्थान मुजफ्फरनगर ही का है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ बहुत समय से व्यवसाय कर रही है। इस फर्म पर बैंकिंग तथा गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यह फर्म यहाँ की बहुत प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। इस फर्म की उन्नति का श्रेय ला० किशोरीलालजी को है। आप व्यापार-कुशल और मेधावी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० ला० किशोरीलालजी के पुत्र ला० भीकूमलजी रईस हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर तथा सनातनधर्म एडवर्ड हाई-

स्कूल के वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। इसी प्रकार आप स्थानीय चेम्बर ऑफ़ कामर्स के प्रेसिडेण्ट तथा मेरठ कालेज के बोर्ड आफ़ ट्रस्टीज की एक्जिक्यूटिव्ह कमेटी के सदस्य हैं। आप ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट भी हैं। और भी कितनी ही सार्वजनिक संस्थाओं में आपका अच्छा हाथ रहता है। आप मुजफ्फरनगर के प्रतिष्ठित नागरिक तथा सम्माननीय जमींदार एवं पुराने रईस हैं। आपके यहाँ जमींदारी तथा बैंकिंग का काम भी होता है। आपका ध्यान व्यापार की ओर विशेष रूप से है। आप बुद्धिमान तथा व्यापारकुशल सज्जन हैं।

आपके बड़े पुत्र ला० दीपचंदजी एम० ए० उच्च शिक्षाप्राप्त होनहार नवयुवक हैं। आपका स्वभाव मिलनसार एवं व्यवहार सरल है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—किशोरीलाल भागीरथमल मुजफ्फरनगर,	यहाँ गुड़ तथा गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।
मेसर्स—पीरूमल दीपचंद मुजफ्फरनगर पुरनियाँ	"
मेसर्स—किशोरीलाल पीरूमल देवबन्द (सहारनपुर)	यहाँ गुड़ तथा गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

कमीशन एजण्टस्

मेसर्स घासीराम केदारनाथ

इस फर्म की स्थापना मेसर्स घासीराम सोहनलाल के नाम से लगभग ४० वर्ष पूर्व लाला घासीरामजी तथा आपके भाई लाला सोहनलालजी ने की थी। आप दोनों ही महानुभावों के परिश्रम एवं उद्योग से फर्म के व्यवसाय ने अच्छी उन्नति की। इस फर्म पर आरम्भ से ही कमीशन एजेन्सी का काम किया गया जो यह फर्म वर्तमान में अच्छे ढंग से कर रही है। इन फर्म के संस्थापकों का स्वर्गवास हो गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला केदारनाथजी हैं। आप लगभग ३ वर्ष पूर्व अपनी पुरानी फर्म से सम्बन्ध अलग कर उपरोक्त नाम से काम करने लगे हैं। अतः पुराने नाम से काम नहीं होता।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरनगर—मेसर्स घासीराम केदारनाथ नई मण्डी	यहाँ प्रधान रूप से कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास

आप लोग भिवानी पंजाब के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व यहाँ पर हुई थी और इस पर दूसरे नाम से व्यापार होता था। पर लगभग १० वर्ष से यह फर्म उपरोक्त नाम से व्यापार कर रही है

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बद्रीदासजी हैं। आप ही फर्म के व्यवसाय का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुजफ्फरनगर—मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास नई मण्डी	यहाँ गेहूँ और गुड़, खाँड़, शक्कर, रूई आदि के कमीशन का और घर काम-काज भी होता है।
मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास खतौली (मुजफ्फरनगर)	यहाँ कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स माधोलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) का है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब ४५ वर्ष से स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ माधोरामजी ने ही की। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आप ही के द्वारा इस फर्म की उन्नति हुई। शुरू से ही यह फर्म आढ़त का काम करती आ रही है। इस फर्म पर पहले मेसर्स गोपालराय दाजूराम नाम पड़ता था। सेठ माधोरामजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः चिरंजीलालजी, फूलचंदजी तथा बैजनाथजी हैं। आप तीनों ही सज्जन व्यापार में सहयोग देते हैं। सेठ माधोलालजी श्री जैन सनातन सिद्ध भेन चेम्बर मुजफ्फरनगर के

चेअरमेन हैं। आप व्यापारकुशल और बुद्धिमान सज्जन हैं। ला० चिरंजीलालजी भी व्यापार-कुशल व्यक्ति हैं। आप मिलनसार एवं होनहार नवयुवक हैं।

आप लोगों का सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बहुत ध्यान रहता है। आपने यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया है। तथा पूजा वगैरह करवाई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरनगर—मेसर्स माधोलाल चिरंजीलाल T. A. Jain	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
शामली—माधोलाल बैजनाथ T. A. Phool.	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सहारनपुर—माधोलाल चिरंजीलाल मोरगंज	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आढ़त का का काम होता है।

कमीशन एजण्ट्स

मेसर्स काळूराम शिवदत्तराय
,, घासीराम केदारनाथ
,, चन्दूलाल घनश्यामदास
,, जानकीदास मुसद्दीलाल
,, तुलसीदास हजूरासिंह
,, नरसिंहदास जवाहरलाल
,, बिहारीलाल द्वारकाराम
,, बलदेवसहाय सूरजमल
,, बिहारीलाल रामरिछपाल

मेसर्स मयाराम दुर्गाप्रसाद
,, माधौराम चिरंजीलाल
,, मुन्नालाल शिवचन्दराय
,, मूलचन्द टीकमदास
,, मोलचन्द मोतीराम
,, राजाराम आत्माराम
,, लेखराज राजाराम
,, शिवचरणदास माधोदास
,, हरप्रसाद भगवानदास

सहारनपुर

यह नगर ई० आई० आर० की इस ओर की मुगलसराय सहारनपुर लाइन का अन्तिम स्टेशन है। मुगलसराय से जो गाड़ियाँ छूटती हैं वे यहीं आकर रुक जाती हैं। इस स्टेशन से एन० डब्लू० आर० की मेन लाइन भी गयी है जो दिल्ली से चल कर पेशावर में खतम होती है। इसके अतिरिक्त यहाँ दिल्ली-शाहदरा-सहारनपुर लाइट रेलवे भी आती है। इस प्रकार यह एक बड़ा भारी जंक्शन स्टेशन है। स्टेशन के पास ही एक उत्तम धर्मशाला भी है।

यह नगर व्यापारिक दृष्टि से गुड़ और गल्ले की बड़ी मण्डी है, शक्कर और रुई का भी यहाँ अच्छा व्यापार होता है। यहाँ कितनी ही प्रकार की उत्तम नक्काशी का काम लकड़ी पर किया जाता है, जो तैयार करके योरोप और अमेरिका भेजा जाता है। यहाँ लकड़ी की नक्काशी का यह काम बहुत ही अच्छा और ऊँचे दर्जे का होता है। यहाँ से खाद, बीज, कलम और पौदे भी बाहर को भेजे जाते हैं। भारत के विभिन्न स्थानों को यह माल तो जाता ही है पर विदेश को भी बहुत अच्छे परिमाण में भेजा जाता है। यहाँ पौदे ऐसे अच्छे ढंग से पैक किये जाते हैं कि महीनों की यात्रा कर चुकने पर भी उसी प्रकार हरे भरे और सुरक्षित रहते हैं। कलम, पौद और फलों का उत्तम संग्रह यहाँ के कम्पनीबाग में है। यहाँ के गन्ने और सोंधी प्रसिद्ध हैं।

यहाँ कई एक जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं जिसमें से कुछ में शोर मिल, राइस मिल और आइल मिल भी सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ का नाम इस प्रकार है।

१ पटेल मिल्स लि०
२ बेस्ट पेटेन्ट को० लि०
३ लाला राधाकृष्ण राइस काटन जीनिंग एण्ड फ्लोर मिल्स
४ भीमसैनी मिल्स जिन एण्ड प्रेस
५ सहारनपुर काटन जीनिंग फैक्टरी
६ मुगनचंद जगन्नाथ राइस एण्ड काटन मिल्स

इनके अतिरिक्त यहाँ पर २ और भी बड़े बड़े कारखाने हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं।

१ कनाल फाउण्ड्री एण्ड इंजीनियरिंग वर्कशाप
२ एन० डब्लू० रेलवे वर्कशाप

मेसर्स अमोलकचंद मेवाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० शांतिलालजी हैं। यू० पी० की अत्यन्त प्रधान फर्मों में इस फर्म की गिनती है। कई जगह इसकी शाखाएँ हैं। इसका विस्तृत परिचय हेड आफिस खुरजा में प्रकाशित किया गया है। यहाँ इस फर्म की एक जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है। इसका तार का पता "Raniwala" है।

मेसर्स माधोलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माधोलालजी एवं आपके पुत्र हैं। इसका हेड आफिस मुजफ्फरनगर है। अतएव विस्तृत परिचय वहीं देखना चाहिये। यहाँ यह फर्म मोलाल में गल्ला, गुड़ एवं आढ़त का व्यापार करती है।

व्यापारियों के पते

बैंकस

भगवानदास एण्ड को०
इम्पीरियल बैंक ब्रांच
इलाहाबाद बैंक ब्रांच

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स मामचन्द राधाकृष्ण
" उदयराम जगन्नाथ
" खेमचन्द नानकमल
" दुनीचन्द सगुनचन्द
" धरमदास कन्हैयालाल
" बाबूराम मूलचन्द
" बंसराज जानकीदास
" मामचन्द जगन्नाथ
" माधवलाल चिरंजीलाल
" रतीराम हरदीराम

मेसर्स सुगनचन्द मामराज

फ्लावर मिल

हरकिशनदास फ्लावर मिल

कॉटन मर्चेन्ट

मेसर्स रा० ब० अमोलकचंद मेवाराम
" मामचंद राधाकृष्ण
" पटैल मिल्स

पौदा, कलम व बीज के व्यापारी

१ मेसर्स हेन बेन नर्सरी
२ " एल० आर० सन्स

लकड़ी की नक्कासी का सामान वाले

मेसर्स अब्दुल गफूर एण्ड सन्स
" नजर मुहम्मद फजलहक
" महम्मद इमाम महम्मद इकराम
" मुख्तार अहमद जुबेर अहमद
" हबीब हुसेन मजीद हुसेन

देहरादून

देहरादून भारतप्रसिद्ध स्थान है। यहाँ से मंसूरी, लन्ढौरा और चकराता नामक हिल स्टेशनों को मोटरें जाती हैं। यह स्थान ई० आई० आर० की लक्सर-देहरादून ब्रांच का अंतिम स्टेशन है। यह भी हिमालय पहाड़ों पर स्थित है। यहाँ की आब हवा सर्द एवं स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ की बनावट बहुत सुन्दर है। इस शहर के देहरादून नाम पड़ने का कारण यह बतलाया जाता है कि दो पहाड़ों के बीच की जमीन को दून कहते हैं और देहरा सिक्खों के गुरु रामराय का स्थान इसी दून में था। अतएव इसका नाम देहरादून पड़ा। यहाँ महकमा जंगलात का स्कूल एवं फौजी शिक्षा देने का स्कूल भी है। जङ्गलात के स्कूल के साथ में रिसर्च इन्स्टीट्यूट भी है।

यहाँ का व्यापार विशेष कर बासमती बढ़िया चावल, चाय और चूने का है। यह माल यहाँ से भारी तादाद में बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त जङ्गली पैदावार में साखू, देवदार, शीशम और चीड़ के बहुत पेड़ जङ्गलों में पाये जाते हैं। इन्हीं की लकड़ी की यहाँ आमद होती है और इसका भी यहाँ व्यापार होता है। इसके सिवा जङ्गली पैदावार में जो सब से ज्यादा जाता है वह "रसौत" नामक पदार्थ है इसके सिवा यहाँ कोई खास व्यापार नहीं है। हाँ हिल स्टेशन को सप्लाय करने वाला सेंटर होने से बाहर से रोजाना व्यवहार का सामान भारी तादाद में आता है।

यहाँ कारखानों में एक सरकारी लकड़ी का मिल है। इसमें लकड़ी का काम चलता है।

मेसर्स भगवानदास एण्ड कों० बैंकर्स

यह एक प्राइवेट बैंक है। यू० पी० में यह पहला ही बैंक है जो एक फैमिली के द्वारा चलाया जाता है। इसकी स्थापना सन् १८९६ ई० में ला० भगवानदास द्वारा हुई। भगवानदास की मृत्यु के समय इनके लड़के लाला कुलभूषणदास की आयु केवल १०, ११ वर्ष की थी। उस समय इस बैंक की बहुत नाजुक स्थिति थी। लाला कुलभूषणदासजी ने अपनी व्यापारिक प्रतिभा के बल पर इस बैंक की बहुत तरक्की की और आज यू० पी० के प्रसिद्ध बैंकों में इसका नाम है। इसकी शाखाएँ सहारनपुर, मंसूरी और देहरादून में हैं। जहाँ बैंकिंग व्यापार

होता है। इसके प्रधान मालिक ला० जुगमन्दिरलालजी के पुत्र ला० नेमिचन्दजी एवं लाला रिखबदासजी हैं। आप लोग जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं।

बैंकर्स—
- दी अलाहाबाद बैंक ब्रांच
- दी इम्पीरियल बैंक ब्रांच
- ला० उग्रसेन चार एटला
- ला० बलबीरसिंह
- मेसर्स भगवानदास एण्ड को०
- महंत लछमनदासजी
- मेसर्स लक्ष्मीचन्द रामकिशोर

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजंट—
- मेसर्स कुन्दनलाल बख्तावरसिंह
- ,, कन्हैयालाल हरस्वरूप
- ,, गंगाराम दर्शनलाल
- ,, जगन्नाथ मित्रसेन
- ,, जुगलकिशोर हरिश्चन्द्र
- मेसर्स बद्रीदास आशाराम
- ,, सारनमल कल्लूमल

कपड़े के व्यापारी—
- मेसर्स इंडियन इंडस्ट्रीयल कम्पनी (फैन्सी कपड़े)
- ,, इम्पिरीयल ट्रेडिंग कंपनी (फैन्सी कपड़ा)
- ,, हंडूमल एण्ड संस (फैन्सी कपड़ा)
- ,, रामानन्द कृपाराम (फैन्सी कपड़ा)
- ,, विशंभरदास एंड को० (फैन्सी कपड़ा)।

चाँदी-सोना के व्यापारी—
- सेठ झुमनलाल सराफ
- ,, मठ्ठालाल सराफ
- मेसर्स मेवाराम गुरुदयाल
- ,, मुकुन्दलाल हरनारायण
- ,, सुन्दरलाल जिनेश्वरप्रसाद

हरिद्वार

हरिद्वार हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यह नगर लक्सर-देहरादून रेल्वे लाइन पर आबाद है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य्य देखने की वस्तु है। हर बारहवें साल चैत्र मास में यहाँ कुंभ का भारी मेला लगता है। इसके पास ही कनखल नामक स्थान है जहाँ सती अपने पिता दक्ष के अपमान से भस्म हुई थीं। कनखल के पास गंगा के पास गुरुकुल कांगड़ी है। यह भी अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ दूर दूर के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिये आते हैं। इसी प्रकार ऋषिकुल भी है।

व्यापारिक दृष्टि से यह स्थान किसी प्रकार का महत्व नहीं रखता। यहाँ तो भोले भाले यात्री ही लाखों की संख्या में प्रति वर्ष आया करते हैं अतः उन्हीं की आवश्यकता की पूर्ति के लिये जिन वस्तुओं की लागत होती है, उन्हीं का यहाँ प्रायः व्यापार है। पहाड़ों की जंगली पैदा-

पार में से जड़ी बूटी जो यहाँ बहुत बड़े परिमाण में होती है, आया ही करती है, पर इनका विशेष अच्छा संग्रह यहाँ के काली कमली वाले बाबाजी के यहाँ रहता है। शिलाजीत भी यहाँ काफी परिमाण में आती है जो यहाँ से बाहर एक्सपोर्ट होती है। छपाई का काम भी यहाँ मनोहारी होता है। छापने के लिये खद्दर वगैरह सब बाहर से आता है उसमें विशेषकर मुरादाबाद, काशीपुर आदि स्थानों का होता है। कम्मल भी यहाँ तैयार होते हैं। यहाँ के कम्मल मजबूत और टिकाऊ होते हैं। वे भी बाहर भेजे जाते हैं।

शिलाजीतवाले—

दी गंगाडीपो

,, शिलाजीत डिपो

,, शीलाजीत कम्पनी

ऊनी कम्मलवाले—

मेसर्स अर्जुनदास दुर्गादास

,, भगवानदास चौपड़ा

,, सीताराम सुखदेवप्रसाद

बर्तनवाले—

मेसर्स छंगामल भगवानदास

मेसर्स नन्हूमल विट्ठलदास

,, फीनामल बुद्धमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अर्जुनदास दुर्गादास

,, गणेशदास गुल्लामल

,, गौरीशंकर दमोदरदास

,, छंगामल पन्नालाल

,, भगवानदास चौपड़ा

,, मूलचन्द नत्थूलाल

,, श्यामलाल बूचीमल

,, सीताराम सुखदेवप्रसाद

मुरादाबाद

यह नगर ई. आई. आर. की मुगलसराय सहारनपुर लाइन पर एक बड़ा जंकशन है। यहाँ से एक ब्रांच हापुड़ होती हुई दिल्ली गयी है और दूसरी ब्रांच चंदौसी होती हुई अलीगढ़ आयी है। यहाँ से छोटी लाइन की एक शाखा उत्तर की ओर रामनगर को गयी है। इस नगर के समीप से ही रामगंगा बहती है। यहाँ के कलई के बर्तन और छपे हुए कपड़े मशहूर हैं। यहाँ का प्रधान व्यवसाय इन्हीं बर्तनों का है। इसके अतिरिक्त गेहूँ, जौ, अरहर, मूंग और चना की यह मण्डी है। इस मण्डी में गुड़ भी बहुत आता है। यहाँ गल्ले का सेर १०० रु० भर का है।

यहाँ के कलई के बर्तन भारतप्रसिद्ध हैं। यों तो यहाँ पर सभी प्रकार के बर्तनों पर सिल्वर प्लेटिंग तथा निकल प्लेटिंग की पालिश की जाती है जो देखने में मनमोहक पर व्यवहार में ओछी होती है पर हाँ, यहाँ के पुराने ढंग की मुरादाबादी कलई बहुत बढ़िया होती है। यह कलई जितनी देखने में सुन्दर होती है उतनी ही व्यवहार में भी टिकाऊ होती है यही कारण है कि इस कलई के बर्तनों को यदि उपले या लकड़ी की राख से रोज मला जाय तो कलई मात्र आठ वर्ष तक बराबर चलती है। यह कलई राँगे की कलई कहाती है। राँगा प्रायः सिंगापुर से आता है जो यहाँ व्यवहार किया जाता है। बर्तन पर प्रथम राँगे की कलई की जाती है और फिर उसे पक्का करने के लिये आग में तपाया जाता है जिसके बाद बर्तन मसाले देकर मला जाता है और फिर पालिश देकर चमक का जौहर उठाया जाता है जो चमक को पैदा करता है तब माल बाजार में बिक्री के योग्य होता है।

माल की क्वालिटी चद्दर के भारीपन पर निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त सिंगल और डबल खरादा पर भी कलई के सुन्दर और टिकाऊ होने का दारमदार रहता है। अतः मोटी चद्दर के माल पर ही उम्दा खराद की जा सकती है और साफ खराद पर ही कलई भी चोखी होती है और उसी पर चमक का जौहर खिलता है। इस प्रकार यही माल ऊँचे दर्जे का माना जाता है। यों तो मुरादाबादी कलई सब प्रकार की धातु के बर्तनों पर होती है पर जर्मन सिल्वर पर नहीं। हाँ जर्मन सिल्वर पर इलेक्ट्रो प्लेटिंग का या सिल्वर प्लेटिंग का काम होता है जो वैसा टिकाऊ नहीं होता।

यहाँ जर्मन सिल्वर और पीतल के पुराने बर्तन भी गलाये जाते हैं और फूल नामक मिश्रित धातु भी बनाई जाती है। ये धातुएँ गला कर नये बर्तन ढाले जाते हैं। यहाँ राँगा और ताँबा मिला कर फूल तैयार किया जाता है। यहाँ प्रायः पुराने पीतल के बर्तन गला कर लोटे और गगरा ढाले जाते और थाली तथा कटोरियाँ प्रायः चद्दर से तैयार की जाती हैं। चद्दर और पुराना माल गला कर सभी प्रकार का माल भी बनाया जाता है। यहाँ की मिट्टी इतनी उत्तम है कि जिससे ढालने के साँचे बहुत अच्छे बनते हैं।

कलई के समान ही बर्तनों पर बेल बूटे और रंगसाजी का काम भी यहाँ उत्तम बनता है। जो विदेशों में भारत से बिकता है। बारीक कलम का एकरंगा काम उत्तमश्रेणी का होता है।

इस शहर के सर्वोपरि कारखाने में सीप का काम तथा आबनूस की लकड़ी पर नक्काशी का काम बहुत ही सुन्दर और अच्छा होता है जो यहाँ के कारीगर तयार करते हैं और बनाकर देश व विदेश भेजते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

दी मुरादाबाद स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड

इस मिल की स्थापना ६० साल पहिले कोठीवाला तथा ठाकुर द्वारा फेमिली ने की। आरम्भ में इस मिल ने तरक्की की और सन् १९१४ के बाद इस मिल ने हिस्से का मुनाफा शेअर की कीमत से कई गुना अपने शेअर होल्डरों को बाँटा। यहाँ तक कि भारत की तथा विलायत की कई मिलें फेल हो चुकी और सन् १९३० में जब कि मिलों का बायकाट हो रहा था यह मिल अपने शेअर होल्डरों को बराबर मुनाफा दे रही है तथा कभी आज तक कोई गड़बड़ नहीं होने पाई।

मेसर्स अयोध्या प्रसाद एण्ड सन्स

इस फर्म की स्थापना सन् १८७८ ई० में बा० अयोध्याप्रसाद खत्री ने की थी। आरम्भ से ही यह फर्म इनैमल्ड वर्क अर्थात् कलम के काम के बर्तनों का व्यापार कर रही है। इस व्यापार में इस फर्म ने अच्छी सफलता प्राप्त की। इसका माल विदेशों के बाजार में जोरों से बिकता है। इसके वर्तमान मालिक बा० हीरालालजी तथा आपके भाई जवाहरलालजी हैं। आपलोग मुरादाबाद के ही रहनेवाले हैं। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुरादाबाद—मेसर्स अयोध्या प्रसाद एन्ड सन्स T. A. Brass	यहाँ कलम के काम के बर्तनों का बहुत बड़ा काम है। यहाँ से विदेशों को भी यह माल जाता है।

मेसर्स साहू किशनस्वरूप रघुवीरशरण

इस फर्म की स्थापना १७ वर्ष पूर्व साहू किशनस्वरूपजी खत्री ने की थी। इसके पूर्व आप के आदि निवास अमरोहे में मेसर्स रामस्वरूप आनन्दस्वरूप के नाम से व्यापार होता था पर वर्तमान में वहाँ की फर्म पर मेसर्स आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप नाम पड़ता है। आपके स्वर्गवास के बाद फर्म का संचालन आपके पुत्र करने लगे जो वर्तमान में मालिक हैं। इस फर्म के प्रधान संचालक लाला रघुवीरशरणजी तथा लाला राधेश्यामजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स किशनस्वरूप रघुवीरशरण गंजबाजार मुरादाबाद	यहाँ गल्ला, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है और कपोर मिल है।

मेसर्स—आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप अमरोहा (मुरादाबाद)	यहाँ गल्ला, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।
मेसर्स—आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप धनौरा (मुरादाबाद)	गल्ला, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स लाला जगन्नाथ प्यारेलाल

यह फर्म सन् १९१६ ई० से उपरोक्त नाम से व्यापार कर रही है। इसके पूर्व इस फर्म पर मेसर्स लालजीप्रसाद प्यारेलाल के नाम से व्यापार होता था। इसके मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोग मुरादाबाद के आदि निवासी हैं और आरम्भ से ही आप लोग मुरादाबादी बर्तनों का व्यापार करते आ रहे हैं जो यह फर्म वर्तमान में भी जोरों से कर रही है। इसके वर्तमान मालिक लाला प्यारेलाल जी हैं। आप व्यापारकुशल और मिलनसार सज्जन हैं। आप सार्वजनिक कामों में भी सहायता करते रहते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरादाबाद—मेसर्स जगन्नाथ प्यारेलाल	यहाँ वर्तनों का बहुत बड़ा व्यापार होता है तथा बैंकर और जमींदारी का काम है।

मेसर्स बनारसीदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म की स्थापना लाला बनारसीदास ने की और इनैमल्ड ब्रास वेयर का व्यवसाय आपने आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी कर रही है। आपके स्वर्गवास के समय आपके पुत्र बाबू पुरुषोत्तमदासजी की आयु बहुत कम थी अतः फर्म का व्यवसाय आपके चचा संचालित करते रहे पर वयस्क होने पर बाबू पुरुषोत्तमदासजी ने फर्म का संचालन करना आरम्भ किया। आपने फर्म का पुराना नाम बदल कर उपरोक्त नाम रक्खा। आपने व्यापार से अलग हो १२ वर्ष तक स्टेशन मास्टरी की पर बसे भी आपने छोड़ दिया और आज आप पुनः अपनी फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप शिक्षित और मिलनसार है। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की है। आपके दत्तक पुत्र बाबू हरिशंकरजी भी फर्म का काम देखते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है—।

मेसर्स बनारसीदास पुरुषोत्तमदास शाही मस्जिद मुरादाबाद T. A. Curio.	यहाँ मुरादाबादी कलई, ग्रेन तथा इनैमल्ड भासवेयर का व्यापार होता है।

मेसर्स बुलाकीदास सक्खनलाल

इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व लाला बुलाकीदासजी ने की थी। वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गंगारामजी तथा आपके भाई लाला लालमनदासजी हैं। आपलोग मुरादाबाद के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन है। आपके पूर्वज पीतल की ढलाई का काम करते थे। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बुलाकीदास सक्खनलाल मुरादाबाद	यहाँ सभी प्रकार के बर्तनों का व्यापार होता है।

मेसर्स मिश्रीलाल गिरधारीलाल

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला मिश्रीलालजी ने लगभग ६० वर्ष पूर्व मेसर्स मिश्री-लाल हजारीलाल के नाम से व्यापार आरम्भ किया। आपने बर्तन का व्यापार शुरू किया और फर्म ने इस काम में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके स्वर्गवास के बाद आपके दोनों पुत्रों ने व्यापार चलाया पर गत वर्ष वे लोग अलग २ हो गये, अतः आपके छोटे पुत्र लाला गिरधारीलालजी ने जो ३२ वर्ष तक फर्म का काम चलाते रहे थे अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से खोल ली। आप ही इस फर्म के मालिक हैं, आपके दो पुत्र हैं। बाबू ललिताप्रसादजी तथा बाबू देवीप्रसादजी। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापा-रिक परिचय यों है।

मेसर्स मिश्रीलाल गिरधारीलाल मण्डी चौक मुरादाबाद	यहाँ बर्तनों की आढ़त का काम होता है।
मेसर्स गिरधारीलाल ललिता प्रसाद मण्डी चौक मुरादाबाद	यहाँ बर्तनों का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मुकुटविहारीलाल मदनस्वरूप

इस फर्म की स्थापना लगभग २३ वर्ष पूर्व लाला मुकुटविहारीलालजी ने उपरोक्त नाम से कर कपड़े का काम आरम्भ किया था, जो यह फर्म आज भी कर रही है। इसके पूर्व भी आपके परिवार में व्यापार होता था जो लगभग १०० वर्ष का पुराना है पर आपके पिता लाला केशरीमलजी ने कपड़े का काम खोला था। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मुकुटविहारीलालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मुकुटविहारीलाल मदनस्वरूप गंजबाजार, मुरादाबाद — यहाँ सभी प्रकार के कपड़े का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त मुरादाबाद जिले में कांठ, सरकड़ा तथा बिलारी में मेसर्स मदनस्वरूप त्रिलोकीनाथ के नाम से आपकी कपड़े की दुकानें हैं।

मेसर्स ललताप्रसाद शान्तिप्रसाद

इस फर्म की स्थापना ला० ललताप्रसादजी ने सन् १९०८ ई० में की थी। इसके पूर्व आप अपने पिता ला० केशरीमलजी द्वारा संस्थापित मेसर्स केशरीमल ललताप्रसाद नामक फर्म का काम संचालित करते थे। आप बड़े ही व्यापार कुशल महानुभाव थे अतः आपने इस कार्य में अच्छी सफलता प्राप्त कर ली। आपके बाद आपके पुत्र बा० शान्तिप्रसादजी जो वर्तमान में फर्म के मालिक हैं फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स ललता प्रसाद शान्तिप्रसाद गंजबाजार मुरादाबाद — यहाँ सभी प्रकार के कपड़े का व्यवसाय होता है।

मेसर्स लक्ष्मणदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक कांठ (मुरादाबाद) के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना लाला लक्ष्मणदासजी ने प्रथम कांठ में की थी। इसके बाद करीब १५ वर्ष पूर्व आपके पुत्र ला० मथुरादासजी ने यहाँ उपरोक्त नामसे अपनी फर्म खोली जो आज अच्छी उन्नत अवस्था पर है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला मथुरादासजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं जो अलग हैं और अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लक्ष्मणदास मथुरादास गंजबाजार मुरादाबाद — यहाँ गल्ला, आढ़त, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। मुरादाबाद स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल लि० के सूत की बिक्री इसीके मारफत होती है।

मेसर्स—लक्ष्मणदास मथुरादास कांठ (मुरादाबाद) — बैंकिंग, जमींदारी, गल्ला तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स श्यामलाल रघुवीरशरण

इस फर्म की स्थापना सन् १९१६ ई० में लाला श्यामलालजी ने की थी। इसके पूर्व आप मेसर्स श्यामलाल बनारसीदास के नाम से व्यापार करते थे। आपका स्वर्गवास लगभग ७ वर्ष पूर्व हो गया, तब से आपके पुत्र लाला रघुवीरशरणजी, लाला राजारामजी और लाला लक्ष्मी-नारायण जी करते हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—श्यामलाल रघुवीरशरण मुरादाबाद — यहाँ सभी प्रकार के बर्तनों का व्यापार होता है।

मुरादाबादी बर्तन के व्यापारी

मेसर्स इण्डियन आर्ट इम्पोरियम
" गनेशीलाल ज्वालाप्रसाद
" जगन्नाथ प्यारेलाल
" बद्रीदास बांकेलाल
" बांकेलाल छोटेलाल
" मुसद्दीदास शान्तिप्रसाद
" महबूब एण्ड को०
" निकोशल गिरधारीलाल
" मोहनलाल छोटेलाल
" मोहम्मद जाहिद
" रामानंद शान्तिप्रसाद

मेसर्स श्यामलाल रघुवीरशरण
" सकटनलाल काशीराम
" सूरजमल छुन्नलाल

इनैमल्ड ग्लासवेयर के व्यापारी

मेसर्स अयोध्याप्रसाद एण्ड सन्स
" बनारसीदास पुरुषोत्तमदास
" आर. एन. के. शैनन एण्ड को०
" महम्मदयार खाँ
" श्यामलाल रघुवीरशरण
" हाजी कल्लन

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल मामूराम

तथा गल्लेकी आढ़त का काम करती है। यहाँ इसकी २ जीनिंग और २ प्रेसिंग फैक्ट्रियाँ हैं तथा ट्रस्ट की जागीरी के २ गाँव भी हैं।

मेसर्स शोभाराम श्रीराम

इस फर्म के मालिक भिवानी निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का हेड आफिस मेरठ में है। यहाँ करीब ४३ वर्ष पूर्व सेठ दिलसुखरायजी के द्वारा इस फर्म का स्थापन हुआ। इसके पश्चात् इस फर्म का संचालन से० छाजूरामजी, सेठ बाबूरामजी और सेठ श्रीरामजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप लोगों के ही समय में फर्म ने समय २ पर हापुड़, श्यामली, भिवानी, चंदौसी आदि स्थानों पर अपनी शाखाएँ स्थापित कीं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ शिवनारायणजी, सेठ मुआलालजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी, सेठ डूंगरमलजी, सेठ वासुदेवजी, सेठ रामस्वरूपजी एवं सेठ गुलाबचन्दजी बड़जातिया हैं। आप सबलोग अपनी अँचोंपर व्यापार संचालन करते हैं। सेठ शिवनारायणजी यहाँ की चेम्बर आफ़ कामर्स के सभापति हैं। तथा आदिक्षेत्र नामक जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के आप मंत्री हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके गुलाबचन्द नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चन्दौसी—मेसर्स शोभाराम श्रीराम T. A. Jain	यहाँ बैंकिंग, कमीशन एजंसी एवं गल्ले का व्यापार होता है।
मेरठ—मेसर्स शोभाराम गोपालराय T. A. Jain	यहाँ हेड आफिस है तथा गल्ला, गुड़, आदि का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
श्यामली-मेसर्स शोभाराम गोपालराय T. A. Digambar	यहाँ गल्ला, गुड़ और कमीशन का काम होता है।
आंवला—(बरेली) मेसर्स शोभाराम श्रीराम	यहाँ गल्ला एवं दाल का काम होता है।
हापुड़—मेसर्स शोभाराम गोपालराय	यहाँ गल्ला बैंकिंग एवं कमीशन का काम होता है।
भिवानी (हिसार)—मेसर्स छाजूराम श्रीराम	यहाँ गल्ला और बैंकिंग का व्यापार होता है। यहाँ मालिकों का मूल निवास स्थान है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स रामसेन ज्वालाप्रसाद
" गोविन्दराम सेवाराम
" छीतरमल भौरीप्रसाद
" नारायणदास छोटेलाल
" नारायनदास श्यामलाल
" राधू बद्दूलाल
" बंशीधर नन्दकिशोर
" बिहारीलाल गिरधारीमल
" भोलानाथ बनारसीदास
" शोभाराम श्रीराम
" हीरालाल रामगोपाल

रुई के व्यापारी—

मेसर्स ओमीराम जानकीप्रसाद
" बसंतलाल मुन्नीमल
" मालीराम लक्ष्मणदास
" बेस्ट पेटेन्ट प्रेस
" साधुराम श्यामलाल
" हीरालाल रामगोपाल

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स बलदेवदास गोपीराम
" बैजनाथ मोहनलाल
" सनेहीलाल सैरमल

बरेली

बरेली यू० पी० प्रांत की रुहेलखंड कमिश्नरी के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह इ० आई० आर० की सहारनपुर मुगलसराय वाली मेन लाईन का जंक्शन स्टेशन है। यहाँ से आर० के० आर० की छोटी लाईन एक ओर कासगंज एवम दूसरी ओर काठगोदाम, पिलीभीत आदि स्थानों पर गई है। यह शहर बरेली जंक्शन स्टेशन से १॥ मील की दूरी पर बसा हुआ है। इसका दूसरा नाम बाँसबरेली है। वास्तव में यह बाँस जैसा लम्बा भी बसा हुआ है। यहाँ बाँस एवम लकड़ी का बहुत बड़ा स्टाक रहता है जो प्रायः उत्तर हिन्दुस्थान के सभी शहरों को सप्लाय होता है। इसके अतिरिक्त लकड़ी के काम में यहाँ मेजें, कुर्सियाँ, पलंग के पाये, ताँगे, संदूक आदि बहुत अच्छे बनते हैं और बाहर जाते हैं। ताँगे तो बरेली फेशन ताँगे के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। माचीस के भी यहाँ कारखाने हैं।

यहाँ की पैदावार में गुड़ और खाँड़ प्रधान हैं जो बाहर जाते हैं। इसके सिवाय गेहूँ, ान, लाही, वगैरह भी बाहर जाती है। चाँवल यहाँ का अच्छा होता है। यह चाँवल ीन प्रकार का है—तुईल, भ्रिलिया एवम् बासमती। यहाँ के कालीन, दरियाँ और रमा भी मशहूर हैं। यहाँ का तोल सब चीजों का १०१ भर के सेर से होता है।

मेसर्स रामेश्वरदास राधाकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० ४२३ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कत्थे का व्यापार करती है। यह जंगलों से कत्था तैय्यार करवा कर हेड आफिस को भेजती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मदनलालजी हैं।

मेसर्स रामनारायण रामभरोसेलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० रामनारायणजी, रामभरोसेलालजी एवं ला० रामस्वरूपजी तीनों ही भाई हैं। यह फर्म करीब ५ वर्षों से उपरोक्त नामसे व्यापार कर रही है। इसके पहले यह फर्म दूसरे नामसे व्यापार करती थी। इसकी स्थापना ला० रामनारायणजी के द्वारा हुई। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपहीं के द्वारा इस फर्म की तरक्की भी हुई। आप १० वर्ष पूर्व गवर्नमेंट से ठीका लेकर लकड़ी का कारबार करते थे। पर अब केवल नेपाल सरकार के जंगलों का ठीका लेकर उनमें से लकड़ी निकालते हैं। अपना माल जंगल से निकालने के लिये करीब १० मील तक आपकी अपनी निज की रेलवे लाइन खोल रक्खी है। वे आपके पास रेलवे को स्लीपर सप्लाय करने का ठीका है। अतएव इन जंगलों की सब लकड़ी रेलको दे दी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बरेली—मेसर्स रामनारायण रामभरोसेलाल, बांसमण्डी	यहाँ बैंकिंग, जमींदारी, ठीकेदारी एवं लकड़ी की तिजारत होती है।
बरेली—मेसर्स रामनारायण रामभरोसेलाल साहूगंज	यहाँ गल्ले की आढ़त का व्यापार होता है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स गोविन्दराम बद्रीप्रसाद
,, गङ्गाराम तिवारी
,, खेमचन्द्र गिरधरचंद
,, महावीर साहूराम
,, [illegible] साहूराम
,, रामनारायण रामभरोसेलाल

मेसर्स रामकिशनदास मोहनलाल
,, रामचन्द्र नान्हूराम
,, रामरतनदास [illegible]
,, वृन्दावन लक्ष्मीनारायण
,, शिवनारायण तिवारी

लकड़ी, बाँस और पटिये के व्यापारी—

मेसर्स [illegible] रामलाल

मेसर्स जगन्नाथ भगवानदास
,, ज्वालाप्रसाद रामदास
,, रामनारायण रामभरोसेलाल
,, हुलासराय रामरतन
,, हाफिसहाजी महम्मदखाँ

फर्निचर के व्यापारी—
दी अलबर्ट उड वर्क्स — सिविल लाइंस
मेसर्स इझीसहाँ एण्डसंस ,,
,, अमीर एण्ड सन्स ,,
दी टिंबर सप्लाय उड वर्क्स ,,
मेसर्स दुलिचंद एण्ड सन्स जं० स्टे० रोड
,, महम्मद याकुबखाँ एंड संस सि०ला०
मेसर्स एस० आर० मेघवा जं० स्टे० रोड
दी सिविल फर्निचर हाउस ,,

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स छोटेलाल महादेवप्रसाद
,, टब्बालाल शालिग्राम
,, टब्बालाल मन्नीलाल
,, घूमामल बजाज
,, प्रभुदयाल जगतनारायण
,, प्यारेलाल मदनलाल
,, भूरीमल बजाज
,, मुरलीधर बजाज
,, मोहनलाल बजाज

उझियानी

उझियानी आर. के. आर. की कासगंज-बरेली वाली लाइन का स्टेशन है। यह एक छोटी-सी पर आबाद मंडी है। यह मंडी विशेष बान (मूंज) अमचूर और पोस्ता बाहर भेजने में मशहूर है। यहाँ से करीब ५०० मन बान रोजाना बाहर जाता है। यहाँ पैदा होने वाली वस्तुओं में इनके अतिरिक्त गेहूँ, सरसों, बाजरी, चना, जौ, कपास आदि भी होते हैं और बाहर जाते हैं। यहाँ माल प्रायः अच्छा होता है। कपास बढ़िया क्वालिटी का यहाँ पैदा होता है।

यहाँ पर आल-इण्डिया कांग्रेस कमेटी की ओर से यू० पी० कांग्रेस कमेटी ने खद्दर-भंडार खोल रक्खा है। यह भंडार आस पास के देहातों में रहने वाले देहातियों द्वारा काता हुआ सूत एकत्रित कर कपड़े बनाता है और उन पर रंग एवं पालिश कर कांग्रेस खद्दर भंडारों को सप्लाय करता है। यहाँ प्रचुर हाथ का बना माल तैय्यार होता है। यू. पी. प्रांत में यह सब से बड़ा खद्दर एकत्रित कर भेजने वाला भंडार है।

यहाँ प्रेम स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स के नाम से एक कपड़ा बुनने एवं सूत कातने का मिल है। इसके साथ ही इसी नाम से एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी भी है। इस मिल का कपड़ा अच्छा होता है।

मेसर्स गोविन्दराम तनसुखराय

इस फर्म का हेड-आफिस सांभर है। इसके वर्तमान मालिक रायसाहब श्रीनारायणजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप यहाँ आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपकी बरेली, बदायूं, साँभर आदि स्थानों पर और भी दूकानें हैं। साँभर में भिन्न २ नामों से कई दूकानें हैं। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के साँभर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम करती है।

मेसर्स बसंतलाल द्वारकादास

इस फर्म का हेड-आफिस बम्बई है। अतः इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ९८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं।

...ल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

...र्स गोविन्दराम तनसुखराय
घासीराम मेघराज
गया भाई जवर भाई
नन्हूमल बनारसीदास

मेसर्स बैजनाथ रामलाल
" बसंतलाल द्वारकादास
" मोतीलाल रामजीदास
" हिम्मतलाल उदयचंद
" हरिराम अमृतलाल

पीलीभीत

...ह नगर आर० के० आर० की मेन लाइन का बड़ा जंक्शन है। यहाँ से एक लाइन ...ती हुई कासगंज को गयी है और दूसरी लाइन मालानी, लखीमपुर होती हुई सीतापुर ...को जाती है तथा तीसरी लाइन शाहजहाँपुर को गयी है और चौथी उत्तर की ओर ...को जाती है।

...नगर देशी शक्कर अर्थात् खाँड की प्रधान मण्डी है। यों तो इसके समीपवर्ती गाँवों ...भी स्थानों पर घर २ गुड़ और राब से खाँड तैयार करने के लिये मशीनें लगी हुई ... में दो बड़ी २ शुगर फैक्ट्रियाँ हैं जिनमें देशी शक्कर बहुत बड़े परिमाण में तैयार ...। यहाँ के समीपीय भूभाग की उपज में प्रधान सन, चावल और गुड़ है जो

मेसर्स एल. एच. शुगर्स पीलीभीत	इस नाम की दो शुगर फैक्ट्रियाँ हैं। और इसके अन्तर्गत एक आइल मिल है। यहाँ का माल राजपूताना, यू. पी. और मालवा जाता है।
राय ब. हरप्रसाद राजा राधारमण पीलीभीत	यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। इनकी देहरादून, मंसूरी, हरिद्वार, नैनीताल आदि में कोठी हैं।

रायबहादुर साहू रामस्वरूपजी ओ. बी. ई.

आप पीलीभीत के प्रसिद्ध साहु परिवार के महानुभाव हैं। आपके पूर्वज रोहतक से पीलीभीत आये थे जिसका पूर्ण विवरण अन्यत्र रा. ब. हरप्रसाद राजा राधारमण के परिचय में दिया गया है। सेठ मथुरादासजी की ६ पीढ़ी में सेठ मुकुन्दरामजी प्रतापी महानुभाव हुए और इन्हीं के प्रथम पुत्र राय बहादुर साहु जगन्नाथजी के द्वितीय पुत्र राय बहादुर साहु रामस्वरूपजी ओ० बी० ई० स्पेशल मैजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल हैं।

आप पीलीभीत के प्रतिष्ठित रईस और प्रतिभा संपन्न लीडर लाई हैं। आपने योरोपीय समर के समय सरकार को अच्छी सहायता दी अतः ओ० बी० ई० के सम्मान से सरकार ने आपको सम्मानित किया। इसी प्रकार आप सभी अच्छे कामों में भाग लेते रहते हैं। आप बहुत समय तक यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन रहे हैं और वर्तमान में यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन हैं। आप स्पेशल आनरेरी मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल हैं। आपने स्टेशन के पास मेस्टन लाइब्रेरी बनवाई है। आपके बड़े भ्राता स्व० साहु रामप्रसादजी के पुत्र साहु रामकृष्णजी सुशिक्षित नवयुवक हैं। आपकी जमींदारी बरेली और पीलीभीत जिले में है। आप ९० हजार के लगभग मालगुजारी देते हैं।

मेसर्स रामवल्लभ रामविलास

इस फर्म का हेड आफिस सांभर (राजपूताना) है अतः इसका विशेष परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चावल, चीनी, गुड़ और नमक का, घरू व्यापार तथा कमीशन का काम करती है।

सोने चाँदी के व्यापारी

मेसर्स किशनलाल प्यारेलाल

" मायूराम राधेलाल

" मंगलसेन सराफ

" ललताप्रसाद सीताराम

" लक्ष्मीनारायण जगदीशप्रसाद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद सीताराम

" चुन्नीलाल वंशीधर

" मायूराम राधेलाल

" बृजलाल रामगुलाम

मेसर्स भगवानदास मंगनीराम

" राधाकृष्ण श्रीराम

" लक्ष्मणदास सीताराम

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजण्ट

(शक्कर चावल आदि)

मेसर्स अयोध्याप्रसाद गोपीनाथ

" गणेशदास ईसरदास

" चिम्मनराम घनश्यामदास

" जोतीप्रसाद इन्द्रसेन

" देवीप्रसाद रामकिशोर

" रामचरन रामप्रसाद

गोला गोकरननाथ

यह मंडी आर० के० आर० की लाइन पर लखीमपुर और माशानी जंक्शन के बीच बसी हुई है। यहाँ बाबा गोकरननाथ की प्राचीन शिवमूर्ति है। अतएव यह स्थान तीर्थ माना जाता है। इस हेतु इसके दर्शन के निमित्त हजारों यात्री प्रति वर्ष यहाँ आया करते हैं।

यह मंडी गुड़ के लिये प्रधान रूप से मशहूर है। अतः गुड़ की फसल में यहाँ अच्छी गति विधि एवं चहल पहल रहती है। यहाँ की कई फर्मे सिर्फ मौसिम में खुलती हैं। मौसिम निकल जाने पर वे बन्द हो जाती हैं। गुड़ के अतिरिक्त इस मंडी में कोई व्यापार विशेष महत्व नहीं रखता। गल्ले में गहूँ, चना और जौ प्रधान है। यहाँ का तौल गुड़ के लिये ४२ सेर एवं गल्ले के लिये ४०॥ सेर के मन से माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मुन्नालाल फतेहचंद

इस फर्म का हेड आफिस लखीमपुर में है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसके वर्तमान मालिक ला० कन्हैयालालजी, मुन्नालालजी एवं फतेचंदजी हैं। इसका विशेष परिचय लखीमपुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं गुड़ का व्यापार और आढ़त का काम करती है।

मेसर्स महासुखलाल केशवलाल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ केशवलाल भाई हैं। इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है। इसका विस्तृत परिचय सीतापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गुड़ एवं कमीशन का काम करती है। यह फर्म यहाँ सीजन में खुलती है।

मेसर्स लहरचन्द जुईंदादास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लहरचंद हैं। इस फर्म का हेड आफिस अहमदाबाद है। वहीं मालिक लोग रहते हैं। इसका विस्तृत परिचय सीतापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गुड़ का व्यापार करती है। इसका आफिस सीजन में ही यहाँ खुलता है।

कमीशन एजेंट और व्यापारी—

मेसर्स जगन्नाथ गनेशीलाल
„ बिहारीलाल द्वारकाप्रसाद
„ महासुखलाल केशवलाल
„ नमीलाल फतेचंद

मेसर्स मंगलचंद कुंजबिहारी
„ लालचंद भूरामल
„ लहरचंद जुईंदादास
„ साकरचंद भगूभाई
„ हजारीलाल जगतनारायण

लखीमपुर-खीरी

यह शहर आर. के. आर. की मेन लाइन पीलीभीत और सीतापुर के बीच में पड़ता है। यह स्थान जूट, गल्ला, घी और गुड़ की मंडी है। फसल पर अरंडी (रेंडी) भी यहाँ बहुत आती है जिसकी तादाद १ लाख से १॥ लाख मन तक पहुँच जाती है।

गल्ले में यहाँ मका और जुवार बहुत आती है। जो कि यहाँ से एक्सपोर्ट होती है। इसके अतिरिक्त अरहर, गेहूँ, जौ, चना और बाजरा भी यहाँ पैदा होता है। गुड़ भी यहाँ अच्छी मात्रा में पैदा होता है। गुड़ की क्वालिटी गोला के गुड़ से कुछ नरम मानी जाती है। पहले तो यह गुड़ की ही प्रधान मंडी थी मगर म्युनिसिपेलिटी के टेक्स लगा देने से गुड़ की आमद पहले से यहाँ कम हो गई।

जूट का व्यापार कुछ ही समय से यहाँ आरंभ हुआ है और अपनी अच्छी उन्नति कर रहा है। यहाँ फसल में १ लाख मन से अधिक जूट पैदा हो जाता है। घी की रोजाना

लखीमपुर—मेसर्स भोलानाथ शिवनारायण	यहाँ गल्ला, नमक, रूई आदि का व्यापार होता है। तथा एशियाटिक पेट्रोलियम कं० की तेल की एजन्सी है।
लखीमपुर—मेसर्स बघूलाल शिवनारायन	यहाँ चाँदी सोना एवं जेवर का काम होता है।
फरदान रे. स्टे, (लखीमपुर) मेसर्स मटरूमल देवीचरन	यहाँ गुड़ और गल्ला का व्यापार एवं कमीशन का काम होता है।
कुकरा—(लखीमपुर) मेसर्स मटरूमल देवीचरन	यहाँ भी गल्ला एवं गुड़ का व्यापार और कमीशन का काम होता है।
गोला गोकरननाथ—मुन्नालाल फतेचंद	यहाँ गल्ला और गुड़ का व्यापार होता है।

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया—

मेसर्स छेदीलाल नन्दकिशोर
- ,, ज्वालाप्रसाद शिवप्रसाद
- ,, नाथूराम बसंतीलाल
- ,, मटरू मल देवीचरन
- ,, मुन्नालाल फतेचन्द
- ,, हजारीलाल मथुराप्रसाद

घी के व्यापारी—

मेसर्स नाथूराम बसन्तीलाल
- ,, मङ्गलसेन बिसेसरलाल
- ,, हजारीलाल मथुराप्रसाद

जूट के व्यापारी—

मेसर्स अमरनाथ बटुकनाथ

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स छोटेलाल रामचरण
- ,, जोगीदत्त देवीदत्त
- ,, पन्नालाल जगन्नाथ
- ,, भावादीन नानकचन्द
- ,, रामचरनलाल भगवानदास

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स कल्लूमल श्यामनारायण
- ,, बांकेलाल मुन्नीलाल
- ,, रामचरन भगवानदास
- ,, ललिताप्रसाद मन्नूलाल
- ,, सधारीलाल बद्रीप्रसाद

सीतापुर

यह नगर आर० के० आर० की लाइन पर बरेली और लखनऊ के बीच बसा हुआ है। तथा अपने ही नाम के जिले का सदर मुकाम है। यह नगर गल्ले की अच्छी बड़ी मण्डी है। यहाँ गेहूँ, गुड़ और अरहर फसल में बहुत आती है। यह माल यहाँ से बाहर को बहुत जाता है। यहाँ का गुड़ बीनीगंज गुड़ से नाम से प्रसिद्ध है तथा क्वालिटी में भी ऊँचे दर्जे का माना जाता है। यहाँ अरहर की दाल बहुत बनती है जो बहुत बड़ी तादाद में बाहर भेजी जाती है। यहाँ से गुड़ तथा अरहर की दाल गुजरात की ओर अधिक जाती है। यहाँ गल्ले की तौल ४१ सेर और गुड़ की ४२ सेर के मन से होती है।

यहाँ से थोड़ी दूर पर बिस्वा नामक कस्बा है जहाँ गल्ले की मण्डी के अतिरिक्त तम्बाकू की बहुत बड़ी मण्डी हैं। बिस्वां की तम्बाकू मशहूर है और बहुत बड़ी तादाद में बाहर जाती है।

यहाँ से कुछ ही दूर नैमिशारण्य का और मिसिरिस तथा हत्याहरण नामक तीर्थ हैं जो हिन्दू मात्र के आदरणीय स्थान माने जाते हैं।

मेसर्स पारिख चुन्नीलाल हीरालाल

इस फर्म के मालिक नड़ियाद (गुजरात) के निवासी हैं। यह फर्म यहाँ ३० वर्ष से व्यापार कर रही है। इस के वर्तमान मालिक सेठ छोटालालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल सीतापुर T. A. Parikha	यहाँ गुड़ गल्ला तथा अरहर की दाल का व्यापार और कमीशन का काम होता है।
मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल नया गंज कानपुर T.A. Parikh	यहाँ गल्ला, शक्कर, तथा कत्था का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल कांदावाल बम्बई नं० २ Danawant	यहाँ बैंकिंग सोने चाँदी का काम होता है।

मेसर्स विहारीलाल लक्ष्मणदास

इस फर्म की स्थापना ७० वर्ष पूर्व लाला दिलेरामजी खत्री ने की थी। तब से यह फर्म बैंकिग और सोने चांदी का व्यवसाय कर रही है। लाला दिलेराम के बाद आप के पुत्र लाला लक्ष्मणदासजी ने फर्म के काम को चलाया और आपके स्वर्गवास के बाद से आपके पुत्र फर्म को चला रहे हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला गोविंदप्रसादजी तथा आपके ३ भ्राता हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स विहारीलाल लक्ष्मणदास सीतापुर — यहाँ सोना, चाँदी, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। यह फर्म इम्पीरियल बैंक ब्रांच की खजाँची है।

मेसर्स मगनीराम रामकिशन

इस फर्म का हेड-आफिस कुचामन रोड (राजपूताना) में है। अतः इसका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सीतापुर सिटी में है। जहाँ गुड़ और गल्ले का व्यापार होता है। यहाँ का तार का पता Brajmohan है।

मेसर्स मगनीराम चिमनराम

इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व सेठ तनसुखरायजी सूरजगढ़ (सेखावाटी) निवासी ने की थी। वर्तमान में इसके मालिक सेठ तनसुखरायजी और आपके भाई सेठ मथुरादासजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स मॅगनीराम चिमनराम नं० ३ बैरापट्टी कलकत्ता T. H. Uradh. — यहाँ हेड-आफिस है। यहाँ कपड़ा, गल्ला आदि की आढ़त का काम होता है यह फर्म रावालेस की बेनियन... मोकर हैं।

मेसर्स मॅगनीराम चिमनराम सीतापुर — यहाँ गल्ला, गुड़ किराने की आढ़त का काम है।

मेसर्स मॅगनीराम चिमनराम बिस्वां (सीतापुर) — गल्ला तथा गुड़ की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स लहरचन्द जुहरादास

यह फर्म यहाँ ११ वर्ष से व्यापार कर रही है इसके मालिक पाटन (गुजरात) निवासी सेठ लहरचन्दजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सीतापुर—लहरचंद जुहरादास T. A. Patni	गुड़ गल्ला और दाल का काम तथा आढ़त का व्यापार होता है।
गोला गोकरणनाथ „ „	फसल पर गुड़ का काम होता है।
नौगढ़ (बस्ती) „ „	चावल का काम होता है।
अहमदाबाद—मेसर्स लहरचंद जुहरादास माधवपुरा	यहाँ गुड़, गल्ला, और आढ़त का काम होता है।
बम्बई—मेसर्स लहरचंद जुहरादास दांनाबंदर	यहाँ बीज और कमीशन का काम होता है।

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजेन्ट—

मेसर्स किशनलाल रामचन्द्र
„ गौरीलाल माताप्रसाद
„ चुन्नीलाल हीरालाल
„ जयाभाई चुन्नीलाल
„ बनेचन्द जुहारमल
„ पुलाकीराम कन्हैयालाल
„ बिहारीलाल लक्ष्मणदास
„ मगनीराम चिमनराम
„ मगनलाल लवजी भाई
„ महानुखलाल बेनीलाल
„ लहरचन्द जुहरादास
„ सागरचन्द भानूभाई

मेसर्स सूरजमल घनश्यामदास
„ हरनन्दराय भगवानदास

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स गंगादीन गुरुप्रसाद
„ भोलानाथ सूरजमल
„ महावीरराय बुद्धनलाल
„ शिवसहाय हजारीलाल

चांदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स दुर्गाधर नारायणदास
„ बनवारीलाल तुलसीराम
„ बिहारीलाल लक्ष्मनदास
„ रामदयाल रामलाल
„ सरजूप्रसाद देवकीनन्दन

शाहजहांपुर

यू० पी० प्रांत की रुहेलखण्ड कमिश्नरी के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह स्थान इ. आइ. आर. की सहारनपुर-मुगलसरायवाली मेन लाइन के अपने ही नाम के स्टेशन से २ मील की दूरी पर बसा हुआ है। इसकी बसावट पुराने ढंग की एवं लम्बी है। यहाँ से एक ब्रांच लाइन सीतापुर को गई है। यह शहर गुर्रा नदी के किनारे शाहंशाह शाहजहाँ के समय में बसाया गया था।

यहाँ का प्रधान व्यापार शक्कर का है। तथा देशी गुड़ की भी यह भारी मंडी है। यहाँ नकली गुड़ भी बनाया जाता है। गल्ला सभी प्रकार का होता है और बाहर एक्सपोर्ट होता है। यहाँ का तोल खांड के लिये ४०॥ सेर का मन तथा शेष वस्तुओं के लिये ४० सेर के मन से काम होता है। खांड बनाने की देहातों में छोटी २ मशीनें हैं तथा देशी ढंग से भी शक्कर तैयार की जाती है। इसके पास ही रोजा नामक स्थान में शक्कर और शराब का कारखाना है। रोजा की शराब भारत प्रसिद्ध है। शाहजहांपुर में भी शराब बनती है। यहाँ के चाकू एवं सरोते प्रसिद्ध हैं। यहाँ खांड, गुड़ वगैरह का सौदा इस प्रकार होता है। जैसे नकली गुड़ का भाव ४ मन पर, खांड का सौदा ३—२५ सेर पर, शीरे का १ मन १३ सेर पर, आलू का भाव १ मन १३ सेर ५ छटाँक पर, और राब का भाव १ मन १९ से होता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ सिल्क के कपड़े बुनने का भी काम होता है। यहाँ इसकी कई फैक्टरियाँ हैं। सरकारी दरजीखाना भी यहाँ है। इसमें सरकारी यूनीफार्म की ड्रेसे तैयार होती हैं। इसमें बहुत से आदमी काम करते हैं। शाहजहाँपुर में कालीन भी अच्छे बनते हैं। यहाँ की सिल्क फैक्टरियों के नाम इस प्रकार हैं।

(१) टंडन सिल्क फैक्टरी
(२) महाराज सिंह मुख्तार सिल्क फैक्टरी
(३) इम्पिरियल डाइंग एण्ड सिल्क फैक्टरी
(४) विश्वनाथ कपूर सिल्क फैक्टरी

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स बाबूराम रामाराम चौक
" मुरलीधर जानकीप्रसाद बहादुरगंज
" लाटूराम रामभरोसे चौक
" लालमन महोबीलाल "
" लक्ष्मीनारायण मदनमोहन "
" हजारीलाल मदनलाल "
" हरप्रसाद कन्हैयालाल "
" श्रीकृष्ण बालगोविंद "

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल दुलिचन्द बहादुरगंज
" स्याजीराम बनारसीदास "
" गंगाराम जवाहरलाल बिरियागंज
" गंगाराम हरनायदास भोलागंज
" ठाकुरदास श्यामसुन्दर केसगंज
" तुलसीराम रामकरन "
" तुलसीराम मुट्टूलाल "
" नौबतराम भीमराज भोलागंज
" मन्नीलाल राजाराम केसगंज
" मंगलसेन श्यामलाल बिरियागंज
" मथुराप्रसाद मुसद्दीलाल बहादुर गंज
" रामभजनलाल प्यारेलाल केसगंज
" लक्ष्मीनारायण जगन्नाथ बहादुरगंज
" सीताराम बाबूराम केसगंज
" हरदयाल बिहारीलाल "

किराने के व्यापारी—

मेसर्स अमिलाल जगन्नाथ बहादुरगंज
" नन्हेमल रामनाथ "
" नागरमल परसराम "
" लालमन भैरूलाल सब्जीमण्डी
" श्रीराम बंसीधर केसगंज
" श्रीकृष्ण बनवारीलाल बहादुरगंज

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स चोंकेमल राजनारायण चौक
" काशीनाथ सेठ "
" मुन्नालाल सराफ "
" तुलसीराम शालिगराम "
" शालिगराम बनवारीलाल "
" हरद्वारीलाल कुञ्जीलाल "

हरदोई

यू. पी. प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह ई. आय. आर. की सहा-रनपुर मुगलसराय वाली मेन लाइन पर लखनऊ के पास बसी हुई है। इस मंडी में प्रधान व्यापार शक्कर और गल्ले का है। यहाँ पैदा होने वाला माल गेहूँ, जौ, चना, सरसों, उड़द, मूँग, बाजरी, अरहर वगैरह हैं। गुड़ भी यहाँ बनता है। यही वस्तुएँ यहाँ से बाहर जाती हैं। यहाँ का बीज अंग्रेजी है। गेहूँ विशेष कर कलकत्ता जाता है। चावल बंगाल और नीमगढ़ से ही प्रायः आता है। इसके अतिरिक्त जिले का प्रधान स्थान होने से यहाँ की जन संख्या में खपत होनेवाला रोजाना का सामान बाहर से ही यहाँ आता है।

७६

समय नाना प्रकार की शिल्प-कुशलता का केन्द्र हो गया था। अब उन शिल्पों की अवनति हो गई है। फिर पर भी अभी तक लखनऊ शहर की मिट्टी की पुतलियाँ छींटे आदि भारत में बेजोड़ हैं।

सिपाहियों के गदर के दिनों लखनऊ बड़ा ही चमक दमक कर नामवर हो उठा था। स्थान स्थान के विद्रोही सिपाहियों ने यहाँ इकट्ठे होकर अङ्गरेजों पर आक्रमण किया था। उन दिनों सर हेनरी लारेंस लखनऊ के रेसीडेण्ट थे। यहीं पर उनकी मृत्यु हो गई।

युक्त प्रान्त की दूसरी राजधानी के रूप में लखनऊ अब इलाहाबाद की टक्कर का हो गया है।

लखनऊ अब तक व्यापार का एक प्रसिद्ध केन्द्र है।

कल-कारखाने

ऐशबाग लाईम एण्ड ऑयल वर्क्स—ऐशबाग।

रामचन्द्र गुरुसहायमल कॉटन मि० कंपनी लि०—नालबंदोरा।

लखनऊ शुगर वर्क्स—ऐशबाग।

मूलचंद सोमानी आईस मिल्स एण्ड ऑयल वर्क्स—डालीगंज।

पंजाब ऑयल वर्क्स—ऐशबाग।

अपर इंडिया शुगर पेपर मिल्स।

मैंकटेश्वर फ्लावर मिल्स—ऐशबाग।

रामचन्द्र लक्ष्मणदास—माईस फैक्टरी।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

चांदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान [illegible] (पञ्जाब) का है। करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म के मूल पुरुष लाला जगन्नाथजी यहाँ आये। आपके साथ आपके पुत्र ला० गोपीनाथजी भी थे। आपने यहाँ आकर व्यापार में प्रवेश किया। ला० गोपीनाथजी के पुत्र ला० कुन्दनलालजी ने सन् १९०८ से ठीकेदारी का काम प्रारम्भ किया। इस काम को आपने बहुत बढ़ाया। इस फर्म की [illegible] ने अच्छी उन्नति की। आप व्यवसायकुशल व्यक्ति हैं। आपने ठीकेदारी के अलावा चाँदी सोना, गल्ला और [illegible] का काम भी शुरू किया जो वर्तमान में [illegible] से हो रहा है। आपने इसके अतिरिक्त बैंकिंग और जमींदारी का भी काम शुरू किया जो वर्तमान में चल रहा है। यह फर्म यहाँ चौक की फर्मों में अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म के वर्तमान संचालक ला० कुन्दनलालजी तथा आपके पुत्र [illegible]

लाला कुंदनलालजी ठेकेदार (कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल) लखनऊ

लाला गयाप्रसादजी कपूर (गयाप्रसाद शम्भूनाथ) लखनऊ

लाला कुंजबिहारीलालजी (कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल) लखनऊ

लाला महावीरप्रसादजी (कुंदनलाल कुंजबिहारीलाल) लखनऊ

है। ला० कुंजविहारीलालजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः महावीर प्रसादजी, प्रकाश-चन्द्रजी, शिखरचन्द्रजी हैं। इनमें से शिखरचन्द्रजी पढ़ते हैं शेष व्यापार संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुञ्जविहारीलाल जौहरी, चौपटिया—T. A. Kundan यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहां बैंकिंग, जमींदारी और गांवों की ठीकेदारी का काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुञ्जविहारीलाल चौक—यहां सोना-चांदी का और जेवर का व्यापार होता है।

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुञ्जविहारीलाल हाजीगंज—यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स कुन्दनलाल कुंजविहारीलाल अमीनुद्दौला पार्क—यहाँ चांदी-सोना तथा जेवर और गोटे का व्यापार होता है।

लखनऊ—मेसर्स रूपलाल मदर्स अमीनुद्दौला पार्क—यहाँ मोजा, बनियाइन का कारखाना है, तथा इनकी बिक्री का काम होता है। इस फर्म का संचालन महावीरप्रसादजी करते हैं।

इसके अतिरिक्त हाल ही में आपने ला० माधवप्रसादजी के साझे में मेसर्स कुन्दनलाल माधवप्रसाद के नाम से ई० आई० आर० रेलवे के फेरा-कंट्राक्टर के काम का ठीका लिया है। आपही सारी रेलवे लाइन के खजांची हैं।

मेसर्स गयाप्रसाद शम्भूनाथ

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी खत्री समाज के कपूर सज्जन हैं। पहले पहल ला० गयाप्रसादजी ने दलाली एवं चाँदी सोने का थोड़ा यह व्यापार शुरू किया। संवत् १९५४ में आपने फर्म की स्थापना की जिस पर सोना-चाँदी और पुराने सिक्के का काम शुरू किया गया। इस व्यवसाय में इस फर्म ने अच्छी तरक्की की। वर्तमान में यह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है। ला० गयाप्रसादजी इस वक्त ७० वर्ष के होते हुए भी फर्म का काम सुचारु रूप से संचालित करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः शम्भूनाथजी, गौरीशंकरजी और बालकृष्णजी हैं। तीनों ही फर्म के व्यवसाय का संचालन करते हैं और अनुभवी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लखनऊ—मेसर्स गयाप्रसाद शम्भूनाथ, चौक—यहाँ बैंकिंग, जमींदारी और चाँदी-सोने का थोक और फुटकर तथा जेवर का काम होता है।

जौहरी

मेसर्स जवाहिरलाल मोतीलाल

आप लोग लखनऊ के आदि निवासी हैं। आप लोग श्रीमाल समाज के जैन सज्जन हैं। इस फर्म पर जवाहिरात और नौरतन का व्यवसाय यों तो बहुत अर्से से हो रहा है पर शाही जमाने से इस व्यवसाय को इस फर्म के संस्थापकों के पूर्वजों ने अच्छी तरक्की दी और इसी क्रमानुसार समय समय पर इस खानदान ने इस व्यवसाय में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मोतीलालजी हैं। आप नौरतन के अच्छे जानकार और कुशल व्यवसायी हैं। आपके पुत्र बाबू कुंदनलालजी, बाबू जीवनलालजी तथा बाबू मोहनलालजी व्यापार में भाग लेते हैं इसके अतिरिक्त बाबू सुंदरलालजी तथा बाबू रतनलालजी अभी छोटे हैं और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखनऊ—मेसर्स जवाहिरलाल मोतीलाल बहोरनटोला, चौक T. A. Mal—यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं सभी प्रकार के जवाहिरात एवं जेवरात का काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल अखैचन्द

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जयपुर का है। आप लोग श्रीमाल वैश्य जाति के श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ पन्नालालजी व्यापार के निमित्त यहाँ आये। तथा मेसर्स बुधसिंह पन्नालाल के नाम से फर्म स्थापित की। पन्नालालजी जवाहिरात के व्यापार में अच्छे जानकार थे। आप यहाँ जयपुरवालों के नाम से मशहूर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके अखैचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। लालासाहब के पश्चात् आपही फर्म का संचालन करने लगे। आपके समय में भी फर्म की अच्छी उन्नति हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० अखैचन्दजी के पुत्र लाला कुशलचन्दजी ज्ञानचन्दजी, गुलाबचन्दजी और सिताबचन्दजी हैं। इनमें से ज्ञानचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम पदमचन्दजी बी० एस० सी० नगीनचन्दजी, फूलचन्दजी और पूरनचन्दजी हैं। लाला गुलाबचन्दजी लखनऊ में मुन्सिफ हैं। फर्म का प्रधान संचालन लाला कुशलचन्दजी ही करते हैं। आप सरल एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखनऊ—मेसर्स पन्नालाल अखैचन्द बोहरनटोला—यहाँ सब प्रकार के जवाहिरात, बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स फूलचंद चंदेमल

इस फर्म को स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व लाला फूलचन्दजी और ला० चन्देमलजी के द्वारा हुई थी। आप दोनों सज्जनों का इसमें साझा है। ला० फूलचन्दजी ओसवाल श्वेताम्बर-जैन धर्मावलम्बी और ला० चन्देमलजी खत्री समाज के सज्जन थे। आप दोनों ही का स्वर्ग-वास हो चुका है।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक लाला फूलचन्दजी के पुत्र ला० गुलाबचन्दजी और स्व० ला० चन्देमलजी के पुत्र मुन्नालालजी हैं। आप दोनों ही फर्म का संचालन करते हैं। यह फर्म यहाँ जवाहरात के व्यवसायियों में अच्छी मानी जाती है।

लाला गुलाबचन्दजी के ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः सिताबचन्दजी, अमृतलालजी, जीवनलालजी और श्री अभयचन्दजी हैं। इनमें से बड़े सिताबचन्दजी फर्म का संचालन करते हैं। मुन्नालालजी के राधेश्यामजी नामक एक पुत्र हैं जो इस समय बी० ए० में विद्याध्ययन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स फूलचन्द चन्देमल, फूलवाली गली, चौक—यहाँ सब प्रकार के जवाहरात बैंकिंग और जीनिंग फैक्टरियों का काम होता है।

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल

इस फर्म की स्थापना स्वर्गीय सेठ चुन्नीलालजी नाहर ने की। आपने केवल पन्द्रह वर्ष की आयु से जवाहरात का काम प्रारम्भ किया और थोड़े ही समय में नौरतन की बहुत अच्छी जानकारी हासिल कर ली। आप अपने समय में इस विषय के बहुत अच्छे जानकार माने जाते थे। आपने महारानी विक्टोरिया के द्वितीय पुत्र प्रिन्स विक्टर के आगमन के समय में कमिश्नर की आज्ञा से लखनऊ के बनारस बाग में जवाहिरात और पुरानी कारीगरी की एक अच्छी नुमाइश करवाई थी। जिसकी बहुत प्रशंसा हुई थी। इसी प्रकार आपने जवाहिरात की शिक्षा सुलभ करने के लिए लखनऊ में जुबिली जवाहर स्कूल स्थापित किया था जो २५ वर्ष काम करके बन्द हो गया। आप चौरासी संग और नौरतन के अच्छे पारखी थे। आप के पास इनका उत्तम संग्रह था। जो आज भी इस परिवार के पास सुरक्षित रूप में रक्खा हुआ है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला चुन्नीलालजी के लघु भ्राता लाला फूलचंदजी के पुत्र लाला फतेचंदजी तथा लाला अमीचंदजी हैं। आप फर्म का पूर्ववत् संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल जौहरी, नाहर-निवास, चौक—यहाँ सभी प्रकार के जे[illegible]
तथा नौरतन जटित जेवरों का व्यापार होता है।

गोटा-किनारी के व्यापारी

मेसर्स देवीदास मदनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान सहादरा है। आप लोग अग्रवाल वैश्य सन[illegible] के जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना बा० बद्रीदासजी द्वारा हुई। [illegible] आपने चाँदी सोने का काम आरंभ किया। आप के दो पुत्र हुए—लाड़िली प्रसादजी तथा दे[illegible] दासजी। आप दोनों ही भाई आज से करीब ५५ वर्ष पूर्व अलग २ हो गये। तभी से [illegible] देवीदासजी ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म स्थापित कर इस पर गोटे-किनारी का व्यव[illegible] आरंभ किया। इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ। आजकल यह फर्म इस व्यवसाय में [illegible] मानी जाती है। इसके अतिरिक्त संवत् १९७२ में आपने एक चीकन की भी दु[illegible] खोली। जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से व्यवसाय कर रही है। आप के पाँच पुत्र हुए। [illegible] नाम क्रमशः मदनलालजी, शम्भूनाथजी, शीतलप्रसादजी, रामचन्द्रजी तथा जुगमन्दिरदास [illegible] हैं। इनमें से बड़े लाला मदनलालजी तथा शीतलप्रसादजी का स्वर्गवास हो गया है। [illegible] १९६१ में लाला देवीदासजी का भी स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० शम्भूनाथजी तथा आपके भाई रामचन्द्रजी, जु[illegible] मन्दिर दासजी तथा स्व० लाला मदनलालजी के पुत्र शिखरचन्दजी तथा ज्ञानचन्दजी [illegible] आप सब लोग फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लखनऊ—मेसर्स देवीदास मदनलाल, चौक T. A. Gota—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ कंगना, गोटा किनारी, सलमा, सितारा, कामदानी और जरदोजी का [illegible] तथा सलमे के बने हुए हारों का व्यापार होता है।

लखनऊ—देवीदास मदनलाल, चौक—यहाँ चीकन के बने माल का व्यापार होता है।

लखनऊ—मेसर्स देवीदास मदनलाल ३८१ अमीनाबाद—यहाँ चाँदी, [illegible] [illegible] फर्म के माल का व्यापार होता है।

मेसर्स बद्रीदास छेदीलाल जैन

इस फर्म के मालिकों का निवासस्थान लखनऊ का है। आप लोग अग्रवाल जैन समाज के दिगम्बर सम्प्रदाय के महानुभाव हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक ला० बद्रीदासजी ने लगभग ५० वर्ष पूर्व मेसर्स बद्रीदास केदारनाथ के नाम से गोटे किनारी का व्यवसाय आरम्भ किया। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की और फर्म को काफी तरक्की दी। लगभग ३० वर्ष पूर्व आपके छोटे भाई ला० केदारनाथजी फर्म से अलग हो गये, तब ला० बद्रीदासजी ने अपना स्वतन्त्र व्यापार उपरोक्त नाम से खोला और फर्म को अच्छी तरक्की की अवस्था पर पहुँचाया। लाला बद्रीदासजी के स्वर्गवास के बाद आपके दत्तक पुत्र लाला छेदीलालजी ने फर्म के व्यापार को सँभाला। आपने भी फर्म के काम को अच्छी योग्यता से सञ्चालित किया। आपका स्वर्गवास लगभग ७ वर्ष पूर्व हो गया। तब से आपकी फर्म का सञ्चालन आपके पुत्र लाला बनवारीलालजी करने लगे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बनवारीलालजी तथा आपके भाई लाला मंगलसेनजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन लाला बनवारीलालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—बद्रीदास छेदीलाल गोटेवाले, चौक, लखनऊ—यहाँ गोटा, पट्ठा, बाकड़ी किरन, झालर आदि का काम होता है तथा अरदोजी, सलमा सितारा, तार कटाव और गोटे का व्यापार होता है।

मेसर्स लालबिहारी केदारनाथ

आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म के संस्थापक लाला केदारनाथजी ने लगभग २० वर्ष पूर्व गोटा किनारी के व्यवसाय को उपरोक्त नाम से आरम्भ किया। इसके पूर्व इस फर्म के आदि संस्थापक लाला केदारनाथजी ने अपने भाई लाला बद्रीदासजी के साथ मेसर्स बद्रीदास केदारनाथ के नाम से गोटा किनारी का व्यवसाय लगभग ७० वर्ष पूर्व आरम्भ किया था। तब से आप की फर्म पर यही काम हो रहा है। इस फर्म ने इस व्यवसाय में अच्छी उन्नति की है और यहाँ की गोटा किनारी का व्यवसाय करनेवाली फर्मों में यह अच्छी फर्म मानी जाती है। लाला केदारनाथजी ने अपनी स्वतन्त्र फर्म खोली और अच्छी सफलता प्राप्त की। इस फर्म की उन्नति का प्रधान श्रेय लाला केदारनाथजी को ही है। आपका स्वर्गवास सन् १९२५ में हुआ। आपके दो पुत्र थे बड़े का नाम लाला छेदीलालजी और छोटे का नाम गिरधारीलालजी था। जिसमें लाला छेदीलालजी स्व० लाला

स्व० सेठ गयाप्रसादजी (मन्नालाल मूलचंद) लखनऊ

लाला गणेशप्रसादजी मिश्रा (रघुवरदयाल गणेशप्रसाद) लखनऊ

लाला मूलचंदजी (मन्नालाल मूलचंद) लखनऊ

लाला फूलचंदजी (मन्नालाल मूलचंद) लखनऊ

मेसर्स मन्नालाल मूलचंद

आप लोग माधवगढ़ (ग्वालियर) जैपुर स्टेट के आदि निवासी हैं। पर लगभग ५ पुश्त से लखनऊ रहते हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के सोमानी सज्जन हैं।

सेठ मन्नालालजी ने स्वदेश से यहाँ आकर अपना व्यवसाय स्थापित किया और मेसर्स प्रभूदयाल मन्नालाल के नाम से कमीशन एजेण्ट तथा नलके का काम आरम्भ किया। इस व्यवसाय में लखनऊ निवासी लाला प्रभूदयालजी खत्री की हिस्सेदारी थी जो बहुत वर्षों तक रही। सेठ मन्नालालजी का स्वर्गवास हो गया। आपके बाद फर्म का प्रधान संचालन आपके पौत्र सेठ गयाप्रसादजी करने लगे। आपने फर्म के व्यवसाय की अच्छी तरक्की की और काम को अधिक विस्तृत रूप दिया। आप बड़े व्यवसायकुशल महानुभाव थे। आपने शाहदतगंज वाली अपनी कोठी के पास ही राधावल्लभ का एक विशाल मन्दिर बनवाया है। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७५ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ मूलचन्दजी तथा सेठ फूलचन्दजी ने फर्म का काम अपने हाथ में लिया। इस प्रकार इस पुराने फर्म ने बहुत प्रतिष्ठा और उन्नति की पर सम्वत् १९८५ में इसके मालिक लोग अलग २ हो गये और सेठ गयाप्रसादजी के बड़े पुत्र सेठ मूलचंदजी ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से स्थापित किया। और वर्तमान में आप ही व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। आप स्वभाव के सरल एवं मिलनसार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल मूलचंद, कोठी शाहदतगंज, लखनऊ—यहाँ मालिकों का निवास-स्थान है और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल मूलचन्द आयलमिल डालीगंज लखनऊ—यहाँ तेल का मिल है जहाँ सब प्रकार का तेल तैयार होता है। इसके साथ आयरन फाउन्ड्री और आटे की चक्की भी है।

मेसर्स मन्नालाल फूलचंद

इस फर्म के संचालक सेठ गयाप्रसादजी के छोटे पुत्र सेठ फूलचंदजी हैं। सम्वत् १९८५ में जब पुरानी फर्म मेसर्स प्रभूदयाल मन्नालाल के सब मालिक अलग २ हो गये और अपना अपना व्यवसाय स्वतंत्र रूप से करने लगे तब सेठ फूलचंदजी ने भी अपना स्वतन्त्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से खोला। आपके फर्म पर महाजनी लेन देन तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स सौभागचंद रिखबदास चौक
„ हीरालाल चुन्नीलाल „

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कालीचरन जगन्नाथ अमीनाबाद
„ जमनादास मोहनलाल „
„ देवीदास मदनलाल „
„ नारायणदास जगन्नाथ „
„ मोहनलाल कन्हैयालाल राजा का बाजार
„ मदनलाल वल्लभदास विक्टोरिया स्ट्रीट
„ रामप्रसाद दामोदरदास अमीनाबाद
„ रामचन्द्र किशनचन्द „
„ रामजीमल कुंजबिहारी „
„ शिवनारायण शिवप्रसाद „
„ स्वदेशी भंडार „
„ शंकरदास पुरुषोत्तमदास „
„ हरिसिंह बालसिंह „

चिकन और कढ़ाई वाले—

मेसर्स अब्दुल रहीम अब्दुल अज़ीज़ चौक
„ गोकुलचंद जयनारायन „
„ छंगामल रामरतन „
„ बद्रीदास जगन्नाथ „
„ भैरवनाथ विश्वनाथ „
„ विशेश्वरनाथ बाबूराम „
„ लालबिहारी टंडन „

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बंसीधर शहादतगंज
„ कन्हैयालाल दाताराम डालीगंज
„ कन्हैयालाल जगन्नाथ „
„ कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल शहादतगंज

मेसर्स नन्हेमल नरोत्तमदास शहादतगंज
„ पोकरमल विशंभरदयाल फतेगंज
„ प्रभुदयाल गणेशप्रसाद शहादतगंज
„ बद्रीदास छराँवीलाल „
„ बंसीधर जानकीप्रसाद फतेगंज
„ मन्नालाल फूलचंद शहादतगंज
„ मातादीन रामनारायण „
„ मांगीलाल प्रेमसुख „
„ रामदुलारे हरनामप्रसाद फतेगंज
„ राजामल हजारीलाल डालीगंज
„ लक्ष्मीनारायण लादूराम शहादतगंज
„ सीताराम रामानन्द डालीगंज
„ हरदयालमल बलदेवप्रसाद फतेगंज

घी और चीनी के व्यापारी—

मेसर्स अब्दुल सिकंदर राजा बाजार
„ जयजयराम तुलसीराम आगामीर ड्योढ़ी
„ भीखामल मुसद्दीलाल राजाबाजार
„ रघुबरदयाल गोवर्धनदास „
„ साहबदीन रघुबरदयाल आगामीर ड्योढ़ी
„ हीरालाल चुन्नीलाल शहादतगंज

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स ईश्वरीप्रसाद महादेवप्रसाद चौक
„ कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल „
„ किशोरीलाल त्रिभुवनदास „
„ गुलाबराय गोविन्दप्रसाद „
„ गयाप्रसाद शंभुनाथ „
„ चांदीमल भोलानाथ „
„ मन्नीलाल गिरधारीलाल „
„ मुरलीधर मक्खनलाल „

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल फूलचन्द शहादतगंज लखनऊ—T. A. somam यहाँ कमीशन एजेन्ट और बैंकिंग का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल फूलचंद डालीगंज लखनऊ—यहाँ गल्ला तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल फूलचंद नयागंज, कानपुर—आढ़त का और बैंकिंग का काम होता है।

कागज के व्यापारी

मेसर्स बंसीधर कुन्दनलाल

इस फर्म के मालिक बहुत अर्से से यहीं निवास करते हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के जैन सज्जन हैं। इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। शुरू से ही यह फर्म कागज का व्यापार करती आ रही है। इस व्यवसाय में यहाँ यह पहली ही फर्म मानी जाती है। इस फर्म की विशेष तरक्की स्व० सेठ बंसीधरजी के द्वितीय पुत्र लाला मुन्नालालजी के द्वारा हुई। वर्तमान में आपही इस फर्म के मालिक हैं। आप मिलनसार, व्यापार कुशल और सज्जन व्यक्ति हैं। आपने यहाँ लखनऊ जंकशन पर एक बहुत बड़ी और विशाल धर्मशाला बनाई है। इसके साथ जैन मन्दिर भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स बंसीधर कुन्दनलाल, अहियागंज, नादान महल रोड T. A -Munnay—यहाँ कागज का बड़ा व्यापार होता है।

गोटे किनारी के व्यापारी—

मेसर्स कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल चौक
" जवाहरलाल गोविन्दप्रसाद "
" जानकीप्रसाद अग्रवाल "
" देवीदास मदनलाल "
" परसादीलाल कुन्दनलाल "
" बद्रीदास छेदालाल "
" रामचरन लक्ष्मीनारायण "
मेसर्स रामेश्वरदास गोटेवाले "
" लालबिहारी केदारनाथ "

जौहरी—

मेसर्स इन्द्रचन्द हेमचंद चौक
" जवाहरलाल मानकचंद "
" जवाहरलाल मोतीलाल "
" दीपचन्द सुन्दरलाल "
" फूलचंद चन्देमल "

मेसर्स सौभागचंद रिखबदास चौक
,, हीरालाल चुन्नीलाल ,,

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कालीचरन जगन्नाथ अमीनाबाद
,, जमनादास मोहनलाल ,,
,, देवीदास मदनलाल ,,
,, नारायणदास जगन्नाथ ,,
,, मोहनलाल कन्हैयालाल राजा का बाजार
,, मदनलाल बल्लभदास विक्टोरिया स्ट्रीट
,, रामप्रसाद दामोदरदास अमीनाबाद
,, रामचन्द्र किशनचन्द ,,
,, रामजीमल कुंजबिहारी ,,
,, शिवनारायण शिवप्रसाद ,,
,, स्वदेशी भंडार ,,
,, शंकरदास पुरुषोत्तमदास ,,
,, हरिसिंह बालसिंह ,,

किराना और रूई वाले—

मेसर्स अब्दुल रहीम अब्दुल अजीज चौक
,, गोकुलचंद जयनारायण ,,
,, छंगामल रामचरण ,,
,, बद्रीदास जगन्नाथ ,,
,, भैरवनाथ विश्वनाथ ,,
,, त्रिवेसरनाथ बाबूराम ,,
,, लालबिहारी टंडन ,,

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बंसीधर शहादतगंज
,, कन्हैयालाल दाताराम डालीगंज
,, कन्हैयालाल जगन्नाथ ,,
,, कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल शहादतगंज

मेसर्स नन्हेमल नरोत्तमदास शहादतगंज
,, पोकरमल विशंभरदयाल फतेगंज
,, प्रभुदयाल गणेशप्रसाद शहादतगंज
,, बद्रीदास बराबीलाल ,,
,, बंसीधर जानकीप्रसाद फतेगंज
,, मन्नालाल फूलचंद शहादतगंज
,, मातादीन रामनारायण ,,
,, मांगीलाल प्रेमसुख ,,
,, रामदुलारे हरनामप्रसाद फतेगंज
,, राजामल हजारीलाल डालीगंज
,, लक्ष्मीनारायण लादूराम शहादतगंज
,, सीताराम रामानन्द डालीगंज
,, हरदयालमल बलदेवप्रसाद फतेगंज

घी और चीनी के व्यापारी—

मेसर्स अब्दुल सिकंदर राजा बाजार
,, जयजयराम तुलसीराम आगामीर ड्योढ़ी
,, भीखामल मुसद्दीलाल राजाबाजार
,, रघुबरदयाल गोवर्धनदास ,,
,, साहबदीन रघुबरदयाल आगामीर ड्योढ़ी
,, हीरालाल चुन्नीलाल शहादतगंज

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स ईश्वरीप्रसाद महादेवप्रसाद चौक
,, कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल ,,
,, किशोरीलाल त्रिभुवनदास ,,
,, गुलाबराय गोविन्दप्रसाद ,,
,, गयाप्रसाद शंभुनाथ ,,
,, बालीमल भोलानाथ ,,
,, मन्नीलाल गिरधारीलाल ,,
,, मुरलीधर मक्खनलाल ,,

कानपुर

यह नगर ई० आई० आर० की मेन लाइन पर बसा हुआ है। यहाँ से जी० आई० पी० रेलवे की एक शाखा झांसी को और दूसरी बाँदा को जाती है। इसके अतिरिक्त बी० एन० डब्लू० आर० की कानपुर कटिहार वाली मेन लाइन का जहाँ यह नगर पश्चिमीय टरमिनस है वहाँ बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की छोटी लाइन अछनेरा होती हुई यहाँ से आगरा तक गयी है इस नगर के बायी ओर से भागीरथी नदी बहती है।

यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत पुराना नहीं है। कहा जाता है कि इसे अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के भाई कान्ह कुँवर ने बसाया था जिसकी पुरानी बस्ती वर्तमान नगर से कुछ ही दूर पुराने कानपुर के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। जिस समय अंग्रेजों ने मुगल सम्राट् से दीवानी ली उसी समय यह भूप्रदेश भी उनके प्रबन्ध में आया और राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समझ कर ही अवध के नवाबों की राजधानी लखनऊ के समीप गंगा के इस पार अंग्रेजों ने अपनी छावनी स्थापित की। परिणामतया इसके समीप छोटे से नगर की वृद्धि हो चली और समय पाकर इतना बड़ा नगर बस गया। यहाँ एक समय बहुत बड़ी छावनी थी जिसका प्रमाण वर्तमान नगर के महल्ले दे रहे हैं। नगर के कितने ही मुहल्ले जैसे फीलखाना, तोपखाना, रोटी गुदाम, फर्रासखाना, हुलरखाना आदि आज भी बताते हैं कि किसी समय छावनी के विभिन्न विभाग यहाँ पर वर्तमान थे। कानपुर से कुछ ही मील की दूरी पर ब्रह्मावर्त नामक पुराना स्थान है। जिस समय दक्षिण में पेशवा लोगों के शासन का अन्त हुआ था। उस समय अन्तिम बाजीराव को ब्रह्मावर्त में जागीर दे कर रक्खा गया था। सन् १८५७ ई० के सिपाही विप्लव के समय इसी ब्रह्मावर्त के पेशवाई परिवार के नाना साहिब ने इस नगर पर अधिकार कर लिया था पर जब शान्ति स्थापित हुई तो पुनः यह नगर अंग्रेजों के शासन में उन्नति करने लगा और १९ वीं शताब्दी के अन्तिम काल और २० वीं के प्रारम्भ काल में यह नगर कला कौशल एवं व्यापार वाणिज्य परिपूर्ण एक विस्तृत एवं जनाकीर्ण नगर हो गया। इसकी इन्हीं विशेषताओं से इसे लोग उत्तर भारत का 'मैनचेस्टर' कहते हैं।

यह नगर उत्तर भारत के उपजाऊ भूभाग में है अतः यहाँ गल्ला बहुतायत से आता है और तेलहन माल का बहुत बड़ा स्टाक रहता है। इसी प्रकार यहाँ रुई की प्रचुरता और

कानपुर

यह नगर ई० आई० आर० की मेन लाइन पर बसा हुआ है। यहाँ से जी० आई० पी० रेलवे की एक शाखा झांसी को और दूसरी बाँदा को जाती है। इसके अतिरिक्त बी० एन० डब्लू० आर० की कानपुर कटिहार वाली मेन लाइन का जहाँ यह नगर पश्चिमीय टरमिनस है वहाँ बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की छोटी लाइन अछनेरा होती हुई यहाँ से आगरा तक गयी है इस नगर के बायीं ओर से भागीरथी नदी बहती है।

यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत पुराना नहीं है। कहा जाता है कि इसे अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के भाई कान्ह कुँवर ने बसाया था जिसकी पुरानी बस्ती वर्तमान नगर से कुछ ही दूर पुराने कानपुर के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। जिस समय अंग्रेजों ने मुगल सम्राट् से दीवानी ली उसी समय यह भूप्रदेश भी उनके प्रबन्ध में आया और राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समझ कर ही अवध के नवाबों की राजधानी लखनऊ के समीप गंगा के इस पार अंग्रेजों ने अपनी छावनी स्थापित की। परिणामतया इसके समीप छोटे से नगर की वृद्धि हो चली और समय पाकर इतना बड़ा नगर बस गया। यहाँ एक समय बहुत बड़ी छावनी थी जिसका प्रमाण वर्तमान नगर के महल्ले दे रहे हैं। नगर के कितने ही मुहल्ले जैसे फीलखाना, तोपखाना, रोटी गुदाम, फर्रासखाना, सुतरखाना आदि आज भी बताते हैं कि किसी समय छावनी के विभिन्न विभाग यहाँ पर वर्तमान थे। कानपुर से कुछ ही मील की दूरी पर ब्रह्मावर्त नामक पुराना स्थान है। जिस समय दक्षिण में पेशवा लोगों के शासन का अन्त हुआ था। उस समय अन्तिम बाजीराव को ब्रह्मावर्त में जागीर दे कर रक्खा गया था। सन् १८५७ ई० के सिपाही विप्लव के समय इसी ब्रह्मावर्त के पेशवाई परिवार के नाना साहिब ने इस नगर पर अधिकार कर लिया था पर जब शान्ति स्थापित हुई तो पुनः यह नगर अंग्रेजों के शासन में उन्नति करने लगा और १९ वीं शताब्दी के अन्तिम काल और २० वीं के आरम्भ काल में यह नगर कला कौशल एवं व्यापार वाणिज्य परिपूर्ण एक विस्तृत एवं जनाकीर्ण नगर हो गया। इसकी इन्हीं विशेषताओं से इसे लोग उत्तर भारत का 'मैनचेस्टर' कहते हैं।

यह नगर उत्तर भारत के उपजाऊ भूभाग में है अतः यहाँ गल्ला बहुतायत से आता है और तेलहन माल का बहुत बड़ा स्टाक रहता है। इसी प्रकार यहाँ रुई की प्रचुरता और

मिलों की अधिकता के कारण यह नगर देशी मिलों के बने कपड़े का जहाँ केन्द्र है वहाँ रेलों की सुविधा के कारण विलायती कपड़े का भी बहुत बड़ा केन्द्र माना जाता है। उत्तर भारत में दिल्ली के बाद किराने की यह बहुत बडी मण्डी मानी जाती है। यहाँ दाल के कितने ही कारखाने हैं जहाँ उत्तम दाल तैयार होती है और भारत के सभी प्रान्तों को बहुत बड़े परिमाण में भेजी जाती है। यहाँ का चमड़ा भी बहुत मशहूर है। खाल का बहुत बड़ा व्यापार होता है और साथ ही यहाँ खाल से चमड़ा पकाने और तैयार करने के भी कितने ही आधुनिक यांत्रिक सुविधाओं से संयुक्त बड़े बड़े कारखाने हैं। इतना ही नहीं, चमड़े से जूते, जीन, हण्टे, बैग, बक्स आदि भिन्न प्रकार के चमड़े के सामान बनाने के भी इसी प्रकार के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहाँ कितनी ही शुगर फैक्ट्रियाँ हैं जो शक्कर तैयार करती हैं। यहाँ जहाँ तेजाब आदि रासायनिक पदार्थ तैयार करने का एक बड़ा कारखाना है वहाँ शराब तैयार करने और ब्रुश बनाने के भी एक एक कारखाने हैं।

यहाँ भिन्न २ माल का व्यापार भी प्रायः भिन्न नाम से पुकारे जानेवाले मोहल्लों में ही प्रधान रूप से होता है। इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं।

गल्ले	का व्यापार	कलेक्टरगंज में
तेलहन	,,	कोपड़गंज में
कपास	,,	,,
रूई	,,	,,
किराना	,,	नयागंज में
तम्बाकू और शीरा	,,	रामगंज में
गुड़	,,	हूलागंज में
कपड़ा	,,	जेनरलगंज में
चाँदी सोना	,,	चौक तथा नयागंज में
दाल	,,	(तुअर की) नहर किनारे दालमण्डी में
		(उड़द आदि की) पुरानी दालमण्डी में
चमड़ा	,,	बेगमगंज

यहाँ की तोल प्रायः सभी माने की ४० सेर के मन से है पर यदि आढ़तियों की मारफत शक्कर ली जाय तो ४८॥ सेर तथा गल्ला ४१॥ सेर के मन से मिलेगा।

यह नगर अपने व्यापार-वाणिज्य और कल-कारखानों के लिये विशेष महत्व का स्थान रखता है अतः यहाँ के कतिपय प्रधान कारखानों की नाम सूची हम नीचे दे रहे हैं जो इस प्रकार है।

काटन मिल्स—

इलगिन मिल्स कम्पनी लि०
ऐथर्टन मिल्स लि०
कानपुर काटन मिल्स को० काकोमी फैक्ट्री
कानपुर टेक्सटाइल्स लि०
कानपुर काटन मिल्स को०
जुग्गीलाल कमलापत स्पिनिंग वीविंग मिल्स
न्यू विक्टोरिया मिल्स को० लि०
मेवर मिल्स को० लि०
स्वदेशी काटन मिल्स को० लि०

काटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—

श्रीकृष्ण जीनिंग एण्ड प्रेसिंग मिल्स
श्रीराम महादेवप्रसाद काटन प्रेसिंग फैक्टरी
ओ३म काटन जीनिंग मिल्स
गंगा काटन हाइड्रोलिक प्रेस
जानसन जीनिंग मिल्स
डी. एन चोखानी जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी
कार्यन जीनिंग फैक्टरी

ऊनी मीलें—

कानपुर ऊलन मिल्स कम्पनी
हैदराबाद कानपुर ऊलन मिल्स कम्पनी

बेल्ट बनाने की मिल—

आर. अडवाल एण्ड को० काटन बेल्ट फैक्टरी

जूट मिल—

जुग्गीलाल कमलापत जूट मिल
[illegible] जूट मिल

[illegible] मिल—

कानपुर [illegible] मिल कम्पनी
[illegible] मिल्स
[illegible] मिल्स एण्ड जीनिंग फैक्ट्री

दीनानाथ हेमराज आइल मिल्स
नारायणदास लक्ष्मणदास आइल मिल्स [illegible] एण्ड आइर्न फाउण्ड्री
प्रीमियर आइल मिल्स लि०
मातादीन भगवानदास आइल मिल्स एण्ड ब्रास फाउण्ड्री
यू० पी० सेन्ट्रल मिल्स
श्रीगोपाल काटन जीनिंग सोप एण्ड आ० मिल्स

शक्कर के कारखाने—

कानपुर शुगर वर्क्स लि०
बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर फैक्ट्री
यूनियन इण्डियन शुगर मिल्स को० लि०

फ्लोर मिल्स—

कानपुर फ्लोर मिल्स को० लि०
गंगा फ्लोर मिल्स
श्रीराम महादेवप्रसाद जीनिंग रोलर एण्ड फ्लोर मिल्स

लोहे के कारखाने—

श्याम आयर्न एण्ड स्टील को० लि०
यू० कोठारी एण्ड को०

[illegible] का कारखाना—

कानपुर [illegible] को० लि०

बर्फ का कारखाना—

भार्गव आइस फैक्ट्री

शराब का कारखाना—

इण्डियन डिस्टिलरी कम्पनी,

[illegible] का कारखाना—

ई० [illegible] एण्ड को० लि०

[illegible] के कारखाने—

कानपुर [illegible] वर्क्स [illegible] (क्रमशः)

बाँकेबिहारीलालजी ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय मेसर्स बैजनाथ बालमुकुंद के उपरोक्त नाम से खोला। आप की फर्म यों तो आरम्भ से ही कितने ही कल-कारखानों जैसे बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर फैक्टरी कानपुर, बैजनाथ बालमुकुन्द जीनिंग फैक्टरी माधोगञ्ज तथा डिस्टिलरी आदि की मालिक थी पर आपने बैजनाथ बालमुकुन्द ऊलन मिल्स नामक एक ऊनी माल तैयार करने का मिल भी खोल दिया जो आज पर्यन्त सफलता से काम रहा है।

बाबू बाँकेबिहारीलालजी का ही यह साहस था कि जिसके प्रतिफलस्वरूप आपने व्यापारिक क्षेत्र में एक नवीन लहर दौड़ा दी और भारतीय पूँजी द्वारा और भारतीय परिश्रम से इस भारतीयों के सञ्चालन में एक ऊलन मिल स्थापित कर दी। इस विशेष दृष्टि से आपका साहस अवश्य ही सराहनीय है। इसी प्रकार आपके शक्कर मिल की तैयार शक्कर भी अपनी पवित्रता एवं सरसता में अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुकी है जिसके कारण कितने ही राजा महाराजाओं की ओर से फर्म को सनदें मिली हुई हैं। फलतः राजपूताना और मध्य भारत में इस फर्म के कारखाने की शक्कर की पर्याप्त माँग रहती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू बाँकेबिहारीलालजी तथा आपके पुत्र बाबू मदनबिहारीलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—बैजनाथ बालमुकुन्द थटाई मोहाल कानपुर T. A. Lalbanky (लाल बाँकी)—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा सभी प्रकार के कारखानों के संचालन का काम होता है।

मेसर्स—बालमुकुन्द बाँकेबिहारीलाल जेनरलगंज कानपुर—यहाँ ऊनी तथा सूती कपड़े का काम तथा अपने ऊलन मिल के माल की बिक्री का काम होता है।

दि बैजनाथ बालमुकुन्द ऊलन मिल्स अनवरगंज कानपुर—यहाँ फर्म का एक ऊलन मिल है जिसमें अनुमानतया २५० मजदूर काम करते हैं। यहाँ तिब्बत, काश्मीर, शिमला, भटिंडा, फाजिल्का, हनुमानगढ़, हलद्वानी, कालिमपुंग, आगरा, तथा मारवाड़ आदि से ऊन आती है और उससे बढ़िया शाल, लोई, रग, कम्बल, सर्ज, फलानैल, कोट तथा पट्टी आदि तैयार की जाती हैं। इसीके साथ २ एक होजियरी मिल भी खोला जाने वाला है।

दि बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर मिल्स अनवरगञ्ज कानपुर—यहाँ शक्कर का कारखाना है। जिसमें २१८ के लगभग मजदूर रोज काम करते हैं और उत्तम शक्कर तैयार की जाती है।

बैजनाथ बालमुकुन्द जीनिंग फैक्टरी माधोगञ्ज (हरदोई)—यहाँ फर्म की जीनिंग फैक्टरी है जिसमें ४० जीनिंग मशीन हैं और लगभग १११ मजदूर रोज काम करते हैं।

इसके अतिरिक्त भागलपुर, मुजफ्फरपुर गोरखपुर, दिल्ली, आगरा, जबलपुर तथा कलकत्ता आदि भारत के सभी प्रधान २ नगरों में फर्म के ऊलन मिल की एजन्सियाँ है जहाँ ऊलन मिल का तैयार ऊनी माल अच्छे परिमाण में बिकता है और इसी प्रकार शक्कर मिल की शक्कर की माँग भी राजपूताना और मध्यभारत एवं मालवे में खूब रहती है।

मेसर्स जगन्नाथ बीजंराज

इस फर्म का हेड ऑफिस कलकत्ता में है। इसके वर्तमान मालिक सेठ नारायणदासजी बी० ए० हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में पेज नं० ४९० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, रूई, तेल की बिक्री एवं आढ़त का काम करती है। इस फर्म की यहाँ एक आइल मील तथा काटन जीनिंग फैक्टरी है। इसका यहाँ का पता कोपरगंज है। इसमें शाहगंज निवासी सेठ पन्नालाल बीजंराज का साझा है। आपका विस्तृत परिचय दूसरे भाग में बंगाल विभाग में पेज १०४ में दिया गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनाधरजी चौधरी हैं।

मेसर्स नारायणदास लक्ष्मनदास

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला रामप्रसादजी ने सम्वत् १९०९ के लगभग इस फर्म की स्थापना कानपुर में की थी। इस फर्म ने आरम्भ से ही उन्नति की ओर पैर बढ़ाया और फलतः कुछ ही वर्षों से बाद अर्थात् आज से लगभग ४० वर्ष के पूर्व फर्म ने नारायणदास आइल मिल्स नामक तेल का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था में काम कर रहा है। फर्म के मालिकों की व्यापार चातुरी के कारण तेल मील की अच्छी उन्नति हुई। आज इस मील में ७०० मन तेल और १५ सौ मन खली प्रति दिन तैयार होती है। तथा आधुनिक युग की यांत्रिक सम्पग्री से सुसज्जित होने के कारण सभी प्रकार का तेल तैयार करने के अतिरिक्त यह मील 'टर्की रेड आइल' डबल बाइल्ड लिण्डसीड आइल तथा साबुन आदि सभी प्रकार के बाई प्राडक्ट्स भी स्वयं घर में ही तैयार करता है। इस प्रकार कच्चे तेलहन माल को खरीद कर अपने यहाँ तेल, तथा खली तो यह मील तैयार करता है तथा रँगाई और पेन्ट एवं वार्निश के काम के लिये बचे हुए 'निकम्मे' कहाने वाले पदार्थ का भी सदुपयोग कर बाई प्राडक्स भी तैयार करता है। फलतः यह फर्म गवर्नमेंट के इण्डियन स्टोर्स डिपार्टमेन्ट, डायरेक्टर आफ कण्ट्रैक्ट शिमला आदि को सभी प्रकार का तेल और खली सप्लाई करती है और इसी प्रकार भारत की प्रधान रेलवेज को भी तेल सप्लाई करती है। फर्म

लाला नाथीरामजी कानोड़िया (नाथीराम गंगाप्रसाद) कानपुर

स्व० गणेशप्रसादजी दलाल कानपुर

लाला गंगाप्रसादजी कानोड़िया (नाथीराम गंगाप्रसाद) कानपुर

बाबू राधेश्याम गुप्त ([illegible]) कानपुर

इस समय फर्म की बहुत उन्नति हुई। तभी से सेठ शादीरामजी उपरोक्त नाम से स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं। आप बड़े व्यापारकुशल सज्जन हैं। आपने अपनी फर्म की भी शाखा खोली। तथा फर्म पर कई प्रकार का व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९१७ में गंजेज फ्लावर मिल को खरीदा। उस समय उसकी खराब हालत थी। उसे आपने सुधार उन्नतावस्था पर पहुँचा दिया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला शादीरामजी हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम गंगाप्रसादजी हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः ब्रजमोहनलालजी और देवीप्रसाद जी हैं। बड़े पुत्र एफ० ए० में विद्याध्ययन कर रहे हैं। आप भी मिलनसार एवं सज्जन महानुभाव हैं। आप भी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स शादीराम गंगाप्रसाद T. A. Flour—यहाँ हे० आ० है। तथा गंजेज फ्लॉवर मिल का काम होता है। यह मील रोजाना ३००० मन आटा, मैदा, सूजी, और चोकर तैय्यार करता है।

कलकत्ता—मेसर्स शादीराम गंगाप्रसाद २२ बड़तल्ला स्ट्रीट T. A. Samganga—यहाँ सब प्रकार की आढ़त का व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गोपीनाथ छंगामल

इस फर्म की स्थापना सन् १९०१ ई० में कानपुर में हुई थी। इसके आदि संस्थापक राय साहब बाबू गोपीनाथजी मेहरोत्रा तथा बाबू छंगामलजी हैं। यह फर्म आरम्भ से ही विलायती कपड़े का थोक व्यापार करती चली आयी है अतः वर्तमान में यह फर्म कानपुर में विलायती कपड़े का थोक व्यापार करनेवाली फर्मों में प्रधान मानी जाती है। यह फर्म सभी प्रकार के विलायती कपड़े का व्यापार करने वाली मानी जाती है यही कारण है कि यह फर्म सदा अपने यहाँ विलायती कपड़े का सभी प्रकार का बहुत बड़ा स्टाक रखती है जिससे उत्तर भारत के सभी केन्द्रों को अच्छे परिमाण में माल सप्लाई करती है। विलायती कपड़े के सम्बन्ध में इस फर्म का व्यापारिक सम्बन्ध विदेश के ब्रिटेन, फ्रान्स, आस्ट्रिया, जर्मनी एवं इटली आदि कितने ही औद्योगिक केन्द्रों से है। अतः उपरोक्त विदेशी केन्द्रों में तैयार होनेवाला सभी प्रकार का विलायती कपड़ा इस फर्म से तैयार या डिलीवरी के रूप में सदा मिल सकता है। इस फर्म का हेड आफिस कानपुर में है तथा इस फर्म के अन्य ब्रांच आफिस दिल्ली और अमृतसर में भी हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब बाबू गोपीनाथजी मेहरोत्रा तथा बाबू छंगामलजी कपूर हैं। आप दोनों ही महानुभाव फर्म के व्यापार संचालन में प्रधान भाग लेते हैं। आप दोनों ही खत्री समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल पुरानी चावल मंडी—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा सभी प्रकार के फैंसी विलायती माल का व्यापार होता है तथा बहुत बड़े परिमाण में माल सदा स्टाक में रहता है।

दिल्ली—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल क्लाथ मार्केट—यहाँ पीसगुड्स का इम्पोर्ट आफिस है और विलायती कपड़े का व्यापार होता है।

अमृतसर—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल सेन्ट्रल बैंक बिल्डिंग्स—यहाँ पीसगुड्स का इम्पोर्ट आफिस है तथा विलायती कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स गंगाधर बैजनाथ

इस फर्म के संचालकों का आदि निवास स्थान चुरू (बिकानेर) का है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बागला सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व हुई। इसके स्थापक सेठ गंगाधरजी हैं आपने यहाँ आकर कपड़े एवं गल्ले का व्यापार प्रारंभ किया। आपके दो पुत्र हुए सेठ बैजनाथजी और सेठ महीलालजी। सेठ बैजनाथजी का अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। इस समय फर्म का संचालन सेठ गंगाधरजी तथा आपके पुत्र महीलालजी करते थे। आपके सामने ही महीलालजी के सुपुत्र बाबू दीनानाथजी फर्म के कार्य का संचालन करने लग गये थे। आप व्यापारकुशल और चतुर सज्जन थे। आपने शुरू २ में स्वदेशी काटन मिल की सोल एजेंसी ली। इसके पश्चात कानपुर काटन मिल की भी एजेंसी आपने ली जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से चल रही है। अहमदाबाद के भी कई मिलों के कपड़े की आपने एजेन्सी ली। आप कॉटन का बहुत बड़ा व्यापार करते थे। कहने का मतलब यह है कि आप व्यापार में बहुत चतुर थे। व्यापार के साथ ही साथ सार्वजनिक कार्यों में भी आप बहुत योग देते थे। आपका यहाँ बहुत सम्मान था। आप करीब २० वर्ष तक म्युनिसिपल कमिश्नर रहे। आपका सार्वजनिक कार्यों में बड़ा अनुराग रहता था। आप अपर इंडिया चेम्बर आफ कॉमर्स और यू० पी० चेम्बर आफ कॉमर्स के जनक थे। मारवाड़ी स्कूल के स्थापित करने में सब से बड़ा भाग आप ही का था। स्थानीय सनातनधर्म कमर्शियल कालेज के स्थापन में भी आप खास व्यक्तियों में से थे। शिक्षा से आपको अधिक प्रेम था। आप

सेठ दीनानाथजी बागला (गंगाधर बैजनाथ) कानपुर

बाबू गणेशप्रसादजी बागला (गंगाधर बैजनाथ) कानपुर

बाबू रामेश्वरदासजी बागला एम० एल० ए०
(गंगाधर बैजनाथ) कानपुर

बाबू हरिहरजी बागला (गं

यहाँ की कई सार्वजनिक संस्थाओं के सभापति आदि के आसन सुशोभित कर चुके थे। तथा इन संस्थाओं को आपसे आर्थिक सहायता भी समय २ पर प्रदान किया करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ में, सेठ गंगाधरजी का संवत् १९७३ और सेठ मदीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९७४ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ बैजनाथजी के पुत्र सेठ गणेशीलालजी तथा सेठ दीनानाथजी के पुत्र सेठ रामेश्वरप्रसादजी तथा हरीशंकरजी हैं। आप दोनों ही सज्जन मिलनसार, शिक्षित एवं सुधरे हुए विचारों के हैं। वर्तमान में आपही लोग फर्म का संचालन करते हैं।

बा० रामेश्वरप्रसादजी म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप यू० पी० के मुख्य २ शहरों की तरफ से मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव एसेम्बली हैं। आप यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं में भाग लेते रहते हैं। कई के आप मेम्बर तथा कई के सभापति आदि हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गंगाधर बैजनाथ जनरलगंज, कानपुर—T. A. Bagla यहाँ बैंकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म पर स्वदेशी काटनमिल, कानपुर काटनमिल और अहमदाबाद की कई मिलों के कपड़े की सोल एजेंसी है।

मेसर्स गणेशनारायन मन्नालाल

इस फर्म का हेड आफिस पडरौना (गोरखपुर) है जहाँ इस फर्म के मालिक सेठ सूरजमलजी रहते हैं। यहाँ यह फर्म इस नाम से बम्बई वाले सर करीम भाई इब्राहिम की १४ मिलों की एजेन्ट है तथा इन मिलों के बने हुए कपड़े की बिक्री का काम करती है। इसका सचित्र परिचय पडरौना हेड आफिस के साथ दिया गया है।

मेसर्स गणेशप्रसाद दलाल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवासस्थान मौज नगर (जयपुर) का है। शुरू २ में गणेशप्रसादजी यहाँ आये तथा सूत की दलाली का व्यापार शुरू किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। पश्चात् आपने अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास हो गया है। आप व्यापार-चतुर और मेधावी सज्जन थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गणेशप्रसादजी के भाई हनुमानदासजी, रामेश्वरदासजी और मूलचन्दजी और आपके पौत्र रघुनाथप्रसादजी हैं। रामेश्वरप्रसादजी सार्वजनिक कार्यों में भी अच्छा योग देते रहते हैं। मारवाड़ी स्कूल के आप आनरेरी मंत्री हैं।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेव सहाय नारनौल—यहाँ बैंकिंग का काम होता है। यहाँ आपका निवासस्थान है।

मेसर्स वंशीधर गोपालदास

इस फर्म के मालिक फरुखाबाद के निवासी हैं। आप लोग रस्तोगी समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ १२८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स वेगराज हरद्वारीमल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान भिवानी है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के बागड़िया सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ वेगराजजी लगभग ६० वर्ष पूर्व कानपुर आये और कपड़े का व्यापार करने लगे। आपके पुत्र लाला हरद्वारीमलजी अपने पूज्य पिताजी की देख रेख में व्यापार संचालन का काम करने लगे। आप लोगों ने फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। लाला वेगराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९११ में हो गया तब से आपके पुत्र लाला हरद्वारीमलजी अपनी फर्म का संचालन करने लगे। आप व्यापारकुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६७ में हुआ और फर्म के संचालन कार्य को आपके पुत्र लाला बद्रीदासजी ने सम्हाला। आपने बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि कितने ही व्यापारिक केन्द्रों में अपनी फर्में खोलीं जो आज भी पूर्ववत् व्यापार कर रही हैं। आपने अपनी फर्म को अच्छी उन्नति दी है। इस समय इस फर्म के मालिक लाला बद्रीदासजी बागड़िया हैं। आप धार्मिक व्यक्ति हैं आपने एक धर्मशाला, बगीचा, गंगाजी का घाट एवं मन्दिर आदि स्थानीय आनन्देश्वर मंदिर परमट घाट पर बनवाये हैं। आपने भिवानी में भी जलकुण्ड तैयार कराया है। यहाँ की धर्मशाला में सदाव्रत की व्यवस्था भी है। आपने आनन्देश्वरजी के मंदिर का जीर्णोद्धार कराया है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—वेगराज हरद्वारीमल जेनरलगंज कानपुर—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ कपड़ा और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स—बद्रीदास बागड़िया जेनरलगंज कानपुर T. A. Ramunkar—यहाँ कपड़े के इम्पोर्ट का काम होता है।
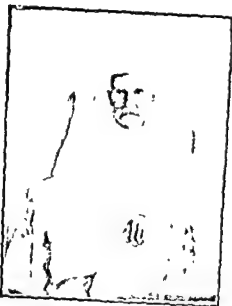
लाला बिहारीलालजी (बिहारीलाल रामचरन) कानपुर

बाबू गणेशनारायणजी लाखोटिया (मनोहरदास रामप्रसाद) कानपुर

...शरदजी पुत्र (बिहारीलाल रामचरन) कानपुर

बाबू हरिकृष्णजी पुत्र (मनोहरदास रामप्रसाद) कानपुर

मेसर्स—बद्रीदास बागड़िया २०१ हरीसन रोड कलकत्ता T. A. Anandeswar यहाँ कपड़ा और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—बद्रीदास बागड़िया न्यू क्लाथ मार्केट दिल्ली—यहाँ विलायती कपड़े की एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स—बैजराज जुगलकिशोर पञ्चागली बम्बई नं० २ T. A. Punchkuti.—यहाँ कपड़े की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स—बद्रीदास गयाप्रसाद जनरलगंज, कानपुर—यहाँ देशी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल रामचरन

इस फर्म की स्थापना लाला जग्गूमलजी ने लगभग ७५ वर्ष पूर्व कानपुर में की थी। इस फर्म पर आरम्भ से ही कपड़े का थोक व्यापार होता आ रहा है। इस फर्म के आदि संस्थापक लाला जग्गूमलजी ने फर्म के व्यापार को उन्नत अवस्था में पहुँचाया पर आपके पुत्र लाला बिहारीलालजी ने अपने व्यापारकौशल से फर्म को नगर की समुन्नत फर्मों की उच्च श्रेणी पर पहुँचाया। आपके पुत्र बाबू रामचरनजी गुप्त भी व्यापार में अच्छा भाग लेते हैं। आप सुधरे हुए विचारों के एक होनहार नवयुवक हैं। आप यू० पी० चेम्बर ऑफ कामर्स की एक्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्य, कानपुर कपड़ा कमेटी के सीनियर वायस चेयर मैन, यू० पी० ट्रेड यूनियन के कैशियर तथा कानपुर म्यूनिसिपलबोर्ड के सदस्य हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिकों में लाला बिहारीलालजी, लाला रामचरनजी, और लाला रामकिशनजी ही प्रधान हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं और कानपुर के आदि निवासियों में है। इस फर्म के विस्तृत व्यापार का संचालन लाला बिहारीलालजी ही प्रधान रूप से करते हैं।

इस फर्म की देख रेख में नगर में कपड़े की ११ फर्में तथा गल्ले की १ फर्म चल रही है। जहाँ थोक व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त कपड़े के इम्पोर्ट का एक पीसगुड्स इम्पोर्ट आफिस भी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स बिहारीलाल रामचरन जेनरल गंज कानपुर T. A. Gopal—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा बैंकिंग, लैण्ड होल्डर्स एवं गवर्नमेंट कन्ट्राक्ट का व्यापार भी होता है।

२ मेसर्स—चंद्रिकाप्रसाद रामस्वरूप जेनरल गंज कानपुर—यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है तथा जापानी और देशी मिलों के माल का व्यापार भी होता है। यह फर्म कमीशन एजेन्ट के रूप में काम करती है। यहाँ मलमल आदि का काम होता है।

मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल

इस फर्म की स्थापना सेठ गिरधरलालजी द्वारा सम्वत् १९२७ में हुई। पहले इस फर्म के संचालक मेसर्स बिहारीलाल भवानीप्रसाद के नामसे देशी कपड़े एवं सूत का व्यापार करते थे। इस समय भी इस फर्म पर अपना पुराना व्यवसाय देशी कपड़ा एवं सूत का होता है। इस फर्म की सेठ गिरधरलालजी ने अच्छी उन्नति की। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन थे। आपका खास निवासस्थान टांडा (फैजाबाद) का है। आपके २ भाई और हैं जिनके नाम रामेश्वरप्रसादजी तथा विशम्भरनाथजी हैं। सेठ गिरधरलालजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५२ में हो गया।

आपके पश्चात् फर्म के संचालन का कार्य आपके भ्राता एवम् आपके पुत्र केदारनाथजी बलभद्रप्रसादजी एवम् द्वारकानाथजी करते हैं। आप लोगों ने फर्म के व्यवसाय को बहुत उन्नतावस्था में पहुँचाया। आपने सम्वत् १९७३ में कानपुर में तथा सम्वत् १९७८ में बटुवल (नेपाल) और नेपालगंज में फर्म खोले तथा टांडा में छपाई का कारखाना खोला, जिसमें १२५ मजदूर रोजाना कार्य करते हैं। इसी प्रकार अपने व्यापार को शनैः २ उन्नति देते हुए सम्वत् १८८० में आपने कानपुर काटन मिल के कपड़े की एजेन्सी ली। इसके पश्चात् रामचन्द्र काटन मिल हाथरस तथा श्री गङ्गा काटन मिल्स मिर्जापुर के सूत की बिक्री की एजंसी इस फर्म पर हुई। इसी प्रकार अहमदाबाद के भी कई मिलों के माल की सेलिंग एजेन्सी इस फर्म पर है। आप लोगों ने कानपुर में ही किराने का व्यवसाय करने के लिए एक किराने की भी फर्म खोली। इसी प्रकार आप लोगों ने अपने व्यवसाय को बहुत उन्नतावस्था में पहुँचाया। वर्तमान में आप लोग ही इस फर्म के मालिक हैं।

बा० बलभद्रप्रसादजी टांडा म्युनिसिपल कमेटी के चेयरमेन रह चुके हैं। आप वर्तमान में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। यू. पी. चेम्बर आफ् कामर्स के आप मेम्बर हैं। इसी प्रकार कई संस्थाओं में आपका सहयोग है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

टांडा (फैजाबाद)—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल—यहां हेड आफिस है। यहां बैंकिंग, अर्ड़तदारी, कपड़ा, सूत एवम् गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यहाँ आपका एक कारखाना है जिसमें १२५ आदमी कपड़े की छपाई का काम करते हैं।

कानपुर—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल हटियागंज, T. A. Bhawani—यहाँ बैंकिंग, कपड़ा, सूत एवम् किराने की आढ़त का व्यापार होता है। इस फर्म में कई मिलों की कपड़े एवम् सूत की सेलिंग एजेंसियाँ हैं।

मेसर्स रामनारायन किशनदयाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है। जहाँ इसके वर्तमान मालिक सेठ घनश्यामदासजी रहते हैं। बम्बई में यह फर्म मेसर्स चेनीराम जेसराज के नाम से व्यापार करती है। यहाँ यह फर्म टाटा की मिलों की एजेन्ट है अतः टाटा की मिलों का बना कपड़ा यहाँ बेचती है। इसका सचित्र परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ ४५ पर दिया गया है।

मेसर्स रामकुमार रामेश्वरदास

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ (राजपुताने) के आदि निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्यसमाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग २६ वर्ष पूर्व सेठ रामकुमारजी के पूर्वजों ने की थी पर फर्म का प्रधान संचालन आरम्भ से आप ही करते आ रहे हैं। आप की फर्म पर यों तो सभी प्रकार के कपड़े का घरू बिक्री और आढ़त का काम बहुत बड़ी तादाद में होता है पर साथ ही मुहानपुर की मील तथा लखनऊ की गुरुसहाय मिल के माल की एजन्सी भी है। इस फर्म के मालिक सेठ रामकुमारजी, तथा आपके भ्राता सेठ रामेश्वरदासजी तथा आपके अन्य भ्राता लोग हैं। सेठ रामकुमारजी लगभग १२ वर्ष तक स्थानीय म्यूनिसिपलबोर्ड के कमिश्नर रहे हैं। आप स्थानीय फाइनेन्स कमेटी के चेयरमैन तथा यहाँ के यूनाइटेड चेम्बर आफ कामर्स के वायस चेयरमैन, कानपुर कपड़ा कमेटी के चेयरमैन तथा मारवाड़ी हाईस्कूल के सेक्रेटरी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रामकुमार रामेश्वरदास बाबू की कोठी T. A. Newatia कानपुर—यहाँ सभी प्रकार के कपड़े की बिक्री तथा आढ़त का बहुत बड़ा काम होता है।

नेवटिया आइल मिल्स गाजीपुर—यहाँ इस फर्म का एक आइल मील तथा आइस फैक्टरी है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ता तथा बम्बई आदि अन्य स्थानों पर भी फर्म की शाखायें हैं। जहाँ फर्म कपड़े का काम करती है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण गिरधारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) का है। आप लोग अग्रवाल वैश्यसमाज के बजाज सज्जन हैं। यह फर्म करीब २० वर्षों से इसी नाम से कपड़े का कारबार कर रही है। इसकी स्थापना से० लक्ष्मीनारायणजी ने की। शुरू २ में इस पर

बैङ्कर्स एण्ड कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स इच्छाराम रामदयाल

इस फर्म के मूल संस्थापक स्व० बाबू इच्छारामजी हैं। आपने लगभग १५० वर्ष पहले अपने मूलनिवास-स्थान भगवन्त नगर (उन्नाव) में बर्तनों का व्यापार प्रारम्भ किया था। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। जिस समय अंग्रेजों ने कानपुर में अपनी बस्ती बसाई उस समय आपने भी अपनी शाखा कानपूर में खोल दी। बाबू इच्छारामजी का स्वर्गवास होने के पश्चात् इसके मालिक अलग २ होगये। तब से बाबू देवीदीनजी और बाबू रामप्रसादजी ने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय पश्चात् इस फर्म ने अपने धातु वाने के व्यवसाय को बन्दकर बैङ्किंग व्यवसाय को उत्तेजित किया। बाबू देवीदीनजी और बाबू रामप्रसादजी के पश्चात् इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू गोविन्दलालजी उर्फ राजा, तथा आपके छोटे भ्राता बाबू शाहिजादा लालजी के हाथों में आया। बाबू शाहिजादा लालजी के हाथों से इस फर्म के बैङ्किङ्ग व्यापार को बहुत तरक्की मिली। आपके समय में इस फर्म ने अच्छी ख्याति प्राप्त की। इस टाइम में इस फर्म की जमींदारी भी बहुत विस्तीर्ण होगई। बाबू बालगोविन्द तथा बाबू शाहिजादेलाल के स्वर्गवास के पश्चात् इस फर्म का संचालन भार, बाबू बालगोविन्दजी उर्फ राजा के एकमात्र पुत्र बाबू जुगलकिशोरजी के हाथ में आया। आपके हाथों से भी इस फर्म के बैङ्किंग व्यवसाय और जमींदारी को बहुत तरक्की मिली। आपने अपने पूज्यपिता और चचा की स्मृति में सनातन धर्म कॉलेज का दर्शनीय हॉल निर्माण करवाकर उसमें दोनों महानुभावों के तैलचित्र लगवाये।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू जुगलकिशोरजी तथा आपके पुत्र बाबू मनमोहनलालजी, बाबू शिवमोहनलालजी, बाबू गुरु प्रसादजी तथा बाबू गुरु चरणजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपूर—मेसर्स इच्छाराम रामदयाल बैङ्कर्स मालरोड—यहाँ पर बैङ्किङ्ग और जमींदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

पण्डित गुरुप्रसादजी शुक्ल

आप कान्यकुब्ज-ब्राह्मण समाज के शुक्ल सज्जन हैं। आपके पूर्वज जि० उन्नाव, तहसील साईपुर गांव पट्टी उसमान के रहनेवाले थे। इस शुक्ल परिवार के पूर्व पुरुष पं० बद्रीनाथजी व्यापारिक क्षेत्र में पूरी गति विधि रखते थे। इस सम्बन्ध में आपने सरकारी
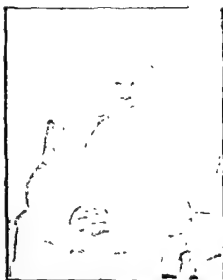
पं० सरयूनारायणजी तिवारी (रेवतीराम प्रयागनारायण) कानपुर

पं० देवनारायणजी तिवारी (रेवतीराम प्रयाग-नारायण) कानपुर

पं० शिवनारायणजी तिवारी (रेवतीराम प्रयाग-नारायण) कानपुर
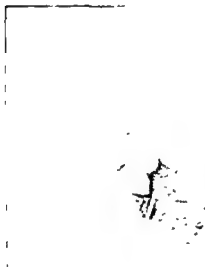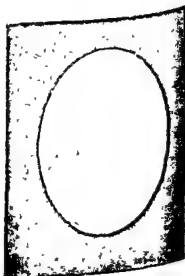
यज्ञजी तिवारी ने फर्म के काम को संभाला और मन्दिर के अहाते में वैकुंठ बाजार के नाम से एक अच्छी मार्केट बनवाई। पं० शेषनारायणजी तिवारी म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। आप अच्छे सुधरे हुए विचारों के महानुभाव हैं। पं० सरजूनारायणजी के ४ पुत्र हुए ये पं० नरनारायनजी, पं० गोविन्दनारायणजी तथा पं० कामराजनारायणजी हैं जिसमें से पं० नित्य-नारायणजी का स्वर्गवास हो चुका है। आप ओड़छा राज्य में चीफ मॅजिस्ट्रेट थे। आप M. A. L.L. B. थे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक महाराज सरजूनारायणजी तिवारी तथा महाराज शेषनारा-यणजी तिवारी हैं।

इस फर्म का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—देवीराम प्रयागनारायण तिवारी वैकुंठ कानपुर—यहाँ जमींदारी तथा मंदिर के मार्केट इत्यादि के संचालन का कार्य होता है।

मेसर्स रामरतन रामगोपाल

इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व बाबू रामरतनजी ने कानपुर में की थी। आप लोगों के पूर्व पुरुष शाहजादपुर (प्रयाग) के रहनेवाले हैं पर जब से आपने इस फर्म की स्थापना की तब से कानपुर में रहने लगे। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप की फर्म पर आरम्भ से ही बैंकिंग और जमींदारी का काम हो रहा है जो यह फर्म वर्तमान में भी कर रही है। बाबू रामरतनजी और आपके पुत्र बाबू रामगोपालजी के बाद फर्म का संचालन रायबहादुर विशम्भरनाथजी तथा रायबहादुर कन्हैयालालजी करते रहे। आप लोग नगर के सभी सार्वजनिक कार्यों में अच्छा भाग लेते थे। यहाँ के नागरिक जीवन में आप दोनों ही महानुभावों का बहुत बड़ा प्रभाव रहा। आप लोगों की इन्हीं विशेषताओं पर सरकार ने प्रसन्न होकर कर आप दोनों ही को रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया। वर्तमान में आप दोनों ही महानुभाव स्वर्गवासी हो चुके हैं। अतः फर्म का प्रधान संचालन रायबहादुर कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू रामशंकरजी तथा बाबू गौरीशंकरजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रामरतन रामगोपाल मनीराम की बगिया कानपुर—यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम प्रधान रूप से होता है। यह फर्म कानपुर तथा जालौन के सरकारी खजाने की ट्रेझरर है।

स्व॰ सेठ कस्तूरमलजी (सालिगराम कस्तूरमल) कानपुर

स्व॰ सेठ उदयरामजी (सालिगराम कस्तूरमल) कानपुर

बा॰ सुखनन्दनलालजी (सालिगराम कस्तूरमल) कानपुर

बा॰ रामचरणलालजी (सालिगराम कस्तूरमल) कानपुर

है। तथा बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म का संचालन बा० रामचरनजी करते हैं।

कानपुर—मेसर्स उदयराम गोपीराम जनरलगंज, T. A. Jaishiva—यहाँ किराने का एवं आड़त का काम होता है। इस फर्म में कृष्णगोपालजी मालपाणी तथा त्रिलोकीनाथजी कार्य देखते हैं।

बम्बई—मेसर्स कन्हैयामल उदयराम कालबादेवी रोड, T. A. Jaishankar—यहाँ किराना, कपड़ा, सूत, गल्ला, चाँदी धातवाला इत्यादि २ की आड़त का काम होता है। यहाँ हेड मुनीम रामगोपालजी कार्य देखते हैं।

कानपुर—मेसर्स कन्हैयामल सत्यनारायण नयागंज, T. A. Prakash—यहाँ किराने का थोक काम तथा आड़त का काम होता है। इस फर्म पर मेसर्स मन्नीलाल मूलजी के रंग की सोल एजेंसी भी है। इसमें बा० सत्यनारायणजी काम देखते हैं।

चाँदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स गुलाबसिंह फतेसिंह

इस फर्म के संस्थापकों के पूर्व पुरुष मेसर्स ताराचंद निहालचंद के नाम से कानपुर में ज्वैलर्स, बैंकर्स तथा लैंडेड लाईस का काम करते थे। परन्तु मालिकों के अलग हो जाने से सेठ गुलाबसिंहजी ने अपना स्वतंत्र व्यवसाय उपरोक्त नाम से स्थापित किया और तब से आपकी फर्म अपना पुश्तैनी व्यवसाय सोना, चाँदी तथा जवाहिरात का कर रही है।

इस फर्म का प्रधान संचालन सेठ गुलाबसिंहजी करते हैं और आपके पुत्र बाबू फतेसिंहजी भी व्यापार के संचालन में सहयोग देते हैं। आप लोग जोधपुर (मारवाड़) के निवासी हैं परन्तु लगभग ८ पुश्त से कानपुर में ही बस गये हैं। आप लोग ओसवाल जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय के हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स एस० गुलाबसिंह फतेसिंह गुलाब निवास चौक T. A. Gurudeoji—यहाँ इंडियन मर्चेन्ट्स तथा ज्वैलर्स का काम होता है। इस फर्म की यहाँ स्थावर प्रापर्टी भी अच्छी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स शिवसहाय सवनप्रसाद चौक सराफा—यहाँ सोना, चाँदी तथा जेवरात का काम और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स मंगलप्रसाद शिवसहाय नयागंज—यहाँ सोना, चाँदी तथा जेवरात का काम होता है।

गूजामलका (जमालपुर)—मेसर्स मंगलप्रसाद रामचरन —यहाँ बैंकर्स एण्ड लैण्ड लार्डस का काम होता है।

मैमनसिंह—मेसर्स मङ्गलप्रसाद रामचरन—यहाँ आपकी कोठी है तथा आफिस है।

घाटमपुर उन्नाव—पं० शिवसहायजी दीक्षित—यहाँ मालिकों का निवास स्थान है और महाजनी तथा जमींदारी का काम होता है

मेसर्स हजारीमल सोहनलाल

इस फर्म की स्थापना स्व० लाला हजारीमलजी सराफ ने सम्वत् १९७० में कानपुर में की थी। इस फर्म में आरम्भ से ही सोने, चाँदी, तथा जेवरात का काम होता आ रहा है और इसी के साथ रुई का व्यापार भी यह फर्म आरम्भ से ही करती आ रही है। वर्तमान में यह फर्म उपरोक्त व्यापार अर्थात् सोना, चाँदी, जेवरात और रुई का काम करती है। इसकी स्थापना स्व० लाला हजारीमलजी ने की थी पर आपके बाद आपके पुत्रों ने फर्म के व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रंगलालजी सराफ तथा सेठ सीतारामजी सराफ हैं। आप लोग फतेपुर (जयपुर) के आदि निवासी हैं और अग्रवाल वैश्य समाज के सराफ सज्जन हैं। फर्म का संचालन दोनों ही भाई करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स हजारीमल सोहनलाल नयागंज T. A. money—यहाँ सोना, चाँदी तथा रुई का व्यापार होता है। यह फर्म कानपुर की मिलों को तैयार रुई सप्लाई करती है।

कानपुर—मेसर्स हजारीमल सोहनलाल नयागंज—यहाँ सोना, चाँदी जेवरात और ज्वैलरी का काम होता है।

किराने के व्यापारी

मेसर्स जगन्नाथ मन्नीलाल

इस फर्म के मालिक मौजा कुलहा जिला उन्नाव के रहनेवाले हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व लाला जगन्नाथजी यहाँ आये तथा किराने और आढ़त का व्यापार प्रारंभ किया। उस समय इस फर्म पर गयादीन जगन्नाथ नाम पड़ता था। संवत् १९३५ में जगन्नाथजी का स्वर्गवास हो गया। तब से आपके पुत्र ला० मन्नीलालजी ने फर्म का नाम बदल कर उपरोक्त नाम कर दिया। करीब संवत् १९६० में आपने किराने का थोक व्यापार आरंभ किया। इसमें आप को बहुत अच्छी सफलता मिली। आपने बहुत सी जमींदारी भी खरीद की। इस प्रकार आपने अपनी स्थायी सम्पत्ति भी काफी बढ़ाई। कानपुर के लक्ष्मी आइल मिल को भी आपने खरीदा। इसमें २२२ कोल्हू तथा धान की कल है।

वर्तमान में लाला मन्नीलालजी ही इस फर्म के मालिक हैं। आपके चार पुत्र हैं। बड़े मदनगोपालजी आपकी देख रेख में फर्म का सचालन करते हैं। शेष अभी छोटे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स जगन्नाथ मन्नीलाल नयागंज,—यहाँ हे० आ० है। तथा बैंकिंग और किराने का व्यवसाय होता है।

कानपुर—मेसर्स मन्नीलाल मदनगोपाल नयागंज,—यहाँ भी किराने का व्यापार होता है।

दी लक्ष्मी आईल मिल भवानीपुरवा कानपुर—यहाँ एक तेल की मिल है।

मेसर्स तुलसीराम जियालाल

इस फर्म की स्थापना लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ जियालालजी ने कानपुर में की थी। इस फर्म के मालिकों के पूर्व पुरुष लगभग २०० वर्ष से व्यापार करते चले आ रहे हैं और कानपुर की उपरोक्त फर्म की स्थापना के पूर्व इसके संस्थापक अपने आदि निवास स्थान बेरी (रोहतक) में अपना स्वतंत्र व्यवसाय भी करते थे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला केदारनामजी तथा आपके पुत्र लाला तोताराममी, लाला रामनाथजी और श्रीकृष्णदासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स तुलसीराम जियालाल नयागंज कानपुर T. A. Beriwal—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा किराना, गल्ला और निकट का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स तुलसीराम जियालाल कलेक्टर गंज—यहाँ बर्मा शेल की तेल की ऐजेन्सी है।

कानपुर—मेसर्स तुलसीराम जियालाल मालरोड—यहाँ मोटर पार्ट्स एण्ड ऐसेसरी तथा बर्मा शेल के पेट्रोल की ऐजेन्सी है।

आगरा—मेसर्स तुलसीराम जियालाल परतापपुरा—यहाँ पेट्रोल की ऐजेन्सी है।

(रोहतक)—मेसर्स खुबीराम केशोराम पेरी—यहाँ वैंकर्स एण्ड लैण्डलार्डस् का काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल मन्नीलाल

इस फर्म के मालिक बारागाँव (फतहपुर) के रहने वाले ऊमर वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ४५ वर्ष पूर्व लाला बिहारीलालजी यहाँ आये तथा किराने की दलाली का काम शुरू किया। पश्चात् संवत् १९५७ में यह फर्म स्थापित की। इस पर आपने किराने का ही व्यापार प्रारंभ किया। इस फर्म की उन्नति का श्रेय आपही को है। ला० बिहारीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। आप के दो पुत्र हुए जिनके नाम लाला मुन्नीलालजी तथा सरयूप्रसादजी हैं। वर्तमान में आपही इस फर्म के मालिक हैं। आप लोगों ने समय २ पर अपने व्यापार की उन्नति के लिये भिन्न २ नामों से और शाखायें खोलीं। तथा फर्म की काफी उन्नति की। आप लोग मिलनसार, सरल, एवं सज्जन महानुभाव हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल मन्नीलाल नयागंज—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग किराना तथा आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स सरयू प्रसाद रामचरन नयागंज T. A. Surjoo—यहाँ किराने की आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल रामकृष्ण नयागंज—यहाँ फुटकर किराना तथा आढ़त का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स मोतीलाल मुन्नालाल नयागंज,—यहाँ किराने का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल बालकृष्ण नयागंज, T. A. Shawji—यहाँ एनि लाइन डाइज एण्ड केमिकल & Chewical, की रंग की एजेंसी है।

सेठ धर्मविलासजी सनाद (रामलाल मुन्नालाल) कानपुर

सेठ रामलालजी सनाद (रामलाल मुन्नालाल) कानपुर

मेसर्स पुरुषोत्तमदास बनारसीदास

इस फर्म की मालिक कलकत्ते की मेसर्स दामोदर चौबे एण्ड कम्पनी है। इसका आफिस हालसी रोड पर है। जहाँ यह फर्म बैंकिंग और सब प्रकार की आढ़त का काम करती है। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वहीं इसका विस्तृत परिचय दूसरे भाग के पेज नं० १६६ में दिया गया है।

मेसर्स मथुरदयाल गनेशप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० गनेशप्रसादजी एवं ला० सुन्दरलालजी हैं। इसका हेड आफिस लखनऊ है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसका यहाँ का पता नयागंज है। इसका विस्तृत परिचय लखनऊ में दिया गया है।

मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल

इस फर्म का हेड आफिस हाथरस है पर इसकी कितनी ही शाखाएं कलकत्ता बम्बई आदि व्यापारिक केन्द्रों में हैं। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में ९८ पृष्ठ पर तथा इसी भाग में हाथरस के साथ दिया गया है। यहाँ इस फर्म का आफिस नयागंज में है जहाँ यह फर्म सराफी लेन देन, रुई तथा आढ़त एवं गल्ले का काम करती है। इसकी जमींदारी भी यहाँ है। चित्र सहित परिचय के लिए हाथरस में देखिये।

मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास स्थान झुंझुनू (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सैतान सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना बा० बसन्तलालजी सैतान तथा आपके भाई बाबू मुन्नालालजी सैतान ने सम्वत् १९७४ में की। यह फर्म कानपुर में कपड़ा तथा आढ़त का बड़ा व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त इस फर्म की और भी चार गाँवें गोरखपुर जिले में हैं जहाँ गल्ला, गुड़ तथा दाल आदि का व्यापार और आढ़त का काम अच्छी उन्नत अवस्था में होता है।

इस फर्म के संस्थापकों का पारिवारिक विवरण हमारे इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग पृष्ठ १११ में विस्तारपूर्वक दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक बा० बसन्तलालजी सैतान तथा आपके भाई बाबू मुन्नालालजी सैतान हैं। बाबू मुन्नालालजी सैतान के चार

पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—बाबू भगवतीप्रसादजी, बाबू चण्डीप्रसादजी, बाबू भवानीप्रसादजी और बाबू परमेश्वरीप्रसादजी हैं। इनमें से बाबू भवानी प्रसादजी सेठ बसन्तलालजी के यहाँ दत्तक दिये गये हैं।

इस फर्म के व्यवसाय को उन्नत अवस्था पर पहुँचाने का श्रेय इसके संस्थापकों को ही है। आप लोगों ने बड़ी योग्यता से व्यापार संचालित कर अपनी फर्म को उन्नत बनाया है। आप लोग सभी मिलनसार और सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल जेनरलगंज T. A. Mansadevi—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। कपड़े के इम्पोर्ट तथा बैंकिंग और मीलों को माल सप्लाई करने का काम इस फर्म पर होता है। किराना, गल्ला, तथा कपड़े की आढ़त का काम भी होता है।

चौरी चौरा (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ गल्ला और गुड़ का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

संहजनवा (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ गल्ला, और गुड़ का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

रामगंज (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ दाल का कारखाना है तथा दाल दिसावरों को सप्लाई की जाती है।

पुगजी (जि० गोरखपुर)—मेसर्स रामविलास रामजी बसन्तलाल—यहाँ गुड़ की खरीदी और गुड़ की आढ़त का काम होता है।

झुंझुनू (जयपुर)—मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल—यहाँ फर्म के मालिकों का आदि निवास स्थान है।

मेसर्स बाबूलाल हरिशंकर

इस फर्म के मालिक हाथरस के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यहाँ यह फर्म हुण्डी, चिट्ठी तथा कमीशन का काम करती है। इसका अधिक परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ९९ में दिया गया है।

मेसर्स भगतराम रामनारायण

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ शिवदत्तरायजी, सेठ रामनारायणजी तथा सेठ हनुमानप्रसादजी हिकमारी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यहाँ पर यह फर्म

सेठ हीराधरजी (बसन्तलाल मुकन्दलाल) कानपुर

बा० भगवतीप्रसादजी सेनान (बसन्तलाल मुकन्दलाल) कानपुर

बा० चंडीप्रसादजी सेनान (बसन्तलाल मुकन्दलाल) कानपुर

बारदान, गल्ला तथा आढ़त का व्यवसाय करती है। इसका सचित्र परिचय प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ५७ पर दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल फूलचन्द

इस फर्म के मालिक लाला फूलचन्दजी हैं। इसका हेड आफिस लखनऊ है जहाँ विशेष परिचय दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, आढ़त तथा बैङ्किंग का काम करती है। यहाँ यह फर्म नयागंज में है।

मेसर्स रामकरणदास रामविलास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान झुंझुनू (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस परिवार का व्यापार सम्बन्धी पूर्ण परिचय विस्तृत रूप से हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १३१ में दिया गया है। इस फर्म की स्थापना कानपुर में सम्वत् १९३४ में हुई और कपड़ा, शक्कर किराना आदि की आढ़त का काम आरम्भ किया गया तथा गुटैया मील और सीवान मील की शक्कर की एजेन्सियाँ भी ली गयीं। सम्वत् १९७४ तक यह फर्म सम्मलित परिवार की सम्पत्ति के रूप में काम करती रही पर इसी वर्ष इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ रामविलासरायजी व्यापारिक क्षेत्र से अलग हो गये अतः आपके पाँचों पुत्र भी अलग २ हो गये और अपना अपना स्वतंत्र व्यापार अपनी स्वतंत्र फर्म खोल कर करने लगे। फलतः इस नाम से जो फर्म कानपुर में थी वह केवल कपड़े का व्यापार करने लगी और इसकी आय इसके आदि संस्थापक सेठ रामविलासरायजी के हाथ खर्च में लगती है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स रामकरणदास रामविलास जेनरलगंज—यहाँ कपड़े का काम होता है।

सेठ रामविलासरायजी के पाँच पुत्र हैं। बाबू बसन्तलालजी, बाबू मुन्नालालजी, बा० चिरंजीलालजी, बा० मदनलालजी तथा बा० लीलाधरजी। आप लोग नीचे क्रमानुसार व्यापार करते हैं।

१. मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल—मालिक बा० बसन्तलालजी और मुन्नालालजी
२. मेसर्स रामविलासराय चिरंजीलाल—मालिक बा० चिरंजीलाल
३. मेसर्स रामविलासराय मदनलाल—मालिक बा० मदनलालजी
४. बम्बई—मेसर्स रामकरणदासजी सेक्शन—इस फर्म के सभी भाई मालिक हैं अतः बा० लीलाधरजी का साझा है। इस का संचालन बा० बसन्तलालजी करते हैं।

सेठ रामविलासरायजी व्यापार से अलग होते समय कानपुर के जेनरलगंज वाले १०) के कीमत का एक मकान तथा गोरखपुर के देवरिया तहसील के २ मकान धर्मादे में लगा गये हैं।

मेसर्स रामविलासराय चिरञ्जीलाल

इस फर्म की स्थापना बाबू चिरंजीलालजी ने सम्वत १९८१ में कर किराने का व्यापार तथा आढ़त का काम आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी पूर्ववत् रीति से कर रही है। इस फर्म की यहाँ के व्यापारी समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। इस फर्म पर बैंकिंग का काम भी होता है।

इस फर्म के मालिक बाबू चिरंजीलालजी हैं। आप अपने आदि निवास स्थान झुंझनू में ही रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स रामविलासराय चिरंजीलाल नयागंज—यहाँ किराने की बिक्री तथा आढ़त का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

झुंझुनू (जयपुर)—मेसर्स रामविलासराय चिरंजीलाल—यहाँ मालिकों का आदि निवास स्थान है। यहाँ बा० चिरंजीलालजी रहते हैं।

मेसर्स रामविलासराय मदनलाल

इस फर्म की स्थापना बा० मदनलालजी ने सम्वत् १९८१ में की थी। आरम्भ में इस फर्म ने शक्कर की बिक्री तथा शक्कर की आढ़त का व्यापार खोला और साथ ही कपड़े की बिक्री का व्यापार भी आरम्भ किया जो यह फर्म पूर्ववत कर रही है। इस फर्म की एक दूसरी ब्रांच बस्ती में है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० मदनलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स रामविलासराय मदनलाल जेनरलगंज T. A. Khetan—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। शक्कर की आढ़त तथा बेचवाली का काम और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।

बस्ती—मेसर्स मदनलाल खेतान—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स रामदयाल माधोप्रसाद

इस प्रसिद्ध फर्म का हेड आफिस सूखी है। कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं। प्रा
सभी स्थानों पर बैंकिंग और गल्ले का व्यापार होता है। इस फर्म का निज का शक्कर क
कारखाना भी है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ४०१ में चित्रों
सहित दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। यहाँ इसका पता कोपरगंज है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्म का विस्तृत एवं सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ ५८ पर दिया गया है। यह फर्म यहाँ पर बैंकिंग का व्यवसाय तथा मिलों को काटन सप्लाई करने का काम करती है। इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। फर्म का हेड आफिस कलकत्ता में है।

मेसर्स सूरजमल हरीराम

इस फर्म का हेड आफिस पडरौना (गोरखपुर) में है। जहाँ इस फर्म के मालिक सेठ सूरजमलजी रहते हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ १२४ में दिया गया है। यह फर्म यहाँ गुड़ तथा शक्कर की आढ़त का व्यापार तथा कमीशन का काम करती है। विशेष परिचय पडरौना में दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल छोटेलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ छोटेलालजी कानोडिया हैं। इस फर्म की और भी स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में देखना चाहिये। यहाँ इस फर्म का पता नयागंज है। यह फर्म यहाँ बैंकिंग, बोरे एवं गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम करती है। इसका तार का पता है "Suraj"

मेसर्स हरनन्दराय अर्जुनदास

इस फर्म का हेड आफिस दिल्ली में है। यह फर्म प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है। इसका एक कॉटन मिल भी है और भी स्थानों में इसकी शाखाएँ हैं। जिनका परिचय दूसरे भाग में पेज नं ३२० में दिया गया है और विस्तृत परिचय इसी भाग में देहली में छापा गया है। यहाँ यह फर्म बोरे का और बैंकिंग का व्यापार करती है।

जी तथा प्यारेलालजी और ला० द्वारकाप्रसादजी के मन्नूलालजी, रिखिलालजी तथा जगन्नाथ
नामक पुत्र हैं। इनमें से लाला रिखीलालजी तथा जगन्नाथजी इस फर्म से अलग हो गये अ
अपना स्वतंत्र व्यापार करते है। शेष तीनों ही भाई इस फर्म के मालिक हैं। आप तीनों ही इसका
संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स भजनलाल दीनानाथ हालसीरोड, नई सड़क T. A. Latus—यहाँ हार्डवेयर और सेंटरी गुड्स का इम्पोर्ट और टाटा कम्पनी के लोहे के माल की बिक्री का काम होता है। यह फर्म ए० एफ० रेली एण्ड कम्पनी बर्लिन एजंट हैं।

मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के मालिक हीपाल नगर (मुरादाबाद) के निवासी हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ प्यारेलालजी तथा कन्हैयालालजी ने यहाँ आकर फर्म स्थापित की। आप दोनों भाई २ थे। आप अग्रवाल समाज के महानुभाव हैं। संवत् १९५६ में से० प्यारेलालजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् फर्म के कार्य का संचालन कन्हैयालालजी ने सँभाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९६७ में हुआ। आपने कलकत्ते में भी अपनी ब्रांच स्थापित की। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ नवलकिशोरजी ने सँभाला। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आपका यहाँ अच्छा सम्मान था। आपने गवर्नमेंट से बड़े कंट्राक्ट भी लिये थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक नवलकिशोरजी के पुत्र लाला देवकुमारजी हैं। आपके चार भाई और हैं जो छोटे हैं और शिक्षा लाभ कर रहे हैं। देवकुमारजी मिलनसार एवं सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल हालसी रोड, T. A. Jain यहाँ बैंकिंग तथा लोहे का व्यापार होता है। यह फर्म विलायत से डायरेक्ट इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल ६८ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्ता T. A. steelmark—यहाँ लोहा, कपड़ा, गिन्नी आदि का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स रतनजी भगवानजी एण्ड को०

इस फर्म का हेड आफिस धनबाद में है। इसकी और भी स्थानों में कई शाखायें हैं जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ९३ में बिहार विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म मिल जीन स्टोअर सप्लायर और मोटर की एजंसी तथा पेट्रोल का काम करती है। इसका यहाँ का पता लाटुश रोड है।

मेसर्स लछमनदास बाबूराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान हाथरस यु० पी० है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्षों से व्यापार कर रही है। इसका पहले मेसर्स लछमनदास चम्पाराम नाम पड़ता था। अब उपरोक्त नाम से व्यापार होता है। इस फर्म के स्थापक ला० लछमणदासजी थे। आप बड़े व्यापारचतुर, मेधावी एवं सज्जन व्यक्ति थे आप ही की बुद्धिमानी एवं व्यापारचतुरता से फर्म ने इतनी तरक्की की है। आपका ध्यान केवल व्यापार की ओर रहा हो सो बात नहीं थी। जितना आपका व्यापार की तरक्की की ओर था उतना ही सार्वजनिक कामों की ओर भी था। आपने यहाँ लाटो उद्यान में एक सुन्दर धर्मशाला निर्माण करवाई। इसी प्रकार हाथरस वगैरह स्थानों पर कई कुएं भी आपने बनवाये। सम्वत् १९६४ में यहाँ होने वाले जैन उत्सव के समय आपने कारोमी मिल के पास एक सुन्दर कोठी और बगीचा बनवाया था उसे आपने पब्लिक कर दिया। उसमें आस पास के देहाती आदमी विश्राम पाते हैं। आपका ध्यान गरीब ब्राह्मणों की ओर भी बहुत रहा है। आपने कई ब्राह्मणों की कन्याओं की शादी अपने पास से रुपये लगाकर करवा दी। इसी प्रकार गौरवमय जीवन व्यतीत करते हुए आपका स्वर्गवास करीब १० वर्ष पूर्व हो गया।

आपके तीन पुत्र हुए, सेठ चम्पारामजी, सेठ बाबूरामजी एवम् सेठ फूलचन्दजी। इनमें से सेठ चम्पारामजी अपने पिताजी के समय से करीब १ वर्ष पहिले ही से अलग हो गये हैं। दूसरे पुत्र ला० बाबूराम का करीब २ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक फूलचन्दजी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं। बाबूरामजी के [illegible]कुमारजी नामक एक पुत्र है। तथा ला० फूलचन्दजी के मनोहर[illegible] हैं। ला० मनोहर[illegible]जी तथा [illegible]कुमार जी भी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स लक्ष्मणदास बाबूराम नई सड़क T. A. Babuniwas यहाँ सब प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।

कलकत्ता—लक्ष्मणदास चम्पाराम ४१ राजा कटरा—यहाँ लोहा धातु माना और किराने का व्यापार होता है।

बरेली—लक्ष्मणदास बाबूराम टाउनहाल—यहाँ टाटा कम्पनी की एजेन्सी है तथा और दूसरे प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।

जनरल मर्चेण्ट्स

पं० प्यारेलाल शुक्ला तमाखूवाले

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कन्नौज है। करीब ८ वर्ष से आप लोग यहाँ निवास करते हैं। यह फर्म कन्नौज में सन् १८९१ में स्थापित हुई थी। इसकी स्थापना पंडितजी ने स्वयं की थी। जिस समय फर्म की स्थापना की गई उस समय आपकी साधारण स्थिति थी। आप व्यापारकुशल और मेधावी सज्जन हैं। अतएव आपने अपनी बुद्धिमानी एवं व्यापार कुशलता से फर्म की अच्छी तरक्की की।

सन् १९१७ में आपने अपने व्यापार की फर्म तथा अपना आफिस भारत के प्रसिद्ध व्यापारिक नगर कानपुर में स्थापित किया। यहाँ ही आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आपने बहुत बड़ी जमींदारी भी खरीद की। वर्तमान में आप अच्छे रईस और जमींदार हैं।

आपका कारखाना इस समय बहुत अच्छी अवस्था में चल रहा है। [illegible] के प्रायः सभी शहरों, कस्बा एवं देहातों में तो जाता ही है इसके [illegible] सीलोन, अरब, अफ्रिका आदि विदेशी स्थानों पर भी जाता है। [illegible] फर्म की खपत होती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक पं० प्यारेलाल [illegible] हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

कानपुर—पं० प्यारेलाल शुक्ल तमाखूवाले [illegible] बनी हुई तमाखू का बहुत बड़ा [illegible] इस कारखाने की [illegible] है

राय बहादुर लाला गंगासहायजी खासी।

प० प्यारेलाल शुक्ल कानपुर

झांसी

झांसी का इतिहास पुराना है। इस पर शुरू से ही हिन्दुओं का राज्य रहा है। यहाँ कई बार युद्ध हुए। उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ भारत वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई राज्य करती थी। यहाँ उनकी राजधानी थी। गदर के समय महारानी ने जो अपनी अपूर्व वीरता एवम् अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया वह इतिहास के पाठकों से छिपा नहीं है। महारानी ही के पास से वह स्थान अंग्रेजों के पास आया और तब से इन्हीं के पास है। महारानी के महल आज भी देखने की वस्तुएँ हैं। यहाँ महारानी का किला जो अपनी मजबूती में प्रसिद्ध है, देखने लायक है।

यहाँ की पैदावार चना, गेहूँ, जौ, मटर, मूंग, रुई, चावल और दाल है। यही यहाँ से बाहर जाती हैं। इसके अतिरिक्त चिरोंजी का भी यहाँ बहुत बड़ा व्यापार होता है जो टीकमगढ़ स्टेट से यहाँ आती है। आस पास जंगल होने से गोंद एवम् कत्था भी यहाँ आता है।

यहाँ का तोल चिरोंजी एवम् किराने के लिये ४२ सेर के मन से, गोंद ४२॥ सेर से, कत्था ४५ सेर से एवम् शेष सब वस्तुएँ ४० सेर मन से माना जाता है।

यहाँ की इंडस्ट्रीज में कालीन एवम् आसन हैं। यहाँ के कालीन एवम् आसन बहुत सुन्दर मजबूत और टिकाऊ होते हैं।

यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की देहली बम्बई वाली मेन लाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से २ मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ से इसी रेल्वे की एक लाइन कानपुर एवम् दूसरी लाइन मानिकपुर जंक्शन को भी गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गंगासहाय मुत्सद्दीलाल

इस फर्म के मालिक खत्री समाज के आगेड़ा सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० शीलचन्दजी तथा आपके भाई मक्खनलालजी के द्वारा यह फर्म पहले पहल मुरार छावनी में स्थापित हुई। छावनी के टूट जाने से मक्खनलालजी यहाँ आये तथा मक्खनलाल गंगासहाय के नाम

जबलपुर—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—हे० आ० है। यहाँ बैंकिंग और सराफी का काम होता है। तथा मेसर्स वृद्धिचंद अतापचंद के नाम से एक कपड़े की दुकान है।

बरुआ सागर (झांसी)—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल—यहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स भिखमचंद रामचन्द्र

इस फर्म का हेड आफिस यहीं है। इसके मालिक सेठ मिलापचंदजी बेद थे। मगर दुःख है कि दो महीने पहले ही उनका युवावस्था में ही शरीरान्त हो गया है। आपका विस्तृत परिचय हम इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दे चुके हैं। यहाँ यह फर्म जवाहरात, बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म मोटर का काम करती है तथा स्थानीय इम्पीरियल बैंक ब्रांच की ट्रेजरर है। इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब लाला गोपीनाथजी तथा आपके भाई हैं।

मेसर्स मानिकचन्द रामलाल

इस फर्म का हेड आफिस आगरा है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के वैष्णव सज्जन हैं। आगरा में यह फर्म पुरानी है। वहाँ इसका स्थापन ला० मानिकचन्द द्वारा करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ। आपके तथा आपके पुत्र रामलालजी के समय में इसकी साधारण उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र गंगाप्रसादजी, मथुरादासजी एवम् मुन्नीलालजी के द्वारा इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई और झाँसी तथा बरेली में इसकी शाखाएँ स्थापित की गईं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गंगाप्रसादजी के पुत्र भगवतीप्रसादजी, सेठ मथुरादासजी के पुत्र भवानीप्रसादजी एवम् मुन्नीलालजी और मुन्नीलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

झाँसी—मेसर्स मानिकचन्द रामलाल सदरबाजार—यहाँ कपड़ा एवम् अफीम आढ़त का काम होता है।

से फर्म स्थापित की। शीलचंदजी के पुत्र रा० बा० गंगासहायजी व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की तथा फर्म का नाम बदलकर उपरोक्त नाम से कारबार शुरू किया। आपको भारत सरकार ने प्रसन्न होकर राय बहादुर का खिताब प्रदान किया। आपके भाई भजनलालजी थे। आपका और आपके भाई का स्वर्गवास होगया। भजनलालजी के पुत्र रोशनलालजी भी होनहार युवक थे मगर युवावस्था ही में उनका भी स्वर्गवास होगया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक रा० बा० गंगासहायजी के पौत्र ला० मुरलीधरजी हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आप झाँसी म्युनिसिपल बोर्ड एवं कॅटोनमेंट बोर्ड के मेंबर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झाँसी—मेसर्स गंगासहाय मुरलीधर सदर बाजार—यहाँ बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। यहाँ आपकी एक बर्फ की फैक्टरी गंगा आईस फैक्टरी के नाम से है।

मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई में है। वहाँ यह फर्म मेसर्स बसंतलाल गोरखराम के नाम से व्यापार करती है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ९८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बिरदीचंदजी के पुत्र सेठ मक्खनलालजी एवं सेठ हीरालालजी हैं। आप लोग आगरा निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ सन् १८९० में सेठ बिरदीचंदजी द्वारा स्थापित हुई और इसको विशेष तरक्की भी आप ही के द्वारा प्राप्त हुई। आपने इसकी और भी शाखाएँ स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवासी होने के पश्चात् आपके पुत्र सेठ मक्खनलालजी ने रेमसे थिएटर के नाम से एक सिनेमा खोला और इसी प्रकार और भी फर्म की तरक्की की।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झांसी—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—यहाँ बैंकिंग, कपड़ा एवं टेनरिंग का काम होता है।

झांसी—मेसर्स बिरदीचन्द मक्खनलाल हाजीगंज T. A.Sikhhar—यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

जबलपुर—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—है० आ० है। यहाँ बैंकिंग और सराफी का काम होता है। तथा मेसर्स वृद्धिचंद प्रतापचंद के नाम से एक कपड़े की दुकान है।

बरुआ सागर (झांसी)—मेसर्स बिरदीचंद मक्खनलाल—यहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स भिखमचंद रामचन्द्र

इस फर्म का हेड आफिस यहीं है। इसके मालिक सेठ मिलापचंदजी वेद थे। मगर दुःख है कि दो महीने पहले ही उनका युवावस्था में ही शरीरान्त हो गया है। आपका विस्तृत परिचय हम इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दे चुके हैं। यहाँ यह फर्म जवाहरात, बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

मेसर्स मुन्नालाल एण्ड सन्स

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म मोटर का काम करती है तथा स्थानीय इम्पीरियल बैंक ब्रांच की ट्रेजरर है। इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब लाला गोपीनाथजी तथा आपके भाई हैं।

मेसर्स मानिकचन्द रामलाल

इस फर्म का हेड आफिस आगरा है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के वैष्णव सज्जन हैं। आगरा में यह फर्म पुरानी है। वहाँ इसका स्थापन ला० माणिकचन्द द्वारा करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ। आपके तथा आपके पुत्र रामलालजी के समय में इसकी साधारण उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र गंगाप्रसादजी, मथुरादासजी एवम् चुन्नीलालजी के द्वारा इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई और झाँसी तथा बरेली में इसकी शाखाएँ स्थापित की गईं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गंगाप्रसादजी के पुत्र भगवतीप्रसादजी, सेठ मथुरादासजी के पुत्र भवानीप्रसादजी एवम् मुन्नीलालजी और चुन्नीलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

झाँसी—मेसर्स मानिकचन्द रामलाल सदरबाजार—यहाँ कपड़ा एवम् जमीन जायदाद का काम होता है।

बरेली—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल—यहाँ भी कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ आपका रामेश्वर रोलर एण्ड फ्लोअर मिल है।

आगरा—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल कन्टोनमेंट T. A. Manik—यहाँ कपड़ा, मकानात एवम् किराये का काम होता है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स गणपतराव विश्वनाथ
- ,, छीतरमल नारायणदास
- ,, जगन्नाथ रामसहाय
- ,, द्वारकादास बनारसीलाल
- ,, नारायणदास पन्नालाल
- ,, पन्नालाल हाजी नूरमहम्मद
- ,, बैजूराम रूपासीराम
- ,, गयाराम गोविन्दराम
- ,, रामदयाल घमण्डी
- ,, शिवदयाल मन्नीलाल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स जगन्नाथ छोटेलाल बजाजा
- ,, जगन्नाथ गोपालदास ,,
- ,, पदमसिंह रामनाथ ,,
- ,, बिरदीचंद मक्खनलाल सदर
- ,, भगवानदास घनश्यामदास बजाजा
- ,, माणिकचंद रामलाल सदर
- ,, मानमल राजमल बजाजा
- ,, मन्नूलाल सिसोरिया ,,
- ,, रामदास बक्षीलाल ,,

मेसर्स गनेश सेठ गलीचा वाले

किराना के व्यापारी—

मेसर्स रामदयाल मुलैया
- ,, लल्लीराम सुन्दरलाल

लोहा के व्यापारी—

मेसर्स गोपालदास रामचरन बड़ाबाजार
- ,, नारायणदास जगन्नाथ ,,
- ,, माठूमल रामलाल ,,
- ,, मन्नूलाल मूलचन्द ,,

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स किशुन मनसुख
- ,, गनपत विधनाथ
- ,, द्वारकादास बनारसीलाल
- ,, पुनितराम सीताराम
- ,, भगवानदास नन्नेलाल

जनरल मर्चेंट्स—

मेसर्स अब्दुल गनी एण्ड सन्स
- ,, हादिमअली एण्ड सन्स
- ,, जानकीप्रसाद एण्ड संस
- ,, पन्नालाल एण्ड संस
- ,, परमानन्द बाबूलाल
- ,, बैजनाथ भगवानदास

इलाहाबाद

इलाहाबाद का पुराना नाम प्रयाग है। इसे आज भी अधिकांश हिन्दू जनता प्रयाग के नाम से पुकारती है। वर्तमान इलाहाबाद का एक और भी पुराना नाम था। इसे प्रतिष्ठानपुर भी कहते थे यह प्रतिष्ठानपुर वर्तमान झूसी नामक गाँव के समीप बसा था। इसके ऊँचे २ टीले आज भी बता रहे हैं कि किसी समय यहाँ पर बड़ी बड़ी अट्टालिकायें और राजप्रसाद अवस्थित थे। प्रतिष्ठानपुर में चंद्रवंशी राजा राज करते थे। पुरुरवा नामक राजा यहाँ का प्रसिद्ध शासक हो गया है। कालिदास के विक्रमोर्वशीय नाटक का कथानक इसी प्रतिष्ठानपुर से सम्बन्ध रखता है।

प्रयाग और प्रतिष्ठानपुर में अंतर केवल इतना ही है कि प्रतिष्ठानपुर जहाँ गंगा के उस पार बसा था वहाँ प्रयाग इस पार था। प्रयाग का वर्तमान नाम अकबर ने सन् १५८४ में प्रसिद्ध किला बनवाकर इलाहाबाद रक्खा।

इलाहाबाद संयुक्त प्रान्त की राजधानी है। यह शहर समुद्र की तल से ३४० फीट ऊँचा है। शहर के नीचले भूभाग को गंगा की बाढ़ से बचाने के लिये अकबर के समय में एक मजबूत बाँध बाँधा गया था। शहर का दारागंज नामक महल्ला जिसे शाहजहाँ के पुत्र दाराशिकोह ने बसाया था इसी बाँध पर बसा हुआ है।

गंगा और जमुना के संगम का उल्लेख तो ऋग्वेद में भी है। हाँ प्रयाग का नाम वेदों में नहीं है पर रामायण और महाभारत के समान ऋषिप्रणीत ग्रंथों में अवश्य ही प्रयाग की चर्चा आयी है। इसी प्रकार बौद्धकालीन युग में भी प्रयाग की महिमा पूर्ववत् जागरूक थी ऐसे प्रमाण मिलते हैं। मसीह सन् से ५ शताब्दी पूर्व गौतमबुद्ध ने यहाँ कितने ही व्याख्यान दिये थे। कितने ही हिन्दुओं को अपने नव स्थापित धर्म में दीक्षित किया था। इसके २०० वर्ष बाद अशोक ने कितने ही स्तूप और विहार यहाँ बनवाये थे। जिनमें से एक पत्थर का स्तम्भ आज भी किले के भीतर विद्यमान है। ईसा की सातवीं शताब्दी में यह नगर कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन के हाथ में था। १२ वीं शताब्दी में जयचंद को परास्त कर शहाबुद्दीन ने प्रयाग को अपने हाथ में किया। कुछ दिन बाद इस नगर को मानिकपुर के सूबे में मिला लिया गया।

१३वीं शताब्दी में यह नगर अलाउद्दीन के हाथ लगा और सन् १५२९ में बाबर ने इसे पठानों से छीन लिया। तब से मुगल शासनकाल में यह स्थान ऐतिहासिक महत्व का रहा पर १७७१ में जब शाहआलम देहली चले गये तो अंग्रेजों ने शाहआलम के राज्य का कुछ अंश लेकर इलाहाबाद के सूबे को अपने कब्जे में किया और इसे ५० लाख रुपये पर नवाब अवध के हाथ बेंच डाला। १८०१ ई० में नवाब अवध ने गंगा और जमुना के बीच का देश अंग्रेजों को दे दिया। सन् १८३४ ई० में पश्चिमोत्तर-देशीय सरकार इलाहाबाद में स्थापित हुई पर साल भर बाद आगरे चली गयी। सन् १८५७ में सिपाही विद्रोह के बाद पुनः संयुक्त प्रान्त की राजधानी इलाहाबाद हुई।

दर्शनीय स्थान—

अकबरी क़िला—यह किला अकबर ने सन् १५७५ में गंगा और जमुना के संगम पर बनवाया था। वर्तमान समय में इस किले में बहुत सा परिवर्तन हो गया है पर उपयोगिता की दृष्टि से इस परिवर्तन से क़िले का महत्व अधिक बढ़ गया है। इस किले में जमीन के नीचे पातालपुरी का विख्यात मंदिर है, जो प्रायः चौकोर है और जिसमें जाने का रास्ता ढालू है। इसकी छत खम्भों पर सधी हुई है। मन्दिर के बीच में शिवलिंग है और वहीं एक ओर अक्षयवट है। इसे प्रयागवाले ११००० वर्ष का प्राचीन बताते हैं। किले के भीतर अशोक का प्राचीन स्तम्भ है। यह ३५ फुट लम्बा और ३ फुट मोटा है। इस पर अशोक के ६ आदेश बराबर पंक्तियों में चारों ओर से अंकित हैं। अक्षर सब बराबर साफ और बहुत गहरे खुदे हुए हैं। इसकी तीसरी और चौथी पंक्ति जहाँगीर ने अपने पूर्वजों के नाम से लिखकर खराब कर दी है। इन अशोक की इन पंक्तियों के नीचे गुप्त वंशी नरेश समुद्रगुप्त का विख्यात और बड़ा लेख है। इस स्तम्भ पर बीरबल का भी एक लेख है।

खुसरो का बाग—यहाँ का एक प्रसिद्ध स्थान है। उसमें खुसरो, उसकी माता जो महाराज मानसिंहजी की बहन थी, तथा खुसरो की बहन इन सब की कब्रें हैं। यहाँ की इमारतें सादी परन्तु विशाल हैं। मुख्य भवन के भीतर फूलों और चिड़ियों के बहुत सुन्दर चित्र हैं।

प्रयाग के सात प्राचीन पवित्र स्थान—त्रिवेणी, माधव, सोमेश्वर, भरद्वाजाश्रम, वासुकि, अक्षयवट और शेष।

बैंकर्स एण्ड कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स गप्पूमल कन्हैयालाल

इस फर्म को स्थापना लाला मनोहरलालजी ने करीब ६० वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया था। इस व्यापार में सफलता मिलने के पश्चात् इस फर्म पर बैंकिङ्ग व्यापार प्रारम्भ किया गया और धीरे २ कपड़े का व्यापार बन्द कर बैंकिङ्ग व्यापार को उत्तेजना दी जाने लगी। बैंकिङ्ग के साथ २ इस फर्म ने बहुत सी जमींदारी भी खरीद ली। इस व्यवसाय में इतनी तरक्की हुई कि, कुछ ही समय में यह परिवार बहुत बड़ा जमींदार और रईस परिवार माना जाने लगा। लाला मनोहरलालजी के स्वर्गवास के पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके दूसरे पुत्र रायबहादुर रामचरनलालजी ने किया। आप बड़े देशभक्त सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सन् १९१७ में हुआ, आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला अयोध्याप्रसादजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट ने तथा इनके भी स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र लाला मनमोहनदासजी ने इस फर्म को संचालित किया। आप ही इसके वर्तमान मालिक हैं। आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, म्यूनिसिपल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य तथा कई कम्पनियों के डायरेक्टर्स, ट्रेजरर्स और लोकल एडवाइजर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स गप्पूमल कन्हैयालाल रानीमन्डी—यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

राय बहादुर जगमल राजा

आपका आदि निवासस्थान नागौर (कच्छ) है। आप क्षत्री समाज के चौहान सज्जन हैं। आपके पिता और चाचा संयुक्त प्रांत में कन्ट्राक्ट का काम करते थे अतः आप भी इसी प्रान्त में काम करने लगे और कंट्राक्टर के रूप में व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। इस कार्य में आपको बहुत बड़ी सफलता मिली। आपने रेलवे के पुलों का कण्ट्राक्ट लेना आरम्भ किया और परिणाम यह हुआ कि आपने आगरे का 'जमुनाब्रिज' अलाहाबाद के दो जमुनाब्रिज, और गंगा का इर्जेट ब्रिज, डेरी-भान्सोनब्रिज, कोयला ब्रिज आदि के कठिन ठेके पूरे किये। आप उद्योग प्रिय भी हैं। आपने सन् १९११ में इलाहाबाद का जमुनाब्रिज बनवाते समय एक छोटी सी ग्लास फैक्ट्री चलाने के लिये पट्टे पर ली और कुछ समय बाद उसे खरीद लिया। आपने बड़ी उलझनों के बाद १५ लाख की पूंजी से उस छोटे से कारखाने को वर्तमान

मेसर्स गुरुप्रसाद नारायणदास

इस फर्म की स्थापना इसके वर्तमान मालिक लाला नारायणदासजी ने लगभग ४० वर्ष पूर्व यहाँ की थी और तभी से आप गल्ला और तेलहन का काम कर रहे हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पूर्वज लाला गोकुलचंदजी दिल्ली पुराने किले से सन् १८१४ ई० में प्रयाग आये थे। तभी से ये लोग यहाँ रहते हैं। लाला नारायणदासजी के पुत्र बाबू रणछोड़दासजी बहुत होनहार नवयुवक हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इलाहाबाद—मेसर्स गुरुप्रसाद नारायणदास मुट्ठीगंज T. A. Ranchore—यहाँ गल्ला और तेलहन की आढ़त, बैंकिंग और कंट्राक्ट का काम होता है।

मेसर्स जीतमल कल्लूमल

आप लोग चूरू के आदि निवासी हैं और जाति के माहेश्वरी वैश्य हैं। इस फर्म की स्थापना ८० वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी ने की थी तब से यह फर्म कपड़ा और गल्ले का व्यापार कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रामेश्वरप्रसादजी तथा आपके पुत्र बाबू राधाकृष्ण, बाबू गोपीकृष्ण, बाबू हरिकृष्ण तथा बाबू रामकृष्णजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इलाहाबाद—मेसर्स जीतमल कल्लूमल महाजनी टोला—यहाँ कपड़ा, शक्कर तथा आढ़त का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल कल्लूमल ८।१ मुल्लाल जवेरीलेन बांसतल्ला स्ट्रीट—यहाँ चलानी का काम होता है। यहाँ आफिस और मकानादि हैं। T. A. Pragawala

---

मेसर्स जीतमल गौरीदत्त

इस फर्म के मालिक चूरू के आदि निवासी हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के मुसानी सज्जन हैं। चूरू से ८० वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी प्रयाग आये और अपनी फर्म खोली। आपके स्वर्गवास के बाद आपके पुत्र सेठ गौरीदत्तजी अपने बड़े भ्राता सेठ कल्लूमल से अलग हो गये और आपना स्वतंत्र व्यापार उपरोक्त नाम से करने लगे। आपका स्वर्गवास सं० १९[illegible] में हुआ, तब से फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ हनुमानप्रसादजी करते हैं। सेठ हनुमान प्रसादजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम बाबू बनुमुंजजी, बाबू गंगाप्रसादजी तथा बाबू मोहनलाल जी हैं। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

(पुरुषोत्तमदास हलवे)

अलाहाबाद—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त चौक—यहाँ कपड़ा और चीनी का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त जगमोहन मल्लिकलेन—यहाँ चीनी, चावल, कपड़ा, गल्ला तेलहन और किराने की आढ़त का काम होता है। T. A. Banath

बम्बई—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त—यहाँ गल्ला, सोना, चाँदी, कपड़ा, किराना आदि की आढ़त का काम होता है।

प्रतापगढ़—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त माधोगंज—चीनी, चावल और किराने की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स पुरुषोत्तमदास सराफ

इस फर्म की स्थापना ४० वर्ष पूर्व लाला पुरुषोत्तमदासजी ने कर चाँदी-सोने का व्यापार आरम्भ किया था जो यह फर्म आज भी कर रही है। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की और अपनी फर्म की शाखायें बम्बई तथा कलकत्ते में खोलीं। आपके तीन पुत्र हुए जिनका नाम लाला मुंशीलालजी, लाला सुमेरचंदजी तथा लाला फूलचंदजी हैं। आपने अपने पुत्रों को व्यापार में लगाया। आपका स्वर्गवास २ वर्ष हुए हो गया है। आपके पुत्र सब अलग २ अपना व्यापार करते हैं। अतः इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मुंशीलालजी जैन हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

अलाहाबाद—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सराफ चौक सराफा—यहाँ फर्म का हेड-आफिस है। सोने-चाँदी का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद २२ सोना पट्टी—यहाँ आढ़त का काम होता है। यहाँ तार का पता Sitabjaini है।

बम्बई—मेसर्स पुरुषोत्तमदास मुंशीलाल १९४ मोतीबाजार—यहाँ आढ़त का काम होता है। तार का पता-Chandani है।

मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद

इस फर्म के मालिक अलाहाबाद के निवासी हैं। आप अग्रवाल जैन-समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला पुरुषोत्तमदासजी ने की थी। आपके स्वर्गवास के बाद आपके पुत्र लाला सुमेरचंदजी ने उपरोक्त नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार आरम्भ किया आप ही इस फर्म के मालिक हैं।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद जैन ठठेरी बाजार—यहाँ चाँदी-सोना तथा [illegible] का काम होता है। तार का पता-Sumer है।

कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद जैन नं० १२ सोनापट्टी—यहाँ आढ़त का काम होता है। तार का पता-Sitabjaini है।

बम्बई—मेसर्स पुरुषोत्तमदास मुंशीलाल १९४ मोती बाजार—यहाँ आढ़त का काम होता है। तार का पता-Chandani है।

मेसर्स बाबूलाल बृजमोहनदास

इस फर्म की स्थापना ३० वर्ष पूर्व लाला बृजमोहनदासजी ने की थी। आपने कपड़े का व्यापार आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी अच्छे ढंग से कर रही है। इस फर्म का प्रधान संचालन आप ही करते हैं और आपकी देख रेख में आपके पुत्र बाबू राजारामजी, बा० जानकी प्रसादजी तथा बाबू राजकुमारजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स बाबूलाल बृजमोहनदास चौक—यहाँ सभी प्रकार के देशी तथा विदेशी कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स भगवतीप्रसाद रामस्वरूप

इस फर्म की स्थापना ५ वर्ष पूर्व लाला भगवती प्रसादजी ने की थी। इस फर्म पर गल्ले और तेलहन का काम और आढ़त का काम होता है। इस फर्म के प्रधान संचालक लाला भगवती प्रसादजी और लाला महादेव प्रसादजी हैं। आप लोग वैश्य समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स भगवतीप्रसाद रामस्वरूप मुट्ठीगंज—यहाँ गल्ला तथा तेलहन का काम और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स माधुरीदास नारायणदास

इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व लाला नारायणदासजी ने की थी। तब से यह फर्म तेल, गुड़, घी तथा चाँनी की आढ़त का काम कर रही है। इस फर्म के मालिक लाला पुरुषोत्तमदासजी और लाला शिवप्रसादजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्व० पं० शङ्करलालजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद शङ्करलाल) इलाहाबाद

स्व० पं० रामदासजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद शङ्करलाल) इलाहाबाद

स्व० पं० कालकाप्रसादजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद

पं० कन्हैयालालजी भार्गव (राधाकृष्ण बेणीप्रसाद

इलाहाबाद—मेसर्स मथुरादास नारायणदास मीरगंज—यहाँ चीनी का काम प्रधान रूप से होता है।

मेसर्स राधाकृष्ण बेनीप्रसाद

इस फर्म की स्थापना लाला शंकरलालजी ने सर्व प्रथम उपरोक्त नाम से बनारस में की थी। उस समय आपने बड़े साहस से अपना व्यापार चलाया था। रेल के न होने से आप अपना माल अपनी नावों में लदा कर सीधा कलकत्ते भेजते थे। आप अपने समय के प्रतिभाशाली नागरिक एवं प्रतिष्ठित व्यापारी थे। आपने अपनी फर्म इलाहाबाद में खोली जहाँ आज भी आपका परिवार प्रतिष्ठापूर्वक निवास करता है। आप लोग शाहजादपुर (टांडा) के आदि निवासी गौड़ ब्राह्मण समाज के भार्गव सज्जन हैं। इसका अधिक परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग के कलकत्ता विभाग में पृष्ठ ४१४ में देखिये। इसके वर्तमान मालिक लाला शंकरलालजी के पौत्र लाला कालिका प्रसादजी के पुत्र लाला कन्हैयालालजी और लाला मनोहरलालजी हैं।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला बब्बूलालजी का आदि निवास स्थान यहीं का है पर उपरोक्त नाम से आप गोंडा और तुलसीपुर (गोंडा) में अपनी फर्म खोल कर बहुत अर्से से गल्ले का व्यापार करते थे। आपने लगभग ८ वर्ष पूर्व उपरोक्त नाम से यहाँ भी फर्म खोली। तब से यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम कर रही है। इसके मालिक आप ही हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इलाहाबाद—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल मुट्ठीगंज—यहाँ गल्ला, तेलहन तथा चीनी की आढ़त का काम होता है।

गोंडा—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल—यहाँ गल्ले और तेलहन की आढ़त का काम होता है।

तुलसीपुर (गोंडा)—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बब्बूलाल—यहाँ गल्ले तथा तेलहन की आढ़त का काम होता है।

मेसर्स शिवदत्त अयोध्याप्रसाद (लोहिया पाँडे)

इस फर्म के संस्थापक पं० शिवदत्तजी ने ९० वर्ष पूर्व अपने आदि निवासस्थान मिर्जापुर में अपनी फर्म खोल कर लोहे का व्यापार आरम्भ किया था। कुछ वर्ष बाद आपने इलाहाबाद में उपरोक्त नाम से व्यापार आरम्भ किया और यहीं रहने भी लगे। आपको व्यापार में अच्छी

मिली। फलतः धातु थाने के अतिरिक्त लाख, गल्ला और नमक का व्यापार भी क्रमशः खोला गया और समय पाकर फर्म ने कपड़े का व्यापार भी आरम्भ कर दिया है। अतः यह फर्म उपरोक्त व्यापार को ही अपना प्रधान व्यापार मानती है।

इस फर्म के आदि संस्थापकों में से बा० जमनादासजी का स्वर्गवास हो गया है अतः फर्म के वर्तमान मालिक बा० पन्नालालजी तथा स्व० बा० जमनादासजी के पुत्र बा० छोटेलाल जी, बा० लक्ष्मीचंदजी, और बा० हीरालालजी तथा बा० पन्नालालजी के पुत्र बा० कपूरचंदजी हैं। आप लोग वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बी महानुभाव हैं। तथा एक अर्से से मिर्जापुर में ही यह परिवार निवास करता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स जमनादास पन्नालाल T. A. Gunmetal—यहाँ धातु थाना, लाख और कपड़े का प्रधान काम होता है।

मिर्जापुर—मेसर्स जमनादास फूलचंद—यहाँ गल्ला, कपड़ा तथा नमक का प्रधानतया काम होता है।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्म का हेड आफिस यहीं मिर्जापुर में है। इसके वर्तमान मालिक सेठ धनेशदासजी हैं। यहाँ की प्रसिद्ध फर्मों में से यह एक है। इसकी और भी स्थानों पर शाखाएँ हैं। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार और बैंकिंग तथा जमींदारी का काम करती है। इसकी यहाँ बहुत बड़ी जमींदारी है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में पेज नं० ३१६ में दिया गया है।

मेसर्स मयागदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म का हेड आफिस यहीं है पर इसके मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है अतः इसका विशेष परिचय हमारे इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १२१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सोना चाँदी तथा लोहे को छोड़ कर सभी प्रकार की धातुओं का व्यापार करती है।

मेसर्स बाबूलाल भागीरथीराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। इसके वर्तमान मालिक रायबहादुर भागीरथीरामजी एवं गरीबदासजी हैं। आपका निवासस्थान यहीं का है। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े की खरीदी का काम करती है। इस फर्म की ओर से यहाँ एक बाबूलाल हायस्कूल चल रहा है।

मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी

इस फर्म के आदि संस्थापक बाबू हजारीलालजी सेठ ने सन् १८८५ ई० के लगभग मेसर्स हजारीलाल बल्देवदास के नाम से अपनी फर्म स्थापित कर व्यापार का सूत्रपात किया था। आरम्भ में यह फर्म नावों के कन्ट्राक्ट का काम करती थी पर जैसे २ फर्म को सफलता मिलती गयी वैसे २ फर्म ने पत्थर का व्यापार भी आरम्भ कर उन्नति की ओर अग्रसर किया। फर्म की विशेष उन्नति बाबू बल्देवदासजी सेठ के हाथों हुई। आपने फर्म के पत्थर के व्यापार को अधिक उन्नति दी। वृद्धावस्था के कारण कार्यक्षेत्र से आप वर्तमान समय में अलग हैं। अतः आपके ज्येष्ठ पुत्र बाबू केदारनाथजी सेठ के हाथों में फर्म के व्यवसाय संचालन का भार आया। आपने फर्म के व्यापार को बहुत उत्तेजन दिया।

इस फर्म के वर्तमान प्रधान संचालक बाबू केदारनाथजी सेठ हैं। आप लोग खत्री समाज के मेठ सज्जन हैं। आप लोग बहुत पुराने समय से मिर्जापुर में रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी गऊघाट—यहाँ पत्थर तथा कन्ट्राक्ट का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी १ गौरदास बैशाख स्ट्रीट—यहाँ पत्थर और बैंकिंग तथा कन्ट्राक्ट का काम होता है।

पचौर (दुमका)—मेसर्स बल्देवदास सन्स एण्ड कम्पनी—यहाँ पत्थर का काम होता है। विन्ध्याचल, गैपुरा, बिरोही, मिर्जापुर, झिगुरा, टगमगपुर में इस फर्म की पत्थर की खानें हैं।

मेसर्स मूलचंद नारायणदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ नारायणदासजी, केदारनाथजी और कैलाशनाथजी खंडेलवाल हैं। इस फर्म का हेड-आफिस कलकत्ता है। इसका विशेष हाल दूसरे भाग के पेज नं० २२९ में दिया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग और कपड़े का व्यापार करती है।

मेसर्स महादेवप्रसाद कालीप्रसाद

इस फर्म की स्थापना बाबू महादेव प्रसादजी जैसवाल ने सन् १८९२ ई० में मिर्जापुर में की थी। आपने अपनी फर्म में कपड़े का व्यापार आरम्भ किया और अपने उद्योग से फर्म के

व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। फलतः यह फर्म बंगाल, बिहार, गोंड तथा मध्य भारत में लाख खरीदकर अपने नहरघाट वाले चपड़े के कारखाने में चपड़ा तैयार कराती है। यह फैक्ट्री ५० हजार की लागत से तैयार करायी गयी है। इसी प्रकार एक दूसरी फैक्ट्री माल्दा में है। इस प्रकार अन्य स्थानों से लाख खरीद २ कर आती है और फर्म अपने दोनों कारखानों में इसी लाख का चपड़ा तैयार कराती है और दूर विदेशों को भेजती है। फर्म के एजेन्ट लन्दन, न्यूयार्क और पेरिस में हैं जहाँ फर्म द्वारा भेजे गये माल की बिक्री आदि का प्रबन्ध है।

इसके अतिरिक्त फर्म जंगल की दूसरी उपज की बिक्री का काम भी करती है और साथ ही मिर्जापुरी कालीन तथा रंग का व्यापार भी यह फर्म करती है। नकली ज्वैलरी के काम में आनेवाले Corundum stone को खानों से खोद कर विदेश में बेचने का काम भी यह फर्म करती है।

इस फर्म ने चपड़े के काम में अच्छी ख्याति प्राप्त की है फलतः सन् १९०५ ई० में बनारस की नुमायश में सोने का मेडल तथा सन् १९१० ई० में इलाहाबाद की नुमायश में सर्टिफिकेट और चाँदी का पदक मिला है। बटन स्टैम्पड शेलक तथा टङ्गलैक (बाजू) नामक चपड़े के प्रकार को जन्म देनेवाली यही फर्म है। इसके कितने ही रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं (Lion), (M) B. N. Button Lac. M. P. T Tongue Lac. इनमें से M. P. I; M. D. और M. P. V. आदि चपड़े के ऊँचे ग्रेड हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रमेशसिंह जैसवाल तथा बाबू केशरीसिंहजी जैसवाल हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मिर्जापुर—मेसर्स महादेवप्रसाद काशीप्रसाद T A. Kot—यहाँ चपड़ा, लाख, ईस्ट इंडियन प्रोड्यूस तथा कोरंडम स्टोन का काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण हनुमानदास

इस फर्म की स्थापना फतेपुर निवासी बाबू लक्ष्मीनारायणजी तथा गूढ़ निवासी बाबू हनुमानदासजी ने लगभग २० वर्ष पूर्व मिर्जापुर में की थी। आप दोनों ही महानुभावों ने सम्मिलित रूप से इस फर्म को खोला और कमीशन का काम आरम्भ किया, जो यह फर्म आज भी इसी प्रकार से करती आ रही है।

इस फर्म पर लाख, चपड़ा, बर्तन तथा धातु बाने के कमीशन का काम तो होता ही है पर इसके अतिरिक्त यह फर्म अन्य सभी प्रकार के माल की खरीद तथा बिक्री का काम कमीशन एजेन्ट के रूप में करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी तथा फर्म के दूसरे भागीदार बाबू हनुमानदासजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स लक्ष्मीनारायण हनुमानदास बुन्देलखण्डी—यहाँ सभी प्रकार के माल की आढ़त का काम होता है।

बनारस

<u>ऐतिहासिक परिचय</u>

इस प्रसिद्ध शहर और तीर्थ स्थान का इतिहास बहुत पुराना है। आज से पचीस शताब्दी पहले सारनाथ में महात्मा बुद्धदेव ने धर्मोपदेश देकर बौद्ध मत का प्रचार किया और कितने ही शिष्य बनाये। इसी समय जगद्गुरु शंकराचार्य भी भारत में भ्रमण करते हुए काशी में आये और भिन्न भिन्न मतवालों से शास्त्रार्थ कर उन्हें परास्त किया तथा अपने धर्मोपदेशों से लोगों को अपने धर्म में दीक्षित किया।

सन् १०१८ में महमूद गज़नी ने काशी के राजा बनार पर चढ़ाई की लड़ाई में वे हार गये, उनका किला तोड़ डाला गया, बचे हुए लोग इधर उधर भाग गये। इस लड़ाई में मरे हुए मुसलमान राजघाट के पास गंज शहीद नाम की मसजिद के पास गाड़े गये और उन्हीं के स्मारक में यह मसजिद बनाई गई।

इसके उपरांत बनारस कन्नौज के राठौर वंशीय राजा गोविन्दचन्द, राजा विजयचन्द और राजा जयचन्द के अधिकार में रहा। सन् ११९४ में कन्नौज के राजा और कुतुबुद्दीन ऐबक में इटावे के पास घोर युद्ध हुआ। इसी युद्ध में बनारस उनके हाथ से निकल गया और बाद में गहरवार जाति के लोग इसके शासक हुए। कुतुबुद्दीन मुहम्मद गोरी का सेनापति था, मुहम्मद गोरी बनारस की विजय सुन कर स्वयं आया और हजारों हिन्दू मन्दिर तथा शहर के अच्छे भागों को तोड़ फाड़ कर उजाड़ कर डाला और अपनी तरफ से एक अधिकारी को यहाँ रख सैकड़ों ऊँटों पर धन आदि लदवा कर वह अपने देश को चला गया। सन् १२९४ में सिकन्दर लोदी भी चुनार से यहाँ आया, वह भी बचा खुचा धन ले चलता हुआ। इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी तक काशी में खूब उलट फेर रहा।

मुगल सम्राट अकबर सन् १५६५ ई० में यहाँ आये। आप के समय इस नगर में बहुत कुछ धार्मिक उन्नति हुई और कितने ही नए मन्दिर और घाट बने। मगर समय ने फिर पलटा खाया। सन् १६६९ ई० में औरंगजेब काशी में आया और निज स्वभाव के अनुसार उसने कितने ही मन्दिरों को तुड़वा दिया और उसके सामान से उसने मसजिदें बनवाई। इसका उदाहरण चौखम्भा

मसजिद, बकरिया कुण्ड की मसजिद, लाट भैरव की मसजिद, ढाई कँगूरा मसजिद, आलमगीरी मसजिद आदि कितनी ही हैं, जिनमें मन्दिरों के खम्भे, गुम्मज और पत्थर लगे हुए हैं। ढाई कँगूरे वाली मसजिद की छत में एक पत्थर के टुकड़े पर संस्कृत भाषा में एक लिपि खुदी हुई है जिसमें सम्वत् १२४८ में वाराणसी नगरी तथा इसके चारों ओर मन्दिर पुष्करिणी मठ आदि के बनाने का उल्लेख है। इसी प्रकार ज्ञानवापी के पास विश्वनाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ कर उसी स्थान पर मसजिद बनाई है और सदा के लिये हिन्दुओं का चित्त दुखाने के लिये मन्दिर का एक भाग मसजिद के पिछले हिस्से में ज्यों का त्यों रहने दिया है। यहीं तक नहीं पंचगंगा घाट पर वेनीमाधव का मन्दिर तोड़ कर उसके सामान से मसजिद तैयार हुई है जिसमें दो ऊँची मीनारें हैं और वह माधवराव के धराहरा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानी राजत्व काल में सब से अधिक औरंगजेब के जमाने में काशी के धार्मिक जीवन को धक्का पहुँचा। बाद में यह सूबा नवाब अवध के आधीन में आया।

सन् १७३० ई० में सआदत खाँ अवध के नवाब हुए उन्होंने मुरतजा खाँ नाम के एक उमराव से सात लाख सालाना मालगुजारी पर बनारस, गाजीपुर, जौनपुर और चुनार के चारों परगने लेकर अपनी तरफ से आठ लाख रुपया मालगुजारी पर अपने मित्र मीर रुस्तम अली को देकर उन्हें फौजदार बनाया, तब से रुस्तम अली सब प्रबंध करने लगे, माल दीवानी और फौजदारी सभी इनके अधिकार में थी। उसके पश्चात् यह शहर ब्रिटिश शासन के अधिकार में आ गया।

दर्शनीय स्थान

कीन्स कालेज—जगतगंज की सड़क पर सन् १७९२ में कालेज की यह देखने योग्य इमारत बनी है। चुनार के पत्थर से इसका बाहरी भाग और ऊपर का टावर तैयार हुआ है। कालेज का जो हिस्सा जिसके खर्च से बना है वहाँ दाता का नाम पत्थर के उभड़े हुए हिन्दी और अंग्रेजी अक्षरों में खुदा है अन्य लोगों के दान के अतिरिक्त सरकार का १९०३५०) रु० व्यय हुआ है। पूर्व में कालेज लाइब्रेरी और पश्चिम तरफ में म्यूजियम है जिसमें मेजर किटो द्वारा लाई गई सारनाथ की चीजें हैं। पत्थर का सुन्दर फौवारा, हौज, धूप घड़ी और ३२ फुट ऊँचा एक स्तम्भ देखने योग्य है। यह स्तम्भ सन् १८५० ई० में गाजीपुर से लाकर यहाँ खड़ा किया गया है, पिलर पर खुदे हुए अक्षरों से यह चौथी सदी का मालूम होता है। इसमें संस्कृत कालेज विभाग भी खोला गया है।

मान मन्दिर—सवाई जयसिंह जिन्होंने १७२८ ई० में जयपुर को बसाया था उन्हीं जयसिंह के बनवाये मान मन्दिर में ज्योतिष विद्या के यंत्र देखने योग्य हैं। वहाँ जाने पर सबसे

पहिले 'याम्योत्तर भिति' यंत्र मिलता है। महाराज जयसिंह ने इस यंत्र द्वारा सूर्य की सब से बड़ी क्रांति २३ अंश और २८ कला निकाली थी। पास ही में यंत्रसम्राट, नाड़ीयंत्र, धूप घड़ी, चक्रयंत्र, दिगंशयंत्र आदि ज्योतिष विद्या के चमत्कार दिखलाते हैं। चार वर्ष के लगभग हुए इनको फिर से मरम्मत कर दी गई है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि काशी में यह स्थान देखने योग्य है।

माधवराव का धरहरा—घाट के ऊपर औरंगज़ेब की बनवाई हुई १४२ फुट ऊँची एक बड़ी मसजिद है, जो वहीं के वेनीमाधव के मन्दिर की सामग्री से बनी है। मीनार पर चढ़कर देखने से बनारस की बहार दिखलाई पड़ती है। ऊपर धरहरे पर जाने के लिये चक्करदार सीढ़ियाँ हैं। दो पैसा फी आदमी लेकर वहाँ का मुसलमान लोगों को ऊपर चढ़ने देता है। मीनार का नाम माधवराव का धरहरा पड़ा है।

हिन्दूविश्वविद्यालय—

श्रद्धेय पं० मदनमोहन मालवीयजी की यह अमर कीर्ति है। इस विश्वविद्यालय की नींव सन् १९१६ के फरवरी मास में श्रीमान् लार्ड हार्डिञ्ज ने दी थी। जिस स्थान पर नींव का शिलान्यास हुआ वहाँ पर वर्षा काल में गंगाजी चढ़ कर आ गईं। इस कारण कुछ दूर हट कर विश्वविद्यालय के कालेज और होस्टेल बनाये गये हैं। नींव देने के समय भारत के कितने ही राजे, महाराजे, विद्वान् और सम्भ्रांत पुरुष सम्मिलित हुए थे उस समय का समारोह दर्शनीय था। काशी नरेश की दी हुई जमीन के अतिरिक्त कई लाख रुपये की और भी जमीन ली गई है जिससे विश्वविद्यालय का विस्तार बहुत अधिक बढ़ गया है।

श्रद्धेय मालवीयजी ने खोज २ कर बड़े २ विद्वानों और विशेषज्ञों को यहाँ एकत्रित किया है। इस विद्यालय में इञ्जीनियरिंग कालेज, आर्टस् कालेज, साइंस की लेबोरेटरियों के भवन, छात्रावास, व्यायाम शाला, पुस्तकालय, अस्पताल, डाक और तार, शिक्षकों के रहने के स्थान आदि बन कर तैयार हो गये हैं। इस विद्यालय में व्याख्यान बराबर हुआ करते हैं। विश्वविद्यालय देखने के लिए नित्य प्रति लोग आया करते हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स ने किया था उस समय का दृश्य देखने योग्य था।

अजमतगढ़ पैलेस—श्रीमान् राजा मोतीचंद साहब सी० आई० ई० ने इसे सन् १९०४ में बनवाया था। यह सुन्दर और दर्शनीय कोठी, इसकी चित्ताकर्षक सजावट और मोतीझील की बहार देखने योग्य है। वर्षा ऋतु में यह स्थान बड़ा रमणीक मालूम होता है। झील के उस पार हनुमानजी का दर्शन होता है। बाहरी तरफ के शौकीन प्रायः नित्य ही झील पर आया करते हैं।

इस फर्म के प्रधान मालिक बाबू किशोरीरमणप्रसाद तथा आपके चाचा बाबू किशनप्रसादजी के पुत्र बाबू राधारमणप्रसादजी हैं। जो नाबालिक होने के कारण शिक्षा प्राप्त करते हैं। इनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स कालेश्वरप्रसाद गयाप्रसाद कोठी कचौड़ी गली—यहाँ हेड आफिस है और बैंकर्स तथा लैण्ड लार्ड्स का बहुत बड़ा काम होता है।

गया—मेसर्स कालेश्वर प्रसाद गया प्रसाद कोठी गायत्री घाट—यहाँ बैंकर्स तथा लैण्डलार्ड्स का काम होता है।

रायबहादुर बाबू बटुकप्रसाद खत्री

इस परिवार के लोग खत्री समाज के सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान लाहौर (पंजाब) का है। आपके पूर्वज पंजाब केशरी रणजीतसिंह के यहाँ पर युद्ध मंत्री के सम्माननीय पद पर रहे थे। मगर आप एक दीर्घकाल से यहीं पर बस गये हैं। सर्वप्रथम इस परिवार के पूर्वपुरुष बाबू चन्दनलालजी यहाँ पर आये, और इस नगरी की स्वर्गोपम महिमा को देख कर यहीं पर बस गये। यहाँ पर आपके दो पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से बा० गोकुलचन्दजी और बा० मथुराप्रसादजी था। बा० गोकुलचन्दजी बाल्यकाल ही से बड़े कुशाग्रबुद्धि थे। आपने केवल १४ वर्ष की आयु में ही विद्याध्ययन समाप्त कर व्यापार आरम्भ किया। जिसमें आपको अच्छी सफलता और सम्पत्ति प्राप्त हुई। आपने अपना धन जमींदारी खरीदने में लगाया। फलतः आप बहुत बड़े जमींदार हो गये। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम बा० ठाकुरसहायजी और बा० बटुकप्रसादजी था। आपने अपने पुत्रों को अच्छी शिक्षा दे शिक्षित बना दिया तथा विवाह भी कर दिये। बा० ठाकुरसहायजी के दो पुत्र हुए। थोड़े समय पश्चात् आपके बड़े पुत्र बा० ठाकुरसहायजी का देहान्त हो गया जिससे आपके हृदय को बहुत धक्का लगा और आप सांसारिक कार्य्यों से उदासीन हो गये। आपने काशी के प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट का जीर्णोद्धार कराया तथा इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक और धार्मिक कार्य्यों में सहायता दी। आपके स्वर्गवास के पश्चात् समस्त कारबार का भार रायबहादुर बटुकप्रसादजी के हाथों में आया। आपका जीवन बड़ा उदार और सार्वजनिक रहा। आपने कई लोकोपकारी और सार्वजनिक कार्य्यों में मुक्तहस्त हो सहायतायें पहुँचाई। सन् १९२५ में आपने एक लाख रुपया दान दे कर कलाकौशलसम्बन्धी विद्यालय स्थापित किया जिसमें सभी प्रकार की कलाकौशल सम्बन्धी शिक्षा दी जाती है। इसका सब प्रबन्ध भार आपने प्रान्तीय सरकार को दे दिया है। इसके सिवा आपने सारस्वत खत्री विद्यालय को १५००० का मकान मुफ्त में

दिया। मन्छोदरीकुण्ड का जीर्णोद्धार करवा कर उसके चारों ओर बगीचा लगवा कर उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए म्यूनिसिपैलिटी को दे दिया। इसी प्रकार आपने और भी कई अच्छे २ कार्य्यों में दान दिये। हाल ही में आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस समय इस परिवार के विशाल कारबार का संचालन बा० शत्रुघ्नप्रसादजी के पुत्र बा० गुरुचरणप्रसादजी तथा बा० जगन्नाथप्रसादजी कर रहे हैं। आप भी बड़े योग्य सज्जन हैं। बा० गुरुचरणप्रसादजी के पुत्र बा० राजेन्द्रप्रसादजी तथा बा० [illegible] और बा० जगन्नाथप्रसादजी के पुत्र बा० कृष्णप्रसादजी और शम्भुप्रसादजी हैं।

आपकी फर्म पर बैङ्किङ्ग और जमींदारी का बहुत बड़ा कारबार होता है।

ऑनरेबल राजा मोतीचन्द साहब सी० आई० ई०

आपका जन्म दूसरी अगस्त सन् १८७६ ई० में हुआ था। आपके [illegible] बनारस के प्रसिद्ध रईस थे, सन् १८५७ के बलवे के समय ब्रिटिश सरकार की [illegible] ने बड़ी सहायता की थी। राजा साहब पर बहुत थोड़ी अवस्था में ही [illegible] का भार आ पड़ा किन्तु आपने जिस कुशलता एवं दूरदर्शिता से उसको [illegible] किया उसका [illegible] प्रमाण आपकी अब तक की सफलता से मिलता है। इसमें सन्देह नहीं कि आपकी [illegible] बुद्धि, कार्य्यदक्षता, योग्यता और परिश्रम का फल बहुत ही अच्छा हुआ है।

श्रीमान राजा साहब सन् १९१२ में प्रान्तीय कौंसिल के मेम्बर [illegible] बनारस म्युनिसिपल बोर्ड के प्रथम हिन्दुस्तानी चेयरमैन चुने गये। बनारस [illegible] के आप सभापति हैं। सन १९२० में आप कौंसिल आफ स्टेट के मेम्बर हुए। [illegible] विद्यालय को आपने १,०००००) रु० दिया। यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के [illegible], अपर इण्डिया काटन मिल्स कम्पनी के मालिक, बनारस काटन [illegible] बैंक, बनारस इन्स्टीट्यूट के सभापति, ब्रिटिश इण्डिया एसोसियेशन [illegible] प्रोविंशियल जमींदार सभा, भारतीय लेजिस्लेटिव एसोसियेशन, तथा [illegible] आप इम्पीरियल बैंक के भी सदस्य हैं। भवाली सेनेटोरियम की आपने [illegible] स्थापना की है।

पहली जनवरी सन् १९१६ में आपको सी० आई० ई० की उपाधि मिली [illegible] की तीसरी जून को आप राजा के टाइटिल से सम्मानित किये गये। आप [illegible] कमेटी के भी सदस्य हैं। सन १९१८ में भारत सरकार ने आपको युद्धसम्बन्धी [illegible] के लिये धन्यवाद और सैश दिया है। सन् १९१९ में आपको १०००) का [illegible]

माफ हुई। मतलब यह कि राजा साहब काशी के जितने ही सार्वजनिक कामों में बराबर योग देते और उनकी सहायता करते हैं।

राजा मुंशी माधोलाल साहब सी० एस० आई० काशी

आपके पूर्व पुरुष १८ वीं शताब्दी में अहमदाबाद से दिल्ली को चले आये और वहाँ से लखनऊ में अवध के नव्वाबों के यहाँ काम करने लगे। सब से प्रथम मुन्शी भवानीलालजी बनारस में आये। आपके कुटुम्ब के कुछ लोग सरकारी नौकरी करने लगे। कुछ लेन देन के व्यवहार से अच्छी सफलता प्राप्त हुई। मुन्शी लक्ष्मीलाल बनारस में सरकारी वकील थे, अपने समय में इन्होंने जायदाद और इलाके खरीद किये। आपके भाई मुन्शी गिरधरलाल के पुत्र मुन्शी बेनी-लालजी हुए जो कि बनारस और बलिया में मुन्सिफ थे। आपही के पुत्र मुन्शी माधोलालजी और मुन्शी साधोलालजी हुए। मुन्शी साधोलालजी कोठी का काम देखने लगे और मुन्शी माधोलालजी सरकारी काम करने लगे। समय पाकर आप सब-जज हुए, आपके भाई मुन्शी साधोलालजी का बिना सन्तान के शरीरान्त हो गया तब राजा साहब को जमींदारी का सब भार भी लेना पड़ा। सन् १९०० में आप प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य हुए और सन् १९०६ में बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सदस्य चुने गये।

आपके कुटुम्ब के लोग चौखम्भा की कोठी में रहते हैं। आपका एक बाग चेतगंज और दूसरा बाग शहर से चार मील बाहर भूलनपुर में है जिसे अब मातापुर भी कहते हैं। आप का यह स्थान बड़ा रमणीक है।

राजा साहब ने ८५०००) रु० से सरस्वती भवन लाइब्रेरी बनवाई, अपने भाई मुन्शी साधोलाल के स्मारक में ४०,०००) से संस्कृत की उच्च शिक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति देने का प्रबंध किया। किंग एडवर्ड अस्पताल की सहायता की। ५०००) लखनऊ में फव्वारे के लिये दिया।

आप बनारस क्लब, नैनीताल क्लब, ओरियण्टल क्लब, कलकत्ता क्लब और लखनऊ के यूनाइटेड सर्विस क्लब के मेंबर थे।

आपको जनवरी सन् १९०९ में सी० एस० आई० का और जून सन् १९१० में राजा का सम्मानित टाइटिल मिला। आपका स्वर्गवास ८४ वर्ष की अवस्था में हुआ। आप अपने मातापुर वाले बाग में ही रहते थे। कई वर्ष पूर्व से ही आपने अपने स्टेट का सब प्रबन्धभार अपने बड़े नाती राय बहादुर कुँवर नन्दलालजी को दे दिया था। इस समय कुँवर साहब ही उत्तराधिकारी

इस फर्म का जहाँ व्यवसाय बहुत विस्तृत है वहाँ स्थायी सम्पत्ति भी इसकी विशाल है। इसकी जमींदारी बनारस, जौनपुर, भागलपुर तथा पुरनिया जिलों में है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स मनीराम हरजीवनराम गायघाट, बंगाली बाड़ा—यहाँ सभी प्रकार के ऊँचे दर्जे के फैन्सी बनारसी माल, सोना, चाँदी जटित जेवरात तथा जवाहिरात का काम होता है। इसके अतिरिक्त लैण्ड लार्ड्स और बैंकर्स का व्यवसाय भी होता है।

मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोतीचन्दजी हैं। आपही के द्वारा करीब ३० वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई। इसकी उन्नति का श्रेय भी आप ही को है। दानधर्म आदि के कार्यों की ओर भी आपका अच्छा ध्यान रहा है। आपके ६ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः बाबू कुंजीलाल जी, बा० केसरीचंदजी, बा० फूलचंदजी, बा० सूरजप्रसादजी, बा० बनारसीदासजी एवं बा० निहालचंदजी हैं। आप लोग दिगम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। बा० सूरजप्रसादजी यहाँ की फर्म मेसर्स शड़गमेन उदयराज के यहाँ दत्तक गये हैं।

इस फर्म का व्यापार अपने ढंग का निराला व्यापार है। इस फर्म पर चाँदी सोने की नक्काशी निकाली हुई मोटरें, गाड़ियाँ, सिंहासन, छत्र, चँवर आदि कितनी ही प्रकार की फैन्सी वस्तुओं का व्यापार होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स मोतीचंद फूलचंद मोतीकटरा T. A. Singhahı—इस फर्म पर चाँदी सोने के रथ, मोटर, गाड़ियाँ, सिंहासन, ऐरावत हाथी, वेदी आदि बेश-कीमती सामान तैय्यार होता है तथा बिक्री किया जाता है। इसके अतिरिक्त कमीशन पर भी यह फर्म काम करता देती है।

बनारस—मेसर्स मोतीचंद कुंजीलाल, सिल्कहाउस मोतीकटरा—यहाँ बनारसी माल, साड़ियाँ, लहँगे आदि पर कलमानसितारे का काम और जरी की वस्तुओं का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त काशी-सिल्क का व्यापार भी यह फर्म करती है।

कलकत्ता—मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द, २१२ हरिसन रोड—यहाँ बनारस के बने हुए सभी प्रकार के जरी के बेश-कीमती कपड़े एवं चाँदी सोने की बनी हुई फैन्सी वस्तुओं का व्यापार होता है। यहाँ यह फर्म कमीशन का भी काम करती है।

सेठ मोतीचंदजी सिंघई (मोतीचंद फूलचंद) जबलपुर

सेठ फूलचंदजी सिंघई (मोतीचंद फूलचंद) ज

मोती कटरा (चाँदी कोठी) जबलपुर

चाँदी का हौदा (फर्म-मोतीचंद फूलचंद) जबलपुर
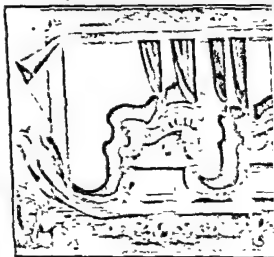
मैसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय

इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ राधाकृष्णजी डिडवानियाँ ने बनारस में की थी। इस फर्म पर आरम्भ में बनारसी माल का व्यवसाय होता था जो आज भी उसी प्रकार से होता है। ज्यों-ज्यों फर्म ने उन्नति की त्यों-त्यों गल्ला, सन (Hemp), अलसी, चाँदी, चाँदी-सोना, गोटा-पट्टा तथा काशी सिल्क आदि के काम खोले गये जो आज भी पूर्ववत् हो रहे हैं। इस फर्म ने लगभग १९ वर्ष पूर्व बनारस के समीप शिवपुर में 'पार्वती हेम्प प्रेसिंग प्रेस' नामक एक मिल खोला जो आज अच्छी अवस्था में काम कर रहा है।

सेठ राधाकृष्णजी का स्वर्गवास हुए लगभग ३९ वर्ष हुए। आपके बाद आपके पुत्र सेठ शिवदत्तरायजी ने व्यापार को सँभाला था। आपके समय में फर्म ने अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८३ में हुआ। वर्तमान में फर्म का व्यवसाय संचालन आपके पुत्र बाबू महादेवप्रसादजी तथा बाबू रामकुमारजी करते हैं। आपकी ओर से बनारस के ज्ञानवापी नामक स्थान में राधाकृष्ण धर्मशाला नाम की एक अच्छी धर्मशाला बनी हुई है। इसी प्रकार रामनिरंजन सेठ की पाठशाला के नाम से एक संस्कृत पाठशाला भी चल रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू महादेव प्रसादजी तथा रामकुमारजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय विश्वनाथ देवी की गली T. A. Dilwaniya —यहाँ फर्म का हेड-आफिस है। यहाँ बनारसी माल तथा गरदोजी का काम होता है तथा एक दो दूसरी फर्म पर गोटे-पट्टे का व्यापार होता है।

१—चौक बनारस—मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय—यहाँ चाँदी-सोने के जेवरात, हीरा, चुन्नी का काम है। यह फर्म कमीशन पर काम करती है।

२—विश्वेश्वरगंज बनारस—यहाँ उपरोक्त नाम से विलायती चाँदी का काम होता है।

३—शिवपुर (जि० बनारस)—T. A. gute.—यहाँ गल्ला, सन तथा अलसी का काम होता है।

मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास।

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गुजरात प्रान्त का है। आप [illegible] वैष्णव समाज के सज्जन हैं। यह परिवार लगभग १०० वर्ष से बनारस में [illegible] है। इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ पुरुषोत्तमजी ने अपने भाई सेठ [illegible] के साथ [illegible] पुरुषोत्तम [illegible] के नाम से फर्म स्थापित कर बनारसी [illegible] किया। आप दोनों ने बनारसी माल के व्यवसाय में [illegible]

की ओर से आने वाले बहोरे व्यापारियों के हाथ कीनखाब की बिक्री का काम आप लोग करते थे। इस व्यापार में आप लोगों ने अच्छी सफलता प्राप्त की। आप लोगों के बाद आप लोगों की संतति भी यही व्यापार करती रही तथा चौथी पीढ़ी में जाकर वे लोग अलग २ हो गये। अतः सेठ जीवनदासजी ने अपनी स्वतंत्र फर्म मेसर्स बैष्णवदास जीवनदास के नाम से सम्वत् १९३० में स्थापित की और व्यापार करने लगे। तब से यह फर्म इसी नाम से व्यापार कर रही है।

सेठ जीवनदासजी के सेठ बालगोविंददास, रायबहादुर हरीदास, राय साहिब हरिकृष्णदासजी, सेठ जयकृष्णदासजी, सेठ रामकृष्णदास, सेठ उदयकरणदास नामक पुत्र थे जिनमें से वर्तमान में राय साहिब हरिकृष्णदासजी, तथा सेठ उदयकरणदासजी ही विद्यमान हैं और शेष स्वर्गवासी हो चुके हैं।

सेठ जीवनदासजी के बाद इस फर्म का कारोबार सेठ बालगोविन्ददासजी करते थे और रायबहादुर हरीदासजी ने अपना सारा जीवन सार्वजनिक कार्यों में लगाया। आप बुआ साहब के नाम से सुविख्यात थे। आपने सदैव मानव हितकर कार्यों में अपनी पूरी शक्ति से सहयोग दिया। आप इतने लोकप्रिय थे कि बनारस की ज्ञानवापी वाली मस्जिद के झगड़े को जो वर्षों से हिन्दू मुसलमानों के बीच चला आता था आपने सदा के लिये शान्त करा दिया जिसकी प्रशंसा ब्रिटेन की सरकार ने स्वयं प्रशंसा पत्र देकर की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय हरिकृष्णदासजी, तथा आपके भाई सेठ उदयकरणदासजी और आपके भतीजे बाबू जगमोहनदासजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन राय हरिकृष्णदासजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स बैष्णवदास जीवनदास गोला गली—यहाँ बनारसी माल, जवाहिरात तथा सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है। इसके अतिरिक्त आप लोगों की यहाँ बहुत बड़ी जमींदारी है तथा बैंकिंग का काम होता है।

बनारस—मेसर्स नागर ब्रदर्स गोला गली T. A. Unity—यहाँ सभी प्रकार के बैष्णवी बनारसी माल, साड़ी, कीनखाब वगैरः का काम होता है और बहुत बड़े तादाद में एक्सपोर्ट किया जाता है।

स्व० राय बहादुर हरिदासजी नागर (वैष्णवदास जीवनदास) बनारस

रायसाहब हरिकृष्णदासजी नागर (वैष्णवदास जीवनदास) बनारस

श्री० बाबू उदयकृष्णदासजी नागर (वैष्णवदास जीवनदास) बनारस

बाबू जगमोहनदासजी नागर (नागर ब्रदर्स) बनारस

मेसर्स वैष्णवदास परसोत्तमदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गुजरात प्रान्त का है। आप लोग नागर वीसा वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष मेसर्स कुमनदास अनूपनदास के नाम से व्यापार करते थे पर सम्वत् १९३० में मालिकों के अलग २ हो जाने पर सेठ अनूपनदासजी के पौत्र सेठ परसोत्तमदासजी ने अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया। आपके पिताजी का नाम सेठ वैष्णवदासजी था।

इस फर्म पर बनारसी माल, जेवरात और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ परसोत्तमदासजी के तीनों पुत्र सेठ श्यामदासजी, सेठ नरोत्तमदासजी और सेठ नवनीतदासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स वैष्णवदास परसोत्तमदास गोलागली—यहाँ बनारसी माल, जवाहिरात और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है, जो रजवाड़ों को खासतौर से भेजा जाता है। और बैंकिंग तथा जमींदारी का भी काम होता है।

मेसर्स बृजपालदास मुकुन्दलाल

यह फर्म बनारसी माल का व्यापार करने के लिये सन् १९२३ ई० में बाबू बृजपालदास और बाबू मुकुन्दलालजी ने स्थापित की थी। यह फर्म आरम्भ से ही बनारसी माल, काशी सिल्क, जेवरात और चाँदी के बर्तन का व्यापार करती आ रही है। इसके अतिरिक्त चाइना, आसाम, सिल्क तथा शाल का व्यापार भी करती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स बृजपालदास मुकुन्दलाल ठठेरी बाजार T. A. Brij—यहाँ फर्म का हेड आफिस और शो रूम है।

मेसर्स सोहनलाल गिरधरलाल पाठक

इस फर्म की स्थापना ६० वर्ष पूर्व पं० सोहनलाल पाठक ने बनारसी माल का व्यापार करने के लिये की थी। यह फर्म बनारस के कारीगरों से बनारसी माल तैयार कराती और बनारस में ही बनारस के दूकानदारों के हाथ अपना माल बेंचती है। यह फर्म बाहर को अपना माल न तो भेजती ही है और न बाहर वालों के हाथ ही माल बेंचती है। यह फर्म रेशमी थाने कलाबत्तू तथा चाँदी के तार का व्यापार भी करती है। इस फर्म के द्वारा २० चौक से ६०

चौक तक का चाँदी का तार तैयार कराया जाता है जो यह फर्म बनारस के व्यापारियों के हाथ में बेचती ही है पर साथ ही फर्म बहुत बड़े परिमाण में सूरत के समान अन्य कितने ही रेशमी कपड़ा बुनने वाले केन्द्रों को भी भेजती है। चाँदी के तार सलमा, सितारा और गोटा आदि तैयार करने के काम आते हैं। आपके यहाँ का तैय्यार माल मद्रास और सीलोन की ओर रवाना होने योग्य होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० गिरधरलालजी तथा आपके भाई पं० गनेशरामजी, पं० महेशरामजी तथा पं० श्यामसुन्दरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

बनारस—मेसर्स सोहनलाल गिरिधरलाल जवनशर पत्थर गल्ली—यहाँ सभी प्रकार के बनारसी माल का व्यापार होता है।

मेसर्स सोहनलाल बसन्तलाल

इस फर्म की स्थापना बाबू सोहनलालजी लड्ढाने सन् १९११ ई० में बनारस में की थी पर इस फर्म के मालिक इसके पूर्व मेसर्स गोपालदास नान्हूमल के नाम से व्यापार करते थे। इस फर्म पर आरम्भ से ही बनारसी माल का व्यापार होता आया है। इस व्यापार में इसने अच्छी सफलता प्राप्त की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० अनन्तलालजी लड्ढा, बा० बसन्तलालजी लड्ढा, बा० चम्पालालजी लड्ढा और बा० भैरवलालजी लड्ढा हैं। आप लोग डीडवाना (बीकानेर) के रहने वाले हैं और माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोग सम्वत १८११ में बनारस आये और तभी से यहाँ व्यवसाय करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। जिसे बा० अनन्तलालजी लड्ढा और बा० बसन्तलालजी लड्ढा संचालित करते हैं।

बनारस—मेसर्स सोहनलाल बसन्तलाल लक्खी चौतरा—यहाँ बनारसी माल, सोने चाँदी का फर्नीचर तथा जेवरात का व्यापार होता है।

मेसर्स हरिशंकरलाल रामशंकरलाल नैपाली

इस फर्म की स्थापना सन् १८८७ ई० में बाबू हरिशंकरलालजी ने बनारस में की थी। आपके पूर्वज नैपाल के काठमाण्डू नगर के रहने वाले वैश्य जाति के सज्जन थे। वर्तमान में कई पुश्तों से यह परिवार संयुक्तप्रान्त में ही रहता है।

लाला नन्दलालजी (नन्दलाल एण्ड सन्स) बनारस

स्व० बाबू बैजनाथप्रसादजी सेठ (बैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड कम्पनी) बनारस

इस फर्म के संस्थापक बाबू हरिशंकरजी ने आरम्भ से ही कस्तूरी का व्यापार करना आरम्भ किया। तिब्बत की ओर व्यवहार में आने वाली एक विशेष प्रकार की डिजा-इन की कीनख्वाब बनारस में तैयार करवाकर यह फर्म तिब्बत को भेजने और उसके बदले में तिब्बत से कस्तूरी सीधे तौर पर मँगाने लगी। इस व्यापार में फर्म को अच्छी सफलता मिली, फलतः व्यापार अधिक विस्तृत रूप से होने लगा। वर्तमान में यह फर्म भारत के प्रायः सभी प्रान्तों को कस्तूरी सप्लाई करती है।

इस फर्म को कस्तूरी की उत्तमता के सम्बन्ध में फर्म को कितने ही आयुर्वेदिक सम्मेलनों से प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार इस फर्म द्वारा तैयार करायी गई कीनख्वाब के लिये भी फर्म को स्वर्णपदक मिला है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू हरिशंकरलालजी और आप के भाई बाबू रामशंकर लालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स हरिशंकरलाल रामशंकरलाल नेपाली चौखम्भा T. A. Nepali—इस फर्म पर कस्तूरी और कीनख्वाब का व्यापार मुख्यतया होता है। इसके अतिरिक्त चँवर, शिलाजीत, मूंगा मोती, अम्बर आदि का भी अच्छा व्यापार होता है।

जौहरी

मेसर्स जोशी परसोत्तमदास भैरवनाथजी

आप लोगों का आदि निवासस्थान गुजरात प्रान्त का है। आप ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। आप लोगों के यहाँ जवाहिरात का व्यापार पेशवाई के समय से होता आ रहा है। बनारस का यह जोशी परिवार प्रथम मेसर्स परमानन्द भैरोजी के नाम से जवाहिरात का व्यापार करता था पर मालिकों के अलग हो जाने से जोशी परसोत्तमदासजी अपना स्वतंत्र व्यापार उपरोक्त नाम से सन् १९१९ से कर रहे हैं।

इस फर्म के वर्तमान प्रधान संचालक जोशी परसोत्तमदासजी हैं। आप अपनी फर्म पर अपने घराने के पुराने व्यवसाय अर्थात् जवाहिरात के व्यवसाय को करते हैं साथ साथ महा-जनी का काम भी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स जोशी परसोत्तमदास भैरवनाथजी सूतटोला,—यहाँ सभी प्रकार के जेवरात का व्यापार तथा महाजनी काम होता है।

मेसर्स रघुनाथदास गोविन्ददास जौहरी।

इस फर्म के मालिक लगभग २८ वर्ष से उपरोक्त नाम से व्यापार करते हैं। पर इस परिवार का बनारस में व्यापार लगभग १२५ वर्ष से चला आ रहा है और इसी प्रकार लगभग ७० वर्ष से इसके मालिक जवाहिरात का काम करते हैं। यह फर्म जवाहिरात के अतिरिक्त कमीशन एजेन्ट और जेनरल मर्चेन्ट का भी काम करती है।

यहाँ डायमंड के कटिंग और पालिशिंग का काम होता है। इसके अतिरिक्त जेवर हमेशा तैयार रहते हैं और आर्डर मिलने पर जैसा चाहें वैसा तैयार करवा देते हैं। कई भारतीय राज्यों में आपका व्यापारिक संबंध है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रघुनाथदासजी, बाबू गोविन्ददासजी और बाबू फतेचन्दजी हैं। आप लोग डीडवाना (मारवाड़) के रहने वाले हैं। और जाति के माहेश्वरी वैश्य समाज के शारड़ा सज्जन हैं पर अर्से से बनारस रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स रघुनाथदास गोविन्ददास जौहरी रत्नफाटक के सामने बीबी हटिया—यहाँ जवाहिरात के जेवरात सभी प्रकार के तैयार कराये जाते हैं। यहाँ कमीशन एजेन्सी तथा जेनरल मर्चेन्ट का काम भी होता है।

मेसर्स जोशी शिवनाथ विश्वनाथ।

आप लोग गुजरात प्रान्त निवासी ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। पर लगभग ३ सौ वर्ष से आप लोगों का परिवार बनारस में ही रहता है। यह परिवार पेशवाई के समय से प्रायः जवाहिरात का व्यापार कर रहा है और इसी कारण यह परिवार बहुत पुराना जौहरी परिवार है। फलतः जौहरत के व्यवसाय में इसने अच्छी प्रतिष्ठा एवं ख्याति प्राप्त की है। सब से प्रथम इस परिवार के पूर्व पुरुष जोशी केशवजी गुजरात से बनारस आये थे और अपना वंशानुगत जवाहिरात का व्यापार आरम्भ किया था।

वर्तमान में इस फर्म के प्रधान संचालक जोशी दामोदर कामनाथजी हैं। आप जौहरत के अच्छे जानकार और कुशल व्यापारी हैं। आपकी देख रेख में आपके पुत्र एवं आपके बड़े स्व० जोशी सोमनाथजी के पुत्र जोशी गौरीशंकरजी, जोशी बंशीशंकर, जोशी हरशंकर तथा जोशी गोविन्दशंकरजी भी व्यापार संचालन का कार्य करते हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः जोशी गंगाधरजी तथा जोशी गिरजाधरजी हैं।

यह फर्म उपरोक्त नाम से सन् १९१६ ई० से काम कर रही है। यहाँ डायमण्ड, रुबीज, मेरेल्ड आदि नौरत्न की कटिंग और पालिशिंग का अच्छा काम होता है तथा नौरत्नजटित जड़ाऊ जेवरात भी तैयार कराये जाते हैं। जिनकी मांग भारत और विदेश में पूरीतौर से रहती है। यह फर्म व्यापारिक दृष्टि से अपना सम्बन्ध भारत के देशी नरेशों तथा रहीसों से तो रखती ही है साथ ही योरोप के बाजार में भी अच्छा व्यापार करती है। जहाँ काश्मीर, बनारस, रीवाँ, टीकमगढ़ आदि दरबारों के स्पेशल अप्वाइन्टमेन्ट होल्डर यह फर्म है वहाँ यह फर्म जवाहिरात का अच्छा एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट भी करती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स जोशी शिवनाथ विश्वनाथ सुतटोला T. A. Jweller—यहाँ सभी प्रकार के नौरत्न का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स एस० शंकर एण्ड ब्रदर्स

इस फर्म के संस्थापक पुश्तैनी जौहरी हैं। इनका परिवार गुजरात का आदि निवासी है पर शताब्दियों पूर्व इसके पूर्व पुरुष गुजरात से मैसूर चले गये थे और बहुत समय तक वहाँ दरबार के स्टेट ज्वैलर्स रहे। टीपू सुलतान के समय जब वहाँ विप्लव उठ खड़ा हुआ तो पं० हरिशंकरजी बनारस चले आये जहाँ यह परिवार वर्तमान में भी जवाहिरात का व्यापार करता है।

इस फर्म का प्रधान व्यापार जवाहिरात का है और साथ ही यह फर्म डायमण्ड कटिंग का काम भी कराती है। इसके यहाँ जवाहिरात के जेवरात भी तैयार कराये जाते हैं। इसी प्रकार यह फर्म जहाँ सोने-चाँदी के होरे और फर्नीचर तैयार कराती है वहाँ बनारसी माल का व्यापार भी करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० रविशंकरजी, पं० लक्ष्मीशंकरजी, पं० प्रेमशंकरजी, तथा पं० देवशंकरजी हैं। आप लोग गुजराती ब्राह्मण-समाज के पँड्या सज्जन हैं।

इस फर्म को बनारसी माल और ज्वैलरी के सम्बन्ध में सन् १९०८ ई० को नागपुर नुमाइश से स्वर्णपदक मिला हुआ है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—एस. शंकर एण्ड ब्रदर्स माल्हजी का फर्रा—यहाँ जवाहिरात, बनारसी माल तथा सोने-चाँदी का सामान तैयार कराने का व्यापार होता है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल

इस फर्म की स्थापना लगभग १५० वर्ष पूर्व हुई थी। तब से यह फर्म बराबर व्यापार करती चली आ रही है। इस फर्म पर प्रधान रूप से कमीशन एजेण्ट का काम होता है। इसका हेड आफिस बनारस के सुड़िया नामक मोहल्ले में है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी मूंदड़ा हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जाति के मूंदड़ा सज्जन हैं। आपके पूर्व पुरुष सेठ अमेदमलजी मूंदड़ा बीकानेर के आदि रहेवासी थे और वहीं से आप बनारस आये थे। आपके परिवार ने बनारस में व्यापार स्थापित किया था जो आज उन्नत अवस्था पर संचालित हो रहा है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल सुंड़िया—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा सब प्रकार की आढ़त और बैंकिंग का व्यापार होता है।

बनारस—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल विसेसरगंज—यहाँ गल्ला, घी तथा चीनी की आढ़त का व्यापार होता है।

जौनपुर—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल—यहाँ आढ़त तथा चाँदी सोने की बिक्री का व्यापार होता है।

सिरसिया (हुशंगाबाद)—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल—यहाँ गल्ला और रुई का व्यापार होता है। और यहाँ पर फर्म की एक जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्ट्री तथा आढ़त मिल है।

मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दीलाल

इस फर्म का हेड आफिस झूसी (इलाहाबाद) है। यह एक प्रतिष्ठित गल्ले का व्यापार करने वाली फर्म है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग के पेज नं० ४०१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसके मैनेजमेंट में भटनी एवं सिवान दोनों स्थानों पर एक २ शुगर मिल चलती है। इसका यहाँ का पता विसेसरगंज है।

मेसर्स नागरमल देवकिशन

इस फर्म की स्थापना करीब २५ वर्ष पूर्व फतेहपुर निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सेठ नागरमलजी जालान ने मिर्जापुर में की थी। इस फर्म की स्थापना सेठ नागरमल
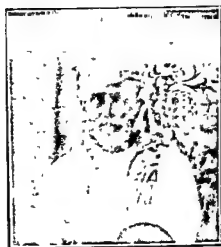
छोटे भाई सेठ देवकिशनजी के द्वारा हुई। आप मिलनसार सज्जन हैं। सेठ नागरमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ देवकिशनदासजी एवं स्व० सेठ नागरमलजी के पुत्र सेठ महावीरप्रसादजी हैं। सेठ देवकिशनदासजी के पुत्र का नाम बाबू रघुनाथप्रसादजी है। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिवपुर (बनारस)—मेसर्स नागरमल देवकिशन T. A. Nagar-यहाँ कपड़ा, गल्ला एवं आढ़त का अच्छा व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदेव नागरमल, काली गोदाम, हरिसन रोड, T. A. Dukandar—यहाँ इस प्रकार की चलानी का काम होता है।

बाबतपुर (बनारस)—मेसर्स रघुनाथप्रसाद महावीरप्रसाद-यहाँ गल्ले की खरीदी का व्यापार होता है।

सैय्यदराजा (बनारस)—मेसर्स विश्वनाथ देवीप्रसाद—यहाँ भी गल्ले की खरीदी का काम होता है।

मेसर्स परसीराम रामेश्वरदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के नवलगढ़िया सज्जन के नाम से प्रख्यात हैं। लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ परसीरामजी अपने भाइयों के साथ बनारस आये और गल्ले तथा कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। फर्म ज्यों ज्यों उन्नति करती गई त्यों त्यों गल्ले और कपड़े के अतिरिक्त हेम्प, हेम्प्रेस, आइलमिल, बैंकिंग और महाजनी आदि का काम समय २ पर खोला गया जो यह फर्म आज भी अच्छी रीति से कर रही है।

सेठ परसीरामजी के तीन भाई और थे जिनके नाम क्रमशः सेठ जीवनरामजी, सेठ पालीरामजी तथा सेठ हरजीमलजी था। इस समय सेठ हरजीमलजी, वर्तमान हैं और शेष तीनों भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं। आप वयोवृद्ध हैं अतः शान्ति लाभ करते हैं।

इस फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय बाबू रामेश्वरदासजी को है। आप बड़े व्यापारकुशल एवं उद्योगी महानुभाव हैं। आपने अपनी फर्म को बहुत अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया है। आपने अपनी फर्म पर हेम्प का काम भी खोला और फर्म को हेम्प का व्यवसाय करने वाली प्रधान फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आपकी फर्म अच्छी

रायसाहब रामरतनजी (जयदयाल मदनगोपाल) बनारस

बाबू छगनलालजी अग्रवाल (सत्यनारायण हरनारायण)
बनारस

बाबू विशेश्वरप्रसादजी (विशेसरप्रसाद पुरुषोत्तमदास)
बनारस

बनारसी माल के व्यापारी—

मेसर्स अर्जुनमल रामरतन
„ गोकुलचन्द रामचन्द्र लखीचौतरा
„ गिरधरदास जगमोहनदास, सुदन्लाल साहु का फाटक
„ गोपालमल पुरुषोत्तमदास, नीलकंठ
„ गोपालदास द्वारकादास
„ गिरधरदास हरिदास रघुनाथदास चौक
„ चुन्नीलाल कुँवरजी चौक
„ जयकिशन लक्ष्मीनारायण कुंजगली
„ जयनारायण हरनारायण नीचीबाग
„ धीरजराम सीताराम लखी चौतरा
„ दिलसुखराय जयदयाल गोपाल साहु का मोहल्ला
„ दुर्गादास द्वारकादास नन्दनसाहु लेन
„ दुर्गासहाय रामलाल छोटी कुंजगली
„ नन्दगोपाल मधुसूदनदास नन्दनसाहु लेन
„ नन्दलाल पन्नूमल रानी कुआँ
„ नगर मदरी सुलानाला
„ पाल्हूमल भोलानाथ कुंजगली गेट
„ पूरनचंद हरिनारायण लखीचबूतरा
„ परमानन्द सीताराम लखीचौतरा
„ बच्चूलाल बनारसीदास चौखम्भा
„ मोतीचंद फूलचंद
„ मनीराम हरजीवनदास गायघाट
„ मन्नूमल गोवर्धनदास कुंजगली
„ राधाकृष्ण शिवदयाल चित्रघंटाजी
„ बैजनाथदास जीवनदास गोलागली

मेसर्स बैजनाथदास पुरुषोत्तम गोलागली
„ वृजलालदास मुकुन्दलाल ठठेरी बाजार
„ सोहनलाल गिरधरलाल जतनबर
„ सोहनलाल बसंतलाल लखीचौतरा
„ हजारीराम दयाराम „

दलाल वाले—

गिरधारीलाल साहु अलपीपुर के पास
भिखलसाहु नागकुआँ
मेवालाल रामसहाय कम्पनी टाउनहाल पीछे
रानेश्वर नेमचंद धई गनेरा

बैंकर्स एण्ड डीलर्स—

मेसर्स रामेश्वरप्रसाद गयाप्रसाद कचौड़ी०
रायबहादुर बटुकप्रसादजी खत्री चौकाघाट
राजा मोतीचन्द सी. आई. ई. भगमतगढ़ पैलेस
मुंशी माधोलाल सी. एस. आई.
राय बैजनाथदास नीची बगपुरी
बाबू बीसूजी, गोपालदास साहु का मोहल्ला
बाबू माधवजी, ठठेरीबाजार
रायकृष्णचंदजी चौखम्भा
माधोलाल बेनीप्रसाद „
बैजनाथदासजी B. A. हुंडिया
रायकृष्णजी रामीलदास का फाटक

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल विसेसरगंज
„ किशोरीलाल मुकुन्दीलाल „
„ नागरमल देवकिशन शिवपुर
„ बखीराम रामेश्वरदास कर्णघंटा
„ शिवनारायण धर्मदत्त सास्त्री विना०

मेसर्स श्रीराम सूरजमल नीलकंठ
,, श्रीराम लक्ष्मीनारायण नीलकंठ
,, वैजनाथ बिहारीलाल विशेसरगंज
,, अमीचंद जंगीलाल ,,
,, मोतीलाल मंगलचंद ,,

ज्वेलर्स—
मेसर्स अमीरचंद चतरसिंह चौखम्भा
जोशी परसोत्तमदास भैरवनाथ, सूतटोला
मेसर्स बनारसीदास काशीप्रसाद सुनई इमली
,, बांकेलाल खत्री ,,
,, बनारसीदासजी जौहरी भाट की गली
,, रघुनाथदास गोविन्ददास रत्नफाटक
,, जोशी शिवनाथ विश्वनाथ सूत टोला
,, एस. शंकर एण्ड ब्रदर्स बालूजी का फर्रा

बर्तनों के व्यापारी—
गोकुलप्रसाद छेदीलाल ठठेरी बाजार
जगबँधू चटर्जी ढुंढीराज
जगत महादेव ठठेरी बाजार
गुरुप्रसाद रामचरन मानमन्दिर
प्रयागदास जमनादास सुंडिया
वैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड को०
लक्खी चौतरा
विशेसरप्रसाद पुरुषोत्तमदास पितरकुंडा
(एल्यूमिनियम)
विशेसरप्रसाद शीतलप्रसाद ठठेरी बाजार

रेशम वाले—
मेसर्स जगन्नाथदास चम्मन चौखम्भा
,, मुन्नालाल मदनलाल लखी चौतरा

चाँदी के तार वाले—
मेसर्स गोपालदास सीताराम रेशम कटरा

मेसर्स पन्नालाल परसोत्तमदास भाट की गली
,, भगवानदास रेशम कटरा
,, माधोलाल बेनीलाल चौखम्भा

किनिनार्स—
अब्दुल रज्जाक अब्दुला मदनपुरा
मुबारक पनाह मदनपुरा
शमसुद्दीन हाजी मदनपुरा

बनारसी माल के बुननेवाले—
वाजा वारिस मदनपुरा
मुन्ना नूर मदनपुरा
हाजी यार महम्मद उमरपुरा (अलईपुरा)

सलमा-सितारावाले—
कल्लूमल खत्री रेशम कटरा

काशी सिल्क के व्यापारी—
मेसर्स गोकुलचन्द रामचन्द, लक्खी चौतरा
,, गोपालमल पुरुषोत्तमदास, नीलकंठ
,, के० एम० मुखेर्या कम्पनी दशाश्वमेध
,, नन्दगोपाल मधुसूदनदास नन्दनसाहुलेन
,, बालाजी कम्पनी चौक
,, सिल्क पिताम्बर कम्पनी केदारघाट

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स—
उपन्यास तरंग कार्य्यालय
उपन्यास बहार आफिस काशी
नागरी प्रचारिणी सभा,
नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स
वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर राजादरवाजा
भारतेन्दु पुस्तकालय
भार्गव बुकडिपो गायघाट
मुकुन्ददास गुप्त एण्ड को० चौक
मास्टर खेलाड़ीलाल कचौरी गली

लहरी बुक डिपो चौक
हिन्दी पुस्तक एजेंसी चौक
ज्ञानमंडल बुक डिपो कबीरचौरा
श्री वैंकटेश्वर बुक डिपो चौक

प्रिंटिंग प्रेस—

श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस
ज्ञानमण्डल प्रेस
हितचिन्तक प्रेस
इंडियन प्रेस बनारस कैंट
भार्गवभूषण प्रेस
तारा प्रेस
लहरी प्रेस
भूमिहार प्रेस
आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स
जगन्नाथ प्रेस
स्मार्ट प्रेस

पेपर एण्ड इंक मरचेंट्स—

दी जनरल ट्रेडिंग कम्पनी चौक
,, बनारस पेपर ट्रेडिंग कंपनी
मेसर्स भोलानाथ दत्त एण्ड संस चौक

बनारसी तमाखू, सुर्ती के व्यापारी—

मेसर्स गंगाप्रसाद विश्वनाथप्रसाद चौक
,, देवीप्रसाद मुंशीलाल हौज कटोरा
,, बद्रीराम लक्ष्मीनारायण चौक
,, मेघराम माधोराम पानदरीबा

डिब्बी, लिफाफे वाले—

मेसर्स विशेश्वरप्रसाद पुरुषोत्तमदास शिवकुंडा

चाँदी सोने के व्यापारी—

मेसर्स कृष्णराम तिवाड़ी चौक
,, कन्हैयालाल सराफ चौक
,, भरतदास बलदेवदास चौक
,, राधाकृष्ण शिवदत्तराय चौक

बलिया

बी० एन० डब्ल्यू० आर० की बनारस-छपरा वाली ब्रांच लाइन का यह बड़ा स्टेशन है।
यू० पी० प्रान्त के अपने ही नाम के जिले का प्रधान स्थान है। गंगा नदी इसके पास से
र बहती है। दो बार यह शहर गंगा की बाढ़ से नष्ट हो गया है। इस बार फिर तीसरे
ा इसे बसाया गया है। इस बार का इसका नक्शा सुन्दर बना है।
यहाँ की पैदावार धान, गेहूँ, जौ, चना एवम् शक्कर है। यहाँ की शक्कर सारे भारतवर्ष
हूर है। इसे हर जगह "बलिया की शक्कर" के नाम से सम्बोधित करते हैं। यहाँ
र के व्यवसाय को विशेष उत्तेजन देने का श्रेय यहाँ की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मनोरथ भगत
ाम को है। तिलहन भी यहाँ पैदा होती है जो बंगाल में सप्लाय होती है।
यहाँ की इण्डस्ट्री में यहाँ बनने वाले लोटे के बर्तन हैं। यह काफी मशहूर हैं। इनके
ाहक यहाँ रहते हैं। इसके अतिरिक्त पास ही सिकन्दरपुर में तेल चमेली और गुलाब
ा इत्र निकाला जाता है जिसका अच्छा व्यापार है। यह भी यहाँ की मशहूर वस्तुयें हैं।

कार्तिक पौर्णिमा को गंगा के किनारे बड़ा भारी मेला लगता है।
यहाँ के व्यापारियों का परिचय नीचे लिखे अनुसार है।

मेसर्स जिन्दाराम नारायणदास

इस फर्म का हेड आफिस मुजफ्फर नगर (विहार) है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में विहार विभाग के पेज नं० ३२ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म शक्कर की आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान हनुमानगंज (बलिया) है। आप लोग मध्य-वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के व्यवसाय की स्थापना बा० ध्यानरामजी के समय में हुई। तथा आप के पुत्र बा० देवीप्रसादजी, बा० किशुनप्रसादजी एवम् बा० बिशुनप्रसादजी के समय में विशेष तरक्की हुई। आप लोगों के समय में कानपुर में भी ब्रांच खोली गई। इस फर्म के मालिकों ने शक्कर के ही व्यापार की ओर विशेष ध्यान दिया और उसमें पूर्ण सफलता भी प्राप्त की। आप लोगों ने यहाँ एक धर्मशाला, मन्दिर तथा हनुमानगंज में पोखरा एवम् मन्दिर बनवाया है। यहाँ एक संस्कृत पाठशाला भी चल रही है। आप तीनों सज्जनों का देहावसान हो गया है। यहाँ जमींदारी को छोड़कर शेष व्यापार अब अलग २ होता है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बा० किशुनप्रसादजी के पुत्र बा० सरयूप्रसादजी, लक्ष्मीप्रसादजी और स्वर्गीय श्यामसुन्दरप्रसादजी के पुत्र ज्वालाप्रसादजी, तथा मुक्तेश्वरप्रसादजी, स्वर्गीय बा० विशुनप्रसादजी के पुत्र शिवप्रसादजी, शिवकुमारजी तथा बद्रीनारायणजी और स्व० देवीप्रसादजी के पौत्र तथा जमुनाप्रसादजी के पुत्र बा० महादेवप्रसादजी हैं। यह खानदान सम्माननीय और शिक्षित खानदान है। इस परिवार की बहुत बड़ी जमींदारी है। बा० महादेवप्रसादजी स्थानीय आनरेरी असिस्टेंट कलक्टर हैं। आपके पिताजी आनरेरी मजिस्ट्रेट थे।

इस परिवार का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आरा—मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम बेलनगंज—यहाँ चीनी एवं गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स सरयूप्रसाद बाबू जमुनाप्रसाद पुराना जनरलगंज—यहाँ किराने का व्यापार होता है।

स्व० बाबू देवीप्रसादजी (मनोरथ भगत ध्यानराम)
बलिया

स्व० बाबू किशुनप्रसादजी (मनोरथ भगत ध्यानराम)
बलिया

स्व० बाबू त्रिशुनप्रसादजी (मनोरथ भगत ध्यानराम)
बलिय

सेठ हरदत्तरायजी (मगनीराम हरदत्तराय) छपरा

उपरोक्त फर्मों का व्यवसाय शामिलात का है। इसके अतिरिक्त बलिया में आप लोगों की तीन फर्में हैं, जो तीनों भाइयों की हैं अलग २ हैं। उनपर शक्कर, बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। जमींदारी का काम भी सब शामिल ही है।

मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम

इस फर्म के मालिक बलियर (बलिया) निवासी मध्य-देशीय वैश्य-समाज के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष यह फर्म सेठ लच्छूभगत और सेठ विद्याभगत ने साझेदारी में शुरू की। २४ वर्ष के पश्चात् आप दोनों अलग २ हो गये। तब से इसका संचालन सेठ लच्छूभगत करते रहे। आपने इस फर्म की कई शाखाएँ खोलीं तथा उन्नति की। आपके तीन पुत्र हुए सेठ किशुनराम, सेठ बिशुनराम एवं सेठ रामनारायण। अपने पिता की मौजूदी में आप तीनों ही भाई शामिलात में व्यापार करते रहे पश्चात् अलग २ हो गये। आप लोगों को अलग २ हुए करीब १४ वर्ष हुए। वर्तमान फर्म के मालिक सेठ किशुनराम के पुत्र सेठ रामेश्वरजी हैं। आपही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलिया—मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम—यहाँ गल्ला, चीनी एवं घी का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

पटना—मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम मारूफगंज—यहाँ गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त इसी नाम से रगड़ा (मुर्शिदाबाद) नारायणगंज (बंगाल) भैरवबाजार (मैमनसिंह) में भी आपकी दुकानें हैं जहाँ गल्ला, चीनी, दाल और चाँवल का व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छूभगत विशुनराम

इस फर्म का पूर्व परिचय ऊपर दिया जा चुका है। यह फर्म सेठ लच्छूभगत के द्वितीय पुत्र की है। इसके वर्तमान मालिक स्व० सेठ विशुनरामजी के पुत्र बा० सूरजप्रसादजी, श्यामाप्रसादजी, बा० मथुराप्रसादजी, गोकुलप्रसादजी, वृन्दावनप्रसादजी और केदारप्रसादजी हैं। इनमें से प्रथम २ भाई करीब २ साल से अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। जिसपर मेसर्स लच्छूभगत सूरजप्रसाद के नाम से कारबार होता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स लच्छूभगत विशुनराम के नाम से भैरवबाजार, नारायणगंज, पटना, बलिया आदि स्थानों पर दुकानें हैं जहाँ गल्ला, शक्कर और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छूभगत सूरजप्रसाद के नाम से बलिया, पटना, भैरव बाजार में दुकानें हैं जहाँ गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लच्छू भगत के तृतीय पुत्र सेठ रामनारायणजी हैं। इन का पूर्व परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बलिया—मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण—यहाँ गल्ला, शक्कर आदि का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण—यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।

इसके अतिरिक्त खगड़ा (मुर्शिदाबाद) नारायणगंज में भी आपकी दुकानें हैं जहाँ गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

शक्कर के व्यापारी—

मेसर्स जिन्दाराम नारायणदास
,, नारायणदास घनश्यामदास
,, बद्रीदास रामानुजदास
,, भगवानदास केदारनाथ
,, मनोरथ भगत ध्यानराम

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम
,, लच्छूभगत बिशुनराम
,, लच्छूभगत रामनारायण
,, लच्छूभगत सूरजप्रसाद
,, सरयू प्रसाद भगवतीप्रसाद
,, हरीराम भगत दुःखीराम

किराने के व्यापारी—

मेसर्स देवीराम नारायणदास
,, रामयाद गिरधारी

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कनई भगत हरकिशन राम
,, खादिम अली वाजिदअली
,, पुरुषोत्तमदास बैजनाथराम
,, फकीरचन्द सरयूप्रसाद
,, बेनीराम बसतराम

चाँदी सोना के व्यापारी—

मेसर्स आदित्यराम गोपालराम
,, कामता प्रसाद राधाकिशन
,, गौरीशङ्कर सीताराम
,, सदेवराम शिवनाथ प्रसाद

जेनरल मर्चेन्ट्स—

मेसर्स बैजूप्रसाद सरयूप्रसाद
,, मालीराम हरिहरप्रसाद
,, राधाकिशन शिवशंकर प्रसाद
,, शर्मा एण्ड को०

छपरा

छपरा बिहार प्रांत में अपने ही नाम के जिले का प्रधान सेंटर है। यह बी० एन० डब्ल्यू रेल्वे लाइन का जंकशन है। यह एक पुरानी बस्ती है। यहाँ की आबादी ४२ हजार है। यहाँ की पैदावार आलू, घी, अरंडी (रेंडी) तीसी, सरसों आदि हैं। यहाँ तथा आस पास शक्कर भी बनती है। और यही माल यहाँ से बाहर एक्सपोर्ट होता है।

इसके आस पास महाराजगंज, मीरगंज, सेवान मसरक, डिघवारा आदि छोटी २ पर व्यापारिक मंडियाँ हैं। जहाँ शक्कर और गल्ला पैदा होता है। शक्कर के कारखाने भी इन स्थानों पर हैं। यहाँ अरंडी (रेंडी) का तेल निकालने का भी एक मिल है। इस मिल में केस्टर आईल तैय्यार होता है।

यहाँ आस पास में निम्नलिखित शुगर फैक्टरियाँ हैं।

न्यू सेवान शुगर मिल

नूरमियाँ शुगर मिल सेवान

सीवानह्री शुगर वर्क्स सेवान

सारा भाई मगनलाल शुगर फैक्टरी पचरुखी

हेक्सदरलैंड शुगर आयरन मिल मढ़ौरा

केस्टर आईल का मिल

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मगनीराम हरदत्तराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान फतहपुर (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म सेठ मगनीरामजी द्वारा स्थापित हुई। आपके २ पुत्र हुए सेठ केदारमलजी एवं सेठ हरदत्तरायजी। आप लोगों के समय में फर्म को बहुत उन्नति हुई। आपने यहाँ धर्मशाला भी बनवाई। इसी प्रकार के और भी कार्य आपके द्वारा हुए। आप दोनों ही सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

स्व० सेठ केदारमलजी (मगनीराम हरदत्तराय) छत्रा

बाबू द्वारकाप्रसादजी सरावगी (मगनीराम हरदत्तराय) छत्रा

सेठ तिलोकचन्दजी सरावगी (मगनीराम हरदत्तराय) छत्रा

सेठ रामेश्वरलालजी सरावगी (मगनीराम हरदत्तराय) छत्रा

गोरखपुर

गोरखपुर यू. पी. प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड-क्वार्टर है। कहा जाता है कि बाबा गोरखनाथ के नाम से इसका नाम गोरखपुर पड़ा। यह राप्ती नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहाँ गोरखनाथ का मन्दिर एवं आसिफुद्दौला का इमामबाड़ा देखने की वस्तु हैं। यह स्थान बी. एन. डब्लू० की मेनलाइन पर बसा हुआ है। इस रेलवे का बड़ा वर्कशाप भी यहीं है जिसमें हजारों आदमी काम करते हैं।

यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। यहाँ की पैदावार गेहूँ, अरहर, मसूर, सरसों, तीसी, मटर, चना, जौ इत्यादि हैं। तीसी, सरसों, गेहूँ, कलकत्ता, एवं दाल अरहर, तथा मसूर आसाम की ओर जाती है। मौसिम में यहाँ करीब १० हजार टन तक तीसी आती है।

यहाँ का तौल सायत चीजों जैसे गेहूँ, अरहर, तीसी, सरसों वगैरह का १४४ रुपया भर का सेर एवं २८ सेर के मन से और दाल की किस्म का तौल १२८ रुपैया भर के सेर से २५ सेर के मन से माना जाता है। कपड़े के लिये ४० इंच का गज माना जाता है।

यहाँ की नारंगी एवं घनश्याम अच्छे होते हैं। यहाँ गीता प्रेस के नाम से एक संस्था है जो गीता का प्रसार करना ही अपना मुख्य उद्देश समझती है। यहाँ से कल्याण नामक धार्मिक मासिक पत्र भी निकलता है जिसका पता उर्दू बाजार है।

मेसर्स बालकिशनदास नन्दलाल

यह फर्म सुप्रसिद्ध फर्म मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास की ब्रांच है इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में प्रकाशित किया जा चुका है। यह फर्म कलकत्ता फर्म के अंडर में काम करती है। इसमें मुकुन्दगढ़ (जयपुर) निवासी सेठ रामचन्द्रजी का साझा है। आप ही ने यह शाखा खुलवाई। आप आयुर्वेद के अच्छे जानकार थे। आप का स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में आपके पुत्र राधाकृष्णजी फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार एवं शिक्षित सज्जन हैं। इस फर्म पर तेल की बिक्री का काम होता है इसकी निम्न स्थानों पर शाखायें हैं—

गोरखपुर, बस्ती, खलीलाबाद, गोंडा, बहराइच, कर्नेलगञ्ज, नानपारा, बलरामपुर, पड़नी, शोहरतगंज, उस्काबाजार, अजमनगंज, नोतनवाँ, सिसुवाबाजार, घोघवोरे आदि स्थानों पर करीब ४०, ५० शाखाएं हैं। सब पर तेल की बिक्री का काम होता है।

मेसर्स मुरारीलाल मकसूदनदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब मुरारीलालजी एवं आपके भाई मकसूदनदास हैं। आप लोग यहीं के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना आपके पिताजी अभयनन्दनप्रसादजी के द्वारा हुई। आपने इसकी बहुत उन्नति की। गोरखपुर में आप प्रतिष्ठित रईस माने जाते थे। आपने जैन धर्म और दूसरे धर्मों में भी दान धर्म दिया। सरकार से आपको रायबहादुर की पदवी प्राप्त हुई थी। आपने जमींदारी के अतिरिक्त गल्ला एवं कपड़ा का भी व्यापार प्रारम्भ किया। यू० पी० कौन्सिल के भी आप मेम्बर रहे। मतलब यह है कि आप यहाँ के अच्छे व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोरखपुर—मेसर्स मुरारीलाल मकसूदनदास उर्दू बाजार, साहबगंज,—यहाँ कपड़ा, बैंकिंग का काम होता है। इसके अतिरिक्त सहजनवाँ, गड़ई में खेती होती है।

मेसर्स हरकिशनदास कन्हैयालाल

संवत् १९४८ में यह फर्म सेठ हरकिशनदासजी के द्वारा स्थापित हुई और गल्ले का व्यापार खोला गया जो वर्तमान में यह फर्म कर रही है। इसकी विशेष उन्नति भी आप ही के द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र रामेश्वरलालजी, द्वारकादासजी, कन्हैयालालजी और सागरमलजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

गोरखपुर—मेसर्स हरकिशनदास कन्हैयालाल—यहाँ गल्ला, तिलहन आदि का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामेश्वरलाल द्वारकादास ४ नारायण बाबू लेन T. A. People—यहाँ सब प्रकार की आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त हरकिशनदास रामेश्वरलाल के नाम से गोंडा, सिसुवाबाजार, बलरामपुर और सहजनवाँ नामक स्थानों पर बर्माशेल के तेल की एजंसी है।
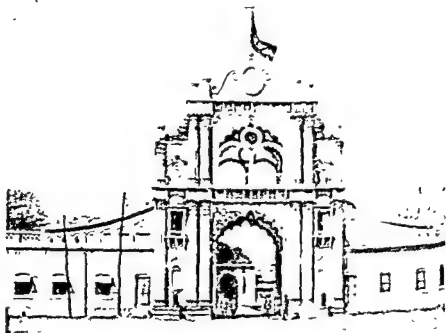
श्रीव्रजनारायण द्वार पडरौना राज
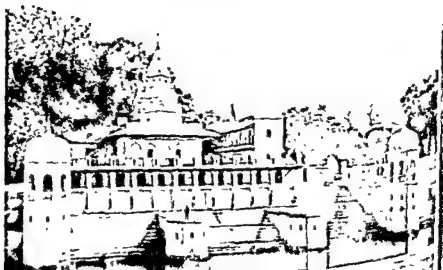
पडरौना-राजवंश

इस सुप्रसिद्ध राजवंश का इतिहास प्राचीन, गौरवपूर्ण एवं उज्ज्वल है। इस परिवार के इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ आदर्शमय है। जिसके पढ़ने से मनुष्य की उज्ज्वल और नैतिक मनोवृत्तियाँ सहज ही में जागृत होती हैं।

इस वंश का इतिहास कड़ा मानिकपुर के निवासी सुप्रसिद्ध गहरवार क्षत्रिय वीर राय मुक्तानराय से प्रारम्भ होता है। आप मुगल सम्राट् के सेना विभाग में अफसर थे। उन्हींसे आपको "राय" का खिताब प्राप्त हुआ था। आपने अपने बाहुबल से गोरखपुर जिले के पडरौना नामक स्थान में अपनी राजधानी स्थापित की। इस स्थान की भौगोलिक परिस्थिति के कारण भविष्य में इस राजवंश को अपनी उन्नति करने तथा अपनी राजसीमा बढ़ाने का अच्छा सुयोग प्राप्त हो गया। इसी राजवंश में बादशाह औरंगजेब के समय में राय नाथरायजी हुए, जिनके वीरत्व पर मुग्ध होकर बादशाह ने ३२ ग्राम नानकार में दिये। इसके सिवाय समय समय पर और भी ग्राम प्राप्त हुए। जिससे इस राज्य का विस्तार बढ़ता ही गया।

राय ईश्वरीप्रताप नारायणरायजी

इसी प्रसिद्ध राजवंश में सन् १८८२ ई० में राय ईश्वरीप्रताप नारायणरायजी—जिनका उपनाम प्रतापसिंहजी था—का जन्म हुआ। आप इस राजवंश में अत्यन्त प्रतापी महापुरुष हुए। आपका जीवन कष्टकारियों, घटनापूर्ण और कठिनाइयों से परिपूर्ण रहा। भूमि सम्बन्धी झगड़ों के कारण आपको कलकत्ते से आगरा तक की दौड़ करना पड़ती थी। क्योंकि उस समय एक जगह राजधानी थी तो दूसरी जगह दीवानी अदालत। आप एक ओर जमींदारी का झगड़ा लड़ते थे और दूसरी ओर अपनी उत्कट काव्य प्रतिभा से काव्यरचना भी करते थे। आपके 'रहस्य काव्य शृंगार' तथा 'मधुमाल' आदि ग्रन्थ अब भी आपकी कीर्ति को उज्ज्वल कर रहे हैं।

आपका धार्मिक जीवन बड़ा उत्कृष्ट रहा। वृन्दावन के समीप आपने एक मन्दिर और एक सुन्दर कुंज बनवाया जो आज भी पडरौना कुंज के नाम से प्रसिद्ध है। पडरौना में आपने धाम-धाम नाम से एक भव्य मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर के समीप ही नदी के बाँध आपने

एक बृहत् तलाव सवा लाख रुपया व्यय कर बनवाया जो रामधाम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मन्दिर में श्रीराधाकृष्ण की स्थापना हुई। जहाँ सभी त्यौहार आज भी बड़े समारोह से मनाये जाते हैं। यहाँ आपने ठाकुरजी के हिंडोले और आनन्द विहार के लिए "वृन्दावन" नामक एक उपवन भी बनवाया है। जिसमें वृन्दावन के सम्पूर्ण वृक्ष लगाये गये हैं। जिनके नीचे मथुरा-वृन्दावन ही मिट्टी मंगाकर बिछाई गई है। वास्तव में आप परम भक्त थे। आपकी भक्ति का सहज ही में अनुमान किया जा सकता है।

आपका जीवन सभी दृष्टि से गौरव पूर्ण रहा। आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। आप सन् १८६६ ई० में स्वर्गवासी हुए।

रायमदन गोपालसिंहजी

राय ईश्वरीप्रताप नारायणजी के पश्चात् आपके छोटे पुत्र राय मदनगोपालसिहजी गद्दी पर [illegible]। आप राधाकृष्ण के अनन्य भक्त थे। साधु, ब्राह्मण और वृजवासियों पर आपकी [illegible] [illegible]क श्रद्धा थी। आपको सन्तान सुख प्राप्त न था। आपने बरसाना पहाड़ी पर के श्री [illegible]ड़िलीलालजी के मन्दिर पर चढ़ने के लिए ३०० पक्की सीढ़ियाँ बनवायीं और उसी पहाड़ी पर बड़ी लागत के साथ एक विशाल कुँआ भी बनवा दिया जिससे जल का बहुत आराम हो गया। पडरौना और नन्दगाँव बरसाने के आस-पास अनेक कुँए, कुंज और वृक्षादि लग- वाये। पडरौना में आपने एक विशाल गोपालमन्दिर भी बनवाया।

आपने अपने निकट सम्बन्धी राय उदितनारायणसिंहजी को पुत्र स्वीकार कर अपनी रियासत का अधिकारी बनाया और स्वयं भगवद् सेवा में लीन हो गये। आपका स्वर्गवास सन् १८९० ई० में हो गया।

राजा राय उदितनारायण सिंहजी—

राजा राय उदितनारायणसिंहजी बुद्धिमान् एवं विचारवान पुरुष थे। आपने अपनी सारी रियासत का नवीन संगठन किया। आप हर साल अपनी रियासत का दौरा करके सब प्रजा के दुःख-सुख का निरीक्षण करते थे। देशोपकार तथा धार्मिक कामों में भी आपने पर्याप्त धन व्यय किया। आपने पडरौना में एक संस्कृत पाठशाला खोली। इस पाठशाला की वर्तमान राजा साहब के समय में बहुत उन्नति हो गई है। इसके अतिरिक्त उस समय तक गोरखपुर शहर में कोई सर्वसाधारण गृह नहीं था। इस कमी की पूर्ति के लिये एक विशाल टाउनहाल बनाने की योजना की गई और राजा साहब के विशेष सहायता से एक अत्यन्त सुन्दर भवन बनकर तैयार हुआ, लोग उसे 'पडरौना हाल' भी कहते हैं। आपने पूज्य पितामह के बनवाये हुए श्याम-धाम को आपने सजाया—इसके धरातल में आपने संगमरमर और

सद्भमूसा जड़वाया तथा पादरू को गोल्डकुली काम में मढ़ादिया। आप गवर्नमेंट द्वारा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये थे। सन् १९०७ ई० में आपका स्वर्गवास होगया।

राजा बहादुर राजा ब्रजनारायण सिंहजी—

राजा हरिहरनारायणसिंहजी के पश्चात् आपके ज्येष्ठ पुत्र राजाबहादुर राजा ब्रजनारायण सिंहजी ने रियासत के काम को ग्रहण किया। आपका जन्म वैशाख बदी ५ संवत् १९४२ का है। आप बड़े ही कुशाग्रबुद्धि हैं। आप फारसी भाषा के पण्डित हैं आप फारसी में कविता भी करते हैं। हिन्दी भाषा पर भी आप का बहुत अधिक अनुराग है। गोरखपुर वाले १९ वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागतकारिणी के आप सभापति थे। आपका भाषण सराहनीय हुआ था। आपने एक अच्छी रकम सम्मेलन को संग्रहालय के लिए प्रदान की है। आप अंग्रेजी तथा संस्कृत के भी अच्छे ज्ञाता हैं। स्त्रीशिक्षा के आप विशेषरूप से पक्षपाती हैं। जैसा कि सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल काशी के २१वें वार्षिकोत्सव पर सभापति की हैसियत से आपके दिये गये भाषण से स्पष्ट है। आपने कन्या पाठशाला की कोठी के लिए एक अच्छी रकम भी प्रदान की। अनेक कन्यायें आपसे सहायता पाकर अध्ययन करती हैं। इसके अतिरिक्त आपने वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, कमला बोर्डिंग, कुर्मी, प्राइमरी स्कूल तथा पडरौना की कन्या पाठशाला आदि भी बनवाये हैं।

आप कट्टर वैष्णव हैं फिर भी विचार बड़े उदार हैं। आपकी धार्मिक उदारता का पता महात्माजी के साथ मिस स्लेड को श्यामधाम में ले जाने की अनुमति देने ही से लगता है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली-सम्बन्धी आपके विचार श्लाघ्य हैं। कई शिक्षण संस्थायें आपसे बहुत सहायता पाती रहती हैं। हाल ही में आपने अपने पूज्य पितृव्य के नाम पर मदनगोपाल अनाथालय नामक एक अनाथालय स्थापित किया है। इसके सिवाय आपने विक्टोरिया मेमोरियल हास्पिटल बनवाया तथा उसका कुल व्यय राज्य ही से होता है तथा पीसमेमोरियल पार्क बनवा कर उसमें सम्राट् पंचमजार्ज की मूर्ति भी स्थापित की है।

गरीब प्रजा की सुविधा के लिए आपने "खिरायती बैंक" खोला है जिसके द्वारा दो लाख रुपया रियासत की प्रजा को कर्ज दिया जाता है। अकाल आदि कष्ट के अवसरों पर जो रियायतें दूसरे बैंक करते हैं पडरौना खिरायती बैंक द्वारा उनसे भी अधिक रियायतें की जाती हैं। इससे प्रजा को पूरी सहायता मिलती है।

सरकार में भी आपका बहुत बड़ा विश्वास है। यूरोपीय युद्ध में आपने धन, जन से सरकार की सहायता की। जिससे आपको राजा बहादुर का खिताब तथा तलवार पुरस्कार में मिली। आप तीन वर्षों तक युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के नॉमिनेटेड मेम्बर रहे। आप डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के

बहुत समय से मेम्बर और पडरौना टाऊन के स्पेशल मजिस्ट्रेट हैं। जो व्यक्ति आपसे
बार मिल लेता है वह हमेशा आपके शील और सौजन्य की प्रशंसा करता है। [illegible]

रायबहादुर जगदीशनारायण सिंहजी

का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपका भी हिन्दी और फारसी दोनों ही भाषाओं
अधिकार है। साहित्य जगत् के इतिहास के तो आप विशेषज्ञ ही हैं। आपकी लेखनी
मनोहर है। अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर भी आपका अच्छा अधिकार है। [illegible]
चित्र-कला का भी आपको शौक है। आपके महल में लगे हुए बड़े २ कई चित्र
चित्र-कला के नमूने हैं। मशीनरी का भी आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अपनी [illegible]
रेख में पडरौना में चीनी का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला है। जिसका नाम पडरौ[illegible]
श्रीकृष्ण शुगर वर्क्स लिमिटेड है। आप ही इसके मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। इस कारखाने [illegible]
ही वर्षों में बेहद उन्नति की, और आज तो यह विशाल कारखाना एक लाख मन [illegible]
चीनी प्रतिवर्ष तैयार करता है। यह फैक्टरी इस समय उन्नत की जा रही है। और [illegible]
समय में उन्नत हो जाने के पश्चात् यह फैक्टरी भारतवर्ष की सब चीनी की फैक्टरि[illegible]
बड़ी और अधिक चीनी तैयार करनेवाली हो जावेगी। यह आपकी प्रखर बुद्धि, [illegible]
प्रेम और सुप्रबन्ध का ज्वलन्त प्रमाण है।

इस फैक्टरी से भी अधिक महत्व का काम "एग्री कल्चरल फार्म" नामक [illegible]
है। जिसके लिए शीघ्र ही सामान मँगवाया गया है। और श्री [illegible]
ए० बी०; एम० आर० ए० एस० जिन्होंने यूरोप में भ्रमण कर इस विषय का [illegible]
किया है,—को इसके लिये नियुक्त किया है। फल स्वरूप कई हजार एकड़ [illegible]
किया गया, और इसमें ईख की विशाल खेती प्रारम्भ की गई है। इस काम में [illegible]
सफलता हो रही है। अब इस बात का भी प्रयत्न हो रहा है कि पडरौना [illegible]
"[illegible]" में ६००० एकड़ का एक और फार्म बनाया जाय। आपके [illegible]
राजकुमार कृष्णवल्लभनारायणसिंहजी इस विभाग का सम्पादन कर रहे हैं। इस [illegible]
पडरौना बाजार में बिजली की रोशनी का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया है।

आप ऑनरेरी मुन्सिफ हैं। इतनी बड़ी सम्पत्ति और सत्ता के स्वामी होते हुए [illegible]
अभिमान और आतंक का लेश भी नहीं है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है

इस सारे विशाल कारोबार का प्रबन्ध राजासाहब और रायबहादुर [illegible]
जी स्वयं ही करते हैं। प्रजा के कष्टों को आप दोनों भाई बड़े ही ध्यान के [illegible]
उन्हें दूर करने के उचित उपाय करते हैं।

बहुत समय से मेम्बर और पड़रौना टाउन के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। जो व्यक्ति आपसे एक बार मिल लेता है वह हमेशा आपके शील और सौजन्य की प्रशंसा करता है। आपके लघुभ्राता

रायबहादुर जगदीशनारायण सिंहजी

का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपका भी हिन्दी और फारसी दोनों ही भाषाओं पर अधिकार है। साहित्य जगत् के इतिहास के तो आप विशेषज्ञ ही हैं। आपकी लेखनशैली बड़ी मनोहर है। अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर भी आपका अच्छा अधिकार है। शिल्प-विद्या और चित्र-कला का भी आपको शौक है। आपके महल में लगे हुए बड़े २ कई चित्र आपकी चित्र-कला के नमूने हैं। मशीनरी का भी आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अपनी खास देख रेख में पड़रौना में चीनी का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला है। जिसका नाम पड़रौना राज श्रीकृष्ण शुगर वर्क्स लिमिटेड है। आप ही इसके मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। इस कारखाने ने थोड़े ही वर्षों में बेहद उन्नति की, और आज तो यह विशाल कारखाना एक लाख मन से ऊपर चीनी प्रतिवर्ष तैयार करता है। यह फैक्टरी इस समय डबल की जा रही है। और कुछ ही समय में डबल हो जाने के पश्चात् यह फैक्टरी भारतवर्ष की सब चीनी की फैक्टरियों में बड़ी और अधिक चीनी तैयार करनेवाली हो जावेगी। यह आपकी प्रखर बुद्धि, कलाकौशल प्रेम और सुप्रबन्ध का ज्वलन्त प्रमाण है।

इस फैक्टरी से भी अधिक महत्व का काम "एग्रीकल्चरल फार्म" नामक नवीन स्कीम का है। जिसके लिए शीघ्र ही सामान मँगवाया गया है। और श्री यमलाल अस्थाना एम० आर० ए० सी०; एम० आर० ए० एस० जिन्होंने यूरोप में भ्रमण कर इस विषय का विशेष ज्ञान प्राप्त किया है,—को इसके लिये नियुक्त किया है। फल स्वरूप कई हजार एकड़ जंगल काट कर साफ किया गया, और इसमें ईख की विशाल खेती प्रारम्भ की गई है। इस कार्य में आशातीत सफलता हो रही है। अब इस बात का भी प्रयत्न हो रहा है कि पड़रौना से २० मील दूर "कहुवे" में ६००० एकड़ का एक और फार्म बढ़ाया जाय। आपके सत्परामर्श के अनुसार राजकुमार कृष्णप्रतापनारायणसिंहजी इस विभाग का सम्पादन कर रहे हैं। इस समय आपने पडरौना बाजार में बिजली की रोशनी का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया है।

आप ऑनरेरी मुन्सिफ हैं। इतनी बड़ी सम्पत्ति और सत्ता के स्वामी होते हुए भी आपमें अभिमान और आलस्य का लेश भी नहीं है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

इस सारे विशाल कारोबार का प्रबन्ध राजासाहब और रायबहादुर जगदीशनारायण सिंहजी स्वयं ही करते हैं। प्रजा के कष्टों को आप दोनों भाई बड़े ही ध्यान के साथ सुनते हैं और उन्हें दूर करने के उचित उपाय करते हैं।

स्व० कवि ईश्वरीय प्रतापनारायण सिंहजी पडरौना ।

स्व० राजा उदितनारायण सिंहजी पडरौना ।

कुमार कृष्णप्रसादनारायण सिंहजी बहुरीया।
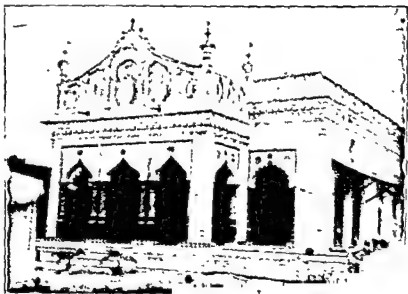
श्री दुर्गाजी का मन्दिर (देवीदत्त सूरजमल) पडरौना
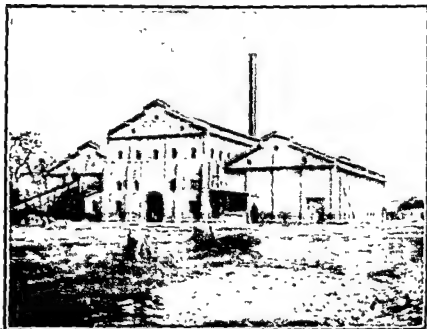
सन्तान

राजासाहब के कुल तीन और रायबहादुर जगदीशनारायणसिंहजी के छः पुत्र हुए। जिनमें सबसे बड़े—

राजकुमार कृष्णप्रतापनारायणसिंहजी

हैं। आपने अंग्रेजी साहित्य और फारसी भाषा का अच्छा अध्ययन किया है। अनेक वर्षों से आप ऑनरेरी असिस्टेण्ट कलक्टर निश्चित किये गये हैं और बड़ी सावधानी से उस कार्य्य का सम्पादन करते हैं। जब राजासाहब और रायबहादुर साहब यात्रा में रहते हैं तब राज्य का कुल कार्य्य आप ही की आज्ञानुसार होता है। आप पडरौना राज शुगर फार्म के संचालक हैं। राजासाहब के द्वितीय पुत्र—

स्व० श्रीविष्णुप्रतापनारायणसिंह

थे। मगर आपका अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया जिससे इस राजवंश पर एकाएक वज्रा-घात हुआ। ये राजकुमार पढ़ने में बड़े तेजस्वी और प्रतिभासम्पन्न थे। हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सेन्ट्रल हिन्दूस्कूल से इन्होंने एडमिशन परीक्षा पास की थी। इनके स्मारक स्वरूप रायबहादुर महोदय ने एक बड़ी रकम सेण्ट्रल हिन्दूस्कूल को दान देकर स्कॉलरशिप स्थापित की है और बोर्डिंग हाउस में बिजली फिटिंग करवाई है।

रायबहादुर जगदीशनारायणसिंहजी के ज्येष्ठ कुमार रुद्रप्रतापनारायणसिंह, का जन्म कार्तिक बदी ६ सं० १९११ ई० को हुआ। इस समय आप बी० ए० क्लास में अध्ययन कर रहे हैं। अर्थशास्त्र और राजनीति आपका प्रधान विषय हैं। संस्कृत में भी आपने प्रवेशिका परीक्षा पास की है। आप बड़े होनहार मालूम पड़ते हैं।

रियासत के अन्य छोटे कुमार चि० रविप्रतापनारायणसिंह, चि० लक्ष्मीप्रतापनारायण सिंह, चि० सूर्यप्रतापनारायणसिंह, चि० रामप्रतापनारायणसिंह आदि बालगोपाल हैं।

पडरौना राज्य का भविष्य निर्मल है। इनके पूर्वजों का साहस, उनकी हिम्मत, उनकी प्रतिभा राजपरिवार में वर्तमान है। इनके द्वारा देश कार्य होने की बहुत कुछ आशा है।

मेसर्स टेकराम द्वारकादास

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास-स्थान मलसीसर (राजपूताना) है। आप अग्रवाल समाज के केडिया सज्जन हैं। करीब ३० साल पहले सेठ टेकरामजी के द्वारा यह फर्म स्थापित की गई। आपके तीन भाई और थे, सेठ सूरजमलजी, सेठ बंशीधरजी एवं सेठ मूलचन्दजी। इनमें से सेठ बंशीधरजी एवं सेठ सूरजमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ टेकरामजी, सेठ मूलचन्दजी तथा सेठ द्वारकादास

के पुत्र द्वारकादासजी एवं सूरजमलजी के पुत्र श्रृगलालजी हैं। सेठ केदराजजी के पुत्र रामरतनजी तथा सेठ भूरामलजी के पुत्र नानूरामजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है.—

पडरौना—मेसर्स केदराज द्वारकादास—यहाँ महाजनी लेन-देन तथा कपड़े का व्यापार होता है।

सिसुआबाजार—मेसर्स भूरामल रामरतन—यहाँ कपड़े तथा गल्ले का व्यापार होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स द्वारकादास नानूराम T. A. Malsi-Sarka—यहाँ देशी कपड़े का घरु और आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त चनपटिया (चम्पारन) और घुघली (गोरखपुर) में आपकी फर्मे हैं जहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

मेसर्स देवीदत्त सूरजमल

इस फर्म के मालिक अलसीसर (जयपुर-स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्यसमाज के खेतान सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ देवीदत्तजी ने की। शुरू २ में इस पर कपड़े का बहुत छोटे रूप में व्यापार प्रारंभ किया गया। आपके चार पुत्र हुए सेठ सूरजमलजी, सेठ रामानन्दजी, सेठ रामप्रतापजी एवं सेठ शिवानन्दजी। वर्तमान सेठ सूरजमलजी को छोड़ शेष सज्जन स्वर्गवासी हैं। संवत् १९५० में सेठ देवीदत्तजी की मौजूदगी ही में इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता में खोली गई। पश्चात् ज्यों २ कारवार बढ़ता गया त्यों २ फर्म ने बम्बई, कानपुर आदि व्यापारिक केन्द्रों में भी फर्म की स्थापना की। आप चारों भाइयों ने ही इसे उन्नतावस्था पर पहुँचाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी तथा सेठ रामानन्दजी के पुत्र हरीरामजी, सेठ रामप्रतापजी के पुत्र सेठ सागरमलजी और सेठ शिवानन्दजी के पुत्र गणेशनारायणजी तथा केदारनाथजी हैं। सेठ सूरजमलजी के पुत्र घनश्यामदासजी का स्वर्गवास करीब २० साल पूर्व हो गया है। गणेशनारायणजी के पुत्र रामचन्द्रजी भी होनहार नवयुवक थे। आपने करीब तीन वर्ष पूर्व लक्ष्मीगंज में एक शुगर मील की स्थापना की। आपका ३ मास पूर्व स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म की ओर से यहाँ श्रीदुर्गाजी का मन्दिर बना हुआ है। तथा अलसीसर में एक स्कूल चल रहा है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

पडरौना—मेसर्स देवीदत्त सूरजमल, T. A, Khetan—यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ आईल एजंसी भी है। पास ही लक्ष्मीगंज में आपका एक शकर का मील है।

इसके अतिरिक्त तमकुही रोड, सिसुआ बाजार, कलकत्ता, कानपुर, बम्बई आदि स्थानों पर भी फर्मे हैं इनका विस्तृत परिचय प्रथम भाग में बम्बई विभाग में मेसर्स गणेशनारायण ओंकारमल के नाम से दिया गया है।

मध्य-प्रदेश

. CENTRAL PROVINCES

नागपुर

नागपुर सी० पी० प्रांत का प्रधान केन्द्र एवम् राजधानी है। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है। इस स्थान पर कई राजवंशों के सिंहासन स्थापित हुए, चमके और अन्त में काल के अनन्त स्रोत में विलीन हो गये। जिनकी कीर्ति इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। यह नगर कुछ समय पूर्व भारत के सुप्रसिद्ध भोंसला राजवंश की राजधानी था। यह भोंसला वंश उस समय भारत के पाँच बहादुर हिन्दू राज्यवंशों में से एक था। मगर देश के दुर्भाग्य से तथा आपसी फूट के कारण ये राज्यवंश अपनी स्वाधीनता को स्थिर नहीं रख सके और अंत में यह नगर महाप्रतापी ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकार में आ गया।

यह शहर जी. आई. पी. और बी. एन. आर. का जंक्शन है यहाँ से जी. आई. पी. की लाईन भुसावल जंक्शन होती हुई बम्बई तक गई है। तथा दूसरी ब्रांच लाइन इसी रेलवे की दूसरी लाईन पर इटारसी को मिलाती है। बी. एन. आर. की छोटी एवं बड़ी दोनों लाइनें यहाँ पर मौजूद हैं। बड़ी लाईन रायपुर होती हुई कलकत्ता तक गई है। एवम छोटी लाईन छिंदवाड़ा आदि होती हुई जबलपुर तक गई है। इसके अतिरिक्त रामटेक नामक स्थान पर भी यहाँ से एक ब्रांच गई है। रामटेक हिन्दुओं का तीर्थ स्थान माना जाता है।

व्यापारियों एवम् मुसाफिरों की सुविधा के लिये यहां से अमरावती, आर्वी, भण्डारा, रामटेक, काटोल, वर्धा आदि कई स्थानों पर मोटरें जाती हैं।

यहां पर कपड़े के २ मिल्स तथा कई जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं बर्फ के भी यहां कारखाने हैं। कपड़े की मिलों में सब से बड़ी और पुरानी मिल एम्प्रेसमिल है। इसकी स्थापना १ जनवरी सन् १८७७ में श्रीयुत जमशेदजी नसरवानजी टाटाने की। इस मिल में आशातीत सफलता हुई। सन् १९१३ के अन्त तक इस मिल की सेंट्रल इंडियन स्पिनिंग एण्ड विविंग कम्पनी ने २९३४९०००७) रुपैया मुनाफा बाँटा। तथा इस मिल की तरक्की भी की। इस समय इस मिल के अंदर में यहाँ ५ और मिले हैं जो इसी नाम से काम करती हैं।

इसके अतिरिक्त "मॉडल मिल्स" के नाम से एक मिल यहां पर और है। जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां भी यहां बहुत हैं।

यहां के व्यापारिक बाजारों में इतवारी बाजार (जहां पर बैङ्कर्स, ज्वैलर्स, चांदी सोने के व्यापारी और कॉटन मर्चेण्ट्स की दुकानें हैं) नई शुक्रवारी (जहां पर गल्ले का व्यापार होता है) और सदर (जहां पर जनरल मर्चेण्ट्स विशेष हैं) ये तीनों बाजार प्रसिद्ध हैं। नागपुर की कारीगरी की चीजों में यहा का बना हुआ कपड़ा, साड़ियें और खण्ड मशहूर हैं। यह माल यहां से दक्षिण प्रान्त में बहुत जाता है।

नागपुर का सन्तरा भारत वर्ष भर में प्रसिद्ध है। मौसिम के समय में यहां के बाजारों में ढेर के ढेर सन्तरे दिखाई देते हैं। इस प्रान्त में सन्तरे के सैकड़ों बगीचे हैं जो सारे भारतवर्ष को सन्तरा सप्लाय होते हैं। सन्तरे के पौधे भी यहां से हजारों लाखों की तादाद में एक्सपोर्ट होते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

बैंकर्स

मेसर्स खुशालचंद गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस जबलपुर में है। यहाँ इस फर्म पर बैङ्किग हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ४० में दिया गया है।

मेसर्स जेठमल रामकरन गोलेछा

आप लोगों का आदि निवास स्थान बीकानेर है। आप लोग ओसवाल समाज के सज्जन हैं। सबसे प्रथम देश से सेठ हरखचन्दजी लगभग ९० वर्ष पूर्व नागपुर आये थे और आपके पुत्र स्व० सेठ जेठमलजी मेसर्स जेठमल गोलेछा के नाम से सम्वत् १९०० के लगभग व्यापार आरम्भ कर कण्ट्राक्ट लेने लगे थे। आप अच्छे उद्योगी थे अत: आपने सरकारी कण्ट्राक्ट भी लेना आरम्भ कर दिया फलतः आपको बहुत ही शीघ्र सफलता प्राप्त हुई। और इस लाइन में आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। आप अपने समय के अपनी लाइन के एक खास व्यक्ति थे। आपने कितने ही काम कण्ट्राक्ट के लिये जिनमें से कनहृन ब्रिज का आपका प्रथम कण्ट्राक्ट था। सेठ जेठमलजी का स्वर्गवास लगभग सम्वत् १९०८ के हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ रामकरनजी ने व्यापार का भार संभाला और आप सम्वत १९३०

के लगभग जेठमल रामकरन के नाम से अपना व्यापार करने लगे । आपने अपनी फर्म को पूर्ववत् प्रतिष्ठित अवस्था में संचालित किया । आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५६ की वैसाख सुदी १५ को हुआ ।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेघराजजी सम्वत् १९६१ में स्व० सेठ रामकरनजी के गोद आये । वर्तमान में आप ही फर्म का प्रधान संचालन करते हैं ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेघराजजी गोलच्छा और आपके पुत्र बाबू अभयराज, बाबू शिरेमल, बाबू उमरावमल, बाबू सिरदारमल, बाबू रतनचन्द, बाबू विनयचन्द हैं ।

यह फर्म ४८ वर्ष तक बंगाल बैंक अर्थात् आज की इम्पीरियल बैंक की खजांची रही है । सेठ जेठमलजी ने इस काम को आरम्भ किया और मेघराजजी के समय तक यह रहा । सेठ मेघराजजी ने फर्म की उन्नति में अच्छा उद्योग किया । आपने ही बैंक की सन् १९२७ में ट्रेझरशिप छोड़ कर उसी समय नागपुर सिटी, नागपुर, मऊ (छावनी) जैपुर, जोधपुर, साम्भरलेक की पोष्ट ऑफिस ट्रेजरी का कन्ट्राक्ट लिया है । यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है । यहाँ आपके कितने ही मकानात और बंगले हैं जो नागपुर और कामठी में हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जेठमल रामकरन सदर बजार, नागपुर	बैङ्किंग और लैंडेड प्रॉपर्टी तथा पोष्ट ऑफिस ट्रेजरी कण्ट्राक्ट का काम भी है ।
कामठी—मेसर्स जेठमल रामकरन	यहां बैङ्किंग और जमींदारी का काम होता है ।

मेसर्स बंसीलाल अबीरचन्द राय बहादुर

इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में छापा गया है । इसके वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ विश्वेश्वरदासजी डागा हैं । यह फर्म भारतीय फर्मों में पुरानी एवम् प्रतिष्ठित है । इसकी बहुतसी शाखाएँ हैं । यह फर्म मिल ओनर्स एवम् कोलियारी प्रोप्राइटर्स भी हैं । यहाँ इस फर्म की एक ब्रांच और है जिस पर मेसर्स चन्द्रभान बंसीलाल, इतवारी के नाम से चाँदी-सोना और बैङ्किंग का व्यापार होता है । इस फर्म पर बैंकिंग का काम होता है । इसका पता 'महाल' है ।

सेठ केशरीचंदजी जौहरी (रामकरन हीरालाल) नागपुर

सेठ करणीदानजी धाड़ीवाल (प्रतापमल डोगमल) नागपुर

बाबू पानमलजी जौहरी (रामकरन हीरालाल) नागपुर

सेठ मथुरादासजी राठी (शंकरदास मथुरादास नाग

सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आपने अच्छी योग्यता से काम चलाया फलतः फर्म ने अच्छी उन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६३ में हो गया और फर्म का व्यापार संचालन आपके पुत्र सेठ गेन्दालालजी के हाथ आया। आप बड़ी योग्यता से फर्म का कार्य्य संचालित कर रहे हैं।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी हैं। आप सुयोग्य नवयुवक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल इतवारी बाजार, नागपुर	यहाँ सोना चाँदी, हुण्डी चिट्ठी एवं लेन-देन का काम होता है तथा साहूकारी एवं जवाहिरात का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स शङ्करदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक बीकानेर निवासी हैं और जाति के माहेश्वरी राठी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से सम्वत् १९८३ में सेठ मथुरादासजी राठी ने की थी। इसके पूर्व सेठ मथुरादासजी राठी अपने व्यक्तिगत नाम से अर्थात् मेसर्स मथुरादास राठी के नाम से सम्वत् १९५९ से व्यापार करते आ रहे थे सम्वत् १९८३ में आपने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से स्थापित किया है।

इस फर्म के मालिकों के यहाँ बहुत पुराने समय से बैंकों की दलाली का काम होता आ रहा है। यही कारण है कि स्व० सेठ शंकरदासजी अपने समय में बहुत काल तक एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। इसी प्रकार सेठ मथुरादासजी राठी भी आरम्भ में एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। यों तो यह काम व्यापक रूप से आप करते थे पर बंगाल बैंक की दलाली का काम आप खास तौर से करते थे। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल कर महाजनी लेन-देन का काम आरम्भ किया। आपको औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली अतः फर्म ने अच्छी उन्नति कर ली। आपने यूरोपीय समर के समय परिस्थिति से लाभ उठा कर अपने यहाँ गल्ला, कपड़ा, सूत आदि कितने ही काम खोल दिये। इस कार्य्य में आप ऐसे पुरुष को सफलता मिलना स्वाभाविक था अतः आपने अच्छा लाभ उठाया। आपने सम्वत् १९७४ में सोना चाँदी की दूकान भी खोल दी जो आज तक बराबर चल रही है।

वर्तमान समय में यह फर्म इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रांच तथा अमरोदपुर ब्रांच की खजानची है। इसके अतिरिक्त सोना चाँदी की बिक्री का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आपने अच्छी योग्यता से काम चलाया फलतः फर्म ने अच्छी उन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६३ में हो गया और फर्म का व्यापार संचालन आपके पुत्र सेठ गेन्दालालजी के हाथ आया। आप बड़ी योग्यता से फर्म का कार्य्य संचालित कर रहे हैं।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी हैं। आप सुयोग्य नवयुवक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल इतवारी बाजार, नागपुर	यहाँ सोना चाँदी, हुण्डी चिट्ठी एवं लेन-देन का काम होता है तथा साहूकारी एवं जवाहिरात का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स शङ्करदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक बीकानेर निवासी हैं और जाति के माहेश्वरी राठी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से सम्वत् १९८३ में सेठ मथुरादासजी राठी ने की थी। इसके पूर्व सेठ मथुरादासजी राठी अपने व्यक्तिगत नाम से अर्थात् मेसर्स मथुरादास राठी के नाम से सम्वत् १९५९ से व्यापार करते आ रहे थे सम्वत् १९८३ में आपने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से स्थापित किया है।

इस फर्म के मालिकों के यहाँ बहुत पुराने समय से बैंकों की दलाली का काम होता आ रहा है। यही कारण है कि स्व० सेठ शंकरदासजी अपने समय में बहुत काल तक एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। इसी प्रकार सेठ मथुरादासजी राठी भी आरम्भ में एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। यों तो यह काम व्यापक रूप से आप करते थे पर बंगाल बैंक की दलाली का काम आप खास तौर से करते थे। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल कर महाजनी लेन-देन का काम आरम्भ किया। आपको औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली अतः फर्म ने अच्छी उन्नति कर ली। आपने यूरोपीय समर के समय परिस्थिति से लाभ उठा कर अपने यहाँ गल्ला, कपड़ा, सूत आदि कितने ही काम खोल दिये। इस कार्य्य में आप ऐसे पुरुष को सफलता मिलना स्वाभाविक था अतः आपने अच्छा लाभ उठाया। आपने सम्वत् १९७४ में सोना चाँदी की दूकान भी खोल दी जो आज तक बराबर चल रही है।

वर्तमान समय में यह फर्म इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रॉंच तथा जमशेदपुर ब्रॉंच की खजानची है। इसके अतिरिक्त सोना चाँदी की बिक्री का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आपने अच्छी योग्यता से काम चलाया फलतः फर्म ने अच्छी उन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६२ में हो गया और फर्म का व्यापार संचालन आपके पुत्र सेठ गेंदालालजी के हाथ आया। आप बड़ी योग्यता से फर्म का कार्य्य संचालित कर रहे हैं।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी हैं। आप सुयोग्य नवयुवक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल इतवारी बाजार, नागपुर	यहाँ सोना चाँदी, हुण्डी चिट्ठी एवं लेन-देन का काम होता है तथा साहूकारी एवं जवाहिरात का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स ठाकुरदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक बीकानेर निवासी हैं और जाति के माहेश्वरी राठी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से सम्वत् १९८३ में सेठ मथुरादासजी राठी ने की थी। इसके पूर्व सेठ मथुरादासजी राठी अपने व्यक्तिगत नाम से अर्थात् मेसर्स मथुरादास राठी के नाम से सम्वत् १९५९ से व्यापार करते आ रहे थे सम्वत् १९८३ में आपने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से स्थापित किया है।

इस फर्म के मालिकों के यहाँ बहुत पुराने समय से बैंकों की दलाली का काम होता आ रहा है। यही कारण है कि स्व० सेठ शंकरदासजी अपने समय में बहुत काल तक एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। इसी प्रकार सेठ मथुरादासजी राठी भी आरम्भ में एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। यों तो यह काम व्यापक रूप से आप करते थे पर बंगाल बैंक की दलाली का काम आप खास तौर से करते थे। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल कर महाजनी लेन-देन का काम आरम्भ किया। आपको औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली अत: फर्म ने अच्छी उन्नति कर ली। आपने यूरोपीय समर के समय परिस्थिति से लाभ उठा कर अपने यहाँ गल्ला, कपड़ा, सूत आदि कितने ही काम खोल दिये। इस कार्य्य में आप ऐसे पुरुष को सफलता मिलना स्वाभाविक था अतः आपने अच्छा लाभ उठाया। आपने सम्वत् १९७४ में सोना चाँदी की दूकान भी खोल दी जो आज तक बराबर चल रही है।

वर्तमान समय में यह फर्म इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रॉच तथा जमशेदपुर ब्रॉच की खजानची है। इसके अतिरिक्त सोना चाँदी की बिक्री का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

मेसर्स नागरमल पोद्दार—करांची, आभोरमण्डी।
मेसर्स सोनीराम जीतमल—कलकत्ता, बराकर।

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल

आप लोग बीकानेर निवासी ओसवाल समाज के धाड़ीवाल सज्जन हैं। आप जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग सम्वत् १९०५ के सेठ प्रतापचंद जी तथा आपके भाई सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने आकर नागपुर में उपरोक्त नाम से की और अपना व्यापार आरम्भ किया। उस समय इस फर्म पर किराने का व्यापार किया गया और ज्यों ज्यों फर्म ने उन्नति की त्यों २ किराने के अतिरिक्त सोना चाँदी का काम और साथ ही साहूकारी लेन-देन का काम किया गया फलतः फर्म उन्नति की ओर अग्रसर हुई। और यही कारण है कि वर्तमान में इस फर्म पर साहूकारी लेनदेन, गिरवी और पुलगाँव की मिल की एजेन्सी का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ करनीदानजी धाड़ीवाल हैं आपके तीन पुत्र हैं बाबू रतनलालजी धाड़ीवाल, बाबू केशरीचन्द धाड़ीवाल तथा बाबू सूरजमलजी धाड़ीवाल। अभी सब लोग शिक्षा प्राप्त करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल इतवारी बाजार, नागपुर	पुलगाँव मिल की सोल एजेन्सी है। यहाँ महाजनी लेनदेन तथा गाँठ गिरवे का काम होता है।
मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल इतवारी बाजार, नागपुर	यहाँ पर पुलगाँव मिल का माल बिक्री होता है।
मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल पुलगाँव जि० वर्धा	यहाँ पुलगाँव मिल की एजेन्सी है।

मेसर्स पुलाखीदास गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी मोहता हैं। आपका हेड आफिस हिंगनघाट में है। वहाँ यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म के पास कई जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इसके अतिरिक्त अकोला में इस फर्म का एक मिल भी चल रहा है। इसका

साहूकारी लेन-देन और हुण्डी-चिट्ठी का काम भी आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी पूर्व करती आ रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी हैं। सेठ जोहारमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९६६ में हुआ अतः आपके बाद फर्म का संचालन आपके भाई सेठ छोगालालजी करते रहे सेठ छोगालालजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८२ में हुआ। तब से फर्म का संचालन सेठ जोहार-मलजी के पुत्र सेठ चम्पालालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स कानूराम बच्छराज, नवी शुक्रवारी बाजार, नागपुर — यहाँ हेड ऑफिस है। तथा अनाज और आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठी का काम होता है।

मेसर्स कानूराम बच्छराज, इतवारी बाजार, नागपुर — यहाँ गल्ले का व्यापार होता है। और गल्ले की आढ़त का काम है।

मेसर्स जोहारमल छोगालाल, दुग C. P — गल्ला, आढ़त और हुण्डी चिट्ठी का काम होता है।

मेसर्स नैनसुख फनीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस कामटी है। यहां यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोहनलालजी तथा गौरीशंकरजी हैं। आप दोनों का हिस्सा है। इस फर्म की और भी कई स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ के इसी भाग में कामटी में दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसका पता इतवारी बाजार नागपुर है।

रामनाथ गनेशराम

इस फर्म का हेड ऑफिस जालना (निजाम-स्टेट) है इसके वर्तमान मालिक सेठ राधा कृष्णजी एवं सेठ गोपीकृष्णजी हैं। इसकी और भी स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में जालना में दिया गया है। यहां इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है। इसका पता इतवारी बाजार नागपुर है।

११

का पता "Rai Bahadur" है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दिया गया है।

मेसर्स महारामदास हजारीमल

आप लोगों का मूल निवासस्थान डीडवाना का है। आप अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष से यह फर्म अपना व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ महारामदासजी ने की। आपका ३०-३२ वर्ष पहले स्वर्गवास हो चुका है। आपके चार पुत्र थे। जिनके नाम क्रमशः बद्रीनारायणजी, रघुनाथजी, हजारीमलजी एवं कन्हैयालालजी था। आप चारों का भी स्वर्गवास हो गया है। इस समय इस फर्म के मालिक सेठ हजारीमलजी के पुत्र सेठ किशनदासजी एवं सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र सेठ चतुर्भुजजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कामठी—महारामदास हजारीमल } यहाँ गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

राजनांदगाँव—महारामदास हजारीमल } यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

भाटापाड़ा—महारामदास हजारीमल } यहाँ भी गल्ले का व्यापार और कमीशन का काम होता है।

मेसर्स माणिकचंद प्रभुदान

यह फर्म करीब १२५ वर्षों से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ माणिकचंदजी डीडवाना से यहाँ आये। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन क्रमशः सेठ प्रभुदानजी, पूरनमलजी, भैरोंबक्शजी ने सम्हाला। सेठ भैरोंबक्श के यहाँ सेठ मोतीलालजी दत्तक आये। वर्तमान में आप ही इसके मालिक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कामठी—माणिकचंद प्रभुदान } यहाँ चाँदी सोने का व्यापार होता है।

तुमसर—भैरोंबक्श मोतीलाल } यहाँ आपका बीड़ी का कारखाना है।

कामठी—माणिकचंद प्रभुदान } यहाँ आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है।

स्व० सेठ हीरालालजी (नैनसुख कनीराम) कामठी

स्व० सेठ मोतीलालजी पाण्डे (पुनीराम मोतीलाल) काटोल

[illegible]जी (नैनसुख कनीराम) कामठी

मेसर्स रामनाथ रामदेव

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ राधाकृष्णजी एवं सेठ गोपीकृष्णजी हैं। इस फर्म का हेड ऑफिस जालना (निज़ाम-स्टेट) में है। यहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। जिनका विशेष वर्णन इसी भाग में हैदराबाद के पोर्शन में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग एवं लेनदेन का व्यापार करती है।

काटोल

सी० पी० प्रांत के नागपुर जिले का अपने ही नाम की तहसील का यह हेड क्वार्टर है। यह ग्राम नदी के किनारे बसा हुआ है। नागपुर यहाँ से ३६ मील की दूरी पर स्थित है। नदी के दूसरे किनारे का बुधवारा नामक देहात इसीमें मिला लिया गया है। यहाँ के पुराने किले का भग्नावशेष और बहुत समय पहिले बने हुए पुराने मंदिर की कारीगरी के निशान अब भी शहर में मौजूद हैं। काटोल में म्युनिसिपैलिटी नहीं है। मगर यहाँ की सफाई और सेनिटेशन के लिये टाउनफण्ड नामक एक फंड है उससे खर्च किया जाता है।

यह इस प्रांत का आवश्यकीय काटन का मार्केट है। यहाँ करीब ६ जीनिंग और ३ प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ की पैदावार में विशेषकर कपास ही है और यही यहाँ से बाहर जाता है। यहाँ के आम भी मशहूर हैं मगर वे इधर ही इधर खप जाते हैं। इसके अतिरिक्त मूँग, अरहर, ज्वारी भी यहाँ से बाहर जाती है।

व्यापारिक सुविधा के लिये आजकल यहाँ से मोटरें भी रन करती हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की इटारसी नागपुर सेक्शन पर अपने ही नामके स्टेशन के पास बसा हुआ है।

मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर में हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी माहेश्वरी हैं। इसकी कई स्थानों पर ब्रांचेज तथा काटन जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ भी इसकी जिनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ नं० ४० में दिया गया है।

वर्धा

वर्धा सी० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह इस जिले का प्रधान व्यापारिक स्थान है। कॉटन की तो यह बहुत बड़ी मण्डी है। यहाँ से सालाना बहुत सा कपास एवं रुई बाहर जाती है। कई जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियों के होने से यहाँ के व्यापारियों को रुई लोढ़ने एवं उसकी गाँठें बँधवाने में बड़ी सहूलियत है।

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे की भूसावल-नागपुर ब्रांच का एक बड़ा स्टेशन है। यहाँ से एक और लाईन बलारशाह तक गई है।

यहाँ म्युनिसिपेलिटी है और उसका अच्छा प्रबन्ध है। रुई का सौदा सब काटन मार्केट में होता है। जहाँ मौसिम में रोजाना सैकड़ों गाड़ियाँ कपास की आती हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

बेंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स जगनीराम प्रेमसुख

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल जाति के बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। वर्धा में सेठ प्रेमसुखदासजी करीब ५५ वर्ष पूर्व आये और अपना कारबार शुरू किया। आप संवत् १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ रुक्मानन्दजी के हाथों से इस फर्म के कारबार की उन्नति हुई। आप कुछ समय पूर्व यहां म्यु० कमेटी के वाइस चेयरमैन रह चुके हैं। आपके पुत्र का नाम श्री सत्यनारायणजी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्धा—मेसर्स जगनीराम प्रेमसुख (T. A. Rukmanand) } यहाँ पर आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

पुलगाँव—मेसर्स प्रेमसुखदास रुक्मानन्द—यहाँ रुई का कारोबार होता है।

हीरालाल रामगोपाल

इस दुकान का स्थापन संवत् १९२६ में यहाँ में सेठ हीरालालजी गनेड़ीवाला के हाथों से हुआ। आपका हेड आफिस बम्बई है। संवत् १९६९ तक यह फर्म मेसर्स बच्छराज जमनालाल के साथ कामकाज करती रही। उसके पश्चात् अपनी पुरानी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी बच्छराजजी सेठ की फर्म को देकर इस दुकान के मालिकों ने अपनी नई जीन प्रेस फेक्टरी खोली। इस दुकान पर श्री मंशीलालजी गोरखरामजी संवत् १९३८ से मुनीमात करते हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है। इस फर्म का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम विभाग में पृष्ठ १०२ में बम्बई विभाग में दिया गया है। यहाँ का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यहाँ—मेसर्स हीरालाल रामगोपाल T. A. Honour. — यहाँ इस फर्म की जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा कॉटन और पैङ्किग का कारबार होता है।

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड आफिस नागपुर है। इसके व्यवसाय का परिचय मालिकों के फोटो सहित इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता-विभाग में दिया गया है। यहाँ में इस फर्म को टाटा संस लिमिटेड की मिलों का कपड़ा बेचने की एजंसी है।

मेसर्स विसेसरलाल गोविंदराम

इस फर्म के मालिक लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सिंहल गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ५० वर्ष पूर्व इस दुकान का स्थापन सेठ हरदत्तरायजी और सेठ विसेसरलालजी दोनों भ्राताओं ने किया। आरम्भ से ही आपके यहाँ कपड़े का व्यवसाय होता आ रहा है। सेठ हरदत्तरायजी के पुत्र सेठ गोविन्दरामजी भी फर्म के व्यापार-संचालन में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यहाँ—मेसर्स विसेसरलाल गोविन्दराम—यहाँ कपड़े का कारबार होता है।
यहाँ—मेसर्स विसेसरलाल गोविंदराम—इस नाम से गल्ले की तिजारत होती है।

भारतवर्ष के भिन्न २ स्थानों पर कई ब्रांचेज हैं। यह फर्म विशेष कर बैंकिंग का व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बीकानेर शहर में दिया गया है। यहाँ इस फर्म का एक प्रायवेट कपड़े का मिल है। इस मिल का कपड़ा इस प्रांत में बड़ा प्रतिष्ठाप्राप्त समझा जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कॉटन और बैंकिंग का व्यापार होता है। इस फर्म के अंडर में और भी छोटी शाखाएँ हैं।

मेसर्स भिखनचंद रेखचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के मोहता सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ भिखनचंदजी ने की थी। आपके २ पुत्र हुए, सेठ लखमीचंदजी तथा सेठ रेखचंदजी। सेठ भिखनचंदजी के समय में इस फर्म की साधारण उन्नति हुई। पश्चात् सन् १९०५ में सेठ लखमीचंदजी के पौत्र सेठ नरसिंह-दासजी अपना व्यापार अलग करने लगे। इस समय तक इस फर्म का संचालन-भार सेठ रेखचंदजी सम्हालते रहे। आप बड़े व्यापार-कुशल, मेधावी एवं सज्जन व्यक्ति थे। आपने अपनी व्यापार-चातुरी से फर्म की बहुत उन्नति की। आपने सन् १९०० में राय साहब रेखचंद मोहता स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स की स्थापना की। आपका स्वर्गवास सन् १९०५ में होगया है। आपके २ पुत्र हुए, सेठ बुलाखीदासजी तथा सेठ नरसिंहदासजी। इनमें से सेठ नरसिंह-दासजी सेठ लखमीचंदजी के पुत्र सेठ प्रयागदासजी के यहाँ दत्तक चले गये। कुछ समय पश्चात् सेठ बुलाखीदासजी का स्वर्गवास होगया। आप के २ पुत्र हुए, सेठ मथुरादासजी और सेठ गोपालदासजी। आप दोनों सज्जन कई वर्षों तक अपना व्यापार ज्वाईंट रूप से करते रहे। अभी कुछ मास पूर्व आप लोग अलग २ होगये हैं।

उपरोक्त फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी हैं। आप नवयुवक एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। हाल ही में आपने अकोले का दी हुकुमचंद डालमियां मिल खरीदा है। इस मिल में ४५८ लूम्स और २२५०० स्पिंडिल्स हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हिंगनघाट—मेसर्स भिखनचंद रेखचंद मोहता T. A. "Rekhachand"	यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा बैंकिंग-हुंडी, चिट्ठी और साहुकारी लेन-देन का व्यापार होता है। यहां आपकी एक जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

वर्धा—मेसर्स रेखचंद गोपालदास	यहां आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।
गोंदिया—श्रीगणेश आईल एण्ड राईस मिल	यहाँ इस नाम से आपका कारखाना है। तथा बुलाखीदास गोपालदास के नाम से मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है।
अकोला—राय साहब रेखचंद गोपालदास स्पिनिंग विविंग मिल्स	यह आपका प्रायव्हेट कपड़े का मिल है। इसमें ४५८ लूम्स और २२५०० स्पेंडिल्स हैं।
नागपुर—मेसर्स बुलाखीदास गोपालदास इतवारी	यहाँ बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी साहुकारी लेन-देन तथा कपड़े का व्यापार होता है।

दी० आर० एस० रेखचंद मोहता मिल्स

इस मिल के वर्तमान मालिक सेठ मथुरादासजी मोहता हैं। पहले आपकी फर्म पर मेसर्स मिघनचंद रेखचंद मोहता नाम पड़ता था मगर करीब ५—६ माह से इसके मालिक लोग अलग अलग हो गये। तब ही से यह मिल सेठ साहिब के पार्ट में आयी। इस मिल का कपड़ा मजबूत, सुन्दर और महीन होता है। विशेषकर सी० पी० में इस मिल के कपड़े की खपत होती है। इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में बीकानेर में दिया गया है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स सुखाल्चन्द गोपाल्दास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस जबलपुर में है। इस फर्म की और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में पेज नं० ४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म काटन का व्यापार करती है। इसका यहाँ जीन और प्रेस भी है।

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड आफिस नागपुर है । इसके वर्तमान मालिक सेठ जीवराजजी, नागरमलजी घीयमलजी आदि हैं । इस फर्म की इसी नाम से एवंम् सोनीराम जीवमल के नाम से बहुत सी शाखाएँ हैं । सब शाखाओं पर टाटा संस लि० की मिलों के बने हुए कपड़े का व्यापार होता है । यह फर्म इन मिलों की सोल एजंट है । इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित हमारे इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में दिया गया है । यहाँ यह फर्म बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और काटन का व्यापार करती है । आढ़त का काम भी इस फर्म पर होता है ।

मेसर्स भीखमचन्द लखमीचन्द

आप लोगों का आदि निवास-स्थान बीकानेर है । आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के मोहता सज्जन हैं । इस परिवार के सेठ भीखमचन्दजी ने स्वदेश से हिंगनघाट आ उपरोक्त फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व की थी । सन् १९९५ में रेखचन्दजी की फर्म ने अपना फर्म अलग खोल लिया । और फर्म का संचालन सेठ नरसिंहदासजी करने लगे । आपको सरकार ने रायबहादुर के सम्मानसूचक पद से विभूषित किया था । आपका स्वर्गवास हो गया है । वर्तमान में आपके दत्तक पुत्र जानकीदासजी इस फर्म के मालिक हैं । आप अभी नाबालिग हैं ।

इस फर्म में प्रधानतया बैंकर्स एण्ड लैण्ड लार्ड का काम होता है । इस फर्म की यहाँ एक जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरी है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स भीखमचन्द लखमीचन्द हिंगनघाट जि० वर्धा C. P.	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा बैंकिंग और लैण्ड लार्ड का काम होता है । यहाँ आप की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है ।
रा० ब० नरसिंहदास जानकीदास वर्धा	रुई का व्यापार तथा बैंकिंग का काम होता है और जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी है ।
मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास पुलगाँव (वर्धा)	बैंकिंग, लैण्डलार्ड, जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी एवं कॉटन का व्यापार होता है ।
मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास वरोरा (चाँदा)	बैंकिंग, लैण्डलार्ड, जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी एवं कॉटन और आइलसीड का व्यापार होता है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रायमल मगनमल हिंगनघाट C. P.—यहाँ कपड़ा-महाजनी लेन-देन तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स चन्दनमल धनराज धारावार (जि० यवतमाल)—कपड़ा और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल हजारीमल वणी (यवतमाल)—कपड़ा और महाजनी का व्यापार होता है।

मेसर्स धनराज लखमल पोहना जि० वर्धा—यहाँ महाजनी का काम होता है।

मेसर्स पोखराज कांचर हिंगनघाट—कपड़े का काम होता है।

मेसर्स श्रीराम चतुर्भुज मोहता

इस फर्म के मालिक बीकानेर निवासी माहेश्वरी समाज के मोहता सज्जन हैं। करीब ८५ वर्ष पूर्व सेठ श्रीरामजी और चतुर्भुजजी मोहता ने इसे स्थापित किया, और आपही दोनों सज्जनों के हाथों से व्यवसाय वृद्धि हुई। आपके यहाँ सेठ प्रेम सुखदासजी दत्तक आये। आपने ३५ वर्षों तक फर्म का काम संचालित किया। आप बड़े दृढ़ संकल्पी, उदार एवं कष्टसहिष्णु थे। आपके यहाँ श्रीयुत बद्रीनारायणजी मोहता दत्तक आये। आपही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आप सुधार प्रेमी एवं देशभक्त सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगनघाट—मेसर्स श्रीराम चतुर्भुज मोहता—इस फर्म पर इजारदारी मालगुजारी व बैंकिंग का कारबार होता है।

मेसर्स रामकरन हनुमानबक्स सारडा

इस फर्म के मालिक बड़ी खाटू (जोधपुर राज्य) के आदि निवासी हैं। आप लोग माहेश्वरी समाज के सारडा सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९३६ में सेठ शिवनारायणजी सारडा ने स्वदेश से आकर हिंगनघाट में मेसर्स शिवनारायण रामकरन के नाम से की और कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। कुछ समय में ही फर्म को अच्छी सफलता मिली। सम्वत् १९४२ में इसके मालिक अलग २ हो गये। अतः सेठ शिवनारायणजी के भ्राता सेठ रामकरनजी के पुत्र सेठ रामदीनजी अपना व्यापार मेसर्स रामकरन रामदीन के नाम से करने लगे। और संवत् १९५४ में सेठ रामकरनजी के पुत्र सेठ हनुमानबक्सजी ने अपना स्वतन्त्र काम मेसर्स रामकरन हनुमानबक्स के नाम से खोला।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनुमानबख्सजी शारदा तथा आपके पुत्र बाबू अमरचंदजी, बाबू रतनलाल तथा बाबू घनश्यामजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन सेठ हनुमानबख्सजी शारदा करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हिंगनघाट—मेसर्स रामकरन हनुमानबख्स—यहाँ कपड़ा, सूत, आढ़त और लेन-देन का व्यापार होता है।

व्यापारियों के पते

कॉटन मरचेंट्स—

मेसर्स जमनाधर पोद्दार
" बंसीलाल अबीरचंद रा० ब०
" भिखमचन्द लखमीचन्द
" भिखमचन्द रेखचन्द
दी रेखचन्द मोहता मिल
मेसर्स साधुराम बोलाराम
" हरिचन्द बागमल

बैंकर्स—

मेसर्स घुर्मीलाल चाँदमल
" जमनाधर पोद्दार
" फूलचंद सुगनमल
" बंसीलाल अबीरचंद
" मनसाराम गनेशदास
" रेखचंद मोहता
" रायमल मगनमल
" लालचंद हीरालाल
" हरिचंद अमोलकचंद
" हरिचन्द बागमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स मोतीराम नन्दराम
मेसर्स रायमल मगनमल
" रामकरन हनुमानबख्श
" रामदयाल रामचन्द्र
" रेखचन्द कालूराम
" शिवजीराम राधाकृष्ण
" सुजानसिंह मोहता

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स जयराम धीरजी
" लक्ष्मीनारायण मनसुखदास
" सुजानसिंह मोहता

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स आलमचन्द शोभाचन्द
" मगनमल गनेशमल
" हेमराज जवरीमल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स महम्मद जुसब
" भगवान करमसी
" हस्तीमल कनकमल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स औया भाई हाजी करीम
" तैय्यब अली आदमजी
" रहमतुल्ला हलाना

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनुमानबक्सजी शारदा तथा आपके पुत्र बाबू अमरचंदजी, बाबू रतनलाल तथा बाबू घनश्यामजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन सेठ हनुमानबक्सजी शारदा करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हिंगनघाट—मेसर्स रामकरन हनुमानबक्स—यहाँ कपड़ा, सूत, आढ़त और लेन-देन का व्यापार होता है।

व्यापारियों के पते

कॉटन मरचेंट्स—

मेसर्स जमनाधर पोद्दार
" बंसीलाल अबीरचंद रा० ब०
" भिखमचन्द लखमीचन्द
" भिखमचन्द रेखचन्द
दी रेखचन्द मोहता मिल
मेसर्स साधुराम मोलाराम
" हरिचन्द बागमल

बैंकर्स—

मेसर्स घुर्मीलाल चाँदमल
" जमनाधर पोद्दार
" फूलचंद सुगनमल
" बंसीलाल अबीरचंद
" मनसाराम गनेशदास
" रेखचंद मोहता
" रायमल मगनमल
" लालचंद हीरालाल
" हरिचंद अमोलकचंद
" हरिचन्द बागमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स मोतीराम नन्दराम
मेसर्स रायमल मगनमल
" रामकरन हनुमानबक्स
" रामदयाल रामचन्द्र
" रेखचन्द कालूराम
" शिवजीराम राधाकृष्ण
" सुजानसिंह मोहता

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स जयराम वीरजी
" लक्ष्मीनारायण मनसुखदास
" सुजानसिंह मोहता

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स आलमचन्द शोभाचन्द
" मगनमल गनेशमल
" हेमराज जवरीमल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स महम्मद जुसब
" भगवान करमसी
" हस्तीमल कनकमल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स जीवा भाई हाजी करीम
" तैय्यब अली आदमजी
" रहमतुल्ला हलाना

चाँदा

यह स्थान निजाम स्टेट और सी० पी० प्रान्त के बीच में स्थित है। इसका इतिहास पुराना है। पहले इस स्थान पर गोंड़ लोगों का अधिकार था। कई वर्षों तक इनके वंशज इसके आस-पास के स्थान पर राज्य करते रहे। चाँदा उस समय उनकी राजधानी थी। आज कल भी उन लोगों की बनाई हुई कई प्राचीन वस्तुएँ मौजूद हैं। उनमें से विशेष प्रसिद्ध यहाँ का किला एवं शहर के चारों ओर बनी हुई चहारदिवारी हैं।

यहाँ होने वाले व्यापार में कपास, कोयला आदि प्रधान हैं। यहाँ की पैदावार चावल, अलसी, तिल्ली, कपास, ज्वारी, चाँवल, गेहूँ और घी है। गेहूँ यहाँ कम पैदा होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कोयले की खानें भी हैं जिनसे कोयला निकाला जाता है तथा पीली मिट्टी भी यहाँ बहुत होती है। यह मिट्टी रँगने एवं दवाइयों के काम में आती है।

बाहर से आने वाले माल में किराना, कपड़ा, चाँदी, सोना, बिल्डिंग मटेरियल्स आदि हैं।

यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की वर्धा एवं बलारशाह वाली लाइन का स्टेशन है। यहाँ से बी० एन० आर० की छोटी लाइन नागपुर तक गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स अमरचन्द अगरचन्द

इस फर्म के मालिक ओसवाल वैश्य समाज के बीकानेर के निवासी सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब १०० वर्षों से व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ अगरचन्दजी के द्वारा हुई। आपको यहाँ के गोंड़ राजा नागपुर से यहाँ लाये थे। आपके पश्चात् फर्म के संचालन का भार आपके पुत्र सेठ अमरचन्दजी ने लिया। आपके समय में इस फर्म की बहुत उन्नति हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक अमरचन्दजी के पुत्र सेठ सिद्धकरणजी हैं। फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ चम्पकरनजी करते हैं। आप नवयुवक हैं। यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं में आपका हाथ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

चाँदा—मेसर्स अगरचन्द अमरचन्द } यहाँ बैंकिंग, महाजनी देन-लेन, रुई, गल्ला, सोना चाँदी आदि का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स राय ब० नरसिंहदास जानकीदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी विभाग के पृष्ठ २० पर दिया गया है। यहाँ इस फर्म पर बैङ्किग, ऑइलसीड्स और आढ़त का काम होता है।

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स फतेचन्द किशनचन्द
" हीरालाल कृष्णलाल
" भीमराज धनराज
" रूपजी हीरालाल
" जेठमल धनराज
" इन्दुचन्द ताराचन्द
" नाना मलाना वाणी
" सुगनचन्द रतनचन्द

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स उत्तमचन्द वर्धमान

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स अमरचन्द अगरचन्द
" गम्भीरचन्द सुजानमल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स हाजी दादाभली

जबलपूर

यह स्थान जी० आई० पी०, ई० आइ० आर० और बी० एन० आर तीनों रेलवे का जंक्शन है। मध्य प्रांत के बड़े २ शहरों में इसकी गिनती है। ई० आइ० आर० की लाईन इलाहाबाद से यहाँ तक आती है। दूसरी जी० आई० पी० यहाँ से शुरू होकर इटारसी तक गई है। वहाँ यह मेन लाईन में जा मिलती है। तथा बी० एन० आर० की छोटी लाईन यहाँ से बालाघाट होती हुई गोंदिया एवं नैनपुर होती हुई छिंदवाड़ा तक गई है। यहाँ से सागर, दमोह को मोटरें भी जाती हैं। कभी २ सिवनी तक भी यहाँ से मोटर का प्रबंध हो जाता है। तीनों रेल्वे का जंक्शन होने से यहाँ रेल्वे में काम करने वाले बहुत से व्यक्ति रहते हैं। रेल्वे से एक मील के करीब में बस्ती है। स्टेशन के पास ही यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ गोकुलदासजी की एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

यहाँ का प्रधान व्यापार बिड़ी का है। इसके पश्चात् सूत एवं साड़ियों के व्यापार का नम्बर है। आस पास के देहाती लोग यहाँ से सूत ले जाते हैं तथा साड़ियाँ बुन कर लाते हैं। यही साड़ियाँ यहाँ के व्यापारियों के द्वारा बाहर जाती हैं। यहाँ की साड़ियाँ सुन्दर और मजबूत होती हैं। इसके सिवा बिड़ी के लिये तो यह शहर भारतवर्ष में मशहूर हो गया है। जिसमें खास कर "शेर छाप" का नाम तो बहुत ही मशहूर है। इसका तथा यहाँ के बीड़ी के व्यापारियों का विशेष जिक्र आगे किया जायगा। इसके अलावा यहाँ मेसर्स मौजीलाल एण्ड संस नामक फर्म ने हाथ के काम में आने रबर मोहर, ब्रास वर्क्स वगैरह की दस्तकारी में अच्छा काम किया है।

कल-कारखानों में यहाँ एक राजा गोकुलदास काटन मिल नामक कपड़े का मिल है। यह आजकल गुजराती सज्जन के हाथ में है तथा एक लकड़ी का मिल जिसका नाम राजा गोकुलदास सा मिल है नया खुला है। यह मिल भारत के लकड़ी के मिलों में अपना ऊँचा स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त २ पाटेरी वर्क्स हैं। जहाँ मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाए जाते हैं। यहाँ एक कांटा, तेल का मिल भी है।

यहाँ के प्रधान व्यापारिक स्थान जवाहरगंज, जिसे पहले लार्डगंज कहते थे, गोरखगंज,

जिसे पहले मिलौनीगंज कहते थे, सदर, निवारगंज, कोतवाली बाजार आदि हैं। जवाहरगंज में विशेषकर बैंकिंग, कपड़ा और किड़ी का व्यापार होता है। गोविन्दगंज में बड़े २ जमींदारों की हवेलियाँ हैं तथा गल्ले का साधारण व्यापार होता है। कोतवाली बाजार में जनरल मरचेण्टों की दुकानें हैं। इसके अतिरिक्त सोनाहाई, कमानियाँ आदि छोटे २ बहुत से बाजार हैं जहाँ सभी प्रकार का व्यापार होता है। सोनाहाई में विशेषकर चाँदी सोने का व्यापार होता है। सदर छावनी को कहते हैं। यहाँ यूरोपियन ढंग की दूकानें विशेष हैं।

म्युनिसिपैलिटी वगैरह की यहाँ अच्छी व्यवस्था है। शहर में सफाई मालूम होती है। सेनिटेशन एवं सुन्दरता के लिहाज से यह शहर अच्छा है। जहाँ चारों ओर से रास्ते मिलते हैं वहाँ फव्वारे वगैरह लगे हुए हैं। इससे शहर की सुन्दरता बढ़ गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

बैंकर्स

मेसर्स राजा गोकुलदास, जीवनदास, गोविन्ददास

इस फर्म के वर्तमान मालिक देशभक्त बाबू गोविन्ददासजी मालपाणी हैं। आप इस समय देश के लिये जेल गये हुए हैं। यह फर्म यहाँ की बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी फर्म है। इसकी बहुत सी शाखाएँ हैं। यह फर्म जमींदारी का भी बहुत बड़ा काम करती है। इसका हेड आफिस यहीं है। यहाँ बैंकिंग एवं जमींदारी का काम प्रधान रूप से होता है। इसके अतिरिक्त आपका यहाँ एक "राजा गोकुलदास सा मिल" नामक एक लकड़ी का मिल है। भारतवर्ष के बड़े २ लकड़ी के मिलों में इसका स्थान है। इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित देखने वाले सज्जनों को इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में देखना चाहिये।

मेसर्स चन्द्रभान बंसीलाल रा० ब०

इस फर्म का हेड आफिस कामटी है। इसके वर्तमान प्रधान मालिक सर विशेश्वरदासजी ...गा हैं। यह फर्म सी० पी० प्रांत की मशहूर फर्मों में से है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं। ...व पर प्रायः बैंकिंग व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम ...ग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ११४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग का व्यापार ...ती है। इसकी स्थायी सम्पत्ति भी यहीं है। इसका पता कमानियाँ जबलपुर है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स हंसराज बख्तावरचन्द सदरबाजार जबलपुर	यहाँ महाजनी लेनदेन, मकान तथा बंगले के किराये का काम होता है।

चाँदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स चौथमल चांदमल (भूरा)

आप लोग (बीकानेर) देशनोक के आदि निवासी हैं। पर लगभग १०० वर्ष पूर्व से यह परिवार जबलपुर में ही रहता है। सेठ परशुरामजी सबसे प्रथम देश से यहाँ आये और इस प्रकार यह परिवार यहाँ बस गया। सेठ परशुरामजी के दूसरे भाई लोग सीवनी चले गये अतः जबलपुर में केवल आप ही ठहरे रहे। आपके स्वर्गवासी हो जाने के बाद आपके पुत्र सेठ चौथमलजी ने अपना स्वतन्त्र कार्य किया और आपके बाद आपके पुत्र चांदमलजी ने ६० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से की। प्रथम आपने अपनी फर्म पर सोने, चांदी के व्यापार का काम आरम्भ किया। आप बड़े अनुभवी एवं व्यापारदक्ष थे अतः आपसे फर्म के काम को अच्छा उत्तेजन मिला। जिस प्रकार फर्म उन्नति करती गई उसी प्रकार अन्य प्रकार के व्यवसाय की वृद्धि की गई। आप बड़े प्रतापी महापुरुष थे आपने फर्म को अच्छी अवस्था पर पहुँचा दिया। आपका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में सम्वत् १९७९ को हुआ। आपके बाद फर्म का सारा कारबार आपके पुत्र बाबू राजमलजी, ऋषभदासजी, बाबू मोतीलालजी और बा० हीरालालजी ने संचालन किया जो आज भी कर रहे हैं।

वर्तमान में फर्म के मालिक सेठ राजमलजी, सेठ रिखभदासजी, बा० मोतीलालजी और बा० हीरालालजी भूरा है।

बा० मोतीलालजी सन् १९२१ से स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य हैं तथा स्थानीय और भी सार्वजनिक संस्थाओं के आप सदस्य एवं संचालक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स चौथमल चाँदमल सोना चांदी बाजार जबलपुर T. A. Bhura	सोना, चाँदी का थोक तथा फुटकर तथा चाँदी, सोने के सभी प्रकार के डिजाइन के जेवरात का व्यापार होता है महाजनी लेन-देन तथा नोट गिरों के काम भी यह फर्म करती है साथ ही स्थायी सम्पत्ति का भी काम होता है। तथा जवाहिरात और गल्ले का काम भी होता है।

मेसर्स रामचन्द्र जवाहरमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान बिसाऊ (जयपुर-स्टेट) का है। आप लो
अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ६० वर्ष पूर्व इसका स्थापन सेठ रामचंद्रजी व
आपके पुत्र जवाहरमलजी के हाथों से हुआ। फर्म के स्थापन के कुछ समय पश्चात् सेठ साहब
सेठ ३ पुत्र जिनका नाम क्रमशः बंसीधरजी तथा भजनलालजी था भी आ गये। आप लोग
ने सम्मिलित रूप से फर्म की अच्छी उन्नति की। शुरू से ही यह फर्म कपड़े का व्यापार करती
आ रही है। आजकल कपड़े के व्यापारियों में यहाँ यह फर्म पहली ही मानी जाती है।

इसके वर्तमान मालिक सेठ बंसीधरजी के पुत्र रामकुमारजी, सेठ भजनलालजी के पुत्र सत्यनारायणजी एवं सेठ जुहारमलजी के पुत्र रतनलालजी हैं। इसका संचालन सेठ रामकुमारजी एवं सत्यनारायणजी करते हैं। रतनलालजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्म की ओर से यहाँ एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जबलपुर—मेसर्स रामचन्द्र जवाहरमल जवाहरगंज } यहाँ कपड़े के थोक माल का व्यापार होता है।

मेसर्स रामनारायण किशनदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ घनश्यामदासजी पोद्दार हैं। आप अभी नाबालिग हैं। इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएं हैं। प्रायः सभी जगह टाटा संस लिमिटेड की मिलों के कपड़े का व्यापार होता है। यहां भी इस फर्म पर इसी कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ इसका पता जवाहरगंज जबलपुर है। इसकी विशेष जानकारी के लिये इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पेज नं० ४६ में चैनीराम जेसराज का परिचय देखना चाहिये।

मेसर्स शारदाप्रसाद फूलचन्द

इस फर्म की स्थापना १८७६ ई० में हुई थी। इसके पूर्व इसका नाम नथमल शारदाप्रसाद पड़ता था पर सन् १९२२ से उपरोक्त नाम से काम काज होता है सेठ नथमलजी इस समय काम काज से रिटायर हो गये हैं।

इस समय बा० फूलचन्दजी इसके प्रधान मालिक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जबलपुर—मेसर्स शारदाप्रसाद फूलचन्द सराफ़ाबाजार T. A. Phulchand	यहाँ कपड़ा एवं जनरल मरकेंटाइल का व्यापार होता है।

सूत के व्यापारी

मेसर्स भूरामल रामदयाल

आप लोग [illegible]पुर के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व जबलपुर में सेठ भूरामलजी ने उपरोक्त नाम से फर्म खोल सूत का व्यापार आरम्भ किया था। आपने अपनी फर्म का संचालन अच्छे ढंग से किया पर फर्म की विशेष उन्नति आपके पुत्र सेठ रामदयालजी के हाथों हुई।

वर्तमान में इस फर्म का संचालन सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ तुलसीदासजी और सेठ [illegible]जी करते हैं।

वर्तमान में यह फर्म प्रधानरूप से सूत का व्यवसाय करती है और साथ ही महाजनी लेन-देन और मकानात का काम भी होता है। अहमदाबाद के पास पेटलाद के दोनों कारखाने की, जहाँ रूई का काम होता है, यह फर्म एजेण्ट है।

मेसर्स भूरामल रामदयाल की धार्मिक कार्यों की ओर भी अच्छा अनुराग है और यही कारण है कि इसके मालिकों की ओर से जबलपुर के लार्डगंज में एक धर्मशाला बनी हुई है। नर्मदाजी के तट ग्वारीघाट पर भी इसकी ओर से धर्मशाला बनी हुई है।

सेठ भूरामलजी का देहावसान सम्वत् १९०५ में तथा सेठ रामदयालजी का सम्वत् १९१८ में हुआ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स भूरामल रामदयाल, लार्डगंज जबलपुर	यहाँ सूत का काम होता है।
मेसर्स भूरामल रामदयाल [illegible] दमोह C. P.	यहाँ कपड़ा, किराना और गल्ला का काम होता है।

फुटकर व्यापारी

मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद रावत

आप लोग आदि निवासी रियासत बिजावर (बुन्देल खण्ड) के रहने वाले हैं पर लगभग ८० वर्ष से आप लोग जबलपुर में रहते हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ८० वर्ष पूर्व सेठ रामप्रसादजी रावत ने उपरोक्त नाम से आरम्भ कर किराना, पीतल के वर्तन तथा कपड़े का काम आरम्भ किया। पर ज्यों २ फर्म ने उन्नति की त्यों २ व्यवसाय की वृद्धि की गई। और कुछ ही समय में आपने फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४६ के लगभग हुआ था। आपके बाद आपके पुत्र बाबू हजारीलालजी ने फर्म के कार्य को संचालित किया और उसी प्रकार अपनी फर्म को प्रतिष्ठित बनाये चले जा रहे हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू हजारीलालजी बाबू गोविन्ददासजी तथा बाबू शारदाप्रसादजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू हजारीलालजी करते हैं और आपकी देख-रेख में आपके पुत्र बाबू गोविन्ददासजी फर्म के काम काज का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद रावत मिलौनी गंज जबलपुर	किराना तथा गल्ले का काम होता है तथा जमींदारी का काम भी होता है।

मेसर्स मोहनलाल हरगोविन्ददास

आप लोग अहमदाबाद निवासी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व सेठ मोहनलालजी तथा आपके भाई सेठ हरगोविन्ददासजी ने जबलपुर में की और बीड़ी का उद्योग आरम्भ किया। इस लाईन में फर्म ने बहुत अच्छी सफलता प्राप्त की। आरम्भ में आपने कण्ट्राक्ट पर कार्य्य कराया और स्वयं सामान देकर बीड़ी बनवाया करते। इस प्रकार बीड़ी तैयार करवाकर बाहर दूर २ के स्थानों में एजेण्ट भेज कर आपने बीड़ी की खपत का संगठित उद्योग किया फलतः थोड़े समय में ही व्यापार चल निकला और आज देश के सभी स्थानों में इनके माल की अच्छी खपत होती है। इस फर्म का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क "शेर छाप" के नाम से सुविख्यात है।

इसकी उन्नति दोनों ही भाइयों की औद्योगिक दूरदर्शिता का परिणाम है। सेठ हरगोविन्ददास का स्वर्गवास लगभग ८ वर्ष पूर्व हो गया। आपके बाद सेठ मोहनलालजी काम संचालित करते रहे पर दो वर्ष बाद उनका भी स्वर्गवास हो गया। दोनों के निःसन्तान होने के कारण

व्यापारियों के पते

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अब्दुलसकूर इब्राहिम, जवाहरगंज
" टोडरमल मानिकचन्द "
" धनजी मुरारजी "
" मुन्नीलाल बप्पूलाल "
" रामचन्द्र जवाहरमल "
" रामनारायण किशनदयाल "
" हाजीकरीम नूरमहम्मद "
" हीरचन्द मानमल "

सोना-चाँदी के व्यापारी—

मेसर्स कुंजीलाल जानकीप्रसाद सोनाहाई
" चौथमल चाँदमल "
" बलदेवप्रसाद नन्हूलाल "
" मानमुख रूपचन्द सुनीहाई
" प्रेमसुख फतेचन्द "
" मुन्नीलाल सुखालचन्द "
" महेशीलाल सराफ सोनहाई
" मन्नूलाल छक्कोडीलाल "

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स कोडूमल दशरथलाल, निवारगंज
" गुलाबचन्द कपूरचन्द भँवरलाल "
" ठाकुरप्रसाद दशादीन "
" रामदीन देवीदीन "
" हीरजी गोविन्दजी "
" श्रीगोपाल रामेश्वर "

बैंकर्स—

दी अलाहाबाद बैंक लिमिटेड
दी इम्पीरियल बैंक लिमिटेड
मेसर्स गोकुलदास, जमनादास, गोविन्ददास
" भगवानदास चेतूलाल
दी भार्गव बैंक

बिड़ी के व्यापारी—

मेसर्स अनवरखाँ महबूबखाँ, हनुमानताल
" मगनलाल भिखाभाई, जवाहरगंज
" मोहनलाल हरगोविन्दास "
" राधाकृष्ण नारायणदास "

सूत के व्यापारी—

मेसर्स फूलचन्द नत्थूलाल
" भूरामल रामदयाल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स वालिमहम्मद हाजीअली
" बंशीलाल कल्लूलाल

जनरल मरचेण्ट्स—

दी अकबरी शाप, कोतवाली बाजार
डा० अब्दुलाभाई "
मेसर्स सुलेमानजी गनीभाई "
" सुलेमानजी होसाभाई "

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स बेनीप्रसाद हरिचन्द, कम्पनीगेट

मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुलिचंद

इस फर्म के मालिक यहीं के मूल निवासी हैं। यह फर्म यहाँ बहुत पुराने समय से व्यापार कर रही है। करीब ६० वर्ष पहले से इस पर मेसर्स गुलाबचंद डालचंद के नामसे व्यापार होता था। और करीब ५ वर्ष से उपरोक्त नाम से व्यापार हो रहा है। शुरु से ही यह फर्म महाजनी लेनदेन का व्यापार करती चली आ रही है। इसकी विशेष उन्नति युद्ध के समय में हुई। उस समय इस फर्म के पास कई मिलों की एजंसी थी। आज कल सिर्फ जलगाँव मिल की एजंसी रह गई है। वह भी आपके चचा के पास है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ लखमीचंदजी और सेठ दुलिचंदजी हैं। आप लोग दसवार वैश्य जाति के जैन सज्जन हैं। आप ही वर्तमान में फर्म का संचालन करते हैं। आप लिमिटेड एवं हाल्स्टेस भक्त सज्जन हैं। यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है। इस फर्मकी ओर से यहाँ बड़े जैन मन्दिर के पास एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बाजार—मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुलिचन्द T. A. Modi.	यहाँ बैंकिंग, हुंडी और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है।
बाजार—मेसर्स गुलाबचंद दुलिचंद सर्राफ़ चौक	यहां चांदी-सोने का व्यापार होता है।

मेसर्स गोपालदास वल्लभदास

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस अमलनेर में है। वहां यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी कई शाखाएं हैं, उनमें से एक शाखा यहाँ भी है। यहाँ जमींदारी एवं बैंकिंग का काम होता है। इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ४० में देखना चाहिये।

चन्द्रभान बंसीलाल गाडरवाड़ा

इस फर्म का नाम बहुत मशहूर है। इसका हेड आफिस कामठी है। सी० पी० प्रान्त में इस फर्म की बहुत सी शाखाएं हैं। प्रत्येक स्थान पर यह फर्म फर्स्टक्लास बैंकरों में से है। इसके वर्तमान मालिक सेठ रा० ब० विसेसरदासजी डागा हैं। आपका विस्तृत परिचय राजपूताना विभाग
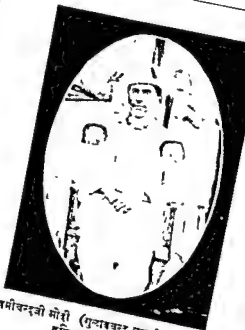
स्व० चौधरी कन्हैयालालजी (कन्हैयालाल हुकुमचन्द) सागर

सेठ लखमीचन्दजी मोदी (गुलाबचन्द लखमीचन्द दुलिचन्द) सागर

नलालजी (कोरेलाल कुन्दनलाल) सागर

बाबू दुलिचन्दजी मोदी (गुलाबचन्द लखमी... दुलिच...)

में पेज नं० ११४ में इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग व्यापार करती है।

मेसर्स चिन्तामन दुर्गाप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० दुर्गाप्रसाद, ला० चौसेलाल, ला० दुलारेलाल एवं ला० तुलसीराम हैं। आप चारों ही भाई इस फर्म के संचालन का कार्य्य करते हैं। यह फर्म १८ वर्ष से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ चिन्तामनजी थे। आप लोग हैहय क्षत्री समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स चिन्तामन दुर्गाप्रसाद कटरा } यहाँ किराने का अच्छा व्यापार होता है।

सागर—मेसर्स चिन्तामन छोटेलाल बड़ा बाजार } यहाँ थोक और खुदरा दोनों प्रकार का कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल टीकाराम

इस फर्म के मालिक यहीं के मूल निवासी हैं। आप लोग गोला पूरब वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ४० वर्षों से व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ हीरालालजी तथा आपके पुत्र सेठ टीकारामजी के द्वारा हुई। शुरू से ही यह फर्म किराने का व्यापार करती आ रही है। इसकी विशेष तरक्की सेठ टीकारामजी के द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमान में इसके संचालक सेठ शिवप्रसादजी, शोभारामजी और बालचन्दजी हैं। आप मलैया के नाम से संबोधित किये जाते हैं। सेठ शिवप्रसाद जी सी० पी० कौंसिल के मेम्बर थे मगर देश-प्रेम की वजह से आपने इससे इस्तीफा दे दिया। आप मिलनसार हैं। आपके दोनों भाई भी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स हीरालाल टीकाराम कटरा } यहाँ कपड़ा, घी और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

दमोह

यह जी० आई० पी० रेल्वे की कटनी—बीना वाली ब्रांच लाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन के पास बसा हुआ है। इसकी बसावट साफ एवं सुथरी है। गंज बाजार तो यहां का बहुत ही अच्छा बना है। यहां का प्रधान व्यापार गल्ले का है। यहां से तीन चार स्टेशन आगे गनेशगंज नामक स्थान पर कपास काफी मात्रा में पैदा होता है। यहां जिनिंग एवं प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

यहां पैदा होने वाली वस्तुओं में तिल्ली, जुवार, रामतिल्ली, सरसों, चावल, (बढ़िया) गेहूँ (जलालिया) चना, महुआ, गुल्ली, अलसी आदि हैं। ये ही वस्तुएँ यहां से बाहर भी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यहां बंगला एवं कपूरी पान और परवल भी बहुत पैदा होते हैं। पास के जङ्गल में गोंद, जलाऊ लकड़ी, इमारती लकड़ी, कोयला एवं पत्थर होता है।

बाहर से आनेवाले माल में विशेष कर हार्डवेअर, किराना, कपड़ा, सूत आदि प्रधान हैं। यहां किसी किस्म के कल-कारखाने नहीं हैं।

व्यापारियों की सुविधा के लिये यहां की म्युनिसिपेलिटी ने स्टेशन के पास ही एक सुन्दर धर्मशाला बना रखी है। यहां से जबलपुर और सागर मोटरें जाया करती हैं। बोल यहां प्रायः अंग्रेजी ही है।

यहां के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स कन्हैयालाल हुकुमचंद

इस फर्म का हेड आफिस सागर में है। वहां यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके वर्तमान मालिक एवं प्रधान संचालक मानक चौक वाले चौधरी हुकुमचन्द हैं। यह फर्म यहां १ साल से काम कर रही है। यहां पर गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है। इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ में सागर के साथ दिया गया है। यहां इस दुकान का संचालन बा० रामचन्द्रजी करते हैं।

मेसर्स भूरामल रामदयाल

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर में है। वहां यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित समझी जाती है।

इसके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी तथा आपके भाई रतनचन्दजी हैं। आप लोग दिगम्बर जैन परवार जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म की ओर से कटनी में जैन पाठशाला नामक संस्था है जिसमें सभी जातियों के बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करके उसे सार्वजनिक स्वरूप दिया गया है। इसीप्रकार इसके साथ ही एक छात्रावास भी है जहाँ छात्र विद्याध्ययन करते हुए रह भी सकते हैं। इस फर्म के उद्योग से एक कन्या पाठशाला भी अभी हाल में खोली गई है जहाँ अच्छी संख्या में बालिकाएँ आती हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सवाई सिंघई कन्हैयालाल गिरधारीलाल, रघुनाथ गंज कटनी	यहाँ कपड़ा तथा बैंकिंग का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स राजाराम सीताराम

आप लोग बनारस के रहनेवाले वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक बाबू राजारामजी ने लगभग २५ वर्ष पूर्व कटनी में मेसर्स नारायणराम बिहारीलाल के नाम से गल्ले की आढ़त और तम्बाकू के व्यवसाय को आरम्भ किया था जो क्रमशः उन्नति करता गया और वर्तमान में इस अवस्था पर पहुँचा है। लगभग १० वर्ष हुए जब बाबू राजारामजी ने अपने तथा अपने भाई के नाम से यह फर्म उपरोक्त नाम से आरम्भ कर दी। बाबू राजारामजी का स्वर्गवास लगभग ४ वर्ष हुए हो गया है।

वर्तमान में इस के मालिक स्वयं राजारामजी के भाई बाबू रायोसाहु तथा राजारामजी के भतीजे पन्नालालजी हैं।

इस फर्म का काम-काज आप दोनों ही सज्जन देखते हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स राजाराम सीताराम हनुमानगंज कटनी	गल्ला तथा तम्बाकू का काम प्रधानरूप से होता है और सभी प्रकार की कमीशन एजेन्सी का काम करते हैं।
मेसर्स नारायणराम भैरवप्रसाद रेशमकटरा बनारस	यहाँ महाजनी लेनदेन का काम होता है।

सेठ जयदयालजी सराफ (शिवलाल दुहारमल) कटनी।

सिंघई कन्हैयालालजी (सवाई सिंघई कन्हैयालाल गिरधारीलाल) कटनी।

सेठ [illegible] जी सराफ (हिरालाल पुरारमल) कटनी।

बाबू कमला प्रसादजी सराफ (हिरालाल पुरारमल) कटनी।

मेसर्स राधेलाल हनुमानप्रसाद

आप लोग मिर्जापुर निवासी खण्डेलवाल जाति के महानुभाव हैं। बाबू राधेलालजी ने लगभग ३० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से यहाँ की थी। इस फर्म पर आरम्भ में लाख और कमीशन एजेन्सी का काम आरम्भ किया गया जो अभी तक बरा-बर हो रहा है। यही कारण है कि यह फर्म लाख का प्रधान काम कर रही है और साथ ही दूसरे सभी प्रकार के माल की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू राधेलालजी तथा बाबू हनुमान प्रसादजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है:—

मेसर्स राधेलाल हनुमानप्रसाद हनुमानगंज कटनी — यहाँ लाख का प्रधान व्यापार होता है तथा सभी प्रकार के माल की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स शिवलाल जुहारमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ जयदयालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सरल सज्जन हैं। आपकी फर्म को करीब ५० वर्ष पूर्व आपके पिता-महने स्थापित की थी। जिस समय फर्म स्थापित की गई थी उस समय आपके पितामह की साधारण स्थिति थी। इसकी उन्नति आपके पिताजी जोहारमलजी के समय में हुई। और विशेष तरक्की आप ही के समय में हुई। आपकी व्यापारिक नीति ही की वजह से फर्म ने यहाँ अच्छा नाम पैदा किया। आपने यहाँ स्टेशन पर एक सुन्दर धर्मशाला भी बनवाई है। आपके पुत्र श्री निवासजी कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं। सेठ श्री निवासजी के ४ पुत्र हैं। बड़े बा० कमलाप्रसादजी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कटनी—मेसर्स शिवलाल जुहारमल — यहाँ गल्ला, घी, किराना, चूना, सिमेंट का व्यापार और आढ़त का काम होता है। यह फर्म कटनी क्रेस्टल ब्रेंड सिमेंट की सब एजंट है।

कटनी—श्री सत्यनारायण स्वदेशी भण्डार — यहाँ खादी वगैरह देशी सा...

व्यापारियो के पते

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल गिरधरलाल
,, गोविन्द वेणीमाधव
,, टोडरमल कन्हैयालाल
,, बिन्द्रावन बलभद्रदास
,, सीताराम जयदयाल
,, हलकेलाल कल्लूलाल

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स मुंशीराम किशनप्रसाद
,, रामप्रसाद शिवप्रसाद
,, राजाराम सीताराम
,, रामशरण नत्थूलाल
,, रामदास महादेव
,, हरकिशुन रामकिशुन

किराने के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद श्रीकृष्ण
,, बलदेव प्रसाद कुंजविहारी
,, महमद उसमान कच्छी
,, रामचन्द्र भैय्यालाल
,, वृन्दावन नारायणदास

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स अमृतलाल शांतिलाल
,, मुन्नीलाल सरयूप्रसाद

लाख के व्यापारी—

मेसर्स मन्नालाल वल्लभदास

घी के व्यापारी—

मेसर्स प्रेमसुख रामेश्वर
,, शिवलाल जुहारमल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स मुल्ला अहमद गुलाम हुसेन
,, छप्पेलाल रामकिशन

बिलासपुर

यह स्थान बी० एन० आर की हवड़ा नागपुर वाली मेन लाईन का जंकशन है। यहाँ से एक ब्रांच लाइन कटनी तक गई है। इस शहर की बसावट अच्छी है। इसके पास बहुत जंगल है। जंगली पैदावार जैसे लकड़ी, मोम, शहद, पीली मिट्टी वगैरह इस जंगल में काफी होती है।

यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। जो यहाँ से बाहर जाता है। गल्ले में भी चाँवल का भाग ज्यादा है। यहाँ का चाँवल सस्ता एवं अच्छा होता है।

यहाँ की और आस-पास की जनसंख्या में विशेष नम्बर सतनामी और गौड़ लोगों का है। येही लोग जंगलों की पैदावार लाते हैं तथा मजदूरी करते हैं। इनके सामाजिक नियम बड़े भिन्न हैं। इनमें नैतिक चरित्र की बड़ी कमी रहती है। यहाँ का पानी स्त्रियों के लिये विशेष मुफीद माना जाता है।

आस-पास जंगली स्थान आ जाने से पास में कोई बड़ा शहर नहीं है। अतएव आस-पास के रहने वाले अपनी आवश्यकता की पूर्ति यहीं से पूर्ण करते हैं। अतएव यहाँ कपड़ा, किराना वगैरह काफी मिकदार में बाहर से आता है। सूत भी यहाँ काफी आता है। यहाँ के व्यापारियों के पास बहुत से मिलों के कपड़े एवं सूत की एजंसियाँ हैं। जिनका विशेष परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बखसीराम गुरुमुखराय

आप लोग लक्ष्मणगढ़ निवासी अग्रवाल समाज के जालोदिया सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग सम्वत् १९५५ में सेठ गुरुमुखरायजी ने की थी और आपने कपड़े का काम आरम्भ किया जो अभीतक आपकी फर्म बराबर करती जा रही है। आप व्यापारकुशल एवं अनुभवी व्यक्ति थे अतः आपने अपनी फर्म को अल्पकाल में ही अच्छी अवस्था पर पहुँचा दिया। आपकी फर्म वर्तमान में बिलासपुर की अग्रगण्य फर्मों में मानी जाती है।

इस फर्म पर प्रधानरूप से कपड़े का काम तथा राय सा० रेखचन्दजी मोहता हिंगनघाट

मेसर्स वच्छराज अमोलकचन्द बजाज

आप लोग लक्ष्मणगढ़ निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के बजाज सज्जन हैं। इस फर्म की
स्थापना २० वर्ष पूर्व सेठ रामेश्वरजी बजाज ने बिलासपुर में की थी। आपने आरंभ में कपड़े
और सूत का व्यापार आरम्भ किया और साथ ही गल्ले की आढ़त का काम भी आरम्भ
किया था। इसके पूर्व इस फर्म के मालिक सेठ रामेश्वरजी कपड़े का अच्छा व्यापार करते थे
जब आपने अपनी उपरोक्त नाम से फर्म खोली तो आपको शीघ्र ही सफलता मिली और
आपने फर्म को अल्पकाल में ही अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। फलतः वर्तमान में यह
फर्म कपड़े की थोक बिक्री, सूत की गाँठों की बिक्री करती है तथा पेटलाद की नारायण भाई
देशोलाल मिल की रंगीन सूत की एजेन्सी इसके पास है इसके सिवा मेसर्स साँवरराम राम-
प्रसाद मिल अकोला की सूत की एजेन्सी तथा गल्ले की आढ़त का काम है जिसमें माल बाहर
भेजा जाता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरजी बजाज तथा आपके भतीजे बाबू बच्छराजजी
तथा बाबू अमोलकचन्दजी बजाज (स्व० शिव भगवान बजाज के पुत्र) हैं।

सेठ रामेश्वरजी बजाज स्थानीय सभी धार्मिक कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं और इसी
फर्म से अच्छी सहायता देते रहते हैं।

इस फर्म के मालिक के भाई स्व० शिवभगवानजी लगभग ४० वर्ष पूर्व स्वदेश से आए थे
आपने आकर यहाँ व्यापार का सिलसिला जमाया। और काम आरम्भ किया इस प्रकार
व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश कर लगभग २० वर्ष पूर्व बाबू रामेश्वरजी ने आरम्भ किया।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स बच्छराज अमोलकचन्द
बिलासपुर C. P. } यहां कपड़ा, सूत की थोक बिक्री और गल्ले की आढ़त का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ विशेषरदासजी डागा तथा आपके पुत्र सेठ शिवदासजी डागा एम्० एल० सी० तथा सेठ सूरजरतनजी डागा हैं।
सेठ शिवदासजी डागा के एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू ग्वालदासजी है।
इस फर्म का प्रधान काम सेठ शिवदासजी करते हैं और आपके छोटे भ्राता सेठ सूरजरतनजी मालगुजारी का काम देखते हैं।
इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स कस्तूरचन्द कपूरचन्द सदरबाजार रायपुर	यहाँ आपका हेड ऑफिस है तथा यहाँ लैण्डलॉर्ड, बैंकर्स और गल्ले का काम होता है।
मेसर्स सेठ शिवदासजी डागा सदरबाजार रायपुर C. P.	यहाँ आपका हरड़ा विभाग है। तथा रायपुर डि० के जंगलों में हरों के सेन्टर में सीजन में एजेन्सियाँ रहती हैं।

मेसर्स चांदमल वीरचंद

इस फर्म का हेड आफिस आगरा (यू० पी०) है। इसके वर्तमान मालिक सेठ वीरचंदजी हैं। यह फर्म यहाँ बड़ी दुकान के नाम से मशहूर है। इस फर्म की बहुतसी शाखाएँ हैं। जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के इसी भाग में आगरा विभाग में छापा गया है। यहाँ इसका पता सदर बाजार है। इस पर यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी और महाजनी देन-लेन का काम होता है। इस फर्म के अंदर से बलौदा बाजार डि० के १० गाँव जमींदारी में हैं। अतएव उनका भी काम इसी फर्म पर होता है।

मेसर्स रामचन्द्र रामरतनदास रा० ब०

इस फर्म के वर्तमान मालिक सर बिसेसरदासजी डागा हैं। यह फर्म सी० पी० में बहुत मशहूर है। इसकी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसके अतिरिक्त कई मिल, जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ और कोयले की खानें आदि हैं। इस फर्म पर यहाँ बैंकिंग और हुंडी चिट्ठी का व्यापार होता है। इसका पता सदर बाजार है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग के मेसर्स बंसीलाल अबीरचन्द के नाम से राजपूताना विभाग में बीकानेर में दिया गया है।

एक ऑइल मिल सरस्वती ऑइल मिल के नाम से स्थापित किया। इस प्रकार सेठ दुलीचंद-जी दुगड़ ने अपनी व्यापार-चतुरता और औद्योगिक कार्य-तत्परता से अपनी फर्म को उच्च स्थानापन्न फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आप उन महानुभावों में हैं जो सामान्य अवस्था से अपने स्वावलम्बी पुरुषार्थ से व्यापार को समुन्नत अवस्था पर प्रतिष्ठित करते हैं। आप धार्मिक मनोवृत्ति के महानुभाव हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिकों में सेठ दुलीचंदजी दुगड़ तथा आपके पुत्र मांगीलालजी दुगड़ हैं। फर्म का संचालन सेठ दुलीचन्दजी स्वयं ही करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स दुलीचन्द मांगीलाल सदर बाजार रायपुर	यहाँ हेड ऑफिस है तथा किराने का प्रधान व्यापार होता है।
मेसर्स दुलीचन्द मांगीलाल पुढ़ियारी रायपुर	किराने का काम होता है।
दि सरस्वती आइल मिल रायपुर स्टेशन के पास	यहाँ तिल्ली, अलसी आदि सभी प्रकार के तेल का काम तथा खल्ली का व्यापार होता है। और धान कूट कर चावल तयार करने का काम भी मिल में होता है।

मेसर्स धूलचन्द भट्टड़

आप लोग जोधपुर के समीप भवाल के रहनेवाले माहेश्वरी समाज के भट्टड़ सज्जन हैं। उपरोक्त नाम से लगभग ७।८ वर्ष के पूर्व इस फर्म की सेठ हनूतराम भट्टड़जी ने रायपुर में स्थापना की थी। इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है।

सेठ हनूतरामजी भट्टड़ लगभग ४६ वर्ष पूर्व सी० पी० आए थे और आपने आकर कुछ समय तक राजनांद गाँव में व्यापार किया और फिर वहाँ से रायपुर चले आये और नेवरा (रायपुर) से तीन स्टेशन पर अपना हेड ऑफिस बनाया। जहाँ अब भी मेसर्स हनूतराम धूलचन्द के नाम से व्यापार हो रहा है।

मेसर्स हनूतराम धूलचन्द के नाम से सेठ हनूतरामजी भट्टड़ ने आरम्भ से ही काम किया था। और इसी नाम से आपका प्रधान कार्य्य आज भी हो रहा है। आपने आरम्भ से ही गल्ले का काम आरम्भ किया और आज भी आप प्रधान रूप से यही कर रहे हैं पर उसके

अतिरिक्त भी आपने महाजनी लेन-देन, मालगुजारी, कपड़ा, किराना, सोना, चाँदी का काम भी अपने हेड क्वार्टर नेवरा में कर रक्खा है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनूतरामजी भट्टड़ तथा बाबू गोवर्धनदासजी भट्टड़ हैं। इस फर्म का संचालन सेठ हनूतरामजी करते हैं और आपकी देख-रेख में आपके दोनों ही पुत्र व्यापार कार्य्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स धूलचन्द भट्टड़ गंजपारा रायपुर (रामसागर पारा)	यहाँ गल्ला तथा कमीशन एजेण्ट का काम होता है।
मेसर्स हनूतराम धूलचन्द नेवरा (रायपुर) सी० पी०	यहाँ हेड ऑफिस है तथा महाजनी लेनदेन, मालगुजारी, कपड़ा, गल्ला, किराना, सूत, सोना, चाँदी आदि सभी प्रकार का व्यापार होता है।
मेसर्स हनूतराम धूलचन्द मोदापारा (रायपुर)	गल्ला तथा कमीशन एजेण्ट का काम होता है।
मेसर्स हनूतराम मगनीराम गंज दुरग	यहाँ गल्ला तथा कपड़ा कमीशन एजेन्सी का काम होता है।
मेसर्स हनूतराम भट्टड़ बेनेवरा (दुरग) बेनेवरा-दुरग	मालगुजारी, गल्ला, लेनदेन आदि का काम होता है।

मेसर्स नैनसुख कनीराम

इस फर्म का हेड आफिस कामठी है। यहाँ यह फर्म गल्ले के व्यापारियों में प्रतिष्ठित मानी जाती है। निम्न २ स्थानों पर इस फर्म की और भी शाखाएँ हैं। प्राय: सभी पर गल्ले एवं आढ़त का व्यापार होता है। यहाँ भी यही गल्ले एवं आढ़त का काम होता है। यहाँ इसका पता गंज बाजार है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में सी० पी० में ही कामठी में छापा गया है।

बर्तनों के व्यापारी

मेसर्स भवानीदास अर्जुनदास

आप लोग बीकानेर निवासी ओसवाल हाला समाज के श्वेताम्बर जैन सज्जन हैं। इस की स्थापना लगभग १०० पूर्व सेठ भवानीदासजी ने रायपुर में की थी। आप ही देश से पुर आये थे और फर्म की स्थापना आपने ही आकर की थी। आपके यहाँ प्रथम ही से म जनी का काम होता आया है। जैसे २ फर्म ने उन्नति की वैसे २ व्यापार भी उन्नति करते ग और कपड़ा तथा बर्तन का काम होने लगा। इस प्रकार फर्म ने अच्छी उन्नति की और यहाँ की स्थानीय फर्मों की प्रतिष्ठित श्रेणी पर पहुँच गई। भवानीदासजी के बाद आपके पुत्र सेठ अर्जुन दासजी ने काम सम्हाला और बाद सम्वत् १९४० में आपके पुत्र सेठ गम्भीरमलजी ने काम का संचालन किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७५ में हुआ। तब से फर्म का संचालन आप के पुत्र सेठ जसकरणजी हाला ने सम्हाला और आज कल आप ही फर्म का संचालन करते हैं।

वर्तमान समय में फर्म पर प्रधानतया मनीलेडिंग तथा बर्तन का थोक व्यापार होता है। आपकी फर्म यहाँ भी माल तैयार कराती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जसकरणजी तथा आपके पुत्र बाबू सम्पतलालजी हैं।

अर्जुनदासजी बड़े प्रतापी थे। आपके ही समय में फर्म ने प्रधान उन्नति की और गम्भीर-मलजी धार्मिक मनोवृत्ति के थे और धार्मिक कार्यों में भाग लेते थे। आपके पुत्र सेठ जसकरणजी सुधरे हुए विचारों के नवयुवक हैं और एफ० ए० तक शिक्षित हैं तथा सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते हैं। स्थानीय मारवाड़ी छात्र सहायक समिति के मन्त्री भी हैं। कॉंग्रेस कमेटी के सदस्य भी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स भवानीदास अर्जुनदास सदर-बाजार रायपुर	यहाँ हेड ऑफिस है तथा मनीलेडिंग और बर्तन का काम होता है।
मेसर्स अर्जुनदास गम्भीरमल राजिम (रायपुर)	यहाँ बर्तन तैयार कराने का काम होता है।

मेसर्स भवानीदास जानमल

इस फर्म की स्थापना सेठ भवानीदासजी ने लगभग १०० वर्ष पूर्व रायपुर में आकर की थी। आपके यहाँ प्रथम गल्ला किराना का काम हुआ और क्रमशः जैसी उन्नति होती गई वैसे

कपड़ा, बर्तन तथा महाजनी लेन-देन का काम होने लगा। आपके दो पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः जावतमलजी और अर्जुनदासजी थे। भवानीदासजी के स्वर्गवास के बाद फर्म का काम दोनों भाई सम्हालते थे। कुछ समय बाद दोनों भाई अलग हो गये अतः सेठ जावतमलजी ने अपना व्यापार अपने उपरोक्त नाम से संचालित करने लगे। आपके यहाँ मालगुजारी का काम भी होने लगा। आपके बाद आपके पुत्र सेठ धोगमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप उद्यमी महानुभाव थे। अतः आपके ही समय में फर्म ने प्रधान उन्नति की और मालगुजारी का काम और भी बढ़ाया और अच्छी उन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास लगभग सम्वत् १९२८ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लूनकरणजी ने फर्म का संचालन किया और आपके समय में कपड़ा और बर्तन का काम भी जोरों से होने लगा। आपका स्वर्गवास लगभग सम्वत् १९५५ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ छोटमलजी ने फर्म का संचालन किया और आपके बाद आपके पुत्र सेठ जोरावरमलजी ने फर्म का काम सम्हाला जो अब भी बड़ी तत्परता से कर रहे हैं। आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य हैं तथा आप मालगुजार हैं।

वर्तमान में यह फर्म महाजनी, मालगुजारी तथा बर्तन का थोक व्यापार करती है। सोना, चाँदी, गल्ला तथा किराने का काम भी होता है। वर्तमान मालिक सेठ जोरावरमलजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स भवानीदास जावतमल सदर बाजार रायपुर C. P.	यहाँ हेड आफिस है और महाजनी, मालगुजारी तथा बर्तन का थोक काम होता है।
मेसर्स छोटमल जोरावरमल चांपा (बिलासपुर)	गल्ला, सोना, चाँदी, किराना का काम होता है।
मेसर्स छोटमल जोरावरमल राजिम (रायपुर)	यहाँ बर्तन तैयार कराने का काम होकर बिक्री भी होता है।
कनकी (रायपुर) धोगमल लूनकरन	यहाँ मालगुजारी और महाजनी का काम होता है।

मांढा डीह (रायपुर)—यह फर्म कनकी के अण्डर में है।

व्यापारियों के पते

बैंकर्स—मेसर्स इन्दुचन्द्र धोगमल	सदर	
मेसर्स कस्तूरचन्द कपूरचंद	,,	
मेसर्स—चाँदमल वीरचन्द	सदर	
,, बालचन्द रामलाल	,,	
,, मोतीलाल कोठारी	,,	

मेसर्स—मुल्तानचन्द हीरचन्द सदर
" रामचन्द्र रामरतनदास रा० ब०
" शालिगराम गोपीकिशन "

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अगरचन्द उत्तमचन्द सदर
" पन्नालाल चन्दनमल "
" पन्नालाल रामचंद्र "
" मुल्तानचंद हीरचंद "
" शालिगराम नत्थाणी "

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स घासीराम मूलचंद
" ठाकुरदास आसाराम गञ्ज
" तेजपाल सांकरचंद "
" देवकरन हरदेवदास सदर
" मूलचंद भट्टड़ गंज
" नैनसुख कनीराम "
" मन्नूरामप्रसाद "
" लीलाधर दामा भाई "
" लक्ष्मणदास शंकरलाल "
" लक्ष्मीचंद सूरजमल "
" सोहनलाल मुरलीलाल सदर

बर्तन वाले—

मेसर्स भवानीदास आसकरन गंज

मेसर्स—भवानीदास अर्जुनदास
" लखवासा रामचन्द्र

हर्रे के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास भदर्स
" परसोत्तमदास मथुरादास
" रतनजी शापुरजी टाटा कम्पनी
" शिवदास डागा सदर

किराने के व्यापारी—

मेसर्स जुहारमल सूरजमल
" दुलिचन्द मोतीलाल
" यादराम धरणीधर
" राजाराम श्रीराम
" शालिगराम नत्थाणी
" हाजी सुलेमान उमर
" हासम एण्ड कासम

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स इन्द्रचन्द्र दौलतमल
" चन्दनमल तेजमल
" बालचन्द रामलाल
" मेघराज कानमल
" रमणलाल शंकरलाल

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स अहमदजी भाई सदर
" जे० डूक्सा एण्ड क० "
" एम० गिरधारीलाल "

कामठी—मेसर्स धनजी मुरलीधर } यहाँ इसका हेड आफिस है। यहाँ मेंगनेस एवं लोहे की खदानों का काम होता है। आप कच्चा लोहा निकाल कर विलायत भेजते हैं। तुमसर के पास आपकी खदाने हैं।

मेसर्स प्रताप रघुनाथ

करीब ८० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना प्रताप सेठ और रघुनाथजी सेठ के द्वारा कामठी में हुई। आप लोगों का निवास-स्थान साँभर है। आप अग्रवाल वैश्यजाति के सज्जन हैं। आप दोनों भाइयों के पश्चात् आपके पुत्र राधामोहनजी एवं सूरजमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आप दोनों का भी स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ राधामोहनजी के पुत्र रामविलासजी एवं सेठ सूरजमलजी के पुत्र हरिश्चन्द्रजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स प्रताप रघुनाथ } यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त इसी नाम से कामठी, गोंदिया एवं नेवरा बाजार में भी यही काम होता है।

महारामदास हजारीमल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ किशनदासजी और सेठ चतुरभुज जी हैं। इसका हेड आफिस कामठी में है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ में कामठी के साथ दिया गया है।

मेसर्स मुकनचंद धोंकलचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ धोंकलचंदजी एवं सेठ लखमीचंदजी हैं। आप पांचोड़ी (जोधपुर) निवासी श्रीश्रीमाल सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ मुकनचंदजी द्वारा स्थापित हुई थी।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स मुकनचंद धोंकलचंद } यहाँ गल्ले का व्यापार एवं कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

महोवरा—मेसर्स मुकनचंद धोंकलचंद } यहाँ भी गल्ला एवं बैंकिंग काम का होता है।

मेसर्स सुखलाल सम्पतलाल

इस फर्म के मालिक लोहावट (मारवाड़) निवासी ओसवाल समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ८ साल से इस नाम से व्यापार कर रही है। इसके पहले इस पर साहबराम सूरजमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना सेठ साहबरामजी द्वारा हुई थी। आपके तीन भाई और थे सेठ सूरजमलजी, सेठ केवलचंदजी और सेठ कस्तुरचंदजी। उपरोक्त फर्म सेठ केवलचंदजी एवं कस्तुरचंदजी के वंशजों की है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सुखलालजी एवं सेठ सम्पतलालजी हैं। आप दोनों ही सज्जन क्रमशः केवलचंदजी एवं कस्तूरचंदजी के यहाँ दत्तक आये हैं। आप लोगों का दान-धर्म-सम्बन्धी कामों में भी अच्छा योग रहता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनाँदगाँव—मेसर्स सुखलाल सम्पतलाल } यहाँ सोना चाँदी एवं कपड़े का व्यापार होता है। कमीशन का काम भी यह फर्म करती है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स जीवनलाल चाँदमल
" धनजी मुरलीधर
" नैनसुख कनीराम
" प्रताप रघुनाथ
" महारामदास हजारीलाल
" मुकनचंद पीकलचंद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स आईदान जमनालाल
" जीवनमल जीवनचंद

मेसर्स दीपचंद मगनमल
" सरदारमल हीरालाल
" सुखलाल सम्पतलाल
" शिवराज नेमीचंद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स जीवमल जीवनचंद
" दौलतराम भोमराज
" सुखलाल सम्पतलाल

किराने के व्यापारी—

मेसर्स कान्हूराम गनेशराम

स्व॰ सेठ गोपाल साहजी (गोपालशाह पूरनशाह) सिवनी

रायसाहब बाबू रघुनाथसिंहजी, सिवनी

सिवनी

बी० एन० आर० की गोंदिया जबलपूर लाईन पर नैनपुर जंक्शन से आगे अपने ही नाम के स्टेशन पर यह शहर बसा हुआ है। इसकी बसावट बड़ी सुन्दर और रमणीक है। स्टेशन से कुछ ही दूर पर दादूसाहब की एक सुन्दर धर्मशाला मुसाफिरों के ठहरने के लिए बनी हुई है। इस धर्मशाला में सफाई तथा मुसाफिरों के आराम के लिए बहुत उत्तम प्रबन्ध है। सिवनी के अन्तर्गत दर्शनीय स्थानों में यहाँ के जैन मन्दिर बहुत उल्लेखनीय हैं। इनकी पच्चीकारी, सुन्दरता और विशालता देखने ही योग्य है। यहाँ की सार्वजनिक संस्थाओं में सेठ पूरनशाहजी का गोपाल जैन औषधालय, शिखरचन्द जैन पाठशाला और बोर्डिंग हाऊस, गुभीबाई जैन सरस्वती आश्रम, गुभीबाई जैन महिलाश्रम तथा नेमिचन्द धर्मशाला उल्लेखनीय हैं।

सिवनी की खास पैदावार गेहूँ, चाँवल, अलसी, चना, महुवा, गुल्ली, उरद, लाख, सन और हरड़ हैं। ये सब वस्तुएँ यहाँ से बाहर जाती हैं। तथा बाहर से आनेवाली वस्तुओं में कपड़ा, किराना और जनरल मर्चेण्टाइज प्रधान है। यहाँ पर तौल सब अंग्रेजी है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गोपालशाह पूरनशाह

इस प्रतिष्ठित फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमान् सेठ पूरनशाहजी हैं। आप उन लोगों में से हैं जिन्होंने अपनी उदारता, दानवीरता और धार्मिकता से इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम अङ्कित कर लिया है। आप दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं।

सेठ पूरनशाहजी श्रीमान् स्वर्गीय सेठ गोपालशाहजी के यहाँ दत्तक आये हैं। सेठ गोपाल-शाहजी बड़े शास्त्रानुरागी एवं धर्म-प्रेमी पुरुष थे। अतएव आपके संस्कारों का सेठ पूरनशाहजी पर भी अच्छा असर पड़ा। फल यह हुआ कि जहाँ आपने ज्ञान और अनुभव से फर्म के व्यापार और कारबार को बढ़ाया, वहाँ अपनी उदारता और धर्मप्रेम से कई ऐसी स्मृतियाँ भी स्थापित कर दीं जो दीर्घ काल तक आपके नाम को भारत में गौरव के साथ बनाए रक्खेंगी।

सेठ पूरनशाहजी की दोनों धर्मपत्नियों से आपके करीब ११ सन्तानें हुई, मगर दुर्दैव से उनमें से एक भी जीवित नहीं है। आपके एक पुत्र शिखरचन्दजी तो १५ वर्ष की परिपक्व अवस्था में स्वर्गीय हुए। जिनकी बालविधवा धर्मपत्नी अभी विद्यमान है। दूसरे पुत्र नेमिचन्दजी १२ वर्ष की अवस्था पाकर परलोकगामी हुए। अपने दोनों प्रियपुत्रों की स्मृति में सेठजी ने बहुत सा द्रव्य खर्च करके कई सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण करवाया। जिनमें श्रीयुत नेमिचन्दजी के स्मारक में सिवनी में श्रीनेमिचन्द धर्मशाला नामक एक विशाल धर्मशाला तथा श्रीसम्मेद शिखर में करीब एक लाख रुपयों के व्यय से एक विशाल मन्दिर का निर्माण करवाया। जिसके प्रतिष्ठा महोत्सव में करीब ४० हजार मनुष्य एकत्रित हुए थे। इसी प्रकार श्रीयुत शिखरचन्दजी के स्मारक में सिवनी में श्री शिखरचन्द जैन पाठशाला और बोर्डिङ्ग, तथा श्री शिखरचन्द म्यूनिसिपल प्रायमरी स्कूल का निर्माण करवाया। इसी प्रकार अपनी धर्मपत्नी श्री गुन्नीबाई के एक असाध्य बीमारी से निरोग होने के उपलक्ष्य में आपने एक लाख रुपयों का दान निकाला जिससे सिवनी में श्री गुन्नीबाई जैन सरस्वती भवन तथा एक महिलाश्रम प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त आपने एक जैन मन्दिर नासिक में, एक सम्मेद शिखर में तथा एक मन्दिर सिवनी में बनवाया जिनमें से सीवनी का मन्दिर अत्यन्त अच्छा और विशाल है। इसमें किया हुआ संगमरमर, कांच और पच्चीकारी का कार्य्य अत्यन्त दर्शनीय है। यह मन्दिर सीवनी की एक प्रसिद्ध दर्शनीय वस्तु है। इसके अतिरिक्त सेठ साहब ने और भी बहुत से दान किये हैं। जिन सब का उल्लेख यहाँ असम्भव है।

सेठ पूरनशाहजी करीब दस वर्षों तक यहाँ की डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के मेम्बर तथा बीस वर्षों तक म्यूनिसिपैलिटी के वाईस प्रेसिडेण्ट रहे हैं। सरकार ने आपको दरबारी, कुरसी नशीनी फर्स्टक्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी तथा रायबहादुर की अत्यन्त प्रतिष्ठासम्पन्न उपाधियाँ प्रदान की हैं। इसी प्रकार जैन समाज की ओर से आपको श्रीमान्, श्रीमन्त, सेठ, दानवीर आदि कई उपाधियाँ मिली हैं।

आपके इस समय कोई सन्तान न होने की वजह से आपने अपने स्वर्गीय पुत्र शिखरचन्दजी के नाम पर श्रीयुत कुँवर विरधीचन्दजी को दत्तक लिया है। कुँवर विरधीचन्दजी भी बड़े विनम्र, सुशील और बुद्धिमान युवक हैं—

फर्म का परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स मोहनशाह पूरनशाह—बैंकिङ्ग और जमींदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

रायसाहब दाऊ रघुनाथ सिंह

इस परिवार का इतिहास बहुत पुराना है। आपके पूर्वज रायबरेली के रहने वाले थे। देवगढ़ के राजा की ओर से आपको "व्योहारी" का पद मिला था। सन् १७२२ में मण्डला के राजा की ओर से व्योहार फूलसिंहजी कायस्थ को यचई का इलाका मिला। बाद में भैरोगढ़ का ताल्लुका भी आपको प्राप्त हुआ। आपके पुत्र होमनशाह सन् १७२२ की लड़ाई में मारे गये, तब राजा निजामशाह ने रंगरायजी को भय उनकी जागीर और व्योहारी का पद सौंप दिया। सन् १७७९ में रंगरायजी मंडला के राजा का पक्ष लेकर सागर के मराठों से लड़े। इसमें वे काम आये। इस समय भैरोगढ़ का इलाका तबाह हो गया। तब से आपके चार पुत्र लखनादौन में रहने लगे। पश्चात् इनमें से भगवन्तसिंहजी और मोतीरामजी सिवनी में रहने लगे। जिस समय नागपुर के भौंसलों ने रांग भारती गुसांई को सिवनी का सूबेदार बनाया उस समय भगवंतसिंहजी नायब का काम करते थे। तथा आपके भाई देशमुखी का काम देखते थे। अंग्रेजी सल्तनत तक आप इसी पद पर काम करते रहे। आपके पश्चात् आपके पुत्र भैरोसिंहजी भी इसी पद पर रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवास के समय में दाऊ गुलाबसिंहजी छोटी वय के थे। अतएव स्टेट का प्रबंध कोर्ट आफ वार्ड्स के अंडर में था। आपके बालिग होने पर आपने अपनी योग्यता का परिचय दिया। आप बड़े प्रतापी और उदार थे। भारत सरकार ने आपको रायबहादुर की पदवी प्रदान की थी। आपने यहाँ एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई जो आज भी उसी रूप में खड़ी है और भी कई जगह आपने दान दिया। आपका स्वर्गवास सन् १९११ में हुआ। आपके ४ पुत्र हुए। जिनमें से तीन सज्जनों का स्वर्गवास हो चुका है। जिनके नाम क्रमशः विश्वनाथसिंहजी, विशंभरनाथसिंहजी और जयनाथसिंहजी था।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक चौथे पुत्र दाऊ रघुनाथसिंहजी एवं विशंभरनाथसिंहजी के पुत्र द्वारकानाथसिंह एवं जयनाथसिंहजी के पुत्र नरेन्द्रनाथसिंहजी और रूपनाथसिंहजी हैं। इस परिवार में सभी सज्जन पढ़े लिखे हैं। कई सज्जन रायबहादुर और रायसाहब की पदवी से सम्मानित हैं। यह परिवार यहाँ का सम्मान्य परिवार है। इस समय इस परिवार के करीब ९७ मौजे की जमींदारी है।

इसका परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—रायसाहब दाऊ रघुनाथसिंह — यहाँ बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स शिवनारायणदास प्रभुदयाल

इस फर्म के मालिक नारनोल (पटियाला) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष करीब १०० वर्ष पहले मडूकेंट, कामठी और कटंगी होते हुए यहाँ आये। शुरू २ में इसकी स्थापना सेठ ठाकुरदासजी ने की थी। आपके २ पुत्र हुए रायबहादुर लाला ओंकारदासजी एवं ला० शिवनारायणदासजी। ला० ओंकारदासजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने तथा सेठ शिवनारायणदासजी ने फर्म की बहुत उन्नति की। व्यापार के साथ २ आपने जमींदारी भी खरीद की। सेठ ओंकारदासजी आनरेरी मेजिस्ट्रेट भी रह चुके थे। आप दोनों ही का स्वर्गवास हो गया है। स्वर्गवासी होने के पूर्व ही आप दोनों भाई अलग २ हो गये थे। लाला ओंकारदासजी के ३ पुत्र हुए। ला० महानन्ददासजी, (दत्तक लिये हुए), नर्मदाप्रसादजी और प्रभुदयालजी। इनमें से प्रभुदयालजी सेठ शिवनारायणदासजी के यहाँ दत्तक रहे। वर्तमान में यह फर्म सेठ शिवनारायणदासजी के पुत्र प्रभुदयालजी की है। आप योग्य सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स शिवनारायणदास प्रभुदयाल	यहाँ बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं जमींदारी का काम होता है।

चाँदी-सोना के व्यापारी

मेसर्स तिलोकचन्द गनेशदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माणिकचन्दजी और सेठ दुलिचन्दजी हैं। आप लोग ओसवाल समाज के गजरूपदेसर (बीकानेर) के निवासी हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना आपके पितामह सेठ तिलोकचन्दजी के द्वारा हुई। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ गनेशदासजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। वर्तमान में यह फर्म यहाँ अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स तिलोकचन्द गनेशदास	यहाँ बैंकिंग, सोना चाँदी एवं मालगुजारी का काम होता है।
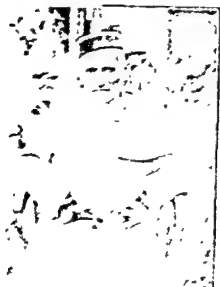
मेसर्स पूनमचन्द किशनलाल

इस फर्म के मालिक देशनोक (बीकानेर) निवासी ओसवाल जाति के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब ७० वर्ष से अपना व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ भैरोदानजी द्वारा हुई। आपके पश्चात् इस फर्म के काम को क्रमशः गिरधारीलालजी, अगरचन्दजी, पूनमचन्दजी और किशनलालजी ने सम्हाला। सेठ पूनमचन्दजी का स्वर्गवास सं० १९९५ में हुआ। आपके २ पुत्र हैं बा० रतनचन्दजी और रामचन्द्रजी। इनमें से रतनचन्द्रजी गिरधारीलालजी के पुत्र हरक-चन्दजी के यहाँ दत्तक गये हैं। सेठ किशनलालजी के भी २ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः कपूरचन्दजी और सूरजमलजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स पूनमचन्द किशनलाल } यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं चाँदी-सोने का व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कपूरचंद टेकचंद

इस फर्म की स्थापना करीब ५० वर्ष पूर्व टेकचंदजी ने की। आपका निवासस्थान यहीं का है। आपके हाथों ही से इस फर्म की उन्नति हुई। आपके २ भाई और थे जिनका नाम सेठ हुकुमचंदजी एवं सेठ पन्नालालजी था। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ टेकचंदजी एवं आपके पुत्र चुन्नीलालजी, विरधी-चंदजी, मोतीलालजी और आपके भाई स्व० हुकुमचंदजी के पुत्र कोमलचंदजी एवम सुमेरचंदजी हैं। आप लोग शिक्षित और योग्य हैं। इस फर्म की ओर से दानधर्म भी काफी किया गया है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सिवनी—मेसर्स कपूरचंद टेकचंद } यहाँ बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स बहादुरमल लखमीचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लखमीचंदजी हैं। आपकी आयु इस समय ७० वर्ष की है। इस फर्म की स्थापना आपके पिता बहादुरमलजी ने १०० वर्ष पूर्व की थी। आपका मूल

निवासस्थान करनीमाता का मठ (बीकानेर) है। सेठ लखमीचंदजी ने यहाँ मन्दिर वगैरह बनवाने में पर्याप्त समय एवं शक्ति खर्च की है। आप करीब ४० वर्ष तक म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर रहे। तथा समय २ पर आपको भारत सरकार ने सार्टिफिकेट भी दिये हैं। आपके छोटे भाई बिरदीचंदजी का छोटी उम्र में ही स्वर्गवास होगया।

सेठ लखमीचंदजी के २ पुत्र हैं जिनके नाम सेठ केसरीचंदजी एवं ताराचंदजी हैं। सेठ केसरीचंदजी के २ पुत्र श्रीयुत् डालचंदजी एवं कस्तुरचंदजी और श्रीयुत ताराचंदजी के भी २ पुत्र हैं इन्द्रचंद्रजी एवं दीपचंदजी। श्रीडालचंदजी और कस्तुरचंदजी कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं। दीपचंदजी खदान का काम देखते हैं। यहाँ आपकी घोवरी कालेरी के नाम से २ कोयले की खदाने हैं मगर कोयले की बहुत मन्दी होने से कुछ समय से ये बन्द हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स बहादुरमल लखमीचंद — यहाँ कपड़ा, सोना चाँदी एवं कोयले का व्यापार होता है। यहाँ आपको घोवरी कॉलेरी के नाम से २ कोयले की खानें हैं।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स शिवजीराम परमानंद

इस फर्म के मालिक बलौदा (जयपुर) के निवासी अग्रवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९४० में सेठ परमानंदजी द्वारा हुई और आपही के द्वारा इस फर्म की तरक्की भी हुई। आपके इस समय ४ पुत्र है। जिनके नाम क्रमशः बंशीलालजी, सूरजमलजी, चाँदमलजी और रामनाथजी हैं। प्रथम तीन व्यापार में भाग लेते हैं और एक पढ़ते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिवानी—मेसर्स शिवजीराम परमानंद — यहाँ सन, गल्ला और आढ़त का काम होता है। यह फर्म सन का डायरेक्ट विलायत एक्स पोर्ट करती है।

छिंदवाड़ा—मेसर्स शिवजीराम परमानंद — यहाँ गल्ले का व्यापार तथा कमीशन का काम होता है।

पचारी—शिवजीराम परमानंद	यहाँ भी गल्ले का व्यापार होता है।
बम्बई—शिवजीराम परमानंद कालबा देवी	यहाँ एक्सपोर्टिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स सेदूमल जयनारायण

यह फर्म करीब ४० वर्ष से गल्ले का व्यापार कर रही है। इसके स्थापक सेदूमलजी थे आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र जयनारायणजी तथा मुन्नालालजी ने किया। आप लोगों के समय में इसकी बहुत उन्नति हुई। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र गेंदालालजी, फूलचंदजी एवं केसरीचंदजी तथा सेठ मुन्नालालजी के पुत्र खेमकरनजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स सेदूमल जयनारायण	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का व्यापार होता है।
छिंदवाड़ा—मेसर्स सेदूमल जयनारायण	यहाँ शक्कर का कारखाना है तथा गल्ले का व्यापार होता है।
मंडला—मेसर्स सेदूमल जयनारायण	यहाँ गल्ले और किराने का व्यापार होता है।
चौराई—(छिंदवाड़ा) जयनारायण मुन्नालाल	यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स रतनचंद दीपचंद

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी हैं। आप परवार समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ४०, ५० वर्षों से किराने का व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ रतनचंदजी द्वारा हुई थी। इस समय इस फर्म के मालिक आपके पुत्र सेठ दीपचंदजी, कादूरामजी और फतेचंदजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स रतनचंद दीपचंद	यहाँ किराने का बड़ा व्यवसाय होता है।

छिंदवाड़ा

छिंदवाड़ा बी. एन. आर. की छोटी लाईन का जंकशन स्टेशन है। एक लाइन जबलपुर से नैनपुर सिवनी होती हुई यहाँ आती है। दूसरी लाइन यहाँ से नागपुर को जाती है। एवं तीसरी लाइन परासिया को जाती है। जहाँ वह जी. आइ. पी. की इटारसी—आमलावाली लाइन को मिलाती है। छिंदवाड़ा जिले का प्रधान स्थान है। यह चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। यहाँ की बसावट ऊँची नीची एवं लम्बी है। यहाँ एक सुन्दर तालाब भी है। जो इसकी सुन्दरता को बढ़ाता है। यहीं के एक सेठ ने यहाँ धर्मशाला भी बनवा दी है।

छिंदवाड़ा का प्रधान व्यापार कोयले का है। इस स्थान के पास ही कोयले की कई खानें हैं। यहाँ का कोयला उत्तम श्रेणी का माना जाता है। इसके पश्चात् यहाँ की दूसरी पैदावार हर्रे की है। यह करीब १ लाख मन बाहर जाती है। यह भी जंगलों ही से यहाँ आती है। इसके सिवाय गेहूँ, रुई, चना, मूँग, जुवार, बरबटी, तुवर, राजगिरा, गुल्ली, महुआ, कपास, सन, चारोली (चिरोंजी) अरंडी, तिल्ली, जगनी (रहमतीला) अलसी, घी और मसूर भी यहाँ पैदा होती है तथा मौसिम एवं फसल के अनुसार बाहर जाती है। यहाँ का इम्पोर्ट व्यापार विशेष उल्लेखनीय नहीं है। कारखानों में यहाँ शावालेस कम्पनी की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।

यहाँ का तोल चारोली, घी, हर्रे एवं सन के लिये ४० सेर के मन का होता है। अनाज का वजन १०० भर की पाई, ८ पाई का कुडो, और २० कुडों की खंडी से माना जाता है। आईल सीड्स के लिये ४ मन की खण्डी, अरंडी के लिये ३-½ मन की खंडी एवं गुड़ के लिये २ मन की खण्डी से व्यवहार होता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स कचौरीमल मुलचन्द

इस फर्म के मालिक खण्डेलवाल जैन समाज के मारोठ (मारवाड़) निवासी हैं। यह फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ कचौरीमलजी ने स्थापित की। शुरू २ में इस फर्म पर साधारण

स्व० सेठ सुखलालजी पाटनी (कचौरीमल सुखलाल) छिन्दवाड़ा

रायबहादुर सेठ लालचन्दजी पाटनी (कचौरीमल सुखलाल) छिन्दवाड़ा।

...लालजी S/o सेठ लालचन्दजी पाटनी छिन्दवाड़ा

दुकानदारी का काम होता था। इस फर्म की विशेष तरक्की आपके तथा आपके भाई सेठ सुखलालजी के द्वारा हुई। सेठ सुखलालजी यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर, डिस्ट्रीक्ट बोर्ड मेम्बर, आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं ट्रेझरर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सुखलालजी के पुत्र रायसाहब सेठ लालचन्दजी पाटनी हैं। आपने फर्म की बहुत उन्नति की है। आप भी यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के चेअरमन, आनरेरी मेजिस्ट्रेट, कोआपरेटिव्ह बैंक के मेम्बर आदि हैं। आपका प्रायः सभी संस्थाओं से सम्बन्ध है। आपके एक पुत्र श्री देवेन्द्र कुमारजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स कचौरीमल सुखलाल } यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, महाजनी लेन-देन और जमींदारी का काम होता है। यह फर्म कोयलों की खदानों की बैंकर हैं।

मेसर्स खेमचन्द लखमीचन्द

इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व कुन्देड़ी (टीकमगढ़) निवासी सेठ भूरा साहु के द्वारा हुई थी। इसकी विशेष उन्नति सेठ खेमचन्दजी के द्वारा हुई। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप सवाई सिंघई के नाम से सम्बोधित होते थे। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आपने जैन धर्म के कामों में हजारों रुपया खर्च किया। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ६ माह के पश्चात् ही आपके पुत्र सेठ लखमीचन्दजी का भी स्वर्गवास हो गया। आप भी यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट वगैरह थे। वर्तमान में इस फर्म का संचालन सेठ लखमीचन्दजी की धर्म पत्नी श्रीमती छिटिया बाई करती हैं। आपका भी धार्मिक जीवन ही विशेष है। इस फर्म पर साहुकारी लेन-देन बैंकिंग और मालगुजारी का काम होता है।

मेसर्स सुनकेलाल रतनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सुनकेलाल के दत्तक पुत्र सेठ रतनलालजी हैं। आप लोगों का निवासस्थान यहीं है। यह फर्म इस नाम से करीब ३० वर्षों से काम कर रही है। इसकी उन्नति सुनकेलालजी ही के जमाने में हुई। इस फर्म पर बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स चम्पालाल गुलाबचन्द

इस फर्म के मालिक माहेश्वरी समाज के काबरा सज्जन हैं। यह फर्म करीब ८० वर्ष रेवासा (सीकर-राजपूताना) निवासी सेठ बिरातीरामजी द्वारा स्थापित हुई। इसको उत्तेजन आपके पुत्र सेठ रामदेवजी ने दिया। आपके पश्चात् श्रीयुत चम्पालालजी एवं गुलाबचंद हुए। आप लोगों के समय में भी अच्छी उन्नति हुई। मगर आप लोगों का देहान्त युवावस्था में ही हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक राधाकृष्णजी हैं। आप इस समय नाबालिग हैं अतएव फर्म संचालन बा० कन्हैयालालजी जाकोटिया एवं शिवनारायणजी बापेचा करते हैं। आप दोनों सज्जनों का पब्लिक जीवन सराहनीय है। इस फर्म की ओर से सार्वजनिक कामों में अच्छी सहायता प्रदान की जाती है। आपकी ओर से यहाँ एक मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स चम्पालाल गुलाबचन्द — यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, सोना, चाँदी एवं जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल

इस फर्म की स्थापना करीब १००, १२५ वर्ष पूर्व सेठ गुमानीरामजी पाटनी के द्वारा हुई। आपका निवासस्थान लूनवाँ (जोधपुर) का था। इस फर्म पर पहले मेसर्स गुमानी रामजवाहरमल नाम पड़ता था। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जवाहरमलजी ने इस फर्म के काम का संचालन किया। आपके समय में इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र सेठ हजारीमलजी ने फर्म के काम को संचालित किया। आपके जमाने में तो यह फर्म बहुत उन्नति कर गई। आप यहाँ के प्रतिष्ठित रईस, म्युनिसिपल मेम्बर, दरबारी, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और बैंकर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हजारीलालजी के पुत्र बा० धीमूलालजी तथा हरकचंदजी हैं। आप लोग इस समय नाबालिग हैं। अतएव फर्म का संचालन सेठ हजारीलालजी के छोटे भाई बा० छोगालालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल — यहाँ बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, साहुकारी लेन-देन एवं आसामीवारी और सोना-चाँदी का व्यापार होता है

मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल

यह फर्म इस नाम से सन् १९१० से व्यापार कर रही है। इसके पहले इस फर्म पर मोहकमचन्द नरसिंहदास के नाम से व्यापार होता था। इस फर्म के मालिक जेसलमेर के निवासी माहेश्वरी जाति के चांडक सज्जन हैं। इन पर शुरू से ही महाजनी देन-लेन का व्यापार होता चला आ रहा है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कन्हैयालालजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। आप मोहगाँव (छिंदवाड़ा) में, जहाँ इस फर्म का हेड आफिस है, निवास करते हैं। इस फर्म का संचालन यहाँ के मुनीम श्रीरामकृष्णजी करते हैं। यो तो इस फर्म की स्थापना सेठ मोहकमचंदजी ने की थी। मगर इसकी प्रधान उन्नति का श्रेय इनके पुत्र नरसिंहदासजी को तथा नरसिंहदासजी के पुत्र गिरधारीलालजी को है। आप दोनों सज्जनों के हाथ से इस फर्म ने बहुत तरक्की की। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक इन्हीं गिरधारीलालजी के पुत्र हैं।

इस फर्म की ओर से बाड़मेर (राजपुताना) एवम् गिरिराज में एक २ धर्मशाला बनी हुई है। यहां आपकी ओर से नरसिंह लायब्रेरी चल रही है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल	यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी और महाजनी देन-लेन का काम होता है।
मोहगांव—मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल	यहां जमींदारी एवम् बैंकिंग का काम होता है। आपकी जमींदारी करीब ४२ गांवों में है।
सावनेर (नागपुर) मेसर्स नरसिंहदास गिरधारी लाल	यहां कॉटन और बैंकिंग का काम होता है। यहां आपकी एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स प्रतापमल गनेशीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लूलवां (जोधपुर) का है। आप लोग खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ प्रतापमलजी के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इस फर्म के काम का संचालन आपके पुत्र सेठ गनेशीलालजी ने किया। आपने फर्म की अच्छी उन्नति की। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गुलाबचंदजी बाकलीवाल हैं। आप सेठ गनेशीलालजी के सामने ही दत्तक आ गये थे। आपने फर्म की बहुत ज्यादा उन्नति की। इस समय आप

लोकल बोर्ड के प्रेसिडेण्ट, डिस्ट्रीक्ट कौन्सिल के वाइस प्रेसिडेण्ट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि हैं। आप कोआपरेटिव बैंक के खजांची भी हैं। खद्दर से आपको विशेष प्रेम है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स प्रतापमल गनेशीलाल	यहां बैंकिंग, साहुकारी देन-लेन, जमींदारी, गल्ला एवं चांदी सोने का व्यापार होता है।

मेसर्स रामलाल शिवलाल

इस फर्म के मालिक धनवों (जेसलमेर) निवासी पल्लीवाल ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना सेठ प्रेमराजजी ने जिन्हें दादू साहब भी कहते थे, करीब १०० वर्ष पूर्व की थी। उस समय आपने भोंसलों से गांवों की ठेकेदारी का काम किया था। उसी में आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके भाई सेठ रामलालजी ने किया। आपके समय में भी अच्छी सफलता रही। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आप का भी स्वर्गवास हो गया है।

सेठ शिवलालजी वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। आप सी० पी० कौन्सिल के मेम्बर रह चुके हैं। साथ ही लोकल बोर्ड एवम् सेनिटेशन के भी आप मेम्बर रहे। आपका निवास मोहगाँव में होता है। वहीं आप जमींदारी का काम देखते हैं। इस फर्म पर उम्मेदमलजी पाटनी मुनीमात का काम करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

छिंदवाड़ा—मेसर्स रामलाल शिवलाल	यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता है।
मोहगाँव—मेसर्स रामलाल शिवलाल	यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है। आपकी जमींदारी ४२ गांवों में है।

इसके अतिरिक्त उमरेठ, चिमनखापा आदि स्थानों पर भी आपका व्यापार होता है।

मेसर्स लाला साहु कन्हैया साहु

इस फर्म के मालिक पारासिवनी (नागपुर) के बरई जाति के सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला कन्हैया साहु हैं। यह फर्म बहुत समय से व्यापार कर रही है। इस पर पहले इसनाजी छन्नू साहु के नाम से कारबार होता था। इसकी स्थापना इसनाजीसाहु ने

स्व० सवाई सिंगई सेठ नेमचन्दजी छिन्दवाड़ा।

पं० रामलालजी (रामलाल शिवलाल) छिन्दवाड़ा।

स्व० सवाई सिंगई सेठ लक्ष्मीचन्दजी छिन्दवाड़ा।

पं० शिवलालजी शर्मा (रामलाल शिवलाल) छिन्दवाड़ा।

की थी। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र बना साहु, लाला साहु और जगन्नाथ साहु ने किया। इसके वर्तमान मालिक लाला कन्हैया साहु यहाँ आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। इस फर्म पर साहुकारी देन-लेन, बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। इसी नाम से आपकी २ दुकानें और हैं जहाँ पीतल के बर्तन और कपड़े का व्यापार होता है। यह यहाँ प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है।

गल्ले के व्यापारी

मेसर्स जयकिशनदास मूलचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मूलचंद जी एवम् टोडरामजी हैं। आप लोग डीडवाना (जोधपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब २५ वर्ष से गल्ले का व्यापार कर रही है। यहाँ इस फर्म की स्थापना जयकिशनदासजी के पुत्र सेठ नरसिंहदासजी ने की। वर्तमान में इसके मालिक नरसिंहदासजी के भाई हैं। आपकी ओर से यहाँ स्टेशन के पास एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स जयकिशनदास मूलचंद — यहाँ गल्ले का व्यापार और आड़त का काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम परमानंद

इस फर्म का हेड आफिस सिवनी में है। इसकी और भी शाखाएं हैं। उन सब पर प्रायः गल्ले का व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में सिवनी में छापा गया है यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार एवं आड़त का काम करती है।

मेसर्स सेंडमल जयनारायण

इस फर्म का हेड आफिस भी सिवनी ही है। यहाँ यह फर्म गल्ले एवं शक्कर का व्यापार करती है। इसकी और भी शाखायें हैं। जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ में सिवनी में छापा गया है।

व्यापारियों के पते—

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स केसरीमल मुन्नालाल
" गोकुलप्रसाद श्यामलाल
" गुलाबचंद मोतीलाल
" चुन्नीलाल हजारीमल
" बुधमल चाँदमल
" मोतीलाल चेनमुख

ग्रेन मरचेंट्स—

मेसर्स अहमद हाजी तैय्यब
" ताराचंदसाहु चेतरामसाहु
" पूँजा भाई मूलजी
" महमदहाजी तैय्यब
" शिवजीराम परमानंद
" सेठमल जयनारायण

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल
" पूरनलाल जीवनलाल
" प्रतापमल गनेशीलाल
" बुधमल चाँदमल

किराने के व्यापारी—

मेसर्स अलिमहम्मद ईसा
" अहमद हाजी तैय्यब
" चेतराम साहु टीकाराम साहु
" महमद हाजी तैय्यब
" रामवतार सुखदयाल

बैंकर्स एण्ड लैंडलार्डस—

मेसर्स कचौरीमल सुखलाल
" खेमचंद लखमीचंद
" चम्पालाल गुलाबचंद
" जवाहरमल हजारीलाल
" नरसिंहदास गिरधारीदास
" रा० ब० मथुराप्रसाद मोतीलाल एण्ड संस
" रामलाल शिवलाल
" लालासाहु कन्हैयासाहु

जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स अकबर अली जमात अली
दी मेंहदी बाग शाप
मेसर्स रघुनन्दन शिवनन्दन

बैतूल-बिदनूर

सी० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह जी० आई० पी० रेल्वे की इटारसी-आमला-नागपुर वाली ब्रेन्चलाइन का बड़ा स्टेशन है। यहाँ से इटारसी वगैरह स्थानों पर मोटर सर्विस भी रन करती है। जिले का प्रधान स्थान होने से एवं आसपास छोटे छोटे देहातों के पास आने से वहाँ का सब माल यहीं के बाजार में आता है। इस माल को यहाँ के व्यापारी खरीद कर बाहर एक्स पोर्ट करते हैं।

इस जिले की पैदावार में चिरोंजी, हर्रें, महुआ, गुली, सन, गुड़ एवं सागवान की लकड़ी प्रधान है। गल्ला भी यहाँ पैदा होता है मगर कम। चिरोंजी करीब ४००० बोरे, महुआ, हर्रें ७०, ८० हजार बोरे, गुली ३० हजार बोरे, बाहर जाते हैं। सन भी पहले काफी पैदा होता था मगर आजकल १५००० मन के करीब बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त गुड़ की भी पैदावार कम हो गई है फिर भी सीजन में २० हजार मन बाहर चला जाता है। सागवान की लकड़ी भी इस जिले से करीब ६ लाख रुपयों की बाहर जाती है।

बाहर से आने वाले माल में कपड़ा, किराना प्रधान है। डिस्ट्रिक्ट स्टेशन होने से यहाँ अच्छी तरक्की लिये है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मनासनदास लखमीचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिक पंच (जोधपुर-स्टेट) के निवासी हैं। आप ओसवाल बैरव ...ति के सेठी सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष हुए सेठ मनासनदासजी के पिता सेठमलजी ने यहाँ ...ना व्यवसाय स्थापित किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मनासनदासजी ने इसकी ...ब से व्यापार आरम्भ किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ लखमीचन्दजी हुए। आप यहाँ ...ई प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप यहाँ के ऑनरे... ...जिस्ट्रेट थे। आपके जिंदे कार्य्य एकड़ मात्र था। आपके त्रिलोकचंदजी नामक एक भाई ...न होंने का सर्वनाश हो गया। सेठ त्रिलोकचन्दजी के कोई पुत्र न था।

मेसर्स जुगलकिशोर देवीदीन

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० नंदकिशोरजी, बा० ब्रजकिशोरजी, बा० रामकिशोरजी एवं बा० श्यामकिशोरजी हैं। इस फर्म का हे० आ० इटारसी में है अतएव इसका विस्तृत परिचय वहीं दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ला, महुआ और आढ़त का व्यापार करती है।

मेसर्स शेरसिंह मानिकचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ कस्तुरचंदजी डागा-ओसवाल-समाज के बीकानेर निवासी सज्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्ष आपके पितामह सेठ शेरसिंहजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ माणिकचन्दजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई। वर्तमान में यह फर्म बैंङ्किग, साहुकारी देन-लेन एवं मालगुजारी का काम करती है।

मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक रेवाड़ी निवासी भार्गव-ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व पं० गिरधारीलालजी एवं पं० किशनसिंहजी ने स्थापित की और तरक्की प्रदान की। आप लोगों के पश्चात् आपके पुत्र पं० देवकीनंदनजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। रेवाड़ी में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल कमिश्नर रहे। आपके तीन पुत्र हुए पं० बिहारीलालजी, पं० गनेशीलालजी एवं पंडित सुन्दरलालजी। पं० बिहारीलालजी रेवाड़ी में म्युनिसिपल प्रेसिडेण्ट और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपका एवं पं० गनेशीलालजी का स्वर्गवास हो गया है। पं० गनेशीलालजी के वंशजों का भाग सं० १९१० से अलग हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक पं० सुन्दरलालजी राय साहब हैं। आपके तीन पुत्र हैं पं० चुन्नीलालजी, पं० दामोदरलालजी एवं पं० गोपीनाथजी। पं० चुन्नीलालजी मुल्तई में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय निम्न प्रकार है—

बेतूल—मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण — यहाँ हे० आ० है। यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। आपकी जमींदारी में ५० गाँव के करीब हैं।

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स नारायणदास नन्हेलाल
,, बिहारीलाल छबीलचन्द
,, मन्नीलाल मुन्नीलाल
,, लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल
,, सरदारसिंह कालूराम

गल्ले के व्यापारी—
मेसर्स बृजलाल हरगोविन्द
,, मुकुन्दीलाल टीकाराम

किराने के व्यापारी—
मेसर्स बृजलाल हरगोविन्द

लोहे के व्यापारी—
मेसर्स शिवलाल हरगोविन्द

चाँदी सोना के व्यापारी—
मेसर्स गोविन्दराम जगन्नाथ
,, चुन्नीलाल बद्रीनारायण
,, मंगलजीत बद्रीदास

—

गाडरवाड़ा

गाडरवाड़ा सी० पी० प्रांत के नरसिंहपुर जिले की एक तहसील है। यह जी० आई० पी० रेल्वे की इटारसी-जबलपुरवाली मेन लाईन पर अपने ही नामके स्टेशन से १ मील की दूरी पर बसा हुआ है। व्यापारियों के ठहरने आदि के लिये यहां बड़ी अव्यवस्था है। जबलपुरवाले राजा गोकुलदासजी की एक धर्मशाला यहां बनी हुई अवश्य है मगर उसमें भले आदमी तो नहीं ठहर सकते। नाम मात्रके लिये वह धर्मशाला है। नरसिंहपुर जिलेकी बड़ी तहसील होने से एवं लोकल सेल की वजह से यहां का इम्पोर्ट व्यापार अच्छा है। एक्सपोर्ट व्यापार में गल्ला ही ऐसी वस्तु है जो बाहर जाती है। इम्पोर्ट में कपड़ा एवं लोहा और जनरल सामान प्रधान है। किराना वगैरह भी बाहर ही से यहां आता है। गल्ले में यहां से गेहूं, चना, तीवड़ा, मसूर, बटला, अरहर, तिल्ली, अलसी, मूंग, उड़द बाहर जाते हैं। कपास भी यहां से बाहर जाता है। इन सब में तीवड़ा ज्यादा बाहर जाता है। यहां जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है। तथा दाल के कारखाने हैं। यहां से दाल भी बाहर जाती है। यहां के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स रामलाल मोहनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप यहां के प्रतिष्ठित रईस एवं जमींदार हैं। आपका मूल-निवास-स्थान मांडलगढ़ (उदयपुर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। भारत सरकारने आपको रायसाहब की पदवी प्रदान की है। यह

फर्म यहाँ बहुत पुरानी है। करीब १५० वर्ष पहले इसका स्थापन हुआ था। इस फर्म की ओर से इसके पूर्व मालिकों ने कई स्थानों पर मुसाफिर खाने, धर्मशालाएँ, कुएँ आदि बनवाये हैं।

इस समय इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल मोहनलाल हे० आ० — यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल घासीराम — यहाँ बैङ्किंग, हुंडी चिट्ठी और लेनदेन का काम होता है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स खूबचंद नर्मदाप्रसाद — यहाँ मालगुजारी का काम होता है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल छदामीलाल — यहाँ गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स घासीराम लक्ष्मीनारायण — यहाँ हुंडी चिट्ठी का काम होता है।

इसके अतिरिक्त पिपरिया, करेली, गोवरगांव, साँगाखेड़ा, शरहगंज, शिलवानी, देवरी, चौरास, रिछावर, बरेली आदि स्थानों पर भिन्न २ नामों से गल्ला एवं जमींदारी और आढ़त एवं बैंकिंग का काम होता है। नरसिंहपुर जिले में यह फर्म बहुत बड़ी मानी जाती है।

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स उंकारदास गौरीशंकर
- ,, काळूराम हरकरन
- ,, गरीबदास मन्नालाल
- ,, तुलसीप्रसाद मोहनलाल
- ,, बिहारीलाल जेठमल
- ,, भवानजी लालजी
- ,, महादेव कन्हैयालाल
- ,, माणकचंद बलदेव
- ,, रामरतन सुखदेव
- ,, रामलाल पूनमचंद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अचरुलाल मन्नालाल
- ,, कानजी मकनजी
- ,, नानूराम बलदेव
- ,, भगवानदास जगन्नाथ
- ,, मूलचंद बालचंद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स अचरुलाल मन्नालाल
- ,, अमरचंद भगवानदास
- ,, शिवपाल धनराज

भोपाल*

मध्य भारत में भोपाल प्रथम श्रेणी की एक महत्वपूर्ण रियासत है। यहाँ के राज्यशासक मुसलमान हैं। इस राज्य के मूल स्थापक दोस्त महम्मदखाँ सन् १७०८ में तीराह प्रान्त के तराई नामक ग्राम से भारत में आये थे। आपने अपने बाहुबल, वीरत्व, कूटनीति और बुद्धिमानी के बल से, डूबते हुए मुगलसाम्राज्य के समय की परिस्थिति से लाभ उठाया और कई छोटे २ जागीरदारों को कौशलपूर्वक जीतकर इस राज्य की स्थापना की थी जिसका इतिहास बड़ा ही विचित्र और घटनापूर्ण है। सन् १७४० में आपका देहान्त होगया। आपके पश्चात् इस राज्य की मसनद पर नवाब यार महम्मदखाँ, फैज महम्मद खाँ, हयात महम्मद खाँ, जहाँगीर महम्मद खाँ, क्रम से बैठे। नवाब जहाँगीर महम्मद खाँ का देहान्त सन् १८४४ में हो गया। तब से इस राज्य में स्त्री शासिकाएँ गद्दी नशीन होने लगीं। इन शासिकाओं में क्रम से सिकन्दर बेगम, शाहजहाँ बेगम और सुलतान जहाँ बेगम हुई। श्रीमती सुलतान जहाँ बेगम ने यहाँ की उन्नति और स्त्री-शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया।

उत्तर भारत में भोपाल सबसे बड़ी मुसलमानी रियासत है। इसका विस्तार ६८०२ वर्गमील और जनसंख्या ७२०००० से ऊपर है। इस राज्य में ७३ फीसदी हिन्दू, १२ फीसदी मुसलमान और १४ फीसदी दूसरी जातियों के लोग बसते हैं।

इस राज्य में शिक्षा और चिकित्सा का भी अच्छा प्रबन्ध है।

भोपाल शहर के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गंभीरमल धनरूपमल

इस फर्म के मालिक मेड़ता निवासी ओसवाल समाज के सज्जन हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व यह फर्म सेठ गंभीरमलजी द्वारा स्थापित की गई थी। आपके २ पुत्र हुए, सेठ मिरीमलजी एवं सेठ धनरूपमलजी। मिरीमलजी अपना स्वतंत्र व्यापार करने लग गये थे। आपके पश्चात् इस

---

* भोपाल मध्य भारत में है। अतः सी० पी० के साथ इसका विशेष व्यापारिक सम्बन्ध होने के इसका परिचय यहाँ दिया गया है।

फर्म का संचालन सेठ कनकमलजी के पुत्र सेठ नथमलजी ने सम्हाला। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप ही के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई है। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ नथमलजी के पुत्र सेठ राजमलजी डोसी हैं। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स गंभीरमल कनकमल चौक	यहाँ बैङ्किंग, हुंडी, चिट्ठी, आढ़त और रुई का व्यापार होता है।
भेलसा—मेसर्स गंभीरमल कनकमल	रुई, गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स गोपालदास वल्लभदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी माल्पाणी हैं। आपका हेड आफिस जबलपुर है। इस फर्म की कई जगह जमींदारी, जीनिंग-प्रेसिंग फैक्टरी और ब्रांचें हैं जिनका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

मेसर्स पूनमचंद हीरालाल

इस फर्म की स्थापना सेठ पूनमचन्दजी एवं आपके पुत्र सेठ हीरालालजी द्वारा करीब ५६ वर्ष पूर्व हुई। आप लोगों का मूल-निवास-स्थान मेड़ता (मारवाड़) है। आप लोगों ने फर्म की अच्छी उन्नति की। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मूलचन्दजी ललवानी हैं। आपको भोपाल सरकार ने राय की पदवी प्रदान की है। आप मिलनसार और धार्मिक विचारों के सज्जन हैं। आप यहाँ के ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट भी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स पूनमचंद हीरालाल चौक	यहाँ बैंकिंग, रुई, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।
पोमार (पिपरिया)—मेसर्स मूलचन्द मोतीलाल	यहाँ बैंकिंग, रुई, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ बालकृष्णदासजी बजाज स्टेट खजानची भोपाल

बाबू नन्दकिशोरजी चौधरी (जुगुलकिशोर देवीदीन) इटारसी

इसके अतिरिक्त भोपाल स्टेट में शाहगंज, मनकापुर, नजीराबाद और चन्दपुरा में आपकी दुकाने हैं। जहाँ जमींदारी, महाजनी देन-लेन का काम होता है। चंदपुरा में सरकारी खजाने का काम भी होता है।

सेठ बल्देवदास बैंकर्स

यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्थापित है। इसके स्थापक मेड़ता निवासी सेठ नंदरामजी माहेश्वरी थे। आपके पश्चात फर्म का संचालन सेठ करनमलजी ने किया। आप यहां के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपने अपनी व्यापार-प्रतिभा के बलपर बहुत सम्पत्ति प्राप्त की। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ नारायणदासजी हुए। आपने अपने पिता ही की भाँति फर्म के कारबार का संचालन किया। आपको भारत सरकार ने रायसाहब की पदवी से सम्मानित किया। यहां की हिन्दू एवं मुसलिम दोनों समाज की जनता आपसे प्रसन्न थी। आपने धार्मिक कार्यों में भी बहुत रुपया खर्च किया। भोपाल-स्टेट की बेगम साहबा के आप पूर्ण विश्वासपात्रों में से एक थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में आपके २ पुत्र हैं। एक सेठ बालकृष्णदासजी एवं दूसरे सेठ बलदेवदासजी। आप दोनों ही अपना अलग-अलग व्यापार करते हैं। सेठ बालकृष्णदासजी यहां के खजाने के खजांची हैं तथा म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर और अनाथालय के प्रेसिडेन्ट हैं। सिमहिया में आपकी दुकाने हैं जहां गल्ला एवं कच्ची आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ बलदेवदासजी का व्यापार जमींदारी एवं बैंकिंग है। भोपाल के अलावा उबेदुल्लागंज, देवीपुरा, देहरी और बिलखेड़ में भी आपकी दुकानें हैं। सब जगह जमींदारी और लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम शिवनारायण

इस फर्म का हेड आफिस सिहोर है। इसकी और भी शाखायें हैं जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ में सिहोर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का एवं आढ़त का अच्छा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मांगीलालजी हैं।

मेसर्स धनेचंद अमरचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रतनलालजी हैं। आप ओसवाल जैन समाज के सज्जन हैं। आप यहाँ के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। यह फर्म करीब ७० वर्षों से स्थापित है। इसके

स्थापक सेठ रतनलालजी के पिता सेठ अमरचंदजी थे। आप ही ने इसे उन्नतावस्था पर पहुँचाया। आपका ध्यान सार्वजनिक दानधर्म की ओर भी अच्छा था। आपका स्वर्गवास होगया है। आपका मूल-निवास-स्थान मेड़ता (जोधपुर) का था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स बनेचंद अमरचंद चौक } यहाँ बैंकिंग, जमींदारी, गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त फतेमल रतनलाल के नाम से गोहरगंज और धारमला में जमींदारी एवं देनलेन का व्यापार होता है।

मेसर्स संतोषचंद रखबदास

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। शुरू से ही यह फर्म इसी नाम से चाँदी सोने का व्यापार करती आ रही है। इसके स्थापक ओसवाल समाज के मेड़ता निवासी सेठ रखबदासजी थे। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ गोड़ीदासजी ने सम्हाला। आप यहाँ के अत्यन्त प्रतिष्ठित सज्जन हो गये हैं। आपका स्वभाव धार्मिक, मिलनसार एवं सज्जन था। आपको शुरू से ही धार्मिक शिक्षा मिली थी। यही कारण है कि आपका आजीवन समय धार्मिक कार्यों में ही बीता। आपने छोटे २ बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने में भी कमी नहीं की। धार्मिक कार्यों में आपने हजारों रुपये व्यय किये। आप व्यापारकुशल भी काफी थे। आपने अपने हाथों से हजारों रुपैया भी पैदा किया। आपका स्वर्गवास होगया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गोड़ीदासजी के पुत्र सेठ अमीचंदजी हैं। आप भी अपने पिता ही की भाँति सज्जन व्यक्ति हैं। आपका यहाँ अच्छा सम्मान है। आपने अपने पिताजी के सामने ही १० हजार रुपया पुण्यकार्यों में खर्च करने के लिये निकाला था। यह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में से है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स संतोषचंद रखबदास चौक } यहाँ बैंकिंग, सोना-चाँदी, गल्ला, एवं आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ थानमल मेड़ता

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ थानमलजी मेड़ता हैं। आप ओसवाल समाज के सज्जन हैं। आपके पिता सेठ सौभागमलजी इस्तमरार दुकान का संचालन करते हैं। सेठ सौभा-

गमलजी व्यापारचतुर और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका पब्लिक जीवन भी अच्छा रहा है। आप इच्छावर में ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। भोपाल सरकार ने आपको लैसन्स माफी, परवानगी खास और शरकत दरबार के सिवाय प्रदान किये हैं। आप प्रांतीय जैन कांग्रेस के ऑनरेरी सेक्रेटरी भी बहुत समय तक रह चुके हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं सेठ थानमलजी एवं मोतीलालजी। आपने अपने ही समय में दोनों भाइयों को स्वतंत्र व्यापार करने के लिये अलग २ कर दिये हैं। नीचे लिखे अनुसार व्यापारिक परिचय केवल थानमलजी का है।

भोपाल—थानमल मेहता, जुम्मेरातो — यहाँ बैंकिंग और गल्ले का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

कोठरी (भोपाल)—थानमल मेहता — यहाँ बैंकिंग और लेन-देन का व्यापार होता है।

इच्छावर की दुकानपर खुद सेठ सौभागमलजी काम करते हैं।

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स गनेशराम मोतीराम
,, गोकुलचन्द घासीराम
,, जवीचन्द किशनलाल
,, तुलाराम हजारीमल
,, पन्नालाल गुलाबचन्द
,, मनमोहन मथुरादास
,, रणछोड़लाल टीकमदास
,, हीरालाल छगनलाल

चांदी-सोने के व्यापारी—
मेसर्स अमरचन्द थानमल
,, खूबचन्द चुन्नीलाल
,, चुन्नीलाल रामचन्द्र
,, गोकुलचन्द भगवानदास
,, गोकुलदास पन्नालाल
,, चुन्नीलाल कन्हैयालाल
,, बुद्धाजी पन्नालाल
,, रामरतन राधाकिशन
,, लक्ष्मणदास मानचन्द

मेसर्स मुरलीलाल छोगमल
,, संतोषचन्द रघुवरदास

गल्ले के व्यापारी—
मेसर्स अब्दुल रहमान अब्दुलगनी
,, गम्भीरमल कनकमल
सेठ थानमल मेहता
मेसर्स दौलतराम शिवनारायण
,, प्रेमसुखदास ज्वालादत्त
,, थानमल लक्ष्मीचन्द
,, भगवानजी मदन
,, रामकिशन बृजमोहनदास

किराना के व्यापारी—
मेसर्स इस्माईल अहमद
,, उसमान अब्दुल रहमान
,, चुन्नीलाल दौलतराम
,, नन्दकिशोर तुलसीचन्द
,, सीतायर गयाप्रसाद
,, सेनराज चुन्नीलाल

सिहोर

सिहोर जी० आई० पी० रेल्वे की भोपाल-उज्जैन ब्रेंच का स्टेशन है स्टेशन पर सिहोर मंडी एवं यहां से आधा मिल पर सिहोर वस्ती वसी हुई है। यह कुछ माह पूर्व तक बृटिश शासन में था। यहाँ छावनी थी। अब यह भोपाल रियासत में आगया है। बिटिश सरकार ने संधि के अनुसार अपनी छावनी हटा ली है। जब यह स्थान भारत सरकार के अंडर में था। यहां अच्छा व्यापार होता था। मगर अब यहां का व्यापार गिर गया है। अब यहां मालूम होता है कि यह मंडी शीघ्रगामी गति से अवनति की ओर अग्रसर हो रही है। इसके पास ही इच्छावर नाम का स्थान है। यहां कुछ अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। वे लोग प्रायः खेती वगैरह का काम करते हैं। यहां का व्यापार प्रधानतया गल्ले का है गल्ला यहाँ से बाहर भी जाता है। यहां माल की विशेष खपत नहीं है। सिर्फ कपड़ा थोड़ा बहुत यहां आता है। यहां किसी प्रकार के कल-कारखाने नहीं हैं। यहाँ से इच्छावर, भोपाल आदि स्थानों पर मोटरें जाती हैं। इसके पास ही अकोदिया, सुजालपुर, शाहजहाँपुर नामक मंडियाँ हैं। इनका परिचय हम ग्वालियर स्टेट में प्रथम भाग में दे चुके हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भागीरथ रामदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ विष्णुदत्तजी हैं। आप पर्वतसर (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ भागीरथजी के द्वारा हुई। इसकी विशेष उन्नति सेठ रामदयालजी ने की। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रुई, गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

सिहोरमंडी—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रुई, गल्ला और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स रामकिशन जसकरन

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व डिडवाना निवासी सेठ रामकिशनजी ने स्थापित किया। इसकी विशेष उन्नति भी आप ही के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ जसकरन जी ने किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जसकरन जी के पुत्र सेठ झुम्मालालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स रामकिशन जसकरन	यहाँ बैंकिंग तथा महाजनी देन-लेन का काम होता है।
सिहोरमंडी—मेसर्स झुम्मालाल किशनलाल	यहाँ रुई, गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
खुलिया (राजगढ़-स्टेट)—मेसर्स जसकरन झुम्मालाल	यहाँ इस नाम से आपकी फैक्टरी है। तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम शान्तिराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जयकिशनदासजी धूत हैं। इसका हेड आफिस इन्दौर है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में मध्य भारत विभाग के इन्दौर में देखिये। यहां यह फर्म गल्ला, रुई एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसके मुनीम जुगलकिशोरजी मंत्री हैं।

मेसर्स शिवनारायण बद्रीदास

इस फर्म को यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसकी स्थापना डीडवाना निवासी अग्रवाल जाति के सेठ दौलतरामजी ने की। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ शिवनारायणजी एवं सेठ बद्रीदासजी ने किया। आप लोगों के समय में इसकी अच्छी उन्नति हुई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मांगीलालजी हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स शिवनारायण बद्रीदास	यहाँ गल्ला तथा आढ़त का व्यापार होता है।

सिहोर

सिहोर जी० आई० पी० रेल्वे की भोपाल-उज्जैन ब्रेंच का स्टेशन है स्टेशन पर सिहोर यहां से आधा मिल पर सिहोर वस्ती बसी हुई है । यह कुछ माह पूर्व तक ब्रिटिश र था । यहाँ छावनी थी । अब यह भोपाल रियासत में आगया है । ब्रिटिश सरकार ने अनुसार अपनी छावनी हटा ली है । जब यह स्थान भारत सरकार के अंडर में थ अच्छा व्यापार होता था । मगर अब यहां का व्यापार गिर गया है । अब यहां मालूम कि यह मंडी शीघ्रगामी गति से अवनति की ओर अग्रसर हो रही है । इसके पास ही नाम का स्थान है । यहां कुछ अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं । वे लोग प्रायः खेती का काम करते हैं । यहां का व्यापार प्रधानतया गल्ले का है गल्ला यहाँ से बाहर भ है । यहां माल की विशेष खपत नहीं है । सिर्फ कपड़ा थोड़ा बहुत यहां आता है । य प्रकार के कल-कारखाने नहीं हैं । यहाँ से इच्छावर, भोपाल आदि स्थानों पर मोटरें ज इसके पास ही अकोदिया, सुजालपुर, शाहजहाँपुर नामक मंडियाँ हैं । इनका परि ग्वालियर स्टेट में प्रथम भाग में दे चुके हैं ।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है ।

मेसर्स भागीरथ रामदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ विष्णुदत्तजी हैं । आप (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं । यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्था इसकी स्थापना सेठ भागीरथजी के द्वारा हुई । इसकी विशेष उन्नति सेठ रामदयालजी आप व्यापार कुशल सज्जन थे । आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रुई, गल्ला और आढ़त का व्यापार हो

सिहोरमंडी—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रुई, गल्ला और आढ़त का व्यापार हो

मेसर्स रामकिशन जसकरन

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व डिडवाना निवासी सेठ रामकिशनजी ने स्थापित किया। इसकी विशेष उन्नति भी आप ही के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ जसकरन जी ने किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जसकरन जी के पुत्र सेठ जुम्मालालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स रामकिशन जसकरन	यहाँ बैंकिंग तथा महाजनी देन-लेन का काम होता है।
सिहोरमंडी—मेसर्स जुम्मालाल किशनलाल	यहाँ रुई, गल्ले का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
रसुलिया (राजगढ़-स्टेट)—मेसर्स जसकरन जुम्मालाल	यहाँ इस नाम से आपकी फैक्टरी है। तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम शालिगराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जयकिशनदासजी धूत हैं। इसका हेड आफिस इन्दौर है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में मध्य भारत विभाग के इन्दौर में देखिये। यहां यह फर्म गल्ला, रुई एवं आढ़त का व्यापार करती है। इसके मुनीम जुगलकिशोरजी मंत्री हैं।

मेसर्स शिवनारायण बद्रराज

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसकी स्थापना डीडवाना निवासी अग्रवाल जाति के सेठ दौलतरामजी ने की। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ शिवनारायणजी एवं सेठ बद्रराजजी ने किया। आप लोगों के समय में इसकी अच्छी उन्नति हुई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मांगी-लालजी हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स शिवनारायण बद्रराज	यहाँ कपड़ा तथा आढ़त का व्यापार होता है।

सिहोर-मंडी—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	यहाँ गल्ला और रुई का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सिहोर—मेसर्स रामदेव दौलतराम	यहाँ चाँदी-सोने का व्यापार होता है।
भेलसा—मेसर्स बच्छराज मांगीलाल	यहाँ रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है।
भोपाल—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	यहाँ बैंकिंग, गल्ला, हुंडी, चिट्ठी और आढ़त का व्यापार होता है।
कुरावल (नरसिंहगढ़)—मेसर्स शिवनारायण बच्छराज	यहाँ इस नाम से आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है।

चाँदी-सोने के व्यापारी—
मेसर्स बंशीधर जगन्नाथ
,, भागीरथ बालमुकुन्द
,, रामचन्द्र श्रीकृष्ण
,, हरकिशन बालकिशन

गल्ला, रुई के व्यापारी—
मेसर्स भागीरथ रामदयाल
,, मेघराज शिवकिशन
,, रामकिशन अखेराज
,, रामकिशन जसकरन
,, रामदेव दौलतराम

कपड़े के व्यापारी—
मेसर्स आसाराम नन्दलाल
मेसर्स मौजीराम रामकिशन
,, मेघराज शिवकिशन
,, रामनाथ सरदारमल
,, रामदेव दौलतराम
,, हीरालाल बालाबक्ष

किराना के व्यापारी—
मेसर्स बीजराज राधाकिशन
,, रघुनाथ झागरीवाला
,, रामसुख रामनारायण
,, सूरजमल रामप्रताप

बीड़ी के व्यापारी—
मेसर्स कन्हैयालाल भँवरलाल

बरार और खानदेश

BERAR & KHANDESH

सिहोर-मंडी—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	यहाँ गल्ला और रुई का व्यापार और आढ़त का काम होता है।
सिहोर—मेसर्स रामदेव दौलतराम	यहाँ चाँदी-सोने का व्यापार होता है।
भेलसा—मेसर्स बच्छराज मांगीलाल	यहाँ रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है।
भोपाल—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	यहाँ बैंकिंग, गल्ला, हुंडी, चिट्ठी और आढ़त का व्यापार होता है।
कुरावल (नरसिंहगढ़)—मेसर्स शिवनारायण बच्छराज	यहाँ इस नाम से आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है।

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स बंशीधर जगन्नाथ
" भागीरथ बालमुकुन्द
" रामचन्द्र श्रीकृष्ण
" हरकिशन बालकिशन

गल्ला, रुई के व्यापारी—

मेसर्स भागीरथ रामदयाल
" मेघराज शिवकिशन
" रामकिशन भरोराज
" रामकिशन जसकरन
" रामदेव दौलतराम

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स आसाराम नन्दलाल
मेसर्स मौजीराम रामकिशन
" मेघराज शिवकिशन
" रामनाथ सरदारमल
" रामदेव दौलतराम
" हीरालाल बालाप्रसाद

किराना के व्यापारी—

मेसर्स बीजराज राधाकिशन
" रघुनाथ झागरीवाला
" रामसुख रामनारायण
" सूरजमल रामप्रताप

बीड़ी के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल भँवरलाल

बरार और खानदेश

BERAR & KHANDESH

अमरावती

यह स्थान सी० पी० और बरार प्रान्त का प्रधान कॉटन सेंटर है। यह जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर ब्रांच के बडनेरा नामक स्थान से ८ मील की दूरी पर बसा हुआ है। बडनेरा से यहाँ तक रेलवे लाईन गई है। आजकल व्यापारियों की सुविधा के लिये यहाँ चारों ओर के प्रधान २ स्थानों से मोटरें आती तथा जाती हैं।

यहाँ की मुख्य पैदावार कपास है। इसके पश्चात् जवारी, चने एवं तुवर का नम्बर आता है। रुई की प्रायः प्रतिवर्ष एक लाख से सवा लाख गाँठ तक पकती हैं। यहाँ रुई का सौदा खण्डी से होता है। यहाँ का तौल २८ रतल का मन, और २९ मन की खण्डी होती है। रुई की गाँठ १४ मन की होती है। सौदे का भाव रुई का गाँठ पर और कपास का मन पर होता है। जवार यहाँ से विशेष पैदा होने पर ही बाहर जाती है। हाँ, चने एवं तुवर अधिकतः बाहर जाते हैं। यहाँ के व्यापारी इनकी दाल भी यहाँ से बाहर भेजते हैं। यहाँ दाल बनाने के भी कारखाने हैं। यहाँ [illegible] बाने की ओर भी अच्छा ध्यान दिया जा रहा है। मूँगफली की खेती की ओर लोगों का विशेष झुकाव है। तेल निकालने की भी यहाँ २ मिलें हैं। जिनमें अलसी का तेल पेरा जाता है।

कॉटन को जीन तथा प्रेस करने के लिये भी यहाँ बहुत से कारखाने हैं। करीब ३० जीनिंग फेक्टरियाँ हैं जहाँ कपास लोढ़ा जाता है। कपास की गाँठ बाँधने के लिये करीब १४ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इन फेक्टरियों में से ८ जिनिंग फेक्टरियाँ बिजली की हैं। जिनमें १ तो यूरोपियन फिरमों की हैं। शेष भारतीय हैं। तेल के मिल तथा दाल की फैक्टरियों का जिक्र हम ऊपर कर ही चुके हैं। यही यहाँ कारखाने हैं।

व्यापारियों की सुविधा एवं उनके आपसी झगड़ों को निपटाने के लिये यहाँ एक कॉटन-कमेटी स्थापित है। इसमें २ पदस्थ स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के तथा शेष कॉटन मरचेंट्स डीलर्स एण्ड एजेण्ट्स रहते हैं। ये ही लोग कॉटन की व्यवस्था करते हैं।

पैदावार के लिये यहाँ की जमीन बड़ी अच्छी है। इसे "ब्लैक-कॉटन-स्वाइल" कहते हैं। यहाँ पानी की बड़ी कमी है। इसीलिये कॉटन का प्रधान सेंटर होते हुए भी यहाँ कोई मिल-

अमरावती

यह स्थान सी० पी० और बरार प्रान्त का प्रधान कॉटन सेंटर है। यह जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर ब्रांच के बडनेरा नामक स्थान से ८ मील की दूरी पर बसा हुआ है। बडनेरा से यहाँ तक रेलवे लाईन गई है। आजकल व्यापारियों की सुविधा के लिये यहाँ चारों ओर के प्रधान २ स्थानों से मोटरें आती तथा जाती हैं।

यहाँ की मुख्य पैदावार कपास है। इसके पश्चात जवारी, चने एवं तुवर का नम्बर आता है। रुई की प्रायः प्रतिवर्ष एक लाख से सवा लाख गाँठ तक बंधती हैं। यहाँ रुई का सौदा खण्डी से होता है। यहाँ का तौल २८ रतल का मन, और २९ मन की खण्डी होती है। रुई की गाँठ १४ मन की होती है। सौदे का भाव रुई का गाँठ पर और कपास का मन पर होता है। जवार यहाँ से विशेष पैदा होने पर ही बाहर जाती है। हाँ, चने एवं तुवर अलबत्तः बाहर जाते हैं। यहाँ के व्यापारी इनकी दाल भी यहाँ से बाहर भेजते हैं। यहाँ दाल बनाने के भी कारखाने हैं। यहाँ तिलहन बाने की ओर भी अच्छा ध्यान दिया जा रहा है। मूँगफली की खेती की ओर लोगों का विशेष झुकाव है। तेल निकालने की भी यहाँ २ मिले हैं। जिनमें अलसी का तेल पेरा जाता है।

कॉटन को जीन तथा प्रेस करने के लिये भी यहाँ बहुत से कारखाने हैं। करीब २० जीनिंग फेक्टरियाँ है जहाँ कपास लोढ़ा जाता है। कपास की गाँठ बाँधने के लिये करीब १४ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इन फेक्टरियों में से ८ जिनिंग फेक्टरियाँ विलायती हैं। जिसमें ६ तो प्यूअर विदेशी हैं। शेष भारतीय हैं। तेल के मिल तथा दाल की फैक्टरियों का जिक्र हम ऊपर कर ही चुके हैं। यही यहाँ कारखाने हैं।

व्यापारियों की सुविधा एवं उनके आपसी झगड़ों को निपटाने के लिये यहाँ एक कॉटन-कमेटी स्थापित है। इसमें २ सदस्य स्थानीय म्युनिसिपेलिटी के तथा शेष कॉटन मरचेंट्स ब्रोकर्स एण्ड एजण्ट्स रहते हैं। ये ही लोग कॉटन की व्यवस्था करते हैं।

पैदावार के लिये यहाँ की जमीन बड़ी अच्छी है। इसे "ब्लक-काटन-स्वायल" कहते हैं। यहाँ पानी की बड़ी कमी है। इसीलिये कॉटन का प्रधान सेंटर होते हुए भी यहाँ कोई सिप-

निंग एण्ड विविंग मिल नहीं है। और न खोली ही जा सकती है। यदि यहाँ पानी की सुविधा होती तो और सब प्रकार की सुविधाएँ यहाँ मौजूद हैं।

यहाँ बाहर से आने वाले माल में चावल, किराना, हार्डवेअर, कपड़ा आदि प्रधान हैं। कपड़े में विशेष कर मारवाड़ी पहनावे का कपड़ा बहुत आता है। मोटरों के विशेष व्यवहार से यहाँ इसका भी व्यापार अच्छा है। इसका भी बहुत सामान बाहर से यहाँ आता है। इसके व्यापारी मारवाड़ी ही हैं। इन लोगों का ध्यान आज कल मशिनरी लाईन में भी अच्छा जाने लगा है। बाहर से माल विशेष आने का कारण यहाँ की लोक-संख्या से नहीं है। क्योंकि यहाँ की लोक-संख्या तो सिर्फ ५० हजार ही है। मगर अमरावती के आस-पास बहुत से व्यापारिक स्थान हैं जहाँ यहाँ से माल जाता है। जैसे चांदूर बाजार, मोरशी, एलिचपुर, हीवर खेड़, शेंदूर जऊ, बड़नेरा आदि।

यहाँ व्यापार करने वाली जातियों से विशेष कर मारवाड़ी, गुजराती एवं बुन्देलखण्डी हैं। जिनका विशेष परिचय इस प्रकार है—

काटन-मर्चेन्ट्स

मेसर्स जवाहरमल बालमुकुन्द

आप लोग जोधपुर राज्य के रहनेवाले माहेश्वरी वैश्य समाज के बजाज सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ आसारामजी ने की थी। आरम्भ में इस फर्म पर कपड़ा का व्यापार किया जाता था। इस फर्म की विशेष उन्नति सेठ आसारामजी के हाथों से हुई, आपका स्वर्गवास २ वर्ष पूर्व हो गया है तब से इस फर्म का संचालन स्व० सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ रामचन्द्रजी करते हैं।

इस फर्म पर वर्तमान में रूई का व्यापार प्रधान रूप से होता है और इसके अतिरिक्त महाजनी लेन-देन आदि का व्यापार भी यह फर्म करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामचन्द्रजी बजाज तथा आपके भाई सेठ श्रीकृष्णजी बजाज हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स जवाहरमल बालमुकुन्द अमरावती T. A. Bajaj	यहाँ रूई का व्यापार प्रधान रूप से होता है। आपकी यहाँ एक जीन प्रेस फैक्टरी भी है।

मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म का हेड आफिस धामणगाँव है। इसके मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपका और भी कई स्थानों पर व्यापार होता है तथा जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। यहाँ इसकी जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ में धामणगाँव के पोर्शन में दिया गया है।

मेसर्स तखतमल श्रीवल्लभ

आप लोग पिपाड़ (जोधपुर) निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के चांडक सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ तखतमलजी ने उपरोक्त नाम से की थी। यह परिवार देश से लगभग १५० वर्ष पूर्व अमरावती आया था

इस फर्म पर आरम्भ से ही महाजनी लेन-देन का काम होता आ रहा है। जो यह फर्म वर्तमान में भी पूर्ववत् कर रही है। इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ तखतमलजी और सेठ श्रीवल्लभजी दोनों ही के हाथ से हुई।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामरतनजी चांडक हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स तखतमल श्रीवल्लभ अमरावती	यहाँ महाजनी लेन-देन का व्यापार प्रधान रूप से होता है और रुई का काम काज है।

मेसर्स धनराज पोकरमल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान रामगढ़ (शेखावाटी) है। आप लोग अग्रवाल समाज के गनेड़ीवाल सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १५० वर्ष के पूर्व सेठ धनराजजी गनेड़ीवाल ने अमरावती में की थी।

यह परिवार रामगढ़ से निजाम हैदराबाद आया और वहाँ बस गया। इस परिवार ने वहाँ अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया और अपना सब कार्य्य मेसर्स महानन्दराम पूरणमल के नाम से करने लगा। इस फर्म के संचालकों ने राजकाज-सम्बन्धी ठेकों का काम प्रधानरूप से करना आरम्भ किया। इसी सम्बन्ध में सेठ धनराजजी बरार प्रान्त का ठेका ले अमरावती आये और उपरोक्त नाम से अपनी फर्म यहाँ स्थापित कर काम करने लगे। आप बड़े प्रबन्ध-

यहाँ पर इस दुकान का मैनेजमेण्ट सेठ सदारामजी झुंझनूवाला करते हैं। आप से
चन्द्र रायजी के काका हैं। इस दुकान के प्रधान मुनीम श्रीयुत रामचन्द्रजी भाबरा हैं।
मूल निवास नारनौल में है। आप करीब २५ वर्षों से जब से यह फर्म यहाँ पर स्थापि
वर्षों से काम करते हैं। इस फर्म की खरीदी के मैनेजर श्रीयुत गंगाराम बाबू हैं। आप
की खरीदी का काम ३० वर्षों से कर रहे हैं। आप दोनों वयोवृद्ध और अनुभवी सज्जन है

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल शिवनारायण (T. A. Business) यहाँ पर रुई का बहुत बड़
व्यापार होता है।

मेसर्स रामरतन गणेशदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान रिनवसर (जोधपुर) है। आप लोग
माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष लगभग १५० वर्ष पूर्व
मारवाड़ से बरार प्रान्त आए और अमरावती जिले के विठला नामक स्थान में बस गये। वहीं
इस परिवार ने अपना व्यापार स्थापित किया और अच्छी सफलता प्राप्त की। फलतः आज भी
वहाँ पर इस फर्म के वर्तमान मालिकों की दो प्रतिष्ठित फर्म मेसर्स मौजीराम गंगाराम और
मेसर्स मौजीराम स्वरूपचंद के नाम से व्यापार कर रही हैं। इन दो फर्म की स्थापना हो चुकने
के बाद जब ये फर्में अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचीं तब सेठ गणेशदासजी राठी ने सम्वत्
१९५८ में मेसर्स रामरतन गणेशदास के नाम से अमरावती में अपनी वर्तमान फर्म की स्थापना
की जो आज अच्छी उन्नत अवस्था पर व्यापार कर रही है।

इस फर्म पर रुई का व्यापार प्रधान रूप से होता है इसकी एक जीन तथा प्रेस फैक्टरी भी
यहाँ पर है। इसके अतिरिक्त यह फर्म बैंकर और लैण्ड लार्ड का काम भी करती है।

इस फर्म की प्रधान उन्नति रायबहादुर सेठ गणेशदासजी राठी के हाथों हुई है। आपका
जैसा प्रभाव यहाँ के व्यापारीवर्ग पर था वैसा ही प्रभाव सरकारी अफसरों पर भी था। आप
कितने ही वर्षों तक स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य एवं चेअरमेन तथा काटन कमेटी के
जहाँ आप चेअरमैन रहे लगभग १०-१२ वर्ष से आप फर्स्ट क्लास आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी थे।
आपको सरकार ने प्रथम राय साहिब और फिर बहादुर की पदवी से सम्मानित किया। आप
सी० पी० कौन्सिल के भी ३ साल तक मेम्बर रह चुके थे। आपका स्वर्गवास ९-४-३०
को हो गया। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू गोपीकिशन है। फर्म का कुल कार्य्य इस

लासजी का स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं। जिनके नाम सेठ हरगोविन्दजी और सेठ श्रीवल्लभ जी हैं। इनमें से सेठ श्रीवल्लभजी खलगाँव के सेठ बद्रीदासजी के यहाँ दत्तक गये हैं।

आपकी तरफ से मौजरी (अमरावती) में एक धर्मशाला और एक सार्वजनिक डिसेन्सरी खोली हुई है। इसके अतिरिक्त यहाँ के रामदेव जी के मन्दिर में भी आपने अच्छी सहायता दी है। आपकी तरफ से अमरावती में एक कन्या पाठशाला भी चल रहती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अमरावति—मेसर्स सीताराम रामविलास—इस फर्म पर रुई और बैंकिंग का काम होता है।

मोजरी—मेसर्स सीताराम रामविलास—यहाँ आपकी जीन है। तथा मालगुजारी और काम लेनदेन का होता है। खड़की, गोईवाड़ा आपके गाँव हैं।

मेसर्स श्रीराम रूपराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान पोकरन (जोधपुर-स्टेट) है। आप माहेश्वरी जाति के बजाज सज्जन हैं इस खानदान को बरार में आये करीब ८० वर्ष हुए। पहले पहल सेठ तिलोकचन्दजी बजाज यहां पर आये और आपने कारबार शुरू किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ श्रीरामजी ने इस फर्म के कारबार को तरक्की दी। सेठ श्रीरामजी के बाद सेठ रूपरामजी ने कारबार सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत १९८४ में हुआ। आपके पुत्र श्रीयुत मदनगोपालजी का स्वर्गवास आपके पहले ही हो चुका था। इसलिए सेठ मदनगोपालजी के नाम पर श्रीयुत मोहनलालजी को गोद लिया गया। इस समय आप ही फर्म के मालिक हैं। आप इस समय हीवर खेड में ही रहते हैं।

आपकी ओर से हीवर खेड़ में एक धर्मशाला बनी हुई है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है.—

हीवर खेड़ (मोरसी)—मेसर्स तिलोकचन्द श्रीराम—यहां पर आपका हेड ऑफिस है। पहले पहल सेठ तिलोकचन्दजी ने यहीं से व्यापार शुरू किया। यहां पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग, रुई और लेनी वाड़ी का काम होता है।

अमरावती—मेसर्स श्रीराम रूपराम, यह फर्म यहां करीब ५० साल से स्थापित है। यहाँ भी आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग, और रुई का व्यापार होता है।

बरूड़— यहां पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

बाबू मोहनलालजी बजाज (श्रीराम रूपराम) अमरावती
(बरार पे० नं० १०)

सेठ जसकरणजी डागा (भवानीदास भजनदास) रायपुर
(सी० पी० पेज नं० ६५)

दासजी (धनजी मुरलीधर) राजनान्दगांव
(सी० पी० पेज नं० ७१)

सेठ मिश्रीलाल रामचन्द्र सराफ़ सागर
(सी० पी० पेज नं०

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स फतेचन्द मांगीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रीयां (जोधपुर-स्टेट) है। आप ओसवाल जाति के फलोदिया जैन सज्जन हैं। इस खानदान को अमरावती में आये करीब ५० वर्ष हुए। यहां पर इस फर्म की स्थापना सेठ पूनमचन्दजी ने की। पहले यह फर्म मेसर्स मानमल गुला[illegible] चन्द के साझे में काम करती थी। संवत् १९५० में सेठ पूनमचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। आपके कुल तीन पुत्र हुए। जिनके नाम सेठ शोभाचन्दजी, सेठ फतेचन्दजी और सेठ मांगीलालजी हैं। इनमें से सेठ शोभाचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९६२ में हो गया। इस समय इस फर्म का संचालन सेठ फतेचन्दजी और सेठ मांगीलालजी करते हैं। करीब २० वर्ष पूर्व आप लोगों ने मेसर्स फतेचन्द मांगीलाल के नाम से फर्म स्थापित किया। तब से यह फर्म इसी नाम से अपना काम कर रही है। इस फर्म की अमरावती में बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्म की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर बहुत रुचि रही है। आपकी ओर से अमरावती में एक जैन मन्दिर और एक धर्मशाला करीब पचास हजार की लागत से बनाई हुई हैं और भी धर्म-प्रचार के कार्यों में आपके हाथों से बहुत खर्च होता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

अमरावती—मेसर्स फतेचन्द मांगीलाल (T. A. "Jain") इस फर्म पर कपड़ा, सोना चांदी तथा सब प्रकार की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

मेसर्स रतनचन्द छगनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान पीपाड़ (मारवाड़) है। आप ओसवाल जाति के मुणोत सज्जन हैं। इस खानदान को अमरावती में आये करीब [illegible] वर्ष हुए।

इस समय इस फर्म के मालिक सेठ मगनमलजी तथा सेठ फतेचन्दजी हैं। [illegible] के पिता का नाम सेठ धनराजजी तथा सेठ फतेचन्दजी के पिता का नाम सेठ [illegible] है। इस दुकान में तथा बम्बई दुकान में भांडुर मोहनचन्दजी मुणोत का साझा है। [illegible] के रहने वाले हैं।

आपकी तरफ से पीपाड़ में ४० हजार की लागत से एक स्कूल [illegible] है। [illegible] बहुत से धार्मिक कामों में आप सहायता देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस—फेलसी (रत्नागिरी) मेसर्स नवलमल चाँदमल, इस दुकान पर बैं
कपड़ा और किराने का व्यापार होता है।

इस्जरला—(रत्नागिरि) मेसर्स मानमल गुलाबचन्द्-यहाँ भी कपड़ा, किराना, बै
का काम होता है।

बम्बई—मेसर्स मानमल गुलाबचन्द प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई नं० २—यहाँ पर क
एजन्सी का काम होता है।

अमदाबाद—मेसर्स धनराज अनराज रेलवे पुरा प्रेमचन्द केदारदास मार्केट-यह
कपड़े की कमीशन एजन्सी का काम होता है।

अमरावति—मेसर्स रतनचन्द, छगनमल—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।
फर्म जलगाँव मिल की कमीशन एजण्ट है।

गुलेजगुड़ (बीजापुर) मेसर्स धनराज मगनमल-यहाँ पर रेशमी कपड़े का व्यापार होव

इसके सिवा पंजाब के अन्दर मोघा, बरनाला और कैथल इन तीनों मण्डियों में सूर
मिश्रीमल के नाम से आपकी फर्मे हैं जहाँ का तार का पता (Suraj) है। इन तीनों दु
पर गल्ले का व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स जगन्नाथ करनीदान
,, जवाहरमल बालमुकुन्द
,, जयरामदास भागचन्द
,, तखतमल श्रीवल्लभ
,, धनराज पोकरमल
,, बालकदास शिवनाथ
,, मानमल गुलाबचंद
,, मन्नालाल शिवनारायण
,, रामरतन गनेशदास
,, शिवलाल शालिगराम
,, सीताराम रामविलास
,, साधुराम तोलाराम
,, श्रीराम रूपराम

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स आत्माराम हरिसा
,, कुँवरजी लखमीदास
,, गनेश स्टोअर
,, जेठा भाई कालीदास
,, जोशी देशपांडे
,, झूमरमल राठी
,, पूनलाल बंसीलाल
,, फतेचंद माँगीलाल
,, बंसीलाल पन्नालाल
,, मोतीराम तुलाराम
,, रतनचन्द छगनमल
,, हाजी कासम हाजी इसाक

बलगांव

यह अमरावती के पास एक छोटा सा खेड़ा है। मगर यहाँ बड़े बड़े बैंकर्स की पाँच सात दुकानें होने से गुलचमन मालूम होता है। यहाँ के व्यापारी कृषि तथा महाजनी लेन-देन का काम करते हैं। यहाँ की खास पैदावार कपास है जो अमरावती के बाजार में बिकता है। अमरावती तथा यहाँ के बीच में हमेशा मोटरें आया करती हैं। यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चतुर्भुज शिवनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) में है। आपके परिवार को सी० पी० में आये हुए करीब १३० वर्ष हुए। पहले पहल आपकी फर्म सिवण गाँव और बलगांव में स्थापित हुई। सब से पहले सेठ चतुर्भुजजी लड्ढा यहाँ पर आये और आपने मेसर्स चतुर्भुज शिवनारायण के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। सेठ चतुर्भुजजी का स्वर्गवास हुए करीब ७० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र सेठ शिवनारायणजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। शिवनारायणजी के पुत्र श्रीयुत गोपीनाथजी थे आपके बहुत शान्त और सरल होने की वजह से सेठ शिवनारायणजी के पश्चात् फर्म का काम आपके पौत्र श्रीयुत बद्रीनाथजी ने सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। श्रीयुत बद्रीनाथजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ के आश्विन में हो गया। इस समय इस फर्म का काम आपके दत्तक पुत्र सेठ श्रीवल्लभजी करते हैं।

इस फर्म का दान-धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छा लक्ष्य है। बलगाँव में आपकी ओर से एक धर्मशाला और एक चतुर्भुजनाथ का मन्दिर बना हुआ है। इनमें करीब लाख सवा लाख की लागत लगी है। इसके सिवा काशी में आपकी ओर से एक अन्नक्षेत्र भी चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलगाँव-मेसर्स-चतुर्भुज शिवनारायण—यहाँ पर मुख्यतया बैंकिंग और खेती का काम होता है।

इस फर्म के मारवाड़ में बहुत से मकानात हैं तथा अमरावती में बद्रीनाथ श्रीराम के नाम से फर्म और बंगला है।

मेसर्स चौथमल शिवनाथ

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान खिंवसर (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी जाति के राठी सज्जन हैं। आपकी फर्म को यहाँ पर स्थापित हुए करीब ८०-९० वर्ष हुए। पहले पहल सेठ जेठमलजी राठी ने बहुत साधारण स्थिति में अपना काम शुरू किया। सेठ जेठमलजी के दो पुत्र थे, जिनके नाम सेठ स्वरूपचन्दजी और सेठ चौथमलजी था। सेठ जेठमलजी के पश्चात् सेठ चौथमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आपके हाथों से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। सेठ चौथमलजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ शिवनाथजी ने फर्म के काम को सम्हाला आपका स्वर्गवास संवत् १९४४ में हुआ। आपके कोई पुत्र न होने से आपने श्रीनारायणजी राठी को दत्तक लिया। तब से आप ही इस फर्म का संचालन करते हैं। आपके इस समय चार पुत्र हैं। उनके नाम क्रम से श्रीयुत शङ्करलालजी, माणिकलालजी, रतनलालजी और हीरालालजी हैं।

इस फर्म के मालिकों की सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओर से बरार में एक ए० वी० स्कूल चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बरार—मेसर्स चौथमल शिवनाथ यहाँ पर बैंकिंग बिजीनेस और देन-लेन का काम होता है।

खेत—मेसर्स चौथमल शिवनाथ—यहाँ पर खेती का काम होता है।

मेसर्स रघुनाथदास चतुर्भुज

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रैन (जोधपुर-स्टेट) है। आप माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को बरार में आये करीबन १०० वर्ष हुए। पहले पहल सेठ रघुनाथदासजी ने इस फर्म को स्थापित किया। रघुनाथदासजी के भाई श्रीयुत चतुर्भुजजी थे। श्रीयुत चतुर्भुजजी के बाद श्रीयुत खेतमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। सेठ खेतमलजी के पश्चात् सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९११ में हुआ आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हरिरामजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास थोड़े वय में सन् १९१९ ई० में हो गया। इस समय इस फर्म के

मालिक श्रीयुत हरिरामजी के लघुभ्राता श्रीयुत राधाकृष्णजी सारडा हैं। आप बड़े कुशल युवक हैं। आपका जन्म संवत् १९६५ का है।

आपकी ओर से मलगाँव में अन्नक्षेत्र है जिसमें हमेशा सदाव्रत बँटता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—मलगाँव-मेसर्स रघुनाथदास चतुर्भुज—यहाँ पर बैंकिंग, लेनदेन और खेती का काम होता है।

मेसर्स रामसुख पूरनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान संखवास (जोधपुर) में है। आप माहेश्वरी जाति के डेडा सज्जन हैं। इस खानदान को मलगाँव में आये करीब ७० वर्ष हुए। सब से पहले सेठ रामसुखजी देश से मलगाँव में आये और आपने फर्म स्थापित किया। रामसुखजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ पूरनमलजी हुए। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। पूरनमलजी का स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके कोई पुत्र न होने से आपने सेठ राधावल्लभजी को दत्तक लिया। अभी आप नाबालिग हैं। इस लिए फर्म का संचालन मुनीम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मलगाँव—मेसर्स रामसुख पूरनमल—इस फर्म में बैंकिंग, लेन-देन और कृषि का काम होता है।

मिल ऑनर्स

मेसर्स सावतराम रामप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू किशनलालजी गोयनका अग्रवाल वैश्य स
गोयल सज्जन हैं। आपका खास निवासस्थान बगड़ा (नवलगढ़–जयपुर स्टेट) में
इस फर्म का स्थापन करीब १०० से अधिक वर्ष पूर्व सेठ सावंतराम जी के हाथों से
(आकोट ताल्लुका) में हुआ था। उस समय सेठ सावंतरामजी, हैदराबाद स्टेट के रिसा
रसद सप्लाई करने का काम करते थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रामप्रसादजी ने
में करीब ५०।६० साल पहिले अपनी फर्म स्थापित की। अकोला दुकान की तरक्की और
का प्रधान श्रेय आपके मुनीम श्री जयकृष्ण बगाजी नाइक को है। श्री नाइकजी के
फर्म के व्यवसाय की बहुत वृद्धि हुई। सेठ रामप्रसादजी करीब ३५ साल पहिले स्व
हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ ओंकारदासजी ने कार्यभार ग्रहण किया। सेठ ओं
दासजी बड़े मिलनसार, सरलस्वभाव के व्यापार दक्ष सज्जन थे। सन् १९१२ में आपने
राम रामप्रसाद कॉटन मिल्स को जन्म दिया। इस मिल के अधिकांश शेयर आप के ही
हैं। तीन साल तक मिल का कार्य दक्षता पूर्वक संचालन कर आप १९७१ के फाल्गुन मा
स्वर्गवासी हो गये। आपकी अकाल मृत्यु से मिल के उज्वल भविष्य में बहुत धक्का ल
सेठ ओंकारदासजी के स्वर्गवासी होने के समय उनके एक मात्र पुत्र बाबू किशनला
गोयनका १२ वर्ष के थे। अतः फर्म का व्यवसाय संचालन सेठानी श्रीमती करा
करती रहीं। और अब भी मिलकी मेनेजिंग डायरेक्टर आपही हैं।

श्रीयुत किशनलालजी गोयनका उन्नत एवं सुधरे विचारों के नवयुवक हैं। हाल
आप विलायत यात्रा करके वापस आये हैं। आपको शुद्ध खादी पहिनने का शौक है।
के सार्वजनिक कामों में आप भाग लेते रहते हैं। अपने पिताजी के स्मरणार्थ आपने श्री ओं
दास औषधालय स्थापित किया है। आपकी फर्म आकोला एवं बरार प्रांत में बहुत
एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद सत्तु—बैंकिंग, जीनिंग प्रेसिंग, मिल एजेंसी एवं रुई
का काम होता है।

हिवरखेड़ (आकोट) मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद—यहाँ आप का प्रधान निवास है एवं
का बहुत बड़ा काम काज होता है।

इन्दौर केम्प—मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद—आपकी मैनेजिंग का काम होता है।

[illegible] (इन्दौर स्टेट) [illegible]—[illegible] फेक्टरी है तथा रुई का काम होता है।

सेठ कृष्णदासजी गोयनका, अकोला (भा॰ रा॰)

दी सावतराम रामप्रसाद मिल्स लिमिटेड, अकोला

बैंकर्स
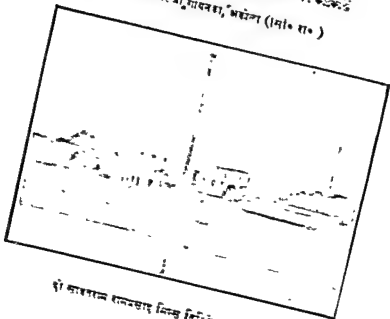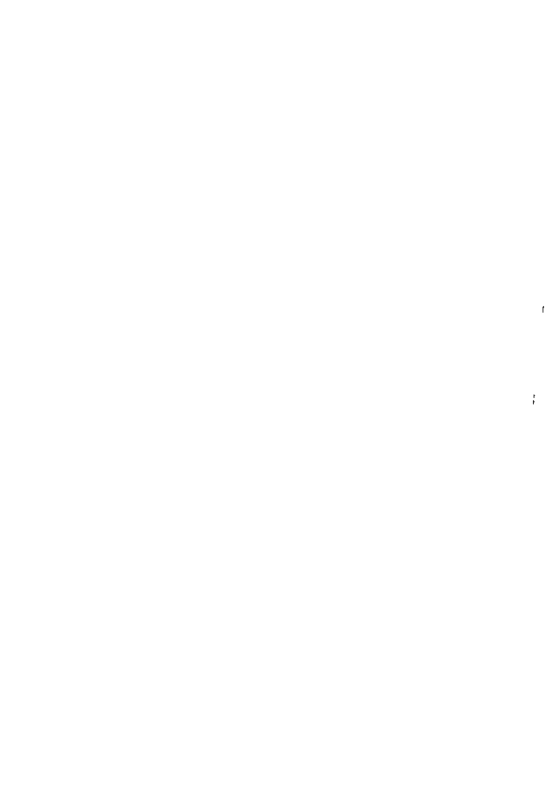
मेसर्स बद्रीदास रामराय सरावगी

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सरावगी सज्जन हैं। संवत् १९२८ के करीब सेठ बद्रीदासजी देश से अकोला आये, यहां आप मामूली काम काज करते रहे। सेठ बद्रीदासजी के पिता पन्नालालजी एवं पितामह सेठ बज्जूरामजी थे, सेठ बज्जूरामजी बहुत सम्पत्तिशाली एवं प्रतिष्ठित सज्जन थे।

सेठ बद्रीदासजी के पुत्र बाबू रामरायजी, लक्ष्मीनारायणजी एवं पुंगीलालजी के हाथों से फर्म के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई। बद्रीदासजी १९४७ में और रामरायजी १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स बद्रीदास रामराय—सराफी लेनदेन का काम होता है।

अकोला—सरावगी जीन प्रेस फेक्टरी—इस नाम से आपकी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग है।

मेसर्स मानमल आईदान

इस फर्म के मालिक जेसलमेर निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के दावरी (मोहता) सज्जन हैं। करीब १०० वर्षों से खामगाँव में इस फर्म का जयसिंहदास हंसराज के नाम से कारबार होता था। संवत् १९५३ में जसराज श्रीराम, नैनसुखदास गोकुलदास, मानमल आईदान एवं बिसनसिंह हरीसिंह के नाम से इस फर्म की ४ शाखाएँ हो गई। तब से उपरोक्त फर्म अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है। सेठ सांगीदासजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार की विशेष वृद्धि हुई। आप बड़े दृढ़प्रतिज्ञ एवं चरित्रवान् सज्जन थे। आप ही के समय में अकोला, हिंगोली आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोली गई। संवत् १९७६ में आप स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सांगीदासजी के पुत्र सेठ आईदानजी एवं सेठ तोलारामजी हैं। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है, सेठ आईदानजी ने अकोला एवं खामगाँव में होनेवाले माहेश्वरी महासभा अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का पद सुशोभित किया था। आपके पुत्र श्रीयुत सुगालसिंहजी कारबार में भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स मानमल आईदान } बैङ्किग, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी एवं कॉटन का व्यापार होता है।

नाँमगाँव (नांदूरा) मुकुन्दसिंह सांगीदास—कृषि का कारबार होता है।

सेठ रघुनाथदासजी तोषनीवाल (रघुनाथदास रामरतन) अकोला

सेठ रामरतनजी तोषनीवाल (रघुनाथदास रामरतन) अकोला

सेठ राधाकृष्णजी तोषनीवाल (रघुनाथदास रामरतन) अकोला

सेठ कन्हैयालालजी तोषनीवाल (राधाकृष्ण एण्ड कम्पनी) अकोला

अकोला—मेसर्स राधाकृष्ण कम्पनी—फोर्ड मोटर की एजंसी है। यहाँ मोटर नगदी से व किश्त से बेंची जाती है। इसके अलावा मोटर एसेसरीज, बाडी बिल्डर्स, इंजिनियर्स एवं पेट्रोल का व्यापार होता है।

नांदुरा—राधाकृष्ण कम्पनी—यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

यवतमाल— " " " "

इस फर्म के मोटर व्यवसाय में सेठ राधाकृष्णजी के बड़े भ्राता बाबू कन्हैयालालजी चोपनीवाल का भाग है।

मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल

इस फर्म के मालिक रामपुर (सारंगपुर यू० पी०) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के जिंदल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पूर्व सेठ बंशीलालजी के द्वारा हुआ। आपने इस फर्म में बैंकिंग व्यापार, लेन-देन एवं खेती में बहुत सम्पत्ति एकत्रित की। अकोले में आपकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपने ७० वर्ष पूर्व श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर बनवाया एवं इस मंदिर के स्थाई प्रबंध के लिये ५।६ लाख की सम्पत्ति एक ट्रस्ट के जिम्मे की। करीब ५० वर्ष पूर्व आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ बंशीलालजी के २ पुत्र हुए, सेठ मोतीलालजी एवं सेठ बालचंदजी। इन दोनों भाइयों का कारबार करीब ३५ साल पहिले अलग २ हो गया। सेठ मोतीलालजी भी बड़े धर्मात्मा सज्जन थे। आपने बद्रीनारायण, देवप्रयाग, इलाहाबाद तथा नासिक में धर्मशालाएँ बनवाई। इसी प्रकार कई धार्मिक कामों में आपने आजीवन योग दिया। आप ६-१०-२५ को स्वर्गवासी हुए हैं। ६ साल पूर्व आपने अकोले में लोकमान्य थियेटर बनाया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी के पुत्र श्रीयुत् उत्तमचंदजी हैं इस समय आपकी वय १० वर्ष की है। आप अपने पिताजी के स्मरणार्थ एक सुन्दर संगमरमर की छत्री बनवाने की योजना कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल } जमींदारी, लेन-देन, स्थाई सम्पत्ति एवं कपास की आढ़त का व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल—लेनदेन का काम होता है।

सेठ पन्नालालजी खण्डेलवाल (पन्नालाल हीरालाल) अकोला

सेठ नौरंगरायजी झुंझनवाला (नौरंगराय पन्नालाल) अकोला

सेठ हीरालालजी खण्डेलवाल (पन्नालाल हीरालाल) अकोला

र्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सूरजमलजी एवं सेठ सीतारामजी के पुत्र श्रीरामजी
s सूरजमलजी के पुत्र लक्ष्मीचंदजी तथा राधाकिशनजी एवं श्रीरामजी के पुत्र बृज-
ी भी व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—
ा—मेसर्स गुलाबराय गोविंदराम—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बैङ्किंग और कॉटन
का व्यापार होता है।
ट—मेसर्स सूरजमल श्रीराम—यहाँ कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।
र—मेसर्स गुलाबराय गोविन्दराम— " " "
वि—मेसर्स लक्ष्मीचंद बृजमोहन— " " "
—मेसर्स राधाकिशन बृजमोहन— " " "

मेसर्स गुलाबराय हरदयाल

इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पहिले सेठ गुलाबरायजी ने किया। आपके पुत्र सेठ
ालजी, गोविंदरामजी और बालाप्रसादजी गुलाबराय गोविंदराम के नाम से कारबार करते
संवत् १९५५ में गुलाबराय गोविंदराम और गुलाबराय हरदयाल के नाम से इनकी दो
ा गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हरदयालजी के पुत्र गुरुप्रतापजी हैं। आपके पुत्र
वरायजी व्यापार संचालन करते हैं। सेठ गुरुप्रतापजी सनातन धर्मसभा अकोला के सभापति
आपकी ओर से यहाँ एक धर्मशाला बनी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
ला—मेसर्स गुलाबराय हरदयाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है, तथा सराफी और रुई का
व्यापार होता है।
म—मेसर्स गुलाबराय हरदयाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स नौरंगराय बंशीधर

इस फर्म के मालिक चिड़ावा (सीकर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के झूंझनूंवाला सज्जन
सेठ नौरंगरायजी ५० साल पूर्व अकोला आये। एवं ४० साल पूर्व आपने बाबू पन्नालाल-
खंडेलवाल के भाग में नौरंगराय पन्नालाल नामक फर्म स्थापित की। अभी २ संवत् १९८६
ाप दोनों सज्जनों की फर्में अलग २ हो गईं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ नौरंगरायजी है। आपके पुत्र बंशीधरजी तथा नथमल-
र्म का कार्य्य-संचालन करते हैं।

साहब ने मिल की दिन प्रति दिन उन्नति कर दिखाई। आपने १७ वर्ष तक मिल का संचालन कर इसकी साम्पत्तिक स्थिति को अच्छा दृढ़ बनाया। सन् १९८३ में आपने स्थान पर रा० ब० रामचन्द्र विष्णु डके दादा साहब महाजनि की नियुक्ति कर मैनेजिंग डायरेक्टर पद से इस्तीफा दिया

ऑइल मिल की उन्नति कर रा० ब० भागवत साहब ने अपने नाती को रसायन की शिक्षा देने एवं चरबी रहित साबुन तयार करने के लिये बंगलोर गवर्नमेंट सोप फैक्टरी दाखिल कराया और स्वयं ७० वर्ष की अवस्था में आपने भी उपरोक्त फैक्टरी के क्लास में अपना नाम लिखाया। वहाँ से ज्ञान प्राप्त करके जर्मनी मशीनों के लिये आर्डर दिया और अपनी मिल में साबुन बनाने का विभाग खोला। गत वर्ष आपके यहाँ के बने साबुन ४० हजार की बिक्री हुई।

यह मिल १ लाख ५ हजार की पूँजी से प्राइवेट लिमिटेड की गई है। ३१ लाख रिजर्व फंड है। गत वर्ष इस मिल ने २७७७ टन शीड्स का तेल निकाला। सन् १९४२ ११४२ टन तेल और १६८० टन खली आपने बाहर भेजी। रा० ब० भागवत साहब के सेठ माधव दत्तात्रय भागवत ने नियमपूर्वक इंजीनियरिंग शिक्षा प्राप्त की है। आप की बेंकिंग ब्रांच ताजनापेठ अकोला में है।

मेसर्स विसुनदयाल सीताराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सीतारामजी के पुत्र बाबू जगन्नाथजी छावछरिया आप छावसरी (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ६० साल पूर्व सेठ विसुनदयालजी ने किया। आप १९६२ में स्वर्गवासी हुए। पुत्र सीतारामजी भी संवत् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। यह फर्म आरंभ से ही गल्ला और का कारबार करती है। सेठ सीतारामजी के पश्चात् श्रीहनुमतरामजी छावछरिया इस व्यापार संचालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स विसुनदयाल सीताराम— T. A Chawcharia } यहाँ आढ़त, गल्ला तथा तेल का व्यापार होता है।

इस नाम से आपका ऑइल मिल है। इस फर्म मेसर्स सनेहीराम जुहारमल के साझे में कॉटन व्यापार होता है, इनके यहाँ "टोयो मेनका कंपनी" एजंसी है। इस फर्म की कॉटन सीजन में अकोला डिस्ट्रिक्ट में कई परचेज एजंसियाँ खुल जाती हैं।

सेठ गदाधरजी गोयनका (बन्सीराम रूड़मल) अकोला

श्री रावबहादुर आर० डी० महाजनि अकोला

सेठ जगन्नाथजी लाठरिया (बिशुनदयाल सीताराम) अकोला

स्व० सेठ कुंजीलालजी (शिवलाल कुंजीलाल) अकोला

मेसर्स शिवलाल कुंजलाल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। आप मोमा-रामगढ़ (सीकर) के निवासी हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ शिवलालजी के हाथों से ४० साल पहिले हुआ। सेठ शिवलालजी के ३ पुत्र हुए, सेठ कुञ्जीलालजी, सेठ गंगारामजी एवं शिवप्रसादजी। सेठ कुञ्जीलालजी बहुत होनहार सज्जन थे। आपके द्वारा फर्म के व्यापार को अच्छी तरक्की मिली थी। आप ४० वर्ष की आयु में चैत्र १९८६ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में आपके शेष दोनों भ्राता व्यापार संचालित करते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—शिवलाल कुंजलाल T. No 35 — यहाँ पर कपास और सरकी का व्यापार होता है और ऑइल मिल है।

अकोला—कुञ्जीलाल रामेश्वर—इस नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।

नसरुलागंज (भोपाल) शिवलाल कुंजलाल—कपास का व्यापार होता है।

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेडऑफिस नागपुर है। भारत भर में टाटा की मिलों का कपड़ा वेचने की यह फर्म सोल एजंट है। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में दिया गया है। अकोले में इस फर्म पर कपड़े के व्यापार के अलावा मोटर और पेट्रोल का व्यापार भी होता है।

मेसर्स शिवजी जीवनदास

इस फर्म का स्थापन सेठ शिवजी जीवनदास के हाथों से २१ साल पहिले हुआ। आप मूंद्रा-कच्छ के निवासी भाटिया वैष्णव समाज के सज्जन हैं। आपकी फर्म अकोले में कपड़े का बड़ा कारबार करती है। बम्बई, अहमदाबाद एवं बरार की मिलों से आपका डायरेक्ट सम्बन्ध है।

दि बरार ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड

इस लिमिटेड फर्म का हेडऑफिस अकोले में है। यह सभी तरह के कपड़े का व्यापार करती है। इस फर्म की ब्रांचेज अमरावती एवं यवतमाल में है।

सेठ रामगोपालजी कोठारी (रामचंद्र रामगोपाल) अकोला

सेठ सांवतरामजी पुरोहित (बींजराज मुरलीधर) मलकापुर (पृष्ठ ७९)

सेठ सुखदेवजी कोठारी (रामचंद्र रामगोपाल) अकोला (पृष्ठ [illegible])

सेठ ठाकुरदास जी M. L. C. (मना भाई गोविन्दजी) बुरहानपुर (पृष्ठ [illegible])

मेसर्स हाजी दाऊद उसमान

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई में है। सी० पी० बरार में इसकी १०।१२ ब्रांचेज हैं जिन पर गल्ले और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय खामगाँव में दिया गया है।

बैंक ब्रोकर्स

मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामगोपालजी एवं सुखदेवजी कोठारी हैं। आप माहेश्वरी समाज के बीकानेर निवासी डोपनीवाल कोठारी सज्जन हैं। सेठ रामगोपालजी के पितामह सेठ धनसुखदासजी करीब ५०-६० साल पहिले अकोला आये थे। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने बैंकों की दलाली का व्यापार आरम्भ किया। आज इस लाइन में आपकी फर्म अच्छी और प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ रामचन्द्रजी १९६६ में स्वर्गवासी हुए।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल—बैंकों और व्यापारियों के साथ हुंडी चिट्ठी की दलाली का व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स चिरन्जीलाल सुखदेव—बैंक की दलाली का व्यापार होता है यहाँ सुखदेवजी पार्टनर रूप में काम करते हैं।

कोल-मर्चेंट्स

मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्म का स्थापन सन् १९१७ में बाबू सुगनचंदजी तापड़िया के हाथों से हुआ। आपका मूल निवासस्थान लालमदेसर (बीकानेर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। बाबू सुगनचंदजी शिक्षित एवं उच्च विचारों के सज्जन हैं। आपके पिताजी सेठ सुरतरामजी ३२ साल पहिले अकोले में आये थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी T. No 52 तार का पता Tapadia } मील जीन स्टोर सप्लायर एण्ड कोल मर्चेण्ट का व्यापार होता है।

मेसर्स हाजी दाउद उसमान

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई में है। सी० पी० बरार में इसकी १०।१२ ब्रांचेज हैं जिन पर गल्ले और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय खामगाँव में दिया गया है।

बैंक ब्रोकर्स

मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामगोपालजी एवं सुखदेवजी कोठारी हैं। आप माहेश्वरी समाज के बीकानेर निवासी सोपनीवाल कोठारी सज्जन हैं। सेठ रामगोपालजी के पितामह सेठ धनसुखदासजी करीब ५०—६० साल पहिले अकोला आये थे। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने बैंकों की दलाली का व्यापार आरम्भ किया। आज इस लाइन में आपकी फर्म अच्छी और प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ रामचन्द्रजी १९६६ में स्वर्गवासी हुए।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल—बैंकों और व्यापारियों के साथ हुंडी चिट्ठी की दलाली का व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स चिरञ्जीलाल सुखदेव—बैंक की दलाली का व्यापार होता है यहाँ सुखदेवजी पार्टनर रूप में काम करते हैं।

कोल-मर्चेंट्स

मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्म का स्थापन सन् १९१७ में बाबू सुगनचंदजी तापड़िया के हाथों से हुआ। आपका मूल निवासस्थान लालमदेसर (बीकानेर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। बाबू सुगनचंदजी शिक्षित एवं उच्च विचारों के सज्जन हैं। आपके पिताजी सेठ सुखदेवजी ३२ साल पहिले अकोले में आये थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी T. No 52 तार का पता Tapadia } मील जीन स्टोर सप्लायर एण्ड कोल मर्चेण्ट का व्यापार होता है।

जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरीज़

दि अकोला कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
मेसर्स कुंजीलाल रामेश्वर जीनिंग फैक्टरी
मेसर्स गणेशदास गुलाबचंद जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
दि गामडिया प्रेसिंग फैक्टरी
मेसर्स गुलाबराय गोविंदराय जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
" गुलाबराय हरदयाल जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
दि चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
दि जापान जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
दि मनमाड जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी लिमिटेड
दि मूलराज खटाऊ जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
" मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
दि आर० एस० समार्थ प्रेसिंग फैक्टरी लिमिटेड
दि राधाकृष्ण गोपनीवाल जीनिंग फैक्टरी
दि राली ब्रदर्स जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
रतनसी मूलजी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
सरावगी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
सावंतराम रामप्रसाद जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
साबूराम दौलतराम जीनिंग फैक्टरी

कॉटन मिल्स

दि सावी कॉटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड
मेसर्स बिशुनदयाल जीवनराम कॉटन मिल
" शिवलाल कुंजलाल कॉटन मिल

बैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दी आपरेटिव्ह सैंट्रल बैंक लिमिटेड
मेसर्स हम्मंदीराम शिवप्रसाद
" किशनलाल संतोषीराम
" गणेशदास गुलाबचंद
" गुलाबराय गोविंदराय
" गुलाबराय हरदयाल
" बद्रीदास रामराय
" बख्शीराम रूड़मल
" मोतीलाल बंशीलाल
" मगनीराम जानकीराम
" मानमल आईदान
" रघुनाथदास रामप्रताप
" रामानंद रामभज
" सावंतराम रामप्रसाद

काटन मरचेंट्स

दि अकोला मिल लिमिटेड
मेसर्स गनपतराय गुमदरण
" चुन्नीलाल रामचन्द्र
" गुलाबराय गोविंदराय
" जयनारायण म्हालीराम
" हिम्मुतराय धानाराम
" पन्नालाल हीरालाल (ब्रोकर्स)
" मानमल आईदान
" रघुनाथदास रामप्रताप
" माधवदास बलदमी
" बीजराज कुंजीलाल

हार्डवेयर मरचैन्ट्स
मेसर्स अब्दुलअली मोहनभाई
" अब्दुलअली मानुजी
" करीमभाई मानुजी
" ज्ञीवाजी इसमाइल
" हातुरभाई कादरभाई

मोटर, मोटर गुड्स एन्ड पेट्रोल डीलर्स
मेसर्स केला कम्पनी
" जगन्नाथर पेटरल (डेवलेपेड एजंसी)
" राधाकृष्ण कम्पनी (फोर्ड एजंसी)
" हर्कीलिशं शार (फेय एजंसी)

टिन टिन स्टोर एन्ड कोन मरचैन्ट्स
मेसर्स मूलचंद एन्ड कम्पनी (टिन टिन स्टोर, कोन)
" यू० डी० पटेल एन्ड कम्पनी (टिन टिन स्टोर)

आर्म्स एन्ड अम्युनिसियन डीलर्स
उर्स अकबरअली मुल्ला अब्दुल हुसैन
" बादरभाई हुसैनअली
" इप्स टेलरर

केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्ट
उर्स इप्स टेलरर एन्ड कम्पनी
" पटेल एन्ड कम्पनी

प्रिंटिंग प्रेस
कम्मासी छापखाना
प्रजापक्ष छापाखाना (प्रजापक्ष साप्ताहिक)
राजस्थान प्रिंटिंग एण्ड लिथो वर्क्स लिमिटेड
वदनदार छापखाना
लोकसेवक छापखाना (लोकसेवक साप्ताहिक)

धर्मशाला
गुलाबराव हरदयाल धर्मशाला
रघुनाथदास रामनारायण धर्मशाला

टोपी के व्यापारी
मेसर्स कच्छी ब्रदर्स
" रतनजी कल्याण

चाँदीसोने के व्यापारी
मेसर्स केशवलाल लालचंद
" पृथ्वीराज रतनलाल
" मुकुंददेव शिवनारायण

सार्वजनिक संस्थाएँ
खत्री हितैषी हिन्दी पुस्तकालय
नेटिव्ह जनरल लायब्रेरी
कारंजा लिटररी संस्था
सनातन धर्म-सभा

स्व० सेठ इन्द्रचंदजी मेहता (उमराव धीराज) खामगाँव स्व० सेठ टीकमदासजी (टीकमदास मदनलाल) खामगाँव

सेठ रतनलालजी राठी (विहारीलाल

रामगोपाल के नाम से इस फर्म की दो शाखाएँ हो गई। इन फर्मों का संचालन सेठ टीकमदासजी, सेठ फोजराजजी एवं सेठ रामगोपालजी करते थे। आप तीनों क्रमशः सेठ गनेशदासजी के पुत्र सदारामजी, गुलाबचंदजी, एवं बिहारीलालजी के पुत्र थे।

करीब १० साल पूर्व इन तीनों भाइयों का कारबार भी अलग २ हो गया, तब से सेठ रामगोपालजी की फर्म उपरोक्त नाम से अपना व्यापार कर रही है। वर्तमान फर्म के मालिक सेठ रामगोपालजी एवं उनके पुत्र दाऊलालजी और नंदलालजी हैं। आपके कुटुम्ब की ओर से मथुरा में एक कुंज तथा पोकरन में शिवबाग नामक एक देवल और बगीचा बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगांव—मेसर्स बिहारीलाल रामगोपाल—जीन फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है।
मलकापुर—मेसर्स नंदलाल अचलदास—बैङ्किंग, जीनिंग प्रेसिंग और कॉटन का व्यापार होता है।
जामोद—बिहारीलाल रामगोपाल—आसामी लेन-देन का काम होता है। इसके अलावा,
दिलोड़ा हरमोड़ा, अंतरगांव, मोटा, वेलारा स्थानों में लेन-देन का काम होता है।
अकोला तथा उमर सेड़ के जीन प्रेसों में आपके भाग हैं।

—

मेसर्स मंगुखदास चुन्नीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामलालजी के पुत्र जेठमलजी दम्माणी हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ सुखलालजी के हाथों से हुआ था। आपके बाद क्रमशः सेठ मंगुखदासजी, चुन्नीलालजी एवं रामलालजी ने फर्म का व्यवसाय संचालन किया। सेठ मंगुखदासजी ने इसके कारबार की वृद्धि की थी आपके हाथों से एक श्री नरसिंहजी का मंदिर भी बनवाया गया था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मंगुखदास चुन्नीलाल—सराफी लेन देन होता है।
खामगाँव—जे० आर० दम्माणी—खेती का काम होता है, आप अभी अपनी खेती की
बिक्री लाटरी द्वारा कर रहे हैं।

—

मेसर्स श्रीराम शालिगराम

यह फर्म सेठ गुलाबचंदजी के छोटे भ्राता मूलचंदजी की है। इसका पूर्व स्थापन नागौर (मारवाड़) में हुआ था। सेठ शिवलालजी (मूलचंदजी के पुत्र) के २ पुत्र हुए, श्रीरामजी और शालिगराम जी। इन दोनों भाइयों का कारबार १० साल पहिले अलग २

हो गया। तब से शालिगरामजी का कुटुम्ब अमरावती तथा धामन गाँव में अपना अलग व्यवसाय करता है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ बालकृष्णदासजी एवं आपके पुत्र घनश्यामदासजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स श्रीराम शालिगराम—सराफी लेन देन होता है, एवं बालकृष्णदास भागचंद जीनिंगप्रेसिंग में आपका पार्ट है।

वेलारा—शिवलाल घनश्यामदास—जीनिंग फेक्टरी तथा कपास का काम, इसके अलावा मोप, बरोठ (बरार) तथा नीमोन (नासिक) में कृषि का काम काज होता है।

मेसर्स मन्नालाल शिवनारायण

इस फर्म का हेड आफिस लक्ष्मी बिल्डिंग बम्बई में मेसर्स सनेहीराम जुहारमल के नाम से है। इसके व्यवसाय का विस्तृत परिचय मालिकों के फोटो सहित हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है। इसकी खामगांव ब्रांच का स्थापन संवत १९८१ में हुआ। इस फर्म के अधीन मुलठाणा तालुका में, जलगाँव, म्हेकर, चीकली, नांदूरा तथा पिंपल गाँ में मन्नालाल शिवनारायण के नाम से तथा उज्जैन और रतलाम में सनेहीराम जुहारमल के नाम से तथा भरूँच और अहमदाबाद में रामकुंवर शिवचंदराय के नाम से रूई का व्यापार होता है।

इस फर्म के खामगांव के वर्किंग पार्टनर सेठ शिवजी रतनसी भाई हैं। आप १९८१ से इस फर्म की ओर से जापान की यात्रा कर अभी ३ मास पूर्व वापस आये हैं। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स भवनूलाल गंगाराम

इस फर्म के मालिक इटावा (यू० पी०) के निवासी हैं। यहाँ से आप करीब २०० साल पूर्व नासिक जिले में गये तथा उधर से सेठ भवनूलालजी ६०।६२ साल पहिले खामगाँव आये। आप पुरवार वैश्य समाज के बांसिल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ भवनूलालजी उम्र भर बहुत मामूली हालत में गुजारा करते रहे। आपने करीब ४८ साल पहिले उपरोक्त फर्म स्थापित की। संवत १९७५ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ भवनूलालजी के पुत्र सेठ मोहनलालजी ने इस फर्म के व्यवसाय को चमकाया। वर्तमान में आप ही फर्म के मालिक हैं। श्रीयुत मोहनलालजी पुरवार अच्छे उदार विचारों के सज्जन हैं। आपही के प्रोत्साहन से खामगाँव में तिलक राष्ट्रीय विद्यालय स्थापन हुआ था।

आपने इसमें एक मुश्त ८ हजार रुपया दिया, एवं आरंभ से अभी तक १०१ प्रतिमास देते हैं। करीब २५ हजार की सहायता आप अब तक उक्त संस्था को पहुँचा चुके हैं। इसी प्रकार खामगाँव फीमेल हास्पीटल के उद्घाटन के समय अपनी मातेश्वरी गंगाबाई के नाम से आपने १५ हजार रुपया दिया। खामगाँव म्युनिसिपैलेटी के आप ९ सालों से मेम्बर हैं। खामगाँव के व्यवसायिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगांव—मेसर्स मथनूलाल गंगाराम—रुई की लोकल आढ़त का काम होता है।
खामगांव—मेसर्स मोहनलाल मथनूलाल—यहाँ बैङ्किग, लैंडलार्ड एवं खेती का काम होता है।

मेसर्स रामचंद्र लालचंद

इस फर्म का स्थापन सेठ रामचन्द्रजी कावरा के हाथों से करीब ४५ वर्ष पूर्व हुआ। आपकी फर्म हिंगोली में बहुत समय से व्यापार कर रही है। आरंभ से ही इस फर्म पर लोकल आढ़त का काम होता है तथा वर्तमान में अपनी लाइन के व्यापारियों में यह फर्म अच्छा काम करती है। सेठ रामचन्द्रजी करीब २०।२२ साल पहिले स्वर्गवासी होगये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स रामचंद्र लालचंद—रुई की लोकल आढ़त का काम होता है।
हिंगोली—किशनदास सीताराम—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा खेती का काम।

मेसर्स हीरालाल दीपचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोतीलालजी राठी पोकरन के निवासी हैं। इस दुकान का स्थापन करीब ५० साल पहिले सेठ दीपचंदजी के हाथों से हुआ था। आप करीब ५ वर्ष पहिले स्वर्गवासी होगये हैं। आरंभ से ही इस फर्म में आढ़त का काम काज होता है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स हीरालाल दीपचंद—आढ़त तथा रुई की खरीदी का काम होता है। यहाँ आपकी मोतीलाल ईश्वरदास नामक जीन फेक्टरी है।

ग्रेन एण्ड किराना मर्चेंट

मेसर्स गंगाराम प्रेमसुख

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सरदारमलजी एवं सूरजमलजी हैं। ६० साल से इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है।

सेठ गंगारामजी और प्रेमसुखदासजी दोनों भाइयों ने फर्म के व्यापार को वृद्धि की है। आपकी ओर से यहाँ एक सुंदर धर्मशाला बनाई गई है। फर्म का वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव-मेसर्स गंगाराम प्रेमसुख-गल्ले का व्यापार तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स हाजी दाउद उसमान

इस फर्म के मालिक उपलेटा (काठियावाड़) के निवासी मेमन जाति के सज्जन हैं। यह दूकान चांदूर स्टेशन (बरार) में करीब ६० साल पहिले खोली गई थी। यह कम्पनी बहुत बड़ी पूंजी से शेअरों में विभक्त है। बरार प्रांत में इसका बहुत बड़ा किराने का व्यापार होता है। इसके खास काम चलाने वाले सेठ हाजी महम्मद हाजी आदम, हाजी करीम हाजी दाउद, हाजी लतीफ हाजी दाउद हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स हाजी दाउदउस्मान खांड बाजार तार-पता—अम्बरमोगरा } हेड आफिस है। इसके द्वारा सब शाखाओं पर माल भेजा जाता है।

जलगांव (पूर्व खानदेश) मेसर्स हाजी दाउद उसमान तार का पता—गुलाब } किराना गल्ला तथा फेरोगेट का व्यापार होता है।

मलकापुर—किराना गल्ला तथा तेल का व्यापार होता है।

खामगांव—(तार का पता गुलाब)—किराना, गल्ला, लोहा तथा तेल का व्यापार होता है।

कोला (कादरिया)— " " " "

जापुर— " " " "

नगांव— " " " "

, पुलगांव, आर्वी, वर्धा " " " "

—हाजीदाउद उसमान—(तार का पता महम्मदी) चांवल, गल्ला और सीड्स की खरीदी होती है।

हाजीलतीफ हाजीदाउद—ऑइल मील है।

कलकत्ता—हाजीदाउद उसमान } सुपारी, शक्कर, बारदान, किराना की
११ अमरतल्ला लेन } खरीदी और बिक्री का काम
तार का पता—अम्बरमोगरा } होता है।

इसके अलावा हिन्दुस्तान में कई स्थानों पर इनकी खरीदी की दुकाने हैं।

मोटर गुड्स एण्ड पेट्रोल डीलर्स

मेसर्स केला कम्पनी

इस फर्म के मालिक बाबू सीताराम सुगनचंद केला हैं। आप पोकरन निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन श्रीयुत सीतारामजी के हाथों से करीब [illegible] साल पहिले हुआ था। धीरे २ आपकी फर्म ने अच्छी उन्नति की है। सर्व प्रथम आप ने केला मोटर रबर बेल्टिंग, लुब्रिकेटिंग आइल तथा जिनस्टोर के इम्पोर्ट करने का व्यापार आरंभ किया। करीब ६ साल पहिले डाज और फोर्ड की एजेंसी भी इस फर्म पर आई। तीसरा भाग आपके यहाँ जनरल सामान का है। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स केला कम्पनी—फोर्ड मोटर की एजेंसी, पेट्रोल का व्यापार, बेल्टिंग, जिन स्टोर और जनरल सामान का बहुत बड़ा स्टाक रहता है और बिकता है।

अमरावती—मेसर्स केला कम्पनी—डाज की एजेंसी एवं जनरल व्यापार होता है।

अकोला—मेसर्स केला कम्पनी—डाज की एजेंसी एवं जनरल व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स केला कम्पनी } मोटर, ग्रीसरीज, बेल्टिंग वगैरा का अमेरिका
मेजिस्टिक मेंशन सडहर्स्ट रोड } से इम्पोर्ट तथा आपनी ऑफिस पर भेजने
T. No 126. } का काम होता है।

मेसर्स श्रीनिवासदास बालकृष्णदास

इस फर्म का स्थापन संवत् १९६८ में हुआ। यह मेसर्स [illegible] बन्धुओं की फर्म है। इस फर्म का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बहुत विस्तृत रूप से दिया जा चुका है। इसका कुम्हारा (बरार) का हेड ऑफिस खामगाँव है तथा ब्रांच ऑफिस बल्लारपुर, हुमनाबाद तथा [illegible] में है। इस पर [illegible] मोटर की एजेंसी, पेट्रोल, [illegible]

मोटर गुड्स का व्यापार होता है। इन फर्मों का मेनेजमेंट मेसर्स गोवर्द्धनदास भगवानदास केड़िया करते हैं। फर्म का तार का पता Seth Kedia है।

औषधालय

आयुर्वेदिक औषधि कार्यालय

इस कार्यालय के मालिक डाक्टर वासुदेव केशव गोड़बोले हैं। आप जिला रत्नगिरी मु० निवय सुर्दे के निवासी हैं। डाक्टर गोड़बोले पनवेल में वैद्यक शिक्षा प्राप्त कर २५ साल पूर्व खामगाँव आये। यहाँ आकर आपने कृषि एवं वैद्यक लाइन में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। खामगाँव के सार्वजनिक कामों में एवं कांग्रेस के कामों में आप सहयोग देते रहते हैं। करीब ८ साल से आपने चन्दवासा (इन्दौर स्टेट) में गोड़बोले सेवी संस्था के नाम से कृषि का बहुत सा काम उठाया है। खामगाँव में आपके औषधालय में शास्त्रोक्त अनुभविक औषधियाँ तयार की जाती और विक्रय होती हैं।

जीनिंग फेक्टरीज़

१—अबूबकर अब्दुल रहमान जीनिंग फेक्टरी
२—ईसुफअली शेख जाफरजी एण्ड कम्पनी
३—खामगाँव जीनिंग फेक्टरी लिमिटेड
४—खामगाँव कॉटन प्रेसिंग कम्पनी लि०
५—खामगाँव जीनिंग कम्पनी लिमिटेड
६—गनपत जूथा जीनिंग फेक्टरी
७—गजानन जीनिंग फेक्टरी
८—गोपीलाल ईश्वरदास जीनिंग फेक्टरी
९—घापसी मारा एण्ड कम्पनी
१०—जसराज श्रीराम जीनिंग फेक्टरी
११—टीकमदास मदनलाल जीनिंग फेक्टरी
१२—न्यू सुपरसिड कम्पनी लिमिटेड
१३—न्यू बरार कम्पनी लिमिटेड
१४—न्यू दिस आफ वेल्स कम्पनी लिमिटेड
१५—दि नेटिव जीनिंग फेक्टरी
१६—नन्दे ब्रदर्स जीनिंग फेक्टरी
१७—बिहारीलाल रामगोपाल जीनिंग फेक्टरी
१८—बंशीलाल चिरंजीलाल जीनिंग फेक्टरी
१९—आर० बी० देशमुख जीनिंग फेक्टरी
२०—रायजी ब्रदर्स जीनिंग फेक्टरी
२१—लक्ष्मीनारायण शिवनारायण जीनिंग
२२—विक्टोरिया जीनिंग फेक्टरी
२३—वालकट प्रेस कम्पनी लिमिटेड
२४—विश्वनाथ नागसा जीनिंग कम्पनी
२५—बालकिशनदास भागचन्द जीनिंग फे०
२६—दरोई एण्ड सभापति जीनिंग फेक्टरी
२७—सरदारमल लालूराम जीनिंग फेक्टरी
२८—स्वदेशी जीनिंग फेक्टरी

कॉटन प्रेसिंग फेक्टरीज़

१—खामगांव जीनिंग कम्पनी लिमिटेड
१—खामगांव कॉटन प्रेसिंग कम्पनी

जी यहाँ आये थे, आपने यहाँ आकर घी सरकी आदि का परचूनी व्यापार आरंभ किया। सेठ गुलराजजी ४२ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ गुलराजजी के २ पुत्र हुए। बाबू मूलचन्दजी एवं पन्नालालजी। इनमें से बाबू मूलचन्दजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। व्यवसायिक उन्नति के साथ २ धार्मिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपने अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आप के हाथों से करीब १० कुएँ भिन्न २ स्थानों पर बनवाये गये। यवतमाल के हरएक सार्वजनिक कामों में आपका प्रधान हाथ रहता था। आप शुद्ध खद्दरधारी एवं सदाचारी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास ४९ वर्ष की आयु में ता० १।९।२७ को हुआ। आपकी व्यथा से व्यथित होकर कांग्रेस कमेटि, नगरसभा, म्युनिसिपैलिटी आदि कई संस्थाओं ने एवं कई सामयिक पत्रों ने आपके भाइयों के पास समवेदना सूचक संवाद भेजे थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू पन्नालालजी एवं मूलचन्दजी के पुत्र श्रीयुत गनेशलालजी, हनुमानदासजी एवं बजरंगलालजी हैं। सेठ पन्नालालजी के पुत्र महादेवजी, श्रीनिवासजी एवं रामनिवासजी हैं। इन सज्जनों में से गनेशलालजी और महादेवजी शिक्षित नवयुवक हैं। एवं व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। श्रीपन्नालालजी चोखानी वर्तमान में सेन्ट्रलबैंक, मुख्य मंडल के डायरेक्टर एवं म्युनिसिपैलेटि, कॉटनमार्केट, डिस्ट्रिक्ट एसोशिएशन गोरक्षण के मेम्बर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स गुलराज मूलचन्द—यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा प्रधानतया कपास का व्यापार होता है। कपास की खरीदी के लिये रा० ब० बंशीलाल अबीरचन्द हिंगनघाट, बिड़ला ब्रदर्स बम्बई, माडलमिल नागपुर, सर माणिकजी दादाभाई आदि की एजंसियाँ हैं। बिड़ला ब्रदर्स की ओर से निकाली गई रिच फील्ड ऑइल कम्पनी के यवतमाल जिले के आप एजंट हैं।

रा० ब० मीरखानी रामचन्द्र द्रविड़

इस फर्म के मालिक रायबहादुर मीरखानी रामचन्द्र द्रविड़ हैं। आप वाई (महाबलेश्वर के समीप) के निवासी महाराष्ट्री द्रविड़ ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। रायबहादुर मीरखानी द्रविड़ सन् १८६४ में वाई से केवल १४ वर्ष की आयु में निकले एवं अपने बड़े भाई गणपत बलवंत द्रविड़ के साथ रेलवे कंट्राक्टिंग का काम करते रहे। उस समय रेलवे फार्मिंग और वर्क

स्व॰ सेठ गणपतराव व्यंकटेश द्रविड़ यवतमाल

सेठ छोटूलालजी मोर (नरसिंहदास हनुमानदास) यवतमाल

बहादुर भिकाजी व्यंकटेश द्रविड़

सेठ

आई थी। खंडवा, इन्दौर, मऊँसी, आनंतपुर, विरुनी (मद्रास) आदि के रेलवे के कंट्राक्ट लेने के बाद सब से अंत में आपने मैसूर सोने की खान का रेलवे का ठेका लिया। एवं पश्चात् १८९९ में आप यवतमाल आये। और यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। धीरे २ आपको इस काम में सफलता मिलती गई और आपने आस पास कई जीनिंग प्रेसींग खोली।

रायबहादुर द्रविड़ साहब को सन् १९२७ में गवर्नमेंट से रायबहादुरी का खिताब प्राप्त हुआ है, आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि रह चुके हैं। आपके बड़े भ्राता गणपत व्यंकटेश द्रविड़ १९०३ में अजमेर से पेन्शन पाकर यहाँ चले आये। एवं १९११ में यहीं स्वर्गवासी हुए। आपकी ओर से वाई में गणपत व्यंकटेश के नाम से एक हाई स्कूल चल रहा है। यवतमाल प्रोमेस हास्पील में आपने एक वार्ड बनवाया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—रायबहादुर मोरोबाजी रामचन्द्र द्रविड़—२ प्रेस एवं १ जीन है।
पांढर कवड़ा (यवतमाल) ,, ,, —२ जीन १ प्रेस है।
बोरी (यवतमाल) ,, ,, —१ जीन फेक्टरी है।
दारव्हा (यवतमाल) ,, ,, —२ जीन १ प्रेस फेक्टरी है।

मेसर्स होरमसजी हीरजीभाई

इस फर्म का स्थापन यवतमाल में करीब ४० साल पहले हुआ था। सब से प्रथम टाटा संस लिमिटेड के एजंट होकर सर दोराबजी टाटा यहाँ आये एवं आपने यहाँ एक जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी खोली। २ साल बाद सर दोराबजी टाटा यह काम सेठ होरमसजी नवरोजजी बलगाम वाला को सौंप कर बम्बई चले गये। होरमसजी सेठ ने टाटा संस के पार्ट में यवतमाल और हुबली में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोलीं। पीछे से आपका पार्ट अलग हो गया। एवं तब से आप टाटासंस की यवतमाल की एवं हुबली की जीनिंग फेक्टरी के एजंट हैं।

होरमसजी सेठ के २ पुत्र हुए, सेठ हीरजी भाई होरमसजी एवं नवरोजजी होरमसजी। होरमसजी सेठ सन् १९२० में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हीरजी भाई हैं। आपके पुत्र सेठ जमशेदजी हीरजी भाई एवं पेस्तनजी हीरजी भाई भी व्यापार में भाग लेते हैं। हीरजी भाई के छोटे भ्राता सेठ नवरोजजी होरमसजी सन् १९१० तक आपके साथ काम करते रहे, पश्चात् आप बम्बई चले गये, वर्तमान में आपके "बम्बई समाचार" नामक गुजराती दैनिक और साप्ताहिक एवं बाम्बे क्रानिकल नामक अंग्रेजी दैनिक पत्र निकलते हैं जिनसे भारत का शिक्षित समाज भली भांति परिचित है।

होरमसजी सेठ यवतमाल के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप शिक्षित एवं उन्नत विचारों के पारसी सज्जन हैं। स्थानीय कॉटन मार्केट के बहुत समय तक आप सभापति रह चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—एम्प्रेस मिल नागपुर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—आप इसके एजंट हैं।
हुबली—स्वदेशी मिल बम्बई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—इसके आप एजंट हैं।
यवतमाल—सेठ होरमसजी हीरजी भाई—यहां कॉटन का व्यापार होता है।
संजा (यवतमाल) होरमसजी हीरजी भाई—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

कपड़ा और गल्ला के व्यापारी

मेसर्स नरसिंहदास हनुमानदास

इस फर्म के मालिक दाता (लोसल—जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। आरंभ में ६० साल पहले सेठ नरसिंहदासजी ने यहां आकर अनाज का व्यापार शुरू किया था। आपके ४ पुत्र हुए। सेठ हनुमानदासजी, छोटूलालजी, सूरजमलजी, एवं रामगोपालजी। आप लोगों के समय में दुकान के काम को विशेष उन्नति मिली। सेठ हनुमानदासजी २ साल पहिले एवं रामगोपालजी ५।६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए हैं। इस फर्म की ओर से २।३ कुएं बनवाये गये हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ छोटूलालजी, सूरजमलजी एवं सूरजमलजी के पुत्र नागरमलजी (दत्तक हनुमानदासजी) तथा सेठ रामगोपालजी के पुत्र नथमलजी और हैं। सेठ सूरजमल जी के पुत्र बिहारीलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स नरसिंहदास हनुमानदास—कपड़े का व्यापार, सराफी लेन-देन एवं हुंडी का काम होता है। आपके यहाँ एम्प्रेस मिल के कपड़े की एजंसी है।

यवतमाल—सूरजमल रामगोपाल—गल्लेका व्यापार होता है।
यवतमाल—श्री नरसिंह जीनिंग फेक्टरी—इस नाम से कॉटन जीनिंग फेक्टरी है।
दिग्रस—नरसिंहदास हनुमानदास—इस नाम से आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

स्व० सेठ मूलचंदजी कोमाजी (गुलराज मूलचंद) यवतमाल

स्व० सेठ नरसिंहदास रामबक्स राठी कारंजा

श्रीचौथमलजी मोर

श्रीकन्हैयालालजी मोर (श्रीकृष्ण .....)

मेसर्स कालूराम नारायण

इस फर्म के मालिक लोसल (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाज के गोयल गौत्रीय मोर सज्जन हैं। सेठ कालूरामजी के हाथों से ४० साल पहिले इस फर्म का स्थापन हुआ। आरंभ से ही आप के यहाँ गल्ले, सोना, चाँदी तथा घी का व्यापार होता है। सेठ कालूरामजी २० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ नारायणजी के हाथों से फर्म के कारबार को विशेष तरक्की मिली। नारायणजी सेठ की अवस्था अभी ६५ साल की है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक नारायणजी सेठ के पुत्र बाबू चौथमलजी मोर हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपल मेम्बर, हनुमान अखाड़ा के मैनेजर तथा हिन्दू सभा के सेक्रेटरी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

व्यवसाय—मेसर्स कालूराम नारायण—गल्ले की आढ़त, लोकल व्यवसाय एवं बिक्री का काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण टोरमल

इस फर्म के मालिक बाबू कन्हैयालालजी मोर लोसल (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। यह कुटुम्ब करीब २० साल पहिले यहाँ आया। इस फर्म का स्थापन सेठ श्रीकृष्णजी के पुत्र टोरमलजी के हाथों से करीब ४० साल पहिले हुआ। आपके यहाँ आरम्भ से ही हार्डवेयर और जनरल व्यापार होता है। सेठ टोरमलजी १५-१६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए हैं।

श्रीयुत बाबू कन्हैयालालजी मोर नवीन विचारों के सुधारक नवयुवक हैं। युवक मंडल को चलाने में आपने अच्छी सहायता दी है, इस समय आप इसके कोषाध्यक्ष हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

व्यवसाय—मेसर्स श्रीकृष्ण टोरमल—यहाँ हार्डवेयर, बिल्डिंग मटेरियल्स, स्टेशनरी, ग्रामोफोन एवं सिमिंट वगैरह का व्यापार होता है। इसके अलावा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड एवं म्युनिसिपैल्टी के कन्ट्राक्ट यहाँ होते हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

...प्रेस जिन जीनिंग फेक्टरी
...राज फूलचन्द कॉटन जीनिंग फेक्टरी
१२

श्रीयुत हेमराज कॉटन जीनिंग फेक्टरी
...राम कपूरचन्द जीनिंग फेक्टरी
...दास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

जयरामदास भागचन्द प्रेसिंग जीनिंग फेक्टरी
टीकमदास परमानन्द जीनिंग फेक्टरी
नरसिंहदास हनुमानदास जीनिंग फेक्टरी
धूंटी जीनिंग फेक्टरी
माडल जीनिंग फेक्टरी
रायबहादुर भीखाजी व्यंकटेश द्रविड़ १ जीन २ प्रेस फेक्टरी
रणछोड़दास गांगजी लक्ष्मीदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लालचन्द नारायणदास जीनिंग फेक्टरी

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स कीलाचन्द देवचन्द
" गुलराज मूलचन्द चोखानी
" गोविंदराव पूनाजी बाटी
" जयनारायण म्हालीराम
" जयरामदास भागचन्द
" नरसिंहदास हनुमानदास
" मन्नालाल शिवनारायण
" सर माणिकजी दादा भाई
दि मॉडल मिल नागपुर
मेसर्स सुखदेव रामदेव
" हीरजी भाई होरमसजी बलगाम वाला

विदेशी कम्पनियों की कॉटन पर्चेज़ एजेंसियाँ

गोसो काबूसी केशा लिमिटेड
जापान कॉटन ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
सुमाम कम्पनी
रादली ब्रदर्स लिमिटेड

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स आसाराम शिवजी राम
" कालूराम नारायण
" डायाभाई मावजी
" बाबाजी दौलतराव
" सूरजमल रामगोपाल
" हुकमीचन्द गंगाधर

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचंद चम्पालाल
" नगीनचंद परमानंद
" नरसिंहदास हनुमानदास
दि बरार ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
सेठ रामगोपाल मालानी
मेसर्स बल्लभदास अमृतलाल
" हाजी उमर अल्लान

किराना के व्यापारी

मेसर्स आसाराम शिवजीराम
" डायाभाई मावजी
" हाजी उमर अल्लान कच्छी
" हेमराज केशवजी

गोल्ड सिल्वर मरचेंट्स

मेसर्स रामनारायण रामकुँवर
" सेरमल सूरजमल

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आसाराम शिवजीराम
" टीकाराम एण्ड को
" सरफ अली अली मदम्मद
" श्रीकृष्ण टीरमल

एलिचपुर

जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन के मध्य मुर्तिजापुर जंक्शन से एलिचपुर के लिये एक ब्रांच लाइन आती है। यह स्थान अमरावती से ३४ मील दूर बरार प्रान्त की उत्तरी सीमा पर स्थित है। किसी समय यह शहर निजाम हैदराबाद स्टेट की छावनी के रूप में था। विशाल पुराना शहर कोट, किला तथा दूल्हा रहमानशाह की दरगाह आदि स्थान इसके पुराने वैभव का पता दे रहे हैं। इस शहर का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। ५२ पुरों की बस्ती में इसकी आबादी फैली हुई है। कार्तिक बदी ११ को यहाँ धरहम की यात्रा भरती है। इस स्थान से थोड़ी ही दूरी पर जैनियों का श्रीमुक्तागिरी तीर्थ है।

करीब २५-३० वर्षों पूर्व एलिचपुर कैम्प (जो परतवाड़ा के नाम से मशहूर) से अंगरेजी छावनी हटा ली गई है। इस शहर के शतरंजी, सूसी, मुसलमानी रूमाल अच्छे बनते हैं। कपास की पैदावार अपेक्षाकृत मध्यबरार से कम होती है। इस स्थान पर काटन जीनिंग ३ और ३ प्रेसिंग फेक्टरियाँ एवं १ कॉटन मिल है। जिसका नाम दि विदर्भ मील बरार लीमिटेड है—यह मील सन् १९२३ में रजिस्टर्ड हुई एवं सन् १९२६ में चालू हुई। इसकी पूंजी ११ लाख रुपयों की है, तथा इस समय इस मिल में ११ हजार स्पेंडिल्स और २५० लूम्स काम करते हैं। मिल में रोजाना काम करनेवाले मनुष्यों की संख्या ६०० है। सन् १९२६ से यह मील सूत कातने का एवं १९२९ से कपड़ा बुनने का काम कर रही है। नागपुर में इस मिल का सूत बेचने की एजंसी है। इसकी मैनेजिंग एजंट मेसर्स देरासुरा एण्ड कम्पनी है। बाबा साहब देरासुरा मिल के डायरेक्ट एवं अमलनेर के प्रताप शेठ डायरेक्टरों के प्रेसिडेण्ट हैं। सतपूड़ा पहाड़ समीप आ जाने से यहाँ घास प्रचुरता से पाया जाता है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मिल एजंट एण्ड बैंकर्स

मेसर्स देशमुख एण्ड कम्पनी

इस फर्म के मालिक दक्षिणी ब्राह्मण समाज के भारद्वाज सज्जन हैं। आपका मूल निवास एलिचपुर ही है। ७/८ पीढ़ी से आपके यहां जमीदारी का काम होता है। बादशाह औरंगजेब के समय से मुगलाई की ओर से इस कुटुम्ब को जागीरी प्राप्त हुई। श्रीमान् भगवंतराव देशमुख के हाथों से इस जागीरी की व्यवस्था हुई। आप परगने के आफिसर थे। आपके पुत्र हनुमंतराव देशमुख थोड़ी ही अवस्था में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक देशमुख हनुमंतराव के पुत्र व्यंकटराव देशमुख वर्फ बाबा साहब हैं। आपके पिताजी के स्वर्गवास के समय आपकी आयु केवल २ वर्ष की थी। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद फर्म की जागीरी का भार आप पर आया। आप बड़े उदार विचारों के स्वदेशी प्रिय सज्जन हैं। सन् १९२३ में आपने २१ लाख की पूँजी से "दि विदर्भ मिल बरार लिमिटेड" को जन्म दिया। आपने अपने कपास के व्यापार की बहुत उन्नति की। आपने अपनी मातेश्वरी के नाम से श्रीराधाबाई आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय स्थापित किया है, इसके लिये ४५ हजार की रकम आपने ट्रस्ट के जिम्मे की है तथा दस हजार की लागत से उक्त औषधालय की बिल्डिंग बनवाई है।

बाबा साहब देशमुख के इस समय ६ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः पांडुरंग देशमुख, नारायण देशमुख, मेघश्याम देशमुख, राजेश्वर देशमुख, भगवंत देशमुख एवं गोविंद देशमुख हैं। इनमें पांडुरंग देशमुख फर्म के बैंकिंग, जीनिंग, प्रेसिंग तथा कॉटन का व्यापार संचालित करते हैं। आप यहां के आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल मेम्बर हैं। नारायण देशमुख शेअर लेन देन का काम करते हैं। एवं मेघश्याम कृषि कार्य देखते हैं शेष सब पढ़ते हैं। बाबा साहब देशमुख विदर्भ मिल के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स देशमुख एण्ड को—बैंकिंग लेनी एवं जागिरी का काम होता है। यह फर्म विदर्भ मिल की मैनेजिंग एजेंट है।

एलिचपुर—श्रीपांडुरंग जीन प्रेस फेक्टरी—इस नाम से कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी एवं रुई का व्यापार होता है।

अमरावती—भोंगी देशपांडे—इस दुकान पर कपास का व्यापार होता है। इसमें आपका भाग है।

मेसर्स लालासा मोतीसा

इस कुटुम्ब का मूल निवास बंगेरिया (उदयपुर स्टेट) है। संवत् १७१४ में सेठ लालासा इधर आये। कहा जाता है कि तत्कालीन उदयपुर नरेश से अप्रसन्न होकर कई सौ कुटुम्ब यह प्रांत छोड़कर इधर आ गये और बुरहानपुर एवं निजाम प्रांत में बस गये। उसी सिलसिले में सेठ लालासा भी बुरहानपुर आये। वहाँ से जिन्तूर (निजाम स्टेट) में गये। एवं जिन्तूर से एलिचपुर आये। सेठ लालासा के पुत्र मोतीसा के समय से इस फर्म पर बैङ्किग व्यापार की उन्नति आरंभ हुई।

सेठ मोतीसा के ३ पुत्र हुए। हीरासा, मानिकसा एवं राजाजी उर्फ हरसासा। इनमें से सेठ हीरासा के हाथों से इस फर्म के व्यापार, मान एवं प्रतिष्ठा में बहुत अधिक वृद्धि हुई। इन तीनों भाइयों में हरसासा के पुत्र पासूसा एवं भगवानसा हुए। सेठ हीरासा १९४० में एवं आपके दोनों छोटे भ्राता आपसे ४१५ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। सेठ पासूसा एवं भगवानसा भी २ मास के अंतर से संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ पासूसा के पुत्र सेठ नत्यूसा हैं। आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। करीब १० सालों से आप म्युनिसिपल मेम्बर एवं सभापति का आसन सुशोभित करते हैं। एवं २० सालों से स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपका कुटुम्ब जैन बघेरवाल दिगम्बरी समाज का है।

इस कुटुम्ब की ओर से श्री मुक्तागिरी तीर्थ उत्सव में संवत् १९४८ में १ लाख रुपयों की सम्पत्ति लगाई गई है। वहाँ आपकी ओर से मंदिर तथा धर्मशाला बनी है अभी हाल में खापर्डे साहब से श्री मुक्तागिरीजी की जो ४५ हजार में जमीन खरीदी गई है उसमें २० हजार आपने दिये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स लालासा मोतीसा—बैङ्किग व्यापार होता है। अमरावती जिले में आपका बहुत सा खेती का काम होता है।

एलिचपुर—नत्थूसा पासूसा—कपड़े का व्यापार होता है।

चांदूर बाजार (एलिचपुर) लालासा मोतीसा—बैङ्किग तथा कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स अमरचन्द लादूराम

इस फर्म के मालिक कसेड़ा भूलेड़ा (जयपुर) के निवासी खंडेलवाल वैष्णव समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन १०० वर्ष पूर्व सेठ अमरचंदजी के हाथों से हुआ था। आप अपने पुत्र गिरधारीलालजी के साथ में यहाँ आये थे। सेठ गिरधारीलालजी के हाथों से ही इस फर्म के व्यापार को तरक्की मिली।

मेसर्स हुकुमचंद मुंगीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चन्दूलालजी हैं। आप अलेड़ा (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ हुकुमचंदजी के हाथों से करीब ... वर्ष पूर्व हुआ। तथा सेठ हुकुमचन्दजी के पुत्र सेठ मुंगीलालजी के हाथों से इस फर्म के ... की विशेष उन्नति हुई। आप २० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। आपके समय में मिलिटरी को ... सप्लाई करने का काम इस फर्म पर होता था।

सेठ चन्दूलालजी विदर्भ मिल के डायरेक्टर एवं परतवाड़ा म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर केम्प—मेसर्स हुकुमचन्द मुंगीलाल—कपास, बैंकिंग व जमींदारी का व्यापार होता है।

वलोसा—हुकुमचन्द मुंगीलाल—कपास की खरीदी होती है। यहां की सारडा ... जीनिंग में आपका पार्ट है।

बैंकर्स

कोआपरेटिव्ह सेंट्रल बैंक
किशनलाल मोतीलाल
गोपालदास हीरालाल
मोतीलाल चम्पालाल
हुकुमचन्द मुंगीलाल

कॉटन मरचेंट्स

किशनलाल मोतीलाल
हुकमचन्द मुंगीलाल

कपड़े के व्यापारी

कन्हैयालाल मोतीलाल
छोटेलाल वेदमाई
मूलचन्द केसरीचन्द

गल्ले के व्यापारी

मदनलाल नारायणदास
मुरली रिछपाल

किराने के व्यापारी

करीम हाजी शरीफ
नारायण दौलतराम
महम्मद हाजी शरीफ कच्छी

जनरल मरचेंट्स

किशनलाल मोतीलाव
गुलामहुसेन बोहरा

केरोसिन ऑइल एन्ड पेट्रोल मरचेंट्स

ताराचन्द केशरदास
श्री निवासदास कन्हैयालाल
श्री मोती सुरज धर्मशाला

मेसर्स एमू संगई सोना संगई

इस फर्म के मालिक एमू संगई बघेरवाल दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। सेठ अभय संगई के समय से आपके यहाँ साहुकारी एवं खेती का कार्य आरंभ हुआ। आपके पुत्र सेठ सोना संगई के हाथों से विशेष रूप से व्यवसाय वृद्धि हुई। सेठ सोना संगई संवत् १९४९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पहिले ही आपके पुत्र बाबू संगई स्वर्गवासी हो गये थे एतदर्थ आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तुराल बाई ने सेठ एमू संगई को १९५२ में दत्तक लिया। एमू संगई ने १५ हजार लगाकर श्री जिनेश्वर की पूजा की। आप सोना बाई संगई ए० व्ही० स्कूल के सेक्रेटरी हैं। आपके पुत्र शांति संगई एवं नीमा संगई हैं। शांति संगई एडवर्ड कालेज में पढ़ते हैं। आपके यहाँ कृषि एवं साहुकारी लेनदेन का व्यवसाय होता है।

मेसर्स रुखब संगई मोती संगई

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब मोती संगई हैं। आपका कुटुम्ब करीब २५० साल पूर्व उदयपुर की ओर से इधर आया था। करीब ७।८ पीढ़ी से आप यहीं निवास कर रहे हैं। सेठ मोती संगई के समय से इस कुटुम्ब के व्यवसाय का परिचय प्राप्त होता है। आपके नीमा संगई, पानू संगई एवं पद्मा संगई नामक ३ पुत्र हुए। इनमें से नीमा संगई के एक पुत्र सेठ रुखब संगई हुए आप संवत् १९५१ में स्वर्गवासी हुए। आपके मोती संगई एवं रमासंगई नामक २ पुत्र हुए। रमा संगई संवत् १९५१ में ही गुजर गये।

रायसाहब सेठ मोतीसंगई पर छोटी अवस्था से ही कार भार आ गया। आप ने फर्म के व्यवसाय और मान में विशेष वृद्धि की। आप बघेर वाल जैन दिगम्बर संप्रदाय के संगई सज्जन हैं। ४ जून सन् १९२८ में आपको गवर्नमेंट द्वारा रायसाहब की पदवी मिली है।

रायसाहब सेठ मोतीसंगई ने संवत् १९६५ में जैन महोत्सव की पूजा में करीब १५ हजार रुपये लगाये १९७० में यहाँ एक जैन-मंदिर बनवाने में ४०।५० हजार रुपया खर्च किया। [illegible]री बाग (बंगाल) के पार्श्वनाथ तीर्थ में एक जैन-मन्दिर २५।३० हजार की लागत से आपने बनवाया। खंजन चौक में आपकी मातेश्वरी के नाम से सोना बाई संगई ए. व्ही. स्कूल की स्थापना कर २० हजार रुपया बिल्डिंग बनाने में दिया। इसी प्रकार १० हजार मुक्तागिरी जी की परिक्रमा खरीदने में दिया गया। स्थानीय जैन पाठशाला व्यायामशाला आपके ही परिश्रम से चलती हैं। आपके ६ पुत्र हैं जिनमें सब से बड़े पानू संगई, इन्दौर कॉलेज में एफ. ए. में पढ़ते हैं तथा छोटे रुखब संगई मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फलतः फर्म को सफलता मिली और उसने उन्नति की ओर पैर बढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९४३ में हुआ और तभी से फर्म का संचालन सेठ खुशालचंदजी के हाथ में आया। आपने अपनी पूर्व परम्परा के अनुसार ही फर्म की व्यवस्था संचालित की और फर्म को यहां की अग्रगण्य फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आप जितने व्यापार चतुर हैं उतने ही व्यवहार कुशल भी हैं अतः यहाँ के व्यापारी वर्ग पर आपका अच्छा प्रभाव है।

इस फर्म के मालिकों में सेठ खुशालचन्दजी जाजू और आपके पुत्र बाबू बुलाकीदासजी जाजू तथा बाबू जमनादासजी जाजू हैं। फर्म का व्यापार संचालन सेठ खुशालचन्दजी जाजू ही प्रधानरूप से करते हैं। आपके पुत्र बाबू बुलाकीदासजी होनहार नवयुवक हैं और आप भी व्यापार के संचालन में भाग लेते हैं।

इस फर्म का प्रधान व्यापार रुई, बैङ्किग और जमीदारी का है। सेठ बुलाकीदासजी म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। सेठ खुशालचन्दजी स्थानीय गौशाला के प्रेसिडेण्ट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स ईश्वरदास खुशालचन्द आरवी डि० वर्धा	यहां फर्म का हेड ऑफिस है। तथा कॉटन, महाजनी लेनदेन और जमींदारी का काम होता है। यहां आपकी दो जिनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी है।

मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द गांदी

आप लोगों का आदि निवास-स्थान पोकरन जि० जोधपुर के रहनेवाले हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के गांदी सज्जन हैं।

इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ गुलाबचन्दजी गांदी ने की थी। आपने आरम्भ में कपास का व्यापार और महाजनी लेनदेन का काम आरम्भ किया। आप व्यापार चतुर थे अतः आपने अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६० में हुआ। आप के यहाँ सेठ उत्तमचन्दजी दत्तक आए। अतः आपने फर्म का व्यापार संचालन अपने हाथ में लिया और फर्म को बहुत अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। आज कल यह फर्म यहाँ की अग्रगण्य फर्मों की श्रेणी में मानी जाती है।

इस समय फर्म के मालिक सेठ उत्तमचन्दजी गांदी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं। आप यहाँ की गोरक्ष संस्था, खादी मण्डी एवम् कांग्रेस के खजानची हैं।।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द आर्वी (जि० वर्धा)	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है। और रुई, महाजनी लेनदेन तथा जमीदारी का काम होता है।

सेठ सुखालचंदजी बाज़ (ईश्वरदास सुखालचंद) भार्वी

सेठ उत्तमचंदजी गांधी (गुलाबचंद उत्तमचंद) भार्वी

बा० मुरलीदास जी बाज़ (ईश्वरदास सुखालचंद) भार्वी

मोतीभवन (मोतीलाल [illegible]) [illegible]
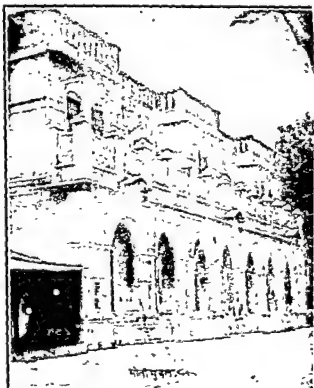
मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द धामगाँव (जि० अमरावती)	खेती और लेनदेन तथा जमींदारी का काम होता है।
मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द मेंढी (जि० अमरावती)	खेती और लेनदेन तथा जमींदारी का काम होता है।
उत्तमचन्द गोकुलदास आर्वी	यहाँ इन्टर नेशनल तथा फ्रीनलर की मोटर एजन्सी है। इसमें आपका ½ हिस्सा है।

मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ भागचंदजी तथा आपके पुत्र बा० दुलिचन्दजी हैं। आप लोगों का हेड आफिस धामणगांव में है। इस फर्म का विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहां यह फर्म कपास का अच्छा व्यापार करती है। इसकी यहां २ जिनिंग तथा १ प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स नारायणदास बद्रीदास

आप लोग सीकर राज्य के परशुराम पुरा के रहनेवाले हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाज के मित्तल गोत्रीय सज्जन हैं। सब से प्रथम इस स्थान में लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ नारायणदास जी इस स्थान पर आये थे अतः यह परिवार एक लम्बे अर्से से आर्वी में निवास करता है।

इस फर्म की स्थापना सेठ नारायणदास जी ने मेसर्स नारायणदास बद्रीदास के नाम से व्यापार आरम्भ कर आपने कपास और महाजनी लेनदेन का काम आरम्भ किया गया। इस फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय नारायणदासजी के पुत्र सेठ बद्रीदासजी को ही है। सेठ नारायणदासजी का स्वर्गवास सम्वत् १९६८ के लगभग हुआ। अतः फर्म का संचालन सेठ बद्रीदासजी के हाथ में आया। आपने फर्म के व्यापार को अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया और आज यह फर्म यहां की प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बद्रीदासजी, गणेशराम, प्रतापचंदजी म्हालूरामजी और सोहनलालजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन प्रधान रूप से सेठ बद्रीदासजी करते हैं और आपकी देख रख में आपके सभी भाई व्यापार का संचालन करते हैं।

इस फर्म पर वर्तमान में कई अनाज, सोना, चांदी कपड़ा, लेन देन का काम होता है तथा जमींदारी और खेती का भी काम होता है। इसी प्रकार यहाँ फर्म की दो जीन फैक्टरियाँ तथा एक प्रेस फैक्टरी है।

अमरावती—मेसर्स जयरामदास भागचन्द	यहां भी आपका जीन और प्रेस है। तथा रुई का व्यापार होता है।
यवतमाल—मेसर्स जयरामदास भागचन्द	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है। तथा कारखाने हैं।
आर्वी—मेसर्स जयरामदास भागचंद	यहां २ जीन और एक प्रेस है। तथा कपास का व्यापार होता है।
बम्बई—मेसर्स जयरामदास भागचन्द फेयेहूल स्ट्रीट T. A. "Godess"	यहां रुई के वायदे तथा हाजर का व्यापार होता है।

मेसर्स विरदीचन्द चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान नांद (मारवाड़) का है। सी. पी. में इस खान-दान को आये हुए करीब १०० वर्ष हुए। सब से पहले सेठ बुधमलजी लूणावत ने धामक (C. P.) में आकर अपना काम प्रारम्भ किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र विरदीचन्दजी ने फर्म के कामको सम्हाला। इस समय भी आप ही इस फर्म के मालिक हैं आपकी आयु इस समय करीब ७२ वर्ष की है। आपके एक पुत्र श्रीयुत चुन्नीलालजी हुए, जिनका स्वर्गवास संवत् १९७६ में हो गया। इस समय आपके २ पौत्र अर्थात् श्रीयुत् चुन्नीलालजी पुत्र श्रीयुत् सुगनचन्दजी तथा श्रीयुत् इन्द्रचन्दजी फर्म के काम को संचालित करते हैं। आप दोनों ही योग्य और व्यापारकुशल सज्जन हैं।

इस फर्म की दानधर्म तथा सार्वजनिक कार्य्यों की ओर भी अच्छी रुचि है। श्रीयुत इन्द्रचन्दजी के विवाह के उपलक्ष्य में ११००० रुपये भिन्न २ कार्य्यों में दान किये थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१ धामक—मेसर्स बुधमल विरदीचन्द—यहाँ पर बैंकिंग और खेती बाड़ी का काम होता है। यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

२ धामणगाँव—मेसर्स विरदीचन्द चुन्नीलाल—यहाँ पर बैंकिंग, सोना-चांदी और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स श्रीराम शालिगराम

इस फर्म के मालिक मूल निवासी पोकरन (जोधपुर) के हैं। आप माहेश्वरी जाति के राठी सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वपुरुष सेठ सुगालचन्दजी तथा आपके छोटे भा[illegible] सेठ मूलचन्दजी हैं। इसमें से सेठ सुगालचन्दजी के परिवार की दुकानें विहारीलाल राम[illegible] गोपाल और टीकमदास मदनलाल तथा गणेशदास गुलाबचन्द के नाम से अकोला, खामगाँ[illegible] और विलोरा में चल रही हैं। तथा सेठ मूलचन्दजी के परिवार का व्यवसाय विशेष कर श्रीराम शालिगराम के नाम से ही चलता है।

सेठ मूलचन्दजी के स्वर्गवास के पश्चात् इस परिवार के कारबार को आपके दत्तक पुत्र सेठ शिवलालजी ने सञ्चालित किया। सेठ शिवलालजी के दो पुत्र हुए उनके नाम सेठ शालिगराम जी और सेठ बालकिसनदासजी थे। इनमें से उपरोक्त फर्म सेठ शालिगरामजी के वंशजों की है। सेठ शालिगरामजी के भी दो पुत्र हुए। सेठ फतेलालजी और सेठ सुन्दरलालजी। इनमें से सेठ फतेलालजी बड़े दक्ष, प्रसिद्ध और नामांकित पुरुष हो गये हैं। आपने व्यापारिक जगत् में सफलता प्राप्त कर लाखों रुपये का द्रव्य उपार्जित किया तथा सामाजिक-जगत् में बड़ी कीर्ति लाभ की। आप द्वितीय माहेश्वरी महासभा के प्रेसिडेण्ट रहे, तथा जाति के अत्यन्त प्रभावशाली नेता रहे। एक बार पोकरन में ठाकुर साहब और माहेश्वरी समाज में झगड़ा हो गया था, उसको भी आपने बड़ी चतुराई से निपटाया। राज्य में भी आपका बहुत बड़ा प्रभाव रहा। आप राज्य पोकरन ठिकाने में सेठ के सम्मान सूचक नामों से सम्बोधित किये जाते थे। आपके हाथ से दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्य भी खूब हुए। आपने करीब तीन लाख रुपयों का एक ट्रस्ट कायम किया जिससे मारवाड़ में शिक्षा-प्रचार, अनाथ-सहायता, गौ-रक्षा और अकाल पीड़ितों की मदद होती है। इसके सिवा नासिक में आपने करीब एक लाख की लागत से एक धर्मशाला और सदाव्रत, तथा त्र्यम्बक घाट में भी एक धर्मशाला और सदावर्त खुलवाया। तथा आपने अपने पुत्र [illegible] लालचन्दजी जिनका स्वर्गवास केवल ११ साल की अवस्था में हो गया—के स्मारक में धामणगाँव में एक चारिटेबिल डिस्पेन्सरी, और एक [illegible] भवन बनवाया। आपके पूर्वजों की ओर से पोकरन में एक भी लक्ष्मीनारायणजी का विशाल मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिर के लिए लाखों रुपये की स्टेट दी हुई है। यह आपके शुभ कार्यों का संक्षिप्त परिचयमात्र है।

संवत् १९७४ में आप संसार से कीर्तिलाभ कर स्वर्गवासी हो गये, और १९७५ में आपके छोटे भ्राता सेठ सुन्दरलालजी तथा बालकिसनदासजी की फर्में अलग २ हो गईं। इस समय इस फर्म के मालिक स्वर्गीय लालचन्दजी के दत्तक पुत्र [illegible] पुरुषोत्तमदासजी हैं। आप[illegible]

वर्ष के हैं। इसलिए सेठ फतेलालजी के पश्चात् उनके सालेफलोदी निवासी श्रीयुत हीराराम जी भैय्या ने काम सम्हाला। आप ५० वर्ष से इस फर्म का काम करते थे। आपका स्वर्गवास करीब १५ साल पूर्व हो गया। इस समय श्रीयुत लीलाधरजी भूतड़ा फर्म का काम योग्यता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े शिक्षित और समझदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगाँव-मेसर्स श्रीराम शालिग्राम—यहाँ पर आपका एक जीन प्रेस है तथा कृषि, बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है। तथा सब प्रकार का व्यापार होता है।

जलगाँव-मेसर्स शिवलाल शालिग्राम—यहाँ पर आपकी एक प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अतिरिक्त यवतमाल, अकोला वगैरह स्थानों में कई फेक्टरियों में आपका साझा है। इसके सिवा झड़गाँव और बोडरवा वगैरह स्थानों पर आपकी बहुतसी जमींदारी है।

मेसर्स श्रीकिशान भण्डारी

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान पाटवा (जोधपुर-स्टेट) में है। आप माहेश्वरी समाज के भण्डारी सज्जन हैं। श्रीयुत् श्रीकिशनजी भण्डारी उन व्यक्तियों में से हैं, जिन्होंने अपने हाथों से अपने पैरों पर खड़े होकर, अपने व्यापार को जमाया, द्रव्य उपार्जित किया और व्यापारी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा हुआ है। पहले आप बहुत साधारण स्थिति के पुरुष थे। मगर २५ वर्ष पूर्व आपने अपनी फर्म स्थापित किया और क्रमशः उन्नति करते २ उसे इतनी उन्नत अवस्था को पहुँचाया।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत् जयनारायणजी, श्रीयुत राधाकिशनजी, और रामेश्वरजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगाँव-मेसर्स श्रीकिशान भण्डारी—यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा रुई का व्यापार होता है। यहाँ पर आपका निजी मकान और खेती भी है।

व्यापारियों के पते

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स—

मेसर्स जयरामदास मालचन्द

„ श्रीनरा देरमलजी

„ विरदीचन्द बुधीलाल

„ मुरारजी माधवजी

„ श्रीराम शालिगराम

„ श्रीकिशनजी भण्डारी

धनेशर लामचंद धर्मशाला (श्रीराम शालिग्राम) नासिक

दुकान मेसर्स श्रीराम शालिग्राम [illegible]।
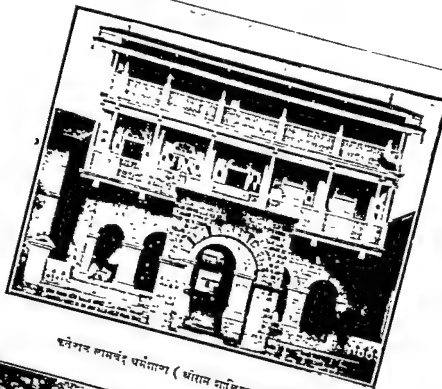
वर्ष के हैं। इसलिए सेठ फतेलालजी के पश्चात् उनके सालेफलोदी निवासी श्रीयु जी भैय्या ने काम सम्हाला। आप ५० वर्ष से इस फर्म का काम करते थे। आप करीब १५ साल पूर्व हो गया। इस समय श्रीयुत लीलाधरजी मूनड़ा फर्म का पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े शिक्षित और समझदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगाँव-मेसर्स श्रीराम शालिग्राम—यहाँ पर आपका एक जीन प्रेस है त और कमीशन एजन्सी का काम होत प्रकार का व्यापार होता है।

जलगाँव-मेसर्स शिवलाल शालिग्राम—यहाँ पर आपकी एक प्रेसिंग फेक्टरी रिक्त यवतमाल, अकोला वगैरह स्थानें में आपका साझा है। इसके सिवा म वगैरह स्थानों पर आपकी बहुतसी

मेसर्स श्रीकिशन भण्डारी

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान पाटवा (जोधपुर-स्टेट) समाज के भण्डारी सज्जन हैं। श्रीयुत् श्रीकिशनजी भण्डारी इन व्यक्ति अपने हाथों से अपने पैरों पर खड़े होकर, अपने व्यापार को जमाया, और व्यापारी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपका व्यापारिक साहस पहले आप बहुत साधारण स्थिति के पुरुष थे। मगर २५ वर्ष पूर्व आपने किया और क्रमशः उन्नति करते २ उसे इतनी उन्नत अवस्था को पहुँचाया।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत् जयनारायण किशनजी, और रामेश्वरजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगाँव-मेसर्स श्रीकिशन भण्डारी—यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। व्यापार होता है। यहाँ पर आपका निजी खेती भी है।

व्यापारियों के पते

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स—

मेसर्स जयरामदास भागचन्द

„ दीनशा पेस्तनजी

„ त्रिलोकचन्द चुन्नीलाल

„ मुरारजी माधवजी

„ श्रीराम शालिग्राम

„ श्रीकिशनजी भण्डारी

कारंजा

जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल-नागपुर लाइन के मुर्तिजापुर जंक्शन से इस स्थान के लिये एक लाइन जाती है। बरार प्रांत की कपास की मंडियों में इसका भी अच्छा स्थान है। यहाँ कई प्रतिष्ठित गुजराती फर्मों की ब्रांचेज हैं। इसके अलावा विदेशी फर्मों की एजंसियाँ हैं। यहाँ करीब ५० हजार गाँठ रुई प्रतिवर्ष बँधती है। यहाँ करीब १५ जीनिंग फेक्टरियाँ हैं। प्रसिद्ध स्थान—

(१) कस्तूरी की हवेली—किम्वदन्ति है कि इस इमारत के बनवाने में ६० ऊँट कस्तूरी नींव में डाली गई थी। और उसके बदले में इस हवेली के निर्माता धनिक कुटुम्ब ने एक ही सिक्के के रुपये दिये थे। उक्त परिवार "संगई" के नाम से यहाँ सम्बोधित किया जाता है।

(२) जैन सम्प्रदाय के ३ प्राचीन मंदिर भी यहाँ विद्यमान हैं—१—सेनगण २—बलात्कार और ३—काष्टा संगई। उपरोक्त स्थानों से पता लगता है कि कारंजा बहुत ऐतिहासिक स्थान है। और बहुत समय पूर्व यह एक समृद्धिशाली माना जाता था।

(३) श्रीमहावीर ब्रह्मचर्य्याश्रम—इस आश्रम का जन्म वीर सं० २४४४ की अक्षय तृतीया को हुआ। इसमें करीब १२५ विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसमें व्यायाम शाला, पुस्तकालय, वाचनालय, व्याख्यान समिति सभी आवश्यक विभाग हैं। इसका ध्रौव्यफण्ड ८५५००) है जिससे सात आठ हजार रुपये वार्षिक की आमदनी होती है। इसके अध्यक्ष श्रीयुत जयकुमार देवीदास चँवरे और मंत्री श्यामलाल डुलासा कावरी हैं। संस्था उन्नतिमान है।

मेसर्स गोपालदास अम्बादास चंवरे

स फर्म के मालिक बहुत लम्बे समय से कारंजा में निवास करते हैं। इसके पूर्व आप कोटा
ी ओर से इधर आये थे। सेठ गंगासा चंवरे के हाथों से इस कुटुम्ब के व्यापार को
मेली। आपके ४ पुत्र हुए सेठ देवीदास चंवरे, सेठ अम्बादास चंवरे, सेठ जिनवरसा

सेठ अम्बादास गंगाजी चंवरे—कारंजा

स्व. पद्माकर अम्बादास चंवरे—कारंजा

सेठ गोपालदास चंवरे—कारंजा

सेठ रामदास पद्माकर चंवरे—कारंजा

मेसर्स मोतीलाल ओंकारसा

इस फर्म के मालिक सेठ ओंकारसा गंगादास के पुत्र सेठ मोतीलालजी एवं धन्नूलालजी हैं। आप बघेरवाल जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। स्थानीय ब्रह्मचर्याश्रम में आप की ओर से भी मदद दी गई है। आपके यहाँ धन्नूलाल ओंकारदास के नाम से कपड़े का और मोतीलाल ओंकारदास के नाम से कृषि और लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स मूलजी जेठा एण्ड कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में पृष्ठ २२ में दिया जा चुका है। यह फर्म कारंजा के न्यू ईस्टइण्डिया प्रेसिंग कम्पनी की मैनेजिंग एजंट है। १८७५ में इस प्रेसिंग कम्पनी की स्थापना की गई। कारंजा के अलावा मुर्तिजापुर, अकोला, वाशिम, अकगाँव आदि कई स्थानों पर इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। बम्बई के व्यापारिक क्षेत्र में यह बहुत प्रतिष्ठासम्पन्न फर्म समझी जाती है।

मेसर्स रामजी नाइक कास्कर

इस प्रतिष्ठित कुटुम्ब का लम्बी अवधि से यहीं निवास है। सेठ रामजी नाइक के आजा के हाथों से इस कुटुम्ब में व्यवसाय आरम्भ हुआ। आप दक्षिणी ब्राह्मण समाज के गौतम ऋषि गोत्रीय सज्जन हैं। आपके पश्चात् क्रमशः श्रीतुकाराम कास्कर, श्रीकृष्णाजी कास्कर, श्रीरामजी कास्कर ने फर्म का व्यवसाय संचालन किया। सेठ तुकाराम कास्कर ने इस फर्म के व्यवसाय की विशेष उन्नति की। आपने यहाँ एक धर्मशाला का भी निर्माण कराया। इसके अलावा इस कुटुम्ब की ओर से यहाँ एक श्रीरामजी मन्दिर बना है। तथा सदावर्त का प्रबंध है। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठा-सम्पन्न मानी जाती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ भगवंत राव कास्कर हैं। आप सेठ रामजी कास्कर के नाम पर दत्तक आये हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा—रामजी नाइक कास्कर—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा बैंकिंग व्यापार होता है

अमरावती— „ —जीनिंग फेक्टरी तथा ऑइल मिल है।

धामनगाँव— „ —ऑइल मिल है।

नागपुर— „ —जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

हिंगनघाट— „ —जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स रामधन रघुनाथ

इस फर्म के मालिक मूंडवा (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी समाज के सज्जन हैं। करीब १२५ वर्षों से यह दुकान यहाँ कारबार करती है। पहले इस दुकान पर सालगराम विरदीचंद नाम पड़ता था।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवप्रतापजी हैं। आपके यहाँ कारंजा में रामधन रघुनाथ के नाम से खेती तथा साहुकारी व्यवहार एवं मोहनलाल बालकिशन के नाम से रुई का कारबार होता है।

मेसर्स रामचन्द्र चन्दनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान फलोदी (जोधपुर स्टेट) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय गुलेछा गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९१३।१४ में सेठ इन्द्रचन्द्रजी के हाथों से हुआ। सेठ रामचन्द्रजी के ५ पुत्र हुए। १ सेठ कल्यानमलजी, २ इन्द्रचंन्दजी, ३ अमोलकचंदजी, ४ सरदारमलजी तथा ५ चंदनमलजी। इन सब भाईयों का कारबार २५ साल तक शामिल होता रहा और उसके बाद से सेठ चन्दनमलजी का कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहा है। आप १९५७ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ चंदनमलजी के ४ पुत्र हुए। मूलचन्दजी, सोभागमलजी, पूनमचन्दजी तथा दीपचंदजी इनमें से दीपचंदजी १९५७ में स्वर्गवासी हो गये हैं। संवत् १९५९ में आपकी ओर से बम्बई में दुकान खोली गई। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स मूलचन्द सोभागमल (बदामका झाड़) कालबादेवी—यहाँ आढ़त का काम होता है।
कारंजा—मेसर्स रामचन्द चन्दनमल—बैङ्किग कपड़ा चाँदी सोना का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

मेसर्स दि अकबर प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
,, कारंजा जीनिंग कम्पनी
,, नरसिंह शिवजी जीनिंग फेक्टरी
,, नरेन्द्र जीनिंग फेक्टरी
,, मरकेंटाइल प्रेसिंग कम्पनी
,, मारिकसा करसमा जीनिंग फेक्टरी
,, न्यू मुफस्सिल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
,, न्यू ईस्ट इण्डिया प्रेस कम्पनी लिमिटेड
,, रामजी नाइक काण्टन जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड
,, रामकिशन लॉकड़ जीनिंग फेक्टरी

कपास के व्यापारी

मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड कम्पनी
" तनसुखराम वंशीधर
" बालमुकुन्द चांडक
" मूलजी जेठा कम्पनी
" मोहनलाल बालकिशन
" रघुनाथ मागीलाल
" रामजी नाइक काण्णव

हार्ड वेअर मरचेंट

मेसर्स अब्दुलकय्यूम अब्दुलअली
" अमानत हुसेन हकीमुद्दीन
" इस्माइलजी महम्मदअली
" गुलामहुसेन ईसुफअली
" हिपतुल्ला भाई अब्दुलअली

विदेशी कम्पनियों की एजंसियाँ

मेसर्स गोसो कानूसी केशा लिमिटेड
" जापान ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
" टोयो मेनका केशा लिमिटेड
" याला फट मदर्स लिमिटेड

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स नारायण प्रागजी सम्मत
" मोतीलाल ओंकारदास
" रामचन्द्र चन्दनमल
" हाजीमहम्मद शाहमहम्मद

सेगांव

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे की भुसावल नागपुर लाइन पर जलम्ब और मूर्तिजापुर जंक्शन के बीच खाम गांव नामक शहर के समीप है। यहाँ कपास की ६ जीनिंग और ६ प्रेसिंग फेक्टरियां तथा १ ऑइल मिल है। प्रति वर्ष ३०।४० हजार गांठ रुई की औसत आमद इस स्थान पर है। कपास की यह छोटी सी और अच्छी मंडी है। खामगांव से प्रति दिन सैकड़ों मोटरों एवं लारियों की आमदरफ्त यहाँ रहा करती है। यहां से बिनोले (सरकी) पंजाब, बम्बई एवं काठियावाड़ के लिये रवाना किये जाते है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स सुखदेव रामदेव

इस फर्म के मालिक खास निवासी शाहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल समाज के सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सुखदेवजी के हाथों से संवत् १९२३ में हुआ। इस फर्म

के व्यापार की विशेष उन्नति सेठ सुखदेवजी के पुत्र रामदेवजी एवं भावरमलजी के हाथों से हुई। आप ही दोनों वर्तमान में फर्म के मालिक हैं। आपकी ओर से देश में एक सुंदर धर्मशाला बनी हुई है। सेठ रामदेवजी को १९२४ में रायसाहब की उपाधि मिली है। यहाँ के आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ रामदेवजी के पुत्र सेठ गज्जूलालजी कॉटन मार्केट के प्रेसिडेंट हैं। आपकी फर्म का प्रधान व्यापार कपास का है। इनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
शेगांव—मेसर्स सुखदेव रामदेव—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा रुई का व्यापार होता है।
राम गांव—मेसर्स सुखदेव रामदेव—रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स राय बहादुर हरदत्तराय रामप्रताप चमड़िया

इस फर्म का हेड ऑफिस कलकत्ता है। कलकत्ते के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित एवं प्रधान धनिकों में समझी जाती है। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के द्वितीय भाग में चित्रों सहित दिया गया है।

संवत् १९५८ में इस फर्म की शेगांव में जीनिंग और १९६५ में प्रेसिंग फेक्टरी खोली गई। इस दुकान का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शेगांव—राय बहादुर हरदत्तराय रामप्रताप जीनिंग प्रेसिंग तथा न्यूजीन फेक्टरी। इस दुकान पर श्रीजुहारमलजी कमलिया संवत् १९६ से काम करते हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

जयनारायण म्हालीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
न्यू मुफस्सिल कम्पनी लि० „ „
न्यू जीन फेक्टरी „ „ „
रानी मदर्स लिमिटेड „ „ „
सुखदेव रामदेव „ „ „
रा. ब. हरदत्तराय रामप्रताप „ „
श्रीराम शालिगराम „ „ „

ऑयल मिल्स

न्यू मुफस्सिल कम्पनी ऑइल मिल्स

कपास के व्यापारी

मेसर्स केवलराम रामेश्वर
„ जयनारायण म्हालीराम
„ माणिकजी परवत
„ सुखदेव रामदेव

कपड़े के व्यापारी

केदारमल मन्नालाल
गणपतलाल मन्नालाल
गंगादास भीमराज

किराना के व्यापारी

मेसर्स उमर हासम
„ गोंदूराम मंगलचंद
„ बलदेवदास लक्ष्मीनारायण
„ हाजी अली अब्दुल्ला

आकोट

इस स्थान अकोला के समीप उत्तर की ओर बसा हुआ है। प्रति वर्ष २०।२५ हजार रुई की गाँठें यहाँ बँधती हैं। यहाँ १३।१४ कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। यहाँ के बहुत से व्यापारियों का परिचय अकोला आदि स्थानों में पहिले दिया जा चुका है।

सेठ लालजी विट्ठोबा पाटील

इस कुटुम्ब का करीब १३ पीढ़ी से सावरा (आकोट-बरार) में निवास है। आपके मूल श्री जयसिंह राव समझे जाते हैं। आप मराठा (पाटील) सज्जन हैं। इस कुटुम्ब के व्यापार को सेठ विट्ठोबा पाटील के समय से उन्नति आरम्भ हुई। सेठ लालजी पाटील ने इसके कामकाज को विशेष चमकाया। आकोट अंजनगाँव में आपने जीनप्रेस खोले, कई मिलों एवं इंश्युरंस कम्पनियों के आप शेअर होल्डर हैं। बरार प्रान्त में आपकी बहुत बड़ी कास्त होती है। आप अकोला सैंट्रल बैंक के डायरेक्टर एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर रह चुके हैं। लालजी सेठ की अवस्था इस समय ६२ वर्ष की है। आप व्यापारिक काम अपने पुत्रों पर छोड़ कर तीर्थ यात्रा में रहा करते हैं। आपने सावरा में एक ए. व्ही. स्कूल एवं पंढरपुर में एक धर्मशाला बनवाई है।

लालजी सेठ के इस समय ४ पुत्र हैं। श्रीयुत मारुतीलालजी, श्री केशोरावलालजी, श्री माधवलालजी एवं हरीलालजी पाटील हैं। इनमें से श्री केशोराव पाटील अभी इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्वीटजरलैंड एवं स्कॉटलैंड की यात्रा कर के आये हैं। आप अभी फिर अमेरिका जाने का विचार कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सावरा (आकोट) लालजी विट्ठोबा पाटील—कृषि एवं लेन-देन का काम होता है।

आकोट—फांसी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लालवानी प्रेसिंग फेक्टरी } इन नामों से कारखाने हैं।

अंजनगांव—लालजी पाटील जीनिंग फेक्टरी-जीन फेक्टरी है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि आकोट कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लि०
सेठ आत्माराम अनंतराम जीनिंग फेक्टरी
काशीनाथ अप्पालालजी पाटील (लालवानी) प्रेसिंग फेक्टरी
गिरधारीलाल दामोदरदास जीनिंग फेक्टरी
न्यू बरार प्रेस कम्पनी लिमिटेड
न्यू आकोट जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड (फांसी जीन प्रेस)
मारवी नारायण जीनिंग फेक्टरी
रामदत्त किशनदयाल जीनिंग फेक्टरी
लादूराम बालकिशनदास जीनिंग फेक्टरी
सूरजमल श्रीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

मुर्तिजापुर

यह स्थान जी० आई० पी० की मेनलाइन पर बरार प्रांत के मध्य में अकोला के समीप बसा है। यहाँ से एलिचपुर एवं यवतमाल के लिये ब्रॉच लाइन जाती है। यहाँ का रुई का व्यापार प्रधानतया भाटिया व्यापारियों के हाथ में है। मेसर्स मूलजी जेठा फर्म का परिचय हम जलगाँव में दे चुके हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्ट्रीज

गोकुल डोसा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
जमनादास नरसी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
न्यू मुफस्सिल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

गोवर्द्धनदास अमरचन्द
डायालाल हरजीवनदास
पुरुषोत्तमदास गोकुलदास
सुंदरजी लक्ष्मीचंद

गल्ला किराना

तनसुखराय बंशीधर
हाजी दाउद उसमान
शिवराम राधाकिशन
निर्भयराम बेचरभाई (किराना)

मलकापुर

यह स्थान जी. आई. पी. रेलवे की मुसावल नागपुर लाइन की मेनलाइन पर बरार प्रांत के बुलढाणा जिले में स्थित है। यहाँ करीब ९ कॉटनजीनिंग ४ प्रेसिंग फेक्टरी एवं ३ ऑइल मिल है। कपास की ३०।३५ हजार गाँठों का पाक प्रतिवर्ष यहाँ पकता है। करीब ४० हजार पल्ला (१२० सेर का पल्ला) मुंगफली की यहाँ प्रतिवर्ष आमद होती है। यहाँ का तेल कानपुर, मिर्जापुर, बम्बई आदि स्थानों में एवं खली विलायत और बम्बई जाती है।

कॉटन मिल—खान देश प्रांत में जलगाँव, चालीसगाँव, अमलनेर और धूलिये में मिलाकर कॉटन मिलें हैं। सबसे प्रथम सेठ मूलजी जेठाभाई ने सन् १८७३ में पूर्व खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स की स्थापना की। उसके पश्चात् १९०६ में अमलनेर में, उसके पश्चात् चालीसगाँव में, सन १९२१ में जलगाँव में तथा १९२६ में धूलिये में मिलों का उद्घाटन किया गया।

व्यापारिक बस्ती—इस शहर की जन संख्या लगभग ३० हजार है। व्यवसायिक दृष्टि से मारवाड़ी, गुजराती और कच्छी प्रधान हैं। इनमें भी व्यवसाय में सबसे अधिक व बड़ा भाग मारवाड़ी व्यापारियों का है।

बैंक—जलगाँव शहर में २ बैंके हैं।

(१) इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड—इस प्रसिद्ध बैंक की शाखा जलगाँव में है।

(२) पूर्व खानदेश सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक—इस बैंक की स्थापना सन १९१६ में हुई। खानदेश में इस बैंक की कई सौ शाखाएं हैं। यह कृषिकारों को एवं अन्य रोजगारियों को बहुत स्वल्प ब्याज पर रुपया उधार देती है। इस बैंक ने अपने जीवन काल में आशातीत उन्नति कर दिखाई है। बैंक का हेडऑफिस जलगाँव में है

व्यवसायिक एसोसिएशन—

<u>दि जलगांव क्लाथमर्चेंट एसोसिएशन</u>—इस सभा का उद्देश खानदेश जिले में होने वाले कपड़े के व्यवसाय की उन्नति करना, तथा कपड़े के व्यापार में पैदा होने वाले झगड़े निपटा कर सहूलियत पैदा करना है। इस एसोसिएशन ने कपड़े की बिक्री पर अपना टैक्स लगा रक्खा है और मेम्बरों की फीस अलग लगाई है। इसकी मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन सेठ मानमल सुगालचंद हैं। एसोसिएशन के अध्यक्ष सेठ जयकिशन रामविलास, उपाध्यक्ष सेठ नागनाथ गनेशराम तथा मंत्री राव साहब रूपचंद मोतीराम और शंकरलाल गुलाबचन्द हैं

कॉटन मिल्स—

<u>दि खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड</u>—इस कम्पनी की स्थापना सन् १८८३ में हुई। यह मिल भारत की बहुत पुरानी मिलों में से है। आरम्भ में इसकी स्थापना ७ लाख ५० हजार की पूंजी से की गई। पर इस मिल की आर्थिक परिस्थिति बहुत उत्तम है। इसकी मैनेजिंग एजंट मेसर्स मूलजी जेठा कम्पनी है। और आफिस दफ्तर बम्बई

रेमिरण्ड लेन फोर्ट में है। इस समय इस मिल में २२६६४ स्पेंडिल्स और ४५९ लूम्स हैं। ३४९ लूम मोटा सूत तयार करने के हैं। इसके अलावा ब्लेकेट के २८८ स्पेंडिल्स और १६ लूम हैं। मिल में प्रति वर्ष करीब २० लाख पौंड कपड़ा, २७ लाख पौंड सूत और २ लाख ३५ हजार पौंड ब्लेंकेट तयार होता है। इसमें १५२९ आदमी काम करते हैं। मिलने अन्तिम डिविडेंट १२५ और ७५) बाँटा है। मिल की ओर से जलगाँव, नांदेड़, परभनी तथा पूर्णा (नांदेड़) में रूई की खरीदी होती है। तथा फरजापुर (निजाम) जलगाँव, वेल्लुंगर, कागवड़, कसंडवड (सदर्न मराठा कंट्री) और चांदा में ५ जीनिंग एवं ४ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इस मिल ने अपने ५० वें वर्ष की गोल्डन ज्युबिली के उपलक्ष में ४ मेटरनिटी बेड रक्खे हैं। मिल में धुलाई व रंगाई के अलग अलग कारखाने हैं। *मिल का कपड़ा बेचने की नीचे लिखी जगहों पर शाखाएँ हैं।*

१ सागर—एजण्ट हालचन्द धरमचन्द
२ आगरा—एजण्ट राय बहादुर सूरजभान सेठ
३ दिल्ली—सेठ चतुर्भुज गोवर्द्धन दास लक्ष्मी राय मारकीट
४ कानपुर—सेठ चतुर्भुज गोवर्द्धनदास शाहू कोठी
५ अमृतसर—लाला लक्ष्मी साही
६ अंडोली (मद्रास)—मूलजी जेठा कम्पनी
७ अमरावती—एजंट रतनचन्द छगनलाल
८ कलकत्ता—मूलजी जेटा एण्ड कम्पनी २१ पोलक स्ट्रीट

इस मिल के लोकल एजंट मि० पुरुषोत्तम जेठाभाई अंजारिया हैं। आपका जन्म १८७६ में अंजार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा विंगोरला में प्राप्त करने के बाद १८९४ में आपने बंबई में मेट्रिक पास की। तथा १८९५ से आपका सेठ मूलजी जेठा फर्म के साथ सम्बन्ध हुआ। आप भाटिया मित्र मण्डल के प्रधान मेम्बर थे। आप जलगाँव मिल के असिस्टंट एजंट पद पर भेजे गए। १८९८ से १९०४ तक आप मद्रास मिल के असिस्टंट एजंट पद पर काम करते रहे। वहाँ से १९०८ तक आप करांची स्पिन पञ्जाब कॉटन प्रेस में काम करते रहे। एवं तत्पश्चात् जलगाँव में मिल एजंट पद पर कार्य्य करने लगे। इस बीच सन् १३ से १६ तक आपने कच्छमांडवी में निवास किया। आपने जलगाँव म्युनिसिपैलेटी में १९१० से २५ तक मेम्बर पद पर और तब से आज तक प्रेसिडेण्ट पद पर काम किया। इसी प्रकार आप ताल्लुकालोकल बोर्ड के वाइस प्रेसिडेंट, डिस्ट्रिक्टबोर्ड के वाइसप्रेसिडेंट, सेंट्रल कोआपरेटिव्ह बैंक के डायरेक्टर का पद सुशोभित करते रहे। वर्तमान में आप सरकार की ओर से बैंक के डायरेक्टर, ईस्ट खानदेश नरसिंह एसोसिएशन तथा लेडी विलसन मेटरनिटी एसोसिएशन की बोर्ड के मेम्बर और वल्लभदास बालजी वाचनालय और गुजरात बन्धु समाज के प्रेसिडेंट रहे।

जलगाँव के आप अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको १९१२ में सितम्बर कोरोनेशन दरबार मेडल मिला। आप यहाँ के सेकण्ड क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट बेंच के चेयरमैन हैं। आप १९०४ से फ्री मेनशन हैं। और लॉज के पास्ट मास्टर और चेपटर के पास्ट प्रिंसिपल जेड (Z) हैं। आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े श्री उदयसिंह पढ़ते हैं।

दि भागीरथ स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मिल की स्थापना २० लाख की पूंजी से सन १९२१ में हुई। इसकी मेनेजिंग एजंट मेसर्स भागीरथ रामचन्द्र एण्ड कम्पनी है। इस समय मिल में ७२०० स्पेंडिल्स और १११ लूम हैं। शीघ्र ही २८०० स्पेंडिल्स और डाले जा रहे हैं। तथा लूम संख्या भी ३०० की जा रही है। १९२३।२४ में यह मिल चालू हुई। इस समय मिल में ५५० आदमी काम करते हैं। मिल की अपनी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

मिल ऑनर्स

मेसर्स मूलजी जेठा एण्ड कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय इसके संस्थापक श्रीमान स्वर्गीय सेठ मूलजी भाई के चित्र सहित हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में दिया गया है। इस फर्म ने १८७३ में जलगाँव में एक मिल की स्थापना की। खानदेश में यह सब से पहिली मिल थी। बम्बई के व्यापारिक क्षेत्र में इस फर्म की गणना ख्याति प्राप्त व्यवसायियों में मानी जाती है। बम्बई के प्रसिद्ध मूलजी जेठा मार्केट (न्यू पीस गुड्स बाजार कं० लिमिटेड) की मैनेजिंग एजंट भी यही फर्म है।

इसके अलावा खानदेश और बरार में इस फर्म के जलगांव, कारंजा, मुर्तिजापुर, अकोला, वाशिम आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा कॉटन का व्यापार होता है।

मेसर्स रामचन्द्र हुकमीचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्री सेठ भागीरथजी माहेश्वरी समाज के सज्जन हैं। आपका मूल-निवास मांडल (उदयपुर स्टेट) में है। मांडल से करीब १२५।१५० वर्ष पूर्व सेठ डोंगाजी धामनगाँव (जलगाँव) आये थे। सेठ हुकमीचंदजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। सेठ हुकमीचंदजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने इस फर्म के

व्यापार का संचालन किया। आपने धामनगाँव में एक जीनिंग फेक्टरी खोली। संवत् १९६२ में आप स्वर्गवासी हुए।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र सेठ भागीरथजी हैं। आपने सन् १९१७ में दि भागीरथ स्पीनिंग एण्ड वीविंग-मिल्स कम्पनी लिमिटेड का स्थापन किया। आपकी ओर से जलगाँव में "भागीरथ स्कूल" नामक एक अंग्रेजी स्कूल चल रहा है। यहाँ के टाउनहाल में आपकी माताजी के नाम से एक जीमखाना सन् १९२५ में बँधवाया गया है। स्थानीय अस्पताल में भी आपकी ओर से ५ हजार रुपये दिये गये हैं। आपके शिवनारायणजी, रामनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी नामक ३ पुत्र हैं, जिनमें शिवनारायणजी कारबार में भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धामनगाँव (जलगाँव)—मेसर्स रामचन्द्र हुकमीचंद—हेड ऑफिस है। यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा साहुकारी लेनदेन और खेती का काम होता है।

जलगाँव—मेसर्स भागीरथ रामचन्द्र—इस नाम से आपकी फर्म भागीरथ मिल की मेनेजिङ्ग एजंट है। इसके अतिरिक्त गल्ले का व्यापार और लक्ष्मी-ऑइल मिल के कंट्राक्टिंग का संचालन होता है। यहाँ से धामनगाँव और किनगाँव तक आपकी प्राइवेट टेलीफोन सर्विस है।

किनगाँव (पूर्व खानदेश)—मेसर्स शिवनारायण भागीरथ—इस नाम से जीनिंग फेक्टरी है और कपास का व्यापार होता है।

गोल्ड सिल्व्हर मरचेंट्स

मेसर्स राजमल लखीचंद

इस फर्म का हेड ऑफिस जामनेर (पूर्व खानदेश) में है। आप ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की जलगाँव तथा खानदेश के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। इसके मालिक बाबू राजमलजी ललवानी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्र सहित जामनेर में दिया गया है। जलगाँव में आपकी फर्म पर प्रधानतया चाँदी-सोना तथा बैङ्किंग व्यापार होता है। सेठ राजमलजी ललवानी जलगाँव के सार्वजनिक कामों में भाग लेते रहते हैं। आप भागीरथ मिल के डायरेक्टर हैं।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स फानजी शिवजी

इस फर्म के मालिक कच्छ बारोई (मूँदरा) के निवासी हैं। आप वीसा ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। सवत् १९४३ में लालजी सेठ ने देश से आकर मसावद (जलगाँव) में दुकान की। शिवजी सेठ के ४ पुत्र हुए। लालजी सेठ, कुँवरजी सेठ, कानजी सेठ और शिवजी सेठ। इस समय इन सब भाइयों का कार बार अलग २ होता है। लालजी सेठ एवं कानजी सेठ का व्यापार संवत् १९६४ में अलग २ हुआ। कानजी सेठ ने कपास गल्ले के व्यापार में अच्छी उन्नति की है। आपने सेंदुरनी में १९७५ में जीनिंग और प्रेसिंग १९७९ में जलगाँव में जीनिंग प्रेसिंग, १९८३ में नीम्थोरा में प्रेसिंग एवं १९८५ में मसावद में जीनिंग फेक्टरी खोली। ये सब कारखाने आपके घरू हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम राघवजी कानजी एवं जादवजी मानजी हैं। ये दोनों व्यापार में भाग लेते हैं। आपका तार का पता Sunoom आपका हेड आफिस जलगाँव में है। जलगाँव के कपास के व्यापारियों में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स फानजी शिवाजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा कॉटन का व्यापार होता है।
शेंदुरणी— ,, ,, ,, ,, ,,
निम्थोरा—कानजी शिवजी—कॉटन प्रेसिंग फेक्टरी है।
मसावद— ,, —कॉटनजीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स जयकिशन रामविलास

इस फर्म के मालिक कुचेरा (जोधपुर स्टेट) के निवासी हैं। आप साकद्वी (ब्राह्मण) समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ६०।७० वर्ष पूर्व सेठ रामविलासजी ने किया था। आप यहां हुंडी और सट्टे की दलाली का काम करते थे। संवत् १९५९ में सेठ जयकिशन जी ने उपरोक्त नामसे दुकानका स्थापन किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयकिशनजी एवं सेठ दुलीचंदजी दोनों भ्राता हैं। आपके २ छोटे भ्राता राधाकिशनजी एवं लक्ष्मी नारायणजी संवत् १९७६।७७ में स्वर्गवासी हो गये हैं। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेठ कानजी शिवजी (कानजी शिवजी) जञ्जीबार

सेठ आरवजी कानजी

सेठ रायसी कानजी (कानजी शिवजी) जञ्जीबार

जलगांव—मेसर्स जयकिशन रामविलास—गल्ला और आढ़त का काम होता है।
जलगांव— „ „ —कपड़े का थोक व्यापार होता है।
जलगांव— „ „ —जीनिंग एवं प्रेसिंग फेक्टरी है।
धूलिया—जयकिशन रामविलास—गल्ला एवं आढ़त का व्यापार होता है।
पलास खेड़ा—(दुगलाई) „ —साहुकारी लेनदेन का काम काज होता है।

इसके अलावा बोदवड़ मेस, श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और ऑईल मिल में भी आपके भाग हैं।

मेसर्स लालजी केशवजी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान कच्छ (शतुरी) में है। लालजी सेठ देश से करीब ३० वर्ष पूर्व जलगाँव आये थे। आरंभ से ही आपके यहां कमीशन का काम होता आ रहा है। लालजी सेठ जलगांव पांजरा पोल के प्रेसिडेंट हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गीय सज्जन हैं। लालजी सेठ के पुत्र श्री हीरजी, शामजी एवं भँवरजी हैं। आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगांव—मेसर्स लालजी केशवजी—यहां पंजाब, मालवा, सी० पी०, बरार, मद्रास, गुजरात, ग्वालियर आदि भारत के सभी प्रांतों से कमीशन का व्यवसाय होता है।

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स गिरधारीलाल गनेशराम

इस फर्म के मालिक डीडवाना (जोधपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इसकी स्थापना करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ गिरधारीलालजी के हाथों से हुई। आरंभ से ही इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता चला आ रहा है। सेठ गिरधारीलालजी के पुत्र जयनारायणजी एवं गनेशरामजी के हाथों से इस फर्म के कारबार को तरक्की मिली। संवत् १९६१ में आप दोनों भाइयों का कारबार अलग २ हो गया। तब से सेठ गनेशरामजी का कुटुम्ब इस फर्म का मालिक है। सेठ जयनारायणजी के पौत्र जयनारायण गोवर्द्धन के नाम से अपना अलग व्यापार करते हैं।

सेठ गनेशरामजी ने जलगांव में कई धार्मिक कामों में भाग लिया, आपने पुष्कर के श्रीरघु-

सेठ लालजी हेमराजजी अमरावती

सेठ हिराचंदजी श्री श्रीमाल (शोभमल हिराचंद) अमरावती

सेठ फुसराजजी (छगनलाल फुसराज) अमरावती

सेठ गंगारामजी (गेंदालाल गुलाबचंद) अमरावती

मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान कांवठ (जयपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य-समाज के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ शिवसहायजी के हाथों से संवत् १९३६ में हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९५३ में हुआ। आरंभ से ही यह फर्म आढ़त का व्यापार करती आ रही है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्री सेठ चुन्नीलालजी बांसल हैं। आप बड़े समझदार एवं व्यवसाय कुशल सज्जन हैं। फर्म के व्यापार की आपने विशेष वृद्धि की है। करीब १॥ साल पूर्व आपने पाचोरे में एक ऑइल मिल चालू किया है। आप खानदेश अग्रवाल सभा के धूलिये वाले अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए थे। आपके पुत्र श्रीयुत् बाबूलालजी भी बड़े समझदार नवयुवक हैं तथा फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय—यहाँ प्रधानतया आढ़त एवं सराफी लेनदेन का व्यापार होता है।

मालेगाँव—चुन्नीलाल शिवसहाय—आढ़त एवं सराफी लेनदेन का काम होता है।

पाचोरा—मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय—ऑइल मिल है।

मेसर्स जीवणराम जोधराज

इस फर्म के मालिक राधाकिशनपुरा (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य-समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ जोधराजजी ने करीब ७५।८० वर्ष पूर्व इस फर्म का स्थापन किया था। आरंभ में आपके यहाँ मक्के का कारबार होता था। आप संवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जोधराजजी के पुत्र सेठ जीवणरामजी हैं। आप बड़े उदार प्रकृति के दानी सज्जन हैं। आप ने धूलिये को जोधराज रामलाल सिटी हाई स्कूल को १५ हजार रुपया दिया। इसी प्रकार स्वद्धारक विद्यार्थीगृह, प्राथिरक्षक आयुर्वेदिक औषधालय, धूलिया हिन्दू तथा मुसलमान धर्मशाला, श्री इन्दिरा हाई स्कूल, स्काउटिंग संस्था, लेडी डफरिन हास्पिटल आदि संस्थाओं को हजारों रुपये नकद तथा भूमि प्रदान की। आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप के पुत्र श्रीशंकरलालजी पढ़ते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इसके अलावा मालेगांव, शिरपुर, दोंडायचा, धरनगांव, चोपड़ा तथा शायदा में गुलाबचन्द हीरालाल के नाम से कपास की खरीदी का काम होता है। शायदा में इन्दौर वाले वल्लभदास रामेश्वर की प्रेसिंग फेक्टरी में आपका पार्ट है।

ऑइल मिल ओनर्स

मेसर्स पापालाल शिवचन्द

इस नाम की ऑइल मिल का स्थापन संवत् १९७९ में हुआ। यह फर्म करीब ३० साल पहिले सेठ पापामलजी के हाथों से खोली गई। इसके वर्तमान मालिक सेठ सोहनलालजी एवं पूसमलजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स पापालाल शिवचंद—सराफी व्यवहार होता है तथा ऑइल मिल है।

मेसर्स विजयराम देड़राज

इस फर्म के मालिक डिंगपुर (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के मित्तल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म को सेठ विजयरामजी और देड़राजजी दोनों भाइयों ने मिलकर करीब ५० साल पूर्व स्थापित किया था। आप दोनों सज्जन क्रमशः १९५९ तथा १९७६ में स्वर्गवासी हुए। सेठ विजयरामजी के पुत्र जीवनरामजी एवं पन्नालाल जी हुए, बाबू पन्नालालजी ने सन् १९१२ में धूलिये में एक ऑइल मिल का स्थापन किया, उस समय खानदेश में कोई ऑइल मिल नहीं थी। आरंभ में आप सोलापुर की ओर से सींगदाणा मँगाते थे। धीरे २ इस प्रांत में मूँगफली की पैदावार बहुत बढ़ी एवं इस समय आपकी मिल तेल और खली की बहुत बड़ी तिजारत करती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जीवनरामजी एवं सेठ पन्नालालजी के पुत्र सेठ फूलचंदजी मित्तल हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स विजयराम देड़राज—ऑइल मिल है, तथा सींगदाणा एवं खली का व्यापार होता है। इस मिल का माल सी० पी०, यू० पी०, बरार तथा गुजरात में जाता है।

धरनगाँव (पूर्व खानदेश)—मेसर्स विजयराम देड़राज—इस नाम से २॥ साल पूर्व आपने एक ऑइल मिल स्थापित की है।

सेठ पन्नालालजी
(विजयराम डेडराज) धूलिया

सेठ डूंगरमलजी (विजयराम डेडराज) धूलिया

सेठ पूनमचंदजी (विजयराम डेडराज) धूलिया

दी न्यू प्रताप मिल धूलिया (पश्चिम खानदेश)
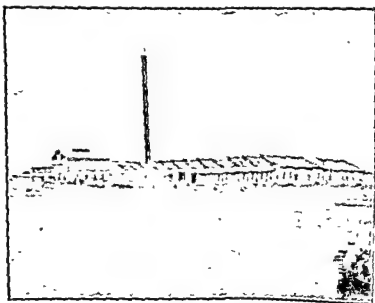
कमीशन एजेंट्स

मेसर्स गोविन्दराम मोहूराम

इस फर्म के मालिक देहगथनाथ (मेवाड़) निवासी ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के श्री भी माल सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ मोहूरामजी के हाथों से इस फर्म का स्थापन हुआ था। तथा सेठ गोविन्दरामजी ने इसके व्यापार को बढ़ाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी एवं मोतीलालजी हैं। सेठ सूरजमलजी धूलिये के आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। यह फर्म धूलिये के कमीशन के व्यापारियों में बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म की आढ़त में पंजाब, मद्रास, बम्बई, बंगाल, सी० पी०, यू० पी० आदि सारे भारत से व्यापार होता है।

मेसर्स जयकिशन रामविलास

इस फर्म का हेड ऑफिस जलगाँव (पूर्व खानदेश) में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित उक्त स्थान पर दिया गया है। खानदेश में गल्ला एवं कपास का व्यापार करने के लिये इस फर्म की कई ब्रांचेज हैं।

धूलिया ब्रांच के इस फर्मपर प्रधानतया गल्ले का व्यापार एवं आढ़त का काम होता है।

मेसर्स भोगाराम जुहारमल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के पोद्दार सज्जन हैं। यह फर्म ४५ वर्ष पूर्व सेठ भोगारामजी के हाथों से स्थापित की गई। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी पोद्दार हैं। आप बड़े सन्तोषकारी एवं देशभक्त सज्जन हैं। कांग्रेस-सम्बन्धी कार्यों में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स भोगाराम जुहारमल—यहाँ प्रधानतया गल्ले का व्यापार होता है।

दोंडायचा (पश्चिम खानदेश) भोगाराम जुहारमल—रुई और किराने का व्यापार होता है।

मेसर्स मेघराज गम्भीरमल

इस फर्म का स्थापन सन् १८७० में मेघराजजी और गम्भीरमलजी सेठी मारवाड़ी के हाथों से हुआ था। तथा इनके व्यापार को इन्हीं लोगों ने बढ़ाया, इनके बाद इनका सब

जवाहरात का काम होता था। आपके पश्चात क्रमशः सेठ शिवबख्शरामजी एवं बालकिशनजी ने व्यवसाय को संचालन किया। सेठ शिवबख्शजी ने एक धर्मशाला धूलिया में बनवाई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ व्यंकटलाल बालकिशन हैं। आपके यहाँ प्रधानतया चाँदी-सोना तथा जवाहरात का व्यापार होता है।

कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकबर कॉटन प्रेस कम्पनी
दि ईस्टर्न कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि इण्डिया कॉटन लिमिटेड प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ इब्राहीम फिदाअली जीनिंग फेक्टरी
सेठ गुलाबचंद कालूराम जीनिंग फेक्टरी
सेठ गोविंदजी दामजी प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ गुलाबचन्द हनुमानदास जीनिंग फेक्टरी
दि ग्रीन एण्ड कॉटन कम्पनी जीनिंग फेक्टरी
सेठ चम्पमुख शोजपाल जीनिंग फेक्टरी
सेठ जीवनराम जोधराज जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ जमशेदजी रुस्तमजी कोठावाला जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि टोयो मेनका केशा लि० जीनिंग फेक्टरी
दि पटेल कॉटन कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि पेनकर कॉटन जीनिंग फेक्टरी
दि बालकट ब्रदर्स प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ भवानजी कानजी जीनिंग फेक्टरी
सेठ बख्तराम नानूराम दिल्ली जीनिंग फेक्टरी
दि मनमाड मेन्यूफेक्चरिंग कं० लिमिटेड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ मोतीलाल काशीराम जीनिंग फेक्टरी
दि न्यू मिल आफ वेस्ट जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि न्यू जमशेदजी जीनिंग फेक्टरी
दि न्यू मोफस्सिल कम्पनी लिमिटेड जीनिंग फेक्टरी
दि न्यू महालू जीनिंग फेक्टरी
सेठ रुस्तमजी धनजी साद जीनिंग फेक्टरी
सेठ रामनारायण प्रेमसुख जीनिंग फेक्टरी
सेठ रामनारायण बलदेवदास जीनिंग फेक्टरी
सेठ रामगोपाल जगन्नाथ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
सेठ सूरजमल शंकरलाल जीनिंग फेक्टरी
साठे भास्कर वासुदेव जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

सेठ ओंकारलाल कनीराम ऑइल मिल
,, गुलाबचन्द कालूराम ऑइल मिल
,, जीवनराम हुकमीचन्द ऑइल मिल
,, पन्नालाल शिवचन्द ऑइल मिल
,, पदमसी प्रेमजी ऑइल मिल
,, भवानजी कानजी ऑइल मिल
,, विजयराम देवराज ऑइल मिल
,, सूरजमल शंकरलाल ऑइल मिल
,, ज्ञानीराम पूनमचन्द ऑइल मिल

बैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि बाम्बे प्राविंशियल कोआपरेटिव बैंक लि०
दि धूलिया अरबन कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड

मील नहीं थी। इस मील ने अपने जीवनकाल में उत्तरोत्तर अधिकाधिक वृद्धि की। सन् १९२२ में इस मील के मुनाफे से एक ब्रांच मील और खोली गई। वर्तमान में मील में ३८ हजार स्पेंडिल्स और ९३६ लूम्स काम करते हैं। मील के एजेंट मेसर्स माणकचन्द श्रीराम एंड सन्स हैं। मील का तयार हुआ कपड़ा और सूत बेचने की शाखायें एवं एजंसियाँ नीचे लिखे स्थानों पर हैं।

१-बम्बई—दि प्रताप मिल्स ऑफिस, १४ हम्माम स्ट्रीट फोर्ट। T A Pratap—यहाँ मील का रजिस्टर ऑफिस है।
२-बम्बई—दि प्रताप मील क्लाथ शाप, मूलजी जेठा मारकीट गोविंदगली नं० ६३२—मिल के कपड़े की दुकान है
३-अहमदनगर—प्रताप मील क्लाथ शाप—एजण्ट पन्नाजी दौलतराम भण्डारी नया कापड़ बाजार।
४-जलगाँव—प्रताप मील शाप—एजण्ट व्यंकटलाल चौथमल।
५-जालना (निजाम)—एजण्ट—सूरजमल गुलाबचन्द।
६-खामगाँव (बरार) प्रताप मील एजन्सी—एजेण्ट रंगूलाल राधाकिशन।
७-नासिक—प्रताप मील एजेन्सी—एजेण्ट मणीलाल दामोदरदास सुगंधी, रविवार पैठ।
८-कानपूर—प्रताप मिल्स शाप—एजेण्ट बसंतलाल फेराबलाल पटवा जनरलगंज।
९-कलकत्ता—प्रताप मिल्स शाप—एजेण्ट फतहसिंह भँवरलाल पटेल ४१ अर्मेनियन स्ट्रीट।

मेसर्स माणकचंद श्रीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान श्रीमाधोपुर (जयपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के एरन गोत्रीय सज्जन हैं। देश से सेठ डूंगरसीदासजी करीब १००।१२५ वर्ष पूर्व चोपड़ा (पूर्व खानदेश) आये थे। इनके पुत्र श्रीरामजी के समय में यहाँ मामूली लेन-देन का व्यवहार होता था। श्रीरामजी के पुत्र सेठ माणकचंदजी ने चोपड़े में एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवत् १९५० में स्वर्गवासी हुए।

सेठ माणकचंदजी के कोई पुत्र नहीं था, अतएव आप कालाडेरा (जयपुर स्टेट) से संवत् १९४४ में सेठ मोतीलालजी को जो इस समय प्रताप सेठ के नाम से खानदेश में विख्यात हैं, गोद लाये। श्री प्रताप सेठ ने इस फर्म के सम्मान और प्रताप को बहुत बढ़ाया। आप खानदेश के नामी गरामी व्यापारी माने जाते हैं। आपने सन् १९०६ में प्रताप कॉटन मिल का स्थापन किया। इस मिल ने अपने जीवन काल में इतनी उन्नति कर दिखाई की सन् १९२२ में आपको एक ब्रांच मुनाफा मिल के रूप में और खोलना पड़ी। अमलनेर मिल में

सेठ राजमलजी ललवानी (हरकचंद राजमल) जामनेर

श्री प्रतापसेठ अमलनेर

सेठ सागरमलजी ढोंकर (सागरमल नथमल) अमलनेर

उद्घाटन कर सम्मानित किया है। आपकी मातेश्वरी के नाम से आमनेर से श्रीमती जैन ओस-वाल भागीरथी बाई लायब्रेरी चल रही है। इसके अलावा राजमल लक्ष्मीचंद नामक एक धार्मिक औषधालय स्थापित है। इसके अलावा आमनेर एग्रिकलचर फर्म, केटल ब्रिडिंग फर्म, एवं एजूकेशन सोसाइटी की स्थापना आपके द्वारा की गई है। खानदेश एजूकेशन सोसाइटी अमलनेर के आप वाइसप्रेसिडेंट हैं। जनता के हृदयों में आपके प्रति बहुत प्रेम है। आप सन् १९२६ में सर्व सम्मति से १४ हजार वोटों से बम्बई कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हुए। आप शुद्ध खद्दरधारी एवं कांग्रेस की आज्ञाओं में विश्वास रखने वाले सज्जन हैं। अभी२ आपने कांग्रेस निर्णय के अनुसार बम्बई कौंसिल से इस्तीफा दे दिया है। आपकी फर्म खानदेश की नामवर फर्मों में मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जामनेर—मेसर्स राजमल लक्ष्मीचन्द—यहां बैंकिंग एवं खेती और साहुकारी लेन-देन का काम होता है।

जलगांव—मेसर्स राजमल लक्ष्मीचन्द—बैंकिंग एवं चांदी सोने का व्यापार होता है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स रूपचंद शिवनीराम

इस फर्म के मालिक मांडल (उदयपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। इसके व्यापार को सेठ रूपचंदजी ने विशेष तरक्की दी। आप १९७८ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रूपचंदजी के छोटे भ्राता जगन्नाथजी हैं। आपके यहाँ कपास का व्यापार एवं लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स हीरालाल ओंकारदास

इस फर्म के मालिक बरेड़ा (उदयपुर) निवासी माहेश्वरी वैश्य-समाज के सज्जन हैं। करीब ३ पीढ़ी पूर्व सेठ लक्ष्मणदास [illegible] ने इस फर्म का स्थापन किया। इसके कारबार को विशेष तरक्की सेठ ओंकारदासजी ने दी। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हीरालालजी हैं। आपने १९०६ में जीनिंग एवं १९१० में प्रेसिंग फेक्टरी चालू की है। आपका व्या-पारिक परिचय इस प्रकार है।

आमनेर—मेसर्स हीरालाल ओंकारदास—यहां जीनिंग प्रेसिंग, खेती तथा कपास का कारबार होता है।

चालीस गांव

जी. आई. पी. रेलवे की मेन लाइन पर जलगाँव और मनमाड के मध्य यह स्थान पूर्व खानदेश का एक तालुका है। इस स्थान पर १० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ, २ ऑइल मिल एवं १ कॉटन मिल है। १३।१४ हजार गाँठ रुई की प्रतिवर्ष यहाँ बँधती है। कपास के व्यापार के अलावा ७०।७५ हजार पल्ला सींगदाणा की (१२० सेर का पल्ला) यहाँ सालाना आमद हो जाती है। यहाँ से तेल सी० पी०, बरार, नासिक की ओर एवं खली बम्बई के लिये रवाना की जाती है। बिनोले का तौल २८ मन की खण्डी से तथा तेल का तौल बंगाली मन से व्यवहार में लाया जाता है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

दि न्यू जीनिंग प्रेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—इस कम्पनी की स्थापना सन् १९०७ में १ लाख ३२ हजार की पूंजी से सूक्ष्म रूप में हुई। थोड़े समय तक यह कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग का काम करती रही। पश्चात् सन् १९२२ में कम्पनी की पूंजी २० लाख कर दी गई। वर्तमान में यह कम्पनी ३ प्रधान कार्यों का संचालन करती है।

१ श्री लक्ष्मीनारायण कॉटन मिल्स—सूत और कपड़ा बनाना। सन् १९२५ की २७ मई को यह मिल चालू हुई। इसमें २० लाख रुपया साल का सूत और कपड़ा तयार होता है। मिल में ६०० मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं। १०० एकड़ जमीन में मिल का घेरा है। इसमें १४ हजार तकुए और ४०० लूम्स हैं। इसके मैनेजिंग एजंट मेसर्स नारायण व्यंकट है। तथा मिल में तयार होने वाले कपड़े की सोलसेलिंग एजंट मेसर्स हुकुमचन्द नारायण एण्ड कम्पनी है।

२ श्री लक्ष्मीनारायण वर्कशाप—फाउण्डरी एण्ड फिनिशिंग तथा मेकेनिक एण्ड मोल्डिंग शाप

३ श्री लक्ष्मीनारायण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—जीनप्रेस करना

मेसर्स नारायण व्यंकट

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कुमारपुर, जिला झांसी (बुंदेलखंड) में है। आप गहोई वैश्य जाति के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मूलचन्दजी ने मोराणी (धूलिया) नामक गांव में आकर गल्ला एवं लेन-देन का काम-काज शुरू किया। आपके बाद सेठ और

बिहारी सेठ नामक २ भ्राता और थे। मूलचन्द सेठ संवत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ गुलाबचन्दजी जो इस समय नारायण सेठ के नाम से बोले जाते हैं, संवत् १९४५ में मोंढाड़ी से दत्तक लाये गये। आपके दत्तक आने के बाद संवत् १९५३ में आग लग जाने से आपकी सारी स्टेट नष्ट हो गई थी अतः व्यवसाय द्वारा आपने सम्पत्ति अपने हाथों से उपार्जित की और प्रतिष्ठा को सुदृढ़ किया। आपने संवत् १९६३ में १३२८०० की पूँजी से एक प्रेस कम्पनी स्थापित की एवं संवत् १९७९ में श्रीलक्ष्मीनारायण मिल को जन्म दिया। इस मिल में वर्तमान में २१ हजार स्पिंडिल्स एवं ४०० लूम्स काम करते हैं। मिल चालू करने के २ साल पूर्व आपने मशीनरी वर्क शाप खोला।

व्यवसायिक उन्नति के अलावा सेठ नारायण व्यंकट ने श्रीलक्ष्मीनारायण का मंदिर बनवाया। आपने स्थानीय आनंदी बाई व्यंकट हाई स्कूल को स्थापित कर उसमें २१ हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार यहाँ आपकी एक लायब्रेरी स्थापित है। सेठ नारायण व्यंकट यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं, आप कई वर्षों तक स्थानीय म्युनिसिपैलेटी एवं लोकलबोर्ड के प्रेसिडेंट रहे हैं। आपके पुत्र श्रीहुकुमचन्द पढ़ते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चालीस गाँव—मेसर्स नारायण व्यंकट—श्री लक्ष्मीनारायण मिल एवं दूसरे कारखानों की एजंसी तथा सराफी लेनदेन और कृषि का काम होता है।

चालीस गाँव—मेसर्स हुकुमचन्द नारायण—अपने मिल के माल बेचने की एजंसी है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव

इस फर्म के मालिकों का खास निवासस्थान लोमल (जोधपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ४० साल पहिले सेठ गोवर्द्धनदासजी और जयदेवजी दोनों भाइयों ने किया। सेठ गोवर्द्धनदासजी ने इसके व्यापार को तरक्की दी। आप ८ साल पूर्व स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयदेवजी एवं सेठ गोवर्द्धनदासजी के पुत्र सेठ मोतीलालजी हैं। सेठ जयदेवजी ने ७ साल पूर्व यहाँ एक ऑइल मील तथा एक साल पूर्व जीनिंग फेक्टरी खोली है। आपके पुत्र किशनलालजी भी व्यापार में सहयोग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चालीस गाँव—मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव—इस नाम से ऑइल मील तथा जीनिंग फेक्टरी है। तथा तेल मुँगफली और गल्ले का व्यापार होता है।

चालीस गाँव—मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव—इस नाम से सराफी लेनदेन तथा चाँदी सोने का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

अलादीन सोमजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
इसुफ अली मुल्ला बदरुद्दीन जीनिंग फेक्टरी
गोवर्द्धनदास जयदेव जीनिंग फेक्टरी
तेजपाल गोविंदजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
मनमाड मेन्युफेक्चरिंग जीनिंग प्रेसिंग फक्टरी
लक्ष्मी नारायण कॉटन मिल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मूलचंद भोपालचंद
रामकिशन पन्नालाल
सन्तोषचंद छोटेराम
हुकुमचंद नारायण एण्ड कम्पनी

अनाज किराने के व्यापारी

गनेशराम शिवबक्श
गोवर्द्धनदास मांगीलाल
रूपचंद रघुनाथ

चाँदी सोने के व्यापारी

गोवर्द्धनदास जयदेव
जसरूप सुरताजी

ऑइल मिल्स

गोवर्द्धनदास जयदेव ऑइल मिल
महम्मद हुसेन ऑइल मिल

जनरल मरचेंट

इसुफ अली मुल्ला बदरुद्दीन

चोपड़ा

पूर्व खानदेश के उत्तरी किनारे पर होल्कर स्टेट का पहाड़ी नेमाड़ी प्रांत इस शहर से ५ मील उत्तर से प्रारंभ होता है। यहां घास तथा इमारती लकड़ी की आमद अधिक है। यहां करीब १० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां एवं ३।४ ऑइल मिल हैं। कपास के अलावा जुवार, बाजरी, गेहूं तथा मूंगफली की पैदावार होती है।

यह शहर धनवानों का शहर माना जाता है। लेनी का कारबार करनेवाले बड़े बड़े साहूकार लोगों का यहां निवास है। यहां के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद हीरालाल

इस फर्म का हेड ऑफिस धूलिया में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय में चित्रों सहित दिया गया है। चोपड़े में यह फर्म रुई की खरीदी का व्यापार करती

सेठ मथुरा मोतीराम चोपड़ा खानदेश

मेसर्स गिरधर मोतीराम

इस फर्म के मालिक नागल (अलवर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। सेठ मोतीरामजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आपके चार पुत्र हुए सेठ सुंदरलालजी, पीताम्बरदासजी, गिरधरलालजी एवं जानकी रामजी। संवत १९४१ में आप लोग अलग २ हो गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गिरधरजी एवं इनके पुत्र नंदलालजी हैं। आपके यहां कृषि का बहुत बड़ा काम-काज होता है। इसके अलावा सराफी लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स जानकीराम मोतीराम

यह फर्म गिरधर सेठ के छोटे भ्राता सेठ जानकीरामजी की है। आपके यहाँ भी खेती एवं साहुकारी लेनदेन का व्यापार होता है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जानकीरामजी के पुत्र श्रीयुत [illegible] हैं।

मेसर्स नत्थूमल मोतीराम

इस फर्म के मालिक आदि निवासी अहमदाबाद (गुजरात) के हैं। करीब ४७५ पीढ़ी पूर्व यह कुटुम्ब यहाँ आया। नत्थूमल सेठ ने इसके व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। आपने चोपड़े में अच्छी ख्याति प्राप्त की। संवत् १९५६ में आपने यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोल ली। आपका स्वर्गवास संवत् १९७२ की आषाढ़ बदी ७ को हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक नत्थू सेठ के पुत्र [illegible] सेठ एवं [illegible] सेठ हैं। सेठ [illegible] के पुत्र [illegible] सेठ म्युनिसिपेलिटी के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चोपड़ा—मेसर्स नत्थूमल मोतीराम—यहाँ खेती तथा सराफी लेनदेन का काम होता है। इसी नाम की यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स [illegible]

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय अमलनेर में दिया गया है। इस फर्म का स्थापन सेठ [illegible] ने करीब १००।१२५ वर्ष पूर्व किया। आपके पश्चात् क्रमशः सेठ [illegible] एवं [illegible] ने व्यापार सम्हाला। सेठ [illegible] के बाद इनके [illegible]

ऑइल मिल्स

गंगाधर बद्रीदास
दत्तात्रय वामन
नरोत्तम काशीदास
शंकर घोंडे

क्लाथ मरचेंट्स

कन्हैयालाल गोवर्द्धनदास
गोवर्द्धनदास भिखारीदास
छतरमल बहादुरमल
देवचन्द हरीपाटील
फुलचन्द अगरचन्द
नवीदास फूलचन्द

गल्ला और किराना के व्यापारी

गोपालसा निमडुसा (गल्ला)
नत्थूलाल गोकूलाल (किराना)
नगीनदास नरसिंहदास (किराना)

कॉटन मरचेंट्स

गुलाबचन्द हीरालाल
डॉंगरसी देवराज
मूलचन्दास सांवरलाल
मूलजी केशवजी

पाचोरा

जी. आई. पी. रेलवे की मेन-लाइन पर भुसावल और मनमाड के मध्य में यह स्थान है। यहाँ से जामनेर के लिये एक ब्रांच जाती है। इस स्थान पर करीब ७ जीनिंग और ५ प्रेसिंग फेक्टरियाँ तथा २।३ ऑइल मिल हैं। सींगदाणा तथा कपास का व्यापार इस स्थान पर मुख्य रूप से होता है। यहाँ के मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स ने मुंगफली के बढ़ते हुए व्यापार से लाभ उठाने के लिये उनको फोड़ने की नई मशीन ईजाद कर अच्छी ख्याति एवं सम्पत्ति प्राप्त की है। यह स्थान पूर्व खानदेश प्रांत का एक ताल्लुका है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कपूरचंद बच्छराज

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ कपूरचन्दजी ओसवाल स्थानकवासी जैन-समाज के सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान भगवानपुरा। (उदयपुर स्टेट) में है इस फर्म का स्थापन करीब ६० साल पूर्व सेठ बच्छराजजी ने भोड़गाँव (पाचोरा) में किया था। पहिले आप साधारण लेनदेन का काम काज करते थे। व्यवसाय को तरक्की भी आपके ही हाथों से प्राप्त हुई। आपने १८ हजार की लागत से पाचोरे में एक जैन पाठशाला का स्थापन किया। करीब ३ वर्ष पहिले आपने बच्छराज रूपचन्द जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी की स्थापना की। आपका स्वर्गवास ७।८ साल पूर्व हुआ।
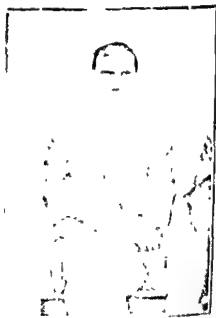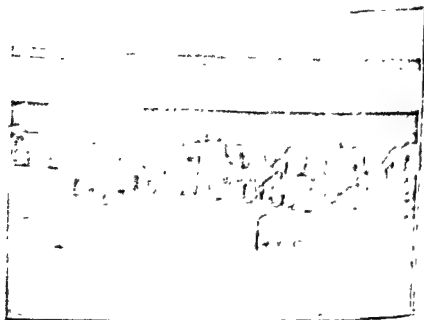
सेठ बच्छराजजी के पुत्र श्री कपूरचन्दजी जैन फर्म के वर्तमान संचालक हैं। आपके
से भी यहाँ और बररोड़ी में जीन प्रेस स्थापित किये गये हैं। आप पाचोरे में अच्छे प्रति
व्यक्ति समझे जाते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पाचोरा—मेसर्स कपूरचन्द बच्छराज—यहाँ कॉटन कमीशन का व्यापार होता है। तथा बच्छ
राज रूपचन्द एवं पूरनमल सुगनमल के नाम से जीनिं
प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

बररोड़ी (पाचोरा)—मेसर्स कपूरचन्द बच्छराज—इस नाम से आपकी जीन फेक्टरी है।

मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय

इस फर्म का हेड आफिस धूलिये में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों
के चित्रों सहित उक्त स्थान पर दिया गया है। धूलिये में यह फर्म बम्बई, कानपुर,
अहमदाबाद, इन्दौर आदिकी मिलों के लिये कॉटन खरीदी एवं आढ़त का काम करती है।
करीब ॥। साल पूर्व इस फर्म ने यहां एक ऑइल मिल चालू की है तथा सफलता के साथ
स समय मिलका संचालन कर रही है। इस मिल का माल सी० पी०, कलकत्ता आदि
नों में जाता है।

मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स

इस फर्म का स्थापन सेठ कल्यान सिंह गांडाभाई चावड़ा उर्फ कलाभाई के हाथों से सन्
१९२१ में हुआ। आप पच्छेगांव (वेस्टर्न एजंसी-काठियावाड़) निवासी क्षत्रिय समाज के सज्जन
हैं। श्री कलाभाई अपने बड़े भ्राता श्रीरामसिंहजी चावड़ा के साथ सन् १९०२ में खान देश में
एवं सन् १९११ में पाचोरे में आये। इंजनियरिंग की ओर आपकी रुचि भी आपके बड़े भाई के
कारण ही हुई। सन् १९१८ में श्रीयुत कलाभाई बम्बई के नामी व्यक्ति सर पुरुषोत्तमदास
ठाकुरदास कं० टी० सी० आई० की ओर से इंजनियरिंग का काम सीखने के लिये आफ्रिका
भेजे गये। वहां से शिक्षा एवं अनुभव प्राप्त कर आपने १९२१ में मुंगफली फोड़ने की नई
मशीन ईजाद की। तथा पाचोरे में अपना निजका वर्कशाप आरंभ कर मशीनें बनाना आरंभ
किया। ज्यों ज्यों खानदेश में ऑइल मिल्स बढ़ने लगे त्यों त्यों आपकी मशीनें विशेष बिकी होने
लगीं। अभी तक आप अंदाजन ५०० मशीनें सेल कर चुके हैं। आपको अपनी मशीन के
मजबूती, कमी पावर एवं ज्यादा आउटपुट के लिये दि ऑल इण्डिया इंडस्ट्री एक्जीबिशन, सूरत,
पिकजधर एण्ड फेटल शो जलालपुर (नवसारी) एवं नवानगर (जाम-स्टेट) से सार्टिफिके-
आफ मेरिट एवं फर्स्ट क्लास मेडल्स मिले हैं। एंजिन एवं बायलर की टूट फूट दुरुस्त

करने के लिये आपका एक स्टाक हमेशा सफर करता रहता है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पाचोरा—मेसर्स—चावड़ा ब्रदर्स—यहां सींगदाणा फोड़ने की मशीन, बैल से एवं पावर से चलने वाली चक्की, रहट, चने की दाल साफ करने की मशीन एवं जुवारी निकालने की मशीन तयार की जाती है, एवं बिकती है। श्रीराम आयर्न वर्क्स के नामसे कृष्णपुरी पर आपका वर्कशाप है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

मेसर्स कपूरचंद बच्छराज प्रेस फेक्टरी
,, गोविन्दजी वीरमजी जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी
,, कीलाचन्द देवचन्द प्रेसिंग फेक्टरी
,, बच्छराज रूपचंद जीनिंग फेक्टरी
,, भीकचन्द साकलचन्द फेक्टरी
,, रतनजी वीरम जीन फेक्टरी
,, शंकर सीताराम जीनिंग फेक्टरी
,, सोला कोठी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
,, हीरालाल रामनारायण जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय ऑइल मिल्स
,, हीरालाल रामनारायण ऑइल मिल्स

बैंकर्स

दि पूर्व खानदेश कोआपरेटिव बैंक्स
दि लैंड मार्गेज कोआपरेटिव बैंक

कपास के व्यापारी

मेसर्स कपूरचंद बच्छराज
,, आनन्द हेमराज
मेसर्स जेवत तेजपाल
,, नथमल दानाजी
,, लालजी पासू
,, बालजी रामजी

ग्रेन मर्चेण्ट्स

मेसर्स केशवलाल मूलचन्द
,, घासीराम हरगुलाल
,, छोटेलाल सूरजमल
,, लल्लू भाईचन्द (किराना)

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल डरयराम
,, नथमल साकलचन्द

कटलरी

मेसर्स रमून भाई तय्यबअली
,, वल्लभदास गिरधारीलाल

मिशनरी मरचेंन्ट

मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स (सींगदाणा मशीन)
,, एस. एम. पटेल एण्ड कम्पनी (ब्रिज ऑइल मिल प्रेस)
,, नथमल बनराज एण्ड कम्पनी

भुसावल

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे का बड़ा भारी जंक्शन है। यहाँ रेलवे का बहुत बड़ा वर्कशाप है। यहाँ से बम्बई, खंडवा, नागपुर एवं अमलनेर की ओर गाड़ियाँ जाती हैं। इस स्थान पर करीब ४।५ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ एवं २ ऑइल मिल हैं। यह शहर बरार, खानदेश तथा नीमाड़ तीनों प्रान्तों की हद पर बसा है। यहाँ से बम्बई इलाका आरंभ होता है। रेलवे वर्कशाप के कारण ही यहाँ के व्यापार में गति विधि रहती है यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप विवरण इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद नारमल

इस फर्म के मालिक पीही (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर समाज के स्थानकवासी जैन सज्जन हैं। सेठ नारमलजी के हाथों से करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म का स्थापन हुआ। सेठ नारमलजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ गुलाबचन्दजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष तरक्की पर पहुँचाया। आपका स्वर्गवास सन् १९२४ के मार्च मास में हुआ। आप अपने स्वर्गवासी होने के समय १९।२० हजार का दान कर गये थे। इस रकम में से ५।६ हजार की लागत से एक धर्मशाला पीही में बनवाई गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू नारमलजी के छोटे भ्राता श्रीपन्नालालजी बंब एवं सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र भेरूलालजी एवं सरूपचन्दजी बंब हैं। श्रीभेरूलालजी बंब ८ सालों से म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर हैं। आपकी ओर से भूराबाई भाविकाश्रम एवं पद्माबाई कन्याशाला को भी सहायता दी गई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भुसावल—मेसर्स गुलाबचन्द नारमल—साहुकारी लेन देन और खेती का काम होता है।

भुसावल—मेसर्स पन्नालाल नारमल—सराफी दुकान है।

मेसर्स पूनमचन्द ओंकारदास

इस फर्म के मालिक जैतारण (जोधपुर) निवासी ओसवाल समाज के स्थानकवासी जैन सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ ओंकारदासजी के पितामह बामगोद (भुसावल) आये सेठ ओंकारदासजी के समय में फर्म की व्यापारिक वृद्धि हुई।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक बाबू पूनमचन्दजी हैं। आप खानदेश ओसवाल शिक्षण संस्था के महामंत्री तथा म्युनिसिपैलेटी के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भुसावल—मेसर्स पूनमचन्द ओंकारदास—यहाँ साहुकारी लेनदेन एवं कृषि का काम होता है।

मेसर्स मानमल चांदमल

इस दुकान के मालिक श्री केसरीचन्दजी पर्वतसर (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। यह दुकान जी० आई० पी० रेलवे के चालू होने के समय से यहाँ चालू है। मानमलजी एवं चाँदमलजी के समय में इस दुकान ने अच्छी तरक्की की थी। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भुसावल—मानमल चाँदमल—लेन देन का काम होता है।

फैजपुर—चाँदमल केशरीमल—कपास अनाज और आढ़त का कारबार होता है।

बोदवड़—मानमल चाँदमल—आढ़त और कपास का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

इण्डिया कॉटन प्रेस फेक्टरी
गामडिया जीन प्रेस फेक्टरी
मेहता श्रीराम कम्पनी जीन फेक्टरी

ऑइल मिल्स

पुसाराम छगनलाल ऑइल मील
मदनमोहन ऑइल मील

कपड़े के व्यापारी

ओंकारदास लक्ष्मीचंद
कल्याणमल पूनमचंद
पृथ्वीराज लक्ष्मीचंद
राजमल चाँदमल

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

अमरचंद हजारीमल
मूलचंद रामदयाल
रतनलाल हरभगत

फटकरी

इसमाइलजी गुलामहुसैन
हसनअली मोहम्मदअली

चाँदी सोने के व्यापारी

ओंकारदास वल्लभदास
कन्हैयालाल विट्ठलदास
पन्नालाल नारमल

किराने के व्यापारी

जयनारायण कन्हैयालाल
रघुनाथ भोजराज राठी

बुरहानपुर

जी० आई० पी० रेलवे की मेन लाइन पर खंडवा और भुसावल के मध्य बसी हुई यह बहुत पुरानी बस्ती है। सन् १४०० ईस्वी के लगभग फारुखी वंश के द्वितीय बादशाह नासिर खाँ ने अपने गुरु बुरहानुद्दीन की आज्ञा से इस शहर की नींव डाली थी। १०० वर्षों तक यह शहर अमीर उमरावों, नवाब, शाहजादों, विद्वानों और पंडितों का विलास स्थान रहा। उन दिनों इस स्थान को "दारुल सुरूर" अर्थात् आनन्दालय के नाम से पुकारते थे। उस समय यहाँ का बना कलाबत्तू कारचोब तथा कीनखाब का सामान और ऊनी माल, अरबस्तान, पेलेस्टाइन, यूरोप, सीरिया आदि देशों में जाता था।

वर्तमान में टूटी फूटी चहारदीवारी से घिरा हुआ यह ऐतिहासिक नगर अपनी वृद्धावस्था के दिन देख रहा है। आरंभ से ही मुसलमानी आधिपत्य रहने के कारण आज भी मुसलमान समाज का यहाँ बहुत दौरदौरा है। शहर के बीचो बीच बनी हुई जुम्मामस्जिद की विशाल इमारत दर्शनीय है।

इस शहर की व्यापारिक जातियों में प्रधानतया बोहरा और गुजराती समाज है। इस समय यहां रुई का व्यापार प्रधान है। १ कॉटनमिल १२ जीनिंग और ५ प्रेसिंग फेक्टरियां इस शहर में हैं। रुई के अलावा बुरहानपुरी हाथ की बनी साड़ियां और कलाबत्तू का सामान भी बाहर जाता है। इधर ३।४ सालों से मुंगफली की पैदावार यहाँ बहुतायत से होती है। गल्ला यहाँ ज्यादातर नीमाड़, पंजाब, सी० पी० आदि से आता है। इस शहर की मनुष्य संख्या ३५ हजार के लगभग है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नानाभाई गोविंदजी

इस फर्म के पूर्वज करीब २०० वर्ष पूर्व गुजरात से यहाँ आये थे। करीब ५-६ पीढ़ी पूर्व से इस कुटुम्ब के व्यवसाय का विकास आरंभ होता है। सेठ टीकमदासजी के समय से इस फर्म के व्यापार को प्रोत्साहन मिला। सेठ गोवर्द्धनदासजी तथा सेठ टीकमदासजी दोनों भाई भाई थे। अब दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक गोवर्द्धनदास सेठ के पुत्र सेठ ठाकुरदासजी एम० एल० सी०, सेठ बालचंदजी तथा सेठ टीकमदास सेठ के पुत्र सेठ श्रीकृष्णदास हैं।

सेठ ठाकुरदासजी एम० एल० सी० के हाथों से इस फर्म के व्यापार की बहुत बड़ी तरक्की हुई है। आपकी फर्म बुरहानपुर में कॉटन तथा बैङ्किङ्ग व्यवसाय करने वाली फर्मों में अच्छी आदरणीय समझी जाती है। इस फर्म के सफल संचालक ठाकुरदास सेठ सामाजिक एवं गवर्नमेंट के कार्यों में भी अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। सन् १९१८ से आपका सार्वजनिक जीवन आरंभ होता है। उन दिनों बुरहानपुर में होनेवाली प्राविंशियल कान्फ्रेंस की स्वागत-कारिणी समिति के आप अध्यक्ष रहे थे। असहयोग आन्दोलन के समय भी आपने विशेष भाग लिया था। सन् १९२६ में आप नीमाड़ की ओर से सी० पी० कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हुए हैं। वर्तमान में आप यहाँ के सेकंड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट पद पर हैं, तथा स्थानीय म्युनिसिपैलेटी में गवर्नमेंट की ओर से मेम्बर चुने गये हैं। इसके अलावा बुरहानपुर लोकल बोर्ड एवं नीमाड़ डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के आप वाइस चैयरमैन हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ बालचंद, ताप्ती मिल बुरहान पुर के डायरेक्टर हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बुरहानपुर—मेसर्स नानाभाई गोविन्द जी चौक — यहाँ प्रधानतया बैङ्किंग व्यापार होता है।

बुरहानपुर—श्रीकृष्ण राधाकिशन कम्पनी — इस फर्म पर रुई एवं आढ़त का व्यापार होता है।

बुरहानपुर—श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिङ्ग फेक्टरी — इस नाम से आपकी कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी सन् १९०१ से काम कर रही है।

बुरहानपुर—बालचन्द गोवर्द्धनदास—सराफी कामकाज होता है।

खंडवा—श्रीकृष्ण गोपालदास—रुई का व्यापार होता है।

हरसूद (नीमाड़) बालचन्द ठाकुरदास— „ „

जलगाँव—मोहनलाल नानाभाई— काटन तथा सराफी का व्यवसाय एवं साहूकारी का काम होता है।

मेसर्स टीकमदास हरीदास

इस फर्म के मालिक १५०।१५५ वर्षों से यहीं निवास करते हैं। हरीदास सेठ के समय इनके यहाँ रेशम का व्यापार होता था। इनके पश्चात् क्रमशः सेठ टीकमदास तथा सेठ लखमीदास ने कार्य संभाला। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मथुरादास और सेठ गोवर्द्धनदास हैं। सेठ मथुरादास वाली मिल के डायरेक्टर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बुरहानपुर—टीकमदास हरीदास राजपुरा—बैङ्किग व्यापार होता है।

बुरहानपुर—श्रीबलदेव जीनिंग फेक्टरी—कॉटन जीनिंग होता है।

इन्दौर—गोवर्द्धनदास लखमीदास बजाज खाना—कपड़े का व्यापार होता है।

बम्बई—गोवर्द्धनदास लखमीदास मारवाड़ी बाजार—आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मोहम्मद अली ईसा भाई

इस फर्म का हेड ऑफिस धरनगांव स्टेशन इरंडोल रोड में है। आपकी संवत् १९७२ में यहां जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी स्थापित हुई। यह फर्म प्रधानतया रुई का व्यापार करती है। धरनगांव में इस फर्म को स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए।

मेसर्स हीराचंद नंदराम

इस फर्म का स्थापन १०० वर्ष पूर्व सेठ हीराचंदजी के हाथों से हुआ था। आप सरावगी जैन समाज के सज्जन हैं। आरंभ से ही यह फर्म गल्ला तथा आढ़त का काम कर रही है। इसके वर्तमान मालिक सेठ वंशीलाल जी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बुरहानपुर—मेसर्स हीराचंद नंदराम चौक—गल्ला और आढ़त का काम होता है।

फेक्टरीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़

कॉटनमिल

श्रीताप्ती स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड—एजंट खानसजी दीनशा एण्ड सन्स बम्बई

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

श्रीबलदेव जीनिंग फेक्टरी

नोमानभाई मुल्लां बदरुद्दीन जीनिंग प्रेसिंग फे०

महम्मदभली ईसाभाई जीनिंग फेक्टरी

किशनदास ठाकुरदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

रामकृष्ण जीनिंग फेक्टरी

यकबर कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

फकरुद्दीन मुल्ला मोटाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लालबाग

हैदराबाद और हैदराबाद स्टेट

HYDRABAD
&
HYDRABAD STATE

हैदराबाद

<u>ऐतिहासिक परिचय</u>

जिस विस्तृत स्थान में इस समय हैदराबाद का राज्य है, अत्यन्त प्राचीन काल में वहाँ द्रविड़ राजाओं का राज्य था। पर इस सम्बन्ध में अब तक ठीक २ ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिले हैं। ईसवी सन् पूर्व २७२ से २३१ वर्ष तक इस प्रान्त पर सम्राट् अशोक का अखण्ड शासन था। इसके बाद यहाँ एक के बाद एक तीन हिन्दू राज्यवंशों ने राज्य किया। तेरहवीं सदी के अन्त में अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता में मुसलमानों ने इस प्रान्त पर हमले शुरू किये। वे लगातार दक्षिण के हिन्दू राजाओं से लड़ते रहे। आखिर में सम्राट् औरङ्गजेब ने अपनी ताकत के जौहर दिखलाए और उसने दक्षिण हिन्दुस्तान का बहुत सा हिस्सा फतह कर लिया और दक्षिण में आसफ खाँ नामक अपने बहादुर सिपहसालार को "निजामउल-मुल्क" का खिताब देकर दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आसफ खाँ जंग के मैदान में जैसे बहादुर थे, वैसे ही बुद्धिमान और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी थे।

सम्राट् औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद जब मुगल साम्राज्य अन्तिम साँसें गिन रहा था, जब वह मृत्यु की शय्या पर पड़े २ आखिरी दम ले रहा था, उस समय उस स्थिति का फायदा उठा कर आसफ खाँ ने अपने स्वातन्त्र्य की घोषणा कर दी। इस समय दिल्ली की हुकूमत बहुत कमज़ोर पड़ गई थी। उधर दिल्ली के बादशाह ने खानदेश के सूबेदार को हुक्म दिया कि वह आसफ खाँ पर फौजी चढ़ाई कर दे। ऐसा ही हुआ। लेकिन इसमें बादशाह को उलटे मुँह की खानी पड़ी। लड़ाई में आसफ खाँ की जीत हुई। बस उनकी स्थिति और भी मजबूत हो गई। आसफ खाँ ने हैदराबाद को अपने राज्य की राजधानी बनाई। उन्होंने अपने निज का राज्य कायम कर दिया। वर्तमान हैदराबाद निजाम इन्हीं आसफ खाँ के वंशज हैं।

ईसवी सन् १७४८ में आसफ खाँ की मृत्यु हो गई। इनकी मृत्यु के बाद इनके भतीजे मुजफ्फरजंग फ्रेंच लोगों की सहायता से गद्दी पर बैठे। पर कुछ ही समय बाद ये मार डाले गये।

इसके बाद फ्रेंचों ने निजाम-उल-मुल्क आसफ खाँ के तीसरे पुत्र सलावतजंग को हैदराबाद का निजाम घोषित कर दिया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, जबसे सलावतजंग हैदराबाद की मसनद पर बैठे तब से वहाँ फ्रेंचों का खूब दौर-दौरा था। वहाँ जो कुछ वे चाहते थे वही होता था। पर क्लाइव की तेज गतिविधि ने फ्रेंचों का ध्यान उन प्रान्तों की ओर विशेष रूप से खींचा, जो उन्होंने पहले फतह किये थे।

ईसवी सन् १७८० के लगभग कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं, जिन्होंने हैदराबाद के भविष्य पर बड़ा प्रभाव डाला। उन घटनाओं का संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है—"मैसूर के सुलतान हैदरअली की मृत्यु हो जाने पर उनका पुत्र टिपू सुल्तान गद्दी-नशीन हुआ। इसने आसपास के उस मुल्क पर जिन पर अँग्रेजों ने अधिकार कर रक्खा था तथा हैदराबाद राज्य के प्रान्तों पर हमले करने शुरू कर दिये। इससे टिपू के खिलाफ अंग्रेज और हैदराबाद के निजाम मिल गये। दोनों ने टिपू को अपना दुश्मन मान कर उस पर संयुक्त आक्रमण (Combined attack) करने का निश्चय किया। पर टिपू के पास भी बहुत बड़ी सेना थी, इसके अतिरिक्त वह एक कुशल भी था। अतएव बहुत दिनों तक वह ज्यों त्यों मुकाबला करता रहा। पर चारों ओर उसके दुश्मन थे। एक ओर तो मराठे उसके नाकों दम कर रहे थे, दूसरी ओर अंग्रेज और हैदराबाद के निजाम उसकी छाती पर मूँग दल रहे थे। अन्त में ईसवी सन् १७९९ में टिपू सुल्तान अंग्रेजों से हार गया और वह लड़ता हुआ एक बहादुर सिपाही की तरह युद्ध में मारा गया। इस समय विजेताओं के हाथ जो मुल्क लगा, उसमें २४०००००) प्रति साल आमदनी का मुल्क हैदराबाद निजाम के हिस्से में आया। लॉर्ड वेलेस्ली, जो उक्त युद्ध में ब्रिटिश फौजों का सञ्चालन कर रहे थे। लिखते हैं—"It would have been impossible to conquer the dominions of Tippu had it not been for the active support and co-opration of Nigamali. अर्थात् अगर निजामअली की सहायता और सहयोग न मिलता तो टिपू सुल्तान का मुल्क जीतना असम्भव होता।

पाठक जानते हैं कि टिपू का बहुत सा मुल्क निजाम साहब के हिस्से में आया था। पर वह उनके हाथ में न रहने पाया। ब्रिटिश कूटनीति (British Diplomacy) ने उसे उनके हाथ से ले लिया। निजाम पर अतिरिक्त फौजी खर्च का भार लाद कर उनसे वह मुल्क ले लिया गया जो टिपू से उन्हें प्राप्त हुआ था। इस तरह सहज ही में कोई २४००००) आमदनी का मुल्क निजाम के हाथों से चला गया।

इसके तीन वर्ष बाद निजाम ने बरार के राजा के खिलाफ अंग्रेजों की मदद की। इसके बदले में उस राजा से जीते हुए मुल्क का एक हिस्सा निजाम को भी मिला।

इस प्रकार कई प्रकार के चढ़ाव उतार तथा परिवर्तन देख कर हैदराबाद के तत्कालीन निज़ाम अली का ई० सन् १८०३ में देहान्त हो गया। आपके बाद सिकन्दर जाँ गद्दी पर बैठे। इनको शासन के लिए अयोग्य समझ कर अंग्रेज़ों ने राज्य-शासन का सूत्र चलाने के लिए चन्दूलाल नामक कायस्थ को नियुक्त किया।

ई० सन् १८२९ में निज़ाम सिकन्दर का देहान्त हो गया। उनके बाद उनके सबसे बड़े पुत्र नासिरुद्दौला मसनद पर बैठे। इस वक्त चन्दूलाल ही हैदराबाद के प्रधान मन्त्री थे। उन्होंने कर वसूली का काम अपने ही आदमियों के सुपुर्द रखा था। इससे खज़ाने में हानि पहुँचने लगी। थोड़े ही समय के बाद चन्दूलाल की मृत्यु हो गई। चन्दूलाल का नाम आज भी हैदराबाद में मशहूर है। कहा जाता है कि उन्होंने एक प्रकार हैदराबाद पर राज्य किया। आज भी वहाँ "चन्दूलाल का हैदराबाद" की कहावत मशहूर है। यद्यपि चन्दूलाल के शासन में कई दोष थे, उनकी कई बातें निन्दास्पद थीं, पर उन्होंने कुछ ऐसी बुद्धिमत्ता के काम भी किये थे, जिन्हें उनके बाद आनेवाले मन्त्रियों ने प्रशंसा की दृष्टि से देखा है।

ई० सन् १८५३ में हैदराबाद के जिम्मे अंग्रेज सरकार ने एक बड़ी रकम पावना निकाली और इसके बदले में निज़ाम सरकार को बरार प्रान्त अंग्रेज सरकार के पास गिरवी रखना पड़ा। इस सम्बन्ध में अधिक प्रकाश वर्तमान निज़ाम महोदय के उस पत्र में मिलेगा, जो अभी उन्होंने प्रकाशित किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बरार के चले जाने से निज़ाम को हार्दिक दुःख और असाधारण मानसिक कष्ट हुआ।

ई० सन् १८५३ में हैदराबाद के दिन कुछ फिरे और सालारजंग नामक एक अत्यन्त अनुभवी और योग्य सज्जन वहाँ के दीवान बनाये गये। सर सालारजंग ने राज्य के भिन्न २ शासन-विभागों को सुसङ्गठित किया। इन्होंने राज्य का इतना अच्छा इन्तज़ाम किया कि पहले की गड़बड़ और अशान्ति बहुत कुछ मिट गई। चारों ओर अशान्ति और अव्यवस्था के बदले शान्ति और व्यवस्था का साम्राज्य हो गया। उन्होंने पुलिस-विभाग को इतना सुधारा कि वहाँ जो चोरियाँ और डकैतियाँ नित्य की घटनाएँ हो गई थीं, वे बहुत कुछ मिट गईं। रिश्वतखोरी भी पहले से कम हो गई। उन्होंने बड़ी मजबूती के साथ चोर और डाकू कौमों को हैदराबाद रियासत में बसने से रोका। आपके सुशासन की वजह से राज्य की आमदनी भी बढ़ी। लोगों की सुख-समृद्धि में भी बहुत उन्नति हुई। ये सब बातें देख कर निज़ाम साहब ने आपके अधिकार बहुत कुछ बढ़ा दिये। इसी समय हैदराबाद के तत्कालीन निज़ाम नासिरुद्दौला का देहान्त हो गया और उनके पुत्र आसफुद्दौला मसनद पर बैठे। इनके मसनद पर बैठते ही सन् १८५७ के प्रख्यात सिपाहीविद्रोह की आग ने सारे भारतवर्ष में सनसनी पैदा कर दी। ब्रिटिश राज्य की जड़ हिलने लगी। ऐसे कठिन और

विपत्ति के समय में निजाम महोदय ब्रिटिश सरकार के मित्र बने रहे। उन्होंने इस समय अपनी फौजों द्वारा ब्रिटिश सरकार की पूरी २ सहायता की। इस पर प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने निजाम के साथ एक नयी सन्धि की। इसमें नालदुर्ग और रायचूर का दुआब प्रान्त, जिसकी आमदनी लगभग २०००००० है, निजाम महोदय को वापस लौटा दिया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें ५०००००० का कर्ज भी माफ कर दिया गया। हाँ, बरार प्रान्त लौटाने की इस समय भी उदारता न दिखलाई गई। उसे ब्रिटिश सरकार ने बतौर इस के रखा !! जब विद्रोहाग्नि शान्त हो गई, तब तत्कालीन बड़े लाट लॉर्ड केनिंग ने तत्कालीन निजाम और उनके सुयोग्य दीवान सर सालारजंग को उस महान् सहायता के बदले में, जो उन्होंने इस भीषण स्थिति के समय ब्रिटिश सरकार को दी थी, हार्दिक धन्यवाद दिया और उनके बड़े आभार माने। इतना ही नहीं, लॉर्ड केनिंग ने भारत सरकार की ओर से निजाम को (१००००) भेंट किये तथा उच्च उपाधियों द्वारा उनका और सर सालारजंग का सम्मान किया। सर सालारजंग को भी ब्रिटिश सरकार की ओर से ३००००) का पुरस्कार मिला।

ईस्वी सन १८६९ में निजाम अफजलुद्दौला साहब की भी मृत्यु होगई। आप के बाद हैदराबाद के भूतपूर्व निजाम मिर्जा महबूब अलीखाँ बहादुर हैदराबाद की मसनद पर बैठे। इस समय आपकी अवस्था केवल तीन वर्ष की थी। अतएव भारत सरकार ने हैदराबाद के शासन का सारा भार सर सालारजंग पर रखा। आपकी सहायता के लिये "कौंसिल ऑफ रिजेन्सी" भी रक्खी गई।

यहाँ फिर यह बात कह देना आवश्यक है कि हैदराबाद के शासन-कार्यों में सर सालारजंग ने जिस अपूर्व योग्यता, असाधारण राजनीतिज्ञता और अलौकिक बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था उसे देख कर बड़े २ अंग्रेज राजनीतिज्ञ दाँतों अंगुली दबाते हैं। एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज राजनीतिज्ञ ने तो यहाँ तक कह दिया कि, संसार में अब तक सर सालारजंग और सर टी० माधवराव जैसे राजनीतिज्ञ पैदा नहीं हुए। निजाम महोदय ने भी आपका आप के योग्यतानुसार ही सत्कार और सम्मान रक्खा।

ईस्वी सन १८८४ की ५ फरवरी में श्रीमान् निजाम महोदय को राज्य के पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए।

बाद ईस्वी सन १९११ के प्रारम्भ मास में इन निजाम महोदय को [illegible] और [illegible] अन्त [illegible] में निधन हुआ।

आपके बाद वर्तमान निजाम मीर उसमान अली खाँ बहादुर शासन कर रहे हैं। आपका जन्म ई० स० १८८६ में हुआ था। आप का बचपन [illegible] [illegible] हुआ। [illegible] आपने [illegible] [illegible] [illegible]

Egerton) नामक एक उच्च-कुलोत्पन्न अंग्रेज के हाथ सौंपा गया। निज़ाम महोदय ने अंग्रेजी की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। नवाब इमाद-उल-मुल्क नामक एक विद्वान मुसलमान सज्जन से आपने फारसी, अरबी और हिन्दुस्थानी भाषाओं में भी अच्छी पारदर्शिता प्राप्त कर ली।

ई० स० १९२६ में निज़ाम महोदय ने बरार का प्रश्न बड़े ज़ोर से उठाया और इस सम्बन्ध में उन्होंने समाचार पत्रों में अपना एक लम्बा चौड़ा वक्तव्य प्रकाशित किया। तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड रीडिंग ने इसका कड़ा उत्तर दिया, जो समाचार पत्रों में यथासमय प्रकाशित हो चुका है।

व्यापारिक और औद्योगिक परिचय

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, प्राचीन काल से अद्भुत कला-कौशल के लिये इस प्रान्त की कीर्ति ठेठ मिश्र, ग्रीस और इरान तक फैली हुई थी। इस प्रान्त में सोने और चाँदी के काम किये हुए बढ़िया वस्त्र, बढ़िया मलमलें, मुलायम रेशम आदि कई काम बनते थे। इनकी सुन्दरता से तत्कालीन संसार मोहित था। यद्यपि कालचक्र के परिवर्तन से इस वक्त यहाँ इतनी बढ़िया चीजें तैयार नहीं होती हैं, पर फिर भी समयानुसार यहाँ उद्योग-धन्धों और कलाकौशल की सन्तोषकारक उन्नति हो रही है। इस वक्त हैदराबाद राज्य में रूई की कोई ८० जीनिंग फेक्टरियाँ हैं। तीन बड़े २ कपड़ों के मिल्स हैं तथा ६२ आटे की मिल्स हैं। इसके अतिरिक्त ३३ चांवल निकालने के मिल, एक मिट्टी के केवलु बनाने की तथा एक बर्फ की फेक्टरी है। यहाँ एक आयर्न फाउण्डरी भी है। तथा वाटरपम्पिंग स्टेशन भी है। यहाँ सोने और चाँदी के बढ़िया तार तैयार होते हैं। कशीदे का काम भी यहाँ गज़ब का होता है। निशाम्बर की कीमत ५००) तक रहती है। और भी कई प्रकार के यहाँ बढ़िया काम होते हैं।

हैदराबाद राज्य के उद्योग-धन्धों को उत्तेजन देने के सदुद्देश से श्रीमान् निज़ाम ने ई० सन् १९१७ में वहाँ तैयार होनेवाली वस्तुओं की एक प्रदर्शिनी की थी। इसी समय हैदराबाद के कई अनुभवी सज्जनों ने इस विषय पर कई पुस्तिकायें प्रकाशित की थीं कि यहाँ कौन कौन से उद्योग-धन्धों के साधन हैं और वे किस प्रकार सफलतापूर्वक चल सकते हैं। इसी समय यह बात भी प्रकाश में आई थी कि, सारा भारतवर्ष जितना तिलहन विदेशों को भेजता है उसका ⅓ हिस्सा केवल हैदराबाद से जाता है।

हैदराबाद से प्रति साल ७,००,००,०००) रुपयों की रूई बाहर जाती है। इतना होते हुए भी वह एक साल में २,२३,३८,०००) रुपयों का रूई का तैयार और पक्का माल भी बाहर भेजता है। यहाँ से प्रति साल लाखों रुपयों की ऊन भी यूरोप को भेजी जाती है। अगर इसी ऊन का यहीं पक्का माल तैयार किया जावे तो रियासत को बहुत बड़ा फायदा हो सकता है।

मेसर्स गुमानीराम हरीराम खटोड़

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप पारीक ब्यास ब्राह्मण-जाति के खटोड़ सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रामबगसजी ब्यास ने करीब १२५ वर्ष पूर्व किया था। आरम्भ में आप के यहाँ किराना एवं लेनदेन का काम होता था। सेठ रामबगसजी निज़ाम गवर्नमेंट के दवाखाने एवं अस्तबल को रसद सप्लाई करने का काम करते थे। आपके दो पुत्र हुए, सेठ जगन्नाथजी खटोड़ एवं सेठ हरीरामजी खटोड़। सेठ जगन्नाथजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली।

सेठ जगन्नाथजी ने इस फर्म पर निज़ाम स्टेट के रईसों एवं जागीरदारों के साथ लेन देन का व्यवहार आरम्भ किया आपका स्वर्गवास हो चुका है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हरीरामजी खटोड़ हैं। आप सेठ जगन्नाथजी के नाम पर दत्तक हैं। आपने सेठ जगन्नाथजी के स्मरणार्थ ६० हजार रुपयों की लागत से एक अनाथाश्रम की स्थापना की है। आप दो सालों तक हैदराबाद लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर रह चुके हैं। इम्पीरियल पोस्ट आफिस की बिल्डिंग आप ही की है। अभी २ आपने अपनी चारकमान वाली सुन्दर पत्थर की बिल्डिंग में श्रीकृष्ण अपेराहाउस की बिल्डिंग बनवाई है। यहाँ के व्यापारिक समाज में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद (दक्खिन)—मेसर्स गुमानीराम हरीराम खटोड़ चारकमान— T. No 294 तार का पता Khatod } यहाँ प्रधानतया बैङ्किंग व किराये का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल नारद प्रसाद

इस फर्म के मालिक जायल (जोधपुर स्टेट) के मूलनिवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ जेठमलजी ने यहाँ आकर सर्वप्रथम यह दुकान स्थापित की तथा इस फर्म के व्यापार को सेठ चुन्नीलालजी के हाथों से बहुत अधिक उन्नति हुई। आपने इन्दौर, मन्दसोर, बम्बई आदि स्थानों में बहुत सी दुकानें स्थापित कीं। आप हैदराबाद स्टेट को कपीन सप्लाई करने एवं बन्दूकें सप्लाई करने के लिये कंट्राक्टर थे। आपका विस्तृत परिचय मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद नामक फर्म में दिया गया है।

सेठ चुन्नीलालजी के २ पुत्र हुए—सेठ नारदप्रसादजी एवं सेठ मुरलीप्रसादजी। इन दोनों भाइयों का व्यापार सन् १९२५ मे अलग २ हो गया है। तब से यह फर्म अपना अलग कारोबार कर रही है। इसके मालिक सेठ नारद प्रसाद जी संवत १९७९ में स्वर्गवासी हुए।

आपके यहाँ १९७९ में पांसा (उदयपुर स्टेट) से श्री सुखदेवप्रसादजी दत्तक लाए गये। सेठ चुन्नीलालजी ने जो कपड़े का व्यापार स्थापित किया था, वह इस फर्म के साझे में आया है।

जायल में इस फर्म की ओर से सुखसागर नामक एक कुआँ खुदवाया गया है। जायल में इस की स्थाई सम्पत्ति भी है। इसके अलावा रेसिडेंसी, सिकन्दराबाद में आपके बगीचे बँगले एवं मिल्कियत है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स पापामल चुन्नीलाल शाहगंज सिटी।	यहाँ बैङ्किंग व्यापार होता है।
हैदराबाद—मेसर्स नारदप्रसाद सुखदेवप्रसाद लाड बाजार।	यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।
हैदराबाद—रेसिडेंसी—मेसर्स चुन्नीलाल नारदप्रसाद T. No. 370	यहाँ प्रधानतया बैङ्किंग व्यापार होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जायल (जोधपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ जेठमलजी आरंभ में यहाँ आये थे। आपने सराफी लेनदेन का कारबार शुरू किया। आपके तीन पुत्र हुए—सेठ श्यामलालजी, सेठ पापामलजी एवं सेठ रामदयालजी। सेठ पापामलजी के समय में इस फर्म के बैङ्किंग व्यापार की वृद्धि हुई। सेठ पापामलजी के पश्चात् सेठ श्यामलालजी के पुत्र सेठ चुन्नीलालजी ने इस फर्म के व्यापार तथा सम्पत्ति में विशेष वृद्धि की। आप हैदराबाद स्टेट को अफीम सप्लाई करने के लिये कन्ट्राक्टर थे, इस व्यापार के लिये आपने मालवे में इन्दौर, उज्जैन, मन्दसौर आदि स्थानों में दूकानें स्थापित कीं। इसके अलावा बम्बई, मद्रास आदि भिन्न २ स्थानों में भी आपकी दूकानें थीं। अफीम के कंट्राक्ट के अलावा आप हैदराबाद स्टेट के रिसालों एवं फौजों को बन्दूकें बनवाकर सप्लाई करते थे, इसके अलावा टकसाल का काम भी आपके यहाँ था। पापामल चुन्नीलाल के नाम से आपने अपनी फर्म पर कपड़े का व्यापार भी आरंभ किया। इस तरह दुकान के व्यापार को कई भिन्न २ लाइनों में सेठ चुन्नीलालजी के हाथों से उन्नति मिली। आप हैदराबाद के व्यापारिक समाज में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते थे। आपके २ पुत्र हुए—सेठ नारदप्रसादजी एवं सेठ मुरलीप्रसादजी। इन दोनों भाइयों का कुटुम्ब इधर सन् १९२५ से अलग अलग २ व्यापार करने लगा।

स्व० सेठ नारदप्रसादजी (चुन्नीलाल नारदप्रसाद)

श्री० सुखदेवप्रसादजी (चुन्नीलाल नारदप्रसाद)

स्व० सेठ मुरलीप्रसादजी (चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद)

सेठ मोहनप्रसादजी (चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद)

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मुरलीप्रसादजी के पुत्र सेठ मोहनप्रसादजी हैं। आप भी यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप सेठ मुरलीप्रसादजी के यहाँ संवत् १९६४ में जयपुर से दत्तक आये हैं। सेठ मुरलीप्रसादजी संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद रेसिडेंसी—मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद T.No 357 तारका पता Nowsila — यहाँ बैङ्किग व्यापार होता है।

हैदराबाद रेसिडेंसी–मुरलीप्रसाद मोहनप्रसाद—पेट्रोल का व्यापार होता है।

मद्रास— मेसर्स मुरलीप्रसाद मोहनप्रसाद साहुकार पैठ — यहाँ बैङ्किग कमीशन एवं बाम्बे कम्पनी की एजंसी का बहुत बड़ा कारबार होता है।

मेसर्स जमनालाल रामलाल कीमती

इस फर्म के मालिक आदि निवासी रामपुरा (इन्दौर स्टेट) के हैं। आप ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। रामपुरा से यह कुटुम्ब इन्दौर और मन्दसौर गया और वहां सेठ पन्नालालजी कीमती अपने भाई धन्नालालजी से पृथक् होकर संवत् १९४८ में हैदराबाद आये। यहां आप बम्बई के बाबू पन्नालालजी जौहरी के साथ काम काज करते रहे। इसी समय सेठ पन्नालालजी के पुत्र जमनालालजी और रामलालजी कीमती हैदराबाद में जवाहरात वगैरा का अपना स्वतंत्र कारबार करते रहे आप लोग अपने पिताजी की मौजूदावस्था में अपना कारबार जमा चुके थे। सेठ पन्नालालजी संवत् १९७४ में ७२ वर्ष की आयु में हैदराबाद में स्वर्गवासी हुए।

हैदराबाद में कारबार जमने पर आपने अपनी एक शाखा इन्दौर में भी खोली। इस समय सेठ जमनालालजी और रामलालजी दोनों भ्राता व्यवसाय कार्य्य संचालित करते हैं। सेठ जमनालालजी के पुत्र सुखलाल जी का ३।४ साल पहिले स्वर्गवास हो गया, अतः इनके नाम पर श्रीयुत मदनलालजी दत्तक लिये गये हैं। सेठ रामलालजी कीमती के दत्तक पुत्र रोशनलालजी का भी स्वर्गवास होगया। ऐसी स्थिति में सेठ जमनालालजी ने अपने उत्तराधिकारी अपने छोटे भ्राता सेठ रामलालजी को बनाया है। आप लोगों ने सेठ पन्नालालजी एवं सुखलालजी के स्मरणार्थ रामपुरा में संवत् १९८४ में जमनालाल रामलाल कीमती लायब्रेरी का उद्घाटन किया है। सेठ पन्नालालजी ने अपनी मौजूदगी में ८० हजार रुपयों की रकम शुभ कार्यों में लगाई थी। श्री सुखलालजी और रोशनलालजी के स्वर्गवासी होने के समय ६० हजार के रोकड़ शुभ कामों के लिये निकाले गये हैं।

यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। हैदराबाद और इन्दौर में आपके मकानात आदि हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स जमनालाल रामलाल कीमती हसमतगंज तार का पता Pannall फोन नं० 465 — यहाँ जवाहरात और प्रोमेसरी नोट शेअर्स का तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

इन्दौर (सी० आई०)—जमनालाल रामलाल कीमती २७ खजूरी बाजार तार का पता Kimati — जवाहरात का तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

मेसर्स जयनारायण लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक खीचन्द (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ सदासुखजी करीब संवत् १९२५ में हैदराबाद आये थे। आपके ४ पुत्र हुए, जिनमें सेठ राधाकिशनजी एवं जयकिशनजी की यह फर्म है। सेठ सदासुखजी का स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ तथा सेठ राधाकिशनजी का १९५२ में एवं जयनारायणजी १९७६ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी कर्ता हैं। आप सेठ राधाकिशनजी के नाम पर दत्तक आये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी, मेसर्स जयनारायण लक्ष्मीनारायण-यहाँ बैंकिंग व्यापार होता है।

मेसर्स नारायणलाल बंशीलाल

इस फर्म के मालिक श्रीयुत नारायणलालजी पित्ती हैं। आप हैदराबाद की प्रसिद्ध फर्म राजा बहादुर मोतीलाल बंशीलाल के मालिक राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी पित्ती के पुत्र हैं। आप बड़े उत्साही एवं बुद्धिमान नवयुवक हैं। बम्बई के कई सार्वजनिक कार्यों में आपका भाग रहा करता है। आपके यहाँ बम्बई और हैदराबाद में जवाहरात बैंकिंग व्यापार होता है। इन स्थानों पर आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी है। निजामस्टेट के प्रतिष्ठित व्यापारिक कुटुम्बों में आपका कुटुम्ब माना जाता है। आपकी फर्म का पता गौशा महल रेसिडेंसी हैदराबाद है।

राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद डागा

इस प्रसिद्ध फर्म का विस्तृत इतिहास मालिकों के चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ११२ में दिया गया है। भारत के बैङ्किंग व्यापारियों में इस फर्म का स्थान बहुत ऊँचा है। इस फर्म के वर्तमान मालिक रायबहादुर सर बिसेसरदासजी डागा, सेठ नरसिंहदासजी डागा, सेठ बद्रीदासजी डागा एवं सेठ रामनाथजी डागा हैं। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाज में बहुत प्रतिष्ठित एवं पुराना माना जाता है।

इस फर्म का हेड ऑफिस नागपुर-कामठी में है। यहाँ आपकी ४ बड़ी बड़ी कोयले की खानें और मेगजीन की खाने हैं। इस फर्म के अण्डर में २० काटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि भारत के विभिन्न स्थानों में इस फर्म की ३० ब्रांचेज हैं। जिन पर प्रधानतया बैङ्किंग व्यापार होता है। हिंगनघाट में आपकी कपड़े की एक प्राइवेट मिल भी है।

निजाम हैदराबाद और इस स्टेट में इस फर्म की ब्रांचों का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर T. No. 350 तार का पता (Narsingh) — यहाँ बैङ्किंग एवं स्टेट मार्गेज का प्रधान व्यापार होता है। हैदराबाद के बैङ्कर्स में यह फर्म बहुत बड़ा कारबार करने वाली है।

निजामाबाद (निजामस्टेट)—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर				जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं और बैङ्किंग तथा काटन का व्यापार होता है।
पुरना (निजामस्टेट)	"	"	"	
परली (निजामस्टेट)	"	"	"	
सेलू (निजामस्टेट)	"	"	"	
लोहा (निजामस्टेट)	"	"	"	

मेसर्स राजा बहादुर भगवानदास हरीदास

इस फर्म के मालिक मोढ़ (गुजराती) मोढ़-वणिक समाज के सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान मोंढेरा (गुजरात) है। मोंढेरा से मुगलकाल में यह कुटुम्ब देहली, पूना, बुरहानपुर, होता हुआ फिर देहली पहुँचा और वहाँ से आदि निजाम बादशाह आसिफजाह के साथ करीब सन् १७२९ में हैदराबाद आया तब से आपका यहीं निवास है। इन सब स्थानों पर यह कुटुम्ब जवाहरात और बैङ्किंग व्यापार करता था।

सर्वप्रथम सेठ पुरुषोत्तमदासजी ने यहाँ शाही घराने से जवाहरात और बैङ्किंग व्यापार शुरू किया। आपके ३ पुत्र हुए—सेठ किशनदासजी, सेठ हरीदासजी एवं सेठ हरजीवनदासजी। इन सज्जनों में से सेठ किशनदासजी ने राजा पांमुई के चाँदा, मादेपुर और बलार शाह जंगलों के ठेके लिये, इन जंगलों की लकड़ी "केड़ी" ट्रेडमार्क से आप हैदराबाद, मछलीपट्टम और बम्बई की जहाजी कम्पनियों को बेचते थे। आप निजाम सरकार के १४ जिलों के आनरेरी वाउचेदार नियत हुए, इस परिश्रमस्वरूप आपको निजाम सरकार से जागीरी प्राप्त हुई। सेठ हरीदासजी, राजा चन्दूलाल प्राइम मिनिस्टर के समय में पंचमय्या कमेटी के प्रेसिडेंट थे। यह कमेटी राज्य के फाइनेंशियल विभाग व आय व्यय का प्रबंध करती थी। आपका स्वर्गवास संवत १९१४ में हुआ।

सेठ हरीदासजी के ४ पुत्र हुए—राजा बहादुर सेठ भगवानदासजी, सेठ गुलाबदासजी सेठ बालकिशनदासजी एवं सेठ गिरधरदासजी। इनमें से सेठ भगवानदासजी और गुलाबदासजी ने विशेष रूपसे व्यापार सम्हाला। सेठ भगवानदासजी ने निजाम सरकार मीर महबूब अली खाँ को लाखों रुपये के जवाहरात सप्लाइ किये, आप हैदराबाद कानून-कार्यवाहक कमेटी के मेम्बर थे। आपसे प्रसन्न होकर सरकार ने आपको "राजा बहादुर" का खिताब इनायत किया। आपका एवं गुलाबदासजी का कारबार २५ वर्ष पूर्व अलग अलग हो गया। आप संवत् १९६९ में स्वर्गवासी हुए।

राजा बहादुर सेठ भगवानदासजी के ४ पुत्र हुए—सेठ आनन्ददासजी, सेठ परमानन्ददासजी, सेठ गोपालदासजी एवं सेठ मुकुन्ददासजी। सेठ आनन्ददासजी का स्टेट के प्राइवेट और पोलिटिकल डिपार्टमेंट से बहुत सम्बन्ध रहता था। आपके स्मारकस्वरूप नाथद्वारे में विट्ठलनाथजी के मंदिर में धर्मशाला बनाई गई है। आप १९७७ में स्वर्गवासी हुए। सेठ परमानन्ददासजी हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स के प्रेसिडेंट और बैंकों के डायरेक्टर थे। जवाहरात के व्यापार में आपकी अच्छी निगाह थी, आप संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ मुकुन्ददासजी हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स कोआपरेटिव बैंक एवं कॉटन मीलों के डायरेक्टर एवं सरकारी लोनमेम्बर और रेमिटेंसी लोकल फंड के मेम्बर थे। पब्लिक कामों में भी आप सहयोग लेते थे। आप संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ परमानन्ददासजी के पुत्र सेठ गिरधरदासजी, सेठ गोपालदासजी के पुत्र सेठ किशनदासजी, सेठ मुकुन्ददासजी के पुत्र सेठ द्वारकादासजी, सेठ बालकिशनदास जी, दामोदरदास जी एवं गोविन्ददास जी हैं। इनमें से सेठ गिरधरदासजी एवं किशनदास जी फर्म का व्यवसायिक एवं राजकीय कारबार सम्हालते हैं। ... यह कुटुम्ब हैदराबाद के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। ...

स्व० सेठ रूपचंदजी कोचर (मदनचंद रूपचंद) हैदराबाद रेसिडेंसी

सेठ भेरूमलजी कोचर (मदनचंद रूपचंद)
हैदराबाद रेसिडेंसी

सेठ गोवर्द्धनदासजी राठी ([illegible])
हैदराबाद रेसिडेंसी

से इस कुटुम्ब के बहुत तालुकात आरंभ से चले आते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद (दक्षिण)—मेसर्स भगवानदास हरीदास एण्ड संस रेसिडेंसी T. No. 347 तार का पता Krishna } यहाँ बैङ्किंग व जवाहरात का व्यापार होता है।

मेसर्स मदनचंद रूपचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेघराजजी कोचर हैं। आप बीकानेर-निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। करीब १०० साल पूर्व सेठ मदनचंदजी पैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद आये थे। आपके पुत्र सेठ चन्दनमलजी आपकी मौजूदगी ही में स्वर्गवासी हो गये थे। पश्चात् आपके यहाँ सेठ रूपचन्दजी बीकानेर से दत्तक लाये गये। इस फर्म के व्यवसाय की नींव सेठ मदनचन्दजी के हाथों से ही जमी। आपने अच्छी प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताया।

सेठ रूपचंदजी कोचर बड़े लोक प्रिय सज्जन थे, कानून की आपको अच्छी जानकारी थी, कुलपाक तीर्थ के जीर्णोद्धार करने वाले ४ सज्जनों में से एक आप भी थे। आप संवत १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर आपके भतीजे सेठ मेघराजजी संवत १९६६ में गोद लिये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मेघराजजी कोचर हैं। आप शिक्षित एवं उन्नत विचारों के सज्जन हैं। आप इल्लेगुड़ा के श्री हनुमानजी के प्रधान ट्रस्टी एवं मारवाड़ी मण्डल के अध्यक्ष हैं। हैदराबाद के मारवाड़ी नवयुवक समाज द्वारा होने वाले कार्यों में आप सहयोग देते रहते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स मदनचन्द रूपचन्द } बैङ्किंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है।

मेसर्स मनीराम रामरतन राठी

इस फर्म के मालिक नागौर (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी समाज के राठी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन १५० वर्ष पूर्व सेठ साहबरामजी ने किया। इसके पहले निरख और इन्दौर में कारबार करते थे। आपके बाद सेठ मनीरामजी एवं सेठ रामरतनजी के जमाने में इस दुकान के रोजगार की तरक्की हुई। सेठ रामरतनजी ने कुचेरा (जोधपुर स्टेट) में २ धर्मशालाएँ तथा नागौर में एक मन्दिर बनवाया। आप ४० साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ रामरतनजी के २ पुत्र हुए, सेठ गुमनीरामजी और द्वारकादासजी। सेठ द्वारकादासजी का संवत् १९७९ में स्वर्गवास हुआ।

मेसर्स रामदयाल घासीराम
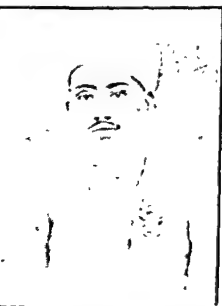
इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान मोंढड़ी (डीडवाना-जोधपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के संस्थापक सेठ मोतीराम जी संवत १९२९ में देश से हैदराबाद आये। उस समय आपके पुत्र सेठ रामदयाल जी एवं घासीरामजी क्रमशः १४ और ११ वर्ष की अवस्था में आपके साथ थे। सेठ मोतीराम जी ५ साल तक यहाँ मामूली काम काज करते रहे, पश्चात् संवत् १९३५ में आपने उपरोक्त फर्म की स्थापना की। सेठ मोतीराम जी के दूसरे पुत्र सेठ घासीराम जी बहुत उग्रबुद्धि के प्रतापी पुरुष हुए। आपने एरंडी और नमक के व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। इन व्यापारों के अतिरिक्त जवाहरात एवं अनाज के व्यवसाय में भी आपने अच्छी उन्नति की थी। इन सब व्यापारों के अलावा आपने निजाम स्टेट के आबकारी का कंट्राक्ट करीब १५ वर्ष पूर्व लिया, एवं इस काम के लिये निजाम स्टेट के कई स्थानों में अपनी दुकानें खोलीं।

रायसाहब सेठ घासीराम जी बड़े साहसी एवं सरल प्रकृति के महानुभाव थे। एक बार आपने एक जवाहरात के बंद बक्स को बारह लाख पंद्रह हजार रुपयों में खरीद कर उपस्थित जौहरी समाज में बड़ा आश्चर्य पैदा कर दिया था। एक बार संवत् १९५८ में जब आप एरंडी का पेमेंट करने के लिये २० हजार रुपये लेकर गाड़ी में जा रहे थे तब अचानक आप पर ७-८ व्यक्तियों ने हमला किया, तब बड़ी मुस्तैदी से अपनी आत्मरक्षा कर घावों पर टाँके लगवाने के लिये आप स्वयं अस्पताल गये। संवत् १९६५ में फ्लड के समय एवं महासमर टाइम में अनाज की मँहगी के कंट्रोल लेकर आपने जनता की बहुत मदद की थी, १५ वर्ष पूर्व आपने श्री वेंकटेश्वर गौशाला का स्थापन किया और तब से अभी तक आपकी फर्म करीब १० हजार रुपये प्रतिवर्ष उक्त गौशाला के लिये खर्च करती है। यूरोपीय युद्ध के समय एक बड़ी रकम गवर्नमेंट को लोन के रूप में देने के कारण आप सन् १९१८ में राय साहब की पदवी से सम्मानित किये गये। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आप संवत् १९८३ की पौषबदी २ को स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ इन्दौर से (आपके काका सेठ कनकमलजी के पुत्र) सेठ गोपीकिशनजी संवत् १९४७ में दत्तक लाये गये। आप भी धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव हैं। इस समय आपके तीन पुत्र हैं जिनमें श्रीव्यङ्कटलालजी व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं तथा बंशीलालजी एवं नत्थूलालजी विद्याध्ययन करते हैं। श्री व्यङ्कटलालजी में अपने पितामह रायसाहब सेठ घासीरामजी के सद्गुणों की बहुत अधिक परछाई आई है। आप बहुत सरल प्रकृति के निरभिमानी नवयुवक हैं। इस समय आपकी आयु २४ वर्ष की है। इतनी स्वल्प आयु में आप फर्म का व्यापार बड़ी तत्परता से संचालित करते हैं। नवयुवकों

कन्हैयालालजी सेन्ट्रल बैंक रेसिडेंसी में ट्रेझरर हैं। तथा रामानुजदासजी के नाम से १२ साल से बैङ्किंग व्यापार चालू किया गया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामचन्द्र हनुतराम बेगम बाजार	किराने और गल्ले का व्यापार होता है।
हैदराबाद—रामानुजदास बैंकर्स बेगम बाजार T. NO 307	बैङ्किंग व्यापार होता है।

गोस्वामी लालगिरि विनोदगिरि

इस खानदान के पूर्वज महंत इलायचीनाथजी ज्वालामुखी (पंजाब) में निवास करते थे। आप कांगड़ी जिले के पहाड़ी रजवाड़ों के साथ लेन देन करते थे। आपने दसनाम गोस्वामियों में कई भंडारे किये और अच्छा नाम पाया। आपके बाद क्रमशः केसरगिरिजी, रामकिशनगिरिजी एवं नरपतगिरिजी हुए। गोस्वामी नरपतगिरिजी सन् १२४४ हिजरी में बादशाह नासिरुद्दौला के जमाने में हैदराबाद आये। आपके समय में बैङ्किंग और शाल दुशालों का व्यापार होता था। आपके चेले प्रभातगिरिजी के हाथों से व्यवसाय एवं सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आपने रामेश्वर यात्रा करने वाले अभ्यागतों के लिये लोटा, थाली एवं कम्बल का सदावर्त जारी किया। आपके पश्चात् रतीगिरिजी, पूर्णागिरिजी एवं हरनामगिरिजी ने फर्म का व्यवसाय सम्हाला। वर्तमान में फर्म के प्रधान मालिक गोसाई हरनामगिरिजी के चेले श्रीलालगिरिजी हैं। आप यहाँ के बहुत प्रतिष्ठा-प्राप्त सज्जन हैं। हिन्दी भाषा से आपको विशेष स्नेह है। सन् १९२० में कई हजार रुपयों की लागत से आपने एक यज्ञ किया। बनारस में आपकी एक धर्मशाला बनी है, जिसमें २० विद्यार्थी प्रतिदिन भोजन पाते हैं। आपके चेले श्रीविनोदगिरिजी स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में फर्म का व्यवसायिक एवं राज दरबारी कार्य्यभार श्रीविनोदगिरिजी के चेले महेशगिरिजी एवं आपके चेले श्रीभुवनेशगिरिजी संचालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-मेसर्स लालगिरि विनोदगिरि बेगम बाजार T. No 207	इस फर्म में बैङ्किंग व्यापार तथा नवाब उमीरावों और जागीरदारों के साथ लेन देन का व्यवहार होता है। बम्बई तथा हैदराबाद में इस फर्म की कई कोठियों का किराया आता है।

सेठ वामन रामचन्द्र नाइक (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद

सेठ वामन नाइक (वामन रामचन्द्र नाइक) हैदराबाद

मुक्ताश्रम बिल्डिंग (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद

मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्री वामनराव नाइक जागीरदार हैं। आप के पूर्वज धापूजी नाइक बीजापुर में बैंकिंग व्यापार करते थे। श्री धापूजी नाइक ने हैदराबाद के नारायण पेठ नामक स्थान में अपना साहुकारी लेनदेन का काम जारी किया। आप के पुत्र श्री उमाकान्त जी नाइक को हैदराबाद स्टेट के संस्थानिक राजा साहब गदवाल ने अपनी स्टेट में साहुकारी व्यापार करने के लिये आमंत्रित किया, श्री उमाकान्तजी नाइक के पौत्र (श्री पंढोबा नाइक के पुत्र) श्री गोविन्दनाइक एवं श्री पंढोबा नाइकने इस कुटुम्ब में सबसे अधिक मान मर्य्यादा पाई। आप दोनों सज्जनों ने "गदवाल" एवं "वनपर्ती" स्टेट के दीवान का पद सुशोभित किया। उस समय लाखों रुपयों की सम्पत्ति इन स्टेटों में इस फर्म की साहुकारी व्यवसाय में लगी रहती थी। आप दोनों भ्राताओं को उक्त स्टेटों ने जागीरी देकर सम्मानित किया।

व्यवसायिक एवं राजकीय कार्यों के अलावा श्रीमान् गोविन्द नाइक एवं श्रीमान् पंढोबा नाइक ने कृष्णा नदी पर एवं जी० आई० पी के स्टेशन पर दो धर्मशालाएँ बनवाईं, रामेश्वर तथा काशी जाने वाले यात्रियों के लिये भोजन तथा सदाव्रत का प्रबन्ध किया, कई यज्ञ किये, एवं तीन चार देवालयों का निर्माण कराया, वनपर्ती राजा साहब से "व्यासरला" नामक ग्राम की कुछ जमीन खरीद कर अग्निहोत्र ब्राह्मणों को दिया। इस प्रकार आप दोनों सज्जन क्रमशः ता० २३-९-१८९५ एवं जून सन् १८८२ ईस्वी को स्वर्गवासी हुए।

श्रीमान् गोविंद नाइक के २ पुत्र हुए, श्रीरामचन्द्र नाइक एवं श्रीनिवास नाइक। इनमें श्री रामचन्द्र नाइक अपने चाचा पंढोबा नाइक के स्वर्गवासी होने के २७ दिन बाद ही ३६ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवासी हुए। श्रीमान् पंढोबा नाइक के पुत्र श्रीवासुदेव नाइक वकीली करते थे, एवं श्रीगोविंद नाइक पेंशनर इन्स्पेक्टर जनरल आफ रेवेन्यू हैदराबाद हैं।

श्रीगोविंद नाइक के बड़े पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक के ३ पुत्र हुए श्रीवेंकटाद्रि नाइक, श्री कनकाराव नाइक एवं श्रीवामन नाइक। इन सज्जनों में श्रीवामन नाइक विद्यमान हैं। श्रीवेंकटाद्रि नाइक के पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक हैदराबाद के प्रसिद्ध बैरिस्टर हैं। श्रीगोविंद नाइक के छोटे पुत्र श्रीकनकाराव नाइक के ७ पुत्र हैं जिनमें बड़े पंढोबा नाइक व्यापार करते हैं एवं छोटे कृष्णाजी नाइक ट्रेन्सपोर्टेशन हैदराबाद हैं।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक श्रीमान् गोविंद नाइक के पौत्र श्री वामन रामचन्द्र नाइक हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण समाज के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप विद्याप्रेमी, देशभक्त एवं सरल स्वभाव के सज्जन हैं। विद्या प्रचार के कार्यों से आप को विशेष स्नेह है। आपकी ओर से हैदराबाद विवेक वर्द्धिनी पाठशाला के नाम से एक हाई स्कूल चल रहा है जिसमें ८०० छात्र शिक्षा

लाभ करते हैं। इसके साथ कन्या पाठशाला एवं बोर्डिंगहाउस भी है। बोर्डिंग में छात्रों के लिये भोजनादि का प्रबन्ध है। प्लेग एवं इन्फ्ल्यूएन्ज़ा के समय जनता की बहुत आपने सेवाएँ की थीं। इस समय आप हैदराबाद म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर, सनातन धर्म सभा और सोशियल सर्विस लीग के प्रेसिडेंट हैं। आप के पुत्र श्रीयुत श्रीधर वामन नाइक हैदराबाद हाईकोर्ट में बैरिस्टरी करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार गवलीगुड़ा, बेगमपैठ। T. No. 135, 375	यहाँ "गदवाल" एवं "वनपर्ती" संस्थान की जमींदारी एवं बैंकिंग काम होता है।

इसके अलावा परभनी, नांदेड़, निज़ामबाद, मेदक और कामारेड्डी में आपकी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरीज़ एवं राइस मिल हैं।

मेसर्स सदासुख आनन्दीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के डागा सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ सदासुखजी डागा के हाथों से निज़ाम स्टेट के हेगलूर नामक स्थान में १५० वर्षों से अधिक समय पहिले हुआ था। करीब ४० सालों तक आप हेगलूर में व्यापार संचालित करते रहे, आपही के समय में हैदराबाद में भी दुकान खोली गई। सेठ सदासुखजी एवं बंसीलालजी अबीरचंदजी का बहुत सन्निकट कौटुम्बिक सम्बन्ध है। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ आनन्दीदासजी ने व्यवसाय सम्हाला, आप दोनों सज्जनों के समय व्यवसाय बराबर बढ़ता गया। सेठ आनन्दीदासजी के २ पुत्र हुए। सेठ गंभीरचंदजी डागा, कैसरहिन्द सर कस्तूरचंदजी डागा, तथा सेठ सुगनचंदजी डागा। इन सज्जनों में सर कस्तूरचंदजी डागा मेसर्स बंसीलाल अबीरचंद फर्म में दत्तक गये, तथा शेष दोनों भ्राता फर्म का व्यापार संचालन करते रहे। कैसरहिन्द कस्तूरचंदजी डागा ने मेसर्स बंसीलाल अबीरचंद के नाम और व्यापार को बहुत चमकाया, आपका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में दिया जा चुका है।

सेठ गंभीरचंदजी एवं सेठ सुगनचंदजी दोनों भ्राताओं में सेठ गंभीरचंदजी ४० वर्ष की आयु में संवत् १९४१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् फर्म का सारा कारबार सेठ सुगनचंदजी ही देखते रहे। बीकानेर की पंच पंचायती एवं सार्वजनिक कामों में आपका अच्छा हाथ रहता था, हैदराबाद के शाहीघराने एवं नवाबों के साथ आपने लेन देन का व्यवहार आरंभ किया जो पूर्ववत् इस फर्म पर चला आता है। मेड़ता में आपने धर्मशाला बनवाई एवं

सदाव्रत चालू किया। बीकानेर में आपकी ओर से सुगनचंद केदारनाथ नामक औषधालय स्थापित है। आपका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हुआ। आपके इकलौते पुत्र सेठ केदारनाथजी ढागा आपकी मौजूदगी में ही सब कामकाज देखने लगे थे।

सेठ केदारनाथजी ढागा ने रूई के धंधे में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की, आप अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता एवं अदम्य हिम्मत वाले व्यापारी थे, विशेष कर आप कलकत्ता बम्बई में ही निवास करते थे, आप संवत् १९८० की पौषवदी ९ को स्वर्गवासी हुए, इस समय आपके २ नाबालिग पुत्र श्रीजीवनलालजी एवं श्रीसत्यनारायणजी क्रमशः ९ और ७ साल के हैं और सर बिसेसरदासजी ढागाकी देखरेख में नागपुर में निवास करते हैं। इस फर्म पर बाबू हरनाथजी राठी नागोर निवासी २० सालों से मुनीमात करते हैं। आप भी बड़े समझदार सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद रेसिडेंसी—मेसर्स सदासुख जानकीदास
T. No. 310 तार का पता EORNESTLI } यहाँ बैङ्किंग तथा सराफी लेन देन का काम होता है।

हिंगट्टर (निजाम स्टेट) मेसर्स सदासुख जानकीदास—बैङ्किंग तथा सराफी लेन देन होता है।

बम्बई—मेसर्स गम्भीरचन्द केदारनाथ
शेखमेमन स्ट्रीट T. No. 2319. } " " "

कलकत्ता—मेसर्स सुगनचंद केदारनाथ
जीवनभवन, हाइवरो। } " " "

मेसर्स सरदारमल सुगनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान अजमेर है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इसफर्म के वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ थानमलजी लूणिया हैं। आप संवत् १९३२ में अपने किसी घरू काम से यहाँ आये थे और फिर आपने यहीं अपनी दुकान स्थापित कर ली।

दीवान बहादुर सेठ थानमलजी बड़े व्यापार दक्ष सज्जन हैं, जवाहरात के व्यापार में आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की, आपका माल निजाम सरकार के घराने में एवं इस स्टेट के अमीर उमरावों में खासकर बिक्री होता है। हैदराबाद के आप बहुत प्रतिष्ठित एवं धनिक व्यापारी माने जाते हैं। सन् १९१२ में आपको निजाम सरकार ने राजा बहादुर का खिताब इनायत किया है। इतना ही नहीं आपसे प्रसन्न होकर भारत गवर्नमेंट ने सन् १९१२ में रायबहादुर

४

दीवान बहा... ...जी लूणियाँ (सरदारमल सुगनमल) हैदराबाद

सेठ सुगनमलजी लूणियाँ (सरदारमल सुगनमल) हैदराबाद

सेठ इंद्रमलजी लूणियाँ (सरदारमल सु...

एवं सन् १९१९ में दीवान बहादुर की पदवी देकर आपका सम्मान किया है। बीकानेर दरबार ने भी आपको दोनों पैरों में सोना, ताजीम, हाथी, पालकी एवं छड़ी बख्शी है।

आपकी ओर से केसरियाजी में एक धर्मशाला तथा मल्लिनाथजी में एक मकान बना हुआ है। आपके ४ पुत्र हुए पर चारों स्वर्गवासी हो गये। आपके बड़े पुत्र श्रीयुत सरदार मलजी एवं सुगनमलजी के नामों से उपरोक्त दुकान है। श्रीयुत सुगनमलजी के नाम पर श्री-इन्द्रमलजी अजमेर से दत्तक लाये गये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—रेसिडेंसी कोठी—मेसर्स सरदारमल सुगनमल—यहाँ जवाहरात का व्यापार तथा बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम रामनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास छोटी खाटू (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के लोया सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामनारायणजी लोया (सेठ धन-रूपजी के पुत्र) केवल ५ वर्ष की अल्प आयु में यात्रियों के साथ संवत् १९०१ में हैदराबाद आये थे। १॥ साल बाद आप शिवकरण रामदास की दुकान पर नौकर हो गये, आपने वहाँ ऐसी प्रतिभा दिखाई कि धीरे २ उस दुकान के मुनीम एवं पीछे से भागीदार बनाये गये। उक्त दुकान का शाही घराने के साथ कपड़े का लेन देन था। इस प्रकार कपड़े के व्यापार में अनुभव प्राप्त कर आपने संवत् १९२६-२७ में अपनी स्वतंत्र दुकान की।

सेठ रामनारायणजी लोया ने धार्मिक कामों में भी उदारता पूर्वक खर्च किया। आपने श्रीरंगम में एक धर्मशाला बनवाई। हैदराबाद में नदी के किनारे धर्मशाला बनवाई, बालाजी के मंदिर का जीर्णोद्वार करवाया, सीताराम बाग में धर्मशाला बनवाई तथा लकड़ी का विशाल रथ चढ़ाया। इसी प्रकार महाराजगंज, सोमाजी, गुड़ा एवं अलवाल के मंदिर में काम करवाये। तिरपती बालाजी में आपने कोठियाँ, हाल तथा दीवालें बनवाई, नल की व्यवस्था की, आपकी ओर से चिंतानूर, पद्मावती, बालाजी तथा विष्णुकाँची में सदावर्त का प्रबन्ध है। आपका स्वर्गवास संवत् १९७७ की चैत्रबदी ८ को हुआ। आपने मीर महबूब अली बादशाह के साथ देहली और काशी की यात्रा की थी। आपके पुत्र सेठ रामधनजी आपकी मौजूदगी में ही संवत् १९७६ की आषाढ़ सुदी १२ को स्वर्गवासी हो गये थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रामधनजी के पुत्र सेठ व्यंकटलालजी लोया हैं। हैदराबाद में सन् १९२९ के अ० भा० वैष्णव सम्मेलन के आप उपसभापति निर्वाचित हुए

स्व॰ सेठ रामनारायणजी सोया (सीताराम रामनारायण)

स्व॰ सेठ रामधनजी सोया (सीताराम रामनारायण)

श्री॰ सेठ

लाला रामनारायणजी बड़े उत्साही और साहसी व्यापारी थे। आपके समय में इस फर्म के व्यापार और सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आप हैदराबाद स्टेट के बड़े प्रतिष्ठित जौहरी थे। लाखों रुपयों के जवाहरात आपने निजाम सरकार को सप्लाई किये। दरबार में आपकी अच्छी इज्जत थी। कानोड़ में आपने सदावर्त चालू किया। तथा और भी जैन धर्म के कार्यों में अच्छी सहायताएँ दीं। आप ८४ वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र लाला सुखदेवसहायजी पर कारभार छोड़कर स्वर्गवासी हुए।

लाला सुखदेवसहायजी ने करीब १ लाख रुपया खर्च कर जैन धर्म की कई पुस्तकें तथा बालब्रह्मचारी जैनमुनि अमोलक ऋषिद्वारा अनुवादित ३२ जैनसूत्रों की एक हजार प्रतियाँ अमूल्य बटवाईं। आपने कलकत्ते में दुकान की एक शाखा खोली। आपकी सेवाओं से प्रसन्न निजाम सरकार ने आपको राजाबहादुर का खिताब इनायत किया। आप संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी के पश्चात् आपके पुत्र लाला ज्वालाप्रसादजी ने इन फर्मों का कार्यभार सम्हाला। आप ही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आपको पटियाला नरेश की तरफ से ४ कांस्टेबल और १ सार्जेण्ट की गार्ड आफ ऑनर मिली है। आप पटियाला स्टेट के प्रतिष्ठित रईसों में माने जाते हैं। आपके ही समय हैदराबाद में चारकमान से रेसिडेंसी में कारबार शुरू किया। हैदराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी मातबर मानी जाती है। आपके पुत्र माणकचंदजी ३ वर्ष के हैं। आपके कारबार का हाल इस प्रकार है।

हैदराबाद—(रेसिडेंसी) राजा बहादुर लाला सुखदेव-सहाय ज्वालाप्रसाद बैंकर्स तार का पता Lala फोन 569	बैङ्किग, जवाहरात और आढ़त का काम होता है।
कलकत्ता—ज्वालाप्रसाद जगदम्बाप्रसाद ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट, तार का पता Gulab Pul फोन नं॰ 2769 B.B.	यहाँ गल्ला, बारदाना, भाड़त, किराना का काम होता है।
कानोड़—महेन्द्रगढ़ (पटियाला स्टेट) लाला नेतराम रामनारायण लाला भवन	यहाँ आपका खास निवास-स्थान है।

मेसर्स हरगोपालदास रामलाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गनेड़ी (सीकर) है। वहाँ से यह कुटुम्ब महाराजा लक्ष्मणसिंहजी के समय में लक्ष्मणगढ़ आकर निवास करने लगा। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सिंहल गोत्रीय गनेड़ी वाला सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ महानंदरामजी देश से पैदल मार्ग द्वारा संवत् १८६२ में हैदराबाद आये। एवं आप ही के हाथों से यहां फर्म की स्थापना हुई।

सेठ महानंद रामजी यहाँ सरकारी पोतदारे का काम महानंदराम पूरनमल के नाम से करते थे इसके अलावा आपने राज्य के साथ लेनदेन का सम्बन्ध भी जारी किया। कलकत्ता बंबई आदि बड़े शहरों उस समय आपकी बहुत सी दुकानें काम करती थीं। आपके पुत्र सेठ पूरनमलजी इस कुटुम्ब में बहुत प्रतापी एवं मेधावी पुरुष हुए, आपने इस फर्म के सम्मान सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा में विशेष रूप से वृद्धि की। आप निजाम स्टेट के ख्याति प्राप्त साहुकार माने जाते थे। सरकारी पोतदारे के अलावा आपने फर्म के बैङ्किग व्यापार की भी विशेष वृद्धि की।

व्यापारिक उन्नति के साथ २ हैदराबाद का प्रसिद्ध सीताराम बाग आपने बनवाया। इस मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् १८८२ की ज्येष्ठ सुदी २ को की गई। यह मंदिर हैदराबाद के प्रसिद्ध हिन्दू देवालयों में गिना जाता है। इसके स्थाई प्रबंध के लिये निजाम सरकार आसफजाह बादशाह ने ७५ हजार सालाना की जागीर निकाल कर सेठ पूरनमलजी का उचित सत्कार किया था। इसकी जागीर पानगाँव, बलगाँव, आकोली आदि स्थानों में है। इसके अलावा एक भैरंवजी का मंदिर पुष्कर में भी बनवाया, इसकी प्रतिष्ठा संवत् १९०० में की गई। इस मंदिर के स्थाई प्रबंध के लिये राजपूताने में सीकर दरबार की ओर से १५००) सालाना की जागीर प्राप्त है।

सेठ पूरनमलजी के पश्चात् इस फर्म का व्यापार भार क्रमशः सेठ प्रेमसुखदासजी सेठ हरगोपालदासजी एवं सेठ रामलालजी ने सम्हाला आप तीनों सज्जनों में से प्रेम सुखदासजी संवत् १९१२ में एवं सेठ हरगोपालदासजी संवत १९४० में स्वर्गवासी होगये हैं। तथा वर्तमान में राय साहब सेठ रामलालजी विद्यमान हैं, एवं आप ही फर्म के प्रधान मालिक हैं।

राय साहब सेठ रामलालजी गनेड़ी वाला—आपका जन्म संवत् १९०५ में हुआ। सेठ पूरनमलजी के पश्चात् फर्म के सम्मान में आपके हाथों से विशेष वृद्धि हुई, कानून और वैद्यक में आप विशेष जानकारी रखते हैं। आपने निजाम सरकार से बरसों तक मुकदमा लड़कर कई लाख की रकम ली, आप अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के द्वितीय अधिवेशन के सभापति भी

राव साहब सेठ रामलालजी गनेड़ीवाला
(हरगोपालदास रामलाल)

स्व० सेठ मुरलीधरजी गनेड़ीवाला
(हरगोपालदास रामलाल)

श्री सेठ लक्ष्मी निवासजी गनेड़ीवाला
(हरगोपालदास रामलाल)

अ० भा० मा० अग्रवाल पंचायत के कलकत्ते वाले अधिवेशन में सभापति निर्वाचित हुए थे। आप हैदराबाद लेजिस्लेटिव्ह असेम्बली के मेम्बर रह चुके हैं। आपसे प्रसन्न होकर भारत गवर्नमेंट ने सन् १९१० में आपको राय साहब की पदवी दी। आप श्री सीताराम बाग के मुतब्वली हैं, आप यहाँ के मारवाड़ी पंचायती के पंच माने जाते हैं। आपके २ पुत्र हुए, सेठ मुरलीधरजी एवं सेठ लक्ष्मीनिवासजी। सेठ मुरलीधरजी स्वर्गवासी होगये, एतदर्थ आपके नाम पर श्रीलक्ष्मी निवासजी दत्तक हैं। वर्तमान में रायसाहब सेठ रामलालजी फर्म का व्यापारिक काम अपने सुयोग्य पौत्र सेठ लक्ष्मीनिवासजी पर छोड़कर शांति लाभ करते हैं।

सेठ मुरलीधरजी—आप २० वर्ष की उम्र से ही लक्ष्मण गढ़ में निवास करने लगे थे, यहाँ की जनता में आपने बहुत ख्याति पाई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ की पौष वदी ३ को हुआ, आपके सम्मानस्वरूप लक्ष्मणगढ़ की जनता ने आपके स्वर्गवास के दिन हड़ताल मनाई एवं आपके द्वादशे में स्वयं सीकर महाराज ने आकर अग्रगण्य रूप से भाग लिया। लक्ष्मणगढ़ की जनता आपकी जीवनी पुस्तकाकार रूप में अलग प्रकाशित करा रही है। सीकर दरबार में इस कुटुम्ब को कुर्सी प्राप्त है, लक्ष्मणगढ़ में आपकी बहुत सी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमान में इस फर्म के प्रधान संचालक सेठ लक्ष्मी निवासजी गनेड़ी वाला हैं। आप बहुत गंभीर सरल स्वभाव के उदार नवयुवक हैं। लक्ष्मीविलास तथा पद्माविलास नामक आपकी यहाँ सुंदर बिल्डिंग्ज बनी हुई है। अभी हाल ही में आपने लक्ष्मी बैंक की स्थापना की है। इसमें नवीन पद्धति से बैङ्किग व्यापार किया जाता है। तथा कुछ मास पूर्व आपने बेजवाड़ा में एक कॉटन मिल खरीदा है, इस प्रकार अपनी फर्म के व्यवसाय को विस्तृत करने के लिये आप बड़ी तत्परता से व्यापारिक कामों में दत्तचित्त रहते हैं। नवयुवकों द्वारा होने वाले योग्य कार्यों में आप विशेष दिलचस्पी रखते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स हरगोपालदास रामलाल T. No. 181 तारका पता Laxmi	यहाँ बैङ्किग, कंट्राक्टिंग एवं आढ़तका कारबार होता है।
सिकन्दराबाद—हरगोपाल दास रामलाल लक्ष्मीविलास T. No. 574 तारका पता Bilas	यहाँ निवास एवं बंगला है।

बेजवाड़ा—दि कृष्णा स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड	अभी आपने इस मिल को खरीदा है। इसके सब शेअर आपके पास हैं।
बेजवाड़ा—दि लक्ष्मी राइस मिल	इस नाम से एक राइस मिल है।
हैदराबाद—दि लक्ष्मी बैंक T. No. 181 तारका पता Laxmi	इस बैंक में नवीन पद्धति से बैङ्किंग व्यापार होता है, इसे आपने अभी कुछ समय पूर्व खोला है।

राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि*

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमान् गोस्वामी धनराज गिरिजी हैं। आप हैदराबाद के बहुत बड़े धनिक एवं प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव हैं। आपके यहाँ प्रधान रूप में निजाम स्टेट के रईसों, नवाबों एवं जागीरदारों को उनकी पापर्टी पर रुपया देना तथा बैङ्किंग काम होता है। आपने एक बहुत विशाल अस्पताल बनवाया है। आपकी फर्म के द्वारा लाखों रुपये धार्मिक एवं शिक्षा के कार्यों में खर्च हुए हैं, आपका ज्ञानबाग दर्शनीय इमारत है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि ज्ञानबाग।	यहाँ निजाम स्टेट के रईसों-नवाबों को पापर्टी पर रुपया देनेका व्यापार तथा इतर बैङ्किंग कारबार होता है।

जौहरी

मेसर्स जिंदामल हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नारनौल (पंजाब) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ गुलजारीलालजी के हाथों से हुआ था। आपका स्वर्गवास संवत् १९२२ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जोगध्यानजी एवं जिंदामलजी ने फर्म के व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। लाला जोगध्यानजी की जवाहरात के व्यापार में अच्छी निगाह थी। आप दोनों भाइयों का क्रमशः संवत् १९५० और संवत् १९५४ में स्वर्गवास हुआ।

---

* खेद है कि कोशिश करने पर भी आपका परिचय एवं फोटो नहीं प्राप्त हो सका।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला जिंदामलजी के पुत्र सेठ हीरालालजी जौहरी हैं। आरंभ से ही आपकी फर्म जवाहरात का व्यापार करती आ रही है। आपके पुत्र श्रीकेशरीचंदजी व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स जिन्दामल हीरालाल चारकमान	यहाँ हीरा, मोती एवं जवाहरात का व्यापार होता है।

राजा बहादुर मोतीलाल रामचन्द्र

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान चरखीदादरी (झिंद) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ खुशालीरामजी के हाथों से हुआ था। आरंभ से ही आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता आ रहा है। सेठ खुशालीरामजी के पुत्र सेठ मुरलीधरजी एवं बंशीधरजी के हाथों से फर्म के व्यापार की उन्नति हुई। आप दोनों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९२९ एवं संवत् १९३२ में हुआ। सेठ मुरलीधरजी के पुत्र रामचन्द्रजी एवं बंशीधरजी के राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी हुए।

राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी जौहरी व्यापारिक समाज के बड़े हिमायती, पक्षपातरहित एवं निजामस्टेट में आदर पाये हुए व्यक्ति थे। आपने १० सालतक बिना किसी मावजे के सरकारी जवाहरात का काम देखा था। इसलिये सन् १९१४ में आपको राजाबहादुर का सम्माननीय खिताब हासिल हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में एवं रामचन्द्रजी का स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी के पुत्र हीरालालजी एवं सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र श्रीयुत लक्ष्मीनारायणजी B. S. C. H. C. S. (सिविल हैदराबाद सर्विस) हैं। आप हैदराबाद के पहिले मारवाड़ी मेजुएट हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स राजाबहादुर मोतीलाल रामचन्द्र चारकमान	यहाँ जवाहरात तथा बैङ्किंग व्यापार होता है।

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स झाँझीराम करोड़ीमल

इस फर्म के मालिक बेरोड़ (अलवर) निवासी ओसवाल समाज के सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ६० साल पहिले सेठ झाँझीरामजी ने किया। सेठ झाँझीरामजी के पश्चात् सेठ करोड़ीमलजी ने जवाहरात आदि के व्यापार में विशेष सम्पत्ति पैदा की। आप १५ वर्ष के पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पूनमचंदजी गंधी हैं। आपको निजाम सरकार से मंसब प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—चौक, मेसर्स झाँझीराम करोड़ीमल—बैंकिंग व कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स नूनकरण ठंडीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कानोड़ (पटियाला) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के कानोड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १८८५ में सेठ नूनकरणजी के हाथों से हुआ था। आरंभ से ही इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता आ रहा है, सेठ नूनकरणजी संवत् १९४२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र ठंडीरामजी ने फर्म के कारबार को विशेष बढ़ाया, आप भी १९७२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ ठंडीरामजी के पुत्र सेठ बंशीलालजी कानोड़िया हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—(दक्खिन) मेसर्स नूनकरण ठंडीराम अफजल गंज T. No. 210 — यहाँ बनारसी, सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों का थोक एवं परचूरन व्यापार होता है।

हैदराबाद—मेसर्स नूनकरण ठंडीराम चौक T. No. 552 — यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

तारवाड़ी मुहल्ला—(मद्रास) राजाबहादुर प्रेमसुखदास ताराचंद — इस नाम से राइस मिल भी आरम्भ किया है।

मेसर्स रामबगस जयचंद

इस फर्म के मालिक जयपुर निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के धूत सज्जन हैं। इसका स्थापन सेठ रामबगसजी के हाथों से हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ जयचंदजी ने व्यापार को तरक्की पर पहुँचाया। आपने इस दुकान से शाही घराने एवं अमीर उमरावों के साथ व्यापार और लेन-देन आरंभ किया। आप संवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपनी फर्म की एक ब्रांच संवत् १९३० में बनारस में खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ जयचंदजी के पुत्र गोविंदनारायणजी धूत हैं। आपने इस दुकान के व्यापार को विशेष चमकाया है। आप शक्ति के उपासक हैं। आपके पुत्र श्रीयुत श्रीकृष्णजी धूत समझदार नवयुवक हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामबगस जयचंद लाड बाजार	यहाँ विशेषकर बनारसी, रेशमी, जरीन माल का व्यापार और बैंकिंग काम होता है।
बनारस—मेसर्स रामबगस जयचंद चौखम्भा	यहाँ से बनारसी कपड़ा तय्यार करवाकर हैदराबाद के लिये भेजा जाता है।

मेसर्स रामनारायण श्रीकृष्ण चिर्वा

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (जोधपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के चिर्वा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामनारायणजी चिर्वा करीब ८० साल पहिले यहाँ आये थे। आरंभ में आपने राजा बहादुर शिवराज मोतीलाल की फर्म पर ४० वर्षों तक काम किया। आपने इस दुकान पर अच्छी इज्जत पाई। इसी अवधि में आपके पुत्र श्रीकृष्णजी चिर्वा ने सराफी और गल्ले का कारबार आरंभ किया। आपने १५ साल पहिले मद्रास में भी दवाइयों का कारबार आरंभ किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ श्रीकृष्णजी चिर्वा हैं। आपके पुत्र श्रीयुत नारायणदासजी चिर्वा भी फर्म का व्यापारिक कार्य संभालते हैं।* आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामनारायण श्रीकृष्ण चिर्वा [illegible]	यहाँ बैंकिंग व्यापार होता है।

---

* [illegible]

हैदराबाद-(दक्खिन) मेसर्स शिवनारायण जयनारायण चारकमान	यहाँ पर बनारस का रेशमी एवं अमृतसर का ऊनी माल बिकता है।
बनारस—मेसर्स बंसीलाल हरीकिशन चौखम्भा	बनारसी माल का व्यापार होता है। यह दुकान १९६४ में सेठ जयनारायणजी ने स्थापित की।

आयरन एण्ड टिम्बर मरचेंट

मेसर्स लालजी मेघजी

इस फर्म के मालिक खास निवासी कच्छ (वालापधर) के हैं। आप कच्छी दशा ओसवाल जाति के जैन मतावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लालजी मेघजी अपने भ्राता सेठ भवानजी कानजी धूलिये वालों के साथ बम्बई की लकड़ी की बजार में सर्विस करते थे। जिस दुकान पर आप सर्विस करते थे, उनकी हैदराबाद ब्रांच पर आप मुकर्रर होकर आये, पीछे वह दुकान उठा ली गई और संवत् १९५१ में आपने यहाँ अपनी स्वतंत्र दुकान खोली। इस व्यापार में सफलता प्राप्त करने पर आपने १५ वर्ष पूर्व स्टील पत्थर एवं फर्शी वगैरा का व्यवसाय भी आरंभ किया। इन व्यापारों में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ लालजी मेघजी "जीव-रक्षा-ज्ञान-प्रचारक-मंडल" नामक संस्था के आरंभ से ऑनरेरी सेक्रेटरी पद का कार्य्य संचालित कर रहे हैं। यह संस्था श्री जैनाचार्य्य हंसविजयजी महाराज के शिष्य श्रीदौलत विजयजी एवं उनके शिष्य श्रीधर्म विजयजी के प्रबोध से संवत् १९७१ में स्थापित हुई थी, इस संस्था का उद्देश मिश्रत के नाम पर वध होने वाले पशुओं का वध बंद करवाना तथा इस प्रांत में जाति-रिवाजों में होने वाले वधों का बंद करवाना है। संस्था ने सेठ लालजी के सहयोग से भजन-मंडली, मेजिक लैंटर्न आदि के द्वारा जनता में सदुपदेश प्रचार का बहुत परिश्रम उठाया है, इस संस्था का विस्तृत परिचय इसके आरंभ में दे चुके हैं।

वर्तमान में सेठ लालजी की वय ६० वर्ष की है आप के पुत्र प्रेमजी लालजी भी व्यापार में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स लालजी मेघजी कुन्टा रोड T. No. 386 तारका पता Prem.	यहाँ टिम्बर, शाहबादी स्टोन, स्टील, मंगलोरी कवेलु, लोहा, गाटर्स एवं कंट्राक्टिंग का काम होता है।

सेठ लालजी मेघजी हैदराबाद

सेठ लक्ष्मीनारायणजी आसावा
(गिरधारीलाल रघुनाथदास हैदराबाद)

व्यापारियों के पते

बैंक्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड रेसिडेंसी रोड
कोआपरेटिव्ह सैंट्रल बैंक लिमिटेड स्टेशन रोड
सैंट्रल बैंक लिमिटेड रेसिडेंसी रोड
आंध्र बैंक लिमिटेड
जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरघाट रोड
दि लक्ष्मी बैंक

बैंकर्स

मेसर्स अमरसी सुजानमल बेगम बाजार
" गुलाबदास हरिदास रेसिडेंसी रोड
" गुमानीराम हरीराम रटोड़, चारकमान
" जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरघाट रोड
" घुमीलाल नरसप्रसाद रेसिडेंसी बाजार
" घुमीलाल मुरलीप्रसाद रेसिडेंसी रोड
" राजा चतुर्भुजदास एण्ड संस रेसिडेंसी रोड
" जयनारायण लक्ष्मीनारायण रेसिडेंसी कोठी
" जगनलाल रामलाल चौमत्री हनमत गंज—रेसिडेंसी
" नारायणलाल बंसीलाल गोपालदास रेसिडेंसी
" निहालचंद पूनमचंद हनमत गंज—रेसिडेंसी

६

मेसर्स राय बहादुर बंसीलाल अबीरचंद डागा रेसिडेंसी बाजार
" राजा बहादुर बंसीलाल मोतीलाल पित्ती, रेसिडेंसी, बेगम बाजार
" राजा बहादुर भगवानदास हरीदास रेसिडेंसी रोड
" महेशगिरि भुवनेशगिरि रेसिडेंसी बाजार
" मनोराम रामरतन सेठी बेगम बाजार
" रामदयाल घासीराम महबूब गंज
" रामप्रताप कन्हैयालाल बेगम बाजार
" रामनाथ बद्रीनाथ महाराजगंज
" रामसुख हीरानंद महाराज गंज
" लालगिरि विनोदगिरि बेगम बाजार
" बिसेसरगिरि वीरभानगिरि बेगम बाजार
" सदासुख आनकी दास रेसिडेंसी
" सरदारमल सुगनमल रेसिडेंसी
" राजाबहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद रेसिडेंसी
" सूरजराम गोविंदराम मूँदड़ा बेगम बाजार
" सीताराम रामनारायण साहू बाजार चौक
" हरकेशलालराम रामलाल रेसिडेंसी
" राजाबहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि
" श्रीकृष्ण नारायणदास त्रिवी

ड्रेपर्स

मेसर्स इन्द्रभान रामजस चारकमान

व्यापारियों के पते

बैंक्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड रेसिडेंसी रोड
कोआपरेटिव्ह सैंट्रल बैंक लिमिटेड स्टेशन रोड
सैंट्रल बैंक लिमिटेड रेसिडेंसी रोड
आंध्र बैंक लिमिटेड
जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरघाट रोड
दि लक्ष्मी बैंक

बैंकर्स

मेसर्स अमरसी सुजानमल बेगम बाजार
" गुलाबदास हरिदास रेसिडेंसी रोड
" गुमानीराम हरीराम राठोड़, चारकमान
" जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरघाट रोड
" चुन्नीलाल नारायणप्रसाद रेसिडेंसी बाजार
" चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद रेसिडेंसी रोड
" राजा चतुर्भुजदास एण्ड संस रेसिडेंसी रोड
" जयनारायण लक्ष्मीनारायण रेसिडेंसी कोठी
" जमनालाल रामलाल कोमटी हुसमत गंज—रेसिडेंसी
" नारायणलाल बंशीलाल गोपालबाग रेसिडेंसी
" निहालचंद पूनमचंद हुसमत गंज—रेसिडेंसी

६

मेसर्स राय बहादुर बंशीलाल अमीरचंद डागा रेसिडेंसी बाजार
" राजा बहादुर बंशीलाल मोतीलाल पित्ती, रेसिडेंसी, बेगम बाजार
" राजा बहादुर भगवानदास हरीदास रेसिडेंसी रोड
" महेशगिरि भुवनेशगिरि रेसिडेंसी बाजार
" मनीराम रामरतन सेठी बेगम बाजार
" रामदयाल घासीराम महबूब गंज
" रामप्रताप कन्हैयालाल बेगम बाजार
" रामनाथ बद्रीनाथ महाराजगंज
" रामसुख हीरानंद महाराज गंज
" लालगिरि विनोदगिरि बेगम बाजार
" विसेसरगिरि बीरभानगिरि बेगम बाजार
" सदासुख जानकी दास रेसिडेंसी
" सरदारमल सुगनमल रेसिडेंसी
" राजाबहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद रेसिडेंसी
" सूरजराम गोविंदराम मूंदड़ा बेगम बाजार
" सीताराम रामनारायण लाड बाजार चौक
" हरगोपालदास रामलाल रेसिडेंसी
" राजाबहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि
" श्रीकृष्ण नारायणदास पित्ती

ज्वेलर्स

मेसर्स इन्द्रजीत रामजस चारकमान

मेसर्स सुरीराम कालूराम चारकमान
" जोगीलाल मनोहरलाल चारकमान
" जिंदामल हीरालाल चारकमान
" जमनालाल रामलाल श्रीमती हसमत गंज
" वोवाराम रामजस चारकमान
" दीवान बहादुर सेठ थानमलजी लूणिया रेसिडेंसी कोठी
" भगवानदास बनारसीलाल

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद रेसिडेंसी

राजा बहादुर मोतीलाल हीरालाल

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स जगनप्रसाद मातादीन लाड़ बाजार चौक
" गोपालजी परमानंद लाड़ बाजार
" जगन्नाथ बलदेव लाड़ बाजार
" जमनादास नंदलाल पथरघट्टी
" झांझीराम फरोड़ीमल लाड़ बाजार
" नूनकरण ठंडीराम पथरघट्टी
" फाग्रमल चुन्नीलाल लाडबाजार
" भीखराज बंशीलाल मार्केट
" मौजीराम बंसीलाल पथरघट्टी
" भगदत्त शिवनाथ लाडबाजार
" रामबगस जयचंद लाडबाजार
" रामदयाल सेडमल लाडबाजार
" रामनारायण हीरालाल पथरघट्टी (ऊनमाल)
" रामप्रसाद रामजीवन पथरघट्टी
" रामदयाल पोकरमल पथरघट्टी
" रामगोपाल हंसराज चौक

मेसर्स रामप्रताप रामविलास चौक
" शिवनारायण जयनारायण चौक
" शिवकरण रामदास चौक
" सीताराम रामनारायण चौक
" श्रीकृष्ण नारायणदास चौक

गोल्ड एण्ड सिल्वर मर्चेंट

मेसर्स केवल कृष्ण मोतीलाल चार कमान
" घासीराम ताराचंद "
" जमनादास नंदलाल "
" तुलसीराम शिवनारायण "
" बद्रीप्रसाद नानकराम "
" भगवानदास बनारसीलाल "
" महानदराम संतराम "
" रघुनाथदास जवाहरलाल "

गोटे के व्यापारी

मेसर्स अहमद इस्माइल
" अब्दुल लतीफ अलीमहम्मद
" कन्हैयालाल मोतीलाल चौक
" कालूराम रामकरण "
" रामकिशन राजाराम "
" रामकरण रामचन्द्र "
" शिवनारायण रामदयाल "
" हाजी दादा "

जरी, कारचोब व जरीन टोपी के व्यापारी

मेसर्स अब्दुल गफूर कारचोब वाले चौक
" मेसर्स चुन्नीलाल ईश्वरदास "
" ठाकुरदास भगवानदास "

मेसर्स नगीनदास चुन्नीलाल (नक्शीगोटा) चौक
" मोमिन साहब कारचोब वाले चौक
" रामकिशन राजाराम (नक्शीगोटा) चौक
" शिवनारायण रामदयाल " "
" सत्यनारायण चन्द्रय्या " "
" हाजी दादा हाजी अय्या " "

बनारसी रेशमी कपड़े के व्यापारी

मेसर्स ताराचंद रामसुख लाड बाजार
" भीखराज बंशीलाल "
" आर. आर. गोपाल "
" रामबगस जयचंद "
" शिवनारायण जयनारायण "
" हरीकिशन राधाकिशन "
" हाजी दादा "
" हाजीजी आली "

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कोडारथ लक्ष्मी नरसय्या उसमानगंज
" गोविंद गोपाल उसमानगंज
" गंगाकिशन मोहनलाल उसमानगंज
" चुन्नीलाल कांकानी छोटा महाराजगंज
" चन्दनमल गुलाबचंद उसमानगंज
" जेठमल गंगाकिशन महबूबगंज
" टाकरसी धारसी उसमानगंज
" समान अलय्यावलेवार छोटा महाराजगंज
" नानकराम हनुवराम महाराजगंज
" पूनमचंद गनेशमल तोप का सांचा
" मिरियाल रामलिंगम उसमानगंज

मेसर्स रामरतन राधाकिशन महबूबगंज
" रामगोपाल दामोदर महबूबगंज
" रामनाथ बद्रीनाथ छोटा महाराजगंज
" रामचरण सदाराम उसमानगंज
" सीताराम रामगोपाल उसमानगंज
" हाजी युसुफ अली महम्मद उसमानगंज
" हीरानंद रामसुख छोटा महाराजगंज
" श्रीकृष्ण मुकुन्ददास महाराजगंज

किरियाणा के व्यापारी

मेसर्स अहमद अब्दुल्ला बेगमबाजार
" गनेशलाल गोपीलाल बेगमबाजार
" गिरधारीलाल रघुनाथदास लाडबाजार
" जमनालाल मोहनलाल बेगमबाजार
" दाउद अब्दुल्ला बेगम बाजार
" पोकरमल भभूतमल पीलखाना (खामेदा)
" महम्मद यासम महम्मद कासम बेगमबाजार
" रामलाल रामनाथ "
" सोभाचंद शिवजीराम "
" सदाराम रामलाल "

लोहन्द पी के व्यापारी

मेसर्स पन्नालाल हीरालाल नगारखाना
" सीताराम रामगोपाल "

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स उमर अब्दुल करीम जवेरी पाथरघाट रोड
" इम्पीरियल नेशनल जनरल स्टोर "
" ए० ए० हुसेन एण्ड कम्पनी "

हार्ड वेभर मर्चेन्ट्स

अब्दुल लतीफ साहब अफजलगञ्ज
के० आर० घरी एण्ड कम्पनी रेसीडेंसी रोड
गुलाम हुसैन सेठ अब्दुल करीम कम्पनी अफजलगञ्ज
डी० एमाजी अफजलगञ्ज
महम्मद नूरल्ला पेढ़ी शिवराजव्या अफजलगञ्ज
वेलूर लिंगय्या "
एस० एच० इस्माइलजी इस्माइल बिल्डिंग "
एच० महम्मद अली एण्ड कम्पनी "
हाजी हमीर मिर्ज़ों "

पाइप सिनेटरी कंट्राक्टर्स, फिटर्स

के० आर० घरी एंड कम्पनी रेसिडेंसी रोड
मार्कर तय्यबजी अबीद शाप
पालनजी एदलजी चादरघाट रोड
बर्मन ब्रदर्स चादरघाट
एस० एच० इस्माइलजी अफजलगञ्ज

मिशनरी मर्चेन्ट्स

मोसेस ऑइल एंजिन एजन्सी स्टेशन रोड
के० आर० घरी एण्ड कम्पनी चादरघाट रोड
वालकट ब्रदर्स एजंसी स्टेशन रोड (फिजीडियर, रेफ्रीजेटर्स स्टोर)

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

जेम्स एण्ड कम्पनी स्टेशन रोड
बसीर एण्ड कम्पनी "
मुत्याला एण्ड कम्पनी "

सय्यद अब्दुलरज्जाक एण्ड कम्पनी चारकमान
सय्यद हाफ एण्ड कं० चादरघाट
लेसलीगेई एण्ड कम्पनी "

मिडिकल स्टोर

अहमदिया ट्रेडिंग कम्पनी अफजल गेट
पेटेन्ट मेडिसियन हैंदी एण्ड कं० "
दी सिंडिकेट सालरजंग बिल्डिंग

स्टेशनर्स

कासिम खाँ हाजीहयातअली चारमीनार (कागज)
दक्कन बुक डेपो स्टेशनरी स्टोर चादरघाट

टोबेको मर्चेण्ट्स

दि चार मीनार सिगारेट कम्पनी लिमिटेड
कुपुस्वामी मुदलीयार टोबेको मर्चेंट
हैदराबाद टोबेको कम्पनी लिमिटेड

आर्टिस्ट एण्ड फोटो ग्राफर्स

किलेदार फोटोग्राफर रेसिडेंसी
अलवंडीकर फोटोग्राफर "
दक्खन आर्ट स्टूडियो "
व्यास एंड कम्पनी "

होटल्स

अजीज कम्पनी तुरप बाजार
निज़ामिया होटल चादरघाट
निस होटल स्टेशन रोड
बाम्बे रेस्टोरेंट
बांकाजी होटल चादरघाट

लातूर में भी इस फर्म की शाखाएँ हैं। इसकी सिकन्दराबाद दुकान का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमल T. No 325 } बैङ्किग व आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स दाराबजी ब्रदर्स एण्ड कम्पनी

इस प्रसिद्ध चिनाई पारसी कुटुम्ब का पूर्व निवासस्थान जालना था। वहाँ इस कुटुम्ब का चीन के साथ सिल्क रेशम आदि का कारबार चलता था। पेस्तनजी सेठ जालना में रहते थे और इनके दूसरे भाई पूना में निवास करते थे। सन् १८३५ में ब्रिटिश रेजिमेंट के साथ सेठ सोराबजी पेस्तनजी जालना से सिकन्दराबाद आये। आप सिकन्दराबाद मिलटरी, लश्कर एवं निजाम स्टेट के अमीर उमरावों को जनरल माल सप्लाई करते थे। इस प्रकार यहाँ आने के २१ साल बाद आप बहिश्त नशीन हुए।

सेठ सोराबजी चिनाई के नसरवानजी, एदलजी एवं दीनशा सेठ नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से इस कुटुम्ब का सम्बन्ध एदलजी सेठ से है। सोराबजी सेठ के गुजरने के ३।४ साल बाद आप तीनों भाई अलग २ हो गये। एदलजी सेठ ने इस फर्म के व्यापार में बहुत भाग लिया। आपको भारत सरकार ने खानबहादुर का खिताब दिया। आपने जेम्स स्ट्रीट पर कीमती बड़ी एदलजी पारसी धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार ९४ वर्ष की लम्बी उमर पाकर आप सन् १९१० के मई मास में बहिश्त नशीन हुए। नसरवानजी सेठ के पुत्र दादाभाई [illegible] प्राइम मिनिस्टर के सेक्रेटरी थे।

खान बहादुर एदलजी सेठ के ५ पुत्र हुए। जमशेदजी सेठ, शापुरजी सेठ, [illegible] सेठ और [illegible] सेठ। इनमें से शापुरजी सेठ को भी खान बहादुर का खिताब था। इन भाइयों का कारबार भी एदलजी सेठ के गुजरने पर अलग २ हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक जमशेदजी सेठ के पुत्र [illegible] नवाब [illegible] सेठ, [illegible] सेठ, डाक्टर होरमसजी, रतनजी सेठ और दाराबजी सेठ हैं।

इस कुटुम्ब ने सन् १९०७ में दाराबजी ब्रदर्स के नाम से [illegible] बैङ्किग व्यापार स्थापित किया। सेठ [illegible] [illegible] लिया। [illegible] वर्तमान में [illegible] हैं।

स्व० सेठ धीरजी कोचर (धीरजी चाँदमल सिकन्दराबाद)

स्व० सेठ चाँदमलजी कोचर (धीरजी चाँदमल सिकन्दराबाद)

सेठ सूरजमलजी कोचर (धीरजी चाँदमल सिकन्दराबाद)

जहाँगीरजी सेठ ने इस फर्म का व्यवसाय स्थापित कर उन्नति की। आपने पारसी धर्मशाला में जमशेद चिनाई हाल और एदलजी चिनाई पवेलियन बनाया। तथा आपकी मातु श्री रतनबाई के नाम से रतनबाई चिनाई डिस्पेंसरी और धर्मपत्नी रतनबाई के नाम से रतनबाई चिनाई स्कूल बनाया। आपकी मातेश्वरी रतनबाई जमशेदजी ने देवलाली (नासिक) में एक अगियारी (पारसी टेम्पल) बनवाया।

तीसरे भाई रुस्तमजी निज़ाम टेरिटरि के पोस्ट मास्टर जनरल हैं और होरमसजी सेठ निज़ाम मेडिकल सुपरिटेन्डेन्ट हैं और रतनजी पायगा में काम करते हैं। इस दुकान पर सेठ मुरलीदास केशवदास ५८ सालों से और दिगम्बरदास केशवदास मेहता १५ सालों से मुनीमात करते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१ भैंसा (निज़ाम) मेसर्स दोराबजी ब्रदर्स एण्ड कं० तार का पता—Dorabji Bras Basar		बैंकिंग व्यापार होता है इसके अन्दर में भैंसा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और चिनाई जीन फेक्टरी है।
२ भैंसा (नांदेड़) जहांगीरजी जमशेदजी चिनाई कम्पनी		—बैंकिंग व्यापार होता है।
३ सिकन्दराबाद—दोराबजी ब्रदर्स एण्ड कं० पार्क लेन		— ,, ,, ,,
४ बोधी (नांदेड़) ,, ,, ,,		—जीन और बैंकिंग व्यापार होता है
५ धरमी (नांदेड़) ,, ,, ,,		— ,, ,, ,,
६ परभनी ,, ,, ,,		—एजंसी का काम होता है।

मेसर्स पीरजी चाँदमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान फलोदी (मारवाड़) है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के कोचरमूथा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक पीरजी सेठ सन् १८४१ में देश से आये। थोड़े दिनों तक आपने अपने सहयोगियों के यहाँ नौकरी की और फिर अपना एक काम-काज करने लगे। थोड़े ही समय बाद आप फौजों को नाज सप्लाई करने का काम करने लगे, इसी सिलसिले में आपने फौजों के साथ काबुल और अफगानिस्तान की भी यात्रा की। आपके पुत्र सेठ चांदमलजी ने संवत् १९०९ में सिकंदराबाद में दुकान स्थापित की। ४० सालों तक आप भी उत्तरोत्तर व्यापार करते हुए संवत् १९४९ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ चाँदमलजी के यहाँ सेठ सुगनमलजी २१ वर्ष की अवस्था में फलोदी से दत्तक आये। आप ही इस समय फर्म के मालिक हैं। आपके पुत्र कुंवर पूनमचंदजी एवं प्रतापचंदजी भी व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। आपकी ओर से फलोदी एवं [illegible] में एक एक

श्वरी समाज में भी आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र श्रीयुत मुकुन्ददासजी मालानी हैं। आप पढ़ रहे हैं।

इस समय इस दुकान के व्यापार का वर्णन इस प्रकार है:—

दुकान	विवरण
सिकन्दराबाद—मेसर्स शुभकरण गङ्गाविशन जेम्स स्ट्रीट	यहाँपर हेड आफिस है तथा बैङ्किंग व्यापार होता है
सिकन्दराबाद—मेसर्स गङ्गाविशन मोहनलाल सिकन्दराबाद—मेसर्स रामकिशन मोहनलाल सिकन्दराबाद—मेसर्स मोहनलाल मुकुंददास	इन दुकानों पर कपड़े का व्यापार होता है
हैदराबाद—मेसर्स गङ्गाविशन मोहनलाल उसमानगञ्ज	यहाँ गल्ला एवं आढ़त का काम होता है।
गंतूर—मेसर्स गङ्गाविशन मोहनलाल	यहाँ बैङ्किंग एवं आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स शुभकरण श्रीराम

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के मालानी सज्जन हैं। सर्व प्रथम देश से सेठ शुभकरणजी पैदल मार्ग द्वारा करीब ११० वर्ष पूर्व निज़ाम स्टेट के राजुरा नामक स्थान में आये। राजुरा से आपका कुटुम्ब लगभग संवत् १९०४ में सिकंदराबाद आया, और यहाँ कपड़े का व्यापार स्थापित किया। सेठ शुभकरणजी के ४ पुत्र हुए। सेठ श्रीरामजी, सेठ जगन्नाथजी, सेठ गंगाविशनजी एवं सेठ रामगोपालजी। सेठ जगन्नाथजी के कोई संतान नहीं हुई। संवत् १९४७-४८ तक यह कुटुम्ब शामिल कारबार करता रहा। पश्चात् सेठ गंगा विशनजी का कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार अलग करने लगा। और सेठ श्रीरामजी तथा रामगोपालजी का व्यवसाय शामिल होने लगा।

दोनों फर्मों का व्यवसाय अलग होने के १० वर्ष बाद करीब १९५७ में सेठ श्रीरामजी के पुत्र सेठ सुखदेवजी का २५ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र श्रीयुत श्रीकृष्णजी केवल ८ मास के थे। ऐसी हालत में सेठ रामगोपालजी को अपने एक होनहार मददगार एवं प्रिय भतीजे का कठिन वियोग-दु:ख सहना पड़ा। तथा व्यापार का सारा कारबार आपही को सम्हालना पड़ा।

दी० बा० सेठ रामगोपालजी मालानी ने अपने हाथों से व्यापार में लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित कर इस दुकान के नाम प्रतिष्ठा, एवं सम्मान को बहुत अधिक चमकाया। आपने

स्व० सेठ गंगाबिसनजी मालानी (सिकंदराबाद)

स्व० दीवान बहादुर सेठ रामगोपालजी मालानी (सिकंदराबाद)

न सेठ मोहनलालजी मालानी (सिकंदराबाद)

दीवान बहादुर सेठ लक्ष्मीनारायण
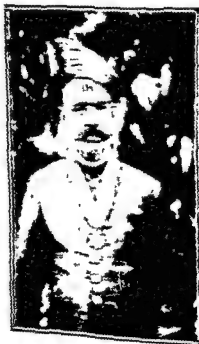
निज़ाम स्टेट रेलवे, पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट, फलकनुमा, सरफखास, टकसाल, लोकोवर्कशाप, रिंगकोठी, पुरानी हवेली, मूसी नदी का पुल आदि के बनवाने के कंट्राक्ट लिये, एवं इस काम में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इसके साथ २ एरंडी और कपड़े के व्यापार में भी आपको अच्छी सफलता मिली। आपका जन्म संवत् १९०३ में हुआ था।

व्यापार में अटूट सम्पति पैदाकर दीवान बहादुर सेठ रामगोपालजी मालानी ने दान-धर्म परोपकार, सार्वजनिक एवं जनहित के कार्मों में भी लाखों रुपयों की सम्पति उदारता पूर्वक खुले हाथों खर्च की। हैदराबाद स्टेट के आप बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। सिकंदराबाद में आपने ६० साल पूर्व श्री जगदीशजी का मंदिर बनवाया अपने भतीजे सुखदेवजी के स्मरणार्थ संवत् १९५९ में श्री श्रीसत्यनारायण जी का मंदिर, एवं श्रीहनुमानजी का मंदिर इस प्रकार ३ प्रसिद्ध मंदिर बनवाये। एवं इनके स्थाई प्रबंध के लिये १० मकान दिये। जिनकी किराये की ओमद से इनका खर्च चलता है। इसके अलावा बेजवाड़ा, मथुरा एवं बांसल (निजाम) में ३ धर्मशालायें बनवाई गईं जिनमें यात्रियों के लिये सदावर्त का प्रबंध है। श्रीनाथद्वारा में १।) लाख रुपयों की भारी लागत से बनास नदी का मजबूत पुल बनवाया। संवत् १९५६ के अकाल के समय नागोर में एक दिन के अंतर से लोगों को भोजन दिया एवं स्टेशन से कशान तक पक्की सड़क बनवाकर दोनों ओर झाड़ लगवाये। इसी प्रकार घास के अकाल के समय भी नागोर में सोलापुर की तरफ से हजारों रुपयों का घास भिजवा कर पशुओं की मदद की। अकाल पीड़ितों की मदद करने के उपलक्ष में आपको सरकार ने "कैसरे हिन्द" की उपाधि दी। इसी प्रकार सार्वजनिक कार्मों में भी आपने बहुत भाग लिया। आपने हैदराबाद फतह मैदान में स्पोर्टस्टेंड बनवाया। त्रिमलगिरी में होम आफ दि सोलजर्स बनवाया। जेम्स स्ट्रीट टावर में बहुत सी मदद दी। श्रीकृष्ण गौशाला का स्थापन कर उसमें भी बहुत सी सहायता दी। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने रायबहादुर एवं दीवान बहादुर का खिताब देकर आपकी इज्जत की। इस प्रकार परम प्रतिष्ठामय जीवन बिताते हुए आप ता० १-६-१९२१ को स्वर्गवासी हुए। आपके सम्मानार्थ हैदराबाद, सिकंदराबाद एवं वरंगल के सब आफिसेस, कारबार एवं बाजार बंद रक्खे गये। आपकी रथी के जुलूस में ३५।४० हजार आदमियों की भारी भीड़ आपके प्रति अपने पूज्यभाव बताने को एकत्रित हुई थी। स्वर्गीय दी० बा० सेठ रामगोपालजी की स्मृति चिरकाल तक रहने के लिये सिकंदराबाद की जनता ने पब्लिक सड़क के मध्य सर बारटोन साहब के हाथों से आपके सुंदर बड़े स्टेच्यू का उद्घाटन १५ मार्च १९२९ को किया। इसी प्रकार आपके मिल में भी एक बस्ट स्टेच्यू स्थापित किया गया। आपके यहाँ श्रीलक्ष्मीनारायणजी मालानी संवत् १९४५ में नागोर से दत्तक लाये गये।

दी० बा० सेठ लक्ष्मीनारायणजी मालानी १६ वर्ष की अवस्था से ही अपने पूज्य पिताजी

सेठ पूनमचंदजी एलानी (हीराचंद पूनमचंद)
सिकंदराबाद

सेठ मोतीलालजी कोठारी (जोरावरमल
मोतीलाल) सिकंदराबाद

मथुरालजी डूगरर सिकंदराबाद

सेठ रामकिशनजी
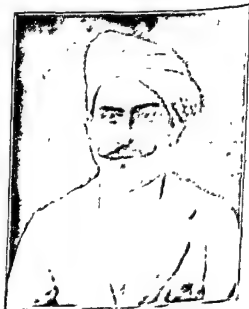
श्री सेठ हीराचन्दजी ढल्लानी के हाथों से हुआ था। आपने आरम्भ में यहाँ सर्विस की, एवं पीछे से दी० बा० सेठ रामगोपालजी के भाग में हीराचन्द जगन्नाथ के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। करीम नगर की दुकान भी आपही के समय में खोली गई।

श्री सेठ हीराचन्दजी के पश्चात् आपके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी ढल्लानी के हाथों से इस फर्म के व्यवसाय सम्मान एवं प्रतिष्ठा की विशेष रूप से वृद्धि हुई। आपने वरंगल, पेद्दापल्ली तथा मंथनी में रुई और एरण्डी का व्यापार शुरू किया तथा जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल खोली।

व्यवसायिक उन्नति के अलावा धार्मिक कामों में आपके हाथों से एक बड़ा स्मरणीय कार्य हुआ। कुलपाकजी तीर्थ के श्वेताम्बर जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार में आपने बहुत परिश्रम उठाया एवं अपनी ओर से भी बहुत सी सहायता दी। उक्त मन्दिर की बिल्डिङ्ग आदि बनवाने एवं ख्याति वृद्धि करने में हैदराबाद के ४ सज्जनों में से आपने भी प्रधान रूप में भाग लिया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ को भादों बदी ८ को हुआ। आपके यहाँ श्री लक्ष्मीचन्दजी ढल्लानी ग्वालियर से संवत् १९७२ में दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्री सेठ लक्ष्मीचन्दजी ढल्लानी हैं। आपकी आयु २२ वर्ष की है। आप बड़े शांत प्रकृति के समझदार एवं विवेकशील नवयुवक हैं। इतने अल्पवय में फर्म का व्यापार बड़ी तत्परता से सञ्चालित करते हैं। कुलपाकजी तीर्थ की ख्याति वृद्धि करने में आपके पिताजी की तरह आपके भी उन्नत विचार हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस समय फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१. सिकन्दराबाद—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द जेम्स स्ट्रीट; T. No. 395 — यहाँ हेड आफिस है, तथा प्रधान तया बैकिङ्ग व्यापार होता है।

२. वरंगल—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द — यहाँ कॉटन और एरंडी की आढ़त का व्यापार एवं बैङ्किग काम होता है।

. करीम नगर—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द — बैङ्किग व्यापार होता है।

पेद्दापल्ली (वरंगल)—मेसर्स हीराचंद पूनमचंद — राइस मिल तथा जीनिंग फेक्टरी है तथा इसी नाम से दूसरी दुकान पर आढ़त का काम होता है।

मंथनी (निज़ाम)—मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द — आढ़त, बैंकिंग राइस एवं काटन का व्यापार होता है।

८

मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस दुकान का हेड आफिस वरंगल में है। अतः इसके व्यापार का परिचय वहीं दिया गया है। वरंगल में यह फर्म सेठ श्रीकृष्णजी के समय से करीब ६० सालों से व्यापार कर रही है।

सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म करीब २० वर्षों से व्यापार कर रही है। तथा अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

वरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल — यहाँ हेड आफिस है तथा बैंकिंग एवं आढ़त का कारबार होता है।

सिकन्दराबाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T. No. 333 — बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़त का कारबार होता है।

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स अलादीन एण्ड संस

इस फर्म के मालिकों का खास वतन बम्बई है। वहाँ से सेठ अलादीन भाई माबजी सन् १८८२ ईस्वी में सिकन्दराबाद आये, तथा छोटे रूप में रेलवे को माल सप्लाई करने व बरफ आदि का कारबार करने लगे। इस प्रकार व्यापार को जमा कर सन् १९०४ में आप बहिश्तनशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ अलादीन भाई के पुत्र सेठ अब्दुल्ला भाई, खान बहादुर सेठ अहमद भाई, सेठ गुलाम हुसैन भाई तथा सेठ कासिम अली भाई हैं। आप लोगों ने अपनी फर्म के व्यापार को भिन्न २ कई लाइनों में तरक्की दी है। आपने शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लि० और सिंगरेनी कॉलरीज़ वरंगल की एजेन्सियाँ लीं, तथा बहुत बड़े रूप में बरफ और सोडा लेमन का कारखाना खोला। तथा १०।१२ प्रकार के एंजिन ईजाद कर भारत में प्रदर्शित किये। इस समय सेठ अब्दुल्ला भाई फर्म के कारबार का भार अपने छोटे भाइयों पर छोड़ कर शांति लाभ करते हैं।

व्यापारिक कार्यों के साथ २ इस फर्म के मालिकों ने धार्मिक एवं राजकीय कार्यों में अच्छी जानकारी पैदा की है। खान बहादुर सेठ अहमद भाई को भारत सरकार ने खान बहादुर

तथा खान बहादुर का खिताब प्राप्त हुआ है। निजाम स्टेट के दुष्काल के समय जनता को सस्ता अनाज आपने सप्लाई किया था। इसी प्रकार प्लेग के समय भी आपने पब्लिक की बहुत मदद की थी। सम्राट् किंग जार्ज के स्वास्थ्य-लाभ करने के उपलक्ष में प्रसन्नतास्वरूप आपने विद्यार्थियों की मदद और शिक्षा-प्रचार के लिये १ लक्ष रुपयों का दान किया है। इस समय आप शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लिमिटेड, उस्मान शाही मिल लिमिटेड, बाम्बे मोटर साइकल एजंसी लि० के डायरेक्टर और रेलवे एडवायजरी बोर्ड तथा सिकन्दराबाद कन्टूमेंट कमेटी के मेम्बर हैं। सेठ गुलाम हुसेन भाई ने एसेंस का ईजाद किया है। आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स अलादीन एण्ड संस, आक्सफोर्ड स्ट्रीट, T. No 300 तार का पता Alladin — यहाँ शाहाबाद सिमेंट कम्पनी और सिंगरेनी कॉलरी की एजंसियाँ तथा आइस और एरेटेड वाटर फैक्टरी है। इसके अलावा १०११२ तरह के एसेंस तयार करके भारत भर में भेजे जाते हैं।

मेसर्स जोरावरमल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक बगड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के कोठारी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन बोलारम में सेठ थानमलजी ने किया था। आपके पश्चात् सेठ जोरावरमलजी व्यवसाय संचालन करते हैं।

इस फर्म के व्यवसाय एवं ख्याति की वृद्धि आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी कोठारी के हाथों से विशेष रूप से हुई। आप शिक्षित एवं नूतन उन्नत विचारों के सज्जन हैं। सन् १९१९ से आपने व्यापार में योग देना आरंभ किया तथा त्रिचनापल्ली, सिकन्दराबाद और हैदराबाद में ८ सिनेमा चालू किये। आपने हैदराबाद बुलेटिन नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्र जारी किया। अभी हाल ही में सिनेमा व्यवसाय की उन्नत करने के लिये हैदराबाद के कुछ शिक्षित एवं उत्साही सज्जनों ने १० लाख की पूंजी से दि महावीर फोटो प्ले एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड की स्थापना की है। इस संस्था का उद्देश्य भारतीय शिक्षाप्रद ड्रामा एवं फिल्म तयार कर जनता में सदुद्देश्य का प्रचार कर द्रव्य प्राप्त करना है। इस फर्म की मैनेजिंग एजंट मेसर्स जोरावर मोतीलाल एण्ड संस है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स जोरावर मोतीलाल, बुलेटिन आफिस, T. No. 31 तार का पता Motilal — यहाँ से हैदराबाद बुलेटिन नामक अंग्रेजी दैनिक एवं हरिश्चन्द्र नामक साप्ताहिक पत्र निकलता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस दुकान का हेड आफिस वरंगल में है। अतः इसके व्यापार का परिचय वहीं दिया गया है। वरंगल में यह फर्म सेठ श्रीकृष्णजी के समय से करीब ६० सालों से व्यापार कर रही है।

सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म करीब २० वर्षों से व्यापार कर रही है। तथा अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

वरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल	यहाँ हेड आफिस है तथा बैंकिंग एवं आढ़त का कारबार होता है।
सिकन्दराबाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T. No. 333	बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़त का कारबार होता है।

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स अलादीन एण्ड संस

इस फर्म के मालिकों का खास वतन बम्बई है। वहां से सेठ अलादीन भाई मारजी सन् १८८२ ईस्वी में सिकन्दराबाद आये, तथा छोटे रूप में रेलवे को माल सप्लाई करने व बरफ आदि का कारबार करने लगे। इस प्रकार व्यापार को जमा कर सन् १९०५ में आप बहिश्तनशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ अलादीन भाई के पुत्र सेठ अब्दुल्ला भाई, खान बहादुर सेठ अहमद भाई, सेठ गुलाम हुसैन भाई तथा सेठ कासिम अली भाई हैं। आप लोगों ने अपनी फर्म के व्यापार को भिन्न २ कई लाइनों में तरक्की दी है। आपने शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लि० और सिंगरेनी कॉलेरीज वरंगल की एजेन्सियाँ लीं, तथा बहुत बड़े रूप में बरफ और सोडा लेमन का कारखाना खोला। तथा १०।१२ प्रकार के एंजिन ईजाद कर भारत में प्रचलित किये। इस समय सेठ अब्दुल्ला भाई फर्म के कारबार का भार अपने छोटे भाइयों पर छोड़ कर शांति लाभ करते हैं।

व्यापारिक तरक्की के साथ २ इस फर्म के मालिकों ने धार्मिक एवं राजकीय कामों में अच्छी नामवरी पैदा की है। खान बहादुर सेठ अहमद भाई को भारत सरकार से खान साहब

तथा खान बहादुर का खिताब प्राप्त हुआ है। निजाम स्टेट के दुष्काल के समय जनता को सस्ता अनाज आपने सप्लाई किया था। इसी प्रकार प्लेग के समय भी आपने पब्लिक की बहुत मदद की थी। सम्राट् किंग जार्ज के स्वास्थ्य-लाभ करने के उपलक्ष में प्रसन्नतास्वरूप आपने विद्यार्थियों की मदद और शिक्षा-प्रचार के लिये १ लक्ष रुपयों का दान किया है। इस समय आप शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लिमिटेड, उस्मान शाही मिल लिमिटेड, बाम्बे मोटर साइकल एजंसी लि० के डायरेक्टर और रेलवे एडवायजरी बोर्ड तथा सिकन्दराबाद कन्टूमेंट कमेटी के मेम्बर हैं। सेठ गुलाम हुसेन भाई ने एसेंस का ईजाद किया है। आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स अलादीन एण्ड संस आक्सफोर्ड स्ट्रीट T. No 300 तार का पता Alladin — यहाँ शाहाबाद सिमेंट कम्पनी और सिंगरेनी कॉलेरी की एजंसियाँ तथा आइस और एरेटेड वाटर फैक्टरी है। इसके अलावा १०।१२ तरह के एसेंस तयार करके भारत भर में भेजे जाते हैं।

मेसर्स जोरावरमल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक बगड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के कोठारी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन बोलारम में सेठ थानमलजी ने किया था। आपके पश्चात् सेठ जोरावरमलजी व्यवसाय संचालन करते हैं।

इस फर्म के व्यवसाय एवं ख्याति की वृद्धि आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी कोठारी के हाथों से विशेष रूप से हुई। आप शिक्षित एवं नूतन उन्नत विचारों के सज्जन हैं। सन् १९१९ से आपने व्यापार में योग देना आरंभ किया तथा तिरनूलगिरि, सिकन्दराबाद और हैदराबाद में ८ सिनेमा चालू किये। आपने हैदराबाद बुलेटिन नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्र जारी किया। अभी हाल ही में सिनेमा व्यवसाय को उन्नत करने के लिये हैदराबाद के कुछ शिक्षित एवं उत्साही सज्जनों ने १० लाख की पूँजी से दि महावीर फोटो प्ले एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड की स्थापना की है। इस संस्था का उद्देश्य भारतीय शिक्षाप्रद छाया एवं फिल्म तयार कर जनता में सदुद्देश का प्रचार कर द्रव्य प्राप्त करना है। इस फर्म की मैनेजिंग एजंट मेसर्स जोरावर मोतीलाल एण्डसंस है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स जोरावर मोतीलाल बुलेटिन आफिस T. No. 51 तार का पता Mwritd — यहाँ से हैदराबाद बुलेटिन नामक अंगरेजी दैनिक एवं क्रानिकल नामक साप्ताहिक पत्र निकलता है।

सिकंदराबाद—दि महावीर फोटोप्लेज एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड	इसकी एजंट मेसर्स जोरावरमल मोतीलाल एण्ड संस है। यह कम्पनी उच्च भारतीय ड्रामा एवं सिनेमा फिल्म तयार करने का काम करती है। इस समय इस कम्पनी के ८ सिनेमा यहाँ काम करते हैं।
बम्बई—दि महावीर फोटो प्लेज एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड तथा जोरावरमल मोतीलाल एण्ड संस गोवर्द्धन बिल्डिंग, गिरगांव बैंकरोड नीयर माधवाश्रम पो० नं० ४	यहाँ फिल्म रजिस्टर कराने का काम होता है। तथा बाहर से फिल्म मँगाई और भेजी जाती है।

सेठ नत्थूलालजी गुत्तेदार

सेठ नत्थूलालजी का मूल निवासस्थान माधापुर (कच्छ) हैं। आप कड़िया-क्षत्रिय समाज के सज्जन हैं। नत्थू सेठ के पिता श्री लालजी सेठ सन् १९०० के लगभग हैदराबाद आये तथा हैदराबाद मीटर गेज रेलवे लाइन के बनाने के कुछ भाग का कंट्राक्ट लिया। इस कार्य में सम्पत्ति उपार्जित करने के बाद आपने अपना यहीं निवास बना लिया। आपके पुत्र श्रीयुत नत्थू सेठ का जन्म सन १८८७ में हुआ। आप १६ वर्ष की अवस्था से ही अपने पूज्य पिताजी के साथ कन्ट्राक्टिंग के काम में भाग लेने लगे तथा धीरे २ इस लाइन में शिक्षा प्राप्त करके पर आपने अच्छी उन्नति कर दिखाई।

श्रीयुत नत्थू सेठ सिकन्दराबाद तथा हैदराबाद के प्रतिष्ठित कंट्राक्टर माने जाते हैं। आपके हाथों से लाखों रुपयों के कंट्राक्टिंग के काम हुए। परभनी परली लाइन आप ही के द्वारा बन कर तयार हुई, इसी प्रकार पी० डब्ल्यू० डी० एवं शाही महलों के बनाने में भी आपने बहुत काम किये। अभी २ आपने हैदराबाद में यूनानी अस्पताल बनाने का १० लाख का कंट्राक्ट लिया है। नत्थू सेठ बड़े शांत स्वभाव के गंभीर सज्जन हैं। आपके पिता सेठ लालजी की अवस्था इस समय ६० वर्ष की है। आपके पुत्र श्री विश्राम भाई रघुभाई भी काम-काज में भाग लेते हैं। आपका पता इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—सेठ नत्थूलालजी एडिक्मेंट्राफेट, कंट्राक्टर	यहाँ आपका निवास है, एवं कंट्राक्टिंग का काम होता है।

राजा दीनदयाल एण्ड संस

इस फर्म के मालिक मेरठ (यू० पी०) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक राजा दीनदयाल साहब १५ वर्ष की अवस्था में सन् १८६५ में इन्दौर आये। आरंभ से ही आपको फोटोग्राफी का शौक था। आपके फोटो को सर लेपन ग्रिफिन साहब एजंट सेंट्रल इण्डिया ने पसंद कर सम्राट् के पास भिजवाये थे। आपने भारत के दर्शनीय एवं प्राकृतिक स्थानों के दृश्यों का बहुत बड़ा संग्रह किया था। इसी सिलसिले में आप एजंट सेण्ट्रल इण्डिया का परिचय पत्र लेकर १८७५ में निजाम सरकार के पास आये। तत्कालीन निजाम सरकार मीर महबूब अलीखाँ बादशाह ने आपके आर्ट से खुश हो आपको ५००) माहवार पर अपना दरबारी फोटोग्राफर बनाया। सन् १८८७ में महारानी विक्टोरिया द्वारा रायल वारंट पाने वाले सबसे पहिले भारतीय व्यापारी आप ही थे। आपकी फोटोग्राफी की प्रिंस आफ वेल्स, लार्ड डफरिन, मिंटो, कर्जन, हार्डिंज, ड्यूक आफ कनाट आदि उच्च यूरोपियन महानुभावों ने प्रशंसा कर आपको अपाइंटमेंट दिये हैं। सन् १८८८ में आपने अपनी एक ब्रांच स्थापित कर उसे ऊँचे दर्जे के कारखाने का रूप दे दिया था। आपको निजाम सरकार ने राजा मुसव्वरजंग का खिताब इनायत किया। इस प्रकार ख्याति प्राप्त कर ५-७-१९०५ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र ज्ञानचंदजी १९१७ में एवं धरमचन्दजी १९०६ में गुजरे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्रीज्ञानचन्दजी के पुत्र बाबू त्रिलोकचंदजी, हुकुमचंदजी एवं अमीचंदजी हैं। आप सब बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद—राजा दीनदयाल एण्ड संस नीयर आर्म्स फोर्ड स्ट्रीट — यहाँ आपका शोरूम तथा स्टूडियो है। एवं सारे भारत के राजा महाराजाओं, दर्शनीय बिल्डिंगों एवं प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों का अनुपम संग्रह है। करीब ४० हजार नेगेटिव आपके पास मौजूद हैं।

सी. वर्दराज मुदलीयार

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कोयम्बटूर है। वहाँ से ५।६ पीढ़ी पहिले यह खानदान सिकन्दराबाद आया। आप मुदलियार समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सी. वर्दराज मुदलीयार के हाथों से सन् १८४० में हुआ। पहिले आपका व्यापारिक सम्बन्ध मिलिटरी के साथ था। इसके साथ आप कंट्राक्ट का काम भी करते थे। आपका स्वर्गवास

सन् १८७० में हुआ। आपके पुत्र सी. वर्द्धराज मुदलीयार (पिता-पुत्रों का एक ही नाम था) हुए। इन्होंने राइस, बिल्डिंग आदि के कंट्राक्ट में बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप सन् १९११ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सी. वर्द्धराज मुदलीयार साहब के पुत्र सी. पद्माराव साहब और सी. विट्ठलराव मुदलीयार साहब हैं। आप दोनों सज्जन ऊँचे दर्जे के शिक्षित हैं। सिकंदराबाद के शिक्षित समाज में आप बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते हैं। सी. पद्माराव साहब हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स, गर्ल्स स्कूल, हिन्दू बायस होस्टल तथा डॉमेस हामेस स्कूल के प्रेसिडेंट और महबूब कॉलेज के आनरेरी सेक्रेटरी हैं। तथा विट्ठलराव साहब फर्म के व्यापार को बड़ी तत्परता से सम्भालते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिकन्दराबाद-(दक्षिण) मेसर्स सी. वर्द्धराज मुदलीयार T. A. mudaliar	यहाँ बर्मासेल की एजेंसी तथा मिलिटरी की एजेंसी तथा बिल्डिंग कंट्राक्ट का काम होता है। इसके स्थान २ पर आइल सप्लाई करने के आपके डेपोज हैं।

वैंकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि कमर्शियल एण्ड बैंकिंग कम्पनी
मेसर्स अमीन पुन सुब्बय्या
,, आकाम्मा चन्द्रय्या
,, आचाराम नरसिंगराम
,, काट्टराम गोभाराम
,, कोरिसटिराय मंगाराम
,, गुन्डे गी लक्ष्मीनारायण
,, चन्द्रायप्पय्य किशनचन्द
,, चन्नाराम सूरजमल
,, दुल्लरशी जर्म एण्ड कम्पनी ग्रांडोस

मेसर्स धीरजी चाँदमल
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, पूरणू महादेवम्
,, बंशीलाल अबीरचंद डागा रायबहादुर
,, मिलयान व्यंकट कृष्णय्या
,, शुभकरण श्रीराम
,, रामगोपाल लक्ष्मीनारायण दीवान बहादुर
,, शुभकरण गंगाबिशन
,, सागरमल गिरधारीलाल
,, सुदर्शन सेठी चन्द्रय्या
,, हीराचंद पूनमचन्द
,, श्रीकृष्ण मुरलीधर

मिल-कारखाने

उसमान शाहीमिल नारिङ (आफिस)
एण्यम मेसन एण्ट कं० आइस फेक्टरी हैदराबाद
अलादीन एण्ड संस आइस एण्ड सोडावाटर फेक्टरी सिकन्दराबाद
गुलबर्गा महबूब शाहीमिल (आफीस)
दीवान बहादुर रामगोपाल मिल
हैदराबाद स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल

ग्राय मरचेंट्स

मेसर्स अनन बुल इरमा विश्वनाथन्
" अमीनबुल जिगय्या केरावद
" अमीनबुल लक्ष्मय्या
" अमीनबुल राजय्या
" कैलाश सरवय्या
, कैलाश बीरय्या
" चायम शिवन्ना
" सुन्दर गोपाल
" गुलबर्गा महबूब शाही मिल शाप
" गंगाबिशन मोहनलाल
" रायबहादुर शिवर्शंव वासुदेव
" जमनाधर पोद्दार
" नरसिंहगिरिमिल शाप
" पेद्दूर वीरप्पा
" मुरलीधर गोपीकिशन
" मोहनलाल ढुंडीराम
" द्वारकी वेंकुटराम नियराम
" रामकिशन मोहनलाल
" राघवराम शिन्दे विश्वनाथम्
गंगारामय्या

मेसर्स बेलदे जगदीश्वरय्या
" समाला कुंडय्या
" शुभकरण रामगोपाल
" सुखदेव श्रीराम

यार्न मरचेंट्स

मेसर्स कैलाश सरवय्या
" अमीनबुल मुत्तय्या सुधीलिंगय्या
" मधल्ला रमन्ना
" मोहूर रामचन्द्र

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजेंट

" शीरसीराम सीताराम
" पन्ना राजन्ना
" दयाराम सूरजमल
" दुर्गिराजु जगदीश्वरय्या भागेरयारय्या
" रामचन्द्र रामसुख
" खान बहादुर हीरमणजी मानकजी
श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम

किराना के व्यापारी

मेसर्स अमीनबुल नागय्या
" चकन्नूर पापय्या
" कुंजल राजन्ना जिगय्या
" गुनारन्न कुंटय्या
" गद्दे रामन्ना
" दाचा रामन्ना हरण
" दाचा चन्द्रय्या
" चवनूर रामचन्द्रय्या
गिरी लक्ष्मय्या

कल-कारखाने

उसमान शाहीमिल नांदेड़ (आफिस)
एप्पम मेसन एण्ड कं० आइस फेक्टरी हैदराबाद
अलादीन एण्ड संस आइस एण्ड सोडावाटर
फैक्टरी सिकन्दराबाद
गुलबर्गा महबूब शाहीमिल (आफीस)
दीवान बहादुर रामगोपाल मिल
हैदराबाद स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल

क्राप मरचेंट्स

मेसर्स अमन बुल इरप्पा विश्वनाथम्
" अमीनबुल लिंगप्पा केशवलु
" अमीनबुल लक्ष्मप्पा
" अमीनबुल राजप्पा
" कैलाश सरवप्पा
" कैलाश वीरप्पा
" कायम शिवप्पा
" गुन्नूर गोपाल
" गुलबर्गा महबूब शाही मिल शाप
" गंगाविशन मोहनलाल
" रायबहादुर धिरघांव वासुदेव
" जमनाधर गोपार
" नरसिंहगिरिमिल शाप
" पोचइहर वीरप्पा
" मुरलीधर लक्ष्मीविशन
" मोहनलाल दुर्गादास
" मुरारजी गोकुलदास मिलशाप
" रामविशन मोहनलाल
" रायचरगाम जिन्द् विश्वनाथम्
" संगारप्पा

मेसर्स बेलदे जगदीश्वरप्पा
" समाला कुंडप्पा
" शुभकरण रामगोपाल
" सुखदेव श्रीराम

यार्न मरचेंट्स

मेसर्स कैलाश सरवप्पा
" अमीनबुल मुतप्पा बुधोलिरप्पा
" मचल्ला रमप्पा
" मोहूर रायवलु

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजेंट

" दीपचीराम सीताराम
" पन्ना रामप्पा
" दयाराम सूरजमल
" दुर्गिशल जगदीश्वरप्पा आमेरपारप्पा
" रामचन्द्र रामसुख
" खान बहादुर हीरमणजी मानकजी
" श्रीकृष्ण बुधीलाल

किराना के व्यापारी

मेसर्स अमीनबुल नागप्पा
" बड़नूर रामप्पा
" कुंजल रामप्पा लिंगप्पा
" गुलाप्पा कुंटप्पा
" गाँई रामप्पा
" दाधा रामप्पा इरप्पा
" दाधा चन्द्रप्पा
" दमननूर रामचन्द्रप्पा
" गिरी लक्ष्मप्पा

के ६०० शेअरों में विभक्त है। तथा शेअर का भाव १५०० का है। इसका बना
विशेष कर निजाम स्टेट में बिकी होता है। यह मिल प्रति दिन ६ हजार रु
हजार रत्तल कपड़ा तैयार करती है। इसकी मेनेजिंग एजेंट मेसर्स दयाराम सूर
मिल में आधे से ऊपर शेअर्स इस फर्म के हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स छोगमल हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रीयां सेठजी की (जोधपुर स्टेट)
ओसवाल जैन श्वेताम्बर समाज के सज्जन हैं। सेठ छोगमलजी ने आरंभ में
वाले सेठ मदानंदराम पूरनमल के यहाँ गुलबर्गा दुकान पर सर्विस की। पश्चात् संवत्
१९ में अपना घरू कपड़े और सराफी का कारबार शुरू किया। आप १९७० में स्वर्गवास
सेठ छोगमलजी के दो पुत्र हुए—सेठ चुन्नीलालजी और सेठ हीरालालजी। इनमें
[illegible]लालजी का कारबार संवत् १९८७ में अलग हो गया। तब से सेठ हीराला[illegible]
[illegible]ना व्यापार उपरोक्त नाम से अलग कारबार करते हैं। आपके यहाँ श्रीयुत [illegible]
[illegible]न पहिने मूर्ति (मारवाड़ी) में स्थापित लाये गये हैं। गुलबर्गा के व्यापारि[illegible]
[illegible]की प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है
[illegible]र्गा—मेसर्स छोगमल हीरालाल—कपड़े का व्यापार तथा हुंडी चि[illegible]
[illegible]र्गा—मेसर्स हीरालाल [illegible]—कपड़े का व्यापार होता है
[illegible]ना—मेसर्स हीरालाल [illegible]—[illegible] का व्यापार होता है

[illegible]

[illegible] के मालिकों का मूल निवासस्थान [illegible]
[illegible]

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ हीरालालजी लाहोटी तथा सूरजमलजी के पुत्र व्यंकटलालजी, पूरनमलजी सेठ मोतीलालजी के पुत्र शंकरलालजी और किसनलालजी के पुत्र पूसालालजी हैं। इन सज्जनों में सेठ हीरालालजी इस कुटुम्ब में सब से बड़े हैं। सेठ हीरालालजी के पुत्र पन्नालालजी और बद्रीलालजी हैं।

सेठ हीरालालजी लाहोटी ने सन् १९२६ में गुलबर्गा का महबूबशाही मिल खरीदा है। आपके पास आने के बाद मिल ने अच्छी उन्नति कर दिखाई है। इस मिल की १॥। लाख की रकम निज़ाम करोड़ गिरी (कस्टम) में जमा थी वह भी आपको मिल गई है। आपके मकानात आदि लातूर, गुलबर्गा आदि स्थानों में काफी संख्या में हैं। गुलबर्गा में आपकी ओर से सदावर्त का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—यहाँ बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी और मिल एजंसी का काम होता है।
गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—इस नाम से महबूबशाही मिल के कपड़े की दुकान है।
सिकन्दराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमल—बैङ्किग और आढ़त का कारबार होता है।
लातूर—मेसर्स दयाराम सूरजमल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, आढ़त, बैङ्किग व काटन का व्यापार।
बम्बई—मेसर्स किशनलाल हीरालाल, कालबादेवी रोड } बैङ्किग व आढ़त का कारबार होता है।
गुलारेठ (गुलबर्गा) दयाराम सूरजमल—जीनिंग है, कपास और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स परशुराम शास्त्री एण्ड संस

इस कुटुम्ब के मालिकों का मूल निवासस्थान कुलनाबाद (निज़ाम स्टेट) है। वहां से १५० साल पूर्व लक्ष्मय्या सेठ गुलबर्गा आये। तथा किराने का व्यापार शुरू किया। आप लोग वैश्य समाज के सज्जन हैं। लक्ष्मय्या सेठ के पश्चात् क्रमशः शिवा सेठ और परशुराम सेठ ने फर्म का व्यापार संभाला। सेठ परशुराम शास्त्री के समय से इस दुकान के व्यवसाय की उन्नति आरंभ हुई। आप शके १८२१ की माघ बदी ८ को स्वर्गवासी हुए।

सेठ परशुराम शास्त्री के ३ पुत्र हुए सेठ लक्ष्मय्या शास्त्री, बाबाराव शास्त्री और संगप्पा शास्त्री। इनमें से संगप्पा सेठ १० साल पूर्व स्वर्गवासी हो चुके हैं। सेठ परशुराम शास्त्री के बाद इस फर्म के व्यापार की सेठ लक्ष्मय्या शास्त्री के हाथों से विशेष उन्नति हुई है। आपने शके १८२२ में अपनी दुकान की शाखा बम्बई में खोली। आपके पुत्र सेठ शिवप्पा शास्त्री और रामचन्द्र शास्त्री व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। और वसुदेव शास्त्री (विशारद)

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ हीरालालजी लाहोटी तथा सूरजमलजी के पुत्र व्यंकटलालजी, पूरनमलजी सेठ मोतीलालजी के पुत्र संकरलालजी और किसनलालजी के पुत्र पूरालालजी हैं। इन सज्जनों में सेठ हीरालालजी इस कुटुम्ब में सब से बड़े हैं। सेठ हीरालालजी के पुत्र पन्नालालजी और बद्रीलालजी हैं।

सेठ हीरालालजी लाहोटी ने सन् १९२६ में गुलबर्गा का महबूबशाही मिल खरीदा है। आपके पास आने के बाद मिल ने अच्छी उन्नति कर दिखाई है। इस मिल की १।।। लाख की रकम निजाम करोड़ गिरी (कस्टम) में जमा थी वह भी आपको मिल गई है। आपके मकानात आदि लातूर, गुलबर्गा आदि स्थानों में काफी संख्या में हैं। गुलबर्गा में आपकी ओर से सदाव्रत का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—यहाँ बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी और मिल एजंसी का काम होता है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—इस नाम से महबूबशाही मिल के कपड़े की दुकान है।

सिकन्दराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमल—बैङ्किग और आढ़त का कारबार होता है।

लातूर—मेसर्स दयाराम सूरजमल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, आढ़त, बैङ्किग व काटन का व्यापार।

बम्बई—मेसर्स किशनलाल हीरालाल कालबादेवी रोड } बैङ्किग व आढ़त का कारबार होता है।

मुलापेठ (गुलबर्गा) दयाराम सूरजमल—जीनिंग है, कपास और आढ़त का व्यापार होता है।

मेसर्स परशुराम जाजी एण्ड संस

इस कुटुम्ब के मालिकों का मूल निवासस्थान हुमनाबाद (निजाम स्टेट) है। यहाँ से १५० साल पूर्व लक्ष्मय्या सेठ गुलबर्गा आये। तथा किराने का व्यापार शुरू किया। आप लोग वैश्य समाज के सज्जन हैं। लक्ष्मय्या सेठ के पश्चात् क्रमशः लिंगया सेठ और परशराम सेठ ने फर्म का व्यापार संभाला। सेठ परशुराम जाजी के समय से इस दुकान के व्यवसाय की उन्नति आरंभ हुई। आप शके १८२१ की माघ बदी ८ को स्वर्गवासी हुए।

सेठ परशुराम जाजी के ३ पुत्र हुए सेठ लक्ष्मय्या जाजी, काशप्पा जाजी और संगप्या जाजी। इनमें से संगप्या सेठ १० साल पूर्व स्वर्गवासी हो चुके हैं। सेठ परशुराम जाजी के बाद इस फर्म के व्यापार को सेठ लक्ष्मय्या जाजी के हाथों से विशेष उन्नति हुई है। आपने शके १८२२ में अपनी दुकान की शाखा बम्बई में खोली। आपके पुत्र सेठ शिवप्पा जाजी और रामचन्द्र जाजी व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। और वासुदेव जाजी (विश्वराव)

संगप्पा सेठ के यहाँ दत्तक गये हैं। काशप्पा सेठ के पुत्र माणिकराव १२ साल पूर्व गुजर चुके हैं, उनसे छोटे बालचन्द्रराव हैं। श्रीयुत् रामचन्द्रराव के पुत्र बाल गंगाधर हैं।

इस कुटुम्ब का गुलबर्गा में भिन्न २ लाइनों में कई प्रकार का व्यापार होता है, तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपकी ओर से गुलबर्गा में एक धर्मशाला बनी है, तथा सदाव्रत चालू है। संगम केतकी में भी आप एक धर्मशाला बनवा रहे हैं। गुलबर्गा में आपकी वैश्य वेद पाठशाला चालू है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ गुलबर्गा—सेठ परशुराम आजी—इस नाम से किराने का व्यापार होता है।
२ गुलबर्गा—सेठ लक्ष्मप्पा आजी—हुंडी, चिट्ठी, आढ़त और खरीदी का काम होता है।
३. गुलबर्गा—सेठ परशुराम काशप्पा आजी—आढ़त खरीदी और बिक्री का काम होता है।
४ गुलबर्गा—सेठ माणिक रामचन्द्र आजी—कपड़े का व्यापार होता है।
५ गुलबर्गा—सेठ काशप्पा आजी—किराने का व्यापार होता है।
६ गुलबर्गा—सेठ संगप्पा आजी—किराने का व्यापार होता है।
७ गुलबर्गा—संगप्पा काशप्पा आजी—लोहा और हार्डवेयर का व्यापार होता है।
८ गुलबर्गा—माणिक रामचन्द्र आजी कं०—रेडीमेड ड्रेस टोपी वगैरह का व्यापार होता है।
९ बम्बई—परशुराम लक्ष्मप्पा आजी (मिस्जिद स्ट्रीट ।२२।) — कमीशन का काम होता है।
१० रायचूर—लक्ष्मप्पा काशप्पा आजी—कमीशन का काम होता है।
११. टांडूर (निजाम) शिवप्पा संगप्पा आजी— „ „ „
१२ हुमनाबाद (गुलबर्गा) शिवप्पा आजी— „ „ „
१३ हैदराबाद (गुलबर्गा) लक्ष्मप्पा काशप्पा आजी—कमीशन का काम होता है।
१४ शाहाबाद (गुलबर्गा) लक्ष्मप्पा आजी— „ „

समर्थ मुकुन्दराम द्वारकादास

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में समर्थ मुकुन्दराम गोविन्दराम के नाम से है। इसके इतिहास आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित उसी स्थान पर दिया गया है। हैदराबाद के अलावा बम्बई, मद्रास, नांदेड़, करीमनगर, सिकंदराबाद, जालना आदि स्थानों पर इस फर्म की दुकानें हैं जिन पर बैंकिंग और आढ़त का व्यापार होता है। गुलबर्गा में इस फर्म पर कपड़ा और बैंकिंग व्यापार होता है।

मेसर्स हरखराज अन्नराज

इस फर्म का स्थापन ५० साल पूर्व सेठ जीवराजजी ने किया। आपके पिता सेठ काळूरामजी सोलापुर में कपड़े का व्यापार करते थे। वर्तमान में सेठ काळूरामजी के पुत्र जीवराजजी, माधवराजजी और हरखराजजी का कुटुम्ब इस फर्म का मालिक है। सेठ हरखराजजी के पुत्र सम्पतराजजी गुलबर्गे में व्यापार सम्हालते हैं और जीवराजजी के पुत्र गजराजजी देश में रहते हैं। आप सोजत निवासी ओसवाल जैन समाज के सिंगवी सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—हरखराज अन्नराज
काळूराम जीवराज
माधवराज किशनराज
} कपड़े का कारबार होता है।

बम्बई—अन्नराज सम्पतराज पायधुनी—कमीशन का काम होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अंजुमन कोआपरेटिव्ह बैंक लिमिटेड
" सरस्वती बैंक लिमिटेड
" दयाराम सूरजमल
" कल्लाजी सूनाजी
" मुकुन्ददास द्वारकादास
" दूम्माजी दानमल

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

मेसर्स महबूब शाही मिल जीनिंग फेक्टरी
" लक्ष्मय्याजाजी जीनिंग फेक्टरी
" शिवानन्द ऑइल मिल

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कुंवरजी सीताराम
" कल्लाजी सूनाजी
" खेप सिद्दप्पा सुरंगेल्लो नागानी

मेसर्स चिनवसप्पा संगणवासप्पा फतेपुर
" चुकप्पा शिवप्पा गुणमटकल
" रामजी कुंवरजी
" परशराम काशप्पाजाजी
" मुकुन्ददास द्वारकादास
" माळोहप्पा महारुद्रप्पा सेट्टी
" मडिअप्पा नागप्पा काड़ादी
" स्वरूपचंद लक्ष्मीनारायन
" रामसुख जेठमल
" लक्ष्मय्याजाजी
" शिव शरणप्पा रेवाप्पा गंदीगुड़ी
" संकरप्पा सेट्टी
" शिव शरणप्पा स्वादी
" शांवमलप्पा सूबा
" हीरालाल रामप्रसाद
" भीराम शिवनाथ

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुल वाहद अली
,, अब्दुल करीम खोजा
,, कन्हय्यालाल नरसिंहदास कम्पनी
,, कचूला साहब मोसलम साहब महागानी
,, कानूराम जीवराज
,, डोंगमल हीरालाल
,, दयाराम सूरजमल
,, माणिक रामचन्द्र जाजी
,, मायाराम किशनराज
,, शंगप्पा कुमार स्वामी अलपुर
,, शिवप्पा देशाई
,, शिवप्पा महानंदप्पा
,, हरकचंद अमराज
,, हाजी हैदरसा सौदागर

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स दत्तात्रय गुरुनाथ कमलापुर
,, पूनमचंद पदमसी कोठारी
,, लक्ष्मीनारायण पूसाराम
.. लक्ष्मीनारायण पुसाराम स्वर्णकार कं०लि०

किराणा के व्यापारी

मेसर्स नरायण राव परछेटी
,, परशराम जाजी
,, संगप्पा जाजी
,, बुदप्पा नागप्पा गुनमटकल
,, मुरगप्पा शिवरायप्पा गदीगुड़ी
,, संगप्पा रामुर मुलप्पा गुलमटकल

हार्ड वेअर मरचेंट्स

मेसर्स याकूब अली हासम सा
,, महबूब याकूब सा
,, संगप्पा कारप्पा जाजी

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अमरसा पटरेगार (औषधि)
,, तुकाराम काशी कावड़े
,, परशुराम जाजी (औषधि)
,, सय्यद अहमद सौदागर

मेसर्स बसप्पा व्यंकप्पा सोमापुरी मोटर सर्विस
,, हाजी हैदर साहब (बंदूकवाले)

रायचूर

निज़ाम स्टेट के एकदम दक्षिण भाग में रायचूर जिले का यह प्रधान स्थान है। वाड़ी जंक्शन होकर हैदराबाद और बम्बई की गाड़ियाँ यहाँ आती हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे का अंतिम स्टेशन है। यहाँ से मद्रास एण्ड सदर्न मराठा रेलवे शुरू होती है। मद्रास और रामेश्वर जानेवाले यात्री इसी राह होकर जाते हैं। इस प्रांत के एक किनारे बम्बई एवं दूसरे किनारे मद्रास इलाका है। इस जिले की उत्तरी सीमा कृष्णा और दक्षिणी तुंगभद्रा नदी बनाती है। इसका क्षेत्रफल ८॥ हजार वर्गमील और लोक संख्या ६॥ लाख है। जिले में गाँवों की संख्या ११२८ और उत्पन्न १५॥ लाख है। बम्बई, मद्रास और हैदराबाद के किनारों पर आजाने से यहाँ की भाषा कानड़ी, उर्दू, मराठी, तेलंग और तुरलक है। रायचूर के समीप कृष्णा नदी का पुल बहुत विशाल एवं दर्शनीय है। यहाँ देवदुर्ग के हिन्दू राजा ने केसरिया धारण किया था।

<u>पैदावार और तौल</u>—इस स्थान पर कपास और सींगफली का व्यापार विशेष होता है।

मुंगफली—अच्छी मौसिम में १० लाख थैली तक इसकी पैदावार होती है। इस साल इसकी पैदावार बहुत कम हुई। तौल १२ सेर का मन और ८ मन पर भाव, इसके दाने बम्बई तथा मारगोवा जाते हैं।

कपास—इसकी २ पौंड होती है तथा ३०, ४० हजार गाँठें प्रतिवर्ष पैदा होती हैं। बारह सेर के मन से कपास की १२ मन की खंडी और सरकी की २० मन की खंडी मानी जाती है।

करड़ी—तीस चालीस हजार थैला प्रतिवर्ष आता है तौल नापों से है।

गल्ला—सब तरह का होता है तौल १२८ सेर के पल्ले पर है। नाप से तौला जाता है। परंतु साधारण पैदा होती है

कल-कारखाने—यहाँ ७ जीनिंग फेक्टरियां, ६ प्रेसिंग फेक्टरियाँ और सींगदाना फोड़ने की मशीनें हैं। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है

मेसर्स किशनलाल गिरधारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रोल (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के बूब सज्जन हैं। हैदराबाद स्टेट के मदनूर नामक स्थान में करीब १०० साल पूर्व मूँडवे के सेठ मयारामजी मूलचंदजी मोदानी और रोल के सेठ रघुनाथदासजी बूब ने मिलकर मित्रतावश दुकान स्थापित की। सेठ मयाराम मूलचंद का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में पृष्ठ २०१ में राजपूताना विभाग में दे चुके हैं। हैदराबाद, बम्बई और मदनूर में इन दोनों फर्मों का व्यापार अभी तक भली भाँति शामिल होता आ रहा है। सेठ रघुनाथदासजी के पुत्र सेठ तुलसीरामजी ने अपनी प्राइवेट फर्म रायचूर में खुलवाई। आप संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हो गये। आप बड़े धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आपने रोल में श्रीरंगनाथजी का मंदिर और वृन्दावन में एक धर्मशाला बनवाई है।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ तुलसीरामजी के पुत्र किशनलालजी और गिरधारीलालजी बूब हैं। आपने १९७४ में एक दुकान बेजवाड़ा में भी खोली है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. रायचूर—सेठ किशनलाल गिरधारीलाल T. A. Rolwala यहाँ बैंकिंग आढ़त व गल्ले का कारवार होता है।

२. बेजवाड़ा—सेठ किशनलाल गिरधारीलाल—बैंकिंग आढ़त व गल्ले का कारबार होता है।

३. कृष्णा—किशनलाल जीनिंग फेक्टरी—जीनिंग और मुंगफली फोड़ने की मशीन है।

४. हैदराबाद—रामनाथ बद्रीनाथ महाराज गंज
५. मदनूर (धरमाबाद)—मयाराम मूलचंद—
६. बम्बई—नंदराम मूलचंद, बद्रीनाथ रामरतन

(इन तीनों फर्मों पर सराफी, गल्ला तथा आढ़त का कारबार होता है। इनमें हैदराबाद के सेठ नंदराम मूलचंद के साथ आपकी भागीदारी है।)

मेसर्स गिरधारीदास दामोदरलाल

इस दुकान का हेड आफिस ब्यावर है। इसके व्यापार आदि का संक्षिप्त परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में भी दिया जा चुका है। ब्यावर में ५० साल पूर्व सेठ ठाकुरदासजी राठी पोकरन (जोधपुर स्टेट) से आये थे। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। सेठ ठाकुरदास जी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ साँवराजजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष बढ़ाया। आपने ४० साल पहिले रायचूर में फर्म का स्थापन किया। आपके २ पुत्र हुए, सेठ गिरधारीलालजी

और दामोदरदासजी। सेठ दामोदरदासजी ने संवत् १९५९ में रायचूर में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ दामोदरदासजी के पुत्र विट्ठलदासजी राठी हैं। आप शिक्षित एवं व्यापारदक्ष नवयुवक हैं। ब्यावर में आपकी फर्म कृष्णा मिल और महालक्ष्मी मिल की मेनेजिंग एजंट है। इन मिलों में सेठ विट्ठलदासजी के हाथों से बहुत उन्नति हुई। आपकी फर्म ब्यावर, रायचूर, आकोट आदि स्थानों पर ऊँचे दर्जे की प्रतिष्ठित एवं मातबर मानी जाती है। सेठ दामोदरदासजी के समय से रायचूर दुकान पर सदाव्रत का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. ब्यावर—मेसर्स ठाकुरदास सांवराज — यहां बैङ्किग व्यापार होता है, तथा यह फर्म यहां के कृष्णामिल और महालक्ष्मीमिल की मेनेजिंग एजंट है।

२. रायचूर—मेसर्स गिरधारीलाल दामोदरदास
T. No 18 तार का पता Rathiji — बैङ्किग व्यापार होता है। तथा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और मूंगफली फोड़ने की मशीन (डिकाटी केटर्स) है।

३. आकोट—मेसर्स सांवराज दामोदर दास—जीन प्रेस फेक्टरी है और बैङ्किग व्यापार होता है।

४. उज्जैन—मेसर्स विट्ठलदास बुलाकीदास—बैङ्किग और आढ़त का कारबार होता है।

५. पोकरन—ठाकुरदास सांवराज—बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स रामसुख जयगोपाल

इस दुकान के मालिक रोल (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी समाज के ईनानी सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ६०।७० साल पहिले सेठ रामसुखजी के हाथों से रामधन रामसुख नाम से हुआ था। तथा आप ही के हाथों से इसके कारबार को विशेष उन्नति मिली। आरंभ से ही यह दुकान कमीशन का काम कर रही है। सेठ रामसुखजी के पुत्र जयगोपालजी, जयनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी हैं। इनमें से जयगोपालजी १२ साल पहिले गुजर चुके हैं। आप तीनों भाइयों के क्रमशः जुगलकिशोरजी, तुलसीरामजी एवं देवकिशनजी पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रायचूर—मेसर्स रामसुख जयगोपाल
T. No 43 — आढ़त, बैङ्किग, गल्ला तथा रुई का कारबार होता है

यादगीर (रायचूर) देवकिशन तुलसीराम — ,, ,,

वरंगल

निजाम स्टेट के पूर्वी किनारे पर वरंगल जिले का यह प्रधान स्थान है। इसके पूर्वी किनारे पर गोदावरी तथा दक्षिणी किनारे पर कृष्णा नदी बहती है। इस जिले की भूमि विशेष कर पर्वतीय है। इसमें तालाब और खनिज पदार्थों की विशेषता है। इस प्रान्त के एक ओर मध्य-प्रदेश और दूसरी ओर मद्रास है।

पैदावार—हीरा खनिज—कृष्णा नदी के किनारे केशरा और पर त्याल् स्थानों में मिलता है।

कोयला—वरंगल, मुगवरम् और सिगारनी में पत्थर के कोयले की खाने हैं।

अभ्रक तथा याकूत भी इस जिले में मिलता है।

एरंडी—इसकी पैदावार अन्दाज २–२॥ लाख थैली होती है। तौल ४० सेर का मन, २० मन की खण्डी।

चाँवल—धान का तौल माप से और चावल का पल्ले से है। माप १४ सेर की हंडी, ४ हंडी का मन तथा २० मन की खंडी। तौल १२० सेर बंगालो का पल्ला।

तिल्ली—पैदावार २–२॥ लाख बोरी, तौल माप पर।

कपास—इसकी २ फसलें होती हैं। बरसाती (आसोज में) करीब १५, २० हजार गांठें और धेनी पीक ५ हजार गाँठ की पैदावार होती है।

तौल, कपास—१२ सेर का मन २० मन की खंडी। रुई १२ सेर का मन और १० मन का बोझा। सरकी ५० रतल की खंडी पर माप।

गल्ला—जुवारी, चना, मूंग, तूवर आदि पैदा होती है, तौल माप पर होता है।

चमड़ा—इसके १०–१२ कारखाने हैं। यहाँ से चमड़ा मद्रास भेजा जाता है।

गलीचा, दरी—इसके बनाने वाले २००–४०० घर हैं, गलीचा विशेष मात्रा में यहाँ से बाहर जाता है, तथा ५) से ५००) तक का माल तैयार होता है।
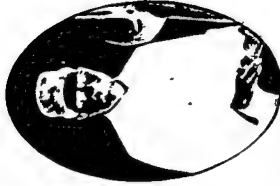
स्व० सेठ दादाभाई पूरनजी इटालिया बांगल (दक्षिण)

सेठ हीरजाजी दादाभाई इटालिया बांगल

श्री जमशेदजी हीरजाजी इटालिया बांगल

खानी कस्मत—यहाँ की ज्वार की हुई कमने सोलापुर और अमरावती की ओर जाती है। इसके अलावा देशी रेशम के वस्त्र भी यहाँ अच्छे बनते हैं।

बाहर जानेवाला माल—एरंडी, तिल्ली, चावल, कपास, सरसों, रुई, मिरची और एरंडी का तेल।

आने वाला माल—किराना, गुड़, शक्कर, फेन्सी गुड्स, कपड़ा और करोगेटेड शीट्स

रेलवे लाइन—हैदराबाद से काजी पैट वरंगल होती हुई एक लाइन बेजवाड़ा जाती है। अभी २ निजाम गवर्नमेंट ने काजी पैठ से बलारशाह एक लाइन चालू की है, उस पर, ग्रैंट ट्रंक एक्सप्रेस मद्रास से लाहौर तक दौड़ती है।

व्यापारिक स्थान—भोनगीर, जनगाँव, वरंगल तथा खम्मभमपेठ—यहाँ विशेषकर एरंडी ज्यादा पैदा होती है। हनमकुंडा में हजार खंभों का मन्दिर दर्शनीय है।

कल कारखाने—यहाँ करीब २२ जीनिंग फेक्टरियाँ, ३ प्रेसिंग फेक्टरियाँ, १६ राइसमिल, २ ऑइल मिल और १ पांड्सभिल है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स झूमरलाल सूरजकरण

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ झूमरलालजी के पुत्र सूरजकरणजी और भीकमचन्दजी हैं। आपकी फर्म संवत १९५१ से व्यापार कर रही है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के जायल (जोधपुर स्टेट) निवासी सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स झूमरलाल सूरजकरण—यहाँ आढ़त सोना चांदी और गल्ले का कारबार होता है

पेदापल्ली—झूमरलाल सूरजकरण—उपरोक्त कारबार होता है।

मेसर्स दादाभाई एदलजी इटालिया

इस खानदान का खास निवास स्थान चीकली (सूरत) है। आप पारसी समाज के इटालिया सज्जन हैं। चीकली से दादाभाई सेठ ५०।६० साल पहले सोलापुर होकर हैदराबाद आये। यहाँ कुछ समय तक आप सर्विस करते रहे। पश्चात् चिनाई केमिस्ट्री के सोराब नवाम-जंग के साथ वरंगल गये। इस स्थान को आप ने व्यवसाय के उपयुक्त समझ ४५ वर्ष पूर्व

अपनी फर्म की वरंगल में नींव रक्खी। आप के समय में ही इस फर्म पर आबकारी कंट्राक्ट का व्यापार आरम्भ हो गया एवं इस व्यवसाय में आप ने अच्छी दौलत पैदा की। आप के कोई पुत्र नहीं था, आप ने अपने भतीजे सेठ दीनशाजी को १० महीने की अवस्था से ही पाल कर बड़ा किया था, और पीछे से उन्हें होनहार समझ अपना उत्तराधिकारी बनाया। आप सन् १९२२ में ८० वर्ष की अवस्था में बहिश्त नशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ दीनशाजी दादाभाई इटालिया हैं। आप वरंगल के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप प्रति वर्ष २५ लाख रुपयों का निजाम स्टेट का आबकारी का कंट्राक्ट लेते हैं। इसके अलावा आप ने ६ जीनिंग फेक्टरियाँ खोली हैं। इस समय आप वरंगल डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड, रेलवे एडवाइजरी बोर्ड और आन्ध्र बैङ्क की एडवायजरी बोर्ड के मेम्बर हैं। आप की ओर से चौखली में सब जातियों के लिये एक हाई स्कूल और कन्या पाठशाला चल रही है। आप के पुत्र श्रीयुत जमशेदजी दीनशाजी की वय इस समय २२ साल की है। आप विलायत में पढ़ रहे हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ वरंगल—मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी — तार का पता—Bhikaji — यहाँ हेड आफिस है और कंट्राक्टिंग का काम होता है।

२ वरंगल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और राइस मिल है।

३ निजामाबाद— ,, ,, ,,

४ पेद्दापल्ली (वरंगल)—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

५ खममेट (वरंगल)—जीनिंग और राइस मिल है।

६ एरपल्ली (निजामाबाद)—राइस फ्लोअर मिल है।

७ नदीगाँव (बेजवाड़ा)—जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स नत्थूभाई मेघजी एण्ड संस

इस फर्म के मालिक कच्छ—नागलपुर निवासी लोहा—मुस्लिम समाज के सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ नत्थू भाई मेघजी करीब ५० साल पहिले वरंगल आये। आरंभ में आपने हड़ीन टेनेरी (चमड़े का कारखाना) खोली। पश्चात् आप कंट्राक्ट का काम करने लगे। निजाम स्टेट के वरंगल डिस्ट्रिक्ट फारेस्ट के बहुत से कंट्राक्ट आपके द्वारा हुए। आपके द्वारा सहकारनम का मशहूर तालाब तय्यार हुआ। व्यापारिक कामों के सिवा धरम के कामों में भी आपका अच्छा खयाल था। आपने वरंगल में एक मुसाफिरखाना बनवाकर आमजन

साहब को भेट किया। इसी प्रकार अलीगढ़ यूनिवर्सिटी और हैदराबाद फ्लड के समय भी एक मुश्त रकमें दान कीं। आपने अपने कई रिश्तेदार कुटुम्बों को लाकर निजाम स्टेट में आबाद करवाया। इस प्रकार इज्जतपूर्वक जीवन बिताते हुए ता० ७-६-१९१५ में आप बहिश्त नशीन हुए। २० साल पहिले वरंगल में आपने एक जीनिंग खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ नत्थूभाई मेघजी के पुत्र सेठ कासिमभाई और सेठ जूसुफभाई हैं। आप लोगों के हाथों से वरंगल और आसपास ६ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ और १ वांइस फेसिंग मिल खोला गया है। यह फर्म यहां के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. वरंगल—मेसर्स नत्थूभाई मेघजी एण्डसंस T. No 20 — यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है

कारखाने:—

२. वरंगल—कासिमभाई नत्थू वांइस मिल
३. वरंगल—कासिम जूसुफ नत्थूभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
४. जमीकुंटा (करीम नगर) जूसुफ भाई नत्थू जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
५. मानिकगढ़ (आसिफाबाद) कासिम भाई नत्थू एण्डसंस जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
६. परभनी—कासिम व जूसुफ नत्थूभाई खोजा जीनिंग फेक्टरी

मेसर्स नथमल हरीकिशन

इस फर्म के मालिक सेठ नथमलजी नागोर (मारवाड़) निवासी ननवाणा (बोहरा) जाति के सज्जन हैं। आपके हाथों से २० साल पूर्व कपास, सरकी, एरंडी, गल्ला आदि की आढ़त का कारबार शुरू हुआ और थोड़े ही समय में आपने व्यवसाय की उन्नति कर फर्म की अच्छी प्रतिष्ठा बढ़ाई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स नथमल हरीकिशन, तार का पता— Nathamal, T. No 20 — यहाँ सब प्रकार की आढ़त का कारबार होता है, इस समय आपके पास मेसर्स वालकट ब्रदर्स की एरंडी और कपास खरीदी की एजंसी है।

मेसर्स धुधमल जुहारमल

इस दुकान का हेड आफिस औरंगाबाद (निजाम स्टेट) में है। यहाँ यह फर्म ११५ वर्षों से स्थापित है। इसकी शाखाएँ बम्बई, जालना, नांदेड़, सिकन्दराबाद प्रभृति स्थानों में हैं, इसके

मेसर्स श्रीकृष्ण घुमीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान पीपाड़ (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। सर्व प्रथम संवत् १९५३ में सेठ घुमीलालजी वरंगल आये और रामकरण घुमीलाल दुकान के साथ राथली ब्रदर्स की कमीशन का काम करने लगे। कुछ समय बाद आपने उक्त फर्म से अपना भाग निकाल कर अब्दुल साहब घुमीलाल के नाम से रालिब्रदर्स की एजंसी का काम किया। पश्चात् जब राथली एजंसी का काम कम हुआ तो १९६८ में श्रीकृष्ण घुमीलाल के नाम से आपने स्वतंत्र दुकान की। आपने १० साल पहिले सिकन्दराबाद में भी अपनी दुकान खोली है।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ घुमीलालजी, बिरदीचंदजी, धनेचंदजी और रामधनजी चारों भाई हैं। आप लोगों ने फर्म के व्यापार को अच्छा बढ़ाया है। सेठ रामधनजी के पुत्र जेठमलजी और बरदीचंदजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी भी कारबार में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण घुमीलाल
T. A. Shree kishan, T. No 5 } यहाँ कपास, एरंडी आदि का व्यापार बैङ्किंग व आढ़त का काम होता है।

सिकन्दराबाद—श्रीकृष्ण घुमीलाल T, No 333—बैङ्किंग व्यापार होता है।

गणापुर—श्रीकृष्ण घुमीलाल—एरंडी की फेक्टरी और यह व्यापार होता है।

रगनाथपल्ली—श्रीकृष्ण घुमीलाल—तेल की फेक्टरी और यह व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़ राइस एवं आइल मिल्स

आज़ार हदंकला जीनिंग राइस मिल
कासिम भाई जुसुफ भाई नत्थू जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गुमड़ेली आनकीराम जीनिंग राइस मिल
सार महम्मद जान ऑइल जीनिंग फेक्टरी
निरला नरसिंहम् जीनिंग फेक्टरी
पिंगले व्यंकट रामरड्डी जीनिंग फेक्टरी प्रेसिंग और राइस मिल
पिंगले प्रताप रड्डी जीनिंग फेक्टरी
पंडेली राजपार ऑइल जीनिंग फेक्टरी
महादेव आनंदम् आइल जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल
भीखाजी दादाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, राइस और ऑइल मिल
दीवान बहादुर रामगोपाल श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी राइस और ऑइल मिल
रामनारायण रामरतन जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल

मेसर्स निरमिल्ला नरसिंहम रमनय्या
" गुंडामुल लिंगम
" गोरंटला विश्वनाथम (गोवर्द्धन कपड़ा)
" सुन्दर रामागम (सूत)
" शुभकरण रामगोपाल

दरी गलीचा के व्यापारी

मेसर्स भूपति वीरय्या
" मावजी भानजी
" रंगा रामनाथम्
" मारगम रामय्या

ऑइल एजंट

मेसर्स काकाराव विसया
" वारमहम्मद जानू
" सी. भद्रराज मुदलियार

हार्ड वेयर मरचेंट्स

मेसर्स वारमहम्मद जानू
" सुन्दर मल्लय्या
" कुन्नमारी रामन्ना
" हासम इब्राहिम

लकड़ी के व्यापारी

मेसर्स अगुलो गोविन्द
" नेरला नरसिम्मा रामल्लो
" समुदला नरसय्या

एजंसी

मेसर्स नोरिया कम्पनी (भीखाजी दादाभाई एजंट)
" रायली ब्रदर्स (श्रीकृष्ण चुन्नीलाल एजंट)
" वालकट ब्रदर्स (नथमल हरीशंकर ")
" मद्रास कम्पनी (बुधमल जुहारमल ")

सूकर की दान—इसका भी जबर्दस्त पाठ होता है।

नोट—इस स्थान पर व्यापारिक गति विधि विशेष रहा करती है। यहां की जनता सघन व सुखी है। गल्ले का प्रधान बाजार महबूबगंज है। यहां के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास

इस फर्म का हेड आफिस कुचामन (जोधपुर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का हेड आफिस कुचामन में है। संवत् १९७८ से निजामाबाद में इस दुकान का व्यापार आरंभ हुआ।

कुचामन में इस फर्म के व्यापार को सेठ शिवलालजी के समय में बहुत अधिक तरक्की मिली। आपने जोधपुर स्टेट मे अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आपको जोधपुर सरकार से जागीरी प्राप्त हुई। कुचामन ठिकाने में आपका कुटुम्ब नामी माना जाता है। आपके पुत्र श्रीयुत किशनलाल जी का स्वर्गवास संवत १९६४ में हो गया। आपकी ओर से कई स्थानों पर धर्मशालाएँ बनवाई गई। लक्ष्मणझूला पर आपकी ओर से धार्मिक प्रबंध है। कुचामन में आपकी एक धर्मशाला एवं संस्कृत पाठशाला है जहाँ विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते हैं।

सेठ किशनलालजी के ४ पुत्र हुए। सेठ परमानंदलालजी, सेठ गोवर्द्धनलालजी, सेठ मदनलालजी एवं सेठ गोकुलदासजी। इन सज्जनों में से सेठ परमानंदलालजी का संवत् १९६८ में स्वर्गवास हो गया है, अतः आपके नाम पर गोवर्द्धनलालजी दत्तक आये हैं। वर्तमान में आप ही तीनों सज्जन इस फर्म के मालिक हैं। माहेश्वरी समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा है। आपकी फर्म यहां के व्यापारिक समाज में बहुत मातबर मानी जाती है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. कुचामन—मेसर्स शिवलाल किशनलाल—बैङ्किग व जागीरदारों से लेन-देन का व्यापार होता है।
२. जोधपुर-मेसर्स शिवलाल किशनलाल— " " "
३. अहमदाबाद—मेसर्स मदनमोहन किशनलाल, कालूपुरा पोस्ट, तार का पता DamodarJi — सराफी, आढ़त व मीलों के कपड़े का व्यापार होता है।
४. दिल्ली—मदनमोहन किशनलाल—सराफी, आढ़त व कपड़े का व्यापार होता है।
५. निजामाबाद—गोवर्द्धनलाल गोकुलदास, तार का पता Girirai — जीनिंग, राइस फेक्टरी, बैङ्किग, आढ़त और सरफी का व्यापार होता है।

६. धरमाबाद—गोवर्द्धनलाल गोकुलदास—यहाँ जीनिंग फेक्टरी है। इस दुकान के अंदर में और भी जीनिंग हैं।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में (निजाम स्टेट) है। निजामाबाद में इस दुकान का स्थापन श्री सेठ सुगनचंदजी डागा के हाथों से हुआ। निजाम स्टेट के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत मातवर एवं ऊँची श्रेणी की मानी जाती है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—सेठ बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर तार का पता Raibahadur } जीनिंग और राइस मिल है। तथा हुंडी, चिट्ठी, बैङ्किंग, कॉटन, गल्ला और राइस की खरीद-बिक्री तथा आढ़त का काम होता है।

मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी

इस फर्म का हेड आफिस वरंगल में है। वहाँ यह फर्म लाखों रुपयों का प्रति साल आब कारी का कंट्राक्ट लेती है। वरंगल के अलावा इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ राइस ए आइल मिल्स, पेदापल्ली, नंदीगाव आदि स्थानों में हैं। इन सब स्थानों पर यह फर्म अच्छी मा बर मानी जाती है। इसका निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी तार का पता Bhikaji } जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा राइस है। और कॉटन का व्यापार होता

मेसर्स रामसुख बालमुकुंद

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मेसर्स हीरानंद रामसुख के नाम से बाद में दिया गया है। हैदराबाद में इस फर्म पर गल्ले का बड़ा कारबार होता है। इसके इस दुकान की शाखाएँ निजामाबाद, कामारेड्डी, मद्नूर आदि स्थानों में हैं। निजामा व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स हीरानंद रामसुख T. A. Mann } यहां बैङ्किंग, गल्ला और आढ़त का होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। हैदराबाद में यह फर्म प्रति वर्ष लाखों रुपयों का आबकारी का कंट्राक्ट लेती है। इसके अलावा बैङ्किंग व्यवसाय करती है। कंट्राक्टिंग काम की व्यवस्था के लिये परभनी, बीड़, निजामाबाद, नांदेड, महबूब नगर, सेड़म, सांडूर, मंथनी, नलगुंडा, मोमिनाबाद, मजले गाँव, हिंगोली, मेंदक, विकाराबाद आदि स्थानों पर दुकानें हैं। इसके अलावा इसकी मुंबई (बम्बई) ब्रांच पर नमक का व्यापार होता है। हैदराबाद की गण्यमान्य दुकानों में इस फर्म की भी गणना है। इसका निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स रामदयाल घासीराम—बैङ्किंग एवं कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है।

मेसर्स दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण

इस फर्म का हेड आफिस सिकन्दराबाद में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित सिकन्दराबाद में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैङ्किंग, मिल आनर्स एवं कपड़े का बहुत बड़ा ट्रेड करती है तथा सिकन्दराबाद की प्रधान फर्म मानी जाती है। इसके अलावा वरंगल, बेल्लम्पल्ली, सेड़म, भेंसा आदि स्थानों पर इसकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा यहाँ व्यापार होता है। इस फर्म का निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण } यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा राइस मिल है तथा बैङ्किंग चाउल और कॉटन का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

कृष्णा जीनिंग राइस फेक्टरी

गोवर्धनदास गोकुलदास जीनिंग फेक्टरी और राइस फेक्टरी

नरसा गौड़ निज़ा गौड़ जीनिंग राइस फेक्टरी

धर्मराज मदनचन्द जीनिंग राइस फेक्टरी

भीकाजी दादाभाई एण्ड को० जीनिंग प्रेसिंग एण्ड राइस फेक्टरी

मंधुर कृष्णय्या जीनिंग राइस फेक्टरी

रामचन्द्र भजनलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और राइस मिल

लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल
वामन नायक मचल्ला सत्यन्ना जीनिंग राइस फेक्टरी

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास
,, जगन्नाथ बद्रीनाथ
,, झूमरलाल गोवर्द्धन
,, वंशीलाल अबीरचन्द राय बहादुर
,, रामरतन श्रीराम
,, रामसुख बालमुकुंद
,, दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण
,, व्यंकटलाल बद्रीनारायण (लोकलआढ़त)
,, रामदयाल घासीराम
,, शिवनारायण लादूराम
,, सूरज करण सीताराम

सीड्स और मिरची के आढ़तिया

मेसर्स सूरजकरण सीताराम (मिरची)
,, वामनदास एण्ड कम्पनी (मिरची)
,, हनुमंतराय भेरोवल्ला (ग्रेन)

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कोरटवल्ली यंकोबा नाइक
,, गोंडल गंगाराम
,, महम्मद अमीन
,, वलीमहम्मद हाशीमूसा
,, यलकंठ रंगय्या

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आपता राज लिंगम्
,, कोंडा नरसिंहलू
,, जलाल मियाँ अब्दुल कादर
,, नारला नरसिंहू
,, टी० राजाराम

रुई के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनलाल गोकुलदास
,, झूमरलाल गोवर्द्धन
,, वंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर
,, भीखाजी दादाभाई
,, रामरतन श्रीराम
,, रामसुख बालमुकुंद
,, सूरजकरण सीताराम
,, शिवनारायण लादूराम

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
,, जयनारायण जीतमल
,, वलीमहम्मद राजीमूसा
,, खानबहादुरहोरमसजी माणकजी (नमक)
,, हुसेन तारमहम्मद

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स बरड़ पंटय्या
,, बद्दू रामय्या लक्षय्या
,, बालकिशन हरीकिशन

नांदेड़

गोदावरी नदी के तीर निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर यह शहर आबाद है। इसके तीन ओर निजाम स्टेट और एक ओर बरार प्रांत है। यहाँ की भाषा मराठी, उर्दू, तेलंग और कनाड़ी है। इस प्रान्त में तालाबों की संख्या विशेष है, जिनमें बिलोली, देगलूर, कंदाहार, शहापुर, तलेगाँव, सिंदी और म्हेसा प्रधान हैं। इस प्रान्त में नांदेड़, उमरी, करकेली, मुदखेड और म्हेसा आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नांदेड में १८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ व १ काटन मील है।

पैदावार—गल्ला आदि—हलदी, गेहूँ, जुवारी, तूवर, चना, मसूर, मूँग, उड़द, करड़ी, अलसी तथा अम्बारी हैं। तौल ४ सेर की पायली और १६ पायली का मन है।

कपास—६५६ सेर की खंडी पर भाव होता है।

सरकी—३२८ सेर की खंडी पर भाव होता है।

रुई— १४० सेर के पल्ले पर भाव होता है। कपास की पैदावार ४०, ५० हजार गाँठ है। घी किराना गुड़ शक्कर का तौल १२ सेर के मन से है।

श्रीसिक्ख गुरु द्वारा मंदिर—इस गुरु द्वारा का निर्माण महाराज रणजीतसिंहजी ने संवत् १७६४ में गुरुगोविंदसिंह साहब के समाधिस्थान पर करवाया। इस गुरुद्वारे का गुम्मच स्वर्ण का है। यहाँ करीब ४००—५०० सिक्ख निवास करते हैं। यह सिक्खों का पवित्र एवं प्रधान तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित औरंगाबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान का स्थापन २५।२६ साल पहिले हुआ। नांदेड़ के अलावा इस दुकान

लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल

वामन नायक मचल्ला सव्यन्ना जीनिंग राइस फेक्टरी

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास
- ,, जगन्नाथ बद्रीनाथ
- ,, झूमरलाल गोवर्द्धन
- ,, वंशीलाल अबीरचन्द राय बहादुर
- ,, रामरतन श्रीराम
- ,, रामसुख बालमुकुंद
- ,, दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण
- ,, व्यंकटलाल बद्रीनारायण (लोकलआढ़त)
- ,, रामदयाल घासीराम
- ,, शिवनारायण लादूराम
- ,, सूरज करण सीताराम

सीड्स और मिरची के आढ़तिया

मेसर्स सूरजकरण सीताराम (मिरची)
- ,, वामनदास एण्ड कम्पनी (मिरची)
- ,, हनुमंतराय भेरोबक्श (ग्रेन)

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कोरटवली यंकोबा नाइक
- ,, गोंडल गंगाराम
- ,, महम्मद अमीन
- ,, वलीमहम्मद हासीमूसा
- ,, बलकंठ रंगय्या

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आयता राज लिंगम्
- ,, कोंडा नरसिंहलू
- ,, जलाल मियाँ अब्दुल कादर
- ,, नारला नरसिंहू
- ,, टी० राजाराम

रुई के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनलाल गोकुलदास
- ,, झूमरलाल गोवर्द्धन
- ,, वंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर
- ,, भीखाजी दादाभाई
- ,, रामरतन श्रीराम
- ,, रामसुख बालमुकुंद
- ,, सूरजकरण सीताराम
- ,, शिवनारायण लादूराम

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
- ,, जयनारायण जीतमल
- ,, वलीमहम्मद राजीमूसा
- ,, खानबहादुर होरमसजी माणकजी (नमक)
- ,, हुसेन तारमहम्मद

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स रूपल घंटय्या
- ,, बट्टू रामय्या लछय्या
- ,, बालकिशन हरीकिशन

नांदेड़

गोदावरी नदी के तीर निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर यह शहर आबाद है। इसके तीन ओर निजाम स्टेट और एक ओर बरार प्रांत है। यहाँ की भाषा मराठी, उर्दू, तेलंग और कनाड़ी है। इस प्रान्त में तालाबों की संख्या विशेष है, जिनमें बिलोली, देगलूर, कंदाहार, शहापुर, वलेगाँव, सिरी और म्हैसा प्रधान हैं। इस प्रान्त में नांदेड़, उमरी, करकेली, मुदखेड़ और म्हैसा आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नांदेड़ में १८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ व १ काटन मील है।

पैदावार—गल्ला आदि—हलदी, गेहूँ, जुवारी, तूवर, चना, मसूर, मूँग, उड़द, करड़ी, अलसी तथा अम्बारी हैं। तौल ४ सेर की पायली और १६ पायली का मन है।

कपास—६५६ सेर की खंडी पर भाव होता है।

सरकी—३२८ सेर की खंडी पर भाव होता है।

रुई— १४० सेर के पल्ले पर भाव होता है। कपास की पैदावार ४०, ५० हजार गाँठ है। घी किराना गुड़ शक्कर का तौल १२ सेर के मन से है।

श्रीसिक्ख गुरु द्वारा मंदिर—इस गुरु द्वारा का निर्माण महाराज रणजीतसिंहजी ने संवत् १७६४ में गुरुगोविन्दसिंह साहब के समाधिस्थान पर करवाया। इस गुरुद्वारे का गुम्मच स्वर्ण का है। यहाँ करीब ४००—५०० सिक्ख निवास करते हैं। यह सिक्खों का पवित्र एवं प्रधान तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स पूनमचंद पन्नालालमल

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित औरंगाबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान का स्थापन २५।२६ साल पहिले हुआ। नांदेड़ के अलावा इस दुकान

की शाखाएँ बम्बई, सिकन्दराबाद, वरंगल आदि स्थानों में हैं, जिन पर बैङ्किंग व कमीशन का काम होता है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. नांदेड़—मेसर्स पूनमचंद वल्लाबरमल तार का पता Garnet	गल्ला, कपास तथा आड़त का काम और बैङ्किंग व्यापार होता है।

२. नांदेड़—निहालचंद उत्तमचंद—इस नाम से लोकल आढ़त का काम होता है।

३. नांदेड़—निहालचंद देवड़ा— " "

मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यवसाय आदि का सुविस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ के अलावा बम्बई, मद्रास, गुलबर्गा प्रभृति स्थानों में इस फर्म की ब्रांचेज़ हैं जिन पर बैङ्किंग और कमीशन एजंसी का काम होता है। नांदेड़ फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा T. A- Hedmen	बैङ्किंग, आढ़त तथा रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी

इस फर्म का हेड अफिस जालना है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय पेस्तनजी मेरवानजी के नाम से जालना में दिया गया है। जालना के अलावा इस फर्म की ब्रांचेज़, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज बम्बई, ऊमरी, करकेली, परभनी, सेलू सातोना, धामनगांव, देवलगांव (बरार) चुतगांव (पूना) तथा गुंटकेल (मद्रास) है। नांदेड़ ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी	यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी हैं तथा आढ़त और कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस फर्म पर बैङ्किंग और आवकारी कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है इसके अलावा निजाम स्टेट की १२।१५ स्थानों में कंट्राक्टिंग की सुविधा के लिये इस फर्म की शाखाएँ हैं।

मेसर्स शंकरलाल मालीवाल

इस दुकान का स्थापन सेठ फतेरामजीके हाथों से दांती में हुआ। आप मोड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी समाज के मालीवाल सज्जन हैं। सेठ फतेरामजी के ३ पुत्र हुए— जगन्नाथजी, हरभगसजी तथा भारमलजी। सेठ हरभगसजी के किशनलालजी और भारमलजी के रामचन्द्रजी हुए। इन सज्जनों में से सेठ जगन्नाथजी और किशनलालजी के हाथों में इस दुकान के रोजगार को विशेष तरक्की मिली। सेठ किशनलालजी १९६० में और रामचन्द्रजी १९६२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रामचन्द्रजी के यहां शंकरलालजी कड़ेल से दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शंकरलालजी हैं। आपके पुत्र श्रीयुत् मदनलालजी भी कारबार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दांती (परभनी) मेसर्स फतेराम भारमल—जिरायत तथा लेन-देनका काम होता है।

नांदेड़—शंकरलाल मालीवाल—साहुकारी लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स हरनारायण रामप्रताप

इस दुकान के मालिक बूड़सू (थोरावड़) निवासी माहेश्वरी समाज के काबरा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ७५।८० साल पहिले सेठ हरनारायणजी काबरा के हाथों से हुआ। आपके पुत्र सेठ रामप्रतापजी काबरा के हाथों से इस दुकान के व्यापार और सम्मान की विशेष उन्नति हुई। रुई के व्यवसाय में आपका बहुत बड़ा हियाव था। नांदेड़ के व्यापारिक समाज में आप अच्छी प्रतिष्ठा की निगाह से देखे जाते थे।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राम प्रतापजी काबरा के पुत्र रामदेवजी, जगन्नाथजी एवं श्रीकृष्ण जी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स हरनारायण रामप्रताप—बैङ्किग तथा कॉटन का व्यापार होता है।

नांदेड़—मेसर्स रामप्रताप काबरा—गल्ला तथा आड़त का व्यापार होता है।

नांदेड़—मेसर्स जगन्नाथ श्रीकृष्ण—आड़त का कारबार होता है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय परभनी में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान पर आड़त का तथा रुई आदि का व्यापार होता है।

की शाखाएँ बम्बई, सिकन्दराबाद, वरंगल आदि स्थानों में हैं, जिन पर बैङ्किंग व कमीशन का काम होता है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. नांदेड़—मेसर्स पूलमचंद बख्तावरमल, तार का पता Garnet — गल्ला, कपास तथा आढ़त का काम और बैङ्किंग व्यापार होता है।

२. नांदेड़—निहालचंद उत्तमचंद—इस नाम से लोकल आढ़त का काम होता है।

३. नांदेड़—निहालचंद देवड़ा— " "

मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यवसाय आदि का सुविस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ के अलावा बम्बई, मद्रास, गुलबर्गा प्रभृति स्थानों में इस फर्म की ब्रांचेज हैं जिन पर बैङ्किंग और कमीशन एजंसी का काम होता है। नांदेड़ फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा, T. A- Hedmen — बैङ्किंग, आढ़त तथा रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी

इस फर्म का हेड अफिस जालना है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय पेस्तनजी मेरवानजी के नाम से जालना में दिया गया है। जालना के अलावा इस फर्म की ब्रांचेज, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़ बम्बई, ऊमरी, करकेली, परभनी, सेलू, सातोना, धामनगांव, देवलगांव (बरार) जुलगांव (पूना) तथा गुंटकेल (मद्रास) है। नांदेड़ ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी — यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा आढ़त और कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस फर्म पर बैङ्किंग और आबकारी कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है इसके अलावा निजाम स्टेट की १२।१५ स्थानों में कंट्राक्टिंग की सुविधा के लिये इस फर्म की शाखाएँ हैं।

मेसर्स शंकरलाल मालीवाल

इस दुकान का स्थापन सेठ फतेरामजीके हाथों से दांती में हुआ। आप मोड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी समाज के मालीवाल सज्जन हैं। सेठ फतेरामजी के ३ पुत्र हुए-जगन्नाथजी, हरभगसजी तथा भारमलजी। सेठ हरभगसजी के किशनलालजी और भारमलजी के रामचन्द्रजी हुए। इन सज्जनों में से सेठ जगन्नाथजी और किशनलालजी के हाथों से इस दुकान के रोजगार को विशेष तरक्की मिली। सेठ किशनलालजी १९६० में और रामचन्द्रजी १९६२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रामचन्द्रजी के यहां शंकरलालजी कड़ेल से दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शंकरलालजी हैं। आपके पुत्र श्रीयुत् मदनलालजी भी कारबार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दांती (परभनी) मेसर्स फतेराम भारमल—किरायत तथा लेन-देनाका काम होता है।

नांदेड़—शंकरलाल मालीवाल—साहुकारी लेन-देन का काम होता है।

मेसर्स हरनारायण रामप्रताप

इस दुकान के मालिक बुड्सू (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के काबरा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ७५।८० साल पहिले सेठ हरनारायणजी काबरा के हाथों से हुआ। आपके पुत्र सेठ रामप्रतापजी काबरा के हाथों से इस दुकान के व्यापार और सम्मान की विशेष उन्नति हुई। रुई के व्यवसाय में आपका बहुत बड़ा हिस्सा था। नांदेड़ के व्यापारिक समाज में आप अच्छी प्रतिष्ठा की निगाह से देखे जाते थे।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ रामप्रतापजी काबरा के पुत्र रामदेवजी, जगन्नाथजी एवं श्रीकृष्ण जी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स हरनारायण रामप्रताप—बैंकिंग तथा कॉटन का व्यापार होता है।

नांदेड़—मेसर्स रामप्रताप काबरा—गल्ला तथा आढ़त का व्यापार होता है।

नांदेड़—मेसर्स जगन्नाथ श्रीकृष्ण—आढ़त का कारबार होता है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय परभनी में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान पर आढ़त का तथा रुई आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स वामन नायक जागीरदार

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद है। इसके अलावा इनकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ और राइस मिल परभनी, निजामाबाद, मेदक, कामारडी आदि स्थानों में हैं। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। यह कुटुम्ब हैदराबाद के व्यापारिक समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। नांदेड़ में इस फर्म की जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकबर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
चन्द्रभान गिरि वासुदेव गिरि जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
येजनजी येरामजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
महम्मद जूनुस जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
रमजान अली लालजी साजन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
वामन नायक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
वाड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

बैंकर्स

दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
मेसर्स अधकरण पनसीराम
,, कल्याणजी केशवजी
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, बालकिशनदास रामलाल
,, बालाराम शिवनारायण
,, मुकुंददास मूंदड़ा
,, रामदयाल घासीराम

मेसर्स शंकरलाल मालीवाल
,, हरनारायण रामप्रताप

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्यासा महम्मद
,, उसमान शाही मिल हाय शाप
,, मूसा अब्दुल्ला
,, मौलवी महम्मद अली गुलाम महम्मद
,, रहमतुल्ला मूसा
,, हाजी लतीफ हाजीमूसा

ग्रेन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स गोकुलदास तुलसीदास
,, सूरजलाल गोवर्द्धन
,, पूनमचंद बख्तावरमल
,, भीमराज कस्तूरचंद
,, मुकुंददास मूंदड़ा
,, रामनाथ कोंडूलाल
,, रामप्रताप कावरा
,, शामजी धारसी
,, हाजी लतीफ हाजी मूसा

पूर्णा

निजाम स्टेट रेलवे के मनमाड़ सिकंदराबाद लाइन के मध्य यह जंकशन है। यहाँ से हिंगोली के लिये एक ब्रांच लाइन जाती है। स्टेशन के समीपही यह एक छोटी सी मंडी है। इस स्थान पर कपास, गल्ला तथा किराने का व्यापार प्रधान रूप से होता है।

तौल—कपास—१२ सेर का मन व २० मन की खंडी।

रुई—१३२ सेर का पल्ला माना जाता है। करीब २० हजार गाँठ रुई प्रति वर्ष यहाँ बँधती है।

बिनौले—२४० सेर की खंडी पर भाव होता है।

गल्ला—गल्ले का तौल माप पर है। करीब ४॥ सेर की पायली व १६ पायली का मन माना जाता है।

पैदावार—मूंगफली, जुवार, मूँग, तूवर, चना, लाख, करडी आदि हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय परभनी में दिया जा चुका है। पूर्णा में इस फर्म की एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में बीकानेर विभाग में दिया गया है। इसके अलावा निजाम स्टेट तथा सी० पी० में जहाँ २ इस फर्म की शाखाएँ हैं उन सब स्थानों पर इस फर्म का परिचय प्रकाशित किया है। हरएक स्थान पर यह दुकान बहुत बड़ा कारबार करती है। पूर्णा में इस फर्म की एक जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा कपास खरीदी का व्यापार होता है। यह दुकान हैदराबाद फर्म के अंडर में है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नोलोबा रामजीवन जीनिंग फेक्टरी
श्रीराम द्वारकादास (कमलाजीन) जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स उसमान नूर महम्मद
" कन्हैयालाल द्वारकादास
" गनेशलाल रंगलाल
" जोधराज मोहनलाल
" बंशीलाल अबीरचंद रा० ब०

कपास के व्यापारी

मेसर्स राय बहादुर बंशीलाल अबीरचंद
मेसर्स राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि
" श्रीराम द्वारकादास

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद
" इस्वंबा बापू
" करीम सुलेमान
" महम्मद अहमद
" हाजी यूसुफ अली महम्मद

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद
" नूरमहम्मद हाजीनूरा
" पूना कोआपरेटिव सोसायटी लि०
" यूसुफ अली महम्मद
" रामनिवास रामप्रसाद

उमरी

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर नांदेड़ और निजामाबाद के मध्य उमरी की यह एक छोटी सी मंडी है। विशेष कर इस स्थान पर कपास का व्यापार प्रधान है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

राजा बहादुर विश्वेश्वर गिरि धीरमान गिरि

इस फर्म का विस्तृत परिचय हैदराबाद में दिया गया है। हैदराबाद के प्रसिद्ध धनिक फर्मों में इसकी भी गणना है। इस फर्म की यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्म का हेड ऑफीस नागपुर है। भारत में टाटा संस की मिलों का कपड़ा बेंचने के लिये भारत के कई शहरों में इस दुकान की शाखाएँ हैं। ऊमरी में यह फर्म बहुत समय से स्थापित है। यहाँ सेठ जीवराजजी पोद्दार बहुत समय तक रहे थे। यहाँ आपकी स्थापित की की हुई गौशाला आदि है। आपने यहाँ जमींदारी भी खरीद की। इस दुकान के अंडर में निम्बू, हिंगनघाट आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नागपुर मिल की एजंसी इस फर्म के पास है। कुछ समय पहले सिकंदराबाद में भी इसकी एक ब्रांच खोली गई है। ऊमरी में इस फर्म की देखरेख में एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी काम करती है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में पृष्ठ ३८० में दिया गया है।

मेसर्स विनोदीराम बालचंद

इस फर्म का हेड ऑफिस झालरापाटन (झालावाड़ स्टेट) है। मालवे की प्रतिष्ठा प्राप्त धनिक फर्मों मे इसकी गणना की जाती है। इस दुकान के अंडर में भिन्न २ स्थानों पर १५ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा करीब ११ स्थानों पर काटन व बैङ्किग कारबार होता है। उज्जैन में इस फर्म के अंडर में एक मिल काम करती है।

निजाम स्टेट में ऊमरी में इस फर्म की कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है। ऊमरी दुकान की मातहती मे दो तीन स्थानों पर जीन प्रेस है। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके व्यवसाय का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ १८३ में दिया गया है।

हिंगोली

यह स्थान परभनी जिले का एक अच्छा कस्बा है। पूर्णा जंकशन से निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन की ब्रांच यहाँ तक आई है। पहिले यहाँ छावनी थी। यह स्थान निजाम स्टेट की सीमा पर है। यहाँ से खामगाँव, कासिम, पूसद और अकोला तक मोटर आती हैं। यहाँ की मनुष्य संख्या करीब १४ हजार के लगभग है।

पैदावार—गल्ला—जुवार, तूवर, गेहूँ, चना, मूँग आदि अनाज हैं। अनाज का तौल मापी से है। ४॥ सेर की मापी और १६ मापी पायली की खंडी।

कपास—१२८ सेर बंगाली की खंडी पर भाव होता है।

रूई— १५६ सेर का बोझा, बोझा पर भाव होता है। २५—३० हजार गाँठ रूई पैदा होती है।

जीनिंग प्रेसिंग—यहाँ ७ जीनिंग और ३ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

दर्शनीय स्थान—खाकी बाबा का स्थान, नागनाथ का क्षेत्र और दत्तात्रय मंदिर।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स किशनदास सीताराम

इस दुकान के मालिक बूड़सू बोरावड़ (जोधपुर स्टेट) के है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के काबरा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ किशनदासजी काबरा ७५—८० साल पहिले हिंगोली आये थे। आपके ५ पुत्र हुए, रामचन्द्रजी, साँवतरामजी, सीतारामजी, धनराजजी एवं गनेशलालजी। इन भाइयों में से सेठ रामचन्द्रजी, सीतारामजी और धनराजजी की यह फर्म है। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ चतुरभुजजी और सेठ मोतीलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली (निजाम)—मेसर्स किशनदास सीताराम—यहाँ जीनिंग प्रेसिंगफेक्टरी है। और वैङ्किग व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स रामचन्द लालचन्द—लोकल आढ़त का काम होता है।

मेसर्स किशनदास गनेशलाल

इस दुकान के मालिक सेठ किशनदासजी के पुत्र सावंतरामजी और गनेशलालजी हैं। इनमें से वर्तमान में सेठ गनेशलालजी विद्यमान हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
हिंगोली—मेसर्स किशनदास गनेशलाल—इस नामसे बैङ्किग और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स मोतीराम बींजराज

इस फर्म के मालिक धनकोली रसीदपुरा (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के मूंदड़ा सज्जन हैं। सेठ मोतीरामजी मूँदड़ा देश से करीब १०० साल पहिले यहाँ आये थे। आप यहाँ साधारण काम काज करते रहे। आपके पुत्र सेठ बींजराजजी के हाथों से इस दुकान के व्यापार को विशेष उन्नति प्राप्त हुई। आप संवत् १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बालमुकुंदजी आपकी मौजूदगी में ही गुजर चुके थे।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ हेमराजजी मूँदड़ा हैं। आप बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के उदार सज्जन हैं। अपने संवत् १९७९ में श्री दत्तात्रय का सुंदर मंदिर करीब १। लक्ष रुपयों की लागत से तयार करवाया है। इसके स्थायी प्रबंध के लिये बींजराज हेमराज के नाम से जो कपड़े की दुकान थी वह दुकान और बहुतसी जमीन दी है। बड़नेरा (बरार) में भी सीताराम महाराज के संस्थान में आपकी एक धर्मशाला बनी है। आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
हिंगोली—मेसर्स मोतीराम बींजराज—बैङ्किग, खेती तथा आढ़त और रुई का व्यापार होता है।
वासुदेव दत्तात्रय हिंगोली—यह श्री दत्तात्रय मंदिर की कपड़े की दुकान है।

मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक डोहीफोड़े

इस दुकान के मालिक दक्षिणी ब्राह्मण समाज के माध्यंदिनी गौत्रीय शांडिल्य सज्जन हैं। आप १०० वर्षों से व्यापार कर रहे हैं। सेठ वामनराव डोहीफोड़े के हाथों से इस दुकान का स्थापन हुआ। आपने रुई में विशेष सम्पत्ति उपार्जित की। आप १९०२ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ रामकृष्ण वामन उर्फ बापू साहब डोहीफोड़े हैं। आपकी

ओर से यहाँ श्रीराधाकृष्णजी का मंदिर बना हुआ है। इसमें कुछ छात्रों के लिये भोजन का प्रबंध है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली (निजाम) मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक — तारका पता Dohiphode — यहाँ कृषि, लैंडलार्ड, बैङ्किंग, कॉटन व आड़त का काम होता है। रायली तथा जापान कं० की आपके पास एजंसी है तथा मिलों की खरीदी रहती है।

हिंगोली—श्रीराधाकृष्ण जीन—जीनिंग फेक्टरी है।
पूर्णा—वामन रामचन्द्र—लेनदेन का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज

कमलनयन केशवदेव जीनिंग फेक्टरी
किशनदास सीताराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गणेशलाल सूरजमल जीनिंग फेक्टरी
देवड़ा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
न्यू कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
राधाकृष्ण जीनिंग फेक्टरी
हिंगोली जीनिंग फेक्टरी

बैंकर्स

मेसर्स किशनदास गणेशदास
,, किशनदास सीताराम
,, गोविंदराम श्रीकृष्ण
,, चन्द्रभान हीरालाल
,, मोतीराम हंसराज
,, मोतीराम रामविलास
,, श्यामनिवास धूमसन
,, वामन रामचन्द्र डोईफोडे
,, शंकरदास रामानंद
,, शुभकरणदास रामानंद

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स जमनादास हनुमानदास
,, मेघराज वृन्दावन
,, विश्वनाथ नरसी
,, लक्ष्मण गोरखा

कॉटन के व्यापारी

मेसर्स किशनदास गणेशदास
,, किशनदास सीताराम
,, गोविंदराम शिवकिशन
,, हरदीचंद नंदकिशोर
,, बद्रीदास नारायणदास
,, धनराज गणेश
,, वामन रामचन्द्र

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स चतुर्भुज जेठमल
,, गनपत गोविंद वासठवाल
,, बालमुकुन्द नथमल
,, विठ्ठलदास हनुमानदास
,, मोतीराम थींजराज
,, मानमल गौरीदत्त
,, राधाकृष्ण सूरजमल
,, शंकरदास गनेशदास

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
,, करीम सुलेमान
,, पंढरीनाथ वैजनाथ
,, रामकृष्ण गणपत वासठवाल
,, हुसैन जीवा

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स पारा सोवा जीनाजी
,, रंगनाथ गंगाराम
,, रामकृष्ण गनपत

परभनी

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर बसा हुआ मराठवाड़ा प्रांत के परभनी जिले का प्रधान स्थान है। यह शहर हैदराबाद और मनमाड के बीच में है। यहाँ से रेलवे का १ ब्रॉंच परली तक और दूसरी पूर्णा होकर हिंगोली तक जाती है। इस जिले के एक ओर बरार प्रांत है। तथा शेष ३ ओर नांदेड़, बीदर, बीड़ और औरंगाबाद जिले हैं। यहाँ की भाषा उर्दू और मराठी है। जिले की आबादी पौने आठ लाख और गाँवों की संख्या१२३६ है।

पैदावार—ज्वारी, गेहूँ, बाजरी, ऊख, लाख, अलसी, चना, करड़ी, जव आदि गल्ला है।

गल्ले का तौल मापी से है। ४॥ सेर की पायली और १६ पायली का मन।

कपास तथा सरकी (विनोला) २४० सेर बंगाली की एक खंडी, खंडी पर भाव होता है।

रुई—१२२ सेर का पल्ला।

गुड़, शकर, घी का तौल १२ सेर के मन पर है।

जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरीज—यहां ७ जीनिंग एवं ५ प्रेसिंग फेक्टरियाँ है। प्रति वर्ष करीब १५।२० हजार गाँठों की पाक होती है। परभनी के अलावा इस जिले में परतूर, सेलू, मानवत, अष्टी, हिंगोली, अजगांव, पोरी, जिंतूर, गंगाखेड़, पूर्णा आदि स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित जालना में दिया गया है। इस फर्म का जीनिंग प्रेसिंग का व्यापार बहुत जबर्दस्त है। स्थान २ पर इस फर्म की करीब ३२ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। गदक में एक प्राइवेट कपड़े की मिल है। इस फर्म के मालिक स्वर्गीय सेठ मोतीलालजी बहुत बड़े व्यापारिक मस्तिष्क के पुरुष थे। आप ही

के द्वारा फर्म का व्यापार इतना फैला था। परभनी में इस फर्म का व्यापारिक-परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स नारायणदास सुन्नीलाल T. A. Hirakhan } यहां आपकी कॉटन जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स नत्थूभाई मेघजी एण्ड संस

इस फर्म का हेड आफिस वरंगल में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित वरंगल में दिया गया है। वरंगल में इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी तथा वीविंग मिल है। इसके अलावा जमीकुंटा (करीम नगर) मानिकगढ़ (आसिफाबाद) में भी इस दुकान के कारखाने हैं। परभनी में इस फर्म को कासिम व यूसुफ भाई नत्थू खोजा जीनिंग फेक्टरी के नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।

मेसर्स थानचंद गंभीरमल

इस फर्म के स्थापक सेठ थानचंदजी मोदी करीब १२५ वर्ष पूर्व [illegible] (जोधपुर स्टेट) से यहाँ आये थे। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। आपके बाद आपके पुत्र गंभीरमलजी मोदी ने फर्म का व्यापार सम्हाला। आप १९५१ में गुजरे। तथा इस फर्म के व्यापार को सेठ गंभीरमलजी के पुत्र मोहनलालजी ने विशेष तरक्की दी। वर्तमान में सेठ मोहनलालजी मोदी ही इस फर्म के मालिक हैं। परभनी में आपकी देखरेख में श्रीपार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर बन रहा है। आपके पुत्र श्रीयुत नेमीचंदजी फर्म के व्यापार को सम्हालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स थानचन्द गंभीरमल—बैंकिंग, आढ़त, कपड़ा, गल्ला तथा गल्ले का लेन-देन होता है।

जिन्तूर—गंभीरमल मोहनलाल—आढ़त, कपड़ा, लेन देन का काम होता है।

मेसर्स [illegible] कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय जालना में दिया गया है। [illegible] आदि स्थानों में इस फर्म की कई जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं तथा रुई का व्यापार होता है। परभनी में भी इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। वहाँ यह फर्म आबकारी कंट्राक्ट का लाखों रुपयों का काम प्रति वर्ष करती है। तथा इसकी व्यवस्था के लिये निजाम स्टेट के बहुत से स्थानों में शाखाएँ हैं। इस फर्म का कारबार अच्छी उन्नति पर है। इसकी परभनी ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स रामदयाल घासीराम—यहाँ बैङ्किंग व आबकारी कंट्राक्टिंग की व्यवस्था का काम होता है।

मेसर्स लछमणदास शिवलाल

इस फर्म का स्थापन साड़े गाँव में करीब १०० साल पहिले सेठ लछमणदासजी के हाथों से हुआ था। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के सांखला सज्जन हैं। सेठ लछमणदासजी के पुत्र शिवलालजी ने इस दुकान के कारबार को बढ़ाया, आपके हाथों से ही परभनी में दुकान खोली गई। आप संवत् १९७६ की मगसर वदी ९ को स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शिवलालजी के पुत्र हेमराजजी सखांला हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ साड़ेगाँव—मेसर्स लछमणदास शिवलाल—यहाँ लेन-देन और कृषि का काम होता है।
२ परभनी—मेसर्स लछमणदास शिवलाल—कपास, गल्ला, आढ़त और बैङ्किंग व्यापार होता है।
३ मोरी (परभनी) लछमणदास शिवलाल—जीनिंग फेक्टरी है और कपास का व्यापार होता है।

मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। इस कुटुम्ब को गढ़वाल और वनपर्ती संस्थान में जागीरी प्राप्त है। इसके अलावा इसकी शाखाएँ, जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ, राइस मिल आदि नांदेड़, निजामाबाद, मेदक और कामारड्डी में है। परभनी में भी इस फर्म की एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्री रामजी यड़ू (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेवारण (जोधपुर स्टेट) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी में आढ़त की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब पौन सौ वर्षों से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिगराम भी व्यापार संचालित करने में भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास } यहां आढ़त, बैंकिंग, सराफी, रुई और गल्ला का व्यापार होता है
T. A. Shriram

२ सेलू—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।
३ पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।
४ नांदेड़—श्रीराम द्वारकादास—आढ़त, रुई और गल्ला का कारबार होता है।
५ बोरी—(परभनी) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आढ़त का कारबार होता है
६ अजयगाँव (परभनी) श्रीराम द्वारकादास— " "
७ परली—श्रीराम द्वारकादास— " "

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
खोजा जीनिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
मेजनजी बेरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
विष्णु जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
वामन रामचन्द्र गांईक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
" चंदनसा उमनसा
" बालचंद गंभीरमल
" बालचंद पन्नालाल
" बलीराम संतोबा
" शिवनीराम पीमूलाल

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास
" चन्द्रभान गुलाबचंद

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल
- ,, बालचंद गंभीरमल
- ,, राजमल गुलाबचन्द
- ,, लक्ष्मनदास शिवलाल
- ,, श्रीराम द्वारकादास

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल्ला जीवा
- ,, हबीब जीवा

किराने के व्यापारी

मेसर्स अल्लाम महम्मद
- ,, अब्दुल्ला जीवा बक्शी
- ,, बापू सीताराम मारवाड़
- ,, बलीराम संतोबा
- ,, हबीब जीवा बक्शी
- ,, हाजी मदूर हाजीनूरमामद

बैंकर्स

मेसर्स गिरधारीलाल फतेचंद
- ,, प्रेमराज पन्नालाल
- ,, बालचंद गंभीरमल
- ,, रूपचंद हनुतराम
- ,, रामदयाल भागीराम
- ,, लक्ष्मनदास शिवलाल

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल
- ,, बालजी वस्ता
- ,, बालचंद गंभीरमल
- ,, रूपचंद हनुतराम
- ,, लक्ष्मनदास शिवलाल
- ,, श्रीराम द्वारकादास

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्री रामजी बढू (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेवारए (जोधपुर स्टेट) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी में आढ़त की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब पौन सौ वर्षों से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिगराम भी व्यापार संचालित करने में भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास T. A. Shriram } यहां आढ़त, बैङ्किंग, सराफी, रुई और गल्ले का व्यापार होता है

२ सेलू—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।

३ पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।

४ नांदेड़—श्रीराम द्वारकादास—आढ़त, रुई और गल्ला का कारबार होता है।

५ बोरी—(परभनी) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आढ़त का कारबार होता है

६ अजयगाँव (परभनी) श्रीराम द्वारकादास— " "

७ परली—श्रीराम द्वारकादास— " "

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

खोजा जीनिंग फेक्टरी

नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

पेजनजी पेरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

विष्णु जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

वामन रामचन्द्र नाईक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

लक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद

" चंदनसा कमनसा

" बालचंद गंभीरमल

" बालचंद पन्नालाल

" बलीराम संतोबा

" शिवजीराम घीसूलाल

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास

" चन्द्रभान गुलाबचंद

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल
,, बालचंद गंभीरमल
,, राजमल गुलाबचन्द
,, लक्ष्मणदास शिवलाल
,, श्रीराम द्वारकादास

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल्ला जीवा
,, हबीब जीवा

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
,, अब्दुल्ला जीवा बच्छी
,, बापू सीताराम मररार
,, बतीराम संतोषा
,, हबीब जीवा बच्छी
,, हाजी सफूर हाजीनूरभाल

बैंकर्स

मेसर्स गिरधारीलाल फतेचंद
,, प्रेमराज पन्नालाल
,, बालचंद गंभीरमल
,, रूपचंद हनुमान
,, रामदयाल घासीराम
,, लक्ष्मणदास शिवलाल

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल
,, बगनजी उत्तम
,, बालचंद गंभीरमल
,, रूपचंद हनुमान
,, लक्ष्मनदास शिवलाल
,, श्रीराम द्वारकादास

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्री रामजी बढ़ (मारवाड़) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेतारण (जोधपुर स्टेट) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी में आढ़त की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब पौन सौ वर्षों से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिगराम भी व्यापार संचालित करने में भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास T. A. Shriram — यहां आढ़त, बैङ्किंग, सराफी, रुई और गल्ला का व्यापार होता है

२ सेलू—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।

३ पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।

४ नांदेड़—श्रीराम द्वारकादास—आढ़त, रुई और गल्ला का कारबार होता है।

५ बोरी—(परभनी) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आढ़त का कारबार होता है

६ अजयगाँव (परभनी) श्रीराम द्वारकादास— „ „

७ परली—श्रीराम द्वारकादास— „ „

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
खोजा जीनिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
बेजनजी बेरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
विष्णु जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
वामन रामचन्द्र नाईक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
„ चंदनसा उमनसा
„ बालचंद गंभीरमल
„ बालचंद पन्नालाल
„ बन्सीराम संतोबा
„ शिवजीराम धीमूलाल

गल्ले के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास
„ चन्द्रभान गुलाबचंद

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल
,, पानचंद गंभीरमल
,, राजमल गुलाबचन्द
,, लक्ष्मणदास शिवलाल
,, श्रीराम द्वारकादास

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स अब्दुल्ला जीवा
,, हबीब जीवा

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद
,, अब्दुल्ला जीवा कच्छी
,, बापू सीताराम मारवार
,, बलीराम संतोषा
,, हबीब जीवा कच्छी
,, हाजी सबूर हाजीनूरमामद

बैंकर्स

मेसर्स गिरधारीलाल फतेचंद
,, प्रेमराज पन्नालाल
,, पानचंद गंभीरमल
,, रूपचंद हनुतराम
,, रामदयाल घासीराम
,, लक्ष्मणदास शिवलाल

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल
,, बसनजी उमा
,, पानचंद गंभीरमल
,, रूपचंद हनुतराम
,, लक्ष्मनदास शिवलाल
,, श्रीराम द्वारकादास

मेसर्स पदमसी मूलजी

इस फर्म के मालिक कच्छ-लायजा निवासी कच्छी वणिक दशा ओसवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९५६ में सेठ मूलजी के हाथों से हुआ। आपने यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ मूलजी के पुत्र सेठ पदमसी भाई हैं। आपने १९७० में सेलू में एक प्रेसिंग फेक्टरी खोली। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स पदमसी मूलजी यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रूई का व्यापार होता है।
पडूल—मेसर्स पदमसी मूलजी—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स रामनारायण मोहनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जेतारण (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी समाज के लोहिया बाहिती सज्जन हैं। करीब १५० वर्ष पूर्व सेठ दौलतरामजी सेलू आये। आपका कुटुम्ब ७ पीढ़ियों से यहाँ रोजगार कर रहा है। सेठ दौलतरामजी निजामसरकार की ओर से आफिसर थे। आपके बाद क्रमशः मोतीरामजी, जगन्नाथजी और रामनारायणजी ने कारबार सम्हाला। इस फर्म के व्यापार को सेठ रामनारायणजी ने विशेष बढ़ाया। आप २२।२३ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके भ्राता सेठ शिवनारायणजी विद्यमान हैं।

वर्तमान में सेठ रामनारायणजी के पुत्र मोहनलालजी एवं आसारामजी हैं। आपने इस फर्म को जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी खोली है।

सेठ मोहनलालजी देवलगाँव सादा बारा न्यात के सरपंच हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स रामनारायण मोहनलाल—बैङ्किंग, खेती और कपास का व्यापार होता है।
सेलू—आसाराम रामनारायण—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी और आइल मिल है।
पीपल गाँव (औरंगाबाद)—आसाराम रामनारायण—जीन और ऑइल मील है।
जेन्तूर (परभनी)—आसाराम रामनारायण— ” ”

मेसर्स सरदारमल विट्ठराम

इस फर्म के मालिक जेतारण (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के बाहिती लोहिया सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सरदारमलजी ने ५८-६० साल पहिले किया। आरंभ से आपके यहाँ गल्ले और किराने का रोजगार होता है। सेठ सरदारमलजी के ३ पुत्र हुए। विट्ठ-

सेलू

यह छोटा सा स्थान परभनी जिले का कपास का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसकी मनुष्य-संख्या केवल ५ हजार है। इतनी छोटी बस्ती में ५० हजार गाँठों की रुई की आमद होती है। इस स्थान पर १३ जीनिंग फैक्टरी ७ प्रेसिंग फैक्टरी और १ आइल मिल है। कपास के अलावा अलसी, करड़ी, गेहूँ, जुवारी, चना, तूवर, लाख, रुई, कपासिया, बाजरी आदि की पैदावार है। यह स्थान निजाम स्टेट रेलवे की मीटर गेज लाइन पर जालना और परभनी के मध्य स्थित है। यह स्थान मनमाड से १५५ मील दूर और हैदराबाद से २३१ मील दूर है। यहाँ प्रायः अनाज का तौल माप पर होता है और माप के पैमाने में भिन्न २ वस्तुएँ अपने आकार-प्रकार के मुआफिक वजन में कम जियादा समाती हैं। माप की पायली ९ सेर की मानी जाती है।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबदास हरीदास

इस फर्म के मालिक गुजराती मोड़ (वीसा) वणिक समाज के सज्जन हैं। इसका हेड ऑफिस हैदराबाद में है। हैदराबाद के प्राचीन और नामी व्यापारी कुटुम्बों में इसकी भी गणना है। इसके व्यवसाय आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। इस फर्म की सेलू में एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म का हेड आफिस जालना है। अतः इसके व्यवसाय आदि का परिचय फर्म के मालिकों के चित्र सहित जालने में दिया गया है। इस फर्म की स्थान २ पर करीब २२ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ तथा गदक में एक कपड़े की मिल है। इसके सेलू ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल } यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फैक्टरी है।
T. A. Hirakhan

मेसर्स पदमसी मूलजी

इस फर्म के मालिक कच्छ-सावला निवासी कच्छी वणिक दसा ओसवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९५६ में सेठ मूलजी के हाथों से हुआ। आपने यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ मूलजी के पुत्र सेठ पदमसी भाई हैं। आपने १९७७ में सेलू में एक प्रेसिंग फेक्टरी खोली। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स पदमसी मूलजी यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है।

पहूल—मेसर्स पदमसी मूलजी—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है।

मेसर्स रामनारायण मोहनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जैतारण (जोधपुर स्टेट) में है। आप माहेश्वरी समाज के लोहिया जाति के सज्जन हैं। करीब १५० वर्ष पूर्व सेठ दौलतरामजी सेलू आये। आपका कुटुम्ब ७ पीढ़ियों से यहाँ रोजगार कर रहा है। सेठ दौलतरामजी निज़ामसरकार की ओर से आफिसर थे। आपके बाद क्रमशः मोतीरामजी, जगन्नाथजी और रामनारायणजी ने कारबार सम्हाला। इस फर्म के व्यापार को सेठ रामनारायणजी ने विशेष बढ़ाया। आप २२।२३ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके भ्राता सेठ शिवनारायणजी विद्यमान हैं।

वर्तमान में सेठ रामनारायणजी के पुत्र मोहनलालजी एवं आसारामजी हैं। आपने इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी खोली है।

सेठ मोहनलालजी देवगाँव साढ़ा बारा न्यात के सरपंच हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स रामनारायण मोहनलाल—बैङ्किंग, सेती और कपास का व्यापार होता है।

सेलू—आसाराम रामनारायण—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी और आइल मिल है।

पीपल गाँव (औरंगाबाद)—आसाराम रामनारायण—जीन और ऑइल मील है।

जेन्तूर (परभनी)—आसाराम रामनारायण— " "

मेसर्स सरदारमल विठराम

इस फर्म के मालिक जैतारण (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी समाज के बाहिती लोहिया सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सरदारमलजी ने ५०-६० साल पहिले किया। आरंभ से आपके यहाँ गल्ले और किराने का रोजगार होता है। सेठ सरदारमलजी के ३ पुत्र हुए। विट्ठ-

रामजी, हरीरामजी और गुलाबचंदजी। आप तीनों भाइयों का इधर दो सालों में स्वर्गवास हो गया है। सेठ विट्ठलरामजी के पुत्र राधाकिशनजी और गोपीकिशनजी हैं तथा हरीरामजी के पुत्र चुन्नीलाल जी और गुलाबचन्दजी के पूसालालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
सेलू—मेसर्स सरदारमल विट्ठलराम—जीनिंग फेक्टरी है तथा गल्ला और किराने का व्यापार होता है।
सेलू—मेसर्स राधाकिशन गोपीकिशन—गल्ला तथा किराने का व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार आदि का परिचय परभनी में दिया गया है। परभनी के अलावा सेलू, पूर्णा, नांदेड, बोरी, परली आदि स्थानों में इस दुकान की शाखाएँ हैं। जिन पर आढ़त, रुई, गल्ला का कारबार होता है। सेलू में भी इस फर्म पर यही व्यापार होता है।

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

यह फर्म पहिले मेसर्स सदासुख जानकीदास के अधिकार में थी। पर उपरोक्त फर्म के संचालक सेठ केदारनाथजी डागा के स्वर्गवासी होने के बाद इसका तथा निजाम स्टेट की दूसरी ब्रांचेज का कारबार उनके भ्राता सेठ बंशीलालजी अबीरचन्दजी ने सम्हाला। मेसर्स बंशीलाल अबीरचन्द फर्म के हैदराबाद ब्रांच के अंदर में यह शाखा है। यह दुकान भारत के साहुकारों में ऊँचे दर्जे के व्यापारियों की गणना में समझी जाती है। हैदराबाद और सिकन्दराबाद में यह दुकान विस्तृत बैङ्किंग व्यापार करती है तथा उन स्थानों पर प्रधान फर्म मानी जाती है। इसकी सेलू ब्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर } यहां जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और बैङ्किग तथा रुई का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

आसाराम रामनाथ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
गुलाबदास हरीदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
पदमसी मूलजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
तेजपाल खीमजी जीनिंग फेक्टरी
बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
बेजनजी बेरामजी एण्ड तेजपाल खीमजी प्रेसिंग फेक्टरी
मोतीलाल रामकुंवार जीनिंग फेक्टरी
न्यू जीनिंग फेक्टरी (रतनसी पारेख)
मेन्नू मर्चेंट जीन

सरदारमल विट्ठूराम जीन फैक्टरी
भासाराम रामनारायण ऑयल मिल

रुई के व्यापारी

मेसर्स जमनादास नरसी
" वेजपाल रामजी
" प्रेमराज पन्नालाल
" धेमनजी धेरामजी
" बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर
" रामनारायण मोहनलाल
" लालजी रामजी

एजेंसियाँ

मेसर्स गोसो कानूसा केसा लिमिटेड
" जापान ट्रेडिंग कम्पनी
" पटेल ब्रदर्स
" वालकट ब्रदर्स
मेसर्स मुसान कम्पनी
" रायली ब्रदर्स

किराना के व्यापारी

मेसर्स अयासा महम्मद
" अब्दुल्ला जीवा
" राधाकिशन गोपीकिशन
" हुसेन हाजी मूसा

गल्ला के व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स गिरधारीलाल लक्ष्मीनारायण
" प्रेमराज पन्नालाल (हेड ऑफिस नगर)
" मदनलाल रामजीवन
" राधाकिशन गोपीकिशन
" विट्ठलदास व्यंकटलाल
" सूरज बगस सोनपाल

जालना

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर बसा हुआ औरंगाबाद जिले का प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान है। यह शहर मनमाड़ से ११० मील और हैदराबाद से २७६ मील है। इस स्थान पर विशेष कर कपास का व्यापार होता है। प्रति वर्ष करीब ६० हजार गाठों की यहाँ आमद हो जाती है। कपास को लोढने और प्रेसिंग करने के लिये यहाँ १८ जीनिंग और १० प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। प्रेसिंग फेक्टरियाँ ज्वाइंट है। यहाँ से बाहर जाने वाले माल में रुई, सरकी, अलसी, तिल्ली, अरंडी और मुंगफली है। और दूसरी प्रकार की पैदावार में जुवारी, गेहूँ, चना, बाजरी, मूंग, मोठ, उड़द, करड़ी आदि प्रधान हैं। व्यापारियों की सुविधा के लिये इम्पीरियल बैंक की ब्रांच स्थापित है।

तौल और भाव की दर—कपास १४० सेर बंगाली का पल्ला (बारदाना बाद)

रुई—१४० सेर का पल्ला (८ सेर बारदाना का बाद)

अनाज—१३२ सेर का पल्ला

गुड़—१२० सेर का पल्ला (२४ धड़ी का पल्ला)

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिक शामली (देहली के समीप) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के व्यापार सम्मान तथा प्रतिष्ठा को सेठ मोतीलालजी चुन्नीलालजी ने बहुत उन्नति पर पहुँचाया। आप बड़े साहसी व्यापारी थे। आपने अपने हाथों से मुगलाई, दक्खिन, अमहद नगर आदि जगहों में बीसियों जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ खोली, गदक में अपनी निज की कपड़े की मिल खोली। आपके व्यापारिक साहस को देखकर कई अंग्रेज ताज्जुब करते थे। इस प्रकार आपने अपने व्यापार को थोड़ी ही अवस्था में बहुत फैला दिया था। दुर्दैव से केवल ३८ वर्ष की अल्प अवस्था में आप सन् १९२४ में शिवरात्रि के दिन स्वर्गवासी हो गये।

इस फर्म की जहाँ २ शाखाएँ हैं इन सब जगहों पर यह दुकान बहुत मातबर मानी जाती है। इसके व्यापार का हाल इस प्रकार है।

१ जालना—मेसर्स नारायनदास चुन्नीलाल T. A. Hirakhan — हेड आफिस है, तथा जैकिंग जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है।

२ बम्बई—मेसर्स नारायनदास चुन्नीलाल तार का पता Hirakhan — वैकिंग आढ़त और रुई का व्यापार होता है।

३ गदक (हुबली-धारवाड़) दि नारायणदास चुन्नीलाल कॉटन ज्जीनिंग एण्ड प्रेसिंग मिल्स, T. A. Hirakhan — इस नाम की आपकी एक प्राइवेट मिल है।

इसके अलावा नीचे लिखे स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं और कॉटन का व्यापार होता है, इन सब स्थानों पर तार का पता Hirakhan है। ४—परभनी, ५—मानवर, ६—सेलू, ७—चाटूर (निज़ाम), ८—औरंगाबाद, ९—लातूर (निज़ाम स्टेट), १०—लातूर (निज़ाम), ११—मालेगांव (नासिक), १२—नांदगांव (मनमाड), १३—बाम्बोरी (अहमद नगर), १४—अहमदनगर, १५—करमाला (बीजापुर), १६—कुरडवाड़ी (एम. एस. एम.), १७—बीजापुर (एस. एम. एम.) १८— कुरडी (बीजापुर)।

मेसर्स पूनमचंद वख्तावरमल

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय औरंगाबाद में दिया गया है। जालना में इस दुकान का स्थापन करीब १०।१५ साल पूर्व हुआ। यहाँ यह फर्म आढ़त का कारबार करती है।

मेसर्स पेस्तनजी मेरवानजी

इस फर्म के पूर्वज सेठ मेरवानजी सन् १८०३ में जालना आये थे। आप आरंभ में इंडिया .. स्टेट के मेनेजमेंट में यहाँ आये और फिर यहीं रहने लगे। आपके बाद सेठ पेस्तनजी मेरवा- .. ने ५० साल पहिले जालने में बैंकिंग एवं खेती का व्यापार शुरू किया। सेठ पेस्तनजी के .. हुए जिनमें से सोराबजी, बरजोरजी, मानजी निज़ाम कस्टम के ओहदेदार थे। तथा सेठ .. जी और पस्तनजी उपरोक्त फर्म का संचालन करने लगे। सेठ पेस्तनजी सन् १८८१ में .. हुए।

इस फर्म की जहाँ २ शाखायें हैं उन सब जगहों पर यह दुकान बहुत मातबर मानी जाती है। इसके व्यापार का हाल इस प्रकार है।

१ जालना—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल T. A. Hirakhan	हेड आफिस है, तथा बैङ्किग जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है।
२ बम्बई—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल तार का पता Hirakhan	बैङ्किग आढ़त और रुई का व्यापार होता है।
३ गदक (हुबली–धारवाड़) दि नारायणदास चुन्नीलाल कॉटन स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, T. A. Hirakhan	इस नाम की आपकी एक प्राइवेट मिल है।

इसके अलावा नीचे लिखे स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं और कॉटन का व्यापार होता है, इन सब स्थानों पर तार का पता Hirakhan है। ४—परभनी, ५—मानवद, ६—सेलु, ७—वालूर (निज़ाम), ८—औरंगाबाद, ९—लातूर (निज़ाम स्टेट), १०—लालूर (निज़ाम), ११—मालेगांव (नासिक), १२—नांदगांव (मनमाड), १३—जाम्भोरी (अहमद नगर), १४—अहमदनगर, १५—करमाला (बीजापुर), १६—कुरडुवाड़ी (एम. एस. एम.), १७—बीजापुर (एम. एस. एम.) १८—कुड़ची (बीजापुर)।

मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय औरंगाबाद में दिया गया है। जालना में इस दुकान का स्थापन करीब १०।१५ साल पूर्व हुआ। यहाँ यह फर्म आढ़त का कारबार करती है।

मेसर्स पेस्तनजी मेरवानजी

इस फर्म के पूर्वज सेठ मेरवानजी सन् १८०३ में जालना आये थे। आप आरंभ में बृटिश रेजिमेंट के मेनेजमेंट में यहाँ आये और फिर यहीं रहने लगे। आपके बाद सेठ पेस्तनजी मेरवानजी ने ५० साल पहिले जालने में बैङ्किग एवं खेती का व्यापार शुरू किया। सेठ पेस्तनजी के ५ पुत्र हुए जिनमें से सोराबजी, बरजोरजी, फ्रामजी निज़ाम कस्टम के ओहदेदार थे। तथा सेठ फरदुनजी और पदमजी उपरोक्त फर्म का संचालन करने लगे। सेठ पेस्तनजी सन् १८८६ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पद्मजी पेस्तनजी और सेठ वेजुनजी फरदुनजी हैं सेठ पद्मजी वयोवृद्ध और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप जालना एसोसिएशन के प्रेसिडेंट हैं तथा सेठ वेजुनजी जालना कोआपरेटिव्ह सेंट्रल बैंक के सेक्रेटरी और ट्रेझरर हैं। आपका पारिक परिचय इस प्रकार है।

१. जालना—मेसर्स पेस्तनजी मेरवानजी } हेड आफिस है यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, कॉटन का व्यापार और जनरल व्यापार

२. बम्बई—मेसर्स दिनशाह पेस्तनजी प्रिंसेस स्ट्रीट } कमीशन का व्यापार होता है।

३. उमरी—सेठ पेस्तनजी मेरवानजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कपास का व्यापार होता है

४. करकेली—(नांदेड़) सेठ वेजनजी वेरामजी	"	"	"
५. नांदेड़—मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी	"	"	"
६. परभनी—मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी	"	"	"
७. सेलू—मेसर्स वेजनजी वेरामजी कम्पनी	"	"	"
८. सावोना—सेठ वेजनजी फरदुनजी	"	"	"
९. घामन गांव—(अमरावती) दीनशा पेस्तनजी	"	"	"
१०. देवल गांव—(बरार) पद्मजी पेस्तनजी कम्पनी	"	"	"

११. बुलगांव—(सांगली) दीनशाजी पेस्तनजी— जीनिंग फेक्टरी है।

१२. गुण्टकेल—(बंगलोर) वेजनजी वेरामजी कं०— जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स रामप्रताप रामदेव

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान डीडवाना (जोधपुर स्टेट) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के बगड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रामप्रतापजी ने १०० वर्ष पूर्व किया। आपके पश्चात् सेठ रामदेवजी और कन्हैयालालजी ने व्यापार सम्हाला। सेठ रामदेवजी २० साल पूर्व और कन्हैयालालजी १२ साल पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राधाकृष्णजी और गोपीकृष्णजी बगड़िया हैं। आपकी ओर से डीडवाना, जालना और नागपुर में धर्मशालाएं बनी हैं। आपका परिचय इस प्रकार है।

१—जालना—मेसर्स रामप्रताप रामदेव T. A. Ramdev } जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, सराफी लेन-देन और कॉटन का व्यापार होता है।

२—जालना—राधाकिशन गोपीकिशन—कपास का व्यापार होता है।
३—रिसोड़ (अकोला) रामप्रताप रामदेव—खेती और लेन-देन का काम होता है।
४—कामठी—(नागपुर) रामप्रताप रामदेव—लेन देन और बैङ्किंग व्यापार होता है।
५—नागपुर—रामदेव गणेशराम हनवारिया } किराने का व्यापार होता है।

मेसर्स शिवलाल बंशीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवलालजी हैं। आपने संवत् १९४३ में जालना नाम से कपड़े का व्यापार स्थापित किया। आप जैतारण (जोधपुर स्टेट) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री बंशीलाल जी कारबार में भाग लेते हैं। इस समय आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।
जालना—मेसर्स शिवलाल बंशीलाल—कपड़े का व्यापार होता है।

काटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि गणेश कम्पनी प्रेसिंग फेक्टरी
दि जालना जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी
दि जालना मरचेंट्स कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
दि टवल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी
तेजपाल गोविंदजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
महावीर जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी
धनराज जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नरसिंह जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
एन० जी० रामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
रामप्रताप रामदेव जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
लालबाग जीनिंग फेक्टरी

बैंकर्स

दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
दि लना कोआपरेटिव्ह सैन्ट्रल बैंक

कपास के व्यापारी

मेसर्स अहमद मियां समसुद्दीन
„ कपूरचंद कंवरलाल
„ कजोड़ीमल सीताराम
„ गुमानीराम रामनाथ
„ धनजी छगनमल
„ नारायणदास चुन्नीलाल
„ पेस्तनजी मेरवानजी
„ रामप्रताप रामदेव
„ राधाकिशन गोपीलाल
„ शिवलाल बालचंद

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पद्मजी पेस्तनजी और सेठ बेजुनजी [illegible] सेठ पद्मजी वयोवृद्ध और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप जालना एसोसिएशन के [illegible] तथा सेठ बेजुनजी जालना कोआपरेटिव्ह सैंट्रल बैंक के सेक्रेटरी और ट्रेझरर हैं। पारिक परिचय इस प्रकार है।

१. जालना—मेसर्स पेस्तनजी मेरवानजी } हेड आफिस है यहाँ जीनिंग प्रेसिंग [illegible] कॉटन का व्यापार और [illegible]

२. बम्बई—मेसर्स दिनशाह पेस्तनजी प्रिंसेस स्ट्रीट } कमीशन का व्यापार होता है।

३. ऊमरी—सेठ पेस्तनजी मेरवानजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कपास का व्यापार			
४. करकेली—(नांदेड़) सेठ बेजनजी बेरामजी	"	"	"
५. नांदेड़—मेसर्स बेजनजी बेरामजी कम्पनी	"	"	"
६. परभनी—मेसर्स बेजनजी बेरामजी कम्पनी	"	"	"
७. सेलू—मेसर्स बेजनजी बेरामजी कम्पनी	"	"	"
८. सातोना—सेठ बेजनजी फरदुनजी	"	"	"
९. धामन गांव—(अमरावती) दीनशा पेस्तनजी	"	"	"
१०. देवल गांव—(बरार) पदमजी पेस्तनजी कम्पनी	"	"	"

११. मुलगांव—(सांगली) दीनशाजी पेस्तनजी— जीनिंग फेक्टरी है।

१२. गुण्टकेल—(बंगलोर) बेजनजी बेरामजी कं०— जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

मेसर्स रामरतन रामदेव

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान डीडवाणा (जोधपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाज के बगड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रामरतनजी ने १०० वर्ष किया। आपके पश्चात् सेठ रामदेवजी और कन्हैयालालजी ने व्यापार सम्हाला। [illegible] २० साल पूर्व और कन्हैयालालजी १२ साल पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राधाकृष्णजी और गोपीकृष्णजी बगड़िया हैं। आपकी ओर से डीडवाणा, जालना और नागपुर में धर्मशालाएँ बनी हैं। आपका [illegible] परिचय इस प्रकार है।

१—जालना—मेसर्स रामरतन रामदेव T. A. Ramdev } जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, सराफी लेन-देन और कॉटन का व्यापार होता है।

५ बम्बई—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल, पायधुनी } आढ़त और बैङ्किंग कारबार होता है।
तार का पता Garnet, T. No 20929

६ सिकन्दराबाद—मेसर्स पूनमचन्द बख्तावरमल—बैङ्किंग कारबार होता है।

७ वरंगल—मेसर्स बुधमल जुहारमल, T. A. Garnet—सूत, काटन, आढ़त, कपड़ा व
T. No. 17 पर्रड़ी का व्यापार होता है।

८ नांदेड़—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल T. A. Garnet } इन नामों से बैङ्किंग गल्ला,
" मेसर्स निहालचंद देवड़ा } काटन और आढ़त का
" निहालचंद उत्तमचंद } काम होता है।

९ जालना—मेसर्स पूनमचन्द बख्तावरमल—आढ़त का काम होता है।

मेसर्स लच्छीराम श्रीकृष्ण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान हे (जोधपुर) स्टेट में है। आप सरावगी खंडेलवाल दिगम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ जसरूप जी के हाथों से करीब ६० साल पहिले हुआ। आप के पुत्र सेठ लच्छीरामजी ने इस दुकान के काम काज को विशेष तरक्की दी। आपने औरंगाबाद में दिगम्बर जैन मन्दिर के बनवाने में बहुत परिश्रम उठाया था। औरंगाबाद के आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप का स्वर्गवास संवत १९६२ में हुआ। आप के यहां श्रीयुत श्रीकृष्ण जी १९७० में नागाणा से दत्तक लाये गये। यह दुकान यहां बहुत पुरानी मानी जाती है। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

औरंगाबाद-मेसर्स लच्छीराम श्रीकृष्ण } बैङ्किंग, जनरल मरचेंट एण्ड कमीशन
तार का पता Pipariwala } का काम होता है।
T. No. 62

औरंगाबाद-लच्छीराम श्रीकृष्ण, निजामगंज—गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स श्रीराम मोतीलाल

इस [illegible] (जोधपुर स्टेट) निवासी [illegible] आदि के निवासी [illegible] जी और सेठ [illegible] देश में आके शुरू किया। आप के [illegible] के पुत्र सेठ [illegible] के कारबार को [illegible] दी।